ISSN 2229-547X

विदेह सदेह २९

रवि भूषण पाठक & डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

केर गद्य आ पद्य रचना

(विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)

विदेह-सदेह शृंखला- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

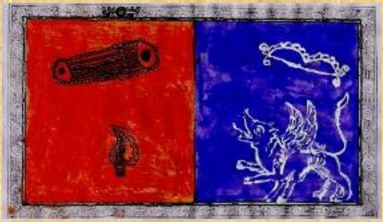

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोीिक सिविकार सुरवित अवि। कॉपीराइट (©) ििरकक क्लवित अनुमवतक विना पोीिक कोनो अंशक िाया पवतएि वरकॉवंग सवहत इलेक्ट्रॉवनक अििा यावंिक, कोनो माध्यमसँ, अििा ्ानक संगहण िा पुनपयोगक पणाली दारा कोनो रपमे पुनरुत्पावदत अििा संचावरत-पसावरत नै कएल जा सकैत अवि।

(c) २०००- अदतन। सविविकार सुरवित। वविदेहमे पकावशत सभटा रचना आ आकाइिक सविविकार रचनाकार आ सृगहकरिक लगमे छवह। भालसवरक गाछ जे सन २००० सँ याहूवसटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आवद वलृकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (वकछु वदन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html वलृकपर, सोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसवरक गाछ-पििम मैविली ब्लॉग / मैविली ब्लॉगक एगीगेटर) केर रपमे इन्टरनेटपर मैविलीक पाचीनतम उपवस्िवतक रपमे विदमान अवछ। ई मैविलीक पवहल इंटरनेट पविका विक जकर नाम बादमे १ जनिरी २००८ सँ "विदेह" पडलै।इंटरनेटपर मैविलीक पििम उपवस्िवतक यािा विदेह- पििम मैविली पािविक ई पविका िवर पहुँचल अवछ,जे http://www.videha.co.in/ पर ई पकावशत होइत अवछ। आब "भालसवरक गाछ" जालवृि 'विदेह' ई-पविकाक पविक्ताक सृग मैविली भाषाक जालवृिक एगीगेटरक रपमे पयुक्त भऽ रहल अवछ। विदेह ई-पविका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अदतन। सविविकार लेखकािीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अवछ ततऽ सृपादकािीन। सृपादकािीन। विदेह- पििम मैविली पािविक ई-पविका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौवलक आ अपकावशत रचना (जकर मौवलकताक सृपूणव उत्तरदावयत्व लेखक गणक मध्य छवह) editorial.staff.videha@gmail.com के मेल अटैचमेण्टक रपमे .doc, .docx, .rtf िा .txt फॉमेटमे पठा सकै छवि। एतऽ पकावशत रचना सभक कॉपीराइट लेखक/सृगहकरिा लोकवनक लगमे रहतवह। सम्पादक 'विदेह' पििम मैविली पािविक ई पविका ऐ ई-पविकामे ई-पकावशत/ पििम पकावशत रचनाक वपृट-वेब आकाइिक/ आकाइिक अनुिादक आ मूल आ अनूवदत आकाइिक ई-पकाशन/ वपृट-पकाशनक अविकार रखैत छवि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पविकामे कोनो रॉयल्टीक/ पावरशवमकक पाििान नै छै। ते रॉयल्टीक/ पावरशवमकक इच्छुक विदेहसँ नै जुडवि, से आगह। रचनाक सृग रचनाकार अपन सृवकप्त पवरचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अृतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौवलक अवछ, आ पवहल पकाशनक हेतु विदेह (पािविक) ई पविकाके देल जा रहल अवछ। मेल पाप्त होयबाक बाद यिासृभि शीघ (सात वदनक भीतर) एकर पकाशनक अृकक सूचना देल जायत। एवह ई पविकाके मासक ०१ आ १५ वतविके ई पकावशत कएल जाइत अवछ। ISSN: 2229-547X

मूल्य : ाा र २०००/- संस्करण: २०२२

Videha Sadeha 29: A Collection of Maithili Prose and Verse by Rabi Bhushan Pathak & Dr. Kailash Kumar Mishra e-published in Videha e-journal issues 1-350 at www.videha.co.in).

अनुकम

गद-िण (प. १-७९२)

रवि भूषण पाठक- रवि भूषण पाठक- घर १-३, औझका डायरी, विदापक्त, भाग रौ:सामाक्जक-राजनीक्तक कक्हताि़ झमेक्लया क्बआह, आदशवक उत्तिान आ यिाविक पतन: उत्तिान -पतन, एक टा अक्भशप्त कवि : बूच बाबू, गामक क्जनगीक समीिा, क्मरालाादेह विदेह (१-४), आचायव भामहक क्चृतन, दण्डी आ काक्यलिण, लघुकिा- बोविसत्ति, तीनटा बीहक्न किा, ओकर तोहर हम्मर सपना (दीघकिा), ओइ साल, घर, बाबूक चटी, दोस आ दोसक चाक्ल पकक्त बेमेय, लघु किा (क्यृग्य)- दोस यौ दोस, फलनमा.. क्चलनमा... ठेकनमा (क्यृग्य), फसाद आ आनृद (लघु किा), दोस्तीक क्जनगी मे झडबैर काल (क्यृग्य), नाटक 'क्रहसक्ष', क्टल्लू जी (क्शाि कुमार झा) (प. २-१५९)

डॉ. कैलाश कुमार क्मश- लघुकिा- पक्गडताइन, बुक्रराज (लघुकिा), फकडाक सृग यािा करैत मैविलानीक मनोदशाक: मानविशास्त्रीय विचिना, नॉविकछार क्हल्स: िरतीक नुकाएल सिगव (यायािरी-१), नॉविकछार क्हल्स-२ (यायािरी-२), लोअर क्दिाग घाटी: इदु-क्मसमी जनजाक्तक अनुपम सृसार (यायािरी-३), यायािरी: सृगाईपाऊ : नागा पूविक स्मरणक िरोहर, यायािरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात,

यायारिी- भामिय, भोगमय, योगमय बन्दािन, यायारिी- मक्लक भाय केर फुटपािी क्वृतन, सुभाषचन्द्र यादिजीक किा सृगह -बनैत- क्वगडैत- विचिना, रामलोचन ठाकुरक मैविली लोककिा: एक विचिना, रिीन्द्रनाि ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता, इ्रनुिषी अकास, पोिी समीिा- गामक क्विनगी- जगदीश पसाद मण्डल, जीिन सृघषव (पोिी समीिा), क्विला क्चकिला (पेक्ट्ंग): भूत, ििमान आ भविष्य, मेिडि आ मालिक साझी लोककला : एक पक्रचय, लघुकिा- चन्द्रा, लघुकिा: पकक्त सुन्दक्र आ चूहर क्वसिी, लघुकिा- सखी कुन्ती, मैविली लोक गीत मे पोफेसर चण्डेशर झा केर सी. डी./डी. िी. केर पयोग, पक्रत्यक्ता आ पक्रक्सिक्त: क्विलाक सन्दभवमे (पक्रचचा), गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी क्छनाक्र: मििशाणिी किा केर दृद?, लघुकिा- पुरषक नक्ह विशासे, मैविलानी केर उपराग राम सृ आ समाज सृ: सीता दाई केर िदना, लोक िदि आ क्व्यहारक पाबक्न मििशाणिी मानिशासीिय विचिन, मैविली जोग गीत मे पेम आ तृि केर पभाि, तमाकूल सृ बरबाद होइत मैविल आ मैविली सृस्कृक्त, मैविलानी पर विमशवक अविकारी के?, महाराजा पृक्हबा: मक्गपुर केर ग़रीब नबाज़, दीघवकिा- पक्रक्सिक्त लेक्खका, सुग्गा आ शृगार: मैविली लोकगीतक पक्रदश्य मे, मैविली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक, फाटू हे िरती: सीता दाई केर िदना, मैविली सृस्कृक्त केर अयिि, मैविली लोक परम्परामे नाि जोगी राजा भरििरी आ गोपीचृद, राजसिान केर मृडोिरिमे रािणि आ

मृदोदरीक र्वांहि: लोक इक्तहास केर मूतवआ अमूतवपमाण, छागरक बक्लपदानपर क्वन्तन : परम्मरामे पक्रतिबाक औक्चत्य, मैर्वली लोकगीतमे भोजनक र्विन्यास, सौराठक सोमनार्व आ सौराष्ट्रक सोमनार्वमे समानता-(लोक इक्तहासक पक्रपेक्ष्यमे) [कुमार गगन ई-पर्व- डॉ कैलाश कुमार क्ष्मशक आलेख सौराठक सोमनार्व आ सौराष्ट्रक सोमनार्व मे समानता] (प. १६०-७९२)

पद-खण्ड (प. ७९३-९००)

रवि भूषण पाठक- बाल कविता- 'क', बाल कविता- मानसून, बाल कविता- सुन िआ सुन, बाल कविता- ब्लेक होल, शी लकमी चौरिी,करियनक सम्मान मे, हजार-लाख मे, डहकन, खटा चूक, मीर ा, हकियर, बहुत किछु विदा भ' गेल रहै, क्यिवपलापी, झाबाद, तीनटा कविता, फसली पद १-७, एकि बेर छकि मे, हमर मैविली, होली, ई नामिरबा (कूदी आलोचकक क्यि ि), मरणोपरात-१-४, बफव भोर, देश आ गेयर, पाँच केबी, दोस मकिम, गीत गाबैत श्लोक प ैत, मनोज भाय क क्यटी, बायाह आ मोछ, फ्लेटो आ हमर ककाया, क्टप्स फाम खटरकका, बफव पाक भाफ, बस तीने किन, उत िर लोक, चमारक ऋण, दीि िली क पकिले, ि नतेरस राकि, हम पुरकिकाया, चालीसक बात, बामे गाम दकिने गाम १-६, छौडा अजगुत कृप्यूटर छै, महाकवि विद ापकि-१-२, हाइकू, कि भेलए एकरा (प. ७९४-८९८)

डॉ. कैलाश कुमार कािश- गामक कचोट (प. ८९९-९००)

गद्य खण्ड

रवि भूषण पाठक (१९७३-), गाम-समस्तीपुरक कक्रयन आ नानीगाम क्भडहा। विक्र: कक्रयन आ िदनाथपुर गाममे आगा दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ क्दल्ली। उतर पदेिक बाट-माप विभाग आ चकबंदी विभागमे चाकरी, फेर नेहर मेमोक्रयल वि ि नारायण दास स्नातकोतर महाविदालय, बदायू (उतर पदेि) मे क्हन्दी विभागमे क्याख्याता।

घर १-३

घर (एक)

डेली ि र होय 'हमर बाबू एहन ,हमर भैया एहन ' ।

दुपहर तक बात पहुंच जाय ' हमर गाम मे एना ' । मुदा उपसंहार होय साझ तक ' छोटका चौधरी एहन आ मैझला चौधरी एहन ' ।

घर (दू)

जे थारी आइंठकूक्ष रहै ,से कतौ गेटल ,कतौ ओक्हना राखल । खाए काल मे एगो दुगो मंजा जाए । बजार सं आनल तरकारी

ओकहना झोरा मे नूकरयैल । भनसाघर मे कतौ कपयाज कऽ कछलका ,कतौ उसनल आलू कऽ कछलका । रौतुका मच्छरदानी केओ खोलनाहर नै । साफ आ पकहरल कपडालता एके संग अराम करैत । दलान या अवाला रमक कुनो कंसेप्ट नै ।एना मे जे केओ गेट ठकठकबै , तऽ पकहले ई विचारल जाय कक ायित दोसरक गेट बाजै छै ! दोसर तेसर बेर गेट बाजै ,तखन बाले बच्चे कमलल के अवाला घर कऽ सफाई ुर भऽ जाइ । सफाई मने अवाला रमक समान के जेनातेना पाछू लऽ आननै रहै । ई काज बच्चोऽ सब आटोमेक्टक ुर कऽ दै । कहबासुनबा के जररी नै । मुदा सबसं आनंददायक चीज रहै कक केओ नै आबै ऐ ठाम ! ने कतौ जेनए ने ककरो एनए । कथर पृथ्वी ! अकाव्य हीन बह ाण्ड !

घर (तीन)

आनंद जी कलस्ट बनेने छकथन । ककहया ककहया ककहया भानस बनबै छकथन , ककहया ककहया आनंद जी । ककहया ककहया होटल सं आबै छै आ ककहया ककहया मंते सं काज चलै छै । कस्थकत जेहन होय , मा के कहल याकद आबै छैन ।नेनपन मे मा कहैत रहकथन 'खा ले ाआ , एको टा दाना नै छोड ।जते दाना धोकाधाक बनतौ ,ओते कदन भुकखे रहबही ' ।

औझका डायरी

िकुल जी जायसीक पिसा करैत छथिन ।भाि ई छैक 'मुसलमानो होइतो जायसी भारतीय कविता के एत्ते बूझैत छथिन ,मुसलमान होइतो जायसी हिंदू स्तीक जीनि ,पेम ,विरह के एत्ते नीक जूका कयन्है छथिन ,मुसलमान होइतो जायसी अधिक लोकजीनि मे पिक' पाबैत छथिन ......
जेना मुसलमान केओ होय त' ऊ कविता नइ लिखै ,लिखबो करै त' केलि अल्लाह आ कुरान पर या केलि ईरान ,तुर्कस्तिान पर।
(दिनाक07 -04-17)

मैथिली के एकटा आलोचक चाही ,आलोचक नइ न्यिालोचक,न्यिालोचक नइ जिालोचक ।एहन आलोचक जे बज्जर सन सन बात कहै । काबिल सू लिखबाबै , बेगार सभ के टरकाबै। एहन आलोचक जेकरा मे केलि बहुजता नइ रसबोध सेहो होइ ,केलि रसबोधे नइ समै-सजगता सेहो । केलि फामे नइ कंटेटक पक्ष सेहो समझदारी होए ।
एहन आलोचक जेकरा मे समैक जिम्मेिरी उठाबैत साहित्य के आगू बरहेबाक ताकित होए । एहने सन जे मिथिला आ मैथिलीक परिस्थिति आ संस्थिति स्रिपके बूझै आ ओकर रक्षा करै ।एहन आलोचक जेकरा मे मैथिलीक तिमिन साहित्यक दृि गमबाक हिम्मत होए आ ओकरा समकालीन भारतीय साहित्य के जनबाक जर रक्षा सेहो महसूस होए ।
(दिनाक 11 04 2017)

ओकरा गाब' क्दयौ ,गेबाक आनन्द क्लय' क्दयौ ,ओकरा पर अपन अपेक्राक पहाड नइ लाक्दयौ ,ओकरा पर उपराष्टीयताक ठप्पा नइ लगाक्वयौ ,एहन अनेर नइ बाक्जयौ क्क ऊ जीत जाए त' क्मक्थला जीत गेलै आ ऊ हाक्र गेलै त' क्मक्थला हाक्र गेलै ।

क्वि तर पेण ओकरा मे आगू जेबाक क्हम्मत आ ताकक्त छैक , मुदा ऐ चीजक लेल तैयार रक्हयौ क्क ऊ जीत गेलै त' ऊ राष्टीय अपेक्राक अनुसार अपना आप के बदक्ल सकै ।ओकरा मत क्दयौ समथनि क्दयौ आ ऐ चीजक आिीिद क्क ओ समग देिक लेल गाक्ब सकै ।जेना कुनो बोली राष्टीय बनै छैक त' ओ आनो बोलीक गुण आ सकारात्मक तत्ि गहण करैत छैक आ एक अथमि े ई ओइ बोलीक मृत्यु होइत छैक ,क्कएक त' ओ पुरनका पंजर छोक्ड के नया र प धारण करैत छैक ।तक्हना ओ समुच्चा देसक लेल गाबै,ई िुभकामना ।

बात एहने सन होए क्क गायन कला जीतै नइ क्क क्मक्थला ,पंजाब ,महाराष्ट या गुजरात ,ओना मॉडनि बिक्मयौटी एकरा संघषि आ केत्तक संघषििला र प देबाक पयास करत ,मुदा हम सब संयक्मत रही ।आ एतबे धक्र नइ क्मक्थला मे सब तरहक गायनक मुकम्मल परंपरा फेर सू पारंभ होए ,ई नेिान केिल अमता ,बहेडी ,दरभंगा आ विदापक्त समारोहे तक सीक्मत नइ रहै ।ओहुना मैक्थली मंच पर राम चतुर मक्ल्लक के हूट केक्नहार आ दुमका-झुमका के बढाबा देक्नहारक कमी नइ ......

क्दनाक 13-04-2017

ऊ हम्मर कुटुम छथिन ,दियाद छथिन आ दोस छथिन।ऊ चौबीसो घंटा हेलमेट पहिरै छथिन ,केओ कुटुम देखि ने लए ,ऊ कखनो काल एकटा अंग के बेकाम क' दए छथिन ,कहबेन त' सुनता नइ ,ईशारा देबै त' रुकता नइ ,अनुमान यदि लगा लेता त' हृदयहीन भेने कुलि ।ऐ रस्ता बाटे नइ ,ऐ चौक पर बाटे नइ ,दस बजे के बदला मे एगारह बजे चलता आ पाच बजे के बदला मे सात बजे लौटता ।धीरे-धीरे .....केओ देखि ने लए । हुनकर बदलबाक कुनो अंत नइ ,नाम ,गोत ,गाम ,शहिर सब बदलि के अपन जेबी आ अपन स्टेथेस्टक इनजी के सेिट करैत छथिन ।एहने केरेक्टर हमरे पदृष्टि मे नइ आहूं के िायुमंडल मे अछि ।ऊ आ हुनका सन कतेको कतेक अपन ओकादि बदलबाक पतीक्षा क' रहल छैक । ओकादि बदलिते भाषा ,भंवामा ,टोन ,बॉडी लैग्िज सब बदलि जाइत छैक ।कखनो-कखनो ओकादि आ भाषा साथ-साथ बदलैत छैक ,कखनो-कखनो ओकादि बदलबाक पत्याशि मे भाषा आ टोन समै सू पहिले बदलि जाइत छैक आ ओकादि बाद मे बदलै छैक ।कखनो काल दुभाग्य सू भाषा त' बदलि जाइत छैक ,मुदा ओकादि बदलबाक पर्विया मे बेक लावा जाइत छैक

(दिनाक 15-04-2017)

विदापक्त

विदापक्त आ मैथ्थली के ल' के क्हन्दी मे आरम्भक्ह सू एकटा अंतर्विरोध व्याप्त अक्छ ।एकर मूल विषय अक्छ मैथ्थली आ क्हन्दी क सम्बन्ध क देिभाषापरिर मे क्नधारण ।मैथ्थली कें हटेला सू हुनकर समािि या सिलिपेटू क्सधात पभावित होइत अक्छ ।मैथ्थली के राखला सू मैथ्थली क पाचीनता आ एकर गौरििली साक्हक्ययक परम्परा हुनकर चालू फामूलिा के अस्तव्यस्त करैत अक्छ । क्हन्दी आलोचना एकर क्नदान तेहने चालू ढंग सू करैत अक्छ ।
ई क्नदान अक्छ -
1 मैथ्थली के क्हन्दी क बोली रप मे पक्रकलपना ।
2 विदापक्त के आक्द काल क कवि रप मे सीकृक्त ।
पक्हल क्नदान क चचा कक्हयो आराम सू, आइ दोसर क्नदान क चचा कक्नक विस्तार सू करैत छी ।विदापक्त काव्य क पक्त क्हन्दी आलोचना क दृिष्ट पर एक्ह क्नबन्ध मे विचार करैत छी ।
सिप्रिथम आचायि रामचन्द्र ििुक्ल दारा क्लक्खत 'क्हन्दी साक्हयय का इक्तहास '(संति1986)पर चचा कएल जाए ।एक्ह पुस्तक क िीरगाथाकालअध्याय मे विदापक्त क चचा मुख्यतः दू ठाम अक्छ । 'अपभंि काव्य' मे अपभंि साक्हयय मे पयुक्त छंद आ उदीयमान भाषा क िैििय क जानकारी अक्छ ।दोसर ठाम अक्छ 'िीरगाथा काल' मे'फुटकल रचनाऐं' मे अंक्कत क्टपपणी ।एक्ह ठाम आलोचक क पथम उददेश्य अक्छ मैथ्थली भाषा के अधीनस्थता क घोषणा ।ताक्ह दुआरे सिप्रिथम क्हन्दी साक्हयय क विस्तार मे मैथ्थली आ विदापक्त क सक्म्मक्लत क लेल जाइत अक्छ ।तयिाित विदापक्त

काव्य क विषय मे लेखक तीन-चारि टा मोट बात कहैत छथिन्ह-
1 कवि क अधिकांश पद शृंगारिक अछि,जाहि मे नायक नायिका राधा-कृष्ण छथि ।
2 एहि पद क रचना संभवतः जयदेव क गीत काव्य क अनुकरण पर कएल गेल अछि ।
3 पदावली क मूल दृष्टि शृंगारिक अछि,एहि पर आध्यात्मिकता या भक्ति क आरोपण देनए ठीक नहि ।
आचार्य शुक्ल क आलोचना क एहि एकांगिता क मुख्य कारण अछि,हुनकर प्रबन्ध क प्रति विशेष आग्रह । एहि आग्रह क परिणाम अछि तुलसी आ जायसी क बडका कवि सिद्ध केनए ।संदेह नहि कवि नमहर कवि छथि,मुदा आलोचक ककमजोरी विद्यापति आ कबीर के जबर्दस्ती कमतर करए मे स्पष्ट अछि । अपभ्रंश काव्य आ विद्यापति पदावली के सम्बन्ध मे हुनकर कम जानकारी सेहो आलोचना के प्रभावित करैत अछि ।अंतिम कारण अछि अवधी आ ब्रजभाषा क काव्य क प्रति आलोचक क अतिरिक्त स्नेह आ आग्रह ।
शुक्ल जी 'लोकमंगल' क एकटा खास काव्य दृष्टि के प्रति आग्रही छथि । अतः हुनकर समस्त लेखन क एकटा खास रंग अछि । एहि लेखन मे विद्यापति आ कबीर क एकटा सीमित स्थान अछि । एहि लेखन क कमजोरी पर सबसू धारदार आक्रमण आचार्य हजारी प्रसाद द्वारा भेल ।
द्विवेदी जी क लेखन पर शान्ति निकेतन आ गुरुदेव क विचार क विशेष प्रभाव अछि ,ताहि दुआरे हुनकर प्रारंभिक लेखन मे विद्यापति काव्य के समझए -बूझए क दिशा मे गंभीर प्रयास क चिह्न भेटाइत अछि ।
'सूरसाहित्य' मे जयदेव, विद्यापति,चण्डीदास आ सूरदास क राधा क

तुलना कएल गेल अछि । राधा क विलास-कलामयी,किशोरी,यिःसन्धिसुषमा,अधोविन उरोज पर कद्दिदी जी मोहित होइत छथि ।मुदा ई लेखन विदापति पदावली क केन्द्रीय भाि क कदि कोनो संकेत नहि करैत छैक । लेखक क उदेश्य अछि सूर साहित्य क महत्यि क उदाटन ।पसंगािि लेखक किछु बाग्ला लेखक क चचा करैत छथि ।रवीन्द्र नाथ क एकटा महत्यिपूणि उधरण अछि ”विदापति क राधा मे पेम क तुलना मे विलाि बेिी अछि,एहि मे गम्भीरता क अटल धैयि नहि ।एहि मे मात नििनुराग क उदभान्त लीला आ चाचल्य अछि । विदापति क राधा निीना छथि, नििस्फुटा छथि ।“ई राधा महिमा एकटा बाग्ला लेखक दीनेि बाबू सेहो गाबैत छथि ”विदापति िििाति राधिका एकाधिक चितपट क समवि अछि । जयदेि क राधा सदृि एहि मे ििरीर क भाग ज्यादा आ हृदय क भाग कम अछि ।---- विदापति क राधा अत्यन्त सरला अछि ,अत्यन्त अनविभजा ।“

कद्दिदी जी क उपरोक्त लेखन िुक्लि जी क विदापति सम्बन्धी मान्यता मे कोनो पवितििि करबा क पयास नहि करैत अछि ।हिनकर परिती लेखन िुक्लिदी मान्यता क पोषण करैत अछि ।कबीर आ इतिहास सम्बन्धी मान्यता क सम्बन्ध मे हिनकर जोि विदापति क सम्बन्ध मे अनुपस्थित अछि,यदिपि ई विदापति क कविता आ व्यक्तित्यि क बेहतर जानकार छथि ।इतिहास सम्बन्धी हिनकर पोथी ‘हिंदी साहित्य:उिि और विकास ‘ मे कीर्तिलिता पर दू पृष अछि आ पदावली पर मात चािर पाति । ई स्पि करैत अछि जे लेखक क मंतव्य की अछि ।सगुण भक्ति परंपरा क आख्यान क बीच मे विदापति क झूठफूसिया चचा सू खानापूरी कएल गेल अछि ।लेखक विदापति के विसधाकि् कवि कहैत छथिन्ह आ पदावली मे िििाति अपूिि कृष्णलीला क संकेत

दैत छथिन्ह ।भावि क सारता आ अभिव्यक्ति क पेषणीयता क स्वीकारैत लेखक ई टिप्पणी देनए आवश्यक बूझैत अछि कि एहि परंपरा क पभावि संभवतः बजभाषा काव्य परंपरा पर किछु नहि पडल।

एकटा बात विचारनीय अछि कि द्विदी जी सन कदाचि आलोचक तक शुक्ल जी मान्यता क विरोध नहि क सकल । एकर की कारण ? द्विदी जी कतिपय पसंग मे शुक्ल जी सू पंगा ल लेने छलाह,ताहि दुआरे ओ विद्यापति पदावली क सम्बन्ध मे यथेष ध्यान नहि देलाह।अवधी आ बजभाषा काव्य परम्परा क पति तुलनात्मक स्नेह सेहो हुनका एहि दायित्य सू विचित कएलक ।

एहि बीच मे अन्य रचनाकार क टिप्पणी सब आबैत रहल । राम कुमार विमा क एकाकी दृवि मे विद्यापति काव्य मे आंतरिक सौदयि क अपेक्षा बाह सौदयकि पधानता अछि ।

स्वतिंतयोतर परिदृश्य मे विद्यापति क सम्बन्ध मे बेहतर समझ विकसित भेल । राम विलास विमा विद्यापति काव्य के सम्बन्ध मे कम जानकारी क बावजूद ई बात बूझि सकलाह कि ओ नवजागरण क अगदूत छलाह ।

तहिना राम स्वरिप चतुवदी अपन गंथ ‘हिंदी साहित्य और संविदना का विकास ’ मे शुक्ल जी दारा पतिपादित लौकिक आ आध्यात्मिक फास के काटि पाबैत छथि ।

”आचायि शुक्ल एहि ठाम ओहि अनुभव तक नहि पहूचैत छथि कि पदावली अपन शृंगारिक भावना क साथ विस्तार मे ऐहिक अछि आ तन्मयता क गंभीर अनुभूति ओकरा आध्यात्मिक स्तर पर रूपातरित करैत अछि ....काम भाव आ शरीर क सौदयि हुनका ओहि ठाम उत्सवि रूप मे अछि। ताहि दुआरे ई कहब परिकल्पित होइतहु कहब नवीन

अछि ।"

ई चतुर्वेदी जी क ईमानदारी छल कि हुनका पदावली मे सदःनविनता क गंध भेल ।मुदा लेखक अविच्छिन्न संलग्नता मे अपन काज चलाबैत अछि । ई पुस्तक त मार्क्स के चलैत छैक जे रचना कार्य आ आलोचना पयाग मे होइत छैक ।

विद्यापति प्रसाद सिंह हिंदी आलोचना क एहन एकावाता के नीक जूका चिन्हैत छथि ।अपन पुस्तक 'विद्यापति ' मे ओ विद्यापति आ पदावली क सौन्दर्यकें काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण सू देखैत छथि ।ओ विद्यापति के अपर प क कवि मानैत छथि । "सौन्दर्य हुनकर दर्शन अछि आ सौन्दर्य हुनकर जीवन दृष्टि ।एहि सौन्दर्यके ओ नानाविधि देखलाह ,आ कुशल मणिकार क तरह चुनलाह ,सजा के,सूत्रि के आलोकित कएलथि "एहि सौन्दर्यक विश्वव्यापी र प क ओ परख करैत छथि आ जायसी क ग्रंथ 'पदमावति' सू पदावली क सौन्दर्यक तुलना करैत अछि ।पदमावती क सौन्दर्य स्पर्श सू सभ स्तु अपन सौन्दर्य धारण करैत अछि ।लेखक मानैत अछि कि विद्यापति क राधा क अपर प सेहो ई पारस अछि ।हुनकर अभिमत अछि"आश्चर्य होइत अछि जे जायसी सू सौ वर्ष पूर्व विद्यापति जाहि पारस र प क वर्णन कएल,ओहि पर ककरो ध्यान नहि गेल ,एकरा विद्यापति क अभाग्य कहल जाए "

डॉ0 सिंह क अवलोकन विन्दु प्रसंसनीय अछि, मुदा ई अभाग्य त हिन्दी आलोचना क अछि ,विद्यापति क नहि ।

मैनेजर पाडेय अपन पोथी 'भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य ' मे विद्यापति पर किछु चर्चा करैत छथि ।पुस्तक क शीर्षक सू स्पष्ट अछि जे विद्यापति नाम क सीढी क पयोग केलि सूरदास तक जएबा क लेल कएल गेल अछि ।तथापि एहि किताब मे गीतिकाव्य आ

विदापति क सम्बन्ध मे किछु महत्पूर्ण जानकारी अछि ।लेखक कहैत छथिन्ह "विदापति क पद मे सौदर्य चेतना क आलोक भानुभूति क तीव्रता घनत्व एवं व्यापकता आ लोकगीत तथा संगीत क आंतरिक सुसंगति अछि " लेखक विदापति आ सूरदास दूनू के भक्त कवि मानैत हुनका जन संस्कृति क रचनाकार मानैत छथि । विदापति आ हिन्दी आलोचना नामक ई निबन्ध एकटा दृष्टि क माग करैत अछि कि विदापति पर मौलिक दृष्टि सू काज हो ।
ई पश्न हिन्दी आ मैथिली क नहि छैक,बल्कि समस्त भारतीय साहित्य क अछि ।विदापति सन मौलिक रचनाकार क जानबा-समझबा क लेल साधारण दृष्टि नहि आलोचना क तत्वान्वेषी दृष्टि चाही ।

२

बडका रचना क लेल बडका रचनात्मक साहस आ बडका ईमानदारी क आवश्यकता होइत छैक । विदापति पदावली क विषय मे इएह साहस स्पष्ट ढंग सूँ उजागर होइत अछि ।'दुखहि जनम भेल,दुखहि गमाओल ,सुख सपनहुँ नहि भेल ' ई पंक्तिविदापति पदावली मे व्याप्त औदात्य क संकेत दैत अछि । संपूर्ण मध्यकालीन काव्य मे दुख क अबाध स्वीकृति आ सुख के सपना मे अएबा क दारुण रूपक अनुपस्थितिअछि । हे आलोचकगण ! मध्यकालीन भारत क सामंती शासन आ समाज क वास्तविक रूप देखबा क साहस हो त विदापति पदावली फेर सू पढबा क पयास करू ।ई सत्य अछि कि ओहि मे शृंगार रस क बेगवती धारा बहि रहल छैक । आ किछु आलोचक ओहि मे स्नानहि के जीवन बूझि' लागैत छथिन्ह ।हमरा शृंगार रस क तीव्रता ,गाभीर्य स्वीकार्य अछि ।शृंगार रस मे व्याप्त एकागता आ

स्थाायर्य अन्यत अनुपलब्ध अछ । हमरा कहबा क मतलब अछ कि विदापति अपन शृंगार रस क कविता कहबा क लेल मैथिली मे रचना नहि केलाह ।तथापि विदापति पदावली क कोनो आलोचक शृंगार मे भसबा आ फसबा सू नहि बचलाह ।यिःसन्धि क नायिका क ई लाणिमा देखि की कविकुलगुर रवीन्द्रनाथ आ की आचायि हजारीपसाद द्विदी सभ गोटे मोहित छथि-

सैसि जोबन दुहु मिलल गेल । सनिक पथ दुहु लोचन भेल ।।
चिनक चातुर लहु-लहु हास ।धरनये चाद कएल परगास ।।
मुकुर हाथ लए करए सिंगार । सखि पूछए कइसे सुरत-विहार ।।
निरजन उरज हेरत कत बेर। बिहुंसए अपन पयोधर हेर ।।

ताहि दुआरे गुरदेि के विदापति क राधिका परमनीना बूझाइत छनि। हे गुरदेि हमर एकटा भाति के दूर कर कि ई राधिका पदावली क विस्तृत आकािर मे पगलभे भएक रहि जाइत छैक,ओकरा मे पौढता कएक ने आबैत छैक । अहा कहब जे पौढ राधा क रचना केनए कवि क लक्ष्य नहि छल या राधा क पौढता क एक दू टा कविता सुना देब । हे गुरदेि हमरा बताबू कि ओहि समय मे मिथिला यौनिोन्मत नारी सू िचित छल ?। विदापति त भरि जिनगी घूमते रहलाह। कि नेपाल ,जौनपुर आ बंगाल तक मे हुनका पौढ दिि नहि भेल? ,ओ सयिं भरपूर जिनगी आ भरि उमरि जीलाह । हुनका शृंगार क विविध रप आ दिा के बतायत ?हमर एकटा ठाम तुच्छ आगह अछि कि अपन तमाम योग्यता आ जीिनानुभि क बािजूद ओ शृंगार रस क क्योन्मुख पभाि के बूझलाह । ताहि दुआरे एकटा अंतरंग रस क आनन्द लइतहु,एकरा चरम लक्ष्य नहि बनेलाह । विदापति चौदहम-पंदरहम िताब्दी मे छलाह ।संस्कृत काव्यािस्त्र क सब पमुख आचायिएहि समय मे िलखि लेने छलाह आ मम्मटाचायि

विभिन असहमक्त क बाजिूद 'साक्त्यदपणि'मे व्यापक सहमक्त बनएबा क पयास केलाह ।विदापक्त एक्ह पयास सू अगित छलाह । शृंगार रस क राजयि के सम्बान्ध मे हुनका मन मे कोनो संयि नक्ह छल। मुदा तयकालीन लेखन मे व्यापत्त रीक्तादि आ कादो मे पडनए ओ उक्चत नक्ह बूझलाह । हुनकर अहिट आ मैक्थली क क्दि पयाण क सबसू महयपूणि कारण छल जनोन्मुख भाषा आ टटकापन के सीकार केनए ।अपन समय क बंजरपन के लक्य करैत कवि कीक्तलिता मे कहैत छक्थ-

अक्खर रस बुक्झ क्नहार नक्ह कवि कुल भक्म क्मखक्वर भऊं ।

मतलब ई जे अकर रस क ममजि केयो नक्ह बचल, कवि सब घूक्म घूक्म के भीखमंगा भए गेलाह ।क्मक्थला अंचल मे नविकिक्सत भाषा क पक्त विदापक्त क उयसुकता आहाक्दत आ चक्कत करैत अक्छ।कीक्तलिता मे एकटा आन स्थान पर ओ कहैत छक्थ-

सकअ िणी बुहअण भाइि पाइअ रस को मम्म न पाइि ।

देक्सल बयणा सब जन क्मटा,ते तैसन जंपउ अहिटा ।।

मतलब ई जे संस्कृत के पंक्डते नीक जूका बुेझैत छक्थ,पाकृत भाषा क रस केयो नक्ह पाबैत अक्छ । देिी बोली सब के नीक लागैत अक्छ ,ताक्ह दुआरे हम अहिट बाक्ज रहल छी ।विदापक्त भाषा के संगक्ह समाज क नीिनता के सेहो संकेत करैत छक्थन्ह -

क्हन्दू तुलुक क्मतल िसि,

एकक धम्मे ओकाक हास ।

कतहु बाग,कतहु िदि

कतहु विसक्मल कतहु छेद

कतहु ओझा कतहु खोजा

कतहु नकत कतहु रोजा

कतहु तम्बार कतहु कूजा
कतहु नीमाज कतहु पूजा
कतहु तुलुका बल कर
बाट जाएते बेगार धर ।।

कीर्तिलता मे अहिट के संगे मैथिली क ई पयोग ओते आयिउयमन नहि करैत अछि,जतेक आयिउयमन करैत अछि विदापति क नवीन सामाजिक व्यवस्था क पति सजगता ।हिंदी विदान अंबा दत पंत आ मैथिली -हिंदी के तिाधिक विदान विदापति काव्य मे शृंगार क विभिन दति के खोजि-खोजि बूढिया गेलाह ।विदापति काव्य क नायिका के िकार देखि देखि के आलोचक सभ मस्त छथि ।ओ बैर अथात दिरीफल सू बेल क याता मे व्याणि क रहल छथि ।
पहिल बदरि कुच पुनरंग ।दिने दिने बाढय पाडए अनंग ।
से पुन भए गेल ीजिक पीर ।अब कुच बाढल सिरफल जोर ।
माधि पेखल रमणि संधान ।घाटहि भेटल करत सिनान ।
सुखद अछि कि विदापतिकाव्य मे विदान लोकनि नारियल,टाभनेबो आ तरबूजा नहि खोजलाह,यदि ई सब फल हुनका भेटल जायत,तखन फेर आलोचक महोदय क आनन्द क कल्पना नहि कएल जा सकैत अछि ।मात गौरी िंकर चौधरी कहैत छथिन्ह
फल आ तरकारी मे संकर(हाईब्रिड) क कल्पना केनए विदान लोकनि बिसरि गेलाह,नहि त विदापति काव्य क असफलता पर दू-चारि टा पी0एच0डी0 आउर संभि छल ।
कहबा क तात्पर्य ई जे शृंगारिक िणनि मे ई सब परंपरा र प मे आबि गेल ।उरोज,नितंब,कटि,जाघ,त्रिबली क दनि कतहु कतहु परिस्थितिा आ कतहु सायास भ गेल अछि;मुदा विदापति क कवियि क ई केन्द्रीय स्थल नहि अछि ।विदापति पर तत्कालीन काव्य परंपरा

क पभाि अछि ।ई समय अछि संस्कृत साहित्य मे अमर क कृत'अमर क ितक',भतृहिर कृत'शृंगारिातक'जयदेि कृत'रतिमंजरी' गोधिनिाचार्यकृत'आयासप्ताती''शृंगारतिलक'(कालिदास)क अनुकरण क ।कवि लोकनि जी जान सू ितक(सेचुरी) बनएबा मे व्यस्त भ गेलाह ।ई समय छल काव्यर प,छंद,भाि,भाषा सब केत्र मे अनुकरण क। संस्कृत साहित्य मे ई रचनात्मकता क दृवि सू उल्लेखनीय समय नहि छल ।विद्यापति क संस्कृत साहित्य पर सेहो ई पभाि देखल जाइत छैक ।कवि एहि सब पभाि क अतििमण अपन अिहट आ मैथिली रचना मे करैत अछि ।व्यक्ति के अपन नाम केहन नीक लागए छैक,मुदा कवि विद्यापतिअपन नाम सेहो लोकभाषा आ उच्चारण के तजिपर बदलि लैत छथि-

बालचंद विज्जाइ भासा दुहु नहिं लग्गइ दुज्जन हासा ।

सो परमेसर सेहर सोहइ,इणाच्चइ णाअर मन मोहइ ।।

उतर सामंतािदी भारत मे रहए िला विद्यापति अपन समय आ इतिहास क ि र गजिि सू व्यवथित छलाह ।सामंती िासन के नजदीक सू देखए िला विद्यापति तत्कालीन राजनीतिक नपुंसकता क बडड नीक जूका परखैत छथिन्ह ।राजदरबार मे रहए िला राजकवि राजा आ राजपविार क कमजोर नस पर कुिलतापूिक हाथ राखैत छथि ।हजारी पसाद द्विदी कीतिलिता के विषय मे कहैत छथिन्ह "एहि मे इतिहास क कविदृि जीिि र प अछि । एहि मे ने काव्य के पति पकपात अछि ने इतिहास क उपेका । "

जाहि विदान के तुलसीकृत रामचरितमानस क उतर काण्ड मे कलियुग क पताप देखाइत छैक,ओ कृपा क के कीतिलिता क वितण देखि लेथु ।

काकाए आए राज मानुसकरी पीक्स िरि आगे आंग डगर

आनक कालक आनका लाग पातहूतह परठीक लिआ माग।
बाहमणक यजोपवीत चाडाल का आ गल।
शिशाक पयोधरे जकाक क हदय चूर ।
धन संचरे धोल हाबथ हका बापर चूकर जाबथ ।
आतिविवितिरोलहो नगर नवह नर समुदओ ।।
यदवा ई जौनपुर नगर क विवि अवछ, मुदा ऐवतहावसक पमाण अवछ कक कावथला क वस्थवत सेहो एहने छल ।एक अन्य स्थान पर विदापवत जावत व्यवस्था मे विघटन क वचह देवख रहल छवथन्हजवत अजावत विवह अधम उतम का पारकपवरवतवन के एते नजदीक सू देखए विा धमवआ दवन क स्थावयत्व मे कते विशास करत ! मुदा,विदापवत क पदाविली मे धमवक उच्च कोवट क दवन होइत अवछ ।कछु विदान विदापवत रचनाविली मे धमवआ अध्यात्म खोजए विा क वदस लाठी ल के दौडए छवथ ।आचायवि्कल पदाविली मे शृंगावरकता पर बल दैत,एकरा अवायवतिः ऐवहक घोवत करैत छवथ ।ओ व्यंग्य करैत कहैत छवथ ‘‘आइ-कावि आध्यावत्मकता क चश्मा सस्ता भ गेल छैक ।ओ पवहन के कछु लोग ’गीतगोविन्द‘ के साथवह पदाविली मे आध्यावत्मक संकेत देखैत छवथ ’’ ि्कल जी पदाविली के शृंगावरक सावबत करए पर तूवल गेलाह । मुदा परवती आलोचना मे ई कहल गेल कक शृंगार भाविना मे तन्मयता क गंभीर अनुभूवत आध्यावत्मकता मे रपातवरत भ जाइत छैक । एवह सहमवत क बाविजूद कछु लोग ि्कलजी क वनष्कषवके नवह मानबा मे पाप बूझैत छवथ । एहने एकटा विदान छवथ आदरनीय खगेन्र ठाकुर जी।
एक टा आलेख मे ओ कहैत छवथन्ह जे भवकत भाविना होइतहु ओ भवकत आंदोलन के अंग नवह छवथ । हमरा ओवह तथाकवथत आंदोलन सू विदापवत के जोडबा मे कोनो रवच नवह । मुदा एकटा बात स्पष्ट

अछि पदावली मे भक्ति भाव क अद्वितीय स्थल अछि ।विद्यापति क धार्मिकता एहि माने मे अद्भुत अछि कि ओ कोनो संस्थान क लेखक नहि छथि । एहि दृष्टि सू हुनकर भक्ति भाव कोनो मठ क ध्वजा लके नहि चलैत अछि ।साम्प्रदायिकता क एहि अनुपस्थिति पर ध्यान नहि देल गेल । राधा-कृष्ण के साथहि भगवान शिव,पार्वती,गंगा आ भैरवी क ओ स्तुति करैत छथि ।ई धार्मिकता सब के साथ ल के चलए वाला धार्मिक भावना अछि ।ई धार्मिकता धन-संपत्ति आ यश क लेल नहि छैक । एकर मूल उद्देश्य अछि दुनिया सू आसुरी वृत्ति क नाश-

जय -जय भैरवि असुर भयाओनि,पशुपति भामिनि माया ।

एहि कविता के आलोचक गण निराला क प्रसिध कविता 'राम की शक्ति पूजा ' क ओहि अंश सू तुलना करथि,जाहि मे भगवान राम क शक्ति पूजा सू प्रसन भगवती क उदय होइत अछि ।विद्यापति क कविता धर्म के खाल जूका नहि ओढैत अछि,ई भारतीय धर्म भावना के उच्च आदर्श के अनुकूल अछि ।हिन्दी क रीतिकालीन कविता जूका एकरा मे कोनो दयनीयता नहि अछि ।रीति कविता क धार्मिकता क मूल मे अछि कवि क विलास भावना मे छिपल अपराध भाव । एहि डर सू ओ भगवान क नाम लैत छथि । एकटा कवि कहैत छथिन्ह यदि सूतक जायत त कविता बूझब नहि त राधा कृष्ण क स्मरण एकटा बहाना अछि ।विद्यापति पदावली मे एहि दैधता क लेल कोनो स्थान नहि ।एहि मे भक्त क कातरता, ओकर दैन्य, आत्मसमर्पण आ अनन्य निष्ठा व्यक्त अछि ।

विद्यापति भक्ति या शृंगार दूनू भावना के प्रकृति के मुक्ताकाश मे देखैत छथिन्ह ,ताहि दुआरे एहि मे मिथिला क प्राकृतिक सुषमा क अद्भुत दर्शन होइत अछि ।एहि अन्हार पीबए वाला सूर्य क तेज सू

अन्यत पकिचय नकि भेटत- ए री माकिक पलटे कहार ।अर न काबिए लागल अन्हार ।

पेम आ माधुर्यमे डूबल पकृक्त कतहु सादृश्यमूलक अलंकार के रप मे पकट होइत अछि -पकहल बदकर सम पुन निरंग । आ कतहु विम्बि क रप मे

जइसे डगमग नकलिक क नीर ।

तइसे डगमग धकि क रिर ।।

सिंत गीत क सौन्दर्यति कोनो भारतीय भाषा मे नकि कलत ।

"नलि सिंत नलि मलयाकल

मातल नि अकल कूल "

एकि कविता क तुलना कराला क सरसति निदना सू करब तखन महाकवि विदापकि क मौकलकता क पता चलत ।

पता नकि कोन आलोचक विदापकि के अकिनि जयदेि कहने छल । एकि सू अधलाह उपमा आ उपनाम साकिय जगत मे दोसर कोनो नकि देल गेल ।गीतगोविन्द मे जयदेि कहैत छकिन्ह-

यकद हकिस्मरणे सरसं मनो यकद विलासकलासु कुतूहलम् !

मधुरकोमलकान्तपदािली शृणु तदा जयदेसिरसतीम् ।

अथात यकद हकि स्मरण मे मन सरस हो,यकद विलास-कला मे कुतूहल हो,तखन जयदेि क मधुर कोमल,कान्त पदािली के सुनु ।

विदापकि त अपन पदािली के सम्बन्ध मे कोनो एकरस घोषणा नकि कएलकि, तैयो विदापकि के केलि शृंगार सू जोडनए विदापकि के कमतर करए के पयास अछि । विदापकि के शृंगार आ भकि के कवि के रप मे देखु, कोनो कदकत नकि,मुदा ओ साकिय क िहतर पयोजन के ल के चलैत छकिन्ह ।तखने विदापकि क कविता मे कछतराएल विािल ददकि के अनुभि क सकब । राधा क पतीका

मिथिला के आम नारी शिक्ति प्रतीक्षा अछि । सामंतवादि पुरुष आ स्त्री के अलग -अलग संस्कार देलकए ।ओहि संस्कार मे नारी क लेल छलए अंतहीन प्रतीक्षा ।एहि प्रतीक्षारत नारी के कनैत-खीजैत आ सियिं के मनाबए के कतेको कवित सू पदावलि भरल अछि ।
कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ ! पद मे दुख क विशाल व्यंजना अछि ।जन्म सू मृत्यु तक दुख क सागर मे रहबा क तकविद्यापति क नहि मिथिला के साधारण पुरुष क अछि । 'दुखहि जनम भेल,दुखहि गमाओल 'क व्यंजना छह सौ साल बाद फेर एकटा कवि क सकल ,जकरा भारतीय साहित्य निराला नाम सू जानैत अछि ।
'दुख ही जीवनि की कथा रही' पर लटू साहित्यिक शिविद्यापति क अथविभक्ति कविता के जेना सामान्य धार्मिक कोटि मे राखि देल जाइत अछि ।ई एकटा सास्कृतिक भिकि विषय अछि ।
संस्कृत काव्य शास्त्र मानैत अछि जे महान रचना मे अथकि सम्भावकि बहुस्तरीयता होइत छैक ।अतः रचना क शरीर सू नहि ओकर आत्मा सू केन्द्रीय संविदिना क पहचान होएबा क चाही । विद्यापति मे साहित्य आ शास्त्र क सब मान्यता एमहर ओमहर भ गेल अछि,एहि ठाम आलोचना क लोकतान्त्रिकता देखाइत अछि ! जकरा जे मून हो लिखि दे आ पी0एच0डी0 क डिग्री ल ले ! शिह रे विद्यापति !आ शिह रे विद्यापति क आलोचना`!

भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक जटिलताक चित्रण

साहित्यक पक्षमान बदलैत रहैत अछि ,मुदा किछु तत्व क निरंतरता बनल रहैत अछि ।नाटक साहित्य मे दू तत्वक महत्व कमोबेसि सब युग मे रहल अछि । पाठ्यता आ रंगमंचीयता एहने दू टा तत्व अछि ।पहिलक सम्बन्ध मोटामोटी विषयवस्तु आ दोसरक सम्बन्ध शिल्प सँ अछि ।विभा रानी लिखित 'भाग रौ' क विश्लेषण ऐ दृष्टि सँ कएनए उचित अछि ।

विभा रानी द्वारा ऐ नाटक मे भीखमंगा बच्चाक जीवन आ समाजक प्रति दृष्टि क चर्चा कएल गेल अछि ।लेखिका द्वारा चयनित विषय वस्तु मैथिलीए मे नइ बल्कि आनोआन भाषा मे विरल अछि ।भीखमंगा बच्चा सभ आपसी वार्ता मे समाज आ जिनगीक कतेक प्रति पक्ष सँ परिचय करबैत अछि ।समाज ,सरकारक साथेसाथ भगवानहु सँ उपेक्षित ई बच्चा भारतीय समाज आ राष्ट्रक महानता पर व्यंग्य करैत अछि ।

भीखमंगा बच्चा सभ अपन जिनगी क कतेक पक्ष-गोविन्दा,चिकाक रोटि,हिरन्ख,अभिषेक आदि क चर्चा सँ करैत अछि आ अपन कथात्मक सन्दर्भ मे ई जेहन करुण सावित होइत अछि ,रंगमंचीय दृष्टि सँ ओहने कलात्मक ।यद्यपि विद्वान लोकनि के हीरो हीरोइन क ई अनावश्यक चर्चा अनसोहात लागि सकैत छन्हि मुदा अपन संदर्भ मध्य ई रुचिगर आ पाठ्यताक बुझाइत अछि ।

'दानापुर माने दाना स' पूरम पूरा ' भाग रौ नाटकक कथा प्रसंग देखि एहने दाना दाना चुगए वाला सबसँ वंचित आ कमजोर वर्ग क कथा छैक ।

एकहि गिकि सबसू अभीक्सत भूख,चाह आ गंध क्थकए,रोटी क गंध ।पेट मे 'मरल सनक्करबो'क थाह नइ क्सललइ ;देकि नीक्तकमाता आ पभुगिपिर पचण्ड पहार अक्छ ।भूखल बच्चा ऐ समाज मे अपन स्तर आ महर्य सू पक्रक्यत अक्छ,ताक्ह दुआरे बच्चा1 कहैत अक्छ 'पधानमंती छे जे मक्र जेबे त' देसक काजधंधा थक्म्ह जेतै ।

नाटकक भाषा विषियस्तुक अनुरप कर आ मारक अक्छ ।तिा आ देजि िब्द क बाहुल्य नाटक के रक्चगर आ रंगमंचीय बनेने रहैत अक्छ ।

'क्सटी स' साहेब भ' गेलै त' हमरा आओरक भूख-क्ययासक रंग बदक्ल गेलै की?' उपरोक्त िक्यक पशािचकता आ कथनगत असंभाव्यता एकटा तनाि के जन्म दैत अक्छ ।

भीखमंगा सभ आपसी गपपि मे दूटा मक्हला राजनीक्तज क चचा सेहो करैत अक्छ आ विडंबना ई जे दूनू मक्हला पक्रिरिािद आ भारतीय राजनीक्त क अनुिरिता क पोषक छक्थ ।बच्चा सभ कहैत अक्छ जे पक्ढ के की बनब?ई या ई ,दुभाग्य देखु जे दूनू मक्हला अपन विदिता आ नैक्तक िक्कत सू जनमन क नेतृर्य नइ कइलक ।

एहन समाज आ राजनीक्त एकटा खास तरहक भाषा क इस्तेमाल करैत अक्छ ।ई भाषा पथमदृिया अश्लील आ मूलतः असंिदनिील होइत अक्छ ।

'ई डंडा एमहर स' घुसतौ त' मुंह दने क्नकलतौ '

िचर्सि ,आिमण आ यौनविदेष सू भरल ई भाषा एकटा खास सामंती आ मदािदी समाजक मानक्सकता के पोक्रत करैत अक्छ ।

ऐ समाजक बुक्धजीिी एहन भाषाक उपयोग नै करैत अक्छ ,मुदा अपन अनुिरिता मे इहो तेहने अक्छ । दू टा पतकार - युकि आ युिती अपन विक्त आ संस्कार मे कक्छु अलग अक्छ ,मुदा इहो

ि गि सृजनि ीलता आ नि निमेष सू पूणति: रखैत अछि ।युिती मे किछु नया करबाक संभाि ना अछि ,मुदा अंधकारक विराट आकाि मे ई संभि नै भेल ।

ऐ ि गि क भाषा मे एकटा खास किस्मक नफासत अछि । तत्सम बहुलता आ अंगेजी ि ब्द आ ि क्यि क बाहुल्य सू ई ि गि अपन विि ि अवस्तर्य आ र क्ष पर बल दैत अछि । ‘नॉट ए बैड आइवडया ‘ ही इज डफर ,बी पेि ट सनक चालू ि क्यि रंगमंचीय अछि ।

रंगमंचीय उपकरण क र प मे किछु नि पयोग सेहो अछि ।नाटक मे समि ति सि रि मे गान या बलाघात सू किछु खास कहबा क पयास कएल गेल अछि ।

‘हम सब किछु नय क सकैत छी‘

आ

हमसब.......मात पुतली भक

ई सब अपन संदभि मे बहुत अथि नि अछि ,मुदा ऐ ठाम रंगमंचीय कौि ल सेहो अपेक्षित अछि ,अन्यथा अंक्षाम पभाि उवडयएबा क संभाि ना अछि ।

भाग रौ नाटकक असफलता सेहो स्पि अछि । दोसर अंकक पहिल दृश्य मे मंगतू एक पृष क सि गित बाजैत अछि । ऐ दृश्यक उदेश्य स्पि रहितहू रंगमंचीयता संदिग्ध अछि ।दोसर अंक मे लेखकका क नियंतण नाटक पर कम अछि । भीखमंगा ि ला संदभि जतेक जीि ित अछि ,ओतेक पतकार आ पेस ि ला नै ।मध्यातर क बाद ऐ गुर यि किषि ि क कमी एकदम स्पि अछि ।

नाटकक अंत एकटा कविता सू होइत अछि ।संयोगि ि ऐ

कविताक समानता आ समरपता हिन्दी कवि शिमिर बहादुर सिंह क कविता 'काल, तुझसे होड है मेरी 'सू बहुत ज्यादा अछि ।

शिमिर- काल,

तुझसे होड है मेरी: अपराजित तू -

विभा -ओ काल...

अही स' हू,अही स' अछि टकर हमर

शिमिर-भाि,भाविपकर

सुख,आनंदोपकर

सत्य,सत्यासत्योपकर

विभा-जे अछि सत्यो स' बढ़ि क' सत्य

विि स' बढ़ि क' वि

अमरो स' अमर

सुंदरतो स' सुंदर.....

ई कविता नाटक 'भाग रौ ' क महत्वपूर्ण भाग नै अछि ।ते एकर शिमिर क कविता सू समानता क कोनो खास महत्व नै अछि ।मैथिली नाटकक इतिहास मे विभारानी अपन ऐ नाटक क संग विशेष महत्व क उतराधिकारिणी छथि ।विषयवस्तु मे निर्निमेष क संगेसंग टीटमेट क अभिनविता 'भाग रौ 'नाटक के उल्लेखनीय बनबैत अछि ।

झमेलिया बिआह

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक तेसर नाटक। ऐ सँ पहिले ‘मिथिलाक बेटी’ आ ‘कम्प्रोमाइज’ । तीनू नाटक अपन औपन्यासिक विस्तार आ काव्यात्मक दृष्टि सँ परिपूर्ण। लेखक समकालीन विश्व आ गद्यक पारस्परिकतासँ नीक जकाँ परिचित छथि, तँए हुनकर संपूर्ण रचना-संसारमे समकालीनताक प्रभाव पसरल अछि, जते प्रत्यक्ष, ओतबे परोक्ष। समकालीनताक प्रति हुनकर झुकाव ‘झमेलिया बिआह’ क एकटा विशेष स्वरूप दैत छैक। बारह सालक नेनाक बिआहक ओरियाओन करैत माए-बापक चिंता जते हूसबै छैक, माएक बेमारी ओतबे सुन। लेखकक रचना संसारमे काल-देशताक लेल विशेष जग्गह, तँए ई नाटक प्रहसनक पारंपरिक स्वरूप देखबैत तो किछु आर अछि। पहिले दृश्यमे सुशीला कहैत छथिन ‘राजा दैव कोन ठेकान..., अगर दुरभाखा पडतै तँ सुभाखा किअए ने पडै छै...।’ आ राजा, दैविक कतयेक प्रति ई उदासीनताक अनुभव समस्त आस्तिकता आ भाग्यविादिताके खंडित करैत अछि।

सभ नाटकमे भरत मुनिके खोजनाइ जरूरी नइ, ओना उत्साही विचिक अर्थ-प्रकृति, कार्यावस्था आ संधिक खोज करबे करता, आ कोनो तत्व नइ भेलतक तँ बिचकवड उठता। यद्यपि लेखकक उद्देश्य स्पष्ट अछि। द्वितीय रंगमंच जेना-नान्दी पाठ, मंगलाचरण, प्रस्तावना, भरतवाक्यक प्रति लेखक कोनो आकर्षण नइ देखबैत छथिन। एतबे नइ पाश्चात्य नाट्य सिधांतके हूबहू (देकसी) खोजएबलाके आलस सेहो लागतनि। तँए ‘झमेलिया बिआह’ नाटकमे स्टीरियोटाईप संघर्ष देखबाक ईच्छुक भाय लोकनि कनेक बच्चा बचा

के चलब। विसंगत आ समस्या नाटकक फामूलाके नाटकमे खोजएबलाके सेहो झमेला बुझा सकैत छन्, कारण एक तू लेखक कोनो फामूलाके स्वीकार के नइ क लखैत छथिन ।
सीधा-सीधी अंक-विहीन 'झमेलिया बिआह' नओ गोट दृश्यमे बूटल अछि: अनेक दृश्यस्य एकाकी। ने बहुत छोट आ ने नमहर। तीन चारि घंटाक बिना झमेलाके 'झमेलिया बिआह' । एकेटा परदा या बॉक्स सेटपर मंचित होमए योग्य। मात घर ि दरबज्जाक साज-सज्जा। तेरहटा पुरुष आ चारिटा स्ती पातक नाटक। छोट-छोट रसगर संवाद, संघर्ष आ उतार-चढाव कि संभावनासू युक्त। ने केतौ नमहर स्वगत ने नमहर संवाद। असंभव दृश्य, बाढ़ि, हाथी-घोडा, कार जीपक कोनो योजना नइ। संवादक दारा विभिन्न बरियाती या याताक कथासू व्यंजना आ आदात आकर्षण। कथामे चैता केर रमणीयता आ मर्यादा, तूए जोगीराक वर्दाहीनता आ उद्दाम ि ग नइ भेटत। गंभीर साहित्य सर्जि अपन समैक अन्न, खून पसेनाक गंधसू युक्त होइत अछि। आ 'झमेलिया बिआह' सेहो पावनि-तिहार, भनसा घरक फोडन-छौक, सोयरी, ि मि ि आ पकमानक बहुरिणी गंधसू युक्त अछि, एकदम ओहिना जेना पाब्लो नेरुदा विभिन कोटिक गंधके कविताम खोजैत छथिन।

'झमेलिया बिआह' क सामाजिक आ सास्कृतिक आधारपर कनेक विचार करू । ई ओइ ठामक नाटक अछि, जतए कर्मफल जन्म, संयोग आ कालदेवताके अंकुश छैक, जइठामक लोक मानैत छथिन जे कखनो मूहसू अ ि च कथा नै बजाली। दुरभक्खो विषाइ छै। सामाजिक रूपे ओ ि गि जेकर हूसी-खुशी मावटक तरमे तोपा गेल अछि। लैवाक विचार हुनकर ई जे पुरुख आ स्तीगणक काज फुट-

फुट अछि। आ विकासक उदाहरण ई कि जइठीन मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तइठीन साल भरि पथ-पाकक संग दाइ खाएब पार लागत?

मुदा जगदीशजी केवल सातत्य आ निरंतरताक लेखक नइ छथि‍न, प्रकृतिकि छोट-छोट वस्तुपर अपन कैमरासँ फ्लैश दैत रहैत छथि‍न। तँए यथास्थितिवादिक लेल अभिशप्त होइतो यशोधिर बुझैत छथि‍न जे मनुक्खक मनुखता गुणमे नुकाएल छै नै कि रंगमे। आ सुशीला सामाजिक व्यवस्थापर बिगड़ैत छथि‍न कि विधाताके चूक भेलनि जे मनुक्खोके सीघ नागरि किअए ने देलखिन। आ ई नाटक कालदेविताक ओइ खंडसँ जुड़ैत अछि जतए पोता श्यामा तेरह के थिकनि आ तीन के थी कहैत छथि‍न। ऐठाम अखबार आबैत छैक आ राजदेव देशभक्तिक प्रभाषाके विस्तृत बनेबाक लेल कटिबध छथि‍न। खेतमे पसीना चुबबैत खेत्तहर, सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोझहार, धारमे नाव खेबैत खेबक्कहार सभ देशसेवा करैत अछि, आ राजदेव सभके देशभक्त मानैत छथि‍न।

‘झमेलिया बिआह’ क झमेला जिनगीक स्वाभाविक रंग प्रकृतिसँ उत्पन्न अछि, तँए जीवनक सामान्य गतिविधिक वातावरण चलैत रहल अछि कथाके बिना नीरस बनेने। नाटकक कथा विकास बिना कोनो बिहाडिक आगू बढ़ैत अछि, मुदा लेखकीय कौशल सामान्य कथोपकथनके विशिष्ट बनबैत अछि। पहिल दृश्यमे पति-पतीक बातचितमे हास्यक संग समए देविताक क्रूरता सानल बुझाइत अछि। दोसर दृश्यमे झमेलिया अपन स्वाभाविक कैशोर्यसँ समैके दारा तोपल खुशीके खुनबाक पयास करैत अछि। पहिल दृश्यमे व्यक्ति परिस्थितिके समक मूक बनल अछि, आ दोसर दृश्यमे व्यक्तित्व आ

समैक संघषकिथाके आगू बढबैत कथा आ वजनगीके वदि ाकधावरत करैत अवछ। तेसर दृ ्य देभिवक्त आ विधि ि विाहिक पशके अथवि विस्तार दैत अवछ, आ ई नाटकक गवतसू बेि ी वजनगीके गवताील करबाक लेल अनुपावणत अवछ ।
चावरम दृ ्यिमे राधे ्याम कहैत छवथन जे कमसू कम तीनक वमलानी अबस हेबाक चाही। आ, लेखक अत्यंत चुंबकीयतासू नाटकीय कथामे ओइ वजजासाके समाविष्ट कऽ दैत छवथन वक पता नइ वमलान भऽ पेतै आ वक नइ। ई वजजासा बवरयाती-सवरयातीक मावरपीट आ समाजक कुकुड चावलसू वनरंतर बनल रहैत छैक। आ पाचम दृ ्यिमे वमवथलाक ओ सनातन ‘खोवटकरमा’ पुराण। दहेज, बेटी, वबआह आ घटकक च ि ्यिूह! आ लेखकक कटुवक्त जे ने केि लि मैवथल समाज बवल्क समकालीन बुवधजीिी आ आलोचनाक लेल सेहो अकाटय अवछ: कतए नै दलाली अवछ। एक्के ि ब्दके जगह-जगह बदवल-बदवल सभ अपन-अपन हाथ सुतारैए ।
आ घटकभायके देवखअनु। समैके भागबा आ समैमे आवा लगबाक स्पष्ट दृ ्य हुनके देखाइ छवन। अपन नीच चेष्टाके छुपबैत बालगोविन्दके एक वछटा आि ीिाद दैत छवथन। बालगोविन्दके जाइते हुनकर आवस्तकताक र पातरण ऐ वबन्दुपर होइत अवछ ‘भगि ान बडीटा छवथन। जू से नै रवहतवथ तू पहाडक खोहमे रहैबला केना जीबैए। अजगरके अहार कतए सू अबै छै। घास-पातमे फूल-फड केना लगै छै.......’ बातवचतक ि ममे ओ बेर-बेर बुझबैक आ फवरछाबैक काज करैत छवथ। मैवथल समाजक अवालगओना। महत्ि देबै तू काजो कऽ देत नइ तू आवा लगा कऽ छोडत !!!!!

छठम दृ ्यिमे बाबा आ पोतीक बातवचत आ बवरयाती जएबा आ नइ

जएबाक औचित्यपर मंथन। बाबा राजदेव किनको नइ लऽ पाबै छथिन। बरियाती जएबाक अनिवार्यतापर ओ बीच-बीचहामे छथिन 'छइहो आ नहियो छै। समाजमे दुनू चलै छै। हमरे बिआह मे मामेटा बरियाती गेल रहथि। 'मुदा खाए, पचबै आ दुइर होइक कोनो समुचित निदान नइ भेटैत छैक। बरियाती-सरियातीक व्यवहार विस्तृत बनबैत राजदेव आ कृष्णानंद कथे-बाहकमे ओझरा कऽ रहि जाइत छथि। दस बरखक बच्चाके शाधमे रसगुल्ला मावा-मावा कऽ खाइबला हमर समाज बिआहमे किएक ने खाएत? तूए कामेसर भाय किमे अढाय-तीन सए रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ पचा गेलखिन आ रसगुल्लो सरबा एतए ओतए नइ आंतेमे जा नुका रहल !!!

सातम दृश्य सभसू नमहर अछि, मुदा बिआह पूर्वक आ कन्यागतक झीका-तीरी आ घटकभाय दारा बरियाती गमनक विभिन्न रसगर पसंगसू नाटक बोझिल नइ होइत छैक। आ घटक भायपर ध्यान देबै, पूरा नाटकमे सभसू बेसी मुहावरा, लोकोक्ति, कहबैकाक पयोग ओएह करैत छथिन। मात सातमे दृश्यके देखल जाए खरमास (बैसाख जेठ) मे आवा-छाइक डर रहै छै (अनुभव के बहाने बात मनेनइ)..... पुरुष नारीक संयोगसू सृष्टिक निमाण होइए (विसधातक तरे ध्यान मूलबिंदुसू हटेनइ)...... आगूक विचार बढबैसू पहिने एक बेर चाह-पान भऽ जाए (भोगी आ लालुप समाजक पतिबिम्ब) ...... जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजके कइये कऽ छोडै छी (गतिशक्ति)....... वजनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लागल (कथा कहबासू पहिले ध्यान आकर्षित करबाक सफल पयास).... खाइ पीबैक बेरो भऽ गेल आ देहो हाथ अकबड गेल...... कुटुम नारायण तू ठरलो खा कऽ पेट भरि लेताह मुदा हमरा तू कोनो गंजन गृहणी नहिये रखतीह।

(पकारातरसू अपन महत् आ योगदान जनबैत ई ध्‌क्ति जे हमरो कहू खाए लेल)

आठमो दृ्यिमे बालगोविन्‍द, यिधर, भागेसर, घटकभाय कआह आ बकरयातीके बुझौएल के कदान करबा हेतु पयासरत् छथ, आ लेखक घटकभायके पूण नागट नइ बनबैत छथन, मुदा ओकर मीठ-मीठ ब्‍दक कक्हताथकि नीक जका खोक्ल दैत छथन। ऐ दृ्यिमे बाजल बात, मुहारा, लोकोकन आ पसंग, उदाहरणक बले ओ अपन बात मनबाबए लेल कटबध छथन। हुनकर कहबैकापर कयान कदओ-जमात करए करामात..., जाबत बरतन ताबत बरतन....., नै पान तू पानक डंक्टयेसू....., सतरह घाटक सुआद......., अनजान सुनजान महाकल्‍याण।

मुदा घटकभायके ऐ सुभाकताकक की कक्हताथ? ई अथपिढबाक लेल कोनो मेहनक्त करबाक जररी नइ। ओ राधे्यामके कहै छथन 'जखन बकरयाती पहुंचैए तखन बित्त ठंडा गरम, चाह-पान, कसगरेट-गुटका चलैए। तइपर सू पतोरा बान्‍हल जलपान, तइपर सू पलाउओ आ भातो, पूकडओ आ कचौकडयो, तइपर सू रंग-करंगक तरकाकयो आ अचारो, तइपर सू कमठाइयो आ माछो-मासु, तइपर दक्हयो, सकडौकडओ आ पनीरो चलैए।

नाटकक नओम आ अंकतम दृ्य। बाबा राजदे आ पोती सुनीताक तालाप, आक्खर ऐ तालापक की औकत्‍य? जगदी जी सन कसधहस्‍त लेखक जानै छथन जे बीसम आ एकैसम सदीक कमथला पुरषहीन भऽ चुकल छैक। याती जीक कवतापर वचार करैत कयती अनाकका कहैत छथन 'कहारक बे कक्या वस्‍थाकत

पकिागणक कथ्नया छथ्नि। 'थ्नसंदूर थ्नतलथ्नकत भाल' ओइ ठाम सथ्नदिा थ्नकंताक गहीर रेखाक पुंज रहल छैक।

....भूमंडलीकरणक बादो ई थ्नस्थथ्नत अथ्नछ जे थ्नमथ्निला, थ्नतरहुत, िााली, सारण आ चंपारण यानी गंगा पारक थ्नबहारी गाम सभ तरहे पुरषथ्नबहीन भऽ गेल छैक। ......सभ थ्नमया परदेिी थ्नमया छथ्नि ओइठाम। गाममे बचल छथ्नि ृिधा, पथ्नरत्यक्ता आ थ्नकिारी सभ। एहन थ्नकिारी, जेकर तुरते तुरत थ्नबआह भेलै या फेर नइ भेल होए, भेलए ऐ दुआरे नइ जे दहेजक लेल पैसा नइ जुटल हेतैक। 'थ्नबआह आ दहेजक ऐ समस्याक बीच सुनीताके देखल जाए। एक तरहे ओ लेखकक पूणि िचािरक पथ्नतथ्नथ्नथ्नध अथ्नछ। यदथ्नकदा कखनो-कखनो राजदेि, कृष्णानंद आ यिाधर सेहो लेखकक थ्नवचार ्यिक्त करैत छथ्निन। सुनीता, सुिीला आ राजदेि थ्नमथ्निलाक स्थायी आबादी, आ घटकभाइक बीच रहबाक लेल अथ्निमािप्त पीढी। कृष्णानंद सन पढल-थ्नलखल युथ्नकक स्थान थ्नमथ्निलाक गाममे कोनो खास नइ। आ लेखक थ्नबना कोनो हो-हल्ला केने नाटकमे ऐ दुष्पृथ्निके राथ्नख देने छथ्नि। जीनि आ नाटकक समातरता ऐठाम समाप्त भऽ जाइत छैक आ दूटा अधािृित्त अपन चाथ्नल स्िभािके गमैत जुथ्नड पूणािृित्त भऽ जाइत अथ्नछ।

आदर्शिक उत्थान आ यथार्थिक पतन: उत्थान -पतन

जगदीश प्रसाद मंडल जी क एहि उपन्यास मे आदर्शिक पक्ष एकटा खास दृष्टि अछि ।लेखकीय दृष्टि मे आदर्श अछि ।ओ मानवीय संभावना क उच्चादर्श मे विशवास करैत छथि ।मानवीय प्रवृत्ति क नीक पक्ष पर ओ झूमैत छथि आ अधलाह पक्ष पर कानैत छथि ,मुदा एहि हर्ष आ विषाद क लेल आवश्यक संघर्ष उपन्यास मे समर्पितरुपेण नहि अछि ।उपन्यास क प्रारम्भ गंगानन्द क कथा सँ होइत अछि आ प्रारम्भिक किछु पृष्ठ तक कथा क विकास ,चरित्र क विकास,परिस्थिति केँ रंग आ मनोविज्ञानिकता क चित्रण मे लेखक केँ अतीव सफलता भेटैत अछि ।लेखक क ई नियंत्रण संपूर्ण उपन्यास मे एके रंग नहि भेटत । जाहि ठाम लेखक कथा क अनियंत्रित जंगल मे भ्रमण कर' लागैत छथि,ओहि ठाम पाठकीयता प्रभावित होइत अछि ।तहिना लेखक चरित्र क विकास मे हस्तक्षेप करैत छथि आ पात्र कठपुतली जँका लेखक सँ नियंत्रित होइत अछि ।
गंगानन्द,विसेसर सनक सब प्रमुख पात्र एहि आदर्शवादी ढंग आ रंग सँ निर्मित अछि । निश्चित मे ई कवि जगदीश प्रसाद मंडल क जीत अछि आ लेखक जगदीश प्रसाद मंडल क हारि ।पात्र क व्यक्तित्व क विकास परिस्थिति क तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक व्यवस्था सँ कम आ लेखक क आदर्शवाद सँ बेसी होइत अछि ।ताहि दुआरे जत' पाठक लाठी आ भाला चलबा क अनुमान लगबैत अछि,ओहि ठाम हृदय परिवर्तित सब काज क' दैत छैक ।विसेसर केँ खेत एकटा मामूली सिपाही सँ भेटि जाइत छैक ।निश्चित रूपेँ जिन्दगी मे ई विरल घटना संभव अछि,मुदा ई समाजक प्रतिनिधि घटना नहि अछि ।विरल घटना सेहो साहित्य क अंग भ' सकैत अछि ,मुदा ओकर अंकन

अनुभकि भटी सू अकायिअछ ।

ई उपन्यास सतितंतता पूिकि समय सू सम्बक्धत अछ ।बीसम सदी क पूिधकि कछु घटना क उल्लेख उपन्यास मे अछ ।सिभावकि अछ जे उपन्यास क तुलना 'बलचनमा' आ 'मैला आूचल' सू हो । उपन्यास मे ऐक्तहाक्सकता क बलाघात क कतहु पयास नक्ह अछ । ताक्ह दुआरे अतीत क कालखण्ड क उपन्यास होएबा क बािजूद ई सामाक्जक उपन्यास अछ । उपन्यास मे क्मक्थला क सामाक्जक आ आक्थकि क्पछडापन के विषि क्चक्त्रत कएल गेल अछ ।क्मक्थला क सिागीन विकास लेखकक अभीि अछ ।लेखकक ई लक्ष्य एतेक महर्िपूणभि गेल छैक जे यथाथसिू आदकि पटरी बैसेनए अय्यंत कक्ठन भ गेल छैक ।

आधुक्नक काल मे उपन्यास विधा एकटा खास उदेश्य सू साक्हय्य मे विकक्सत भेल आ िमिः पधान होइत चक्ल गेल ।सामंती युग आ समाज क उय्कृिता आ भव्यता सू पक्रचय करेनए महाकाव्य विधा क काज छल । आधुक्नक युगक िगसिंरचना आ िगकृ्ति बदललए आ युगक उदेश्य सेहो बदक्ल गेलए । एक्ह युग क िैविष्टय के पकट करबा मे महाकाव्य विधा क कमजोरी पकट भेल,फलतः पद्य आ महाकाव्य क सीिकायतिा कम भेल ।नियुग के व्यक्त करबा क लेल गद,नाटक आ उपन्यास सनक विधा पर जोर पडलए ।महाकाव्य क स्थान पर कछु खास मकसद सू उपन्यास क आसन लाग' लागलए ।एक्ह विस्थापनक सबसू मुख्य कारण छल उपन्यास विधाक सिसिमािविता ।उपन्यास क पय्यास्थ विल्प सबककछु के अपना मे समाविि क लेलक ।विदान लोकक्न क बीच ऐ बात पर सिसिम्मक्त भेल क्क नियुगक पृक्ति के महाकाव्यायमक गहराई सू पकट करबा मे उपन्यास सक्म अछ ।'उय्थान-पतन' क लेखक उपन्यास विधाक

महाकाव्यात्मक आयाम सू पक्रचत छवथ ।हम ई नक्ह कक्ह रहल छी जे ई महाकाव्यात्मक उपन्यास अक्छ ,मुदा जाक्ह भाषा मे महाकाव्यात्मक उपन्यास क्लखल जाइत छैक,ओक्ह भाषा मे पक्हले एहने सामाक्जक उपन्यास सब क्मक्ल के एकटा रचनात्मक ितारिण क क्नमाण करैत अक्छ । ई हमर सौभाग्य अक्छ जे हमरा समय मे जगदीि पसाद मंडल सनक स्पि सामाक्जक बोध िला उपन्यासकार मैक्थली मे छवथ ।

।‘उत्थान-पतन‘ क संरचना यक्द भारतीय उपन्यास क संदभि मे कएल जाए तखन ओएह पेमचंदीय आ िरतचंरीय वजिन क स्पि अक्छ । गाम पर आ गाम क लोक क पक्त पेमचंद सू क्कछु बेक्सए अपनत्य क भाि । ई व्यक्क्त क स्िभाि सू ल के घर क संरचना तक स्पि अक्छ ।

‘कूचके ईटाक आ खढक छारल दरक्जा ।नीक कारीगर क जोडल देबाल आ नीक छाडक्नहार छाडने ,ते दरक्जा सुन्दर ।दरक्जा क ओसार मे एक भाग एकटा कोठली बनल ‘।

पेमचंद क उपन्यास मे अहा के खोजला पर गाम क पक्त पिसाक भाि नक्ह क्मलत । हू गाम क पक्त दया क भाि पेमचंद मे जरर अक्छ ।गाम क दक्लत-िक्चत जन क पक्त पेमचंद मे विषि पक्धरता क दृक्ि क्मलत,मुदा गाम क पक्त एकटा नास्टेक्ल्जक भाि जे आंचक्लक आंदोलनक विषिता अक्छ से अनुपलब्ध अक्छ । ‘उत्थान-पतन‘क लेखकीय दृक्ि मे क्कछु क्कछु रेणु क ग्ाम्य पेम अक्छ ।मुदा एक्ह ठाम रेणु िला विराट व्यंग्य अनुपलब्ध अक्छ ।

लेखकक दृक्ि क रप मे एकटा खास पगक्तिीलता उपन्यास मे व्याप्त अक्छ ।ई दृक्ि अक्छ क्पछडल मनुष्य के आगू बढएबा क उपिम । एकठाम विसेसर कहैत छवथन्ह-

'हमरा तोरा सन जे पछुआइल पक्िरि आ लोक अछि,ओकरा मे किछु एहेन दुरगुन अछि जकरा सुधारने बिना अगुआइब कठिन अछि '
उत्थान-पतन क भाषा पर विचार कएल जाए एकर भाषा मे कतहु बिहाड़ नहि भेटत एकदम आत्मीय ितालाप क भाषा-
'बीघा भिर मकइ ।पूच-पूच हाथक हियरयर हियरयर फुलायल गाछ।तीि-तीि,चािरटा बाइल गाछ मे झूमैत।जेना जुआन किनया अपन जुआनी क गुण सू झूमैत तहिना मकइ क गाछ झूिम झूिम एक दोसर सू लटा पटी सेहो करैत '।
यिद 'उत्थान-पतन' क तुिट क बात करी,त किछु मुख्य दोष अछि-
1 संिद मे स्फीित ।जखन विसेसर अपन सासुर मे अमृतलाल सू घर बनएबा क आगह सुनैत छिथन्ह तखन विसेसर एकटा लम्बा अनुच्छेद मे कालदेिता क महात्म्य बताबैत छिथन्ह ।श्यामानंद बोिरंग खुनएबा क बाद विसेसर के सामने एकटा नमहर भाषण मे वियािील पूंजी आ गितहीन पूँजी क चचा करैत छिथन्ह ।
2उपदेि क भाि कतहु कतहु नाटकीयता आ रोचकता क भंग करैत अछि । एिह ठाम लेखक अपन विचार घुसएबा क लेल आदिि कि चाििनी सू कतहु आिश्यक आ कतहु अनािि्यक विस्तार करैत छिथ । पृष 41-42 मे जानचंद एकटा नमहर अनुच्छेद मे सामािजकता पर बजैत छिथ ।
3उपन्यास मे एक साथ एकािधक कथा विदमान अछि ।विसेसर क कथा, गंगानिद तीनू भाए क कथा,डाक्टर नीलमिण क कथा ।मुदा एिह कथा क बीच मे कोनो गंभीर संपकसूत अनुपिस्थत अछि ।कखनो कखनो लागैत अछि जे एक उपन्यास मे कतेको टा कहानी एक साथ चिल रहल अछि ।
पाििात्य विदान लोजाइनस कहैत छिथन्ह जे महान रचना कदोष निह

होइत छैक ,कदोष रचना क फेरा मे कुरता बढबा क संभाविना बढ़ि जाइत अछि ।'उत्थान-पतन' क कतिपय दोष एहने दोष अछि जे विराट सामाजिकता क आह्विन क क्रिम मे बाई-पोडक्ट जूका प्राप्त होइत अछि ।मैथिली क ऐ महान लेखक सू हमरा आरो आर महान कृति क अपेक्षा आ आशीर्वाद चाही जे हमरा मे पढबा-गुनबाक सामर्थ्य विकसित हो ।

एक टा अचर्चित कवि : बूच बाबू

ऐ आलेखक आरंभ सम्प्रति आसपासक गाम कचवारयनमे कविक छवि सूं करैत छी। गाममे ई कविजीक रूपमे ख्यात रहलाह मुदा हुनकर उपेक्षाक कथा सेहो गामेसूं पारम्भ होइत अछि। पख्यात दार्शनिक उदयनाचार्यक भूमिमे जनमल ई कवि ने गाममे न्याय पओलक ने बाहर। गंभीर लेखनके मान्यता नै भेटैत देखि कवि गामक व्याहमे अभिनंदन पत्र लेखनमे सेहो रुचि लेअ लागलाह। एहि काजसूं ने हुनका गाममे केओ रोकलक ने बाहर केओ ।सौभाग्य ई जे एहि हीन साहित्यिक वृत्तिमे रमलाक बादो कवि मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ संगितगान लिखलन्हि। पतियक्दांी कहैत छथि जे गाम दिनाथपुरमे ऐ गानक समए कतेको मंचस्थ माननीय कानलाला उठलाह। ई गान मैथिला सहित मैथिलीक दुर्दशाक व्यथागीत बनि गेल-

उल्लासक गीत कतऽ सगरो करुणा क्रन्दन
उपेक्ष रहल विपक्ष रहल मैथिलीक नन्दन नि
भमरझुण्ड प्यासल छथि, दिग्दिगन्त बड भूखल
मुरझल छथि आम-मऽहू, रऽसक सरिता सूखल
बबुरे नि कवि कोकिल, लाजे मरै छी
आउ आउ आउ सब के संगित करै छी

कवि दोसर अनुच्छेदमे मैथिली मानुसक उदासीनतापर व्यंग्य करै छथि। हम सभ विद्यापति समारोह, हिन्दी दिवस, स्वतंतता दिवस, गाधी जयन्तीके सत्यनारायण भगवानक कथाबला रीतिरिवाजसूं मना

लैत छऐ आ समारोहक उच्च उदेश्य ओकहना उपेक्षित रहि जाइत अछि ।

मात ई समारोही गोष्ठीसू की हेतै?
स्वस्थ जकहना तकहना, संति एतै जेतै
मुरदा जगाउ लाउ पैर पकडै अछि
आउ आउ सब के संगित करै छी

ई गान साहित्यक उदेश्यपर सेहो विचार करैत अछि। कोनो खंडन मंडनक गुंजाइि नै छोडैत, ई स्पष्ट कहैत अछि-

काव्यपाठ कर मुदा कान्ह पर रखअ लाठी
एक हाथ रसक शोत, दोसरमे खोरनाठी
पुरना कछु ध्यावा ध्यावा, पकडू कछु नऽ ढंग
मोछो चजाउ बाउ शृंगारक संग संग
अहा गीत गाउ मुदा हम हहरै छी

रसशोतक संगे खोरनाठी लऽ कऽ चलएबला ई कविता साधारण नै अछि। पाश्चात्य काव्यशास्त्र ई मानैत अछि जे महान साहित्य कोनो एक भाि लऽ कऽ नै चलैत अछि। ई साहित्यमे विविध आ कखनो कखनो परस्पर विरोधी भाकि संश्लेष करैत अछि। बूच बाबूक कवितामे विरधक ई सामंजस्य हमरा चकित करैत अछि।

हिंदी आलोचक राम चन्द्र शुक्ल विरोधक सामंजस्यके एकटा बडका काव्योपकरण मानैत छथिन्ह। बूच बाबूक एकटा आर कवितामे एकर दर्शन होइत अछि।
'सोनदाय' कविताके ध्यानसँ पढ़ू।सम्पूर्ण कथाम एकरामे शृंगारक लक्षण बुझाइत अछि।

रहतौ ने हास बरु जेतौ विलास गय
दुइ दिवसक यौवनगीसूँ हेतौ उदास गय
भरमक तरंग बीच मृगतृष्णा जागल छौ
मोहक उमंग बीच पाण कएक पागल छौ
चकल जेतौ सुने कंठ लागल प्यास गय
दुइ........

कवितामे दू टा भाव स्पष्ट अछि। पथम पेम निवेदन आ दोसर विरागक स्वीकृति। आ दूनू मिलि कऽ विषादक विराट रूपके जन्म दैत छैक। जे ऐ कवितामे कोनो एकटा भाव रहितै, तखन ई कोनो विलक्षण कविता नै बनि सकैत छल।

एहि वैशिष्टयके बूच बाबू कवितामे कोना आनैत छथि, ई बात बेस रोचगर अछि। कवितामे वदान लक्षणा आ व्यंजनाके पैघ बूझैत छथिन्ह मुदा कवि बूच अभिधापर निर्भर छथि। हुनकर कवितामे अलंकारक सेहो कतहु विशेष उपयोग नै अछि। तखन ऐ वैशिष्टयक

शोत की अछि? एकर शोत अछि हुनकर विराट जीनिानुभिा। अपन समृध अनुभकि आधारपर ओ िबम्बक नि जाल बूनैत छथि आ अपन रचनात्मक िकल्पनाके याथर्थ करैत ओकरा दृढ आ सुरेबगर बनबैत छथि।

एकटा अध्यापकक घरमे जन्म लेनिहार ई कवि सौन्दर्यकि विविध रपक साक्षात्कार कएलक। कखनहु जेठक उधत नदी करेह एकर मोनके मोहैत अछि-

ई इन्होर पानि चमकै छौ
मोर मोरपर भौरी दै छौ
काटि काटि डीहक करेजके
तऽरे तऽरे समाइ छौ

इएह कवि नागार्जुनकि कविता 'एक फाक आंख' जका नायिकाक ठोरक रसिक्तासू अभिभूत भनि सौदर्य देखैत अछि-

कि जकहना कुरकुर पानक ठोर
कि तकहना सुनर तोहर ठोर
लगौलह बातक पाथर चून
सजौलह कऽथ कपोलक खून
कि रहलह एके बातक चूक
कतऽ छह पेमक पुंगी हूक?

ई कवि भारतक ग्राम्य सुषमाक अनन्य प्रेमी अछि। महानगरीय कृत्रिमताक स्थानपर ई सहज सौंदर्यकेँ श्रेण्य मानैत अछि-

ईडेन गार्डेन सँ सुन्नर अछि
कोशी कातक बोन गाछ

इएह प्रेम एकटा प्रेमिकाक हृदयसँ झलकैत अछि-

प्रियतम चलू आबू पटनासँ गाम

ऐ प्रेमक ठोस आधार अछि। कवि नगरीय जीवन, शहरीकरण आ
परिस्थितिक
भ्रष्टाचारके कारणे बनबैत अछि-

घूसखोर मच्छर उड़ीस जका जीबि छै
शोणित तू ओ अविराम पीबि छै
हड्डी सुखायल अछि तैयो ओ अधिकारी
खगले केर तीरे छै चाम

कुत्ता जहिना हड्डी सँ मास,खून आ रस खीचैत अछि, तहिना सरकारी अधिकारी शिरसिहो आम जनताक संग करैत अछि। कवि

सयिं बाहार सरकारक राज्य कमचारी छलाह, ताइ दुआरे ऐ अनुभसिू ओ काय्य पक्ष गुजरैत हेताह।

मैथ्थली कविताम‍े हंदी कविताक तुलनाम‍े बेटीक ब्याह, दहेज आदक बेि ा चंता रहलैक अछ। यद्या ई चंता सीता, पाितीक ब्याहक रपमे धाममक आयाम लैत अछ, तथाप्य एकर मूलाधार सामावजक अछ। अन्य मैथ्थल कवि कि संगे हुनको गौरी आ सीताके कुमारी रहबाक ददिछकह-

चामक सेज, कुगामक ािसी
खन कैलाि, खनेखन कािा
लागव्थ बुत भुताह हे, गौरी रहथु कुमारी !

ई वमथ्थला अंचल मे व्याप्त दहेज आ समएसू बेटीक व्याह नै हेबाक चंता अछ। कवि सेहो ऐ चंतासू जूझैत अछ आ बेटीक लेल एकटा अि ुत रपक खोजैत अछ।‘फूलडाली‘ क रपमे बेटीक कल्पना करैत कवि बेटीमे तमाम पविता आ दैयिके रपातवरत करैत अछ-
फूलडाली सन बेटी बनलै
माथे परक पहाड

एक कविताम‍े कवि कोनो बेटाक बापके चावरटा बेटी होएबाक व्यंग्यात्मक कल्पना करैत अछ-

तोरो कुमावर चावर दाय हो

मोन पड़ जयतह नानी

एक अन्य कवितामे रिक खानदानके व्यापारी देखाओल गेल अछि-

बबा दलाल बाप बडदक व्यापारी,
बेटा बछौड बीकि गेलै हजारी

कवि ख्याति हास्य आ भक्ति कवि रूपमे रहल मुदा कवि फूलडालीमे सभ तरहक फूल छलए। फूल नाममातक नै काव्य उपनिक सभसू मधुर, सुगंधित आ पवित फूल। कवि अपन दैन्य आ कराहिके भक्ति गीतमे व्यक्त कएलक, ई गीत बहुत बेसी मातामे अछि मुदा मात एक गीतक चचा हम करैत छी, लागैत अछि जेना विदापत्ति पदालीक कोनो पद होअए-

जनकि हय, जीनि हमर कठोर
अध्याविध सुख-शिक्त न भेटल
पयलहूँ विपत्ति अघोर
जनकि हय जीनि हमर कठोर

बूच बाबू अपन वजनगी आ कवितामे काव्यशास्तीय रचिक पालन नै केलाह ने ओ कोनो काव्यात्मक आंदोलनसू जुड़ कुकुरमुत्ताया काव्यक

रचना केलाह। ओ हृदएसँ कविता करैत छलाह, ताइ दुआरे हुनकर आलोचना सेहो हृदएसँ हेबाक चाही। बाबूजीक आइल हासूसँ भक्रगर गाछ नै कटत। बूच बाबूक काव्यक आलोचना सोचि समझि कऽ होएबाक चाही। यद्यपि ओ कोनो तत्कालीन आंदोलनमे रक्त नै लेलाह, परन्तु हुनकर कविता भाव आ शिल्प दुनू दृष्टिसँ रचनात्मक अछि। रचनात्मकता आ मौलिकताक औजारसँ हुनका परखल जाए तँ ओ मैथिली कविताक इतिहासमे किछु विशिष्ट कविमे गणनीय छथि। मुदा हुनकर कविताक विषयमे बहुत भ्रान्ति अछि। कखनहु छपलाक दृष्टिसँ तँ कखनहु पुरस्कारक दृष्टिसँ हुनकर अवहेलना होइत चलि जाइत अछि। केओ आलोचक कविताक संख्याक दृष्टिसँ सेहो आपत्ति कऽ सकैत छथि! किएक तँ ई अवमानना गुप्त आ मर्मान्तक दुनू नै अछि। ई सात्विक आ सहसकम लिखएबलाक दोष अछि! विडम्बना ई अछि जे कवि सुपुत्र श्री विभूति कुमार झा सेहो मैथिली आलोचनासँ जुड़ल छथि आ अपन आलोचनामे ककरो कराला आ ककरो पसाद बनाबैत छथिन्ह मुदा मर्यादाक वशीभूत जे कारण हो पिताक रचनात्मकतापर ओ शिधा तँ व्यक्त करैत छथिन्ह मुदा खुलि कऽ सोझा नै आबैत छथिन्ह। हम ऐठाम इएह कहब जे ओ कराला आ पसाद नै, ओ बूच छलाह, मैथिलीक बूच। हुनका मात्र ऐ रूपमे सम्मान दऽ हम मैथिली आलोचनाक तर्पण कऽ सकैत छी।

कविक रचनात्मकताक दूटा संदर्भ आर अछि। कविक रचना 'अकाल' संभवतः नागार्जुनक हिंदी कविता 'अकाल और उसके बाद' क बाद भेलए। मुदा दुनूक दू संदर्भ आ दृश्य। नागार्जुन जाइ ठाम पशु पक्षी आ मानवक स्थितिक वर्णन दऽ रहल छथि, ओइ ठाम बूच बाबू

गुजराती उपन्यासकार पनालाल पटेलक रचना 'मानभीनी भाईि' जका काल देिताक याद करैत छथ।

ई अकाल नहि महाकाल अछि
भूखक उक बाहि नागरसू
चारेपर ठोकैत ताल अछि।

....

बीसहू आँख ओनाए दसानन
घुटुक घुटुक हलबैत भाल अछि

बूच बाबू अपन एक अन्य कविता 'राम पिसी'मे रामके निसिीक बदला पिसी कहैत छथ। मात ऐ बिहक दारे ई कविता अपन पौराणिक केचुलके त्यागि आधुनिकता दिस संक्रमित होइत अछि।

क्षक क्षक जीनि दीन अहा बानु
बीतल बरख मुदा जीि छी
जीर्ण-शीर्ण मोनक गुदडीके
सिथि सुइ भोक सीबै छी
कष्टुर पाता पडल छथ घर मे
कोमल पुत विकिल निसिी
आउ हमर हे राम पिसी

जीता जी हुनकर कोनो किताब नै छपल। मरलाक बाद हुनकर ९८ टा कविताक संग्रह शुरू प्रकाशित आया रहल अछि। कननानबेक फेरमे हमरा जनैत कवि कहियो नै पडलाह। कजनगीक ऐशयिआ प्रेमके कवि खूब नीक जकां भोगलाह। परन्तु ई सभ मृगतृष्णा बनल कविक कजनगीमे आबैत जाइत रहल-

कयलहु जकहना किछु आकलंगन
चुकम गेल अनेको िि ूिल
उकड गेल गगन दुलभि सुगंध
झकड गेल धरा मकरंद पीत
सौन्दयकि भूकम मर भूकम भेल
रमणीय देसिकर सुखा गेल

कवि कजनगीके ऊूच-नीचक कविता जकां देखलकखन्ह अथात विभिन्न भाि आ रससू परिपूणि कोनो एक रस आ भामिे रमनाइ ओ नै कसखलक्ह। संभितः काल देिता सियं हुनकर कीकतकि सोझा आकब गेलाह अन्यथा हुनकासू कम सामथ्यकि कविगण बेिी यि, पुरस्कार आ सम्मानक भागीदार बनलाह। ई अकभािप कविकि कम आ मैथिली आ भारतीय साहित्य आ आलोचनाक बेसी अछि।

<u>गामक कजनगीक समीक्षा</u>

भैटक फड देख बहुसैत नर-नारी, बासाढक लेल पताल कोरैत मैथिलजन, चुन बनएबा आ बेचबाक कछन उपमि करैत लोक आ बदलैत तकनीकीसू तालमेल बैसबैत, उपाजनिक लेल गाम, राज्य छोडैत जनसमुर। संयुक्त पिरवार, णि्यिस्था आ गामक पारंपरक अथ्यिस्थाके छेदैत विभिन्न कोटक परतिनि। कोनो बाहमण आ कुम्हारक ढहैत जजमानी। ताडी कीनए बेचए आ पीबैक अनंत अंतकिथा। पोखर, गाछी, खेत आ गाममे पसरल मिथिलाक अनंत आ दि्यि सौदयकि एकसाथ दिन।

इतिहासक पि्न

'गामक जिनगी' क पहिल तीनटा कथा 'भैटक लाि' , 'बासाढ' , 'पीरारक फड 'अकालक समैमे मिथिलाासीके पेट भरबाक साधन रहैत अछि, आ ई बात लेखकक सजग दृिर आ सामाजिक पतिबधताके स्पष्ट करैत अछि। पुस्तकक संग उपलब्ध संक्षिप्त टिप्पणीमे गजेन्र ठाकुर जगदीि जीक कथाक ऐतिहासिक भूमिकाके रेखाकित करैत छथिन्ह। बात केलि विषय चयनक दृिसू नइ अछि, बलिक समग पुस्तकमे मिथिलाक निम्न मध्यिगिक जिनगीक जतेक गहराइसू देखल गेल अछि, ओ अन्यत दुलभि अछि। कथाकार मिथिलाक गाममे जइ गंभीरतासू भमण करैत छथिन्ह, ई साहित्येटाक लेल नै अपितु इतिहास आ अथािस्तक लेल सेहो पामाणिक सामगी उपलब्ध करैत अछि।

नॉस्टेल्जियाक सच

की जगदी जी अतीत मोहसू गस्त छथि। पस्तुत संगहमे लेखक कथलाक गाम आ गाम्य जीनिक पक्ष खास अनुराग ियक्त करैत छथि। एतबे धरि नै ओ िहरीकरण, िहरमे पसि आक्दक पक्ष खास वितृष्णा ियक्त करैत छथि। 'भैयारी' कथामे कुसुमलाल कोटमे नौकरी करैत छथि आ मधुबनीमे रहैत छथि। आ हुनकर पैघ भाय दीनानाथ गामेमे रहैत छथिन्ह। आ गामोमे रहैत दीनानाथ अपन जनगीक गाडी नीक जका चलबैत छथि, मुदा कुसुमलालक गाडी लसकि जाइत छैक। िराब पीबैत-पीबैत हुनकर लीरि गल गेलै। सौसे देहमे घाि भऽ गेलै। आ घरिली सेि करए केर बदला गरियाबै आ बडका बेटा कहए- 'पप्पा जी, महकता है' ।'

कस्संदेह गामक सहजता, सरलताक पक्ष लेखकमे एकटा खास कस्मक स्नेह अछि, तािह दुआरे ओ डेग-डेगपर गाममे रहनाइ, गामक धन्धा-पाकके गौरिान्वित केनाइ नै िबसरैत छथिन्ह।

क्लासकी परम्पराक पृष्ठभूिम

कोनो भाषाक पक्तकिव कथाकार भाषा, सािहत्य आ समाजक तिमीनक दबाि गहण करितहु पक्तकारक ियक्तत्ि राखैत अछि, आ ऐ पक्तकारेमे मौिलकता छैक। िरष्ठ कथाकार सुभाषचन्र यादि 'गामक िजनगी' पर संक्पत टिप्पणी करैत कहैत छथिन्ह- 'हुनक कथा घटना बहुलता आ ऋजुसू युक्त अछि। 'आब पि्न ई अछि जे घटना बहुलता तू कथाक नीक लक्ण नै मानल गेलइ तखन ऐ टिप्पणीक की मतलब?

कहानी िा कथा जखन घटना केिरत संरचना त्यािा कऽ मनोिज्ञािनकता िा मनोिि्लेषण िदस पस्थान केलक तखन ई मानल गेलइ जे कथाक पिहल चरण समाप्त भेलइ आ कथा िवकासक

दोसर सोपन कदस बढल। मुदा ऐ विकासक साचाके जगदीिजी सू जोडनइ जगदीिजीक संग अन्याय होयत, कारण जे जगदीिजी घटना बहुलतापर कामरि नै छवथ। बहुतो कहानी लेखकक कवितामयी ि्यकनत्ि, हुनकर गंभीर मनोविि्लेषण आ सक्कत विचारसू लैि अवछ

'वामछला बावढ मोन पडतवह देह भुटुकक जाइत अवछ। रोइया-रोइया ठाढ भऽ जाइत अवछ। बावढक विकराल दृि्य आूवखक आगू नाचए लगैत अवछ। घोडोसू तेज गवतसू पावन दौगैत। बावढयो छोटकी नवह, जुअनकी नवह, बुवढया। बुवढया रूप बना नृत्य करैत। ककरा कहू बडकी धार आ ककरा कहू छोटकी, सभ अपन-अपन कवन्ह-पहकवन्ह मेटा समुर जेका बवन गेल। जेम्हर देखू तेम्हर पाक घोराएल पावन, कवछोहे दवछन मुूहे दौगल जाइत। कतेक गाम-घर पजेबाक नवह रहने घर-विहीन भऽ गेल। इनार, पोखवर, बोवरंग, चापाकल, पावनक तरमे डुबकुवनया काटए लगल।'

ऐ पकृवत दृि्यके देखल जाओ, पकृवतक स्िभाविक लीलादपर्णमे मानिक कवठन भविष्य देखाओल गेल अवछ। कथामे आगू बावढजवनत भुख आ दवररताक ममर्स्पिी कवतण अवछ। कवित रूपेण जगदीिजी मैवथली कथाके क्लावसकी परम्परा कदस बढबैत छवथन्ह आ मैवथली कथा एकटा गौरििाली युगक दुआवरपर अवछ।

आंचवलकताक भम

कथा संगहमे गाम्य जीिनक विराट उपवस्थवत ऐ भमके उत्पन्न करैत अवछ, कक जगदीि जी आंचवलक िैलीक लेखक छवथ। तिि आ देिज ि्ब्दक बाहुल्य, एक खास िगिि जावतक गाम्य जीिनक पसंगक बहुविध चचा। 'चुनिली' मे चुन बनबएबला कवथलाक एकटा

जातिक संघर्षक चर्चा अछि।

डो. धीरेन्र िमा कहैत छथिन्ह- ‘आंचलिकताक अर्थ थिक लेल स्थानीय दृ्िय, पकृति, जलिायु, पाबनि, लोकगीत, बातचीतक विि‍ष ढंग, मुहाि‍रा, लोकोक्ति, उच्चारणक विकृति, आमजनक स्‍िभाि‍गत आ ्‍ियिहारगत विि‍षता, हुनकर अपन रोमास, नैतिक मान्यता आदिक समार्िि अत्यंत सतर्कता आ साि‍धानीसू कएल जाइछ।’

यद्यपि ऐ मानकपर देखी तखन गामक जिनगीक अधिकाि कथा आंचलिकता दिस झुकाि देखबैत अछि। मुदा ई बात सदिखन स्पष्ट रहबाके चाही कि कथ्थलाक पक्ष अनुरक्ति देखेबाक बाि‍जूद ऐ संगहक कथा आंचलिक नै अछि। कएक तू लेखक कोनो कथामे मिथिला अंचलक नायक नै बनेने छथि आ ई विि‍षता हुनका किछु-किछु याती जीसू जोडैत अछि आ रेणुसू अलग करैत अछि। ई बात उल्लेखनीय अछि कि लेखक मिथिला केतक परंपरा, लोकोक्ति, गीत-नाद, नाच तमाि‍क िि‍िकि पक्ष कोनो अतिरिक्त राग पदर्ििि नै करैत छथि। अथात ई तत् कथामे ओतबे अछि जते कि कोनो पगतिि‍ील लेखकक कृतिमे होइछ। आंचलिकताक एकटा अन्य पहलू विचारनीय अछि। मिथिलाक कम्न आयि‍गिि‍जीि‍निक जते पभाि‍ििली कतण अइठाम अछि, ओ अन्यत दुलभि अछि। आ ई कतण जत्ते पूणि अछि ततबे पामाि‍णक। ऐ दृि‍ि‍सू ‘चुनि‍ाली’ ‘रकसाबला’ हाि‍र-जीत’ क िि्‍लेषण आिि्‍यक अछि।

जीिि‍न संघर्षक कथाकार

सुभाषचन्रजी जगदीिि‍जीके जनिि‍दी आ पकृतििदी कथाकार नै मानैत छथिन्ह, बल्कि जीिि‍न-संघर्षक कथाकार मानैत छथिन्ह। ऐ विचारमे

कािहत जनिद आ पकृकािद सन पाकरभाकाक िब्दक िवि चिनसू बचैत ई कहब आिि्यक अिछ जे जगदीि जीक यथाथिद कोनो सुपकरभाकात यथाथिदक साचामे सेट नै होइत छैक आ सेट करबाक पयासो नै करबाक चाही। भारतीय सािहत्यमे यथाथिदक एकािधक मॉडल उपलब्ध अिछ, आ जगदीि जी ककरो अनुकरण करबाक स्थानपर नि मागिबनेबाक लेल पयासरत छिथ।
गामीण जीिनके िविषय बनेबाक लेल 'पाथेर पाचाली' 'गणदेिता' आ 'मैला आूचल 'गोदान' सन कतेको क्लािसक उपलब्ध अिछ। ई स्पष्ट नै अिछ िक ओ ऐ मे कोन पढने छिथ आ कोन नै, मुदा ई स्पष्ट अिछ िक ओ अपन िविि दृिि सू स्िीकृतके अिकािमणक लेल किटबध छिथ। जगदीिजी दुखके गौरिािन्ित करबामे िि्िास नै करैत छिथन्ह, ओ अनंत दुख आ दुखमयी िि्ि धारणामे िि्िास नै करैत छिथन्ह। ओ पचण्ड आिािदक लेखक छिथ, ताहि दुआरे बािढ, सुखार, अकाल, महामारी आ िििभन्न ि्यिकतगत आपदाक बीच आदमी जीिि आ जीतैत छिथ।

क्हन्दी भाषा आ साक्हत्य क केन्रीयता स्ितंतयोतर भारतक एकटा महर्यपूणा सास्कृक्तक घटना ।एकर मूल कारण राजनीक्तक आ ािगवक्यक रक्हतहु पक्रणाम बहुआयामी अक्छ ।क्हंदी साक्हत्यक आ वििषतः कविता के सौदयायमक ,िचाक्रक आ िक्पक िवधि सू पूणा करबा मे कवि क्नराला क योगदान अपक्तम ।ने केलि कविता बक्ल्क ईमानदारी मे सेहो क्नराला क व्यक्क्तर्य क चचा क सेहो कक्तपय आयाम । आधुक्नक साक्हक्त्यक व्यक्क्तर्य मे क्नराला अगणी छक्थ ,जक्नकर व्यक्क्तर्य आ कृक्तर्य क हरेक अंि सू ईमानदारी,रचनायमकता,आलोचना आ अफािहक मागापिस्त होइत अक्छ ।क्नराला काव्य क अनुािदक महर्य विक्भन पसंग आ संदभासू अक्छ ।पाचीन संस्कार आ आधुक्नकता क आंदोलनमयी धारा के आयमसात करबाक जतेक सामथ्या क्नराला साक्हत्य मे अक्छ ,ओतेक अन्यत नइ ।दोसर बात ई जे क्नराला काव्य क माध्यम सू क्हन्दी साक्हत्य मैक्थली आ बाग्ला सू जुडैत अक्छ ।क्नराला पर विदापक्त आ रिीन्रनाथक पभाि अयंत स्पि अक्छ ।क्हंदी आलोचक क्नराला पर

विदापतिक पभाि पर बहुत नइ लिखने छिथ ,मुदा ई पभाि देखबा क हो तखन 'िर दे िणा िवदनी िर दे ' क तुलना विदापित लिखत िसंत गीत 'नि नि विकिसत फूल 'सू कर ।

िदाथ िंतामणकार अनुिदक दू टा अथ लिखैत छिथन्ह ।पथम 'पाप्तस्य पुनःकथने 'आ दोसर 'जाताथस्य पितपादने ' एकर अथ भेल पहिले कहल गेल कथन के फेर सू कहनए आ जात अथ के पितपादित केनए ।पिसध भाषािजािनक रोमन याकोबसन एकरा 'एक भाषा के िािदक पतीक के अन्य भाषा के िािदक पतीक के दारा व्याख्या ' मानैत छिथन्ह ।नाइडा आ टेबर कनेक िस्तृत करैत कहैत छिथन्ह िक ई मूल भाषा क संदेि क समतूल्य संदेि के लक्ष्य भाषा मे पस्तुत करबा क िया अिछ जािह मे संदेि क सममूल्यता पहिले अथ आ फेर िैली क दृि कोण सू िनकटतम आ सिाभािि क होइत अिछ ।

भािक पि या होएबा क कारणे अनुिाद क सम्बन्ध भाषेटा सू नइ बिल्क भाषािजानो सू अिछ ।ध िन ,िाद,र प,िाक्य आिद िििभन स्तर िमल के अथ क संसार रचैत अिछ ,तािह दुआरे ऐ सब स्तर क पित सजगता अिनिाय अिछ ।पत्येक भाषाक अपन िििि ध िन ,िाद भंडार आ र प व्यिस्था होइत अिछ ,तािह दुआरे ऐ स्तर मे िनिहत अंतर के कारणे समान लागए िला पसंग सेहो िास्तिि क अथ मे अथान्तर क संभािना सू युक्त होइत अिछ ।

ऐ ठाम ई तथ्य उल्लेखनीय अिछ िक मैिथली आ खडीबोली िहन्दी कोनो दू धुि ीय भाषा नइ अिछ ।दूनू दू टा पादेििक अपभं ि क संतान

आ ताहि दुआरे संस्कृत ,प्राकृत आ प्राकृतिक विरासत पर समान रूप सँ अधिकारिणी अछि ।ध्वनि ,शब्द आ रूप क स्तर पर अनवान साम्य अछि ।संस्कृत क रात्रि मैथिलीएटा मे नइ अवधी,बजभाषा,भोजपुरी सन्हत कतेको उतर भारतीय भाषा मे 'राति ' अछि आ 'दिन ' त ' सति 'दिन ' अछि ।तहिना भोर आ दुपहर अपन विभिन्न ध्वनिभेद क संग विदिमान अछि ।उदाहरण केलि एक या दू शब्दक नइ अछि ,सुधी पाठक ऐ उभयपक्ष आधारक जटिल उपस्थिति सँ परिचित छथि ।

ई उभयपक्ष आधार अनुवाद मे सुविधा लऽ के आबैत अछि,मुदा ऐ ठाम आलस्य आ अनुकरण क खतरा मौलिक अनुवाद के समक्ष चुनौती दैत अछि ।सबसँ बेशी शब्द तत्सम के आ ओहि पर सब भाषा क तेहने अधिकार तखन ई नबका शब्द कत ' सँ आनी ,देशज शब्दक प्रयोग प्रचलन आ स्वीकृति क आधारे पर स्वीकार्य होयत ।मिथिला क व्यापक भूभाग मे प्रजेबा सँ बेशी स्वीकृत शब्द ईटा अछि तखन ककर व्यवहार करी आ ककर नइ करी ?
विज्ञानक तथ्य वा गदात्मक सूचना क प्रस्थापन अभिधात्मक भाषा मे सुगमता मे संभव अछि ,मुदा भावप्रधान रचना मे अर्थक अनेक स्तर आ कथनक बहुविध व्यंजना होइछ,परिणामतः पर्यायक भावक प्रतिस्थापन संभव नइ, ताहि दुआरे अनुवादक के परकाय प्रवेश करऽ पडैत अछि ।अनुवादक मूल कृति आ रचनाकार क मनोजगत मे घुसि के भाव आ ओकर अर्थच्छाया के समझैत अछि तथा फेर ओइ भाव के यथासंभव लक्ष्यकृति मे अभिव्यक्त करैत अछि ।कलाकृति के एहन समझ आ फेर ओकर कलात्मक संप्रेषण क लेल सर्जनात्मक

पजा क विदिमानता अक्तायिअिछ ।ई पजा सिति एकर प मे उपक्स्थत नइ अिछ ,ई देखबा क अिछ तखन उमर खय्याम क रबाई क अनुिद िमिः क्फटजराल्ड (अंगेजी) आ मैक्थली िरण गुप्त, बच्चन जी ,केिि पसाद पाठक आ सुक्मता नंदन पंत(सब क्हंदी)क अनुिद मे क्नक्हत भािभिंवामा आ गुणिता क अंतर देक्ख सकैत छी ।गीताजक्ल क अनुिद मैक्थली मे सुमन जी केने छक्थ आ क्हंदी मे अजेय आ अन्य कतेको विदान मुदा बाग्ला विदानजन सुमन जी दारा अनुक्दत ‘अनुगीताजक्ल ‘ के हदय खोक्ल के पिसा केने छक्थ ।

ऐ ठाम हम परकायपििकि िक्छत योग्यता क साथ उपक्स्थत नइ छी ।हम क्नराला काव्य मे क्नक्हत व्यंजना क महान िक्त के सीिकार करैत छी आ क्नराला काव्य मे ,ओकर िब्द आ िब्द योजना मे क्नक्हत उदात के मानैत छी ।ई उदात क्कछ क्कछ संस्कृतक तयसम िब्द,सघन िणिमैती,िणिकि धिन्यायमकता मे क्नक्हत अिछ ,ताक्ह दुआरे मैक्थली पाठक के हम िब्द आ अथकि अइ सिवाकि संसार सू िक्चत नइ करऽ चाहैत छी ।हम अपन अनुिदक सीमा के सहज सीिकारैत छी

अनुिदक एकाक्धक र प मे पचक्लत अिछ ।िब्दानुिद(क्लटरल) या मूलक्नष अनुिद सामान्यतः अक्मधायमक होइत अिछ ,ऐ अनुिद मे शोत भाषाक पयेक िब्द आ अक्मव्यक्क्त क पक्तस्थापन लक्ष्यकृक्त क िब्दािली,अक्मव्यक्क्त तथा संरचना मे होइछ ।
भािानुिद मे मूल भाषा क अक्मव्यक्क्त क स्थान पर ओइ मे क्नक्हत आिय के स्पि कएल जाइत अिछ ।ई मूलकृक्त क ढाचा सू सितंत

होइत अछि,ताहि दुआरे लक्ष्यकृति क दृष्टि सँ ई बेसी सहज आ स्वाभाविक होइत अछि ।सुरेन्द्र झा सुमन द्वारा 'गीताञ्जलि ' क अनुवाद 'अनुगीताञ्जलि ' भावानुवादक विशेष उदाहरण अछि ।
रूपातरण कथा साहित्य क क्षेत्र मे लोकप्रिय अछि ।अइ मे अनुवादक मूलकृति क परिवेश ,चरित्र ,आदि के देश-कालानुसार परिवर्तित करैत अछि ।शेक्सपीयर रचित 'द मर्चेंट ऑफ वेनिस ' क हिंदी अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'दुर्लभ बन्धु ' नाम सँ केलाह ।एइ मे एंटोनियो क नाम अनंत ,बसानियो क नाम बसंत आ शायलॉक क नाम शैलाक अछि ।घटना वेनिस नगरक स्थान पर काशी(भारत) मे घटैत अछि ।

'छायानुवाद 'रूपातरणक एकटा प्रकार अछि ,अइ मे मूलकृति क आधार पर मूल कथ्य के संप्रेषित करबा क लेल स्वतंत्र कृति क निर्माण संपन्न होइत अछि ।अइ मे बिंब विधान ,प्रस्तुतिकरण आदि मूलकृति क प्रतिबिंब होइत अछि ।भगवती चरण वर्मा क उपन्यास चित्रलेखा अनातोले फ्रांस क उपन्यास 'थाया ' पर आधारित अछि ।विदेशी फिल्म आ साहित्य क अनधिकृत अनुवाद आ रूपातरणक लेल अइ विधि क बहुत प्रयोग होइत अछि ।
'सारानुवाद ' मे मूलकृति क सार लक्ष्य भाषा मे प्रस्तुत कयल जायत अछि ।संप्रेषण केन्द्रित अनुवाद क्लासिकी रचना के बच्चा आ किशोर सब के पढबा क लेल रूपातरण मे सहयोगी होइत अछि ।जेना महाभारत वा रामायण पर आधारित संक्षिप्त कथा ।
'टीकापरक अनुवाद ' मे अनुवाद क साथ ओकर व्याख्या रहैत अछि ।गीताप्रेस क किताब मे एहन अनुवाद प्रचूर मात्रा मे उपलब्ध अछि ।किछु दिन पहिले विद्यापति पदावली क किछु पदक अनुवाद

याती जी दारा कयल गेल दिल्ली विशविदालयक पोफेसर पभात रंजन जी क ब्लॉग पर उपलब्ध छल ।

अंत मे फेर काव्यानुिाद पर आबी ।कविता क अनुिाद नमहर चुनौती अइ दुआरे छैक कि कविता मात िब्दाथितक नइ सीमित छैक ।ई िब्द सू आगू िाक्यगठन,लय,छंद,बिंब,पतीक,अलंकारयोजना,ैली आदि क मेल जुलल पकिरणामी काव्यात्मक पयािरण पर आधारित अछि ।ताहि दुआरे दाते आ सर फिलीप सिडनी सन विदान काव्यानुिाद के असंभि मानैत छथिन्ह ।कविता क समग पभाि ि व्यंग्याथ धिकि ,लय ,बलाघात आ बिंब योजना के माध्यम सू अभिव्यक्त होइत अछि ।ताहि दुआरे ससाला क िब्द चयन 'विजन-नि लिलरी ' 'पुकलन पर व्यायतमा 'मैथिली मे यथाित अछि ।

कविता क दृश्य आ शव्य बिंब बहुधा िब्द क नादात्मकता सू सयंबित होइत अछि ।एहिना िब्दालंकार आ अथालंकार क विकिल्प लक्ष्यभाषा मे सृजित कएनए कठिन अछि ।काव्यानुिाद क सबसू नमहर समस्या छंद आ लय अछि ।मूल रचना क लेल पभािी छंद आ लय के खोजनए अनुिादक लेल सबसू पैघ समस्या अछि ।यदि कविता क अनुिाद गद मे आबैत अछि तखन अनुिाद मात िब्दाथितक सीमित रहत आ अइ मे कविता क पूरा अथ विकिकल के बाहर नइ आयत ।अनुिाद सम्बन्धी अइ अिधारणा क लेल हम सिशिी/सुशी रिीन्द्र नाथ शीिास्ति ,कृष्ण कुमार गोसिामी ,कुसुम बाठिया ,गजेन्द्र ठाकुर ,रिीन्द्र कुमार दास जी क आभारी छी ।

<u>ससाला: मैथिली:देह-विदेह-१</u>

(नराला कन्दीसू मैथ्थलीमे)

मैथ्थली:देह-विदेह क अइ पक्हल कशत मे नराला जी क दू टा लोकवमय कविता क अनुिाद पस्तुत क ‘ रहल छी ।सहज सू जक्टल आ जक्टल सू जक्टलतर कि

‘ ‘ि म ि म सू भेल पार राघकि पंचकिसि
चि सू चि चक्ढ गेल भेल उर्धि निरलस “(रामक निकत पूजा)

जूक्त बान्ह नाि ऐ ठाम बन्धु
(बाधो न नाि इस ठाि,बन्धु!)
जूक्त बान्ह नाि ऐ ठाम बन्ध
पूछतओ पूरा गाम बन्धु
ई घाट छलए जइ पर हूक्स के
ओ रहए नहाबक्त रे! धक्स के
रक्ह जाइत छलए आूख फक्स के
कापैत रहए दूनू पैर बन्धु !
ओ हूसी बहुत कछु कहए छलए
तैयो अपने मे रहए छलए
सबके सुनैत सबके सहैत
दैत ओ सबके दाि बन्धु ।
हमरा सू कनारा केने जा रहल छथ्थ
(कनारा िहि हमसे कये जा रहे है ।)
हमरा सू कनारा केने जा रहल छथ्थ
दखाबे टा दिनि देने जा रहल छथ्थ
जुडल छल सुहावान केर मोती क दाना

ओएह सूत तोडने लेने जा रहल छथि
कछपल चोट के बात पूछलउं त बजलीह
कराति क डोरी सीने जा रहल छथि
ई दुनिया के चकर मे केहन अन्हर
मरल जा रहल छथि जियल जा रहल छथि
खुलल भेद एकटा ,जे विजयी कहायल।
ओ खूं दोसरा के ,पीने जा रहल छथि ।

कराला: मैथिली:देह-विदेह-२

(कराला हिन्दीसू मैथिलीमे)

स्नेह निझरि बहि गेलइ
(स्नेह निझरि बह गया है)

स्नेह निझरि बहि गेलइ
देह बाउल सन रहि गेलइ
डारि आमक ई जे सूखल दखल
कहि रहल "ने आब छइ ,कोनो कोयल
के आयत ,ई पात मे हमही कहल
अथनिइ छइ एकर-
जीनि जकर गेलइ"
"देने छी हम जगत के ,जे फूल फल
केने छी अपन पभा सू,चकित-पल
छल अनशर सकल पल्लवित पल-
जीनिक ऐशयि

सब ढकि गेलइ ”
आब नइ आबइ पुकलिन पर वायतमा
श्यामतृण पर बैसबा ले काटर पमा
बकि रहल अछि हृदय पर केलि अमा
हम अलकाकति छी ,इएह
कवि कहि गेलइ ”

2 हम अकेला
देख रहलहु ,आबि रहलइ
हमर दिनक ,ई साध्य बेला।
सूखल पाकल ,आधिछद ई केि हम्मर
भेल कापाभ गाल हम्मर
मन्द भेलइ चालि हम्मर
हिट रहल मेला
नदी झरना जाबि रहलहु
छल जे बाकी पार केनए
क ‘ चुकल ई देखि हूसलहु
नाि ल ‘ केओ ने एला
देख रहलहु ,आबि रहलइ
हमर दिनक ,ई साध्य बेला।

कराला: मैथिली:देह-विदेह-३

(कराला क्रान्तीसूं मैथ्लीमे)

रंवा गेल धरा ,भेल धन्य धरा
जगमग ई जग भेल मनोहरा
धवर रंग सुगन्ध
भवर मौध मकरन्द
गाछक लाली भऽ गेल गाढ
फुवज पतपुष्प केर राग ठाढ
भेल डेग डेग हरयर पूरा। रंवा..........
गुँजल कोयली केर पंचम स्वरि
कुचरइ कौआ मैना मृदुतर
सुख सूं कूपैत
रक्त पणय केवर
निशी चार तरा । रंवा..........
2 सवख सिन्त आयल
भरल स्नेह जंगल केर मन मे
नायिथान पसरल ।
पल्लि पल्हव
कोपरक लती
वालल मधुर
वाय गाछक पती
भंउरा गाइ
कोयली स्हकइ
नि नि स्वरि भालि ।
कोपर कल्ली हार बनल हन

मध्यम मध्यम बहथ्य पनि सन
जावा गेल ग्वायरि के नयन मे
मधुर पकृक्त अभरल ।
फैलल गोट पीयर कमलदल
तक्हना पसरल केरि कलकल
खेत पथार सोना सन सुन्दर
धरती पर फैलल ।

<u>कराला: मैथिली:देह-विदेह-४</u>

<u>*(कराला हिन्दीसू मैथिलीमे)*</u>

छाडल कारी कारी बादर
एला नइ फिर जाहिर लाल
केहन केहन नाचए अधसर
नइ एला फिर जाहिर लाल
चमकल बिजुरी फन पसारि के
नइ एला फिर जाहिर लाल
सोझ कर उलटल माथ के
ससरैत फूफू करए माथ पर
नइ एला फिर जाहिर लाल
पूरबा अलगे फूफकारइ छइ
पत्तकण विष बकुट बरसाबइ
छुपल कोन गुफा मे हम सब

नइ एला िर जाहिर लाल
मंहगाई के बाढ़ बढल अछ
सबके संचत का लुटल अछ
भुखल नाँगर ठाढ लजाबथ
नइ एला िर जाहिर लाल
कोना बचऊ कान भाला लाठी
बहल भसल सभ कात मंडली
राह देखइ छी ,किछु नइ बुझइ छी
नइ एला िर जाहिर लाल

आचायभामहक कंतन

भामह अलंकारादिदी रहथि आ संस्कृत आलोचना क ऐ विादि सॅ पवर्तित छलाह जे काव्यिसौदर्यक मूलाधार ाब्दालंकार मे होइछ ाि अथालंकार मे ।पक्कल मानैत छलाह जे काव्यि मे चमत्कार क सृष्टि ाब्द सौदये सू संभि अछि ।दोसर समुदाय मानैत छल जे उपमा ,रपक आदि अथालंकारे सू काव्यि ाभा होइछ ।भामह अपना हिसाबे दूनू मे समन्विय करबा के पयास केलखिन्ह ।
' ाब्दाथौ सहितौ काव्यिम्' क दारा भामह ाब्द आ अथ दूनू क महत्वि पर बल दैत छथिन्ह ,अथात ाब्द आ अथक सहभाि मे काव्यिक सृष्टि होइत छैक ।यदपि भामहक चिंतन सू ई विादि आर गहिरायल कि काव्यि कत' होइत छैक 1 ाब्द मे2 अथ मे 3 या सहभाि मे ।ई विादि एते पबल रहल कि ाहिजहॉ कालीन विदान जगन्नाथ कहलखिन्ह 'रमणीय अथक पतिपादक ाब्दे काव्यि थिक ।आ तिमिन मैथिली कविता के देखल जाइ तखन लागैत अछि जे फेर स ाब्द अपन जाल फैला रहल अछि ।
ओना आधुनिक मैथिली मे पतिा क कमी नइ छैक आ जइ कविता के पाचीन स पाचीन आचायतिक निर्निमेष के कारणे स्वीिकार क' सकैत छलखिन ओ कविता मैथिली मे एक झटका मे शीर्विहीन साबित क' देल जाइत अछि ,आ तहिना शीर्विहीन कविता के गौरविान्वित करए के सेहो ऐ ठाम सुदीघपिरंपरा अछि ।

दण्डी आ काव्यिलक्ण

दण्डी नीरस ि◌स्तकार नइ छ्थिन्ह ,पतापी कवि सेहो छ्थिन्ह । ''अलंकृतमसंक्प्तं रसभाि◌ क्रांतरम '' ।हुनकर स्पष्ट विचार अछ्ि क कविता ओइ पदसमूह क नाम छैक ,जे ि◌च्छित सरसता सू युक्त हो ।ऐ ठाम कविपितभा सुंदर पदाि◌ली सू संयुक्त हेबाक चाही । ''ि◌रीरंताि◌दष्ठाथि ि◌यिच्छन्ना पदाि◌ली ''(काि◌यादि◌) । इष्टाथयुक्त पदाि◌लीक एकटा अथ ई जे पद मे 'योग्यता' ,'आकाक्ष' आदि होयबाक चाही ।दंडी महाराजक मंति◌य ऐ ठाम ई अछ्ि क इष्ठाथ ि◌ि◌ क सौजन्ये सू काि◌यत्ि◌ क जन्म होइत छैक ।यदि हुनक रसचेतना भाि◌त्मक कम आ अलंकार केि◌रत बेि◌ी अछ्ि आ हुनका लेल समस्त अलंकारक उदेि◌य रससृष्टि मात छैक ।

हुनकर चिंतन मे 'इष्टाथि सपष्ट ि◌याख्या नइ छैक ,तैयो ई मानल जाइत अछ्ि जे ऐ पदक संदभि भामहकालीन काि◌यचिंतन सू छैक ।भामहक लेल ि◌ब्दालंकार आ अथालंकार दूनू इष्ट छलइ ,मुदा दण्डी क लेल ि◌ब्द,अथ,रिस सौदयि सू युक्ते पदाि◌ली काि◌य थिक ।दण्डी क सीमा ई अछ्ि जे ओ ' 'इष्टाथि चचा मात अथालंकारक लेल करैत छ्थिन्ह ।

दण्डी क सीमा स्पष्ट अछ्ि ओ ि◌ब्दाथि के काि◌यक ि◌रीर मानैत छ्थिन्ह आ अलंकार के आत्मा ।हुनकर विचार मे अलंकारविहीन पदाि◌ली साहित्य नइ भ' सकैत अछ्ि ।

लघुकथा-बोधसयि

टेन तऽ धीरे -धीरे र कलइ ,मुदा भुटटु झा औंघायल छलाह ,लागलेन माथ मे चोट ।माथ हूसोबैथ देख ' लागला ,केओ देखलक तऽ नइ ?ई देखै के कि सब सूतल छलइ ,निश्चिंत भेलाह ।कुलिया सू झगड़ के सीट नेने छलाह ,खिडकी लग िला सीट । दूरक याता मे ऐ सीट क दाम पचास टका बेिी छलइ ,मुदा भुटटु झा किएक देथिन पैसा ,ओ कहलखिन हमरा संग मे टिकट छैक ,हम पैसा नइ देबओ ।कुलिया हिनकर कालर धऽ लेलकइ ,ईहो ओकर माथा िला केिा बकुटा सू पकड़ लेलखिन ,तखन यातीगण आ प्लेटफामिपर ठाढ सिपाही बीचबचाि केलकइ आ भुटु झा के कोनो आिथिनइ भेलेन ,जखन ओ सिपाही ओमहर जाके कुलिया सब संगे हंसि हंसि के बात कर ' लागल ,ई दुनिया एहने छइ सौसे क सौसे कि कनियन आ कि दलिली ।झोरा सू घडी निकालला ,पाच बाजइ मे दस मिनट बाकी छलइ ।कोनो ठीक ठाक स्टेिन छलइ ,नाम देखइ ले मूडी बाहर केला ,कोनो बोडिनइ भेललेन्ह ,गेट दिस आबि के देखऽ लागला ,एकटा चाय िला देखेलेन,हुंदी मे पूछलखिन तऽ बतेलकेन कि ई जौनपुर जंकिन छियइ ।जौनपुर सुनिते हुनका लागलेन जे ऐ गामक नाम त ' सुनने छियइ ,याद करऽ लागला काकी ,भौजी क नैहर आ बहिन ,दीदी क सासुरक नाम । भीडहा ,बलहा ,बलिलीपुर ,मुस्लिमपुर ,बहेडी ,मालीपुर ,एघु ,िसन ,रमभदरा पुर ,कापसि ,बलिया ....मसानखोन आ आरो कतेको नाम ।धीरे धीरे ईहो नाम सब सठऽ लागलइ ,यादिए नइ पडलेन्ह कि ई जौनपुर क नाम कहिया सुनने छलियइ आ ऐ ठामक के सऽर सम्बन्धी या मित दोस्त अछि ।भुटु झा हाफी कर ' लागला ,फेर एमहर ओमहर देखि तमाकू निकालला ,चुनौटी खोजइ काल मे हुनकर हाथ

पोलीथीन सू टकरा गेलइ ,भुटटु झा कर्वित भेला ,हुनकर सर्टिफिकेट सुरक्षित अछि ।मैथिली सू स्नातकोतर ,प्रथम श्रेणी ,विश्वविद्यालय मे दोसर स्थान ।पहिल स्थान बलन्ति झा क पुती के ।पहिल स्थानक रिजल्ट लगभग निकलले छलइ ,बलन्ति बाबू विभागाध्यक्ष छलखिन आ बेटी क ‘ लेल स्पेशलि नोटस बनेने छलखिन ,मुदा परीक्षा क बाद प्रसचुएनि बदलि गेलइ ,कापी विश्वविद्यालय सू बाहर चलि गेलइ ,बहुतो विद्याथी फेल भऽ गेला या पचपन प्रतिशत नइ आनि सकला ।मुदा प्रोफेसर साहेबक पैरवी दोसरो ठाम चलल आ गागी प्रथम मे प्रथम भेलीह ।आश्चर्य भेलइ जे भुटु कोना दोसर स्थान आनला ।ओइ प्रसंग क चचा कने नून तेल लगा के हास्टल सू ल ‘ के विश्वविद्यालयक कर्मचारी गितिक मे फैल गेलइ ,सब कहैत छलाह कि बलति बाबू अपना बेटी क टॉप करेलखिन आ होमय लिा जमाय के लग सटेलखिन ,मुदा ई बात सब बेशि दिन नइ चललइ । गागी पी0एच0डी0 सेहो केलखिन आ बापे संग नियुक्त भऽ गेलीह ।बात बहुत लम्बा छैक ,भुटटु झा की सब याद्‌ करताह ,तमाकूल चूना ठोर मे दबा सूतबा क प्रयास करऽ लागला ,मुदा सरबा नीन कासकरियो के कथी ले आयत ।एगो मच्छड माथे पर काटि लेलकेन आ जाबत ओइ ददसिू मुक्त हेता ,ताबत केओ उपरे सू पाद्‌ देलकइ ।के हेतइ गौतमानन्द आ भुटकुन छथि ? पता नइ के ? भुटु झा हूसऽ लागला ,ठाढ भऽ के बथपिर देखलखिन दूनू एक दोसर के गोरथारी मे सूतल ,गौतमानंद क पैर भुटकुन के माथ लग रहइ आ भुटकुन अपन पैर के गौतमानंदक करेज मे सटेने रहइ ।ई दृश्य कोनो नया नइ छलइ दिल्ली मे गामक बारह टा पुरुष एके रूम मे रहैत छलाह ।बारह सौ किराया छलइ ,कोना के एक दू टा आदमी देतइ ,सब कमि के रहऽ लागला ।जमीन पर सूजनी बिछा के सब लोकनि रावि

मे सनपट भऽ जाइत छला । केओ रिक्शा चलेनहार ,केओ सेठ के हवेली मे गेटकीपर ,केओ दुकान मे दूहजारी सेल्समेनक काम,केओ घूमि घूमि के खाना बनेने घुरइ ।सब एके ठाम रहइ ने जाति ने गुटबाजी ।कखनो बाभन खाना बनबइ तऽ कखनो दुसाध ,आ पाँसा केलि नीक खाना के होइत छलइ ,जाति कि छइ तऽ ध्याने नइ जाइत छलइ ,जकरा जे मून हो कर,जे पक्हरबे पक्हर ,जे बाजबे बाज ।भुटटु अइ स्तिंतता के बिसरऽ नइ चाहैत छथिन ।गौतमानंद आ भुटकुन के ओ फेर सू देखैत छथिन आ हुनका लागैत छन्हि कि जे बात ऐ ठाम अपासंवाक छैक ,सएह गाम मे हिमालय जूका ठाढ भऽ जाइत छैक ।

’ हिमालय ‘िबिद िदमाग मे आबिते भुटु के कवि विदापति आ याती याद्द आबैत छिन ,ओ स्पष्ट रपे मानैत छथिन कि अइ दूनू कवि के रचना के आसपास मैथिली मे केओ नइ अछि । हुनकर ई मान्यता कतेको ठाम विािद केने छैक ,तैयो ओ पूिित छथि ।आब हुनका याद्द पडलेन कि जौनपुर सू हुनकर की सम्बन्ध अछि? मिथिला क ‘ राजा हुसैनिाही राजा सू हारल छलाह आ कवि विदापति जौनपुर आयल छला ।भुटु झा फेर सोचऽ लागला कि मिथिला क ‘ हजारो पोफेसर ,डॉक्टर ,इंजीनियर डेली दिल्ली ,पटना ,लखनउ ,लंदन घूमैत अछि ,लेकिन ओकरा मून मे किएक ने ओहन मौलिक विचार आबइ छैक ,जे कवि विदापति के जौनपुर मे एलेन ।मुदा जौनपुर आ विदापति के सोचि के की करताह भुटु झा ।पोफेसरी क नौकरी हिंदुस्तान मे ित पिाति आरक्षित छैक । ई नौकरी पाप्त करबा क ‘ लेल पोफेसरक ििणु ि अंडाणु सू जनमनइ एकमात योग्यता छैक । भुटु झा के याद्द एलेन कि बाबू हरिमोहन झा आ सुमन जी क सुपुत सेहो त पोफेसरे छथि ,फेर ओ अपने सोच पर राम राम

करए लागला । हुनका लागलेन कि ई उदाहरण ठीक नइ अछि ।फेर तमाकू क डिब्बा खोजऽ लागला ,झोरा मे हाथ फेर सकिफिकेट सू टकरा गेलइ ,आब तमाकुओ खेबा क मून उतरि गेलेन ।गाडि हरियरका झंडी दिय ' लागलइ ,ओहो कर्वित भेला ।झूठे मून व्याकूल अछि ,अनाश्यिक चीज सब दिस ध्यान लऽ जेबा क कोन फायदा ।उठऽ हओ भुटकुन ,उठऽ गौतमानंद ,आब त ' दू घंटा मे बनारसो आबि जेतइ ,मुदा ओ दूनू बाना कोनो हरकत केने ओनाही सूतल रहला ।

भुट्टु झा सेहो सूति रहलाह ।टेन धीरे धीरे बढऽ लागल ।भुटटु झा के लागलेन कि ओ गाम पहूचि गेल छलाह ,हुनका दलान पर अजीत झा बैसल रहए ,आ कोनो बात पर हुनकर गरदनि पकडि लेलकइ ।ओ कतबो पयास करथि ,गरदनि नइ छोडा पेलाह ,दलान पर बैसल किछु आर आदमी आबि के हुनकर गरदनि छोडब' लागल ,मुदा ओ जते छोडाबथि ,अजीत क हाथ ओतबे मजबूत होइत गेलइ ।भुट्टु झा चिचियाब ' लागला ,आब जान बचबा के कोनो संभाना नइ ।बचा........बू ...अओ ...लोक सब.......।जखन नीन टूटलेन त ' गौतमानंद आ भुटकुन हुनका जगबैत आ हाथ पकडने छलाह ।

की भेल भाइ?अहा सपना मे छलहू ।

कोनो खास नइ ,ओहिना.......

भुट्टु झा फेर गामके नीक जूका याद कर ' लागला ।विभिन जातिए नइ मूल गोत गुट टोल आ रंगक असंख्य कोटि मे बूटल मैथिल समाज ।सच के सच कहबा के लेल तैयार नइ ,जे बड पगतिशील से सच के अठारह आरिण मे सामने आनता।अजीत ,फूलो ,दिगम्बर सब त ' लंठे लंठ अछि ,अकेले भुट्टु ककरा ककरा सू लडता ,आ ककरा चलबइ लिा आ राति के पहरेदारी करएलिा भुट्टु के लोक

जुता सू नइ मारतइ त ‘ क्क करतइ ,ओकरा तकिआ विकिक बात करबा क अक्षकार के देलकइ?ओ की जान ‘ गेलइ सोसाइटी आ पोक्लक्टक्स ,आ कविता आ उपन्यास के ऐ मैक्षल समाज के की जर रत? आब भुटु झा राखने रहथु अपन सक्टफ़िकेट के माथ पर टागने ।दुक्नया एक्हना चक्ल रहल छैक ,जकरा चलबा के हो से चलइ चलू आ नइ त ‘ ओक्हना उंगरी करैत रहू यत तत सक्ति.............

भुटु झा चाय पीलक्थ ,दू दू बेर तमाकू खेलक्थ ,एक बेर भुटकुन गरदक्त के मटरो तोडलकइ ,मुदा हुनकर चेहरा झुलक्स गेलइ ,दसे क्मनट मे लागलइ जे कोनो बडका बीमारी हुनका दाक्ब देलकइ ।गामक भाँी संघष हुनका डराबऽ लागल ।अजीत झा ,फूलो झा ,क्दगम्बर क्मशक सौझका दार पीबा मंडली क विक्भन र प हुनका सामने आब ‘ लागल ।पूजा क बहाने चंदा मागबा क माक्सक उपि म ,आ क्हन्दू धमभिक्र साल क्यस्त बनेने रहबा क अिसर दैत रहल । ककरा ककरा सू लडताह भुटु झा , के समथनि मे आयत ,बेाी सू बेाी केस करबा के ,गाहि बनबा के भरोसा । आ अहा ाक्मल भऽ जाउ हुनकर गेग मे ।

गाडी स्पीड पकक्ड लेलकइ ,मौसम सेहो ठंडा गेलइ ,हाि बक्हते झीसी पडऽ लागलइ ,भुटु झा के नीन लावा गेलेन ,भुटकुन माथ आ गौतमानंद पैर रगडऽ लागलइ ,भुटु झा फेर सपना देखऽ लागला ,मुदा अइ बेक्र एकटा मुस्क्कुराहट हुनका ठोर पर छलइ ।अजीत भाला ल ‘ के आ फूलो लाठी लेने हुनका तरफ दौडलेन ,क्दगम्बर सेहो कता लेने छलइ ।मुदा ओ आब अकेले नइ छलक्खन ,गामक सब सोलकन अपन हासू ,खुरपी ,कोदाक्र लेने ओकरा क्दस बढल ।भुटु झा स्पाि देखलक्खन ,ओ कोनो साधारण सोलकन नइ छलइ ,ओ सब बुध क

विपिन अतिार छलाह ,कोनो बोधिसत्व ,कोनो अलिोकितेशर आ कोनो................।भुट्टु झा क मुस्कुराहट आर गम्हर होइत गेलइ ।हुनकर ठोर देखते भुटकुन आ गौतमानन्द सेहो मुस्कुरा उठला..................।

तीनटा बीहनि कथा

१

तीन-चारि सालक छौडी मुदा अलबत्ते चरफर ।बाजै भूकै ,चलै-फिरै ,दौडै-घूमै मे केकरो बूझि नइ पडै जे ई एत्ते छोट छैक आ माए के हरदम सर्टिफिकेट दिय' पडै ।छोट मोट टोहल होए ,दोकानक काज ,कंसार जेनए ,बथुआ तोरनए ,हकार देनए आ जनी-जाति सबक बीच मे बैसि के गीत-नाद मे पाछू पाछू सूर मिलेनइ.....अलबत्ते रहै राम सोहागक बेटी ।आ बुढिया के माए कहबो करै ...ई रहै त' बेटे मुदा भगवान के नीन्न आबि गेलेन आ ई बेटी भ' गेलै ।

आ जखन बोखार लागलै ,तखन पूरा दू महीना तक भूपेर डॉक्टर आबिते जाइत रहलै ,कखनो ई दवाए त' कखनो ऊ दवाए .....आब ई टॉनिक दियओ , आब छोटका गोटी फिर कर आ जखन बेमारी कम हेबाक कोनो लक्षण नइ देखेलकए तखन कहलखिन जे एकरा दरभंगा मे फला बाबू ओइ ठाम देखाबू ।आ फला बाबू देखिते कहि देलखिन ,जे एकरा त' बडका बोखार अछि ,मुदा कहलखिन एना जे भूपेरक पक्ष मोन मे ककरो कोनो शंका नइ जनमै ......आखिर चेला त' हुनके रहेन ।

आब बात एना फसलै जे ठीक हेतै त' कते हेतै आ पैसा लागतै त' कत्ते लागतै ......राम सोहागक ओकाति क' पूरा मानवियत डॉक्टर साहेब एक-दू दिन मे बना देलखिन ,आ पूरा दया देखबैत मात महीसे बेचेलखिन ....बेटी जाइत बला बात.....फला बाबू जे अपन डिग्री क' अंत मे एफ0आर0सी0एस0 लगबैत छथिन सपष्टे कहलखिन जे यदि बेटा रहत तखन त' हम आर किछु कहतौ

,मुदा ई त' बेक्टए अछ ते आब जत' अछ कथा के ओतै समाप्त कर आ राम सोहाग अपन छोटकी बेटी के नेने गाम आबा गेला ।बेटी जे ने बाजज सकै छलै ,ने उठ-बैस सकै छलै ।सूतले सूतल खाए आ पैखाना करै ।टोल पडोसक लोक सब ि़र मे आबैत गेलै ,कुिल केम आ भगिनक नाम.......राम सोहाग सेहो पंजाब चल गेला....आब बचलै केिल बुकया आ ओकर माए ......आ माए सेि कर' लागलै ,भगिन ,भाग के गाव-बात कहैत ....ओइ दनक पतीक कर' लागलै जखन क बुकया क' पाण छूटतै आ बुकया के ऐ कष्ट सू मुक्त मलतै...........

२

भाय साहेब कार सू मामा गाम जेबा के विचार बनेलखन ।भौजी कच्चे आंखए एना देखलखन जेना ऐ याता मे भाय साहेब सब कछु लुटा देता । फेर भौजी के बौसए क कम सू कम पनरह साल पुरान तरीका अपनाबैत कहलखन 'कन्ता नइ कर ।बहुत दन बाद जा रहल छी ,खाली हाथ कोना आबए देता , आ माए सेहो कत्ते दन बाद गेलै हन । ' भौजी क' कंता तैयो समाप्त नइ भेलेन ,तखन भाए साहेब बडका बेटा के सेहो तैयार क देलखन ।माक लयओ जे जेना खरचा हेतइ त हेतइ विदाइयो त ऽ हेबे करतइ । आ विदाइ के समै बेटा के पाच सौ टका मामा देब ऽ लागलखन त ऽ छौडा बाप दस देख ऽ लागलए । भाए साहेब के मत्त चढेन जे छौडा लै कएक नइ छइ आ िआ बूझइ जे लेला क ऽ बाद पप्पा डाक्ट ने देथ । आ माए गुम्मे रहलखन भाए के पैसा खचिहोए के कंता अलग आ िआ गाडी सू आयल से कंता अलगे

३

एकात लिा रस्ता

दूनू कवि भोर का टहलौनी मे एहन रस्ता खोजि लेलखिन ,जइ रस्ता मे केओ नइ देखाइ ।कखनो काल कोनो सरलकहिया कुकुर ,कखनो कोनो कबाडी तेजी सू आबादी दिस बढैत ,बस यैह हलचल ।ने एक्कोटा अखबार लिा कऽ सायकिल ने इसकुलिया बस क धूम-धक्कर ,कखनो-कखनो हनुमान मंदिर सू भजन कऽ आिज आबै ।भजनो नबका धुन पर ,कविगण ऐठाम कािचेन सू अपन पेट पर ढोल बजा सकैत छला ,पेटे नइ ,पीठो दिस आ नीच्चो ,ऐठाम के देखए लिा ।आ ऐठाम खूब नीक जूका विरोधी पर टिप्पणी कएल जा सकैत छलै आ रंगबिरही गािर सेहो ।

ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीघकिथा)

नाम:सूयकांत

उमेर :बयालिस षि

रंग:गोर

लंबाई:पाच फीट नओ इंच

िमा आंखक ऊपर मे आ दहिना बाहि पर चोटक निान

समस्तीपुर केतीय गामीण बैक ,कवरयन ािखा क' एकटा खाता नम्मर (हम नम्मर सािजिनक नइ क' रहल छी)

पहिले पहिल मात यैह सूचना फैक्स क' माध्यम सू दिल्ली सू राजीि झा जी भेजला ।राजीि झा दिल्ली पुलिस मे उपनिरीक्क छथिन ,आ हुनका पता छलनि जे सूयकांत हमर नावसयौत भाय छथि ....दिन छलै सोलह अगस्त दू हजार दस ।जखन हमरा बूझा गेल जे सूयकांते भाय ई डायरी लिखला तखन हम कहलियेन जे ई डायरी भेज दियअ । ई डायरी अजीब तरीका सू लिखल गेल छैक ।जत्ते दिलचस्पी अपना पक्ष ओतबे समाजक पक्ष ।ओना डायरी क' बहुत रास बात हमरा अनसोहात लागल ....कखनो कखनो एत्ते कि सूयकांत अप्पन मयादा धोए देने हो..........मुदा ऐ विषय

मे हम किछु नइ कहब किएक त' गजेर जी कहला कि डायरी के मूले रुप मे छापल जाय ,ते डायरी क' कंटेट पर हमरा किछु नइ कहबा के अछि ....ओहुना मरल आदमी के विषय मे की कहल जाए ?

हमरा तऽ ईहो नइ बूझबा मे आबि रहल अछि कि ऐ डायरी मे किछु साहित्यिक तत्व अछि कि नइ ? कखनो डायरी तथ्य आ समै कऽ संदर्भ स्वीकारैत छैक आ कखनो नइ ,कखनो कखनो तऽ डायरी अप्पन रुप के छोडैत संस्मरण ,कथा ,कविता किछु भागऽ चाहैत अछि ।कखनो कखनो सपना कऽ रुपक मे समाहित हेबऽ लागैत अछि ।डायरी लिखलो छैक मिथिलाक्षर मे आ हमर मिथिलाक्षर रहबो करए कमजोरे ,ते एकटा ईहो मेहनत बढि गेल । मुदा गजेर जी कऽ ई कहतब छनि जे एगो दूगो पृष्ठ के सत्यपत्र सुलेखित करैत भेजैत रहू ।

डायरी के पस्तुत करैत सभ सू पहिले हम राजीव बाबू के धन्यवाद दैत छिएन जे ओ अप्पन व्यस्त दैनंदिनी कऽ बीच सूयकांत कऽ डायरी मे दिलचस्पी देखेलैथ आ एहियो सू आगू बढि हेरायल डायरी के खोजि निकाललाा । ई डायरी सूयकांत भायकऽ मकान मालिक राखि लेलकइ आ कोनो साहित्यिक वस्तु बूझि बेचबा के फिराक मे रहए ।ऐ डायरी कऽ तथ्य के पस्तुत करैत हम सूयकांत भाय कऽ आत्मा सू क्षमा मागैत छी ,किएक तऽ डायरी मे कतेको एहन चीज छैक ,जइ सू विवाद उत्पन्न होयत आ मृतात्मा कऽ संबंध मे भ्रान्ति उत्पन्न भऽ सकैत छैक । मुदा ऐ धन्यवाद आ क्षमापाथना कऽ

पासंवाकता तखने ,जखन डायरी मे कोनो सत् हो ।डायरी मे कतहु कतहु षिक्कि छैक आ कतहु नइ ।सबसँ नमहर षिक्कि छैक ‘ओक्कर हम्मर तोहर सपना ‘ ।आ डायरी कऽ पह्लल पृष्ठ पर एकटा छोट षिक्कि रहै ‘सोयरी आ सपना ‘।ऐ खेप मे ‘सोयरी आ सपना’ पस्तुत अछ ।

सोयरी आ सपना

ई कोनो अ्ति सपना नह रहै ।सभ लोक अपन अपन बच्चा क’ लेल एह्लना सपना देखै छैक ,आ ई ओकर पह्लो सपना नइ छलै ।पह्लो नइ ,दोसरो नइ ,तेसर …….. ,मुदा आइ सू तीस-चालीस साल पह्लने तीन टा बच्चा बहुत सधारण बात छलै ,से दम्पक्त अपन सपना के देखबा ,सपना के अगोरबा ,पोसबा के सब उपम करैत गेल ।सपना मे पाक्त देनइ ,सपना के ह लगेनइ ,सपना मे सू आकुट बाकुट के साफ केनए ,सपना के चोर-तान सू बचाबैत ,लोक-दि के कहैत गुणैत ।सपना के हाथ-पैर ,मुंह-कान सब बनलए ।ऐ मे लगभग नओ महीना लावा गेलइ ।आ ई नओ महीना कोना बीतलइ दम्पक्त के पते नइ चललै ।

एक क्दन क्मथला क एकटा गाम मे सपना के धरती पर उतारबाक ्यिस्था पारंभ भेल । तीन -चाक्र टा जनानी ,एकटा चमैन ,आवा-पाक्त ,तेल-मौध,साबुन-कपडा आ गीत-नाद । आ आ रे अलगे समै छलै ,ओइ समै मे ,बच्चा जनमै काल एकटा खास भूक्मका लेल

कछु जनाना के बजाओल जाइत छलै ,ऐ मे सबसू पवित्र जनाना ओइ ीिसू होइत छलखिन जे कथिले नइ समस्त भारतषििके जाक्त-विचार मे अछोप मानल जाइत छलै ,मतलब सबसू महत्पूिणाकाज आ काज केव्हार क दरजा अछोपक ।ई सब बात बाद मे ,पहिले सपना कऽ स्पि ि,गंध सू मोन के भजा तऽ लेल जाए । आ सपना के जमीन पर उतारबा क जिम्मेरिी ओइ ीिके हाथ मे जेकरा सपना देखबा कऽ मनाही हो । मुदा 'लैण्डंग ऑफ डीम्स' कऽ मजबूत पायलट सभ अपन-अपन अनुभि कऽ बले अयमयान के सफल कििैत रंगबिरही बात ,कखनो टोल पडोस कखनो धमिपुराण कखनो ीरीर विजान आ यौन विजान सेहो ...... जनी-जाक्तक मजाक स्पि्नागमन मे कि्हत िदिना के कम करैत । आ सपना के छोट छोट हाथ छलै ,छोट छोट पएर ....आंख कान सब छोट छोट ।आब सपना स्यिं अपना लेल सपना देख सकैत छलै ....

मुदा सपना के नून नइ चटाएल गेलै , ई दम्पक्त कक्त अलग रहै यैह बात नइ ,बच्चा 'बच्चा' रहै ,बच्ची नइ ।आ सपना एखन सीधा-सीधी बाट चलैत रहै ,भूख ,प्यास ,गरम-ठंड केलि सपना मे आबै ,आ ईहो कोनो सपना देखए के उमेर छलै..............जे बाप माए क' सपना सएह बच्चा क' । आ छोट-छोट सपना के पूरा करए लेल माए-बाप रहबे करथिन ,से अपन सुविधा के समेटैत ीिआ कऽ आिि्यकता पर केक्त भऽ गेलै घर ।

एखन तक सपना मे सपना कऽ मथफुटौएल नइ भेलै । से कएक?

त' एखन छोटका सपना के हाथ पएर नइ भेल छलै ,ओकर आंक्ष नइ फुटलै छल एखन ,ते ओकरा देखाओल गेलै जे ौिआ रे सपना एक्हना देखबा कऽ चाही आ सपना मे मात यैह सब देखबा के चाही ।से तीन चाक्र साल तक ककरो ई बात क्दमागो मे नइ एलै जे ऐ पक्रािरक पत्येक सदस्य के कोन माता मे सपना देखबा कऽ चाही ।एखन तक खाए-पीबए ,पक्हरनइ-ओढनए ,गीत-गानक सीक्मत बाईस्कोप छलै ..... आ ओइ समै मे गाम मे बाईस्कोप देखबै िला आबैत छलै आ ओकर चकरका पेटी मे आठ-दस टा क्खडकी रहैत छलै आ घूमैत फोटो कऽ साथ गीत सेहो सुनाइत छलै ।फोटो आ गीत मे सामंजस्य हेबाक चाही से ौिआ के ओइ समै मे नइ बुझेलए । आ ौिआ नइ क्चन्हैत छलै ते एके क्सनेमा मे मरलका पृथ्ौी राजकपूर सू लऽ के सरलका गोक्ौन्द पधान तक के फोटो अजीबे आकषर्क लागै ।फोटो कऽ मुरा ,जइ मे मारनए-पीटनए ,हूसेनए ,दौडेनए तऽ रहबे करए छौडा-छौडी एक दोसर के पकडने सेहो रहै ।आ ौिआ के ओइ समै मे ई बूझऽ आक्ब गेल छलै जे ौिआ अलग होइ छइ आ बुच्ची अलग ....

आ ौिआ कऽ जखन नाम क्लखेलइ तऽ ौिआ एगो झोरा आ एगो बोरा नेने ईसकुल पहुंक्च गेलइ । ईसकुलो मे ौिआ अप्पन बोरा के छौडा सभक बोरा मे सटा के राखए ।ईसकुल कऽ ितािरण ौिआ के बेसी नइ नीक लागलै ।ऐ ठाम मरसैब सब क्हंदी बाजैत छलक्खन आ हाथ मे मोटका सटक्की राखैत छलक्खन । ौिआ के तऽ ईहो पता नइ रहै जे क्हंदी कोनो भाषा होइत छैक ,हा ओ सब जे बाजैत छलक्खन से गाम मे केओ नइ बाजैत रहै ....मुदा नइ ऊ जे

नीरस भैया आबै छथिन कतहयो कतहयो गाम ,आ ऊ जे कुमल भैया छथिने ,ऊ दूनू गोटे गामो मे हिंदी बजैत छथिन ,तऽ की हिंदी बहरिया भाषा भेलै ,गाम परक नइ रोड परक ,ईसकुलक भाषा ।मुदा ओइ बात सभक लेल ओइ समै कोनो अकिा नइ छलै ,ई कोनो सपना नइ छलै ,ते झोरा ईसकुल तक राखि बहुतो बच्चा मंदिर दिस भकिल जाइ आ ाओ सएह करए ।मंदिर पर ,पोखरि दिस ,गाछी मे ओ सभ समान भलैत छलै ,जेकरा सपना मे देखल आ सोचल जा सकैत छैक । कनैलक फूल ,कक्का कऽ ललका लताम ,हुनकर बूसबीटी ,उत्तरबाय टोलक ईमली आ पवितिरा आ डोमा कऽ तार आ तरकुल मे बहुत नि छलै ।आ ईसकुलक सिमिान्य मुरा भिनसल छलै ,मतलब भिनसलक कनी टा टुकडा मे तार कऽ कनी गो ससा भलबा कऽ गारंटी छलै । ओइ समै मे ाआ के बूझल नइ छलै जे पवितिरा दुसाध छैक आ पवितिरा के छुइ देला सू हडडी तक छुआ जाइत छैक ! ओइ समै ईहो नइ बूझल छलै जे डोमा डोम जाति कऽ बच्चा नइ कुम्हार छैक आ डोमा नाम राखि एगो जोगटोम कएल गेल रहै ,आ ईसकुल मे डोमा कऽ माए बाप के ई साबित करबए मे दम लगब' पडलै जे डोमा कऽ असली नाम सुकुमार छैक ।

मुदा ाआ रे हम्मर स्थिति किछु अलग रहै ,आइ तक घर मे हमरा केओ नइ सुनलकै हमरा जन्मक कहानी ।ने माए ने बाबू ने भाय-बहिन सब ।हम विाि पुरहिताया घर मे जनम लेलियइ ।घरक पूरा अथयिस्थिा बाबू के दारा साझ मे आबइ ािला सीदहा पर भिरि रहै ,ते घरक पूरा राजनीति जजमनिका पर केंद्रित छलै ।भोर मे बाबू नहा-सोना पूजा कऽ लेला के बाद सीधे भागथिन गयघटा ।आ ई

गायघाट गाम हुनकर समस्त योग्यता आ विदिता कऽ मंच छलै ।ऐ ठाम हुनका लेल कोनो कंपक्टिनि तऽ नइ रहै ,ते साक्षात करबा आ नइ करबा सन किछु नइ रहै मुदा ई जे कादम्बिद संभानिा छलै से कतेको संभानिा के नून चटा के मारि देलकए ।एकर धरती एको डेग नइ छलै ने अकाि एको हाथ के ते ामिन के ामिने रहि मरबा के छलै ,ऐ ठाम विष्णु मात सत्यनारयण कथे मे रहैथन ,हुनकर दस टा पचास टा रप कहियो सपना मे आयल ,विराट रपक बाते छोडू । ऐ ठामक विष्णु लक्ष्मी सदेत आबैत रहैथन आ कहियो चौबन्नी ,कहियो अठन्नी ,कहियो सा रपैया आ कहियो 'बाद मे दऽ देब' कऽ पुनर कालि सुनाबैत गौलोक चलि जाइत छलखिन

काटी आ मकरया

जवजमान आ पुरहितक सम्बन्ध

पता नइ कोदारि आ बेटक संबंध छैक ा काटी आ मकरया क' । बुझाइत तऽ एहिना छइ जे एगो मकरया हेतै त' दोसर के काटी बनथिै पडतै ।आ एहनो कोनो जोगाड नइ बैसै छैक जे काटियो रहि के मकरया क' मारि नइ खाए पडै । आ मकरया रहि के केओ ऋकथा मुक्त बनल रहए ,से हमरा जनैत तऽ असंभि बूझू .....ओना हम पुरहित रहियइ आ हमर भरि दिन जवजमकाके मे बीतए ......वियाहे-शाध नइ ,मारि-पीट , गारि-उपराग ,टोना-मानी सभक हिसाब ।हअर जोतनइ ,चौकी केनए ,बाउग केनइ ,कमौनी ,पाक देनए ,खाद छिटनइ ,जजात के घोघेनए ,दाना पु. भेनए ,कीडा लागनइ ,दाि के समे ,सूखनए ,काटनए ,दउनी ा झंटेनइ ,कखनो कखनो मीिन सू दउनी..........अन-पाक सुखेनए आ कोठी अथा बोरा मे राखनए ....ऐ सब पविया मे हमर सवि य भागेदारी रहैत छलै आ हम दिने

नइ गुनैत रहैयइ ,कखनो कखनो सलाहक स किर प समाकजक आ िजाकक सेहो भ' जाइत रहै ।हम कोनो माक्सि ािदी बात नइ करैत छी ,ने हम ई मानैत छी जे उयमा्दन पवि या मे हमर समान भागेदारी रहै ....ने विशाहस क' वस्तर पर ने समाजक स्तीर पर ।

अपन भूकमका के अिमूल्य न नइ कवरतौ ई कहबा मे हमरा कोनो लाज नइ कक कलै िला पवतफल असंतोषजनक ,असमान आ अमानिीय छलै ।कोठी आ खवरहान के भरै मे सास्कृकेतक सहयोगी आ कलै छलै आसेर ,सेर भर अगऊं ।एगो दूगो बाबू सब छलवखन जे साल मे एक दू बेर पसेरी भवर दाना दैत छलवखन ।आ ई हमर खानदानी कतूवयिब छलै कक जवजमानक समृवध क' पक्त विरकतनक भाि बनेने रहैयइ ।भगिती अन पूणाक पूजा मे कतओ कमी छलै आ अवनपूणों खूब तमाि देखबैत रहवथन ....

आ जवजमानक पुर खा सभक बरखी ,छाया ,एकोवदि क' वतवथ हमरा मुंहजबानी यावद रहै ......यावद रहै यैह बात नइ ,यावद केनए परमाश्यिाक रहै ,महाकतावय ....ियदेसंयोग यवद कवहयो वासवर गेवलयइ त' ओइ वदन जवजमान महासामंत भऽ जाइत छलैवखन आ हम महादास......आ मृयुय.दंड सू कवनये छोट दंड रहै ई िकवयन 'हमरा अहाक कटमकटी ।हम आब फला पंमडी जी सू पूजायब' ।आ जइ वदन बाबू के ई बात पता लागेन ,हमर देह ,हाथ ,माथ पर हुनकर खडाम आ लाठीक चेन्हू अहा वान नइ पेवतयइ ....ओना माए गानैत छलवखन आ कखनो बाबू आ कखनो दुवनयो के ......कानबो करवथन आ गावरयो देवथन.........

एतबे नइ एकादशी ,तयोदशी ,चतुर्दशी ,पूर्णमासी अमावस्यान सब........जेना सूर्य आ चन्द्रमा हमरे पूछि के डोलैत छथिन ।आ कोन एकादशी करियौ आ कोन छोड़यौ ...ईहो बात विधिपूर्वक हेबाक चाही ।आ बात-बात पर महादेव पूजा ।पान सौ आ हजार त' डेलीए पूजाथिन ,मुदा कहियो कहियो सवा लाख महादेव क' बात सेहो होए ...आ ओइ दिन त' एकटा उत्सक कि शितारिण बनि जाए ,ओइ दिन बाबू महंत जूका करथिन ,कएक त' हजार दूहजार सभक घर मे बनए आ बाबूए हुनका सभ के दक्षिणा बाटथिन ।आ बाबू ईमानदारी पूर्वक दक्षिणा बाटथिन ते हुनका कहियो पंडितक अकाल नइ पडलेन ।हरदम टोल-पडोसक पंडित सभ आगू-पाछू करैत रहए ।आ ई कोनो महादेव पूजे तक सीमित होए ,एहनो बात नइ रहै ,कहियो शाध कहियो बरखी कहियो उपनेन-वियाह........एहिना चलैत रहए ।आ बाबू चाहथिन छल तखन सभ दिन पारसे आबैत रहतै छल ,मुदा बाबू पारस लेबाक विरोधी छलखिन ।जतेव बाहमण होए ,ओतबे क' भाडा लियओ ,दुनिया क' ठीकेदारी नइ......

वैदिक कर्मशिभक हो कि अशिभक ,जजमान सभ एकटा खास नजरि सू पुरहित के देखैत छलखिन ।हुनका लेल आदर्श पुरहित ओ भेल जे मैल कुचकायल पहिरने हो ,चाहे धोती हो कि कुरता एक दरजन ठाम ओइ पर कापी हो ।अहाक मोछ-दारही बरहल हेबाक चाही ,अहा टुटलकी चप्पहल या बिना चप्पओले के याता करैत हो ।यदि अहा साफ-सूतरा कपडा-लताह पहिरने छी आ पएर मे जुतो. हो तखन त' बूझू जे ने केलि अहाक धर्म भंग भ' अछि बल्कि जजमनिका मे कनफुसकी क' केरवि दु सेहो अछि ।सब कहत 'देखियौ ने कनेक जुताम देखियौ ,बाप के खडाम खटखटबैत जनगी

गुजरि गेलेन आ बेटा ......’ आ फेर तखन बहुत रास खिस्सा एहनो जइ मे हुनकर बाप आ बाबा हमरा बाबू आ बाबा के खाली पएर देखि रवित भ’ गेलखिन आ प्लासिस्टक िला जुताह ि चप्पबल ि खडाम दऽ देने हेखिन ।

आ भाय लोकिन ध्याटन देबै मैथिली मे एहन कहबी सबसू बेि छैक ,जइ मे अहाक तुलनात्मयक महताल स्पएि ब होइत अछि मतलब नीचा दिस ,खराब दिस ,जेना कि ‘बापक नाम लतील फतीा ,बेटाक नाम कदीमा ‘ ,’खाए लेल खेसारी आ .....पोछै लेल जिलेबी ‘ , ‘पूजी ....नइ चाभी क’ झब्बा ‘ , ‘नमहर नाग बैसल छथि आ ढोरहाय मागै पूजा ‘ आदि आदि ।आ ई सभ कहबी जतेज लौकिक अनुभि सू भरल होए अहाक अपमानित करबा लेल पयाप्तज रहै ।मुदा ई सुनला के बादो कोनो उत र नइ देबाक रहए ।एगो बात ईहो छलै जे जकरा कमि किरबाक रहै ,ओ चाहे किछो पहिरए ,खाए ,पीबए ,अहाक लेल खास डेसकोड ।मतलब बाप मरै फलनमा के आ केि छिलाबैथ पंडित राम ।

सम्मााान आ अपमानक एहन दुलभि संगति हमरा मूने कोनो सभ्य ता ,कोनो समाज मे असंभि अछि ।आ मैथिल बाह णक चरम लक्ष्य् सभ दिन चूडे दही रहल ।हरिमोहन बाबूक दाि निक अंदाज जते ‘खटर कका क’ तरंग’ मे चूडा दही चीनी मे विस्ता र लैत अछि ,ओहियो सू बेि ।एकटा भोजन ......नइ भोजने मात नइ.....अलगे आकषणि ......अलगे नि ।एकटा सुस्तीओ ,संतोषक भाि ।ित्रगुण केिल सानै काल तक ,ओकरा बाद विषम भाि क सह-अस्तिय ि ।दात चूडा पर पहार करैत आ जीभ आ कंठ दही के ससारैत आ चीनी मुंहक सभ अंग सू मेलजोल बरहाबैत ।अंत मे

विषमता समाप्त आ सभ तरहेँ अपन अपन वैशिष्ट्यअ के समाप्त करैत ....।आ चूडा दही एहन नै बुझयौ जे केलि खाइए लिा मे सुस्तीस बरहाबैत हो ,खुएनहार मे सेहो तेहने आलस्यब बरहाबैत छैक । चूडा दही खुएबा मे अहाक करबा के की अछि ? चुडा कुटाएल बोरा मे राखल ,दही पौरल आ चीनी दोकान सू खरीदल ,तखन त ' मात अंचारक सहारे सेहो अहाक 'ए' गेड भक्ल सकैत छैक .....हम धर्म,पुण्यद आ व्रतरक बात अखन नइ क' रहल छी ।जे होए चूडा दहीक नि एहन रहै जे इसकुलक समै मे इसकुल कालेजक समै मे कालेज छोडक्लयइ ।ने घअर दुआर ने खेती बाडी ।कोन कुटुम कोन कुटमैती ।ने समाजक नौत-क्रमंतण ने पाक्नि व्राहार ।बस अजुनि जूका ...संभति: ओ मासाहारी रहै ते माछक आंक्ख मे तीर मारलकए आ हम सिहारी मैक्थल ....चूडा दही क' गंध क्दस आंक्ख मूनने बरहैत आ हमर पेम चातको सू बेिी ,हम्मरर क्यान बगुलो सू बेिी ,हमर िध क्संहो सू बेिी आ हमर भूख सापो सू बेिी आन्हहर।मुदा र कू महराज हम कक्छु बेिीए बाक्ज गेलौ हमर भूख चाहे जेहन होए दुिसा आ भृगुक िध कताबे तक सीक्मत रहलै ,हम अपन क्जनगी मे त' नइ देखक्लयै जे केओ जक्जमान अहाक उक्चतो िध के सकारने हएत ।भृगु अपन िध के ने क्छपेलक्खन ने सम्हालरलक्खन आ भगािन विष्णुक के धएले लाक्त करेजा पर माक्र देलक्खन आ भगािनो केहन त' पूछलक्खन 'हे बाह ण शेष क चोट त' नइ लागल ।हम्म र करेज त' पाथरक अछि ,मुदा अहाक पएर त' कमलोऽ सू बेिी कोमल ' ।ई पसंग बाह णािदक संरक्णक एकटा नमूना अछि कि कोना विचाक्रक स्त र पर यथाक्स्थक्तािदक समथनि कएल गेलै । फेर लक्मीई क' िध आ पुन: भृगु के िक्चत भऽ के भृगुसंक्हता क्लखनए आ लक्मी के

संबोधित ई गाकि कि 'जे बाहाण ई पोथी परहत ,ओकरा लग तो दौडल जेबही ' ।

एकटा बात आर अहा अपन दैनंदिनी के चाहे जेना व्यवस्थित राखयौ ,एक चीज लेल हरदम तैयार रहयौ ।अहाक कखनो बुलाहट आबि सकैत अछि ....नइ नइ उपनेन विवाह त' पहिले सू कवित रहैत अछि ,मुदा सत्यनारायण कथा ,महादेव पूजा ,कोनो गुप्त उदेश्यक छक लेल बाहाण भोजन आ एहने सन बहुतो रास पसंग ,जइ ठाम अल्पसूचना पर अहाक उपस्थिति अपेक्षित आ कखनो कखनो लठैत लिा भाषा 'याद राखब पंडित जी समै खराब छैक छओ सू सात नइ हेबाक चाही ' ।आ ग्यारह टा बाहाणक आमंत्रण छैक त' ग्याउरह टा हेबाक चाही ,औ जी साहेब आब गाम मे नइ छइ त' नइ छइ ,हम कतऽ सू लाबी ।सब गाम छोडि के दिल्ली ,पंजाब रहै छैक ।बहुतो लोक गामो मे छैक त' अपन अपन काज धंधा मे व्यस्त ।ओ चूडा दही खेबा लेल तीन घंटा बेरबाद नइ करता ।ओना त' काज चलिए जाए मुदा कहियो काल एहन स्थिति उत्पन्न होए कि लागै आइ नऽ छऽ भइए के रहत ।कोनो कोनो जजमान के होए कि कम बाहाण हम पारस जमा करबा लेल आनलौ ।कखनो कखनो त' हद भऽ जाए जजमान सब नाओ वानाबऽ लागता ,फला पंडित त' गामे मे रहैत छथिन ,आ फलानक भतीजा सेहो .... आ जजमानका क' एकटा खास विा चार रहै ।पणाम त' सब अहीके करैत छलथि ,मुदा अहा आशीर्वाद एकटा विशेष संबोधन के साथ दिअओ । 'खुश रहयौ हाकिम' 'आनंद सू रहयौ सरकार' 'जमीन्दारक जय जय हो ' 'राजा सदैव विजयी रहथु ' ।मतलब जजमानक पणाम सूद समेत लौटाबए

क’ व्यास्थिाा रहै ।आ कोनो कोनो गुंडा टाईप के पंव्डत जी ऐ व्यरस्थिा के दोसर र प दऽ दैत रहव्थन जेना ओ जव्जमान के देव्खते क्चक्चयाव्थन ‘जय जय बम बम’ , ‘जय हो जय हो ‘ आ पता नइ ऐ मे ककर जय आ ककर बम बम रहै ।मुदा ई व्यडस्थिाम व्विनू र पातरणक साथ आगू चलैत छलै ।आ दूनू तर्य यैह चाहव्थन जे हम काटी नइ मव्रये रही ,मुदा ई केलि सोचबाक बात नइ रहै ....

आब कनेक पुरव्हतक दृव्िकोण ।तमाम नीचता के छुपबैत अपन कुरता के गौरविक्ति करैत पुरव्हत चाहैत छलव्खन जे संसारक तमाम व्संहासन हुनके लेल रहै ।कखनो सदी-बुखार ,कखनो जाडक मार्र आ कखनो अलव्सयाइत पंडी जी व्बन नहेने ,तेल चानन लगा झुठौआ फूसौआ के कंपकंपाइत रहव्थन व्क हुनकर ख्यातव्त एहन पंव्डत क ’ र प मे होए जे अपन तपस्यो सू हि-बसात के जीव्त नेने होए ।आ अपन अल्पा संस्कृएत जान के कखनो लय ,कखनो रटंतु विदा सू सुरव्क्त करैत ऐ ठामक सब पंव्डत ई साव्बत करैत रव्हव्थन जे उदयनाचार्यक्कि सब पोथी हुनका पास ।व्कछु लोकव्न ऐ भम के सेहो पोसैत छलव्खन व्क संभति: लोक विशोव्स केने जा रहल अव्छ व्क ासितसि मे उदयनाचार्यक्कि असली ावि्रस यैह छव्थ ....
ई पंव्डत जी छलव्खन ,एहन तारनहार जे मंतच्युि त ,विचारविहीन आ तर्किलता सू योजन भव्र दूर ।अपन जन्मनक बल पर ,तीन-पाचक बल पर ,गाल बजेबाक कौिल आ ठोप-ठंकारक बले ।मंत कतबो मूल्यनिनि हो ,दू-चाव्र टा व्बिद अपने गीलने ,दू-चाव्र टा कुल खानदानक नाम पर आ दू-चाव्रटा संभावित दव्क्णाक विचारमग्न ता

सू भि होइत.......कियान आबाते फेर सू हाथ-आंखि किलबैत भगािन के ठकैत आ जवजमान के भरोस दीबैत कि 'हमरा सन िुध पूजा केओ ने करा सकैत अछि ' । मुदा पुरिहत आ जवजमान मे एकटा लिखित समझौता रहै ।भोजन कतबो विविित आ िविधिय सू भरल होए जवजमान कहबथिन 'जे नून चूडा छैक ,आबाियौ आ गहण करियौ । ' आ भोजन कतबो सरल-गेन्हारयल होय पंडित जी कहबथिन 'ऐ सू बिढ के बाते होइत छैक । ' मुदा कखनो कखनो विजय बाबू सन मदरिज सेहो छला जे ऐ लीक के अपन सि भाि तोडबाक पयास करैत छला ।ओ साफ कहबथिन' पंडी जी चिंता नइ करियौ ,आराम सू खाएल जाओ ।पयापित क दही छैक ,नून चुडा िला कोनो बात नइ' ,तैयो विजय बाबूक ई यथाथािदी रख कोनो स्थायी पि्तिक रप धारण नइ केलकै ।आ ई िद्वपकीय समझौता संभित: जवजमानी व्यी्स्थारक सिाििचत तयि इ रहै ।
यदिा पंडित लोकिन जखन एक-दोसरा सू बात करिथ त' ओ पाय: दिकणा संबंधी होए ।जवजमानक िखधाि ,जवजमिनकाक भोजनक िनंदा ,नून ,िमरचाय तेज हेबाक चरचा ,दूध ,दही कम हेबाक बात हरदम सजिनये ,हरदम िनउडे ,कखनो के सब िदन राम तोरय..........िछ: िछ: सोहारी मे घृतक नामोिनाि नइ ,आ खीर मे पािन एकिदस आ दूध एक िदस आ चाउर भोकािर पािर के कानैत ।बेलना टूटबाक बात आ मकई क' रोटी बाह ण के दैत जवजमान सब ।घोर किलयुग ,एहन एहन जवजमान के कत' सू पुण्यो हेतै ।संकलिज आ दिकणा मे एकटका दूटका देबा ,कखनो ऊधािरये रिह जेबाक िचंता ।अपन कुिटल पािडत्य आ दुिनया दारी सू लोक के ठकबा सिबािन्धीद विस्तृनत विमिािआ दोसर के फटकािर देबा आ चमत्कृडत करबाक कतेको कथा ।गलत-सलत मंत परहेबाक पसंग

बतीरसी के खोक्ल के हूसबा के अिसर दैत आ अपने मूने तुक्टरक्हत चलाकी ....
दोसर क्दस जक्जमानो सब अपन हक्कमई ,जक्मंदारी आ लंठई क' चचा क' संग ।विविधि पसंग जइ मे पुरक्हतक गलती के ओ पकक्ड नेने हो ,एहनो पकरण जइ मे पुरक्हत सब के अपन दानिीलता सू ओ मोक्ह नेने होक्थ ।कखनो कखनो त' एहन बात क्क पक्हले त ' क्वान जक्जमक्नका पेट क्क पाजरो नइ भरैत रहेन ,मुदा आब कने मजगूत भ' गेला ।आ ऐ पेट-पाजर क' चचा पाय: होइत छलै । जक्जमान-पुरक्हतक ई काटी-मक्रया क्नरंतर ठोकाइत रहला के बादो हमरा ई कहबा मे कोनो हजिनइ क्क जक्जमनका मे कतेको आदमी एहनो छक्थन ,जे ऐ जक्जमान-पुरक्हतक संबंध सू आगू छक्थन ,आ ओ हमरा लेल कोनो बाप-क्पतीभ सू कम नइ ।चाहे जानकी बाबू होक्थन ि मकसूदन बाबू ,इंजीक्नयर साहेबक पक्रिर हो ि बैदनाथपुर मे िवि के आंगन मे ओ ृिध मसोमात ।ई सब लोक हमरा लेल हमरा खानदानक लेल पाक्रजात बक्न के रहला आ हमर सब कि क्हनका लोकक्न के छाया मे हेरायत चक्ल गेल ।क्नय्यरपक्त क' भेट आ क्हनकर सभक दुलार कक्हयो िस्त्त वकिता सू पक्रचय नइ होम' देलक ,नइ त' पुरक्हतक क्जनगी कोनो माली ,कोनो धानुक ,कोनो धोबी सू कोन पकारे बेिी छैक ।ओहो सब अपन क्हससार लैत छैक आ हमहूं । यक्द फल महक्वपूणि छैक त' एना सोचनए बहुत बेजाए त' नक्हये...............................
जेठक पोखक्र सभ पाय: सूक्ख जाइत छैक ,मुदा एकदम सूखले बूक्झ यक्द पोखक्र के पार कर' लागब ,तखन पएर कक्न कक्न धस' लागत आ एक क्षण रक्क के अपन दूनू हाथ सू एक कोबा माक्ट हटा के देक्खअओ .....तुरत्ते जलक धार अपन उपक्स्थक्त सू अिगत

करा देत..... वमजा के , गरमी सोक्ख के आ अहाक भात धारणा मे अपन विनिम हस्तक्षेप करैत ,ते अओ बाबू भैया सत्य ओएह नइ क्थकइ जे आंक्खक समक हो ....सत्य कने उदोगक माग सेहो करैत छैक ।ते हम अपन गामक पक्रचय कोना दी ,बडड अिौकयिमे पडल छी ।

ई गाम कमक्थलाक ,भारतक आ बह ाडक एकटा सधारण गाम .....अपन खेती-बाडी ,खान-पान ,गीत-नाद ,बोली-ििणी ,सामूक्हकता क' विभिन्न कसौटी पर ...एकटा सधारण गाम ।एकर चचा कोना ि्र कएल जाए , टोल सू ,जाक्त सू ,खेत-पथार सू ,बडका लोकक स्िघोक्षत महानता ि छोटका लोक पर आरोक्पत ओछपन सू...... सब कमलाके एके बात छैक ।पक्हले टोल सॅ ि्र कएल जाए ।चार क्दि क' नाम पर चाक्र टोल ,उत्तरिरी ,दक्क्षणििरी ,पूििरी ,पछििरी अथिा डीह टोल ।क्दिाधाक्रत ऐ विभाजनक अलाि बभनटोली ,गुअरटोली ,चमरटोली ,दुसधटोली आ राजपूतक एकटा अलगे टोल ।दुसाधक तीनटा क्छखरल क्छखरल टोल ,तक्हना चमार सभ सेहो दू ठाम समटल.....।

विभिन्न टोलक पक्त आन टोलक नििन नििन र ख ,नििन दृक्ि आ ओकर चचा मे एकटा अपमानजनक टोन ।जेना उत्तरििरी टोल अपना मूने सबसॅ बेिी सुसभ्य ,दक्क्षणििरी टोल सबसू बेिी लंठ ,पूििरी टोल सबसू बेिी एडिास आ डीह टोल सबसू बेिी जेनुइन छलै ओ दोसर टोलक क्हसाबे उत्तरििरी टोल मे सबसू बेिी बतहपन ,दक्छनििरी टोल मे मूखिा ,पूििरी टोल मे क्दखाबा आ डीह टोल मे उयक्थरपन भरल रहै । आ एक्हना मूल ,गोत आ बैसारी क' क्हसाबे सेहो अपना के नीक ,सभ्य आ दोसर के ओछ ,असभ्य मानबा के बहुत रास घटना ,कहबी ,ृिात......आ जखन एक जाक्त मे एते

बखरा तखन पूरा गाम मे कतेक ....ओना आपुसी गपपि मे पूरा गाम गामे छलै आ नीक-खराप दूनू साथे चलैत छलै.......

उमा बाबू भूगोल पढाबथिन त' टंगडी हिलबैत रहथिन आ मोटका करची क' सटक्की सू अपन तरि पर हरदम चलाबैत रहथिन जेना कि केओ मजूर अपन हासू के बाजबैत छैक ....ओ कहथिन जे आबादी बसै आ घरक समूहक गठन एकटा खास पैटनपिर होए छैक आ विभिन्न भागक लोक सब अलग-अलग पैटनपिर अपन बासि बनबैत छैक ,उमा बाबू ईहो कहथिन जे यदि केलि भारते के देखल जाए त' उत्तर भारत आ दक्षिण मे असंख्य पैटनि........गंगा ,गोदाविरी ,रावी,गंडक ,कोसी सभक पेट मे अलग अलग शृंगार ।केलि बिथले नइ बिथलो मे समस्तीपुर के देखियौ उत्तर मे अलग आ दक्षिण मे अलग ।उत्तर मे घर पर घर आ सटल सटल टोल ,जखन कि दक्षिण मे हटल हटल घर ।विलि खेत आ तखन एकटा दूटा घर ,खूब फैलल गाछी बिरछी तखन किछुए टा घर ।आ घरक अवस्थित केहन त' पोखरि ,रोड ि मंदिरक आस-पास ।अपने गामक विचार करियै त' पूरा बाहणक आबादी नबकी पोखरि ,नौला आ बरी पोखरिक चार कात ि फेर डीह पर कचहरी ,इसकूलक चार कात आ रोसडा-बहेडी मागपिर । आ सबसू उस्सर ,बंजर ,सक्कत जमीन पर चमार आ दुसाधक आबादी ,एकदम बबूर जूका ,कत्तउ जनमि जाइत हो ,खेतक आडि पर ,पोखरिक मोहार पर ,गाछीक खत्ता मे लोकपकिया पर ,पीचरोडक दूनू कात आ मिानि मे सेहो.......ने खाद देबाक काज आ ने पानि देबाक चिंता।मुदा सबसू सक्कत , सूयभिगानि आ सभ्यताक

समस्त गरमी के सोखैत जक्हना के तक्हना ......एकदम हक्रयर पत्ती ....बाभनक दात पर घुस्सा मारैत ,भोर साझ.......आ जखन सभ हक्रयरका जजाक्त सूक्ख जाइत हो तखन बबूरक पत्ती आ ओकर फअर सभक जान बचाबैत........तक्हना चमार आ दुसाध सेहो अपन छोट दुक्नया मे एकदम मस्त आ हक्रयर ।

गामक सब सरल गेन्हायल पाक्त ,गनगी बरसा आ क्वना बरसा के पूबक्रया ढलान होयत चमरटोली क्दस चक्ल जायत ।आ चमरटोली जे गामक पूबक्रया सीमान पर बसाएल गेल छलै ,समस्त अगाह सेिक' लेल ,जत' के लोक सभ के ई कहबाक अक्धकार नइ छलै जे अओ बाबू अपन देहक ,घरक ई दुगन्धि हमरा क्दक्स कएक बहा रहल छी \ ई आबादी जेकर पेट ,देह आ मोनक चचा तक अ्पिृ्यि छलै .....देहे नइ मोन तक छुआ जाए िला .....गंगा जल ,नइ गंगो जल नइ पवित करत ,हडडी तक छुआए िला गनगी.........स्मृक्त आ णिगित वकिन्न ि्लोक ,कहबी ,हि-पाक्त ,भूत-पेत पर्यंति तक फैलल......
यदक्प चमार सब पूरक्बये सीमान पर समक्ट गेल छलै ,मुदा दुसाध सब जीयत रहै ,डीहक सक्कत जमीन पर ...आ जेकरा जीन मे घुसल रहै संकट कािरण लेल साहस ,उदोग ,आ ओ सप्पत खेने रहै अपन राजा जी के .....राजा जी हुनकर कुल देिता नइ रहक्थन ,ओकर अप्पन राजा जी ,हू क्मक्थलाक आक्दिसी दुसाधक राजा जी .....आ राजा जी पक्हले महल ,गदी ,दरबार छोडलक्खन आ क्कताब ,पुराततिसू सेहो हुनकर कािनी क्मक्ट जाइत रहल.....मुदा राजा जी बसल रहलक्खन दुसाध सभक करेज मे -
कते घोडा तोहर राजा

कते दुिमनमा के
धरती चलै अकाि हो........

आ राजा जी आ राजा जी क· घोडा दूनू अपन मूल स्रिप के पाक्ष जूका छोव्ड देने रहै आ राजा जी मने घोडा आ घोडा मने राजा जी ,ते घोडा चढएबा क पूजा बेिी धूमधाम सू होइत छलै आ राजा जी िला उत्सि दुसाध सभ मे एकटा खास उत्साह,आत्मविििस जनमाबैत छलै ,मुदा राजा जीक मक्दर कोन ठाम बनै,विदालय पर ,आचायक्ि डीह पर िि दुसधटोली मे ......ई क्खस्सा कनेक बाद.........

अपन गामक चचा कोना करी ,खूब मीठ पिसा सू .....जेना क्क केिल मीठे-मीठ अनुभि होए ।केिल मीठ अनुभि तखने संभि ,जखन क्क एक-दू क्दनक लेल कामकाक पर आयल जाए ,मुदा जखन क्जनगीए क्बताबै के अक्छ तखन केिल मैक्थली िरण गुप्त क भंवामा ल· के कोना जीयब आ बात बात मे गामीण जीिन ,भारतक पाचीनता आ महानता क पाठ कोना कएल जाए .....आ मैक्थली मे सेहो गुप्त जी नइ मैक्थली िरण सभक कमी नइ ,जे बात बात मे क्मक्थलाक महानताक बखान करैत रहता ,हुनकर गामीण जीिन क फॉमेट पक्हले सू सुक्नवित रहै छैक ,केिल विरिण भरबाक काज......छोड़ू ऐ सब के.......चलू हम अप्प्न डायरीक ई पाठ अहीक कविता सू पारंभ करैत छी ।

(आगूक तीन-चार टा पन्ना फाटल अक्छ)

ओइ साल

ओइ साल जे भेलै से कमाले-कमाल ।मारच्अपील मे एते आलू उपजलै ,जे पूरा खेत-खक्रहान आ घर सब महक’ लागलै ।घर मे रौकी क’ नीच्रा ,कोठी लग ,भनसा घर ,सौसे बूझू जे आलूए-आलू ।एतबे नइ भानसक मेजने बदलल ।भूक्जये आ रसदारे नइ पापड ,क्तलौरी सेहो आलूए क’ आ एक क्दन ि्र केलौ त’ आलू मे दूध गूर्वि के भेटल ,राक्तयो मे आलू आ दहीक क्तलल-जुलल भोजन ।

बाप रौ बाप गरमी पडलै ,गजबे गरमी ।आदमी गाछ त’र ,दुर खा आ पोखक्र-गाछी जाए बूझू जे गंजी-अंगा घामे सँ भीक्ज जाए ।ईनार-कल सेहो पस्त आ पोखक्र-नदी तक सुक्खल ,बगलक गाम मे एकटा ईनार रहै आ मनबोधन बाबू क’ क्दलदारी क्क एक-एक िल पाक्त सबके दैत रहलक्खन ।

आ बस महीना क्दन बाद ओमहर बागमती आ ईमहर करेह तोर्वि देलकै ।हमर पीढी त’ बार्वि देखबे नइ केने छलै ,से बडि क्याकुल भ’ के पाक्त के सिगत करबाक लेल विजिनगर क्दस विदा भ’ गेल ।आ पाक्त रसे-रसे खत्ता,नाला सब के भरैत रहै ,आिजो मर्विम ।एमहर गामक बूढ-पुराण सब सडसठ ईसीक बार्विक क्ता ान ढुरहैत रहक्तान ,केओ कहक्तान जे पाक्त एत’ तक आयत ,त’केओ कहक्तान जे पाक्त एत’ तक ।केओ ई कहक्तान जे पाक्त दस क्दन त’ केओ पनरह क्दन तक रहबाक बात करक्तान ।क्कछु गोटा त’ घरे मे माछ मारबाक सपना देख’ लागला ।मुदा पाक्त जखन एलै त’ अपन गक्त अपन माता संग आ पूरा गाम िूक्ब गेलै ,गाम मे एकेटा दूमहला आ

िवक्टर साहेब अपन ई जत दूमहलाक छत पर बैक्स बरेला ।रानीपरती ,सबहा ,बनिीहा आ जोवाया सन कतेको छोट टोल िहिटोलक पुरनका धीमका पर ा रण लेलक ।आ पाक्त रक्ह गेलै दू महीना ।ई पाक्त नीक जमाए नइ छलै क्क ससुरक जेबी आ वरनुआरक रंग पर रंग धरै ,ई रहै लंठ जमाए जे बेई जत करबै पर आतुर रहै ।पुरनका आ नबका सब स्टॉक वदिा भ' गेलै ,गाम मे पैर उधार बंद ।ने हक्रयरका तरकारी ने बजार िला कोनो समान ।एत' तक क्क नूनक अभाि सेहो भ' गेलै ।क्क आदमी आ क्क माल-जाल सबहक अहार अकाा मे ।जे सस्ता रहै ओ बस दूध क्कएक त' सब माल-जाल कक्तकबे टा के ओइ िहि पर रहै आ दूध बाहर जेबाक कोनो रस्ता नइ ।

आ ओक्हए साल हाक्कम बाबूक पोती भावा गेलै ।भागबो केलै त' दोसर जाक्तक छौडा क' संग ।आ भावायो क' कुकरी जक्ददए सासुर आक्ब गेलै ,ई ने जे भावा के क्ददली-पंजाब पडा जाए आ आक्ब गेलै आ अप्पन जाक्त आ गामक नाम हँसाब' लागै आ लागलै जे ओक्करे हँसीक संग आलू आ बागमतीक हँसी एक भ' गेलै ।ओ पक्हल छौडी रहै जे अप्पन जाक्त के क्तयावा केकरो संग भागलै छल ,एकरा बाद त' बूझू लाईन लावा गेलै ,बोक्हनी नीक भेल छलै ।

घर

अजीबे घर रहै ,खाए त' सब खाइते रहै ,आ हकक्किल जँका करै त' लाईन लगा के सब हकक्किले जँका करै ।बेरा-बेरी नइ एके संग ।

पसन्न रहै त' सब पसन्ने रहै ,नइ कुनो बात तैयो पसन्न ।कना मतलबे के बरसा-बुन्नी ,रौद-अकाा ,पाक्त-कहावि कछो ल' के पसन्न ।अहा घरक बतीसी अलगे सँ देख सकैत छयै ।पसन्न रहैक मून होए त' पडोसीक घरक रोरी ,बगल लािक बेटी भागनै ,पंजीक बेटा के कैसर भेनए ,राम अतिारक मैविक परीक्ष मे फेल भेनए ,ई सब खुव एक कारण रहै ।

लडाई करबाक मून होए त' टी0वी0 क' क्समोटे लेल झगडा भ' जाए ।बापक अलग रैनल ,माएक अलग रहै आ तीनू बच्चो के अलग रहै ।कुनो समझौता त' भेल नइ रहै ,ते जेकरा जखन मून होए ,टी0वी0 खोक्ल दए ,जेकरा जखन मून होए ,रैनल बदल' लागए ।

आ आमदनी त' सीक्तमते रहै ,कमाए लाि मात बापे ।मुदा खरराक मद केओ क्तधाक्रत क' सकै छलै ।आ रीयता कमक लेल लाी झगडा-फसाद ।बाप कहए ई जररी ,बेटा कहै ई आ माए कहै पक्ष्ले ई कएक नइ।

आ घर मे सबके दुख रहै ।फलनमा के करलनमा से आ करलनमा के फलनमा से ।सब केर उपेक्ष छलै आ सबक फ्लान रहै घर छोडबा लेल ।सब ताकैत रहै एकटा नीक कदन ।साईतक खोज

ि ली रलैत रहै ,मुदा केकरो लेल एखन बेहतरक खोज संपन्न नइ भेल छलै ।

घर मे कपडा-लत्ता रहै ,रमायन-महाभारत रहै ,देवी-देवताक फोटो रहै ,संगक्ह-संग बहुत रास उपदो आ कतव्यक वाक्य रहै ।गहिसी एक-दोसर के बेरा-बेरी सँ दैत छलक्खन आ सब गोटे समै साल पर सुनै के आ नइ सुनबाक बहन्ना ताकैत छला ।

ईहो घरे छलै आ एकर एकटा नंबर छलै जे सरकारक काचिआ िटक रक्जस्टर मे दजचछलै ।पता नइ घर मे कुन पकारक एकता छलै जे घर घर रहै ,आ क्समेटक ,कतव्यक आ बावि मे रकाक सरकारी वजािपन फराक-फराक बैनर मे फराक-फराक जगाह पर विराजमान रहै ।

बाबूक रटी

ऐ बेर गाम मे एकटा आयोजन छल ,आ आयोजने बीर केओ रफ्पल रोरा लेलक ।संभि छैक केकरो सँ बदला गेल होए ,मुदा एकाध घंटाक पयासोक बीर भेटल नइ ।गाम पर आक्वते झोरा तैयार छल आ ा हर जेबाक जद्दी ,ते क्वना कुनो ना-नुकुक्र केने माए दारा देल बाबूक पुरनका रफ्पल पक्हर बाहर आक्व गेलौ ।रफ्पल मे कतेको जगह सीयल जेबाक क्वा ान रहै ,तैयो रफ्पल मजगूत रहै ,आ गाम सँ राक्व सौ क्कलोमीटर तक कुनो पकारक क्दक्कत नइ भेल ।

ऐठाम एलाक बाद कक्वया कक्व जे मुंह -नाक बनेलक्व ,रफ्पल ऐठामक रफ्पल सब मे क्वक्ल गेलै ।ने रफ्पल देखै सुनै मे खराप रहै ने तुरत्ते कुनो टुटबाक ि र ,ते हम मौका-बेमौका पक्हरैत रहलौ ,हा कक्हयो-काल कक्वया के कहला पर जरर बदक्ल दैत रक्हयै ।आ रफ्पलो क्वना कोना दाना पाक्व के हमरा दुआक्र पर रह' लागल ।बस कक्वया ओकरा स्मान बदलैत काल ,या बाढक्व लगबै काल कने जोर सँ धक्क्का दैत छलक्वखन आ फेर ई बात क्क 'बाप रे बाप ई रफ्पल पक्हरै िला छैक ' ।

एकक्दन भोर मे घूमैत काल रफ्पल टूक्ट गेल ।कुनो पुराने जोड पर टूटल रहै ,आ हम नंगराबैत-नंगराबैत कहुना गामपर पहुंरलौ ।हमरा नंगराबैत देक्ख कक्वया कुनो अजात संभाि ना सँ क्रकक्व उठली ।हम आशस्त्त केक्लएन ,जे एहन कुनो बात नइ ,हम सस्त्त छी ,बस रफ्पल कक्व विस्टबचक' देलक ।आ हमरा क्वनु पूछने ओ रफ्पल उठा सामने िला मैदान मे फेक्क देलक्वखन ।हम रोकबाक पयास केक्लयइ ,मुदा ओ क्कछु नइ सुनलक्वखन ।रफ्पल फेका गेल छलै ,मुदा

बेसी दूर नइ रहै ।ऐ ठाम सँ ओकर फीता ,टिटी आ पूरा देह देखाइत रहै ।अवाला दिन आर लोक सब मैदान मे कूडा फेक' लागलखिन आ रफ्फाल कनेक एकात मे भ' गेलै ,मुदा एखनो तक ओ ओखिना देखाइत रहै ।एक बेर मून भेल जे कक्किया सँ रोरा के ओकरा घर ल' आनी ।कक्किया सूतल रहथिन ,मुदा जे कि उठलौ ओ फेर उठि गेली आ पूछ' लागलखिन 'राय त' नइ पीयब '।

भोरका समै छलै आ कक्किया नहेलाक बाद पूजाक तैयारी मे रहथिन ,हम एकाएक उठलियै आ मैदान दिस विदा भ' गेलियै ।औखन केओ जागल नइ रहै ,बस एगो-दूगो कुकुर सब एमहर-ओमहर ताकैत रहै ।हमरा मैदान मे घूसते बगल छिला गोला कुकुर हमरा दिस ताक' लागल ।एकबेर त' डरि भेल ,फेर साहस क' के दूनू रफ्फाल उठा लेलौ ।रफ्फाल पर बहुत रास पन्नी आ पाकल आमक सडलका छिदका रहै ।जददी सँ ओकरा झटकैत सास के बारने रोडि पर घिपस एलौ ।आब आबि के फेर एकबेर जोर सँ सास लेलौ आ कूडाक ढेर दिस फेर सँ धियान गेल ।ऐ रफ्फाल के की कएल जाए ।

ऐ रफ्फाल के घर मे राखनै ठीक नइ ।कक्किया त' जे बखेरा करती ओ करबे करती ।ई रफ्फाल एकटा बीतल युगक कैलिडिस्कोप नेने घर मे घूसि गेल रहै ,मुदा एकर ऑरिजनल जगह' त' कतै आर छलै ।ई रफ्फाल हमर बाताक पमुख अस्त छल ।जखन जखन ओ कोध मे आबै छलखिन ,नापड आ मुक्काक पहार नइ करै छलखिन ,बस काकाक के रफ्फाल हमरा आ हमरा सब भाई-बहिन के............. ।ते ई बीतल युगक एकटा अस्त छलै ,जेकरा लेल जगहक गुंजाइश ऐ घर मे नइ रहै ।ई रफ्फाल आब बस स्हावर के देखै-देखबै लेल

जोगा के राखै क रीज रहै ।अफसोस हमरा पास एत्ते जगह नइ क्क हम संगहालय बनाबी।

<u>दोस आ दोसक चाकिल पकृ्ति बेमेय</u>

आ जे काज कमिशा जी नइ केलक्खिन से झा जी क' देलक्खिन ।िहिरे झाजी,एकदम नगाडा बजा देक्लयइ आ क्सिंह कैम्प मे एकदम नैराश्यक क्स्थिक्त ।कमिशाजी जे बाक्जियो के नइ केलक्खिन,से झाजी क्बिन बाजने सुताक्र देलक्खिन ।एकरा कहै छै आदमी क' मतलब आदमी,मुंहक मतलब मुंह,हाथक मतलब हाथ आ जे कैह देक्लयौ से क' देक्लयौ ।ई भेलै ने ....आ ईहो देक्खियौ जे आदमी लोकल नइ,पचास ककलोमीटर दूर दरभंगा के आ मधुबनीक ककला पर फक्हरा देलकै धूजा ।आ पूरा दरभंगामंडली पुलककत,पुलककत बाह ण िगिआ आिक्कि ति कलक्टरी क' खबरी-क्छनरी सब ।आ रंग-रंगक क्खस्सा कक झाजी कैह देलक्खिन 'केिल ओही टा कमायब' कक 'केिल आहीटा क' घर-पक्रिर' कक 'केिल आही के गानै मे मून लागैत अक्छ' आ पता नइ की झाजी कहलक्खिन आ की क्संहजी सुनलक्खिन ।पता नइ दूनू मे की बात भेलै,ओना दूनू आदमी अपन-अपन कैम्प बनेबाक पयास जर र केलक्खिन,मुदा बहुत सफलता नइ भेलेन ।जे सीक्रियस आदमी सब रहक्थिन,ऊ पक्रिणामक साफ-साफ अनुमान केलक्खिन आ बहुत दूर नजक्र फेकैत साफ-साफ देखलककखन कक दूनू मे संघषकि कुनो संभािना नइ आ स्पष्ट बूझल गेलै कक ककमहरो गेनै मतलब अपन पहचान डूबेनए आ एहन क्स्थिक्त मे गुटक्िनरपेक्ता सदैि काम्य होइत छैक आ िहिरे कलक्टरीक बुक्धियार इंस्पेक्टर आ कमचािरी िगिओ ककमहरो नइ गेलै,ओ ककछुओ नइ सुनलकै,ओ ककछु नइ क्नणिय लेलकै ।ओ सुक्िततो आगू क्ककक्ल गेलै...........

आ बहुत जल्दी सिंह-झा संबंधक अघोषित परिणामक क्लाइमेक्स बजार मे भेटाइत भेटलै ।तू ले कलुआही आ हम लइ छी जयनगर,दूनू आदमी भक्क मून चर ।अपन-अपन पेट आ अपन-अपन जीभक’रक्षा कर ।तू बाभन सब के पोट हम राजपूत के पोटैत छी ।बहुत जल्दी खुलबाक आवश्यकता नइ,बहुत दोस्ती देखेबाक जररी नइ,बहुत भेट करबाक कोन पयोजन ।से अपना-अपना खुटा पर टीकल रह,अपना खुटा पर सू खूब लथाड़ मार,खूब सिंह भाज ।एना के सिंह भाज कि मालिको (हाकिम)तक डराइ ।आ यैह भेलै कि हाकिम तक डराइत रहलखिन कि यदि एकर सबक अधिकारक्षेत्र मे किछु पतिकृति करबै त’कियतओ सू फोन आबि जायत ।

आ अहा झाजी सू भेट करियौ,त’ओ आनी-मूनी स्टायल मे भाजता’सिंह जी देखेबो केला’।
अहा कहबै’नइ’तखन फेर हकियाइत पूछता’ओमहर गेल नइ रहियइ’।
अहा यदि फेर कैह देलियइ’नइ’तखन ओ आशस्ति होइत कहता’हा ठीके अछि अपन काज सू मतलब रखबाक चाही ।’
मतलब झाजीक साफ छैक’अहा सब सिंहजी सू नइ भेट करियौ,एकात मे त’कखनो नइ ।आ नइ भेट करबै त’बातचित नइ हैत,बातचित नइ करबै तखन सेटिंग-गेटिंग नइ हैत आ ई सब झाजीक लेल खुशखबरी आ भेट करबै त’झाजी क’एकटा स्टार कमि जेतै । भेट करबै त’सिंह-झा -पालिटिक्स केर गोपनीयता संकट मे पडतै,ऐ राजनीति क’बौद्धिक पेटेंट खतम भ’जेतै ।’जेना सिंह जी तेहने झाजी जाति-जिला फैक्टरक पयोग करैत छथिन,ते

दूनू गोटेक बासन आ औजार अलग-अलग ।झाजी सेहो सिंहजी क' विरोध ऐ अंदाज मे करता कि समस्त बाहणक लेल सिंहजीक रहनै खतरनाक आ झाजी अपन किछु चलाकी,किछु कुरता,किछु बाताबाती के एना पस्तुत करैत छथिन जेना बाहण जाति,दरभंगा जिला,बहेडी पखंड आ करेह नदीक उधार आब जल्दिए भ' जेतै ।बस अहा सब झाजी जिंदाबाद करैत रहियौ ।

झाजी

अपना आप के बडका विदान मानैत छथिन ।आ अपना सू नमहर अपना भाय के आ भाय सू किछु बेसी अपना बाबा के ।भाय एकटा विशिविदालय मे पोफेसर छथिन आ बाबा सतिंतता सेनानी रहथिन ।बात कयतौ सँ उठलै,आबि के वारतै भैया पर ।दि आ कुरानक लाईन सू बात िर भेल होय,मुदा खतम हेतै भैया झा पर ।आ ई खतम होय के पारि भैया झा के लिखल समान मे होय भाय नइ होय छोटका झा के ठोरठोरई मे जरर छैक ।आ सिंह जी के कलुआही लूटबाक छेन,से ओ बिना ति झाजीक बौद्धिकताक समर्थन करैत छथिन ।यदि केओ झाजीक बौद्धिकता पर कानि लगाओत त' सिंह जी ओकर भर्की झोकि देथिन ।सिंह जी चाहैत छथिन कि झाजी बौद्धिक बनबाक कामि मे मधुबनी छोडि के दरभंगा चलि जाए,मुदा हाय रे सिंह जी झाजी एकदमे उनैस नइ छथिन,हुनका कवि नइ बनबा के,हुनका विदान नइ बनबा के,हुनका अजर-अमर नइ बनबा के,हुनका कालजयी नइ बनबा के,आ यदि कालजयी के मतलब किछु होयत होए त' ऊ दू-चारि बिगहा अरजि के,पटना-दरभंगा मे एक-दूटा घर बनाके हेुअ' चाहैत छथिन ।कालजयी मतलब ई नइ कि अहा के एक-दूटा किताब छपि गेल आ दू-चारि टा लोक

अहा पर लिखल देलक ।कालजयी मतलब ई जे तीनमहला क' ऊपरका महल पर संगमरमर सू लिखल फला झा तीन-चारि पीरही तक जगजगार होयत रहै ।

आ ऐ ठाम सब अपना-अपना हिसाबे कालजयी भ' रहल अछि । सिंहजी क' दू टा फ्लॉट पटना मे एकटा दरभंगा मे आ एकटा समस्तीपुर मे ।मधुबनी मे जइ मकान मे रहि रहल छथि से सारि क'नाम सू ।दुनिया सारि आ सारिक फ्लॉट ...दूनू के सिंहजीक मानैत अछि,मुदा सिंहजी सन ईज्जतदार आदमी ....च्चचच..झाजी एकटा फ्लॉट दरभंगा मे आ एकटा पटना मे आ जकरादिए सिंहजी के पाछू क' देलथिन ।नेबोलाल पटने मे नइ दिल्लीयो मे एकटा मकान खरीदने अछि,आ ओकरा सन भागिन आ बहीन त' भगिनि सबके देलथिन ।बहिनोय एक्साईज विभाग क' बडका अधिकारी रहथिन आ जीता-जी पचास-साठि करोड कमा गेलखिन ।घर-परिवार,स'र-संबंधी,सबहक नाम सू बेनामी संपत्ति,आ भगिनिक लीला ई कि एकदिन दूनू पाणी मे झगडा भेलै आ दूनू पाणी गोली सू आत्महत्या क'लेलखिन ।आ सब स'र संबंधी चुप्पी मारि गेलै,केओ नइ कहलकै कि फला जी हमरा नामे ई खरीदने रहला ।आ रंजन जी जइ दूमहला के अपन बाबूजी क' नाम सू बताबै छथिन,तइ पर रंजन जी के होमलोन चलल छैक ।आ ई सब खिस्सा गोपनीय छैक,ताति तक जाति तक कि दोसर के पता नइ चलैत छैक,आ फेर दोसर सू तेसर आ तेसर सू चारिम ।आ ई सब खिस्सा ताति तक गोपनीय रहतै,जाति तक सिंह डरेतै झा से आ झा डरेतै नेबोलाल से ।आ यदि एकोटा टा मटकूरी फूटलै,तखन सब फूटतै ....

आब त' नबका-नबका अधिकारी सब सेहो आबि रहल अछि विजला मे ।अइ मे एकटा सिंहजी क' पदस्थापित छथिन,ईहो सिंह,हिनका जूनियर सिंहजी कहल जाए ।जेना सिंह जे बाजै मे भटभटिया,तहिना जूनियर एकदम चुप्पा ।पहिले सब के बूझेलै जे जूनियर मितभाषी,संकोची छैक,बाद मे पता चललै कि जूनियर मुंह मे पान,तमाकू आ सुपारी ठूसने रहै छैक,मुह मे,गाल मे,ठोर मे ।बेशीकाल ईशारे से काज चलेला,बेशी जररी होए ति नमहर एमाउंट होए । बेशी काल मुंह खोलै छथिन -तीस,चालीस या थटी, फोटी कहबा क' लेल ।आ कखनो कखनो खोलै छथिन नमहरका मुंह -पचास,प चा स ।जल्दिए विजला बूझि गेलै कि जूनियर किछु मायने मे सीनियरो क' कक्का ।जूनियर रहै सिंहजी क' पदस्थापित,ते भैया...भैया....कहिते रहै हरदम आ टेक्नीक मे सेहो भैया के नकल करैत,मुदा ऐ अधपक्कू नकल पर हूसबा के नइ शिक्त सू बूझबाक जररी छैक ।

जूनियर क' साथे एकटा आर चुप्पा आयल छैक,एकर चुप्पी कनेक अभौतिक कनेक भौतिक छैक ।लेबा के, खूब लेबा के,अहगर लेबाके,बेर-बेर लेबाके ईच्छा एकरा मोन मे जागै छैक,मुदा हाय रे धत्ति तंत,हाय रे बाजै शिला सिस्टम सब ।मोन मे रहै छैक किछुआर,निकलै छैक किछु आर ।मोन मे आबै छैक जल्दी लाऊ आ मुंह से निकलै छैक राखू ने बादे मे देब ।आ कखनो काल त' ईहो नइ निकलै छैक ।एकर ऊलझन सबसू क्लासिक ।पइसा के सबसे बेशी जररी,मुदा भष्टाचारविरोधी आंदोलन दिस उन्मुखता ।अपनो हाल-चाल उजरल-

उपटल ,मुदा दोिर के फैदा पहुंचेबाक नीयत ,गरीब के कष्ट नइ देबाक आदि ।िआ दूनू चीज कोना साथ-साथ ल'के चलबही ।धनी-मनी सब देतौ नइ किछु आ गरीबहा के संग मे छइ नइ किछु ,त'बाज ने कोना काज चलतै ।जे देखहार छैक ऊ नेता-मंती सब सू फोन करा के काज करा लेतौ आ जे नइ देखहार छैक से भुक्खल विजन्न जूका आकिसक बाउंडरी मे हूकिया रहल छैक ।ऊ बस हाथ-पैर जोडतौ ,ऊ बस आिीािद देतौ ,आ ऊ आिीािदो नइ देतौ ।आिीािद देबाक पिया मे एकटा हूनर छैक आ ई एख्ते गरीब ,एख्ते व्हयाक हारल छैक जे आिीािदो देबाक हूब एकरा देह मे नइ छैक ।आब बाज ने की करबीही ।

नया किछु नइ होय िला ,या त'बनही िसंहजी ,झाजी ,िशा जी या फेर नेबोलाल ।सफलताक यैह सब किछु मॉडल छैक ।

सबहक अपन-अपन झूठ-साच रहै ,सबहक नोकरी आ सबहक पिरिर ।िसंह जी कहिथन जे हमर िियाह त'बालपने मे भ'गेल रहै ।माए नइ रहिथन आ सब िजम्मेिरी हमरे पर ।िशा जी कहिथन जे हमर किया बूझू जे करीना कपूर ।करीना कपूरक चयन हुनकर ,हम्मर नइ आ यैह हीरोइनक नाम किए ओ लैत छिथन एक्कर सही-सही जबाब िह देता ।झा जी कहिथन जे हम्मर कियाक िपता बैक मे उच्चािधकारी छलिखन ने ,आ हम्मर किया कतेको बेर हिाई जहाजक याता केने छिथ ।दोसर सबहक पत्नीक व्यिहार पर पश्न करैत अप्पन कियाक व्यिहारक उपयुक्तता आ पौढता पर दस से पनरह िमनट .....एहन सन क अहा क देखायब हमर किया दसे-बारह साल सू सब किछु देखने छिथ ।आ जखन ओ अपन कियाक योग्यता एल0एल0बी0 ,बी0एड0 कहिथन त'हुनकर गरदिनक नस सब हिरयर-हिरयर होइत पूरा बलक साथ हुनकर समथनि मे मोट भ'जाइत

रहै ।नेबोलालजी क' समस्या किछु आर छलै ओ अपन कन्याक विवाक् पारिवारिक पृष्ठभूमि सू बेसी परेशान रहथिन आ अपन ससुरक लेल विशेष पंचाक्षरी गारिक पयोग करैत रहथिन....मादर...केलि अपना बेटी के दोकान पर बैसेनए आ गल्ला सम्हारनए सिखेलकै ।तैयो अपन कन्याक गोर-नार चेहरा आ शिष्ट-व्यवहार सू बेस पसन्न रहथिन ।

सब अपना-अपना तरहे डपोरशंखी वृत्तिक परिचय देथिन आ ऐ मे सबसू आगू सिंहजी रहथिन ।पता नइ अपन परहाई-लिखाईक' समै मे की सब केलखिन,मुदा हरदम बतेता कि चारि बेर आई0ए0एस0 मे इंटरव्यू देलियै,सात-आठ बेर बी0पी0एस0सी0 मे,पता नइ किएक सेलेक्शन नइ भेल ।आ जाति अहा ऐ तथ्य पर विचार करबै,ताति दू-चारिटा आई0ए0एस0 सबहक नाम वाना देता,ओइ मे एगो-दूगो त' हुनकर नोटे सू पास भेल रहै,आ एगो-दूगो क' फोन एखनो आबै छैक ।आ यदि अहा एखनो ऐ भौकालीक पभाव मे नइ एलियै तखन तुरत्ते एगो-दूगो विधायक के फोन लगबैत होलीक शुभकामना वइस्पैच कर' लागत ।मिशा जी संस्कृतक दू-चारिटा कठिन श्लोक फेकैत ऐ तथ्य पर बल देता कि आब विश्वविद्यालय खरीद-फरोख्तक अडडा बनि गेल अछि आ कतेको बेर बस पइसाक अभाव मे हुनकर नियुक्ति विश्वविद्यालय मे नइ भेलै ।आ झा जी जखन आफिस मे कहै छथिन जे हौ हमरो दूरक नइ बूझह' ,बस नदी पार करहक आ .....।ई गतिविधि न्यायिन्यायक नइ छथिकै,मुदा आफिसक वातावरण मे खास पभाव उत्पन्न करैत घूसक राशि मे अपेक्षित वृद्धि करैत छैक,यदि वृद्धि नहियो होइत छैक त' अवाला व्यवहारक लेल ई खास भय उत्पन्न करैत छैक कि झाजियो लोकले छथिन ।

आ सिंह जीक लेबाक टेकनीक अलग ।पहिले खूब हल्ला करता ,हम त' लइते नइ छी ,हम त' लइते नइ छी ,फेर ओहियो सू बेसी जोर सू चिचियेता कि पागल छही की ,कान देने काज हेतौ ।सिंह जी कहता 'हम त' दस-बीस हजार सू कम नइ लै छियै आ जूखन लेबाक टाईम होइत छैक त' अठन्नियो उठा लैत छथिन ।दोस सबक बीच मे कहता कि गरीब सू नइ किछु लेबाक चाही आ गरीब यदि बीस हजार ल' के आयल छैक आ हुनका पचीस चाही ,त' ओकरा पचीस दइए के छैक ।आ सिंह जीक रेज जोरगर ,ओ सब किछु ल' लेता रुपया-पइसा ,गहना ,दही-दूध ,अनाज ,साडी ,आदि ।मुदा रेजक पनियोवाला मे मिशा जी सेहो केकरो सू कम नइ ।हुनकर वाफ्ट मे अन्न-तत्कि विशेष महिमा ।मिशा जी ओइ ठाम मकई ,मडुआ ,टमाटर ,सीम ,सामा-कौनी सब चलै छैक ।आ यदि रुपया देबाक अछि त' बाहर मे गणेश-लक्ष्मीक मूर्ति राखल छैक ,ओकरा पर अर्पित क' दियौ ।ऐ रीति आ घटना के खास आध्यात्मिक स्वरुप दैत मिशाजी देनए-लेनए के भगवाने पर छोडैत छथिन ।आ मालिक कहियौ जे केओ आबि गेलै साझ मे आ ओकरा साईन करेबाक छैक त' मिशा जी पेन बंद क' लेथिन ,जाति तक आटा नइ बिसेतइ ओ पेन कोना खोलि सकैत छथिन ।ते आब ओइ व्यक्ति क' राष्टीय कर्तव्य भ' गेल छैक कि ओ मिशा जी ओत' दस-बीस किलो आटाक पैक आनि दए ,नइ त' मिशा जी पूरा बजार बौएथिन आ ओकरा दस राति बजेथिन ।आ यदि ओ आदमी पुरान छैक ,मिशा जी के जानै छैक आ मिशाजी क' शब्दजाल पर धेयान नइ दैत छैक त' ओ कोना समै नष्ट केने आटा आनै ले चैल जेतै ।आ मिशा जी ओत' के सब आबि रहल छैक ,मिशा जी ओइ ठाम कोन-कोन चीज आबि रहल

छैक ,सबहक क्लस्ट क्संहजी बना रहल छक्थन ।मतलब घर भरा रहल छैक क्मशा जी के आ क्लस्ट भरा रहल छैक क्संह जी क' ।आ जखन क्मशा जी मीक्टंग मे कहैत छक्थन जे ई महीना त' एकदम खाक्लए रहल ,क्संह जी आदमी आ क्लफाफाक पूरा हूक्लया दैत क्मशा जी के क्चत्त क' दैत छक्थन ।क्संह जी के ईहो पता छैन क्क क्मशाजी के क्चनुआर मे राखल घी बकेन गायक छैक ।क्मशा जी क्संह जी के ऐ जानकारी के वि्ुध षडयंत कोक्ट मे राखैत छक्थन आ हूक्स के उडेबाक असफल पयास करैत छक्थन ।

रंजनजी क' रेज सेहो छोट नइ ,मुदा मृदु ,होयबाक नाते आ लोकल नय होयबाक नाते कनेक घाटा मे रहैत छक्थन ,मुदा क्नकर चोट िह जानैत छैक ,जे खेने होय ।गजब रंजन सर ,गजब ,एकदम बौक्धक मार .....,बम-फटक्काक अिज नइ ,बस हृदय दरकबाक ध्िन ।आ सबसू तुच्छ ,कुर आ ठोर मे सू क्छनै िला आंक्ख केकरो देने होक्थन भगिन त' नेबोलाल के ।आ ल' त' लेत सब क्कछु ,मुदा देक्महार के िह पंचाक्री गार ,मतलब क्दयौ तखन आिीिद र प मे आ नइ क्दयौ तखन गाक्रक भंवामा मे ,मुदा भेटत िह ।जूक्मयरक गाडी जखन केकरो दलान पर लावा जाइ छैक त' ओकर तीन पीरही तीन क्दनक मूतान एडिसे मे मूक्त दैक छैक ।से की कहौ क्खस्सा...... आ सब गोटे अपने घर-पक्रिर त' छैक ,ते कहबा मे सेहो कोनो दोख नइ ।ते कक्हयो दैत छी त' खराब नइ मानब ,क्कएक त' अहा सू की बाँचल अक्छ .....

लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस

ऑफिस मे हमर सबसू प्रिय (हुनकर प्रिय हम नइ)छथि रंजन जी के लेल धूस एकटा टेक्निकल मुद्दा छलै । आ घूस पर बजैत काल हुनका हम देखि अचम्भित भ' जाइत रहियै ।इतिहास सू ल' के,अर्थशास्त्र सू ल' के,समाजशास्त्र सू ल' के आ भारतीय आयोजन तकक समस्त जानकारी के पता नइ कोन-कोन सूत्र्या -डोरा ले' के ओ सी दैत छथिन,से पूछू नइ ।आ मिथिला के कथित रुप सू सबसू विद्वान जगह आ सबसू नमहर माथ लिा जगह सू होयबाक नाते ओ बतहुय्थनो कम नइ करैत छथिन ।घूस क कानि ओ ऋग्वेद आ इंग्लैंड मे ढूरहैत उपरतर आधुनिक साहित्य तक आबि जेता ।चाणक्य,अदम गोर्डी आ गुन्नार मिडल के उधृत करैत-करैत ओ एते भावुक भ' जेता कि अहा अपना-आपके घूस नइ लेबाक विभिन्न पसंग मे दोषी मान' लागबै ।

नहू-नहू बाजै लिा रंजन जी खुरपी,कोदारि,हासू सब राखै छथिन ।मात राखबे नइ करैत छथिन,कत्त' कोन चीज चलाबी,सेहो बखूबी जानैत छथिन ।केकरा लग जाइक संदभि,केकरा लग केतक,कत्त' मिथिला लिा संदभि राखी,कत्ते' सेकुलर बनी आ कत्त'राष्ट्रवादी,एकर सटिक्तम पयोग देखबाक लेल अहा के दस-पनरह दिन रंजन जीक साथ रहबाक चाही ।आ कखन की बाजी आ कोन मौसम मे केकरा संग रही,ई अहा हुनके सू सीखि सकै छी ।ईनकम टैक्स भरबाक समै मिशाक संग,भोरे घूमबाक लेल झाजी,माछ किनबाक लेल यादव जी,गाम जेबाक लेल कर्णजी साथ आ कुनो तिकडम होए त' सिंह जीक संग ।

रंजन जीक संग मे एक सू एक मशीन ।अहा केखनो भाकि भ' जाएब ,कखनो िधि सू लाल-पीयर आ केखनो रंजन जीक लाक्लयस्य सू अवभभूत ।मुदा रंजन जी ओहने छवथन ,बस काज भेलाक बाद ओ अपन मौवलक अवस्था मे वदा भ' जेता । आ रंजन जी के पता छैन कक अहा सू कोन चीज कोना उगलबएल जाए ।ओ नब्ज छूता आ अहा अपन बोखार आ दस्तक पुराण एक्के सास मे बहार क' देबै ......

2 रंजन जी क' सबसू नजदीकी वमत वसंह जी छवथन ।दू-चावर बेरक शीतयुध छोवड कदयौ ,दू-चावर पकरणक पवतयोवाता के वबसवर जाइयौ ,तीन-चावर टा हारजीतक संदभपिर वधयान नइ कदयौ ,तखन ई बात पूरा वजलाके पता छैक कक रंजन जी क' सबसू वपय के आ वसंह जी क' सबसू वपय के ।ई बात केकरो पता नइ छैक कक बेशी जररत केकरा छैक दोसर के ,ईहो पता नइ कक के केकरा सू बेशी फैदा उठबैत छवथन ।ईहो पता नइ कक ऐ दोस्ती के बनेने रहबाक लेल के बेशी पयासरत छैक ,आ केएक सीमाक' बाद ऐ चीज के इग्नोर करैत छैक ।वमला-जुला के एकरा सामावजक सहजीववता(सोशल वसम्बायोवसस) कहल जाए ,जीश वजानक छात होयबा के कारण हमरा कदमाग मे लाईकेन आवब रहल छैक ,पूणति: शैिाल आ कवक केर घालमेल ।केओ देह देने छैक त' केओ अपन हवरयरी ।तवहना ऐ ठाम सेहो एकटाक कदमाग छैक आ दोसरक लंठई आ ऐ कंवबनेशनक पवरणाम पूरा वजला भोगैत छैक ।

वसंहजीक लंठई छोट कदमाग मे नइ घूवस सकैत अवछ ,ककएक त' वसंह जी ओकील सू ,ककसान सू आ पवरशिदक सू ऐ वहसाब सू वमलैत

छथिन जे केकरो पता नइ चलत कि ऐ लंठक दिमाग मे की चलि रहल छैक ।परहल-लिखल संग परहल जूका आ मोटपसम लोक संग मोटपसम बात ।िह रे सिंह जी ।बात करय' त' विद्यापित सू ल' के जानेरपति तकक कविताक मानकित सामने राखि देता ।इतिहासक बात करब त' ईसवी,उधरण,पृष्ठ संख्या आ स्टैजाक बामा कात की दहिना कात सब बात कहि देता ।सौ -दूसौ टकाक कुनो बात होइ तखन अपन पसिखोकि के अहाके द' देता ।केकरो ओइ ठाम शाध होए,बेटीक बियाह होए त' आदमी अप्पन गाडी क' के पहुंच जाए,मुदा जेखन नमहर डीलिंगक कुनो बात होए तखन अपन पिताजीक पैरवी सेहो नइ सुनत ।एतबे नइ नियम-कानूनक अपन व्याख्या करैत ओ चाहता कि फाईलक विया-कमभि' जाए ।

आ एहन विवादास्पद काज सब करबाक लेल बडका करेजा केलि सिंहे जी मे भेटत ।आ सिंहजी क' करेजा मे कतेको आदमीक धमनी आ शिरा जुडल छैक ।डी0एम0 आफिसक चपरासी,बाबू,अधिवक्ता संघक अध्यक्ष-मंती,अखबारक संवाददाता-उपसंपादक आदि,आदि ।ऐ सब गोटे के पता छैन कि सिंह जी की करैत छथिन,मुदा की कहबै कहियो ने कहियो ई सब सिंह जी सू उपकृत भेल छथिन ।आ विभागीय अधिकारीक बाते छोडू,सबक काज मे सिंहजीक रसगुल्ला,एतबे नइ काज तक सिंह जी क' खरीदल ।केकरो रेलवि क' टिकस,केकरो इसकुलक फी,केकरो डाक्टरीक पचा .....सब सिंहजी क' जेबी मे ।एतबे नइ ऊपरका नेता-अधिकारी तक पैरवी करबाक हो,टासफर करेबा आ रोकेबाक हो,सबक हिसाब सिंह जीक संग ।

विभागीय अधिकारीक पहिल चाय आ अंतिम चाय सिंहजी क' संग

।बाकी टाइम मे सिंह जी की करथिन,एकरा सू केकरो लेबा-देबाक नइ ।अहा सिंह जी के अपना कुरसी पर नइ देखि सकैत छियै ।मोटा-मोटी जातिादि सू दूर,मुदा एहनो नइ कि जातिादिक उपयोग नइ करी ।अप्पन जातिक अफसर मिलि जाइ त'दूहाथ जाति-जाति सेहो खेल ली ।आ अप्पन कुरसी के बचेबाक हो,केकरो सू किछु छिनबा क होए त' 'जाति-जाति'किएक ने खेली । आ सिंह जीक बियाह सेहो एहिए जिला मे भेल छलै,से किसान आ ओकील के ई बात बताबै मे सिंह जी कंजूसी नइ करथिन आ ओकील साहेब सब आ किसान भाय सब ऐ संकेत के बूझैत सिंह जी के विराि नइ करैत छथिन ।अहा सिंह जी के जातिादी कैह सकैत छियेन,मुदा हुनकर दार पर आंहू केर स्ागित अछि ।अहा क'लेल जाति जाति हैत,हुनका लेल जजाति छैक,जेकरा मे जत्ते खाद-पानि देबै,ओत्ते बम्फार फसल हैत ।मात खादे-पानि नइ,सही समै पर कमौनी सेहो जररी ।कमौनीक सबसू नीक समै भोर आ साझ ।किछु बाजियौ आ किछु बजबाक मौका दियौ,केखनो चाय-मिठायक संग केखनो खालियो हाथ.........सिंह जी जिंदाबाद ,राजपूत जाति जिंदाबाद ,मधुबनी जिला जिंदाबाद आ आनो जाति सब मुरदाबाद नइ ,बलिक दम होए त'करा ले अप्पन जिंदाबाद आ दम नइ हो त'दम धर।

3 आ सिंहजी क'दहिना हाथ नेबो लाल ।दहिना नइ बामा,किएक त'सिंहजीक सब घटिया काज नेबोलालक सलाह सू ।दूनू गोटे एके पद पर आ नेबोलालक ऐ स्थान पर बहाली मे सिंहजीक विषि योगदान ।कणजिी क'बेज्जत क'के नेबोलाल के आनबा मे सिंहजी क'पलािंग सफल रहलै ।ओना कणजिी के रहलो सू सिंहजी क'आसन पर विषि फकिनिइ रहै,मुदा कणजिी के बाजबाक बेमारी

रहै ,कखनो -कखनो डकरतो -डकरतो मुंह सू कछु कककलए जाए आ तकहए समै मे कजला मे आगमन भेल रहै शी शी 108 नेबोलाल जी के आ बहुत कम्मे कदन मे नबका वभिाग आ स्थानक जानकारी .....जानकारी नइ रेककंग करबा मे सफल रहला शी नेबोलाल जी ।नेबोलाल जी क' जाकत क' वि षिय मे वि षि कजजासा नइ कर ।नेबोलाल जी जाकतक मध्य मे छकथन ,ने बेसी ऊपर ने बेसी नीचे ।एकदम मध्यवि न्दु कहनै उकचत नइ ,मुदा जाकतव्यवस्था क' एकदम संि दिनि ील स्थान पर जर र छकथन ।ते एकदम ऊपरक आ एकदम कनचलका क' लेल अि ित पंचाकरी गाकर क' बेि ी काल पयोग करैत छकथन ।एहन राष्टीय गाकर जे कश्मीर सू ल' के तकमलनाडु तक एकहना हनहनाइत छैक आ जेकर अथि बूझबा मे कतौ भाषाक कोनो झंझट नइ ।ते नेबोलाल जी ऐ गाकर क' संग बेसी आयमीय छकथन ।नेबोलाल जी जानै छकथन कक ई गाकर जे0एन0यू0 आ आई0आई0टी0 कानपुर सू ल' के कबासफी आ बीहट तक ओकहना उपलब्ध छैक ।की बाम की दकक्ण ,की साहेब आ की अदली ।एकर अथकि गकरमा सू सब पराकजत ।मुदा ई केकरो नइ पता चललै कक नेबोलालजी ऐ गारी क' कोन परािम सू लुबुधल छकथन ।

आ नेबोलालजी क' कयुकक्त मे हुनकर एकटा सद:जात झूठक वि षि योगदान रहलै कक हमरा बच्चा नइ ......बच्चा हेबाक लेल वि षि ओपरेि नक जर री ......ऐ ऑपरेि नक लेल सात-आठ लाखक जर री.......ककयाक बेडरेस्ट जर री......ककयाक हास्पीटल मे बेडरेस्ट जर री......।ि ताकधक बेर कहल ऐ ि ाकय मे मात यैह टा सयय छल कक हुनका एको टा बच्चा नइ रहेन आ एकर अकतकरक्त सब बात

झूठ ।किएक त' बहालीक बाद नेबोलाल दू टा पुतरथ्क के जन्म देलखिन आ दोसर त' एकदम मधुबनिए मे भ' गेलै ।पहिलक लेल पटना पिसक एकटा किसचुएिन विएट कैल गेल छलै,मुदा दोसर बेर एकर जररी नइ बूझल गेलै,किएक त' आब नेबोलालजी स्थापित भ' गेल रहथिन ।मुदा िआ हम ने बिसरब जेबौ,सिंह जी थोडबे बिसरथुन,हुनका सब किछु याद्द छैन,अपन गभिमे एनै सेहो आ एखहुयो सू पहिले के बात सभ.......ऊ वान-वान के,गाबा-गाबा के तोरा याद्द करेथुन ।

नेबोलालजी साल दू साल तक सिंह जी क' पक्त कृतज रहलखिन,एकर बाद हुनकर ध्यान न्याय दिस गेल । सिंह जी किएक एते कमेता आ हम किएक कम कमाएब ।हुनका किएक एते मान-सम्मान आ हम की केकरो सू कम आद्द आद्द ।ऐ तकिमे सबसू बेिी ऐ तथ्य पर बल रहै कि हम किएक कम कमाए छी ।आ ऐ गणितक क्तिपूक्तिलेल नेबोलाल जी ओकील सबक दारपाटी मे बैस' लागला ।स्टाफ सबक सेक्टंग िरा भ' गेल ।किछु सिंहविरोधी स्टाफ सबके जाक्तक कैप्सूल खुआयल गेलै ।पूरा सपात आ पूरा ठोस आशििनक संग ।कमीिन आ हिसाबक स्पष्ट उदोषणाक संग । आ किछु दिनक लेल सही मे नम्बर एक इंस्पेक्टर भ' गेल नेबोलालजी ।मुदा जाक्तक काउंटरकएिन िर भ' गेलै नेबोलालजी ।ऐ राजपूत बहुेल क्षेत्त मे राजपूत विरोधी अक्तयान कयने दिन नेबोलालजी ।आ जाक्तादिक विरोध एकटा नया जाक्तादि सू ।िहरे िहि नेबोलाल जी.....

आ

नेबोलाल जी लगभग दरजन बेक्र माक्र खेबा सू बचल हेक्थन आ ओतबे बेर ठोस विकायतक संग ओकील साहेब लोग डी0एम0 ओइ ठाम पदिनि केने हेक्थन ।अंत मे नेबोलाल क्संहजीक लग सरेडर केलक्खन ।सरेडरपस्ताि क' असली कॉपी हमरा लग नइ अक्छ ,नइ त' हम हूबहू बतेतौ छल ,मुदा जर री सिलि ओइ पस्ताकि पाठन नइ ,ओइ आदमी क' क्यन्हनइ छैक ।ओ आदमी कोन आदमी के नइ गक्रएलकै ,कोन जाक्त के नइ ,मौका क्मलले त' क्कछु केत्त आ राज्य के सेहो ।एकरा लग ओकरा गक्रएनए आ ओकरा लग दोसरा के ।ई पाक्लक्टक्स नमहर नइ क्खचाइ छैक दोस ।कतबो नेमारबए ,कतबो तीरा-तीरी करबै ,जक्ल्दए टूक्ट जायत आ टूक्ट के अपने मुंह मे लागत टूटलका रब्बर सन ।

नेबोलालजी के गाक्र दैत देखनए एकटा नाटकीय अनुभि छल ।हुनका मुंह सू र पैयाक लेल ,नीक समानक लील ,जिनि स्त्तीक लेल चूबैत ...।आ नेबोलालजी कोन स्त्ती के कल्पना मे नइ भोगलक्खन ।कोन मदकि कल्पना मे ईजत्त नइ लेलक्खन ।कोन दोस के कल्पना मे भीख मागैत नइ देखलक्खन ।आ नेबोलालक जादू जक्ल्दए खतम भ' गेलै ।लागै छैक जे नेबोलालक जादूक रहस्य बच्चा-बच्चाक पता चक्ल गेल छलै ......क्संहविरोधी गीतनाद जक्ल्दए खतम भ' गेलै ।क्संहजीक पक्रक्यत अक्धकारी पटना सू आयल छलक्खन ।आपात मीक्टंग भेलै आ आन बातक अलािं नेबोलालक रसगर गाम टासफर भ' गेलै ।ऐ टासफरक पभाि नेबोलाल साल-दू साल बूझलक्खन ....बूझै सू पक्हले नेबोलालक टासफर कैमूर क्जला भ' गेल छलै ।नेबोलाल के पोय्साक्हत कैल गेल

छलै कि जाऊ बाबू जाऊ आनंदे मे रहब.....जयिते पिच्छम तयिते माल.....मुदा ई एकटा आर कथा छलै ।

सिंह जी के बूझनै कनेक नइ खूब-खूब किठन काज ।सिंह जी क' र टीन के बूझनै ओिहयो सू किठन आ ऐ र टीन सू होमय िला फैदाक ब्यौरा तैयार केनए एकरो सू किठन ।सिंह जी पािरतो छिथन पूरा र टीन आ पूरा उदे्िय सू ।िस्तित मे ओ ितरंजक खेलाडी छिथन आ अपन अवाला आ चािर-पाच टा आगू िला स्टेप के आगू पाछू जोडैत चलै िला खेलाडी ।हुनकर कुनो स्टेप अहाके बेकुफ िला बुझा सकैत अिछ ,मुदा ओकर अंितम पिरणाम की हेतै से बस सिंहे जी जानै छिथन ।सिंहजी क' विस्तृत सिकरि के देिख के अहा के आि्चयभि' सकैत अिछ या फेर अहा सिंह जी के अत्यंत ि्यिथि घोिित क' सकैत िछयै ,मुदा एकर पिरणाम कनेक देिखयौ ।सिंह जी क' विभाग मे पुिलसक कोनो काज नइ ,मुदा सिंह जी बहुत रास दरोगा सू िहत-िमत बनेने ।आ दरोगा सू काज केकरा नइ पडैत छैक ,से जखने कुनो पैरिी िला काज होए सिंह जी थाना पहुंिच जािथन ।आ ई पैरिी उिचत ि्लक आ उिचत बेन-िवहारक संग होइत छलै ।सिंह जी के डग इंस्पेक्टर सू दोस्ती आ सिंहजी क' सासुरक दिचोर ,िमलाबटखोर सब के एकटा नीक सीरही िमिल गेलै ।आ पाहुन सिंहजी उिचत दर सू एकर िनस्तारण ि्र क' देलिखन ।एतबे नइ सिंह जी के पंिडत-ज्योितषी सू पिरचय आ सिंह जी एकटा स्पेिल डेट के गुप्त पूजा ठािन देलिखन ।ज्योितषी कहने रहै जे ऐ िाव्य क' पता केिल हमरे टा ।

सिंहजी भोर उठते साहब ओत' चलि जेता आ भोजन सू पहिले तक ओतै रहता ,फेर साझ मे चाह क' बेर सू भोजनक समै तक ।ऐ रटीनक पताप ई छलै जे साहेब ओतबे कहैत छलै आ ओतबे करैत छलै जत्ते कि सिंहजी ।साहेबक हरेक भूर आ साहेबक हरेक गुर पर सिंहजी के धियान ।तरकारी ,दूध आ ठंढा क' बहाने किचन तक पहुंच ।सिनेमाक टिकट ,मिठाई आ जन्मदिन ,विवाहदिन आदि क' बहाने मैडम तक पहुंच ।चाकलेट ,बैडमिंटन आ कॉमिक्स क' बहाने धिआ सेहो कब्जा मे ।आब की चाही ।दोसरक घर पर एतेक धियान देला पर की नइ भेटि सकैत छैक ,मुदा सिंह जी के सब किछु नइ चाही ।हुनकर टारगेट निश्चित छैक ,बस ओ ओमहरे बरहैत छथिन ।एत्ते इंतजाम ,ई अनुशासन आ ई व्यवहार सब ओइ टारगेटक माध्यम बस।

4आ सिंह जी के जइ आदमी से सबसू बेशी डर होइत छलेन से रहथिन मिशा जी ।जिला मे मिशा जी क' आगमन नया-नया भेल छलै आ संयोग देखियौ जे मिशा जी ठहरलखिन सिंहजीक डेरा पर ।आ शुरू-शुरू मे त' मिशा जी अपन बडका भाय आ गुरु बना लेलखिन,आ जेना कि हरेक चलाक आदमी करैत छैक मिशा जी अपन माया फैलेनए शुरू क' देलखिन ।अपन मंचोचित अभिनय आ थडडिवीजन एम0ए0 मे रटल संस्कृत श्लोकक रस्ते जल्दिए एकटा मिशाभिमंडली बनि गेलै ।आ देखियौ त' हाल जे कि जखन पूरा पटना -दिल्ली दलित-विमर्श आ स्त्री विमर्श सू भरल रहै,पूरा अखबार आ टी0वी0 चैनल भष्टाचारविरोधी आंदोलन सू भरल

रहै ,काशा जी हरेक बातक पक मे आ विपक मे एकटा संस्कृतक ि्लोक राखि देथिन ।आ कखनो -कखनो त' राखनै क' अंदाज पकि्ता बला,कि्ता बला ,मेटर िला ,दािर्निक िला ,तीथर्िर िला आ पैगम्बर िला सेहो ।आ बुि्धयार लोक सब सुनलाक बाद या पाछू मे ऐ ि्लोक शिण के किछु अन्य विया सू -फेकनए ,ठोकनए आिद सेहो कहै ।जे किछु नइ बूझै िला छलिखन अपन संस्कृत जानक आधार पर,अपन ि्यस्तता आ थेथरई के दुआरे ओ लोकिन सेहो मुसकिया दैत छलिखन ,िह-िह क' दैत छलिखन आ कखनो काल काशा जी के िवदान सेहो कहैत छलिखन ।आ काशा जी ऐ सब के भगिनक आिीिद ,माया आिद कैह के आत्ममुग्ध होयबाक असफल पयास करैत छलिखन ।

काशाजीक ई मायािद पारंिभक तौर पर िसंह जी के नया चीज बूझेलेन ,ि ुर -ि ुर मे ऊहो रस लेबाक पयास केलिखन ।धीरे-धीर हुनका बुझेलेन जे ई कासरबा त' हमरा उखािड के रहत ,आ जकिदए हुनकर व्यिक्तत्व मे एकटा आलोचनात्मक दृि् क' उभार भेलै आ मधुबनी कलक्टरीक िवदान लोकिन ऐ उभार के जकिदए बाह ण बनाम राजपूत आ नया बनाम पुरान कहबाक असफल पयास केलिखन ।किछु लोकिन जे बेिी बुि्धयार रहिथन जे िासिन-सयत्ता के बीस-पचीस बिरस सू देखने रहिथन ओ एकरा अस्थायी पिृत्त कैह पतीका कर' लागलिखन ।जे िासिन आ भष्टाचारक पारस्पिरकता के नीक जूका िचन्हैत रहिथन ,हुनका लागलेन जे ई कोनो पिृत्त नइ िथकै ,मुदा कलक्टरी आ ऐ िवभाग के एकटा नया मसल्ला िमल गेलै ।बात ई भेलै जे काशा जी क' बजबा क' कला सू किछु अिधकारी ,किछु पोफेसर ,किछु पतकार लोकिन बेिीए पभािवत भ' गेलिखन आ जेना

कि होइते छै जे मिथिला त' बजबा क' तेल सू बरहै छैक ते मधुबनी जिला आ ऐ विभाग के मिशा जी मे बेसी विकास देखेलए ।हि रे मिशा जी,हि रे कालिदास आ माघक श्लोक आ हाय रे सिंह जी के लंठई,हे सिंहजी हे सिंह तोहर लंठई एतेक कमजोर कि ऐ मिसरबाक अधि श्लोके सू पराजित भ' गेलै ।मुदा नइ नइ,ऐ भम मे नइ रहू ।अधि श्लोकक दुनिया जिन्दगए बेरबाद भ' गेलै,बरबाद नहियो भेलै त' दीवाल घैट गेलै ।धीरे-धीरे श्लोकक पत्रविया,पसिा,ताली-थोपडी,मुसकी घटैत गेलै ।आ अधि श्लोक के पराजित केलकै धि घी,धि कमीनि रिश्वत घूस आ पहिले सू पसरल सिंहादि ।जिन्दगए बाहण अधिकारी,किसान आ पतकार तक सिंहजीक नजदीकी भ' गेलखिन आ आब समै रहै मिशा जी के बदलबा क' ,मिशा जी जिन्दगए अपना आप के सिंह जी क' छोट भाय के रप मे देख' लागलखिन ।आ हि पलटिते मधुबनी कलक्टरी क' पाया,कुरसी,सीरही,अलमारी आ फाईल सब देख' लागलै सिंहजी क' मुंह । आ धीरे-धीरे मिशा जी अपना आपके छब्बीस जनरिी,पनरह अगस्तक भाषण आ कर्मचारीक विदाय समारोह तक समेट लेलखिन (आफिस मे)

फलनमा.. चिलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)

ओकरा , ओकरा आ ओकरा आगू बरहा आ एकरा , एकरा आ एकर टाग खीच। ऊ देखही ने बरा नील-टीनोपाल झारने छौ , ओकरा दिस एक लौप कादो फेक , देखही ने कनियो ने कनियो लागबे करतए , नइ लागतै त' डरेबो त' करतौ आ डरा जेतओ त' कमसू कम साइकिलक हेन्डल जर रे खसकतै आ खसकतै त' ऊ बारतौ। ओकरा दिस ई ढेपा , ओकरा दिस ई छौकी आ ओकरा दिस ई झूटकी फेक। देखही बस खपच्चिए फेकबाक चाही , डागक युध नइ चिथकै ई , नाहक केकरो लावा गेलौ त' खूनक मोकदमा हेतौ। समीक्षा नइ समीक्षा आलोचना नइ , बस मुसकियाइत रहियौ , बस....। ओकरा सटा लियौ त' ई सब फैदा , ओकरा बजाबियौ त' ओहो आयत। ओकरा हटेने रहू नइ त' ओ सब नराज भ' जेता। ओकरा साथ रखबाक अछि त' रातिक एकातमे बजाबियौ , केओ देखै नइ , केओ अनुमान तक नइ लगा सकै। ई आदमी अहाके भविष्यमे काज देत, ते एकरा ईग्नोर नइ करियौ , कुनो ने कुनो लेईसू सटेने रहू। ई बरा लराकू टाईपक अछि , एकरा आगू राखू , ई कलम आ कोदारिसू साथ रहत आ ई लेखक जेका त' अछि मुदा अछि बरा चुप्पा , एकरा एकदम पंक्चरयेने रहू , मंच , पुरस्कार आ पकानिक ति।ताब्धिक अवभयानमे एकरा सन खबास पूरा लेखक समुदायमे नइ भेटत। आ यदि फलनमा के धकियेबाक अछि त' चिलनमा के आगू राखू , हम जनै छी जे चिलनमा अहाक प्रिय नइ अछि , मुदा यदि अहा अपन प्रिय ठेकनमा के आगू करबै त' कवि ते बूझू जे फलनमा आगू भ' जायत ते सब आदमी जोरसू कहियौ शीचिलनमा झा जिंदाबाद।

फसाद आ आनंद (लघु कथा)

समै काटबा ,बितेबा लेल आदि जिगह ।ई गाम जत्त' भिर दिन केकरो सू केकरो फसल रहै ,मािर नइ त' मािरक भूमिका नइ त' मािरक उपसंहार ।कतौ पंचैती ,कतौ उपराग ,नािलिस ,कतौ गारागंजन ,कतौ किंदा रसक आनंद ,मुदा सबसू बेिसी आनंद रहै मािर-पीट ,मल्लयुध या फेर दू पाटी क' बीचक सामूहिक संघषि। यिद कतौ झगडा फसल होए त' किमहरो सू हूिल जाउ ,केकरो पक ' िलयौ ,कुनो बात पर नराज भ' जाउ ,केकरो हा मे हा िमलबू ,मौका देिखके केकरो पर िबगिड जाउ,भीडक आनंद िलय' ।अप्पन माथ-कपाड बचबैत केकरो पक सू लाठी चलबू या उपदेि दिय' मुदा सम्हिर के ,किहयो-किहयो जतरा खराब होइ छैक ,नइ सम्हरै त'भाग-पडाउ ।

फसाद
पिछला दू दिन सू सब ताक मे रहै ...कुनो मौका िमलै आ सधा ली... केओ एक बेर छीकै त' दोसर दू बेर ...कोहुना मािर िर भ' जाए..मोटिन झा एक बेर राम कहलिखन त' सोहन िमसर के भेलेन जे हमरा खौझा रहल अिछ ते ओ दू बेर राम राम कहलिखन ...यिद दिरथ कुनो भगिनक नाम रहतै छल त' िमशजी दिरथो-दिरथ जर र कहिथन छल ,यिद रािण राम के हरेने रहतै छल तखन िमशजी रािण-रािण जर र कहिथन रहै ।मुदा राम-राम कहला सू मोटिन िमश पर कुनो पभाि नइ पडलै ,ओ खौझाबै लेल कहने छलिखन थोडके ते िमरािि दूनू गुट मािर करबा लेल दोसर बहन्ना बनब' लागलै

फसाद-1

अल्फा मरसैब तामैत रहलखिन आ गाक सुनैत रहलखिन ।बीटा एक बेर गाक दै आ हहा के हूक्स पडै ,मरसैब उत्तर तामैत रहथिन त' दक्खिन चलि जाथिन ,फेर बीटा दक्छिनबारी कात मे गवडया आबै ,मरसैब पूबारी कात चलि जाथिन आ फेर बीटा ससक के पूबारी कात चलि जाए ।ई पक्रिमा कतेको बेर चललै ,बीटा थाकि जाए त' गामा काज कर' लागै ।मरसैब कुनो तरहे चाहथिन जे आइ माक नइ फूसै मुदा बीटा आ गामा दूनू भाइ पनवायाइ खेला के बादे आयल छलै ,ओ चाहै छलै जे आइ कोहुना मामला फक्रया जाए ,किएक त' आइ मरसैब असगरे छलखिन ,आ मरसैबो आइ एकदम अडडी गाडने छलखिन कि आइ किछ नइ होए ।ताबते मे मरसैबक बेटा पोटान बडहल आबैत देखेलै ,मरसैब के भेलेन जे आब किछु कएल जा सकैत अछि ,आ ऊ धोती के कनेक सम्हाक के बान्हनै िर केलखिन ।पूब दिस बान्ह पर एकटा हलचल देखेलेन ,आंखि पोछि के देखलखिन ,ियत बीटा क' बाप रहै ,मरसैब फेर सू तामनै िर क' देलखिन...

फसाद-2

ई कुनो मीटिंग रहै मंदिर पर ।सब टोलक आदमी जमा भेला ।सरकारी कर्मचारी ,ओकर दलाल ,गामक चौकीदार ,पोस्टमेन ,बैक मनेजर आदि आदि सेहो रहथिन ।सरकार के पास रहै बहुत रास पैसा ,बहुत रास प्लानिंग ,बहुत रास झोल-झाल ।मीटिंगक अध्यक कहलखिन ' हम पूछि रहल छी ,अहा सब बताबैत चलू '

अस्पताल कत' स्थापित होए?

बभनटोली मे सर

गौ िला किमहर रहतै?

काइथटोली मे सर
बैक लेल कुन जगह?
रजपूताना सर
आ दूधसंगह केर?
भूमिहारटोली मे होए त' केहन रहतै
ई सुनिते दुसधटोलीक लोक ,चमरटोलीक लोक सब धीरे-धीरे घूसक' लागलै ।
मुदा कुरमी टोली आ गुअरटोलीक लोक सब ओहिना मौजूद रहलै ।सब के लागलै कि मीटिंग आब खतम भ' गेलै ।अध्यक महोदय कार्यवाही भर' लागलखिन आ कहलखिन सब आदमी साइन कर ,तखने गुअरटोलीक एकटा जनि कहलकै हाकिम सब संस्था ओमहरे ल' जेबै कि किछु हमरो आर दिसन रहतै ।अध्यक महोदय कहलखिन बाजू ने जे सम्मिलित से अहा सब कहबै से कएल जेतै ।
ताहि ते समिति स्थल मे खुसूरपुसूर शुरू भ' गेलै ।ऐ स्थल मे जातिक नाम ,लाठीक नाम ,स्वतंत्रता ,विकास आदिक विभिन्न शब्द एक-दोसर पर बजर' लागलै ।एतबे मे के लाठी ,के मूसर ,के कुरसी ,के टेबुल ,के कोरो उठा के एक-दोसर पर चलब' लागलै एकर अलग-अलग लिस्ट छैक ।ई सब लिस्ट थानाक दरोगा संग मे छैक ।घायलक सूची ,मृतकक सूची अखबार मे छापल छैक आ घाव ,दवाइ ,बेडेजक संग पूरा गाम खूनोखून भेल छैक

फसाद-3
दिनेश कहलखिन रै 'राजेश' ,मुदा राजेश के सुनेलए 'रए राइतेश' आ ई सुनिते कहैत छै 'हू पादेश' ।
दिनेश- की कहलही?

राजेि- जे तू कहलही

क्दनेि-एना कएक बाजैत छे?

राजेि-जेना तू बाजै छही

क्दनेि सोच' लागलै क रजेिि एना कएक बाक्ज रहल छैक ,तखने ओकरा हाथ सू खुरपी बाल्टीन मे वार गेलै ।खुरपी देक्खते राजेि क्वकरैत आक्ब गेलै क्दनेिक सामने

राजेि दूनू हाथ सू क्दनेिक गटा धेलकै ,क्दनेि ओकरा धक्कयाबैत ,गटा छोडब' लागलै ।गटा छूटलै तखन राजेि डाड ध' लेलकै ,राजेि डाड छोडबै आ क्दनेि ओकरा नचाब' लागलै ।क्दनेि एकटा क्बटू काटलकै त' राजेि एक्के बेर हाथ छोक्ड देलकै आ अपन दात ओकरा पीठ मे गडा देलकै ।दात गडाक्बते क्दनेिक देह एक्के बेर झनझना उठलै ,ऊ खुरपी उठेलकै आ उलटा क' के बेट क्दस सू एक बेट ओकरा पीठ पर देलकै ।बेटक माक्र खाइते राजेि पलटलै आ अप्पन दात सू क्दनेिक करेजा मे लगा देलकै ।करेजा मे दात घूसबैत माउस नोचैत बाहर क्नकललै आ थूक्क के अप्प्न लाल मुंह क्दनेि के देखब' लागलै ।खून देक्खते क्दनेि के बहुत तामस एलै ,ओ खुरपी छोक्ड अपन घर मे घूक्स गेलै आ अन्दर सू भाला क्नकाक्ल लेलकै ।भाला देक्खते गामक दक्िगिसिवि य भेलै ।खुसुर-पुसूरक बाद एकाध आदमी आगू बरहलक्खन ,तािते क्दनेिक कक्नया एकबाइग आक्ब के एक लाठी राजेिि के ध' देलकै आ ओमहर राजेििक कक्नया काननै िर क' देलकै ,पता नइ कएक ।

दोस्तीक जिनगी मे झडबैर काल (व्यंग्य)

आ झडबैर कालक दोस्ती बहुत किछ महुआक रंग नेने रहै ,रंगो सू बेसी गंध ।खूब मादक गंध ,पूरा क' पूरा गाछी-बिरछी ओइ गंध सू पुलकित ,मुदा ऐ गंधक आयु कत्ते दिन ,ऐ फलक आयु कत्ते दिन ,ऐ सिंतक आयु कत्ते दिन ,तहिना ऐ कालक दोस्ती सब रहै ।किछु दिनक लेल पूरा जगजगाड ,आ फेर जल्दिए बाइस भेनै आ किछुए घंटाक बाद मौलेनए ,मौलाईत-मौलाईत लाल भेनै आ फेर करियेनए ।मुदा चलाक लोक सिबत बना पी लैत रहथिन,बेसी चलाक लोग लटा बना के राखि दैत रहथिन आ जे जन्मी चलाक रहथिन से महुआ के सडबाक पतीक्षा करैत रहथिन ,महुआ सडै आ मधु मे बदलि जाए ।काबिल लोक सब ऐ दोस्ती के सीसी मे राखि के अमर बना देलखिन ।ते ऐ काल मे जल्दी-जल्दी दोस्ती बनै आ टूटै ।बहुत किछु 'टायल एंड एरर' तकनीक पर ।दोस्ती बहुत किछ तात्कालिक सांर्थिक आधार पर बनैत रहै ,आ ईहो पता नइ रहै कि ऐ दोस्ती सू किछु भ' पेतए कि नइ आ किछु समै बितैत जखन पता चलै कि हे दोस्ती तोहर कोन विधि ,तोहर कोन रंग ,तखन तुरत दोस्त सब बदलि जाए आ जे विशेषण ,समास आ मुसकियान अहाक लेल पयुक्त भेल रहै ,से दोसराक लेल खचभिनै सिर भ' जाए ।कखनो काल दोस्त लोकनिक' स्थिति आमने-सामने आबि जाइ तखन दूनू एक-दोसर पर आरोप लगबैत अलग भ' जाइत रहथिन ।जे जत्ते बुधियार ,से तत्ते कम आरोप लगबै ।आ एहने समै मे एलखिन सासि जी आ सासि जी दूए दिन मे विदा भ' गेलखिन ,एहने समै मे एलखिन कमती जी ,ऊहो दुए दिन मे विदा भ' गेलखिन ....मुदा सभ एहने नइ रहै क्।किछु आयल छथिन कि पुरनका

सब के उखाक्ड के फेक देबै कत्त' बागमती मे ,गंगा मे ,करेह मे.....

ईहो एगो समै रहै ,मधुबनी क्जला मे एक सू एक इंस्पेक्टर भूक्म क्वभाग मे । एगो क्संह जी रहक्थन ,क्जनकर पहुंच पटना तक ,क्मशा जी रहक्थन हरदम पटना-राची बौआइत रहक्थन आ झाजी क्दल्ली -कोलकाता सू कम कखनो नइ बक्तयाक्थन ,एगो ईहो समै छैक सब झडबैर सब पहुंच गेल छैक ।एगो छक्थन क्वनिय भूषण से हरदम क्संहजीक पाछू लागल रहै छक्थन ,आ ऐ ओगू-पाछू मे भोजन-जलपानक क्वंता सू मुक्त छक्थन ,एतबे नइ क्संहजी कनेक पहुंच लिा छक्थन से एही बहाने कनेक बात-सात ,क्वंदा-पिसा ,पाद-फूस करैत नजदीकी बक्ढ रहल छैक आ कनेक काजो ससक्र रहल छैक ।क्वनिय भूषण जी आ क्संह जी सहरसाक मक्हषी पखण्डक छक्थन ।दूनूक दोस्ती एही ठामक अक्छ,मुदा दूनू आदमी एके साथ कहै छक्थन भगिती तारादेिीक जय ।ऐ दोस्ती के झाजी कनेक िि आंक्ख सू देखै छक्थन ,क्कएक त' क्वनिय भूषण छोट जाक्त सब मे सू छक्थन आ झाजी के लागैत छैन जे क्वनिय भूषण क्संहजी के साथ क्मक्ल एकटा नया समीकरण बना सकैत अक्छ ,मुदा क्संहजी एकरा एकटा संभािना के रप मे देखैत छक्थन,मतलब एहन आदमी जे बाहण सबके गक्रया सकैत अक्छ ,बस एकटा चाय ,कनेक जलपान ,बाक्स-कुक्स क्मठाई आ ई सब नइ होए तैयो एकटा भक्वष्य आ एकटा संभािनाक मदेनजर....

आ झडबैरक दोसर फुल्ली जीिछ ठाकुर ।देह क्पलक्पल्ली मुदा अिाज भक्रगर ।की चाही आ की बाजै छी ,ऐं यौ ठाकुर जी ,एना

मे केना मिलत ओ सभ ,जे अहा चाहै छी आ जे कंठ पर आबैत आबैत रहि जाइत अछि ।मुदा कतबो कहियौ करता ओतबे ।आ एकटा चीजक गैरेटी कि ओ सही चीज नइ बता सकैत छी ,पता नइ पसनिलेटी डिजोडरि ,जेनेटिक समस्या कि कोनो खास मानसिकता ।अहा पूछबै नाम आ ओ पूणविषिष्टताक संग अपन विकल्प योग्यता बतेता ।नइ -नइ हुनकर कान ठीक छइ ,ओ बताहो नइ छथिन ,ओ अहा संग मजाको नइ करैत छथि,मुदा ई अल्लक बल्ल जे छैक ,सएह हुनकर विकल्प ।एही विकल्पएंक भरोसे ओ अपन रस्ता चलैत छथिन आ अहा अनुमान नइ लगा सकैत छियै कि ओ किमहर जेता ।आ ठाकुर जी सब दिस छथिन कनेक सिंह जी दिस ,कनेक झा दिस ,कनेक मिशा जी दिस ,कनेक रंजन दिस ,कनेक विनिय भूषण दिस ,मुदा ओ गोजर नइ छथिन कि तिपादी होथि ,ते ओ किमहरो नइ घुसुकि पाबै छथिन ,ओ चालियो नइ छथिन कि ससरैत-ससरैत नमहर रस्ता पार क' सकैथ ,से ऊ भ' गेलखिन िधि ऊंट जे अपन नमहर गरदनि उचका-उचका पात तोडैत हो आ ठाकुरो जी बस पाते तोडैत छथिन ,फल ,डाट छूबाक सामथ्यि हुनका मे नइ ।जे ऊजा बचैत छैन से रेलकि टाईम-टेबुल देखबा मे लगा दैत छथिन ,डेली सकरी जाइत छथिन ने ,ते आबि जेता दस मिनट पहिले आ आफिस सू भावा जेता दू घंटा पहिले ।पीठ पर बैग टागने ठाकुर जी एकटा कविति समै मे दरभंगा आ संकरी स्टेनि पर देखा सकैत छथिन आ ई मासिंक सीजनल टिकट हुनका कत्तौ के नइ छोडलक । ने ओइ गूपक भेलखिन ,ने अइ पटटी दिस ससरलखिन ।ओ अखंड याती रहलखिन आ पूरा मंडली विजला चरैत रहलै ......अधिकारी परेनि कि किछु कमा के नइ दैत अछि ,आ अधीनस्थ परेनि कि साहेब कमबा नइ रहल छथि ।मुदा एहने मे कतेको एहनो सूरमा सब

छैक ,जे चाहैत छैक कि ठाकुर जी नइ आबैथ मधुबनी ,ओ बैग ल' के ,टिकट ल' के ,मोटर साईकिल सू ठाकुर जी के विदा करैत छैक ,आ ठाकुर जी गाम जाइत छथिन ,मुदा गाम मे रहैत छथिन त' ध्यान रहैत छैन मोबाईल पर ,हरदम चौकैत रहता कि केकर फोन एलै ,केखनो कंपनी िला फोन केलकै ,त' ऊचकि के देखता ,केखनो िआ बुच्ची सब सेहो गलती सू रिंगटोन बजा देलकै त' परेिान ठाकुर जी बच्चा सब के डेगा दैत छथिन ।केखनो डेरा के फोन बंद क' दैत छथिन ,केखनो बैटरी निकाल दैत छथिन आ केखनो काल ओछैने पर मुसकियाइत बहन्ना सोचैत छथिन ।ई मुसकिएनै कतेको बेर कनिया के खराब लागलेन ,पहिले टोकैत रहथिन ,आब टोकनै छोड़ि देलखिन ,मुदा एखनो कहियो काल कनिया ताक' लागैत छथिन ।हाय रे ठाकुर जी ,ठाकुर जी केकरो नइ भेलखिन ,ने कनिया आ बाल बच्चा के ,ने आफिस मे रहि के दू पैसा कमा पेलखिन ,ने अधिकारी गिपिर दू पइसा लुटा सकलखिन ,ने रोड पर िध मोन सू खखसि के भरि गाल पीक फेकलखिन।ठाकुर जत्त' रहलखिन परेिान रहलखिन आ सब हुनका सू परेिाने रहलै ।

झडबैर कालक तेसर सम्माननीय इंस्पेक्टर साहेब आत्मानंद छी छथिन ।अपने सिंहजीक बाल सखा छी आ अपनेक घर जिला सहरसा मे अछि ।अपने सिंह जीक साथे साथ पटना मे जिनी नष्ट कएल आ चापलूसी ,चमचै आ जासूसी मे निष्णात भेलौ ।पता नइ कोन सुखे मधुबनी मे चिइस देलौ आ ऐ ठाम सिंहजीक जूनियर इंस्पेक्टर के रप मे ख्यात छी ।ई जूनियरटी पदरप मे नइ विषिण आ विया रप मे छैक ।जइ समै आत्मानंद जी जिला

ज्ाइन केलक्खन ,क्जला दू भाग मे बूटल रहै क्संह जी ,सहरसा आ क्संह जी समस्तीपुर मे ।आ आत्मानंद जी आक्बाते दूनू पाटी ओत' धुरझार घूम' लागलक्खन ।लोक अनुमान लगबै ,कथी लेल आबै छौ आत्मानंद ,लोग कि करै ,वििास करै ,आरोप लगबै ,अपना आप के बचाबै ,मुदा आत्मानंद एबा-जेबा मे कोनो कमी नै केलक्खन ,जेकरा जे बूझबा के होए से बूझहै ।आ आत्मानंद जी अपन काज अत्यंत मौन आ समपिण के साथ क' रहल छक्थन ।केओ कहै छै जे आत्मानंद दूनू गुट के एक करबा मे लागल छक्थन ,दोसर तकि ई छैक जे आत्मानंद भेला बाह ण,ओ क्कएक एक करक्थन ,ओ त' इएह चाहता क्क क्संह जी कमजोर होए आ ओ एकर स्थान ,झोडा-झपटा आ कमंडल सक्हत क्संहासन ल' लैथ ।तेसर तकि ई छैक जे ई आतमबा जासूसी क' रहल छौ ।सब ठाम अपन कैमरा आ टेप सेट केने रहै छौ आ जा के क्संह जी ओइ ठाम बोकक्र दैत छैक आ ऐ बोकराए क' पइसा क्संहबा एकरा दैत छैक ।मुदा आत्मानंद जी की क' रहलक्खन से मात आत्मानंदे टा जानैत छक्थन ।आत्मानंद जी क' अस्त छैक मौन ।जे जेकरा बाजै के छौ ,से बाक्ज ले ,ओइ पर कोनो पक्तक्रि या नइ देता ,बस मुसक्कएता ,आ मुसकीओ छोट-छीन ,अहा मुसकी बुक्झयौ या नया छी तखन ई अनुमान लगाक्बयौ क्क आत्मानंद जी क' मुह कक्हया सू टेढ छेन । आ बस नइ बजबा के कारणे ई अनुमान लगेनए कक्छन क्क आत्मानंद क्कमहर छक्थन आ बस एही कारणे ओ सब गुट ,टोल आ पटी मे स्िीकायिछक्थन ,बस स्िीकाये छक्थन ,लोकक्प्रय नइ ,क्कएक त' गुप्त योजना मे या त' क्संह जी संग क्िमल रहैत छक्थन या फेर अक्धकारी गिसिब संगे ।मुदा अहा ईहो नइ कक्ह सकैत क्छयै क्क आत्मानंद जी के बाज' नइ आबैत छक्न या हुनका संग मे विषयक अभाि छैक ,यक्द

मौका भेलैत छैन त' बीटल्स ,लाग मार्च,बह ाड आ बैगबैग पर अबाध र प सू घंटा-दू घंटा बाजि सकैत छथिन ।ते एक टा चीज नोट कर कि मतिभाषित ,चुप्पी आ मौन हुनकर अस्ते टा अछि,आउर किछु नइ ।

आत्मानंदजी मे एकटा आर गुण छैक भक्ति ।अधिकारी ििमे ई भक्तक र प मे ख्यात छथिन ।डेली जेनए ,बिना बजाओल जेनए आ बिना आजा के नइ एनए ।किछ साफ केनए ,तरकारी आननै ,'तबियत ठीक अछि ने ' ई पूछनै ।दोहा क' दोसर लाईन बाजनै।हूसी-खुिी क' मौका होए त' हूसनै आ कोनो दुख-विषादक बात होए त' मुंह लटकेनए ।साहेब जेकरा पर पसन्न छथिन त' पसन्न भेनए आ साहेब जेकरा पर नराज छथिन त' आत्मानंद सेहो नराज भ' जाइत छथिन ।आत्मानंद जी सूचनाक ििईर छथिन । के कत्त' छैक ,के केकरा सू भेट केलकै ,केकरा केकरा सू नइ पटैत छैक आ के केकरा मे सटेने छैक ई सब सूचना आत्मानंदजी यथा स्थान राखि दैत छथिन ।आ केखनो काल त' िक होइत अछि कि आत्मानंद जी आदमी छथिन कि पेन डाईि ।आ एक दिन विनिय भूषण सपना देखलकै कि आत्मानंद पर सिंहजी एकटा दिाई फेक देलखिन आ आत्मानंद ओछैन बनि गेलै ,आ विनिय भूषण दोसर दिन सपना देखलकै कि सिंह जी एकटाा मंत बाजलखिन आ आत्मानंद नटुआ जूका नाच' लागलै ।तेसर दिन फेर विनिय भूषण सपना देखलकै सिंह जी आंखि मूनि के किछु मंते जूका परहलखिन,आत्मानंद कंडोम बनि के साहेबक जेबी मे चलि गेलै ।विनिय भूषण कहैत छैक कि ई सपना नइ सत्त छैक ,हमर आंखिक देखल ,मुदा सिंह जी कहैत छथिन कि विनियबाक दिमाग बेिी भ' गेल छैक,एकरा ईलाज चाही ।

नाटक 'वहसलि'

'वहसलि' नाटक मिथिला मे व्याप्त सांस्कृतिक संकट क' एकटा छोट रूपक अछि ।मिथिला मे जाति बदलल मुदा जाति क'चालि नहि बदलल ।जाति अपन बदरंग भूमिका क' साथ जीवित अछि । जाति ,धर्म,राजनीति आ साहित्य क' कॉकटेल एकटा गेन्हायल आ कुत्सित दृश्य उपस्थित करैत अछि।'वहसलि' नाटक एहि दृश्य के ने ग्लेमराइज करैत अछि ने रूपांतरित करैत छैक ।एहि ठाम टी एस एलियट क'ओहि विचार के महत्वपूर्ण निहि मानल गेल अछि कि भोक्ता आ रचयिता क' बीच मे दूरी रचनात्मकता क' लेल अनिवार्य अछि ।गाम मे मंचन क' समय एहि विकट तथ्य स अवगत भेलहूं कि नाटकीय अवसर वादि क' परिष्कार एखनहु अपरिहार्य अछि ।गाम मे नितुकिया छौराछपाठी स जे सहयोग भेटल ,ओ गदगद क' देलक ।नाटक मे संशोधन-परिवर्धन क' तमाम गुंजाइश के बावजूद ई अपन मूल रूप मे अछि ।उदयनाचार्य मिथिला पुस्तकालय क' प्रथम शताब्दी क' अवसिर पर आयोजित कार्यक्रम क' लेल एकर लेखन दू-तीन दिन मे संपन भेल छल ।ई नाटक ड्रिरए स कचकूह रहि गेल ।मुदा कचरस क' अपन आनन्द होइत छैक । ई हमर लेखन स बेशी अहॉ क' धैर्यक' परीक्षा छी ।मिथिला क' रंग परम्परा क'शत-शत नमन।प्रथम मंचन क'सब कलाकार आ दर्शक के सहयोग क' लेल धन्यवाद ।नाटक केर एकटा प्रतिभाशाली अभिनेता क' अनुपस्थिति हरदम खलत ।ओ अपन पारिवारिक तनाव क' चलते एहि दुनिया क' रंगमंच स विदा भ'गेलाह ।मात पचीस वर्षक उम मे आत्महत्या क'चयन स हुनकर मानसिक तनाव व्यथा क'अनुमान लगायल जा सकैत अछि । नाटक मे जाति सब क नाम काल्पनिक लिखल गेल

अछि । मुदा नाटक मे तथाकथित छोटका आ बडका के संघर्षसि समाज क’ संरचना आ पृक्ति स्पष्ट अछि ।

पथम अंक

पथम दृश्य

;एकता सम्भ्रांत व्यक्ति क’घर ।चारटा कुरसी राखल ।बाछानि लागल ,दीलि पर विदापति , रवीन्द्र नाथ ,कराला ,पसाद ,मोहन राकेश ,हरिमोहन झा आ याती क’ फोटो । चौकी पर एकटा सूतल व्यक्ति रेडियो सँ भैरवी गीत क’ पसारण। व्यक्ति परमेश बैक्स के झूमि रहल छथि । गीत बन्द आ केओ किवाडि खट -खटा रहल अछि । परमेश हडबडाइत छथि आ ओढना ओढि लैत छथि)

नेपथ्य स आजि -(हेमचन्द्र क आजि) परमेश बाबू छी अओ....... परमेश बाबू कत’ चलि गेलाह .... परमेश बाबु छी अओ । केवाडि मे धका मारैत छथि आ केवाडि खुजि जाइत अछि।

हेम चन्द्र - परमेश बाबू सूतल किएक छी ?

परमेश - (मुँह पर स ओढना हटबैत) हमर तबीयत खराब अछि, बुखार अछि ।

हेमचन्द्र - चलु डाक्टर स देखा क’लय’। आइ साँझ मे नाटक अछि, स्वस्थ नहि रहब त’ मंचन कोना हेतइ।

परमेश - हम मंचन योग्य नहि छी, हमर भूमिका दोसर के द’ दियऊ।

हेमचन्द्र - बहुत नीक ! आइ नाटक क’ दिन अहाँ ई बात कहि रहल छी ,बुझि पडैछ बात दोसर अछि....... साफ साफ बाजू ने कि बात ?

(खासि दू वालास शरबत आ एक हथ्था केरा क’ संग परिवेश करैत अछि। परमेश पहिले केरा खाइत छथि फेर शरबत पी के ढकरैत

छथि ।

हेमचन्द्र - हद कएलहु परमेश बाबु । कहैत छी जी बुखार अछि आ एक हफ्ता केरा गीरल गेलहु ।

परमेश - देखू हेम चन्द्र बाबू हम अहा संग दस बरिस स काज क' रहल छी ''रंग चेतना मंच '' क' क्रिया कलाप मे आब देख रहल छी जे आन लोक क' भागीदारी बडड बेसी बढ़ि गेल। पुरान लोक सब नेपथ्य मे जा रहल छथि आ चोर- चुहार सब के मलाईदार रोल भेटल रहल अछि ।

हेमचन्द्र - जे दस क' संस्था अछि, ओहि मे एहिना कमी बेसी होइत छैक, एकरा मून स लकालू परमेश बाबू।

परमेश - कोना लकालू मोन स, ई जे रामपति अछि से हमर बराबरी कर' चाहैत अछि। बिसार जाइत के एतेक हिम्मत । ओ आब कालीदास आ विद्यापति क' रोल करत।

हेमचन्द्र - मतलब ?

परमेश - देबा क' छल त' कोनो खबास लि रोल द' देतअइ । बडड बेसी त' उगना क रोल द' दितयओ, एना जे लीड रोल राम पति के देबइ त हम ,,,,,,,,,,,,,,,

हेमचन्द्र - औ परमेश बाबू । नाटक मे ई सब बात घुसेबए त' कोना काज चलत। ठीक छैक हम देखैत छी ,,,,,,,,,

(हेम चन्द्र जी जाइत छथि आ पकाश मद्धिम होइत अछि।)

अंक - पथम

दृश्य - द्वितीय

(राम पति क' घर ।दीवाल पर तुलसी, कबीर, मार्क्स, नागार्जुन क' फोटो ।किछु राजनीतिक दल क' पोस्टर सेहो एक टा कोन मे दू

टा लाठी । जमीन पर दरी बिछाओल । राम पर्ि आ हुनकर दू टा साथी हरमुनिया ढोलक झालि क' संग उपस्थित ।कोनो धुन बाजि रहल अछि।

(हेमचन्द्र क' पर्ि)

हेमचन्द्र - राम पर्ि जी छी अओ? बडड टॉसगर धुन बाजि रहल अछि ।

राम पर्ि -- आबू कका जी बैसू ।

ओ नथिया िली क पेम मे

नाक हमर कटि गेल...........

(हेम चन्द्र जी । किछु कह' चाहैत छथि)

हेमचन्द्र - राम पर्ि जी आइए नाटक अछि ।

हम त' बुझलहुे अहाँ संािद यादि करैत होएब ।

रामपर्ि - आब त' दस िरस भ' गेल इएह सब क' रहल छी आबहु संािदे रटाएब ?

हेमचन्द्र - संािद रटनए कोनो कुकायिति' नहि अछि ।

रामपर्ि - हम सब िशेष कलाकार भेलहुे। आब एते अनुभि त' अछिए जे कतहु अटकब त मोनो स जोडि सकैत छी ।

(पुनः गाबैत छथि

"हमर नेता जी

बड सुन्मन लगै छथि

कुरता आ टोपी

सुरेबगर लगै अछि ")

हेमचन्द्र अपन मूडी नीचा केने बैसल छथि

रामपर्ि - बात ई जे चुनाि नजदीक आबि गेल ।एकि बेर हम िधायक जी क' तरफ स पचार करब ।बूझू जे हम, महेन्द्र ,

देिनाथ आ बौआझा मतलब कक पूरा मंडली ।

(पसन मुरा मे गरदका कहला कहला क' बाकज रहल छकथ)

''हमर नेता देिदूत

ओ छकथ कमकथला के पूत

हमर नेता के`.............

कजताकायौ ओ लोक सब

कजताकायौ ओ लोक सब ....

(हेमचन्र क' चेहरा पर ाोध आका रहल छकन्ह)

हेमचन्र - राम पर्िि अहाँ हमरा बेइज्जत क' रहल छी । हम अहा क' दुआकर पर दू घंटा स बैसल छी आ अहा तेसरे राग अलापने छी ।राका मे नाटक कोना हेतए एकर अहा के कोनो कचन्ता नकह ।

रामपर्िि - हम कचन्ता क' के कक करब ?जखन कचन्ता क' के हम अपान ईच्छा पूरा नकह क' सकइ छी त' दोसर के कचन्ता क' के कक द' देबए ।

हेमचन्र - कक मतलब ?

रामपर्िि क' साथी - गायक जी असंतुि छकथ । कहनका ाोकसओन्ह ।

रामपर्िि - अहा चुप रहू । देकखयौ कका जी हमर व्यककगत समस्या त' व्यककगते अकछ ,ओकह क' लेल हमरा ककरो स किकायत ककएक रहत? मुदा, जहाँ तक नाटक क' बात छैक ,,,,, (दू सेकेण्ड चुप भ' के बाजैत छकथ) अहाँ त' जानैत छी जे हमर की स्तर अकछ आ' परमेि क' की ? ई गलती त देिता स भेलेन्ह जे ओ हमरा बीकू जाका मे जन्म नकह देलाह ।धमि आ समाज त' पकहले गीकल गेलाह आब साकहत्य आ नाटको के गीकल के बैसताह । सब पमुख भूकमका त' बीकूए सब डकाकर रहल अकछ।

पथम अंक

दृश्य - तीन

(हेमचन्द्र क' घर, विदापक्त,िक्सपीयर ,काव्लदास ,जयिंकर पसाद, नागाजुन क' फोटो दीिल पर टागल अव्छ । दीिले पर क्कछु विवि पोिक,मुखौटा सेहो राखल अव्छ । हेमचन्द्र माथ पर हाथ राव्ख बैसल छव्थ)

धीरेन्द्र क पिि ।

धीरेन्द्र - कका गोड लगैत छी,बीस क्कलो राहव्ड क दाव्ल भेव्ज देलहु । खबास आनलक क्क नव्ह?

हेमचन्द्र -- दाव्ल के मॉगने छल ?

धीरेन्द्र -- मगबा क की पयोजन ?हमर घर अहॉ क' घर ।

हेमचन्द्र -- घर त' ठामे अव्छ । सत सत बाजू राहव्ड भेजलहु ,कोनो रोल करिा क' अव्छ की?

धीरेन्द्र -- हे हे ह...... देव्तअई त' नीके छल ।

हेमचन्द्र - कोन रोल चाहैत छी ?

धीरेन्द्र -- हे हे हे विदापक्त बला रहतए रे तखन........

हेमचन्द्र -- लाज धरम उठा क' पी गेलऊ? अपन राहव्ड अपने संग राखू आ भागू एव्ह ठाम स उठू..... उठू ।

धीरेन्द्र -- (कनैत)- कका जी गोड पकडैत छी । एक बेर विदापक्त बला रोल द व्दअओ । अहॉ क पुतहू के सेहो कव्ह देव्लएन्ह। दरभंगा िली त' आइ राव्त मे देखिा क' लेल अओतीह ।

हेमचन्द्र -- कव्नया के कव्ह देव्लएन्ह ,,,,,से ककरो स पुछव्लअइ?

धीरेन्द्र --रातु क' बात छलइ यौ कका जी । आब जे नव्ह देबइ

रोल त नाक कव्ट जायत । (नेपथ्य स मव्हला आिज - हेमचन्र जी क पती माक्क्त)

माक्क्त -- धीरेन्र बाबू छव्थ । हुनका रोकब, एकटा सूइया लेिा क' अव्छ ।

हेमचन्र --कोन सूइया क' बात करैत छव्थ (धीरैन्र स)

धीरेन्र -- काव्ि माथ मे ददछिलक्ह । एकटा सूइया त काव्िए द' देने छव्लयइ दोसर आइ देबइ ।

हेमचन्र -- ई सूया कव्हया स द' रहल छी ।

धीरेन्र -- एक हपता भ' गेल । काकीए स बोव्हनी कएलहु । व्दन मे दू-तीन टा सूइया ककरो ने ककरो जररे घोव्प दैत व्छअइ।

हेमचन्र -- (धीरेन्र के डेक्तयाबैत)

हमरा कक्तया क तू सूइया भोकबहक त' तोरा हम भाला भोक्क देब' । चल' क्तकल' एव्ह ठाम स । (नेपथ्य स - हेमचन्द्र जी छी अओ)

हेमचन्र -- आबू - आबू महेि जी ।

महेि -- नाटक क' व्यव्स्था त' सब भ' गेल होयत ।

हेमचन्र -- औखन तक व्कछु नव्ह भेल अव्छ आ असंभि लावा रहल अव्छ जे व्कछु होयत ।

महेि -- चलू बाहर चलू सब व्यव्स्था भ' जेतइ ।

(दूनू पस्थान करैत छव्थ, रस्ता मे व्दगम्बर स भेट भ' जाइत छैक)

हेमचन्र -- व्दगम्बर जी हम आदमी के भेव्ज रहल छी तीन - चाव्र टा चौकी भेव्ज देबइ ।

व्दगम्बर - एव्ह बेर चौकी नव्ह देब ।हमरा ओव्ह ठाम पाहुन आव्ब रहल छव्थ ।

हेमचन्र -- पाहुन त' चाव्र व्दन बाद अओताह।

व्दगम्बर - तैयो एव्ह बेर नव्ह देब ।

(पुनः आगू बढैत छथि)

महेश - ई कांसार जका क' आदमी सभ नाटक कि बूझत असभ्य !नीच !देखियौ कोनो बीकू जाका क' आदमी भेटत आ काज भ' जायत ।देखियौ पीताम्बर कका आबि रहल छथि (पीताम्बर स) कका सुनब..... ई - तीन टा छौरा -छपाठी जा रहल अछि चौकी द' देबए ।

पीताम्बर - अओ बाबू । सभ चीज त' बडड नीक मुदा चौकी टूटि जायत तखन ? । एहने नाटक करैत छी अहाँ सब । सब पात दुबासा आ विशामित जका कूदैत रहैत अछि । पछिला बेर चौकी क' पच्चड टूटि गेल छल।

(हेमचन्द्र आ महेश पस्थान करैत छथि)

हेमचन्द्र -- देखलिअइ बीकू जाका क' विया कमि।

चौकी नहि देताह । पच्चड टूटि गेलन्हि... । राखह चौकी अपना,,,,, ओहि मे ।

महेश -- लागैत अछि एहि बेर जाता खराब भ' गेल । सुनु ने ,,,,, चलू हनुमान जी क' पणाम क' के पहिने चन्दा लिा काज िर क' दैत छी ।

(दूनू पस्थान करैत छथि)

अंक - पथम

दृश्य चारि

मक्दर क' पॉगन। ओहि मे पॉच सात आदमी बैसि के तास खेला रहल छथि । चारि टा मुख्य खिलाडी आ पत्येक के पाछू मे तीन तीन आ चारि चारि टा आदमी बैसल अछि । भदेश एकता पती दैत अछि एहि पर दू टा जोड स हसि पडैत आबि)

भदेि - नञ्ह नञ्ह हम ई नञ्ह कञ्य' चाहैत छलहूॅ ,ई गलती स वार पडल ।

कलेि -- अहा बडड चालू छी । बीबी लावा गेल त' गलती स वाञ्ह पडल ।(कुध भ' के) एना पता उठाएब त हाथ तोञ्ड देब।

भदेि -- रौ बञ्ह !चुप रह, कावि तीन तीन बेर बीबी लगेने छञ्लयउ।याञ्द छओ कि नञ्ह ,आई फेर लगेबओ।

'बीबी को लगाया जाएगा' ।(ससरि)

कलेि -- 'फासी पर चढाया जाएगा' । (ससरि)

भदेस-- बीबी को लगाया जाएगा ।

हेमचन्र -- कि अओ बाबू सब । एना जे एक दोसर बीबी लगबैत रहबए त' षि काज कोना हेतए।

(कलेि भदेस क' ञ्दञ्स ताकैत छञ्थ,दुनू बेमिजिका मुसकञ्या दैत छैक)

कलेि -- अओ भदेस जी ताबत एक बेर चूने-तमाकू चल ञ्दअओ । हेमचन्र जी सेहो अएलाह, कनेक ञ्हनको बात सुञ्न लेल जाओ ।

महेि - आई नाटक अञ्छ । आ बात ई जे रपया के व्यञ्स्था एकदमे नञ्ह अञ्छ से हमसब सोचलहूॅ जे गाम स कञ्छु चन्दा चुटकी भ जाए ।

भदेि -- एखन त हमसब एतञ्ह छी ।

खेल बडड वि्टकल स्टेज मे अञ्छ । औखन नञ्ह जाएब। कलेि जी के पाञ्स छोडएि क' अञ्छ । सॉझ मे अहॉ स भेट क' लेब ।

कलेि - ई कि पञ्स छोडएताह? । औखन त' एके बेर लगेञ्लएन्ह ,,,,,,,,,,बेस अहॉ हमरो साथी द' ञ्दअओ । नाटक क' बाद हम

कायल लेब ।

हेमचन्द्र -- ठीक छैक अहॉ स हम बाद मे ल' लेब मुदा आओर व्यवस्थिा सब कोना हेतए । आई छोडू तास-ि‍ास । आउ चलू मंचे क' पास ।

कलेस - हमसब सॉझ मे ओकह ठाम पहुेच जायब । अहा सब चलै-चलू। (ठोर मे तम्बाकू राखैत छी) (हेमचन्द्र आ महेि‍ वदिा होइत छथ्थि । रास्ता मे एकटा ि‍राबी - सुदि‍ि स भेट होइत अछ, सुदि‍ि लट पटा क बाजत रहल अछ।

सुदि‍ि -- हयौ हेमचन्द्र बाबू । चकल जाउ घर बैसू। आब के नाटक करत आ के नाटक देखत । जाउ चकल जाउ ....।सभ अपन अपन काज मे मगन अछ आ अहॉ नाटक लेल कफकया रहल छी । जाउ चकल जाऊ।

महेि‍ - चलू कका जी चलू।

हेमचन्द्र -- ओ एकदम सत कहह रहल अछ ।

(हेमचन्द्र आ महेि‍ पस्थान करैत छथ्थि । कछु आगॉ बढला पर दू टा युवक मजीत आ मदन अलैत अछ । मजीत मुेह लटकेने एकात भ' गेल अछ आ मदन नजदीक भ' जाइत अछ।

मदन -- चचा बात ई जे मजीत कहलक जे हम रोल नही करब।

हेमचन्द्र -- कएक ने करत ओ रोल ?।

मदन -- ओ कहैत अछ जाबत एक बोतल क' व्यवस्थिा नहह हेतइ । हमर कंसेटेि‍न नहह बनत ।

हेमचन्द्र -- बनइ ि‍ नहह बनए। बोतल त' नहहए एतए।

महेि‍ -- अरे रकू चचा जी । सुनह मदन ,एमहर आब' । मजीत के कहह दहक जे सॉझ मे व्यवस्थिा भ जेतइ। (हेमचन्द्र ओकह ठाम स पस्थन करैत छथ्थि)

महेि - आर कि कहकत छैक बताबह ।

मदन -- यकह दू टा बाई जी भ' जेतइ तखन आर बेसी आनन्द......

। बेसी मजा..... अहाॅ बूझते छी ।

महेि -- बाई जी आब एक्कखन कत' स आएत ।

मदन -- अहाॅ पैसा कहअ हम आ मजीत बखरी चकल जाएब । चाकर घंटा क' अन्दर दू टा टंच बाइ जी क' व्यिस्था भ' जायत।

महेि -- हमरा मून होइत अकछ हमहू चली।

मदन -- एकदम चलू । आहू अपन पसन्द बताएब । (महेि,मदन आ मजीत जाइत छकथ)

हेमचन्र(सिगित)-ई कोन नाटक भ' रहल अकछ हमरा गाम मे । एकह नाटक स दूरे-दूर रहल जाए ।कमा करथु विदापकत आ उगना । आब कस्थकत हमरा कयंतण मे नकह अकछ ।

अंक - कद्वतीय

पथम दृश्य

(बखरी बजार क' रौनक । दू टा पान िला घूकम घूकम पान बेकच रहल अकछ तीन टा िराबी बैकस के काकम रहल अकछ।)

दलाल -- कैसा चाकहए बताईए ? पंजाबी, कसन्धी ,बंगाली कबहारी, गुजराती ,यूपी िली बताईए ,,,,बताईए ,,,,,,,िमाइए नही ।

महेि -रौ बकह ई कि भ' रहल छैक ?

हमरा त' डर भ' रहल अकछ ।

मदना -- डरबा क' कोन बात । हम सॅग छी ने, हम एकह ठाम चाकर साल स आकब रहल छी ।

महेि -- िह भतीजा िह ।

दलाल -- अरे बताब’ भइ । िरम काहे ले हो जेहन पैसा ओहन मजा । फुल मजा ,फी मजा ।

मदन -- चलू ने देखैत छिऐक ।

महेि -- तू जाह । हम एतइ छी । हमरा आबि के बताबह।

(मदन अन्दर जाइत अछि आ महेि अन्दर िदस कान आ ऑखि गडइबा क पयास करैत छथि)

मदन -- आर केओ निह अछि की?

दलाल -- अरे इस पीक टाइम मे जो िमल रहा है बस बुक कर लीिजए और िफर हमारी जानो मे क्या कमी है।

कमर देिखए....... देिखए

(बाहर ई सुिन महेि उछिल पडैत अछि)

मदन -- अहाॅ क’ नाम ?

नतर्की पथम -- मेमामािलनी ।

(बाहर महेि खूब पसन होइत छिथ)

मदन -- अहाॅ क’ की नाम ?

नतर्की िदतीय -मेशया राय

(बाहर मे महेि उछिल पडैत अछि)

मदन -- अहाॅ क

नतर्की तृतीय-- नीना कुमारी ।

मदन - अच्छा हम बाहर जा रहल छी । पूिछ के बताएब ।

दलाल -- सुन’ एडिास द’ के बाहर िनकल’ निह त’फेर हमर दोष निह ।

मदन -- ठीक छैक ई िलय’ ।

(मदन बाहर आिब अछि)

महेि -- ओ सभ कत' रकक गेलीह।

मदन -- तैयार भ' रहल छथ्थ।

महेि - आर सभ ठीक ने ।

मदन-मतलब ?

महेि-मतलब ई जे -----(बजबा मे लटपटाइत छथ्थ)

मदन -- हाँ ठीके अछ्छ । मुदा मेशया राय क' ऑख्ख कने कमजोर छक्ह । मेमामाक्लनी के बच्चे मे लकि मार्र देलकक्ह, ते ओ नाक्च नक्ह पाबैत छथ्थ ।

महेि -- आ नीना कुमारी ?

मदन -- हुनका लेल स्पेि रमाल चाही । ओ बात -बात मे कान' लागैत छथ्थ । कानैत - कानैत पोटा बह' लागैत छैक ।

महेि-जखन ई नाचि नक्ह करतीह,तखन ओक्हठाम कथी ल' जेतीह ।

दलाल- अरे भाई । एतना देक्खएगा तब तो हो गया । हमसे कोपरेट कक्रए हम भी आपसे कोपरेट करेगे । जो चाक्हएगा हम भी पीछे नही हटेगे ।

(तीनू नतक्की: एकटा हारमोक्नयम िला , एकटा ढोलक बला, बडकी पेटी क साथ बाहर क्नकलैत अछ्छ)

मेमामाक्लनी - (महेि के कनखी मारैत)

न' न' क्नयौ।(नक्कयाबैत) सब का समान उठा लीक्जए। (तीनू गमीण तीनू नतक्की क समान उठबैत अछ्छ)

अंक -क्द्वतीय

दृश्य-क्द्वतीय

उदोषक -- आइ 'चीनी क लडडू' नाटक मंक्चत होमए िला छल।

आइ लडडू रसगुल्ला मे बदलि गेल अछि । आ अछि रस कक्स कक्स अहाँ सब के मुँह मे जायत ।

मदन - कि नाटक भैरवी गीत स शुरु कएल जाए?

मजीत -- अरे आइ त' तीन - तीन टा भैरवी आइल छथि । आइ भैरवी गीत क' कोन काज ।

महेश -- एना करबहक त' गाम क' लोक सब बिगड़ि जएथुन्ह । तखन फेर चन्दा चुटकी कोना हेतए ?

मदन -- ठीक छैक । धीरेन्द्र स कहियौ जल्दी स ओ भैरवी गीत समाप्त करए ।

(धीरेन्द्र गाबि रहल छथि । भैरवी गीत क' बाद मेमामालिनी मेशया राय आ नीना कुमारी आबैत छथि आ बेतरतीब नाच आ गाना गाब' लागैत छथि ।नाच मे अश्लील मुद्रा क' खास विनियोग ।)

हेमचन्द्र -- दैखियौ त' महेश हमरा गाम मे केहन नर्तकी के उठा आनलक ।ताल -माता स एकरा कहियो भेट नहि छैक ।

कलहेस -- एना नहि कहियौ हेमचन्द्र जी । मेमामालिनी क' ऑखि क' चंचलता बेजोड अछि ।

भदेस -- मेशया राय हमरा हृदय मे विक्षोभ उत्पन्न क' रहल छथि। लागैत अछि जे ओ हमरे लेल नाचि रहल छथि, ओ हमरा बजा रहल छथि ।

मदन -- कि कका ? ठीक रहल ने ,खूब डोलि रहल छी ।

भदेस -- ह बौआ मस्त क देलहु।

मदन -- किछू ईनामो - बकसीस भ' जाइ।

भदेस -- ई लिय' एक सौ एक ।

(हेमचन्द्र तमतमा क' उठि जाइत छथि)

उद्घोषक -

एहन कुिल नृत्यागना क नृत्य देखख कलेस जी भाि - विभोर भ' गेल छथि आ भदेस जी आहाद स बेहोि । बेहोिी स पहिले ओ एक सौ एक टका द' गेल छलाह । कलेस जी आ भदेस जी के नृत्यबोध क' अभिनंदन - बन्दन ।

रंवजि करो जो हमसे भी

गुलाब को ना मायूस करो

हम उठते वारते रहते है

ये दो दिन मे मुरझाते हैं।

(दिक्ि मे से एकटा उठि के नीना कुमारी क' उठा के भाग' चाहैत अछि ।

मं्च पर अव्यिस्थिा क' माहौल ।

उदोषक -- दिक्ि क' उयसाह उफान पर अछि आ दिक्ि सेट परसेट पक्ावि या द' रहल छथि । अथिई जे गुलाब के मायूस हेबा क जररी नहि छैक । मीना कुमारी के मंच पर स बाहर ल'जाए िला उयसाही दिक्ि क' पहचान भ' गेल अछि । घबराउ जूनि, नाटक एहिना चलिा रहत ।)

दलाल उधोषक स - देखिए सर हमको कोपरेट करिए ,हम भी पूरा - पूरा करेगे । आपको जो चाहिए हम पूरा देगे ।

उदोषक -- हमरा अहॉ स किछु नहि चाही । अहॉ अपन काज कर आ हम त कए रहल छी ।

(तािते मंच दिस तीन टा मोट - डॉट युिक क पिि । पीके ,खाके, जाके गाम क' तीन टा उदण्ड युिक)

मजीत -- कि माई ?

पी के -- गॉि मे ई नया -नया बात विचार सभ ि्र भ' गेल आ हमरा जानकाािरये नहि ।

मजीत-- भाई अचानक ियिस्था भ' गेल ।
खाके -- बन्द कर ई ताम -झाम आ उतार हरमजादी सब के। गॉि के रण्डी -खाना बना के राक्ख देलक।
मजीत -- सुनु जाके भाई क्हनका सभ के ल जाउ।कावि सब बात - क्यिस्था भ' जेतई।क्हनका सब के दू क्दन राखल जेतइ (तीनू कान मे क्कछु बक्तयाइत अक्छ)
(ओमहर स धीरेन्र क' पिि)
धीरेन्र--महेि जी िहि । बडड नीक क्यिस्था ।
हेमचन्र जी की करताह ियिस्था । अहॉ क क्यिस्था मे जे झंकार अक्छ से पक्हले एक्हे गॉि क मंच पर कक्हयो नक्हं रहल।
महेि-- अहॉ कोन रोल करब ?
धीरेन्र -- जे खूब टॉसगर होइ सएह देब । अहॉ क' भाबहु सेहो देख' आएल छक्थ । आ दू क्कलो घी हम कावि भेज देब ।
उधोषक -- आब मंच पर रंग चेतना मंच क पक्सध गायक हक्रिचन्र जी आक्ब रहल छक्थ ।
(हक्रिचन्र जी गीत गाक्ब रहल छक्थ । हुनका स मनीत ,महेि आ मदन धका-मुकी करैत छक्थ ।)

अंक- क्दतीय

दृश्य-तृतीय

(नतकी सब के ठहराबए िला घर । अक्यक्स्थत क्बछाक्न सब । क्बछाक्ने पर हरमुक्नया ढोलक राखल अक्छ । तीनू नतकी क्िकास क' लेल जेबा क' तैयार छक्थ । हुनका संग लोटा ल'के जेबा क' लेल तीनू क्कि ार मे संघषि होइत छैक)
अगेि -- हम पक्हने लोटा पकडलहु ते हम ल' जायब ।

धरमेि -- तीनू के हमरे पपा आनलाह ते हमही ल' जायब ।

रतेि -- हमर बाबू सभ स बेसी चन्दा देने छथि ते हमर सोलहोड हक ।

दलाल - देखिये भाइयो आप लोग लड़िए मत एक - एक ठो तीनो के साथ चले जाइए । आखिर आप के मॉ के उमर की है तीनो ।

तीनो एक साथ - कि बाजले रे हरामखोर (दलाल दिस झपटैत अछि)

तीनू नतकी तीनू कािर क' सामने आबि जाइत अछि आ गाल - केि पर हाथ दैत अछि । तीनू कािर ित भ जाइत छथि आ एक -एक टा लोटा उठा विदा भ' जाइत छथि । ओहि ढाम महेि आित छथि आ व्यगता स घूमि रहल छथि)

महेि -- कत' चलि गेलीह।

(ओमहर स मदन आ मजीत सेहो आित छथि ।)

महेि -- अरे मदन अहॉ कि कर' आयल छी । अहॉ हमर भतीजा भेलहु । जाउ एत स । जखन हम छी त अहॉ क' कोन काज ।

मदन -- अहॉ क दू-तीन बेर देखलहु अछि भतीजा -भतीजा करैत । जी सम्हािर क' बाजू।

महेि -- अहॉ त व्यथे नाराज भ' रहल छी रहल छी । अहॉ क बाबा हमर कका लागैत छथि ।

मंजीत - सुनु महेि जी ई कका -भतीजा फिरयाएब: जखन मदन के वियाह हेतेन्हि ।औखन हम सब पाटनिर छी , तीन - चािर दिन ििते रहू । एखन हम सभ एक छी ।

मदन -- बूझू त बखरी मे कंठ स बकार नहि खुलैत छलिन्ह एत' कका बनि बैसल छथि ।

मजीत -- अहे चुप रहू मदन । ठीक छैक अहाँ के जे बक्तायेबा क' अछ से बक्तया क्लय' महेि जी । हमसब दस क्मनट बाद आबैत छी ।

(तीनू नतर्की आ तीनू क्कि ार आि त छक्थ । महेि जी मुसक्कयाबैत छक्थ ।)

महेि -- ठीक रहलए ने । कोनो क्दक नक्ह ने मेल । बौआ सब अहाँ सब जाउ ।

धरमेि -- आ अहाँ क्क करब ?

महेि --हमरा एकटा काज अक्छ ।

तीनू -- ठीक छैक अहाँ काज कर, हम बाद मे करब ।,,,,,,नक्ह नक्ह बाद मे आयब ।

(तीनू जाइत छक्थ)

महेि -- सुनू हेमा जी । अहाँ के हमही आनने छी । अवालो बेर आनब । ई मदनबा आ मजीत क बात मे नक्ह आयब ।,,,,, गाँि मे सबसे बेसी जमीन हमरे......तीन टा हाथी आ बारह टा घोडा अलगे.....

(नेपथ्य स - रे महेिबा, रे महेिबा केिार खोल । पीके,खाके आ जाके क' पिि । तीनहू आक्बते महेि पर टूक्ट पडैत अक्छ,नतर्की भगबा क' पयास करैत अक्छ) ।

खाके - हमरा स क्बना पूछने तू एक्ह ठाम क्कएक बैसल छे ।

पीके -- आजुक व्यक्स्था जल्दी कर ।

जाके -- जल्दी स भाग नक्ह त' हडडी तोक्ड देबओ ।

महेि -- भाई क्बसक्र गेक्लयइ ,हमहू आही संगे बैदनाथपुर हाईस्कूल मे पढने छक्लयइ एक बेर ,,,,

खाके -- चुप बेहूदा । बात स तौ नक्ह मानि ।

मेमामाक्लनी -- अच्छा महेि जी आप बाद मे आइएगा।

अंक-तृतीय

पथम -दृश्य

(राम पिि क' घर। ओक्ह ठाम हक्रिन्र सेहो िसल छक्थ)

राम पिि - जखन बूझले छल जे लुच्चा - लफंगा सब रण्डी नचा रहल अक्छ तखन अहाँ क जेबा क चाही ?

हक्रिन्र -- अपन गाँि छल सोचलहु जे हमरा के बजाओत। अपन घर छी ,अपन मंच छी ।

राम पिि - क्कएक ने क्बसार, क्हमार, बकबल, समरल सब जाक्त क' संघ बना के एकटा संस्था बनाओल जाए ।

हक्रिन्र - संस्था क्क करत ?

राम पिष -- ओ सब दुगा पुजा करैत छक्थ, क्कएक ने हमसब काली पूजा करी ।

हक्रिन्र -- बीकू आ छीकू के एकदम छाँक्ट देबइ ?

रामपिि -- एखन बजेबइ ;तैयो नक्ह आयत

(नेपथ्य स -- रामपिि चा छी यौ)

राम पिि -- ह ह मनोज आहि ।

मनोज -- गोड लागैत छी । पंजाब जा रहल छी, सोचलहु जे भेट करैत जाउ । आब

माए - बाबू के देखक्नहार आही सब ने छी

राम पिि --

गाम स जा रहल छी । जाउ । जे धरती पेट भरए ओएह माँ क्थक । हमसब त' सौचैत रही एकता संस्था बनबी जाक्ह मे अहाँ क' पमुख भूक्मका रहए । मुदा अहाँ त जा रहल छी ।

(मनोज पस्थान करैत अक्छ)

राम पर्ि -- जनार क' भजन आ कठघोडि नाच मे मनोजि क' जोडक कलाकार एक्ह परोपटा मे नव्ह छैक । मनोज क' बाद रामेसर क' स्थान छैक ।

हव्रचन्र -- रामेसर सेहो जा रहल छव्ि ।

रामपर्ि -- हे मॉ क्मव्थले । अपन व्धया- पुता के कव्हया घव्र क्वालमाबैत रहब ।

हव्रन्िर -- समस्या त' अव्छए ।

(चाव्र - पॉच टा युकि क' लाठी डंडा क' साथ पर्ि)

राम पर्ि -- क्क हौ मुक्खन , कथी क' तैयारी छैक ?

मुक्खन -- हमसब चाहैत छी जे अपन सब जाव्त क्मव्ल के एकटा यूव्नयन बनाबी । हमसब काली पूजा करी जे हमरा काली जी व्दव्स देखत, ओकर ऑव्ख क्नकाल लेिए । राम पर्ि -- हओ मुक्खन एखन ऑव्ख - कान क्नकलि क' जररी नव्ह छैक ।

(अन्य युकि सब मुक्खन व्जन्दाबाद क' नारा लगब' लागैत अव्छ । रामपर्ि अपन मुह नीचा क लैत छव्थ)

मुक्खन -- दीपालिी व्दन हमसब िले नाटक करब । हम पात क' चुनाि क' रहल छी ।

हव्रन्िर -- िले कोने नाटक भेल । वव्दापव्त नाटक राखू ।

मुक्खन -- वव्दापव्त खेलत बीकू सब । वव्दापव्त के हमसब नव्ह जानी ।

अंक-तृतीय

दृश्य -व्दतीय

(मुक्खन क' घर ओव्ह ठाम पात - पव्रचय आ व्रहसलि भ रहल अव्छ)

मुक्खन -- गब्बर क्सह क' रोल क्हमेि तोरा दैत क्छयओ ।

रमेि -- ह ह बकलि जाक्त क' लोक सब आब गबबर क' रोल करत ।

क्हमेि-- मुह सम्हाक्र क बाज । क्क क्बसाक्र जाक्त क औरत सब कलाकारे जनमाबैत अक्छ । (रमेि आ क्हमेि गुथ्थमगुथ्थी भ' जाइत छक्थ । बडड मुक्श्कल स हुनका हटाओल जाइत अक्छ)

परेि -- मुक्खन जी कका एकता क्टकट देने छक्थ । (मुक्खन क्टकट पक्ढ रहल अक्छ)

मुक्खन -- तो कते चन्दा देबहक ?

परेि -- बाबू एक सौ एकाक्न देने छक्थ ।

मुक्खन -- तौ यक्द दू सौ एक देबहक त' हम तोरे गब्बर क' रोल देब' । (धीरे स कान मे)

परेि -- ठीक छैक हम द' देब ।

मुक्खन -- रे मतर , बसन्ती क' रोल तू कर ।

रमेि -- ह ह क्हमार जक्त क छोरा सब रण्डी क' रोल मे बड क्फट बैसैत दैक ।

मतर -- रइ रमेिबा मुेह सम्हाक्र क' बाज तूे त' अपने गॉया छे । क्थयेटर क' हरमुक्नया मास्टर तोरा राखने रहओ । सब जनैत छैक ....

(रमेि आ मतर हाथम - हाथा क' रहल छक्थ तखने धीरेन्द्र क' प्रवेि)

धीरेन्द्र -- बीस क्कलो राहक्ड क' दाक्ल नेने आयल छी । नीचा मे राखल अक्छ (मुक्खन क कान मे)

मुक्खन -- कोन रोल लेब ?।

धीरेन्द्र -- हम जय बनब ।

मुक्खन -- जाउ जय बनू आ विजय कर ।

(एकटा और व्यक्ति प्रि करैत छथि ।)

ओ मुक्खन के ईिारा स बजबैत अछि ।

समरेि -- कका कहलक्नि जे ठाकुर क' रोल हमरा क्दय' । एकटा क्चटी भेजने छथि ।

(मुक्खन क्चटी ल' के पढ' लागैत छथि)

वाय मुक्खन !

िुभाििष । समरेि के भेक्ज रहल छी । आगाॅ चुनाि आबा रहल अछि ओक्ह मे अहाॅ क लेल समरेि खूब काज करताह । सब छीकू जाक्त क' बोट अही के क्मलत । छीकू हजारो साल स युदक्नय जाक्त रहल अछि । आि अछि समरेि के व्यक्त्तयि क' अनुकूल रोल अहाॅ देबइ । हमरा विचार स ओ ठाकुर क' रोल मे क्फट रहत ।

अहाॅ के

धन्येि

मेुक्खन -- ठीक अछि समरेि बाबू अहाॅ के हम ठाकुर क' रोल देलहु ।

(अन्य कलाकार स) -- ठीक छैक ररहसलि कएल जाओ ।

(पक्हने ठाकुर आ गब्बर आबैत छथि)

अपन - अपन संिाद याक्द क' क्लय'

दूनू -- संिाद त' यादे अछि ।

गब्बर -- हम बूक्झते रही ,तो जर र एबही.......तू क्क तोहर बापो अइतओ ।

ठाकुर-तू बूझैत छे ने हम क्कएक आएल छी,हम तोरा बाप स भेट करेबओ ।

गब्बर -- फडफडा जूक्त ठाकुर । सब फरफरी एके लाक्त मे तोरा क्तकाक्ल देबओ ।

ठाकुर -- रौ बक्ह ! समरल जाक्त क' कलाकार हमर फरफरी क्तकालत ।

(दूनू एक - दोसर के पकक्ड लैत छैक आ मुकम - मुकी िर भ' जाइत छैक)

मुख्खन -- क्क भेल समरेि ?एना क्कस्क क्कएक िधि मे आक्ब गेलहु ।

समरेि -- ई हमरा स्क्कुले स परेिान क' रहल अक्छ । स्क्कूल मे कहैत छल फडफडा जूक्त ठाकुर ।

मुख्खन -- ठीक छैक व्रहसक्ि क' कोनो काज नक्ह । हम पदा क' पाछू स बाजब आ अहाँ सब ओकर नकल करब ।

अंक -तृतीय

दृश्य- तृतीय

(हेमचन्द्र क' घर । ओक्ह ठाम परमेि ैसिल छक्थ । तखने मदन आ महेि पिि करैत छक्थ)

महेि -- कका गोड लगैत छी ।

हेमचन्द्र -- भगािन`अहा के सदबुक्द्ध देक्ह ।

महेि -- कका सुनक्लयई क्क नइ , कावि सब ओ सब क्मक्ल के िािले खेक्ल रहल अक्छ ।

परमेि -- त' कोन अनथिभेल ?

मदन -- बूझू त' एक्ह विदान क' गाम मे जकरा जे मून होइत छैक से क' रहल अक्छ ।

हेमचन्द्र -- अहाँ क' रण्डी सब अनथिनिइ केने छल ?

महेि -- मुदा नाटक त' विदापक्त भेल छलए ने । ओ त' बीच बीच

मे कनेक मोन बहलेि क' लेल छल ।

परमेि -- दोसर लोक सब मून बहला रहल अछ त' अहा कएक परेिन छी (एहि बीच मे खाके ,पीके, जाके आिब छथ)

खाके -- अहाँ सब चूडी पहिरने रहू ,मुदा हम ई नहि होमए देबए ।

परमेि -- कि करबए अहाँ ?

जेके -- हम मंच के रक्त रंजित क देबए ।

हेमचन्द्र -- जकरा अहाँ रक्त रंजित करबए से अहाँ के छोडत ?

जाके -- चलू भाइ ओतइ चलू । देखैत छियइ के माई क' लाल स्टेज गाडई क लेल आिब अछ

(कलेि आ भदेस पिि करैत छथ)

कलेि -- बूझलहू हेमचन्द्र बाबू ई बकलि सब भरि राित नाच करत आ सेर - सेर भरि मूतत।

भदेि -- बूझू जे जखन जखन पूर्किया हिि बहत ने, ई भरि अगहन तक महकैत रहत । हमरो इएह विचार जे नाटक नहि होई ।

पमेि -- अहाँ क' कि विचार जे कसकत्ता स रण्डी आिए?

कलेस -- ह नजदीको स काज चलत ।

हेमचन्द्र -- चुप रहू । बारहो महीना तािि खेलत के पखेरी - पसेरी भरि भूतैत छी केओ टोकलक अहाँ के ?

भदेि -- हओ ! कलेि जी चलू ई सब हारि मािन लेलाह । चलू जे भ' रहल छैक ओहिए मे किछु जुगाड पानी कएल जाए।

(किछ दूर हटला क' बाद कलेि -भदेि बतियाित छैक)

कलेि -- चलू ने मुकखने के कहबए ।

जे करब से कर , मुदा आन तीन-चािर टा भगजोगनी के ।

भदेि -- आर की ?

कम स कम बखरी िला त' किवि ते आबए क' चाही ।

अन्हरी ,बक्हरी सब चलतय ।जतेक चन्दा चुटकी हेतए हम सब द’ देब ।

अंक -तृतीय

दृश्य-चार

रामपरि क’ घर । अकेले मे किछु गुनगुना रहल छथि ।

डूबल भरि मे नैया

सम्हार मॉ

केओ नजर नहि आबए

सम्हार मॉ

रास्ता विकिट अछि

बाट न सूझए

आबू दीप देखाबू

सम्हार मॉ,,,,,,,,,,,

(हेमचन्द्रक’ परि)

हेमचन्द्र - के सम्हारताह । जगत जननी त’ मिथिला के बिसरि गेलखिन्ह । गरीबी त’ पहिनहु छल मुदा एहन सास्कृतिक हैजा कहियो नहि फैलल ।

रामपरि -- कका क्षमा कर । ककरा पता छल जे कनि कनि टा बात एते विषबेल बनत ।

हेमचन्द्र अहॉ जावा गेलहु, तखन हमरा के रोकत ?

रामपरि -- कका आब जे आदेि देबए से हम करब ।

(परमेि परि करैत छथि)

परमेि -- रामपरि छी अओ ?

रामपरि ‘-- परमेि आबह । आइ चारि साल बाद तो हमरा दलान पर अइलह। तोरा देखि हम फेर जबान भ’ गेलहु ।

परमेश -- पुरनका बात सब बिसर । हमरो ध्यान नहि रहल आ अमुख्य चीज मुख्य बनइत चलल गेल

हेमचन्द्र -- छोडू पछिला बात सब । आब ई बाजू जे कोन नाटक खेलल जाइ ।

रामपति -- ''उदयनाचार्य' नाटक खेलल जाइ ।

हेमचन्द्र -- अहाँ कोन रोल लेब ।

रामपति -- हमरा जे देब से हम करब , ओना आचार्यक' भूमिका मे परमेश फिट छथि, हमरा सारंग बला रोल द' दिय । बड तेजस्वी बौध भिक्षु अछि ।

परमेश -- आब हमरो रोल क मोह नहि अछि । सब स बेसी महत्वपूर्ण अछि ओकरा जीनए ।

(रामपति उठि के परमेश के गला लगबैत छथि हेमचन्द्र उठि के दूनू मे मिलि जाइत छथि । ओमहर धीरेन्द्र हाँफैत आबैत छथि ।)

धीरेन्द्र -- कका - कका मुकुन्द आ खाके मे जबरदस्त मारिपीट भ रहल अछि ।

हेमचन्द्र-- होमए दियओ ।

रामपति -- मर' दियओ सब के ।

परमेश-- धीरेन्द्र जी जनचेतना मंच फेर जीवित भ गेल अछि । खूब तैयारी कर ।

धीरेन्द्र -- हमरो तैयारी पूरा अछि । एहि बेर राहुल खूब फरल अछि । एक मून राहुल भेज देब ।

(तीनू हसि दैत छथि । रामपति गीत गाबि रहल छथि आ प्रकाश धीरे धीरे क्षीण होइत अछि।)

ब्टद्लू जी (व ि कुमार झा)

जन्मद्भनक मधुर मंगलकामना ब्टद्लू जी ।बहुत द्दन सँ अहाँ से बात नइ भ' रहल अद्ध आ हम पयासो केलहुं त' अहाॅ व्यस्त रही ,कखनो टाटा ,कखनो भुनिशरि ।आइ अहाॅक जन्मद्दन अद्ध आ अहाॅक सभ सपिन सभ पक्ताजा सामने होयत ।भगिनि सँ हमर सभक पानचा क्क अहाँक सब कामना फलीभूत हो ।मैक्ताली भाषा क एकटा पाठक होयबाक नाते हमर ई कामना क्क अहाॅ सब तरहे मैक्ताली साक्तत्य के समहि करी ।एकटा कवकि पुत होयबा क नाते जे दाव्यति अहाॅ क छल से अहाॅ लगभग पूरा क देलहुं ,मुदा एकटा लेखक होयबा क नाते अहाॅके बहुत क्कछु करबा क अद्ध ,ने केलि माता मे बक्तक गुणात्मकता मे सेहो ।

अहाॅक कविता मे बूर भैया क कविता क छाया देखाइत अद्ध ,ई जत्तो सिभाविकि छैक ,ओतबे अहाॅ लेल अपक्तहायचअद्ध क्क अहाॅ अपन रस्ता बनाबी ।जे ओइ पीढीक दुख छैक ,ई ओकरे छैक आ ओ पीढी जे व दपक रयन केलकइ ,सेहो ओकरे रहतइ ,नकिा पीढी के बोी निन्मेषी बनए पडतए ,तखने ई ् योक्तारीशरि आ व्ि ापक्ताक भाषा अपन पासंवाकता बनेने रहतइ ।य् वा सभ भाषाक अपन अपन संस्कार होइत छैक आ ओकर ररनात्मकता सेहो इक्तहासक कोव्ख सँ कक्कल रहल छैक ,तैयो लोकल क्कछु नइ रहलइ ।

अहाॅक आलोरना भाषा तथ्यात्मक आ कणचात्मक रहैत अद्ध ।तथ्यात्मकता य् वा पामावाकताक अंग बक्तके आबैत अद्ध ,तनावा कखनो कखनो ओ पाठ के बोव्झल सेहो बनबैत अद्ध आ तथ्य क बोझ तखन आर बोी भ' जाइत अद्ध ,जखन ओ केलि जानकारी क पदा चक लेल आबैत अद्ध ।जेना 'गामक व्जनगी' पर क्लखैत

काल अहाँ खूब रास कहानीकारक नाम क्लखैत छी । बात केलि अहीके नइ अछ ,पाय :मैक्ाली मे नामक गोला रलैत छैक ,आ लेखकक भाषाक सभाि ,ओकर बनाटि पर कम विरार होइत अछ ।तक्हना तुलनात्मक आलोरनाक मतलब लेखक लोकक्त दूटा कतोब ,लेखक या उरणाा सँ बूझैत छक्ान्ह ,तुलनात्मक आलोरना के सही बाट देखयबाक वज्मेरिरी अही सन लेखक के अछ ।ऐक्ताहाक्सक आलोरना एखनो महतिपूणचअछ ,कएक त' मैक्ाली साक्हत्यक इक्ताहास आ विभन्न युग ,लेखक ,केत आ पर्ढिक कायचभागक सही सही मानक्रत अखनो हमरा सभक समक नइ अछ ।समाजा ास्तीय आ उत्तर आधुक्नक आलोरना क बाते छोड़ू ,एकर त' नामोक्ला ान अखन मैक्ाली मे नइ अछ ,मुदा अहाँ सन उ्ोगी व्यक्त हमरा समक छक्ा ,ते आााक्ति छी ,आइ ने कावि सब रीज अनुकूल स्ान पर मानक रप मे रहत ।

आइ बस एतबे ,जन्मक्दनक फेर स मंगलकामना ।अहाँ क्ररायु हो ।

ॉ. कैलाा कुमार मशि (८ फरबरी १९६७-) ददल्ली वशिव्ालयसँ एम.एस.सी., एम.फलि., “मैथलिी फॉकलोर सकिर एण्ि कौवरिा न ऑफ द फॉकसाग्स ऑफ मथलिा: एन एनेललटकिल स्टिी ऑफ एन्रोपोलोजी ऑफ ्युजकि” पर पी.एर.िी.। मानि अधकिार मे स्नातकोिर, ४०० सँ बेिी पबन्ध -अंगेजी-हन्दिी आऽ मैथलिी भाषामे- फॉकलोर, एन्रोपोलोजी, कला-इतहिास, यातािहिित आऽ साहत्यि वषियपर जनलि, पत्रकिा, समाररपत आऽ स्पादति- गन्थ सभमे पकावित। भारतक लगभग सभ सास्कतृकि केत्रमे भमण, एखन उिर-पूिीि मौखकि आऽ लोक संस्कतृकि सािगीन पक्षपर गहन रपसँ कायरति। यूनविसरिटी ऑफ नेबास्का, यू.एस.ए. केर “फॉकलोर ऑफ इण्ियि” वषियक रेफ़ेरी। केन्द्रीय हन्दिी नदिेालयक पुरस्कारक रेफरी सेहो। सय सँ ऊपर सेमीनार आऽ किरिॉपक संरालन, बहु- वषियक रार्ष्ीय आऽ अन्तरार्ष्ीय संगोषि्मे सहभावाता। एम.फलि. आऽ पी. एर.िी. छातके ि्ा-नदिेक संग कैलाा जी वजिटिंग फैकदटीक रपमे वशिव्ालय आऽ उच्र-पाि्क्ति पाप्त संस्नानमे अध्यापन सेहो करैत छथि। मैथलिीक लोक गीत, मैथलिीक ि्हकन, व्ि्यापति-गीत, मधुपजीक गीत सभक अंगेजीमे अनुिाद। - *डॉ० कैलािि कुमार मशि कतेक पदेिमे मानिििस्त्रीय फील्ड किकिि िमिमे घूमल छथि। फॉक म्युजकि ऑफ मथिलापर पी. एच.डी. छथि आ मथिला चतिकलापर हनिकर आलेख एहि वषियपर सभसू नीक पबन्ध मानल जाइत अछि।*

लघुकथा- पण्डिताइन

राघबक मोबाइल केर घंटी बाजि उठलनि। देखैत छथि जटा फोन कऽ रहल छनि। फोन उठा हेलो कहलथिन। ओमहर सू जोिं मे मुदा एक अव्यक्त पीडा सू भरल शिब्द: “हर हर महादेब राघब जी। सब समाचार नीक ने?”
राघब: “हर हर महादेब! कहल जाओ। जय महाकाल?”
जटा: “सब किछु चलि रहल अछि। जिनगी जीब रहल छी। कािि हरे कृष्णाक दोसर बरखी छनि। अहा सू बहुत नेह रखैत छलीह। सोचल नौत दऽ दी।”
राघब: “ओह! दू बरख भऽ गेलनि अनुराधा के अहि नशर काया के त्यािग अनशर जगत मे पििि केना! समय कोना दौडल चलल जा रहल छैक?”
जटा: “हा राघब जी। अहा के की कहू, अहा सियं विदान छी। सब बात बुझैत छियैक। आचायिमिदन सेहो सुतले रिह गेलाह! िासरे सभी बारी-बारी!”
राघब: “सही कहैत छी। यएह छैक संसार। लोक जनैत अछि जे ओकरा चिल जएबाक छैक तथािप झूठ-फरेब मे, अपन आन मे लागल रहैत अछि। छोडू इ बात सब। हम कािि अििशय आिब जाएब।” इ कहैत राघब फोन काटि देलथिन।
आब राघब जटा आ अनुराधाक दुिनया मे, ओिह छोट सन संसारक इितहास मे चल गेलाह। समय जेना घूमए लगलनि.....

जटाक जन्म पथम पुतक र प मे एक महादिरर मैिथल बाह ण पिरिार मे भेलनि। नामक अिरिरक ओिह पिरिार मे कोनो संस्कार बाह ण

बला नहि रहैक - ने माता पिताक विचार, ने पारिवारिक संस्कार, ने गामक नाम आ ने कूलक विचार। जटाक पिता आ माताक बीच एकैस बरिखक अंतर रहल। जटाक पिता भोला पचण्ड मूर्ख आ भूमिहीन। लोकक महिस पोसिया रखैत छलाह। पैतीस बरखक भऽ गेल रहथि। सब बेर चानन काजर लगा ललका धोती आ कुरताक सूग पाग दोपटा धारण कय सौराठ सभागाछी जाइत छलाह। टुकटुकी लगेने रहैत छलाह जे कोनो कन्यागत ओकरा दिस देखतैक। मुदा सब बेकार। ऊपर सू मुँह कान सेहो दैकि देल। बज कारी चाम, उचगर दात, तमाकुल आ पान सू दात मे खईठी पडल, आँखि धसल, करिछ सन पूरा देह मे केस, कान पर विषि झमटगर ठाढ भेल रोआँ, चेडा जका हाथ, हाथ मे खुरपी, हासू आ कोदारि चलबैत-चलबैत ठेला पडल, पैर मे बेमाय फाटल, लेढाएल मोटका धोती सू महिसक गंध अबैत भोला कोनो रूप सू बाहमण नहि लगैत छलाह। गामक संस्कार ई जे बिना गाम के दू पुरुख ककरो बात नहि कऽ सकैत छल। भोला भला अपादि कोना रहितथि खूब गामक पयोग करैत छलाह।

लगातार सात बरख सू भोला तैयार भऽ सौराठ सभा अधिक समय मे जाइत छलाह आ टकटकी लगेने बैसल रहैत छलाह मुदा दुर्भाग्य ई जे कहियाहक बात के पुछैत अछि हुनका दिस कोनो कन्यागत देखितो नहि छलखिन। अंततः सभा समाप्त भेला पर भोला कराहि मोन सू पिपस गाम आबि जाइत छलाह।

एकबेर भोलाक बूढ पिता ठानि लेलाह जे चाहे जेना होइक भोलाक बिआह अवश्य अधि मे अशिर्य करा देबथिन्ह। कयोक कहि देलकनि जे नीरस झा बहुत नीक दलाल छथि। भोलो सू अधलाह बरक बिआह करा चुकल छथि। मुदा नीरस झा बिना टका के कोनो काज नहि

करैत छथि। एकबेर सभा लागब सू बीस दिन पहिने भोलाक पिता नीरस झा के अपन घर बजा अनलाह। बकाएन मलिसक िध दूध मे चाह बना भोलाक माय एक फुलही वालास मे नीरस के आ छोटकी बाटी मे भोलाक पिता के देलखिन। नीरस के आर की चाही। मोन पफुल्लित भऽ गेलैक। जाडक समय मुह सू फूकि-फूकि चाह सुरकय लागल। नीरस के होइक़ जेना चाह नहि अमृत पिब रहल हो! ओमहर भोलाक पिता आ माय नीरस दिस एक लाचार याचक बनि अिाकि करण जगेने ताकि रहल छलखिन। जखन आधा चाह सुरका गेलैक तऽ नीरस बाजि उठल:

नीरस : "हा बौकू काका! की कहऽ चाहैत रही?"।

बौकू काका: "बौआ, पहिने चाह पिब लीय फेर गप्प करैत छी। अहा कोनो आन थोडे ने छी!"

नीरस चुपचाप चाह पीबय लागल।

चाह सूरकला बाद नीरस फेरो बाजल:

"हा बौका का, कहू की कहए चाहैत छी?"

बौकू काका चुपे रहलखि। भोलाक माय आूखि सू गरम-गरम नोर चुअबैत बजली:

"बौआ नीरस, अहा सब सन दियामानी लोक के अछैते हमर भोलबा कुमारे रहि जाय!"

नीरस: "की कहैत छी काकी, ई एहेन अपाटक अछि जे अपन नाम तक नहि बाजि पबैत अछि। ओहि दिन चौक पर एक घटक नाम पुछि देलकैक। ई बृजबोध चौधरी के --जीबोध चौधरी कहि देलकैक। ओतय सब आदमी हूसै लगलैक। एकर बिआह कनि झंझट

बला चीज छैक।"

बौकू काका: "हौ नीरस किछु करह। एकर बिआह हमरा बजबैत भऽ जएबाक चाही। सब किछु तऽ सुईद मे चलि गेल, आठ कटा बूसकाटी आ कलम रहि गेल अछि। तकरे बेचि एकर बिआह करा देबैक। गरीबक मिहनती बेटा छैक। लोकक महिस पोसतैक, खेत बटाई करतैक आ अपन जीबन चला लेतैक।"
बौकू काका के मुह सू ई बात सुनिते देरी नीरस मोने-मोन पसन भऽ गेल। ओकरा भऽ गेलैक जे आब ओकरा भोलाक बिआहक दलाली मे नीक पाई भेटि जेतैक।
नीरस : "बौकू कका, किछु ने किछु तऽ करय पडत। आहाके जमीन बिका जाएत तकर दुख हमरा की अहा सू कम हएत। मुदा दोसर कोनो उपाय नहि। खैर! बेटा सू संपति भऽ जाइत छैक, संपति सू बेटा नहि होइत छैक। की पता भोला के एहेन संतान विधाता दऽ देथिन जे पाच दस बिघा जमीन किन दैक, पका मकान बना दैक, पैसा सू घर भरि जाइक।"

भोलाक माय आ बिता मुडी गोतने नीरस केर बात सुनैत रहलिन। जतेक अंतिम टुकडी जमीन बिका जएबाक ददनिहि भेलनि ओहि सू अधिक अहि बातक आि जगलनि जे भोलाक बिआह भऽ जएतैक आ ओकर घर बसि जएतैक।

नीरस किछु सोचैत बाजल: "बौकू काका, एक तऽ भोला के कहि दियौक जे ई लोकके अपन नाम बृजाधि चैधरी के बदला भोला चौधरी कहैक। ई िबद सहज छैक। एहि मे बात नहि लगतैक।

आ पाच सात दिनक भीतर हमरा लेल किछु टका के ब्योंत कऽ दिय जे हम बगलक गामक छेदी झा के जाकऽ पहिने सू दऽ अएबैक। छेदी झा अगर हा कहि देलक तऽ बात पका। ओ एहन लोक अछि जे बह्माक लिखल लेख मेटा सकैत अछि।"

ओ कहैत नीरस अपन घर दिस बिदा भेल। बौकू का, भोलाक माए आ भोला के बिआहक आि जगलैकछ

कोउ काहू मगन

कोउ काहू मगन।

भोलाक परिवार अहिमे मगन जे भोलाक बिआह भऽ जेतैक। जमीन तऽ हाथक मैल छैक। नीरस अहि मे मगन जे भोलाक बिआह मे ओकरा नीक दलाली भेट जेतैक।

बौकू काका दोसरे दिन गामक महाजन सू दू सए टाका अपन कलम के नाम पर अगता लए नीरस के दऽ देलखिन। नीरस ओहि मे सू एक सए अपने राखि लेलक आ एक सए छेदी झा के दऽ अएलैक। छेदी झा जोगार मे लागा गेल। तकैत-तकैत छेदी झा के एक कन्यागत एहन भेट गेलैक जकर तेरह बरखक बेटी रहैक। छेदी आ नीरस ओहि कन्यागत के समझा बुझा भोला सू बिआह लेल मना लेलक। ओना पहिने तऽ भोलाक बगै देखि कन्यागत कनि बिदकि गेलैक मुदा छेदी आ नीरस अपन रचल मायाजाल मे ओकरा फूसा लेलकैक।

अहि तरहे पैतीस बरखक भोलाक बिआह सभा गाछी मे पहिने दिन फाइनल भऽ गेलैक। भोलाक कनिया गोदा गोर अततह मुदा मरवाल्ली जका खियाएल। देह अनक मारल रहैक। घर मे भरि पोख अन

के पुछैत अछ कुअन तक नइ भेटैक। सोझे साले दुरागमन भेलैक। भोलाक माय अपन मरवाल्ली पुतहु लेल बहुत उदार। दरबज्जा पर पोसये सही चार-चार लगहैर मइस रहैक। दूध दही केर कोनो कमी नइ। गोदाक पूरा नाम रहैक गोदािरी मुदा लोक प्यार सू गोदा जे कहनाइ िर केलकैक से गोदा रह गेलैक। से जे हो। गोदा सासुर मे भर पेट भोजन करैत छल। सासू कहियो कोनो तरहक कमी नइ देलूथिन। सोझे साले गोदाक देह चकन भऽ गेलैक। चाम चमकऽ उठलैक। बेर सन पयोधर नीक भोजन आ भोलाक नेहक उत्पात सू समतोलो सू नमहर भऽ गेलैक। अचानक अतेक पररितनि आबि गेलैक गोदाक िरीर मे जकर कयोक कल्पनो नइ कऽ सकैत छल। गोदा भोलाक दुनिया बदल देलकैक। बोलीक मधुर तऽ गोदा नैहरे सू छल। घर मे खूब काज धंधा करथि। सास ससुरक सेिा मे कोनो कमी नइ। भोलाक माए दरबज्जाक काज जेना गोबर सू चपडी पारब, दरबज्जा नापब, मइसक थान साफ करब, अन सब फटकब, सुखाएब आदि करथि आ गोदा घर आंगन साफ करब, नापब, भानस करब, सासु सूग धान कुटब, दालि दरडब आ पूजा पाठ करथि। दुनू मे कहियो कोनो तरहक फसाद नइ भेलक। भोला तऽ अपन गोदा के सदैि माथ पर रखैत छलाह। समयक चकी चलैत रहलैक। गोदा सोलहम चढैत गभिती भऽ गेलीह। नौ मासक बाद एक बेटा भेलक। भोलाक बेटाक मूह कान नाक तऽ नीक रहैक मुदा चामक रंग भोलो सू कसयाह। मूह आयताकार। मुदा भोला, गोदा, भोलाक माता पिता खुिी सू बताह। एक महिला जतले कजभे बाजि देलकैक “बच्चा कक कारी छैक”। भोलाक माय झट दक कहि देलथिन: “रह दियौक, बेटा छैक ने। मूह कान सोझ छैक ने। घीबक लडडू टेढो नीक। हमर िि बढि गेल। महादेब खूब कऽ

औरदा देखथिन आ काया कारोग रहैक। आर की चाही।

बच्चा चूकि भोलाक माय कलना बाबा सू मंगने छलीह तािह ओकर नाम राखल गेलैक मंगेि चौधरी। मंगेि के घुरमल घुरमल जटा बला केि रहैक तािहं गाम घरक लोक जटा कहि सम्बोधित करए लगलैक। मंगेि कतौ बिला गेलैक आ जटा नाम जगजियार भऽ गेलैक।

भोला परिशम करैत रहलाह। जटा के दबाई बीरो लेल नगद टाका के दरकार भेलैक। लोक सब सू पैच उधार ि र भेलैक। आठे मासक बाद गोदाके पुनः गभि ठहिर गेलैक। फेरो बेटा भेलैक। हालाकि तकर छह बरख धिर गोदा के कोनो सूतान निह भेलिन। अहि बीच भोलाक िपता अथात् बौकू काकाक िनधन भऽ गेलिन। भोला पर कजा आरो बिढ गेलिन। दूनू बेटा जटा आ सय्यािस सरकारी बेिसक स्कूल मे जाईत रहल। नहु-नहु अन पािनक िदकत ि र भेलैक कारण भोला लोकक कजि अन बेिच सधेबाक जोगर लगेने छलाह। अही बीच ककरो सू पता चललैक जे महिष ि रमेि योगी कानपुर मे तीन बरख लेल अखण्ड यज करताह। तािह लेल बाहिण कुमार चाही। बच्चा सभके रहनाइ खेनाइ मुफ्त उपर सू गुरकुल मे नामो िलखा देल जेतैक। िकछु टाका सेहो भेटतै। गोदा भले दिरर पिरि ार सू छलीह मुदा िि ाक पिक्त साकाक छलीह। भोला के कहलिथन: “बुझलौ, अपने सब िदकत मे छी। दुनू भाई के भिर पेट अनो ठीक सू निह दऽ पबैत छी िस्त पोथीक चरचे छोिड िदयौक। बिढया रहत जे दुनूके कानपुर रमेि जोगी के आशम पठा देबैक। भिर पेट भोजन, देह झापक िस्त आ पढबाक जोगार तऽ

भऽ जेतैक। अपन सभक जीनि कटैत रहत।”

भोला बात गंभीर भेल सुनैत रहला आ अंतमे क्षणमे निर्णय लेलक जे जटा आ सत्यदेवकेँ दिल्ली पठा देबैथन। सएह भेलैक।

जटा आ सत्यदेव दुनू भाई महर्षि अरविंद योगीक आश्रम कानपुर आबि गेल। पहिल बेर ट्रेन देखलक। पहिल बेर पनीर ककरा कहैत छैक से बुझलक। गेरुआ वस्त्र भेटलैक। भोरे स्नान पूजा, वैदिक मन्त्रक समिति पाठ आ तकर बाद फल आ भरि गिलास छालीयुक्त दूध। दिनमे रोटी, भात, दालि, तरकारी, सलाद, आचार, दही, मिठाई; रातिमे कऽ रोटी, दालि तरकारी। सुतए सँ पहिने दूध। संस्कृत व्याकरण, वेद पाठ, कर्मकाण्डक विभिन्न विख्यात गुरुक देखरेख मे। दू हजार विद्यार्थी मे दुनू भाई जेना घुलि मिल गेल। वेद पाठ सँ कंठ खुजि गेलैक। व्याकरणक सूत्र जिह्वा पर चढ़ि गेलैक। जखन एक बरख मे गाम गेल तऽ गोदा अपन दुनू ब्राह्मण कुमारक मुखाकृत देखि अचम्भित भऽ गेलीह। सासु तुरत पलंग, सौस मिरचाई आ नोन झडका दुनू पौतक नजरि उतारि लेलकि। डर इ रहनि जे कखनोकल अपनो लोकक नजरि लागि जाइत छैक!

कतेक वेद पाठ केलाह सँ दुनू भाई केर कंठ फूटि गेलैक। शरीरक सन्धान नीक भऽ गेलैक। गेयता पखर भऽ गेलैक। दु बरख मे जेना पक्का पक्का भऽ गेल होइक। दुनू भाई आब क्रमशः बारह आ दस बरखक भऽ गेल। सब किछु नीक रहैक। इमहर गोदा के फेरो एक बेटा आ एक बेटी भऽ गेलकि।

एकाएक रमेि योगीक आशम मे यज आ पढाई बन्द भऽ गेलैक। आब की हो? ओक्ह मे अक्धकाि विदाथी क्मथला आ उतराखंड सू अक्त क्नधिन पक्रिर सू रहैक। माता क्पता लग कोनो उपाय नक्ह। क्कयोक कोनो फैक्टी तऽ क्कयोक कोनो आन मजदूरी िर केलक। क्कछु नीक विदाथी सबहक नामाकन कानपुर आ अगल बगल केर सूस्कृत विदालय (महाविदालय) मे भऽ गेलैक। ओहने विदाथीक हेज मे जटा आ सत्यक्ति छल। क्मथलेक एक गुरजी अपन पभुर्य सू दुनूक नामाकन एक सूस्कृत विदालय मे करा देलक्थन। ओक्ह विदालय मे छात सभके दुनू साझ भक्र पेट रोटी दाक्ल भोजन भेटैक। खोराकी अगल बगल के सेठ साहूकार सब धमक्रि नाम पर दान मे दैक। कक्हयो काल तरकारी आ खीर क्मठाई सेहो विषि लोकक कृपा सू भेट जाइक। लोक सभ विदालय के छात सभके बाहण भोजन, पूजा पाठ लेल सेहो बजबैक। अक्ह मे नीक क्मकुत भोजनक अलािस्त, तिनि आ नगद सेहो हाक्सल भऽ जाइक। ई दुनू भाई अपन पैसा बचा माय के पठाबय लागल। कजा सू कक्म आक्कयत होमय लगलैक। दुनू भाई पढैत रहल। पढाई मे नीक करैत रहल। जटा कक्म मूहक जोर छल आ सत्यक्ति कक्म मृदुभाषी मुदा गम्भीर आ चुस्त चालाक लोक।

देखैत-देखैत जटा अठारह बरखक भऽ गेलैक। ओकर दाई अथात भोलाक माय क्जबैत छलक्थन। एकक्दन भोला सू अक्र गेलक्थन: "हौ बौआ, बाप तऽ पोता सबहक उपनैनो नक्ह देख सकलथुन, हमरा कम सू कम जटा के क्बआह करा ओकर कक्नया देखा दएह! मरलाउतर तोहर क्पता भेटता तऽ कक्ह देबक्न जे एहन अक्छ अहाक पोताक कक्नया!" ई कहैत ओक्ह बूढीक धसल आूक्ख सू नोर माक्ट पर टप-टप खसए लगलैक।

भोला तुरत अनमोल मास्टर लग अंतर्देशी लेने पहुच गेलाह। बजलाह, "माहटर साहेब, हमर माय आई एक कचोटक बात बाजि देलक। ऊपर सू ओकर नोर थमहक नामे नहि लऽ रहल अछि। कहैत अछि जे आब बहुत दिन नहि जीत। मरए सू पहिने जटाक कनिया देखऽ चाहैत अछि। चिट्ठी अहा एक चिठ्ठी मे सब बात जटा के लिख ओकरा जनतब दऽ दियौक। "

भोलाक हाथ सू अंतर्देशी अपन हाथ मे लैत अनमोल मास्टर सब बात चिठ्ठी मे जटा लेल लिख देलखिन।

चिठ्ठी भेटला पर जटा बिआह लेल तैयार भऽ गेलैक। तीन मासक भीतर जटाक बिआह अपना सू दू बरख छोट लडकी सू भऽ गेलैक। सोझे साले दुरागमन सेहो भऽ गेलैक।

जटाक कनियाक नाम रहैक अनुराधा। लंबाई मे जटा सू लगभग बराबर। रंग सामर, देह गदरायल। नावान सन लट, डोका जका आखि, छरगर नोकगर पतरगर नाक, गस्सल-गस्सल छोट-छोट दूध जका चमकैत दात, किछ िघस जाने कनिक अधिक उभार, नारिकेर तेल सू गूथल जुडा, रंग बिरंगी नुआ मे अधकटी आंगी आ कखनोकाल पारदर्शी आंगी सू छटकैत ओकर कसल पयोधर देखार लगैक एना जेना सब बंधन तोडि बाहर आबि जेतैक! जटा तऽ अपन रसगर कनियाक काया केर पेम आ ओकर नेह मे बताह भऽ गेल। कखनो ओ अनुराधा के छोडि कतौ जएबाक नामे नहि लैत छल। मासे दिन पर कानपुर सू गाम आबि जाइत छल।

अनुराधा एक नंबर के खेलाडि। रंग रभसक बात आ विधान जटा

सू अवधक बुझैत छथि। कतेक विधि या परविधि या आ खेलक गूढ़ नियम आ पयोग बुझल रहैक अनुराधा के। वियाहक बाद ओहि मे उत्तरोत्तर वृद्धि होइत गेलैक। परिणाम ई भेलैक जे अनुराधा बिना जटा के कानपुर मे मोने नहि लगैक। जटा आचार्यक अंतिम परीक्षाक बाद अनुराधा के कानपुर अनबाक उपक्रम करए लागल। पंडिताई सू नीक कमाई भऽ जाइत रहैक। ताहि ई चिंता नहि रहैक जे अनुराधा के कोना रखते की खेतैक, की खुएतैक। अनुराधा ओना तऽ कनिया बनि आयल छलि मुदा जेठ आ कमौआ बेटाक पत्नीक होबाक़ कारणे लजिन्नी सासु गोदाक लेल सासुओ सू पैघ बनि गेल छलि। सबदिन जटा एक चिट्ठी अनुराधा के लिखैक आ सबरात्रि अनुराधा ओकर उत्तर लिखैक। बेचारा भोला सबदिन डाकघर चिट्ठी ख़सेबा लेल अनुराधाक चरबाह जका जाइत छलाह आ डाकिया हुनका जटाक चिट्ठी थमहा दैत रहनि।
अहि बेर पितृपक्ष मे जे जटा गाम अएलैक से अनुराधा के गभ ठहरि गेलैक। जखन जटा कानपुर गेल तऽ डेढ मासक बाद ओकरा अनुराधाक चिट्ठी सू ई जानकारी भेटलैक। अनुराधा चाहैत छलि जे ओकर बच्चा कानपुर मे होइक़ आ जखन बच्चा होइक़ तऽ जटा ओकरा बगल मे रहैक। मुदा विधनाक विधान किछु आरे लिखल रहैक।

एक दिन घनघोर अन्हरिया राति मे कोनो उपरिी लोक एक विद्यार्थीक हत्या कऽ देलकैक। आब की हो? पुलिस पर दबाब पडलैक जे कोनो घराने खुनिया अपराधी के चौबीस घंटाक भीतर जेहेल मे डालि देबाक छैक।

जटाक मुहजोर भेनाइ काल भऽ गेलैक। ऊपर सू विदालय मे गुरजी सब मे गुटबाजी चलैत रहैक। जटा जाकह गुरक गुट मे छल से गुरजी कतौ बाहर गेल छलाह आ हुनकर पक्षदंदी अकह बातक लाभ उठबैत जटाक नाम पुलिस मे लिखा देलकैक। फेर की अधरािक्त मे पुलिस जटा के हिरासत मे लऽ लेलकैक। भरि राित थाना मे यातना दैत रहलैक। लाठी, बन्दूकक कुंडा आ घुसा सू पीटैत रहलैक। नाना तरहक यातना। थडिडगीक सब यातनाक पयोग पुलिस जटा पर तेना केलकैक जेना जटा बहुत कुख्यात आतंकािदी अथिा विमनल हो। जटा दैहिक आ मानिसक यातना सं टूटी गेल। अकह यातना सू मृत्युदण्ड नीक इ सोचैत अंततः जटा अपन जानक कीमता मे ई गछि लेलकैक जे िएह खूनी छैक। िएह ओकह विदाथी के मारलकैक। सब ओकरे फ्लोिटंग रहैक। पुलिस के भेलैक जे ओकरा बहुत पैघ कामयािी हाथ लावा गेलैक। सब बात कागत पर लिखा भोला सू हस्ताक्षर लऽ लेलकैक। दोसरे िदन पुलिस ओकरा हाजत मे लऽ गेलैक। मिजस्टेट लग सेहो भोला पुलिस केर भय सू अपन गुनाह स्िीकार कऽ लेलकैक। पजातंतक अमानिीय तंत मे एक िनदोष दोषी बिन गेलैक आ दोषी खुलला साढ जका घुमैत रहलैक!

जखन अनुराधा के पता लगलैक तऽ बेचारी बेहोि भऽ गेलि। घर मे मातम िितािरण भऽ गेलैक। अनुराधा छिल पुरखाकह। िहम्मत रखलक। क़मर कसि लेलक। िनणिय लेलक जे कानपुर जा अपन पिित के िनदोष सािबत करत। लोक मनो केलकैक मुदा अपन िनणिय पर रणचण्डी जका ओ दृढ छिल। दोसरे िदन िबना कोनो आरक्षण के जनरल िटकट सू अनुराधा अपन एक पन्दह ििषीय देओर सूग कानपुर लेल रेलगाडी मे बैस रहलि। अनुराधाक माथ पर एक दैििक

आभा छलकि रहल छलैक।

अनुराधा कानपुर आबि अपन देओर सत्यजित सूग जटाक निर्दोष होमाक लडाई लडऽ लागलि। ई दुनू देओर भाउज लेल महाभारतक धर्मयुद्ध सू कम नहि छलैक। छह मास जेहेल मे रहलाक बाद जटा जमानत पर बाहर आबि गेल। अहि बीच कानपुर मे अनुराधा एक सुन्दर सन पुतीक जन्म देलकैक। जटा जेहेल सू बाहर अबिते मातर बताह जका करऽ लागल। अनुराधा यदवा विचलित नहि भेलि। लागलि रहल। सत्यजित पढाई आ धनार्जन एकै सङे करैत रहल। समयक सुई घुमैत रहलैक। जेना अन्हारक बाद इजोत होइत छैक तहिना एहन समय एलैक जे असली खूनी पकडा गेलैक आ जटा सकुशल अहि केस सू मुक्त भऽ गेल। मुक्त भेलाक़ बाद आचार्यक परीक्षा पास केलक।

एक दिन एक निजी मंदिर केर भगवानिक प्राण प्रतिष्ठा मे एक गुरुजी सूग जटा सहायक पण्डित बनि कर्मकाण्ड करबा हेतु गेल। मनोयोगपूर्वक सब काजक सूचालन मे गुरुजी के मदति केलकनि। गुरुजी बहुत प्रभावित भेलाह। बाद मे जटा के ओही मन्दिरक मुख्य पुजारी बना देलखिन। जटा मंदिर मे पूजा पाठ मे लीन भऽ गेल।

एकबेर उज्जैनक महाकाल मंदिर गेल छल जटा। ओतय केर छटा, भस्म आरती, पूजाक प्रधति जेना ओकर मोन मे बसि गेलैक। महाकालक अनन्य भक्त भऽ गेल जटा। अनन्त बेर अपन यजमान सबहक पूजा पाठ आ अन्य तरहक सूकल्प ओहि प्रागण मे करोलक। कतेको जटा साझ मे भागक गोला खाइत छल। अपन मन्दिर केर

पस्तर मूर्क्ता के नीक सू सजबैत छल। नीक करैत छल। मन्दिरक गर्भगृह मे बेर पहर विक्लिंग लग कतेक काल सुतल रहैत छल। विक्लिंग सूग एना लगैत छलैक जेना जटा जीवित मनुख सूग ितालाप करैत हो! लोक के आस्था नहू नहू जटा दिस बढल गेलैक। अहि मंदिर पर अबैत देरी जटा नामक व्यक्ति समाप्त भऽ गेल आ महाकाल पण्डित िशत भऽ गेल। समस्त क्षेत्र मे लोक ओकरा महाकाल पण्डित जी कहि सूबोधित करैक। ई क्षेत्र बकाया लोकक रहैक ताहि जटाक भाि कक्ष अधिक भऽ गेलैक। महिला सबमे जटाक िज ककाक अधिके रहैक।

एक महिला तऽ अतेक पभावित भऽ गेलैक जे जटाक पती अनुराधा के ई िका होमय लगलैक जे जटा आ ओहि महिलाक बीच किछु ने किछु बात जर र छैक। किछु लोकक जे अपना आपके पर्यकदिी बैतबैत छल केर दाि रहैक जे मंदिर के भीतर पाछा बला घर मे अन्हार मे ओहि महिला सूग जटा किछु करैत रहैक। सत्य की रहैक से रामहि जानथि मुदा एहि सब बात सू अनुराधा कक्ष अधिके साकाक भऽ गेल्ल। जटा पर चौकसी बढ़ि गेलैक। जटाक भाई आब मुम्बाई चलल गेलैक। ओहो मुहगर लोक रहैक। दिक उच्चारण बढ़िया रहैक। एक मंदिर अपने सू बना ओकर मठाधीि भऽ गेल। यजमान सेहो नीक सूख्या मे बना लेलक। जीनि चलैत रहलैक। जटा जखने खुकाया केि सू बरी भऽ गेल सत्यवस्थक विाहि सेहो भोला अथात ओकर माता करा देलथिन। अंतिम क्षणपि यदवा एहिबेर जटाक रहैक।

अनुराधा आब दोपहर मे जटा लग बैसय लागल्ल। ओ महिला जे

जटा पर लाइन मारय सेहो आब कम्मे डरे मे रहैक।
जटा पाच भाई भऽ गेल। जटाक अंतिम भाई ओकर बेटी आ बडका बेटा सू सेहो छोट रहैक। अहि बात सू अनुराधा अपन सासु ससुर सू तमसाएल रहैत छलि मुदा की कऽ सकैत छलि?

सत्यजित छोड़ि सब भाई जटा लग आबि गेलैक। एक बहिनक बिआह सेहो भऽ गेलैक। गाम पर जटा आ सत्यजित दुनू भाई मिल कऽ पका घर बना लेलक, पाच छह बीघा जमीन किन लेलक। आर्थिक व्यवस्था नीक भऽ गेलैक।

कानपुर मे एक विकट समस्या - अतय पंडिताई वृत्ति मे लागल मैथिल ब्राह्मण सब यजमानक डरे या तऽ माछ माउस नहि खाइत छथि अथवा चोरा नुका कऽ खाइत छथि। कानपुरक लोक, विशेष रूप सू बनिया, माडवारी, पंजाबी आदि यएह सोचैत अछि जे पण्डित कही मासाहारी भेलैक अछि! पण्डित छथि तऽ शाकाहारी हेबे करताह। आ अहि सोच मे मारल जाइत छथि पण्डित कमसँ सूलग्न मैथिलाक कर्मकाण्डी।
बेचारा जटा आ ओकर कनिया दुनू प्राणी एक नंबर केर माछवाध मुदा अपना घर मे नहि खा सकैत छल आ ने बना सकैत छल। जोगार ई रहैक जे एक आदमी जे ओकर दूरक सूबंधी रहैक ओ अपन घर मे बनाबैक आ दस बजे राति के बाद जटाक घर पर दऽ अबैक। जखन सब सूति रहैक तखन जटाक पूरा परिवार चुपचाप माछ खेलाक बाद रास्ताये मे काट कुस बाहर फेक आबय, घर मे सेंट, अगरबती जडा सब गंध (मैथिल सुगन्ध पढथि!) समाप्त कऽ दैक। ई कनि झंझट बला काज रहैक तें मास दिन मे मुश्किल

सू एक या दू दिन अहि तरहक ब्योंत करबैत छल जटा।

अनुराधा छलि ओहि परिवार सू जतय पुरुख, ताहू मे कमौआ पुरुख के बहुत सम्मान भेटैत छैक। सम्मानक परिकल्पना उटपटाग जका रहैत छैक। पुरुखक भोजन सामान्य सदस्य सू विशिष्ट रहैत छैक। ओकर पहिरब, ओढब, चलब, ओकर ओछायन बिछायन सब किछु मे अंतर। जटा लेल सेहो एहने व्यवस्था अनुराधा केने छलि। घर मे सब लोक लेल रोटी तरकारी अथवा भात दालि एक सामान्य तरकारी बनैक। जटा लेल एक अलग सू तरकारी अथवा भुजिया अथवा चटनी बनैक। छलगर दूधक दही अलग जमायल रहैक। जटाक वस्त्र पहिने धोल जाइक, आयरन होइक़। सब तरहे जटा के देखला सू घर मे ओकर विशिष्ट होबाक़ बात स्पष्ट भऽ जाइक।

अनुराधा बुझियाबि बडड। सब दिन जटाक भोजन केलाक बाद जटा बला थाडी मे भोजन करैत छलि। जटा अनुराधा लेल सब समान छोडि दैत छलैक। बासन मे जे किछु मिछु बाचल रहैत छलैक सेहो अनुराधा अंत मे खा लैत छलि।

अनुराधा के एक बातक बहुत तामस रहैक। ओकरा ओहि ठामक लोक - बाल, वृद्ध, स्त्रीगण, पुरुख सब कियोक पंडिताइन कहि सम्बोधित करैक। अहि बात पर अनुराधाक सूंग चढि जाइक। मुदा छलि लाचार। अनुराधा ओना बहुत रोमान्टिक प्रकृति के महिला छलि। आरो अनेक बात रहैक जाहि पर अनुराधा के तामस चढैक।
एक बेर पितृपक्ष समय मे एक आदमी एलैक आ बहुत समान अपन मृत पिताक नाम पर ओहि व्यक्ति कऽ दान केलकैक। समान सूग

पैसा सेहो दान केलकैक। अंत मे ओ आदमी अपन झोडा सू बीडीक दू गठरी निकालि जटा दिस बढैत बजलैक: "महाकाल पंडितजी, हमर पिता बीडी पिबैत छलाह। हम पितृ षिहुनक नाम पर पितृपक मे अन्य सामगी सूग बीडी सेहो दान करैत छी।"
ओकर बात पर जटा हर-हर महादेब कहैत बीडी ओकर हाथ सू लऽ लैत छलैक मुदा अनुराधा तामसे भेर भऽ जाइक।
एकबेर अनुराधा राघब सू मजाक मे कहलकक्हि: "कहू राघब जी, ई कोनो बात भेलैक जे लोक सब माता पिताक नाम पर पितृपक मे बीडी सिगरेट दान करैत अछि। ऊपर सू तकि अनमोल। कहत, हमर पिता पीबैत छलाह ताहिं चढा रहल छी। भाई पिता दार पिबैत छलाह तऽ अहा दार दान करब? पिता लडकी सूग सुतैत छलाह तऽ अहा लडकी दान करब? बजरखसुआ निहतन! अनेडे के चोचला ठाढ केने अछि! तूग आबि चुकल छी!"

राघब चुस्की लैत कहथिन: "चलू ने, अहि सू तऽ फायदा अछि ने आहाके! आ लडकी दान केलकैक तऽ अहाक पण्डित जी के!"
अनुराधा: "कपार फायदा! लोक हूसैत रहैत अछि। ककरा लग बेच जाउ? लोक हंसत। सब बीडी सिगरेट के फेकि दैत छी। रहल लडकी बला बात तऽ पण्डित जी खूब आनंदित हेताह। एकरंगाह चीज सू नि चीजक रस भेटतनि। मुदा से हम थोडे ने होमऽ देबनि!"

जीनि चलि रहल छलैक। जटा आ अनुराधा के एक बेटी आ दू बेटा रहैक। दोसर बेटा भेलाक़ बाद अनुराधा नि बंदी के ऑपेरनि करा लेलनि।

अपन सौन्दयकि पदर्नि मे अनुराधा बहुत साकाक रहैत छक्ल। हमेर्ि चमक दमक मे मातक्ल। देह कक्हयो झुर नक्हं भेलैक। कसल-कसल आंगी, नावान जका जुडा आ चलबाक अंदाज अनुराधा के गजगाक्मनी बनेने रहैक। अगर पंक्डताइन के तगमा नक्हं भेटल रक्हतैक तऽ कतेक आदमी लाइन मारैत रक्हतैक! मारऽ बला एखनो की र कैक! ताक्ह पर सू काक्तल बक्म बडका-बडका आूक्ख सू ताकब एहेन चीज रहैक अनुराधा के जे बूढो लोक के जुआन बना दैक।

अनुराधा नख र्वख क्संगार करैक। ओकरा बुझल रहैक जे जीर्नि मे स्त्री पुरख के सब सुख करक चाही। अनुराधा बुझैक जे केक्ल पुरख के बाक्ह कऽ रखबाक सर्तिम यन्त्र छैक। ओकरा बूझल रहैक जे उदासीन पुरख के सेहो एक चतुर मक्हला अपन सौदयर्ि उभार आ उतेजना सू पाण आक्न सकैत अक्छ। ओकरा बुझल रहैक जे अगर पुरखक मोन नक्हयो छैक तऽ सयाक्न आ खेलक्ल नारी अपन कन्त के र्रीर मे काम जर्िलाक आवा फूक्क सकैत अक्छ। ओकरा काम र्वया मे लीन कऽ सकैत अक्छ।

अनुराधा केक्ल र्वया के खेलब कहैक। पता नक्ह ई सोनहाएल देसी खाटी र्ब्द अनुराधा कतऽ सू सीखने छक्ल? अपन कक्छु खार् मक्हला सूग जखन बात करैत छक्ल तऽ खेल र्ब्दक पयोग करैत छक्ल अनुराधा। एकबेर एक नर् स्त्री के जे अनुराधा के दूरक सम्बन्ध मे ननक्द लगतैक अनुराधा पुक्छ देलकैक: " अहाक तऽ टटका क्बआह भेल अक्छ। कतेक बेर खेल करैत छी?"

बेचारी नर् क्याहक्ल नाक्र, कानपुर मे रहक्ल, कानपुर मे पढक्ल, नक्ह बुक्झ सकलैक अनुराधाक बातक अथर्ि मूह भकुएने ठाढ रहलैक।

जखन अनुराधा के लगलैक जे ओकर बातक आसय ओ लडकी नञि बुईझ सकलैक तऽ अपन बतीसी देखबैत बाजलि: "दूर अलूरि नञितन! एकरो माने नञि बुझलौ अहा! हम आब खोइल कऽ कहि दैत छी। हम पुछैत रही जे घरबला सूग कतेक बेर "ओ" करैत छी?"
अनुराधाक बात पर लाजे लाल भेल नायिका मूह झपैत घर दिस भावा गेलैक।

अनुराधा दात देखबैत मतराइत फेरो ओकरा पाछा-पाछा जाइत पकडि लैक आ कहैक: "अरे, अहि मे लाजक कोन बात! हम की कोनो कतौ बाजब? हम तऽ ई जानय चाहैत छी जे अहा सब एक दोसर के कतेक चाहैत छी, कतेक सूतुि करैत छी। आखिर ई काज तऽ भगािनक देन छिक। के नञि खेल करैत अछि से कहू? अहि सूसारक िृष्टि स्त्री पुरखक खेले सू होइत छैक।"
अनुराधाक बातक स्पष्टीकरण सू ओहि नबियाहता के हिम्मत बढलैक। लज्जा भाि कनि वितरोहित भेलैक। उमंग कनि जगलैक। स्त्री पुरखक केलि पर कनि वजासा बढि गेलैक। अनुराधा के सूबोधित करैत बजलैक:
"हमर छोडू। पहिने अपन कहू जे अहा सब जखन बिआह भेल तखन कतेक बेर खेल करैत रही?"
अनुराधा पकठोस भेल खुजल कामायनी बनैत बाजलि: "हम सब तऽ ओही मे मगन भऽ गेल रही। की दिन आ की राति। सदैि ओकरे जोगार, ओकरे पयोजन। कतेक बेर होइक़ तकर कोनो वानती नञि। कखनो अपन मोन नञि रहैत छल तऽ पति महोदय के मोनक रक्षार्थि ओहि पवि्या मे लावा जाइत रही। से जे होइक़ मुदा एहि आनंदक कोनो बरनेका नञि।"

आब नविवाहिता कने सलज्ज बनल उतर देलकैक: "हमरो सबहक व्यवस्था अखनेक सन अछि। कखन दिन आ राति पते नहि चलैत अछि। कतेक राति एहि चक्कर मे भोजनो नहि बना पबैत छी।"

अनुराधा: "बाह, ई भेल ने बात!"

नायिका: "लेकिन हमरा सू अधिक हमर पतिदेवकि ध्यान अहि दिस रहैत छनि। कतेक बेर हम हारि मानि लैत छी। कतेक बेर थाकि जाइत छी।"

समय चलैत रहलैक। बच्चा सब बढैत रहलैक मुदा अनुराधा आ जटाक पेम नित नूतन होइत रहलैक। जू-जू बयस बढल गेलैक दुनूक मध्य पेमक सघनता बढल गेलैक।

एक बात कने गडबड भऽ गेलैक। जखन जटा मडरि केसि मे फसलैक ताहि कण अनुराधा गभिती रहैक। ओहि समाचार सू अनेक तरहक चिंता, भय आदि सू ओकर मोन व्याकुलित रहैक। तकर असर ई पडलैक जे दुनूक पहिल सूतान बेटी कने मंद भऽ गेलैक। जखन बेटी अठारह बरखक भेलैक जटा ओकर विआह करा देलकैक। विआह मे नीक जका ठका गेलैक।

ख़ैर, विआह भेलैक तऽ बच्चो भऽ गेलैक। बेटा रहैक। जटा आ अनुराधा नाना नानी बनि गेल। समय कट लगलैक। नाति सदैव नाना नानी लग रहैक। जटा क बेटी किछु कोसिस केलकैक

जाक्ह सू अपन पैर पर ठाढ होइक़। दोसर बच्चा नक्ह करतैक तकरो क्तणग्नि लऽ लेलकैक।

जटाक दुनू बेटा पढय मे ठीक नक्ह रहलैक। बडका कहुना बारहीि केलाक बाद कोनो कंपनी मे छोट मोट नौकरी िर केलकैक। छोटका पाइटि कॉलेज सू इंजीक्तयक्रंग केलाक बाद बैसल रहैक। ओना कानपुर मे दुनु बेटा लेल मकान, नीक सम्पक्त क्तन देलकैक जटा।

अक्ह बीच एकाएक एक चमत्कार भेलैक। एक बेर भागति कथा सुक्त ततेक ने विभोर भेलैक अनुराधा जे िध िकाहारी भऽ गेलैक। गला मे तुलसीक माला धारण कऽ लेलकैक। सदैि हरे कृष्ण हरे कृष्ण भजैक। ओकरा भगािन मे, भगति भजन मे क्तत लावा गेलैक। प्याज, लहसुन सब क्तछु सहषित्यािा देलकैक।

जटा अपने तऽ िकाहारी नक्ह भेल मुदा अनुराधा लेल कोनो व्यिधान नक्ह ठाढ केलकैक।
समय चलैत रहलैक। अनुराधा लेल जटा एक कार सेहो क्तन देलकैक।

एकक्तदन कार सू जटा आ अनुराधा हक्तरदार जाइत छल। नाक्त सेहो सूग रहैक। मध्य रास्ता मे कारक बैलेस गडबडा गेलैक। कार एक बेर उलक्ट कऽ फेरो ठीक भऽ गेलैक। कार पर सू अनुराधा आ ओकर नाक्त खक्स पडलैक। अनुराधाक कपार फुइट गेलैक। नाक्त ओतक्हं दम तोक्ड देलकैक। महा अनथिभऽ गेलैक। लोकक सहायता

सू जटा अपन पती अनुराधा के एक अस्पताल लऽ गेलैक। बहुत खून चढलैक। ऑपरेशन भेलैक। घाि ठीक भऽ गेलैक मुदा िक बंद भऽ गेलैक।

अनुराधा अपन मूह सू खेनाइ बन्द कऽ देलकैक। नली लगा कऽ खिाक डि स्तिु देल जाइक। जटा अपन सब किछु छोड़ि अनुराधाक सेिा मे लागल रहल। छह मासक बाद अनुराधा उठइ बैसय लगलैक। मुदा याददाश्त िापिस नहि एलैक। िक सेहो बंदे रहलैक। ककरो नहिं िन्हैक। कोनो उचाबच नहि। कोनो सुख नहि। सब कमि होइक़ मुदा पता नहि चलैक। अंत मे जटा जेठ बेटाक बिआह करा लेलक। पुतहु आिि गेलैक मुदा अनुराधा के कोनो पगवि नहिं भेलैक। इमहर अपन पुतहु के समस्या सू रवित भेल भोला अन पािि छोड़ि देलकि। एक बरखक बाद भोला बिरासी बरखक अिस्था मे अहि सूसार के छोड़ि देलाह।

भोलाक शाध कमभिलाक़ दस दिनक बाद एक दिन अनुराधाक हालत देखि जटा छोट नैना जका ठोहि पारि काने लागल। एकाएक बाजि उठल: "हे महाकाल, हे केिबि! कतेक परीक्षा लऽ रहल छी! हरे कृष्ण आब लाचार छवि। हिनका मुक्ति दियौन!" ई कहैत जटा अपना हाथे एक मंतक जाप करैत गंगाजलक चारि बून्द अनुराधा के मूह मे डालि देलकैक।
राति के ठीक एगारह बजे एक हिचकी उठलैक आ अनुराधा गोलोक लेल बिदा भऽ गेलि। जटा अंतिम नोर ख़सा बेटा के कमकि तैयारी मे लगा देलकैक। एक अध्याय समाप्त भऽ गेलैक। महाकालक आराधना मे एखनो लागल अछि जटा। ियद जिनगी मे फेरो हेतैक

कोनो करामाती घटना। हर-हर महादेबक स्वरि सू अनघोल भेल रहैत छैक मक्ष्दरक पागण। ओक्ह क्रनाद मे जेना अबैत रहैत छैक अनुराधाक स्वरि - ओकर गीत, भजन, हरे कृष्णाक नाम, ओकर पेमक अलाप, ओकर चूडीक खनखन, ओकर पाजेबक रनझुन, ओकर पाती आ साझक भक्त्तिमय गान, ओकर बटगमनीक हुल्लक्सत तान। ओह, कतऽ छी भगबान!

<u>बुकरराज (लघुकना)</u>

राघब विशिव् ालय केर छाता ासिमे रहैत पीएर ी करैत छलाह। सँयोगसँ राघबक मकयौत भाईक लडका मुदा उमेरमे कतति सोहन राघब लग कॉ्पक्टक्ट परीक्त सबहक तैयारी लेल आयल छलक। र ाकए षिक अंतर होबाक कारणे दूनूक बीर काका-भाक्तजक कम आ सँगतुकया ि ताि अक्क छलक। सोहन राघबक होस्टलमे पाइल ऑान गेस्टक र पमे रहैत छलाह। सोहन यूका किसर्वीमे टुटपुंकजया नेता सब सँग घुमय लगलाह। राघबक भतीजा बुईझ लोक कक भाि जर र दैत छलक।

एककदन सोहन सडे ककभच राघब लग एलाह। ककभच काहारक कोनो यूका किसर्वीसँ इक्तहासमे बी ए केलाक बाद राघबक यूका किसर्वीमे पार ीन इक्तहाससँ एम ए'मे नामाकन लेने छलाह। ककभच राघब लग विनिमतासँ बैसलाह।

ककभच बीर -बीर मे राघब लग अबैत रहलक। ककभच यूका किसर्वी केर एम ए पीवियिस केर परीक्तमे बहुत खराप अंक अनलाह। कहनक माता-कपता दूनू कोनो यूका किसर्वीमे पोफेसर छलकन। तकर फायदा उठबैत ककभच ओक यूका किसर्वीसँ पार ीन इक्तहाससँ एम ए कऽ लेलाह। मु बईमे कोना ने कोना ककभच एक सँस्नानमे कला इक्तहास सँ एम ए'मे नामाकन लऽ लेलाह। दू षिक कोसचककभच पार षिके पूरा कएलाह।

ककभच छलाह भाग्यक साढ। माता कपताक असगर आ बेटा। दू बकहन

पर एक भाई। जखन कहनक एम ए केर वरजदट कनकलए बला छलक ताकह समय एक कला संस्नानमे एक लाला जी लोरन लाल दासके पकडलाह। दासजी कहनके ाहरक छलकान वजनका कनभचक माय राखी बनहैत छलकान। कनभच दास जीके मामा कहैत हुनकर ारणमे नतमस्तक छलाह। दास जी धुरफन्दी लगा कनभच के कला संस्नानकक अकनलेखागारमे नौकरी लगा देलकान।

एक षिचे राघब सेहो कला संसनानमे आवन गेलाह। सँयोग एहेन जे कनभच आ राघबक विाहि एकै साल, एकै मास आ एकै कदन भेलक। अंतर अतबे जे राघबक विाहि माता-कपता दारे कनधावरत आ कनभचक विाहि पेम नामक रोगक अंकतम पवरणाम जाकहमे अनेक भाभट, नाटक आकदक भूकनका पबल।

कनभच केर जेठ बकहनक ननकद हेमा कनभचसँ नौ िरिखक छोट मुदा पोखगर छलीह। हेमा दूकधया गोडाईसँ ग् जब सुनकर लगैत छलीह। दुबर पातर रमकैत रेहरा छलक हेमाक। बडकी- बडकी आँकख, तेहने सुन्दर ठोड, घुरमल-घुरमल को , छोट मुदा गस्सल-गस्सल विकक्सत आ पस्फुक्टत होइत कि। कत् ब य् वम ओतेक विकक्सत नकह छलक। कत् बक विकक्सत नकह भेनाईक अनचई नकहं जे हेमा आकषच, सौन्दयचमे कोनो तरहे कम छलीह।

हेमा सत पूछी तऽ कनभच लग कखचरा छलीह। ताकहसँ की, सँबंधमे हेमा कनभचके बकहनक ननकद छलीह से कनभचके पवरहासक अिसर दैत छलक। एकबेर हेमा इंटरमीविएट केर परीका देमय कनभच ओतय एलीह। कनभच हेमाक समीप आबय लगलाह। सामान्य हास-पवरहास

नहुँ-नहुँ पेममे पकरिवर्त्तन होमय लगलक। बातक पेम आब आँखि, भंवामा आ मुरासँ होमय लगलक। ाुर मे हेमा ओतेक ग्भीर नहिं छलीह लेकिन किभयिच हुनको ग्भीर बना देलकिन। पेम ा ब्दिक बाटसँ देहक सीमा पर आिब गेल छल। दूनूके बयसक अंतर समाप्त भऽ गेलक। जाडक मासमे अपन सीरकमे घुसल हेमा पोनीक सामीप्य कम आ किभयिचक हान, मुँह आ ने जािन कोन-कोन अंगक सामीप्य अिधक करय लगलीह। दूनूक जीिनमे एक अपूिचरस भेटनाई ाुर भेलक। किताबक पन हेमाक सँग छोिड देलक आ आब पेमक बाट िहनका दूनूके अपना लग बजा लेने छल।

एक िदन जखन हेमा अपन सीरकमे घुसल छलीह आ किभयिचक हान हुनक अंगक िविेष भाग िदस हलरल कऽ रहल छल तखन हेमा पेमक रसमे ििबकी लगबैत किन अपन पेमक पिर साकाक होइत बजलीह: "यौ किभयि ! अहा जे अतेक आगा बढल जा रहल छी हमरा सङे से एक बात बुझल अिछ?"
किभयिचक हान एकाएक रहलकदमी छोिड देलक। किन िरिक्तत होइत बजलाह: "से की?"
हेमा: "यएह जे अहा अतेक आगा बढल जा रहल छी। अहाक माता-िपता आ ओहूसँ आगा हमर भैया-भौजी अहा आ हमर िििह लेल तैयार हेताह?"
किभयि : "एक बात कहु।"
हेमा: "पुछू"।
किभयि : "देखु हेमा, अगर अहा तैयार छी तऽ बाकी काज हमरा पर छोिड िदय। हम सबके स्हािर लेब। हमरा बुझल अिछ जे एकर सबसँ पैघ िरोध हमर बिहन आनिच अहाक बडकी भौजी करतीह।

लेकिन देखल जएतैक। हम अपन छोटकी बहिन आरती एमि बहिनोईके मना लेब अपना दिस। ओकरे सबहक सहयोगसँ माय सेहो मानि जेतीह। एक बेर मायक हृदय पघिलि जज गेलनि तS ओ हमर बाताके सेहो तैयार कS लेतीह। हम अहाके कोनो असिथतिा मे असगर नहि छोड़ि सकैत छी।" कामेनसचक हाथ बात करैत-करैत फेरो हेमाक सीरक दिस घुइस गेलनि आ अपन काज शुरू कS देलक। हेमाक शरीर आनंदक स्प्रा संँ सिहरय लगलनि। पेमक ताप केहेन होइत छैक तकर अनुभव हेमा आ कामेनसचसँ बढ़िया के बुईझ सकैत छल? कामेनसचक हाथ रलैत रहल। कखनो जोर तS कखनो कम हद्लुक मुदा अनवरत। हेमाक पोर-पोर पफ़ुलकिलत। बिना कोनो व्यवधान केने हेमा बाजि उठलीह:

"जनैत छी, हमर भैया र्ुंकि हमर बेमातर भाय छथि, ताहि कारणे सेहो ओ आ हमर भौजी हमर अहाक विवाहि लेल तैयार नहिं हेतनि। ओना हम अपन मायके मना सकैत छी।"

कामेनसच अपन हानके गतिमान रखैत बजलाह: "देखू हेमा! अहाक भैया अहाक ने बेमातर छथि, हमर तS अपन बहिनक पति छथि। हम जनैत छी कोना हुनका सबके मनाबी। अहा चिंता नहिं कर।"

आब कामेनसच हेमाक सीरकमे पूरा घुइस गेलाह। दूनू ओहि यातामे तद्लीन भS गेलथि जाहिमे पति-पती भS जाइत अछि।

एहि तरहे एहि तइस दिनक पवित्र अवधिमे हेमा आ कामेनसच एक दोसरक देहक आ मोनक पीत आ पेमक धारमे कतेक बेर डुबकी लगेलथि तकर कोनो हिसाबे नहिं। उचिते तो यएह। पेमक कही माता, सँख्या अनिश्चित देखल गेल अछि?

जखन हेमा काभयक ा हरसँ ापिस अपन गाम रहल गेलीह तऽ काभयके राक्त काटब मुश्किल। हेमाके सेहो काभय काना अपन जीनि पहाड बुझना जाइन।

अन्ततः काभय हिम्मत करैत अपन छोट बहिन आ बहिनोईसँ बात कएलाह। हुनकर छोटकी बहिन तैयार भेलीह। मायके बहुत पेमसँ बतेलक। माय मना कऽ देलकान तऽ आरती बजलीह: "अहा नहि तैयार हएब तऽ भाईजी किछु कऽ सकैत छथि। घर त्यावा सकैत छथि।"

काभयके माय आब तैयार भऽ गेलीह। अतबे नहि ओ अपन पतिके सेहो मना लेलक। काभयक पिता एकहि लेल मानि गेलाह जे काभयसँ एक पैघ भाय सतरह बरखक भेलाक बाद मरि गेल छलकान। कोनो माता पिताक लेल अहिसँ पैघ दुभाग्य की भऽ सकैत छलक?

काभयके माता-पिता जखन अपन बेटी जमायसँ एहि बारे मे गप्प कएलाह तऽ ओ दूनू अवाक्श ायुिश। कतबो माय, छोटकी बहिन बहिनोई आ पिता मनेलकान, ओ दूनू नहिए तैयार भेलाह। आब की हो? कोना कऽ चलन विधिना दूनूक करतै रे की?

काभयके जखन कोनो उपाय नहिं भेटलक तऽ झटदिा मूसक दबाई आनि लेलाह। ओकरा घोरि पी गेलाह। सौभाग्यसँ छोट बहिनोई देख लेलकान। घरमे कोहराम मचि गेलक। तुरत ाॅक्टर लग लऽ गेलक। बहुत उपायसँ काभयक पाण बराओल गेल। जखन काभय ठीक भऽ गेलाह तऽ जेठ बहिन आ बहिनोई हुनका लग अबैत नोरायल मुँहे

कहि देलखिन: "अहाक प्रेम जीतल। हमर जिद हारि गेल।"
हेमाके सेहो अभयके देखबा लेल गामसँ ा हर बजाएल गेल छल। हेमाक आँखि कनैत-कनैत लाल भऽ गेल रहिन। अभय केर माता पिताक र र चनहि हो तऽ नीक। मुदा आब सब कदयाणक पन पर आबि गेल छलाह।

अहि तरहे अभय आ हेमाक विाहि सामान्य तरहे बिना कोनो दहेजक भेलिन। दूनू एक सँग जीनि जीबाक हेतु तैयार भेलाह। विाहिक किछुए दिनक बाद अभयके नौकरी लाबा गेलिन। घर पर कोनो कमी छलिन नहि माता-पिता दूनू पोफेसर।

अभय अपन जीनि जिब रहल छलाह। सब तरहे स् पन। अभय केर एक कमी छलिन। हिनक अंगेजी बहुत अधलाह। हिंदी य् पि बहुत नीक बजैत छलाह। लिखयो नीक लैत छलाह। मुदा एक कुंठा पोिस लेने छलाह। कुंठा इ जे जँ हिंदीमे लिखता तऽ लोक इलीट, जानी, मॉिनिचनहि बुझिथन। एहि कुंठाक कोन उिर? एक बात आरो, अभय अंगेजी सिखबाक यत कहियो नहि केलिन। ओना विदान लोक बुझय तािह लेल बहुत साकाक रहैत छलाह। नाना तरहक सिग रैत रहैत छलाह। बहुत तरहक पोनी जे कला, इतिहास, हेरिटेज, साहित्य, पुरातित, मीमाा ा, नाटक, आदि पर होइत छलैक तकर जोगार करैत छलाह आ अपन घर आ ऑफिसक रैकमे सजेने रहैत छलाह। लोक बुझ जे अभय विदान छिथ। ओहिमेसँ अधिकाा पोनीक पारो पना ओ कहियो नहि पिलाह। पोनीक जोगार अभय तीन तरहे करैत छलाह; पहिल, किताबक दोकान अनि पुस्तक मेलासँ कीनकऽ, दोसर, मित अनि ककरो लग गेलाह तऽ पिबाक लाने माबा कऽ, जे कहियो िपस नहि करैत छलाह, आ तेसर, रोराकऽ। अभय पोनी रोरीके कोनो पाप अनि दुष्कमचनहि बुझैत

छलाह। हुनका कतेको कल्ह देने छलक जे वदली यूनिवर्सिटी, पटना यूनिवर्सिटी आ कोलकाता यूनिवर्सिटी केर पोफेसर सब सेहो पोनी कखनो झोरामे, कखनो छातिमे तऽ कखनो कोनो आन रीज़मे रुपे राप राख पुस्तकालय अनति साहित्यिक स्थानसँ लऽ जाइत छलाह। फेर की कामिच एकरा अपन मौलिक अधिकार मानि लेलक। पोनी रोरी कतौ रोरी भेलैक अछि! कतेन्हुँ नहि। कामिच अहि तीन युवतीसँ कपुल पोनीक सामिमी भेल जा रहल छलाह। कामिच लग कतेको पहिल बेर अबैत छल तऽ ओकरा लगैत छलैक जे कतेक महान पढाकू आ विदान लग आबि गेल अछि!

कामिचके कपडा पहिरक कोनो जान नहि छलक। छलाह लेकिन कला संस्थानमे ताई रंग-विरिंगक विचित्र परिधान पहिरैत रहैत छलाह। कहियो हदसँ अधिक पैघ कुरता आ पायजामा, तऽ कखनो किछु।

आर जे हो लंगोटक बड जोरगर छलाह कामिच। जखन कला इतिहाससँ एम ए करैत छलाह तऽ एक बेर गोवा, मुंबई, एलोरा, एलीफैटा आदि स्थान पर समस्त विभागक टोली सँग गेल छलाह। हुनक विषय एहेन छल जाहिमे तनाकथित मॉनिट्र इलीट आ नि धनाढयक बेटी, पती आदि समय व्यतीत करबा लेल नामाकन लऽ लैत छलीह। हुनका सबलेल शारीरिक अनति यौन सुख बस ओहिना समय काटक एक युक्ति मात छलक। अगर वीहिसँ पूचिकोनो लडकी अनति विवाहित नायिका कोनो पर पुरुख सँग यौन सुखक पावित कऽ लेलक तऽ एहिके पाप पुन्यसँ जोडिक देखब हुनका सबलेल पाप छलक। इ क्षणिक सुख छैक। भेल, क्षणिक सुखक आनंद भेटल। दूनू पेमक रससँ रसप्लावित भेलक। बात खत्म।

एकरा बखरनाई अनि एकर इतिहासमे घुसनाई क्यनचा एहेन धुरंधर विरारक महिला आ नायिका कामिच सँग एम ए व का लैत छलीह।

ओहि महिला मण्लिमेसँ एक महिला सौ्या जे साविर, सुंदर छलीह। अवत मॉनिचछलीह। वरकतसक माता-पिताक बेटी छलीह। कोनो तरहक फेम अनि न्धिनसँ मुक्त छलीह। सौ्याक उरोज भरल सुराहीसँ एकौ रिी कम नहि छलक। गाल भरल-भरल, को ओतेक पैघ नहि कन्तु झमटगर, खूब कारी, कमर बहुत पातर, कत्ब सुिल, अतेक कलात्मक जे बुि पोफेसर सब एक बेर ओहि पर आँखि अशिथ गडा दैत छलक। लोक सौ्याके देखते सपनाक अलौकिक सँसारमे भेर भऽ जाइत छल। नाना तरहक सोर उफान मारए लगैत छलैक। मुदा तुरते अपन असिना, पद, पक्तषाक भान होइते ओ िपिस अपन विजिक सँसारमे आबि जाइत छलाह। सौ्याक सबसँ पैघ बात हुनकर साविर रंग आ स्त्तिसँ अपना आपके सजेबाक कला छल। सौ्याके देखलासँ साविर नारी कतेक सुन्दर, कामुक, उिजक भऽ सकैत अछि; कोना दुग्ध धिल नायिकाके अपन सौन्दर्य;च स्ति विन्यास, कनखी-मटकी, आ रामक पाक सँ पछाडि सकैत अछि, तकर वजित पमाण भेटैत छल।

खैर कामिच अपन गुपक लोक सबहक खूब ध्यान रखैत छलाह। हुनकर एकहि गुणक गाहक सब छल। एक रात्त लडका-लडकी सब बोन फायर केलक। सालक अंतम दिन आ नि षिक पनम दिन सबके एक संग मनेबाक असिर भेटलैक। की सब नहि एलैक। मास-मदिरा-नह्य-गीत-मस्ती-भयमुक्त ितारिण। ने घरक लोकक धाख ने यूनिवर्सिटी केर पोफेसरक वंता ___ साविन्त सितन्त। एक

मालती मात जे ओना तऽ बहुत सुन्दर छलीह मुदा बहुत सौ्य आ ा लीन बनबाक अभिनय करैत छलीह। पेमक बात तऽ सुनैत छलीह मुदा ल् जा भाकि अभिनयमे हुनक उ र नहि। एकबेर भरत मोगा नामक स्मार्ट सुंदर आ भि ा ली युकि हुनक सौन्दर्यसँ आकर्षित भेल हुनका कहुस ममतताक हान बढबैत कहि देलथिन: “हेलो! यू आर सो एंटरेक्टिव एंड ब्यूटीफुल गर्ल।”

मालती मोने-मोने पसन भेलीह मुदा भेलथि एकाएक कोना हा कहि देथिन। झटदथि उ र देलथिन: “हमरा एहि तरहक मजाक नहि पसिन अछि। हम कनि दोसरे तरहक लोक छी।”

ता ि धरि भरत एक पेग ि लि नेने छलाह। केजुअल भेल बजलाह: “कम ऑन मालती! ज़माना कतऽसँ कतऽ र ल गेल आ अहा एखनो पंरहि ा दीक भारतक मानव कतामे जीब रहल छी। हमरालोकनि कला जगत केर लोक छी। अतए उन्मुक्तता छैक। लोकक वि ार आ व्यवहार ग्लोबल छैक। क्लाइन रलो नव प आम बात छैक। आ अहा एहेन बात कहैत छी!” इ कहैत भरत बहुत पेमसँ अपन हान मालतीक कान्ह पर राखि देलाह। मालती झटदथि हुनक हान हटबैत बजलीह: “माइंड योर बाज़नस भरत! हम सडकछाप लडकी नहि छी। जे केलहुँ से केलहुँ। भविष्यमे एहि घटनाक पुनरावृत्ति नहि हो से ध्यान राखब।”

भरत बुझि गेलाह जे मालती दोसरे होपलेस स्टफ छथि। इ मिथ्याक अहंकारमे जीबी रहल छथि। मोगा कोनो दोसर लडकी जे मस्त भेल नृत्य करैत छलीह लग र ल गेलाह।

सौ्या टाइट जीन्स आ ा टच्मक्हरने छलीह। उ िजक-आकषक्क-मादक! ओक्हराक्त काभच बहुत उत्साक्हत छलाह। मुदा ओक्ह गुपमे दू मनुखझर छल: स्तीगनमे माक्लनी आ पुरखमे काभच। काभच आ माक्लनी दूनूमे कयोक मक्दरापान नक्ह करैत छलक्त। माक्लनी राक्र ि ग आगा छलीह मास भक्ण सेहो नक्ह करैत छलीह। ि रारा काभच ा ीतल पेय केर दस बोतलक जोगार केने छलाह। जखन लोक हानमे मक्दराक वालास लेने जाम हेरा रहल छल, काभच ओकरे सबहक तालमे ताल ा ीतल पेय केर वालाससँ कऽ रहल छलाह। हुनकोसँ अलग क्संगल पीस बनक्ल माक्लनी एक कोनमे दोसरे दुक्नयामे विरण करैत ा ीतल पेयक रुसकी आधे मोने लऽ रहक्ल छलीह।

कायक्रम रलैत रहलैक। क्बना पीने लोक सबके क्नबैत आ झुमैत-गबैत देख काभचके ा ीतल पेयसँ रमक ना ा आबए लावा गेलक्त। काभच मस्त भेल गेलाह। जेना-जेना राक्त भेल जाइक तेना-तेना लोक सतिंत-उच्रशंख्रल भेल गेल। स्ती-पुरख, छोट-पैघक, स्नानीयता आक्दक दूरी खत्म भेल गेलैक।

सौ्या बहुत कम रीज़क उपयोग अपन मूँह कानके सुन्दर बनेबाक लेल करैत छलीह। लेक्कन काजर, मस्करा, क्बंदी, साडी, सूट, ा टच आक्दक रँगक अनुकूल अनिा कंस्िटक झुमका अिश्य धारण करैत छलीह जे हुनका वी ष सेक्सी आ आकषक्क बनबैत छलक्त। क्हनक देखब आ ककरो क्हाराब बहुत मारक छल। ऊपरसँ मुक्नागी आ मस्त छलीह सौ्या ।

सौ्याके देख काभच सेहो मादक आ उ िक्जत भऽ गेलाह। सौ्या कक्त बेसी मूिमे छलीह। दोसर पैगके बाद सौ्या जेना संतुलन

समाप्त करए लगलीह। देह कापय लगलक। ठोड लडखडा गेलक। मान भारी भऽ गेलक। कखनो की बाजक तऽ कखनो कछु आरो। उन्मुक्तता सेहो अपन रँग देखाबय लागल। सौ्याक मस्ती बढल गेलक। भाषाक व्यनचअनु ासनसँ ऊपर उठए लगलीह। बहुत बात सब जे नारी होबाक कारण आ सामाक्जक मयादाके कारण अपना पेटमे, आंतमे, मानमे, करेजमे दबेने रहैत छलीह से जोर-जोरसँ भयमुक्त िताारिणमे बाजय लगलीह। सब यएह सोरैत रहल जे सौ्या अपन स्हारमे नक्ह छक, ना ामे भेर छक ताक्ह जे मोनमे अबैत छक से सब बजने जा रहक्ल छक। ताक्ह राक्त सौ्या के सात खून माफ़ छलक।

बीर-बीरमे सौ्या साकाक भऽ जाक। होक, ई की कऽ रहक्ल छक! कक्कबेकालमे फेरो मि। पेग लेक्कन नक्ह नमलक। जखन पार भऽ गेलक तऽ रंग विरंगक विभित्स गाक्र बजनाई ा ुर केलीह। आब हुनका लोक कक्ह देकलक्ह जे बोतल खाली भऽ गेल छैक। राक्त बहुत भऽ गेल छैक। आब मक्दराक सब दोकान बन्द भऽ गेल छैक। ई बात सुक्त तामसे भेर भेक्ल सौ्या आयोजकके माए-बक्हन लगा गाक्र पढैत रहली। लोक सब मनक्ह मोन हँसैत रहल।

एक्ह बातसँ एक बात स्पष होइत अक्छ जे हम सब समाजक ठेकेदार बक्न रहल छी। नारी स्तिंतता एखनो दूरसँ भले जे लगैत हो, यनानक्ो अगााब सपना जका अक्छ।

सौ्या सन नारी जखन उन्मुक्त नक्ह तऽ ककरा कक्ह स्तिंतताक अक्धकारी। नारी मोन व क्त सँग अक्धकार मनैत अक्छ, स्मान मडैत

अछि, ओकरो बात पर लोक अमल करैकसे व्यस्त्रिना मडैत अछि, पुरखक सँग आ समकक रलए राहैत अछि। सब तरहे स्वच्छन्द रहए राहैत अछि। जखना पुरख कतऽ जा रहल अछि, की कऽ रहल अछि, कखन खाइत अछि, कतए आ कखन सुतैत अछि से कयोक पुछनाहर नहि, तखना तऽ स्त्रीके सेहो अपन जीनिक संराक्लत करबाक सुविधा, स्वतिन्त्तता भेटक राही ने! से नहि भेटलैक तऽ केहेन स्वतंतता? ताहि तऽ मक्दराक ना ासँ मातक्ल सौ्या वरवरया कऽ कहैत छक्त, "फक यू मेन! यू आर बुलवट! ि‍ट रीट मी। केलि पाई देनाइ, नीक स्कूलक वका, सुविधासँ स्वतंतता नहि भेटैत छैक। असली स्वतंतता अहाक क्दमागमे नुकाएल रहैत अछि। अहा कायर छी। घक्टया छी। अहा ि‍रपोक छी। अगर एक पुरख कोनो स्त्री संग देह बाक्ट सकैत अछि तऽ फेर स्त्री कयैक नहि? इ पाप पुण्य सब पुरखक ढकोसला अछि। कोनो मक्हला कयैक नहि अपन मोनक आनंद अपन मोनक पुरखक संग उठा सकैत अछि? रुक्सया..." सौ्या अतक्हं नहि नमहली। बहुत बात बजैत रहलक्त। बहुत बात क्लखब तऽ मयादा रकनारूर भऽ जाएत।

सौ्या भोजन मोनसँ नक्हं केलीह। नोडेक कालमे काभय सौ्या केर हान पकक्ड हुनक घर क्दस लऽ गेलाह। सौ्या घर पहुंर गेलीह। काभय सौ्याके हानसँ पकक्ड हुनक बेि पर सुतेबाक पयत करए लगलाह। एक्ह पक्रयामे कतेक बेर काभयक हान सौ्याक उंनत भरल पयोधरसँ टकराएल। जतेक बेर स्पा चहोइक़ ततेक नीक लगैक। काभयके आब सेहो ना ा लावा गेल छलैक। ई ना ा मक्दराक ना ा नहि, सौ्याक सौन्दयक ना ा, सौ्याक सेक्सी ा रीरक स्पा क ना ा छलक्त। पुरखक मोन, काभय एक आध बेर ना ामे धुत भेल

सौ्याके स्हारबाक बहाने जकव्ड कऽ धेलाह। लेक्कन अपन नीक लोकक छ्वकि रक्ा करक जोगारमे क्ाभ**च** कछु नक्ह कऽ पेलाह। आब कक्ा सौ्या साकाक भेलीह। क्ाभ**च** केर ा रीरक ठोस बनाटि हुनका नीक लगलक्ा। एक क्ण लेल भेलक्ा, अगर अक्ह पुरखक सँग एखन अक्ाभसार होइत अक्छ तऽ मोन आ तन, आत्मा आ देह दूनू क्ारक्ात-क्ारक्ात भऽ सकैत अक्छ। एकर बाक्हक जकडन हमरा बैकुण्ठक आनंद दऽ सकैत अक्छ! यैह सोरैत तुरत एक्ट केर मूिमे आक्ा गेलीह सौ्या ।

सौ्या क्ाभ**च** केर झमटगर को हानमे बकुटैत बजली: "क्ाभ**च**! साले एक बात बताओ?"

क्ाभ**च**: "की?"

सौ्या : "अहा हमरा ताव्ड रहल रही ने? जाक्ा बुईझ कऽ अपन हान हमर बा लग अनैत रही ने?"

क्ाभ**च**: "बकबास"।

सौ्या : "सार तोरा हम देह तोव्ड देब। सबहक समक रुमा लऽ लेब। रुपराप सत्य र्सीकार कर।"

सौ्या बजैत रहली। क्ाभ**च** रुपराप सुनैत रहला।

सौ्या : "कम ऑन क्ाभ**च**! अहा जुआन छी। हम जुआन छी। अगर अहाक मोन हमरा पर आक्ा गेल तऽ अक्हमे की खरापी?"

क्ाभ**च**: "सौ्या माइंि योर लैंग्िज! की अँट ा ंट बजेने जा रहक्ल छी अहा? ई सब बात छोडू आ रुपराप आब आँक्ख मुईन सुइत रहू।"

सौ्या : "एकर मतलब की भेल? अगर हमर अधखुला िकि देक्ख अहाक मोन नक्हं केलक एकर अनचई भेल जे अहा नामदचछी!"

"स्टॉप क्दस नॉनसेस!", क्ाभ**च** क्रक्रया उठलाह। मुदा सौ्या लेल

धन सन। सौ्या काभयचके अंगाक कॉलर पकड़ अपना क्दस कारलक। आब काभच मूमिे आवा गेल छलाह। ताबर तोर रुमाक पहार करए लगलाह। कखनो अपना क्दस खींर लेक तऽ कखनो सौ्याक गदवा पकड़ सौ्याक दूनू ठोरक मध्य अपन जीभ िकल सौ्याक जीभक मधु स्पा चआ सिदसँ आनंदत होइत रहलक। सौ्या सेहो वरिोधक बदले और सहयोगे करैत गेलकान। सौ्याक दैहसँ मदरा, सेट, आ पकवाक क्सतजन्य सुगन्ध आबा रहल छलक। ओकह सुगंधक सब कतरा काभयचके मादक बनेने जा रहल छलक।

काभच आिगिक अवारेकमे सौ्याक सब िस्त हटा देलकान। सौ्या कक संकोर तऽ केलक कारण संकोर आ नारी एक दोसरक पूरक होइत अछ। मुदा सौ्याक मोनमे काभच सँग देह बाटक ततेक उग्िला धधक रहल छलक जे ककबे कालमे अपना आपके काभच लग समवाच कऽ देलीह। जखन सौ्या कािस्त भऽ गेलीह तऽ काभच केर िस्त अपने हाने खोलय लगलीह। काभच केर उिजना आ सौ्याक सँग देह बाटब केर अभलाषा सेहो उग भेल गेलक।

सौ्या काभचक अंतम िस्त हटा रहल छलीह तऽ एकाएक काभच केर जेटलमैन बला रवत जावा उठलक। काभच सौ्याके झकझोड़ देलाह। सौ्याके पते नह रल पेलक क काभच अरानक एहेन बेहिार कालेल केलक। कामक ्रिसँ धू-धू जड़ रहल छलीह सौ्या । तामस तऽ अतेक भेलक जे काभच केर खून कऽ देतीह। इमहर काभच बाना कछु कहने सौ्याक ारीर पर िस्त राख देलकान।

काभचक मयादा, ल् जाभाि एकाएक जागत भऽ गेलक। कह देलकान:

"नहि सौम्या, हमरासँ ई संभव नहि अछि। ई रक्त लंघन हम नहि कऽ सकब। स्टॉप इट। आई एम सॉरी। हम अपन मर्यादा बिसरि गेल रही।"

कामक अवसानसँ जडैत सौम्या एकबेर फेरनी जका अभय पर गरजैत बजली: "तखन किए लेल अतेक आगा बढलहुँ? अहा मर्दचनहुं छका छी। बहा...द एहिसँ पहिने जे हम तोरा गा----- पर लात मारि भगा दी तो अपने तुरत हमर घरसँ भाग ।"

अभय देह झारैत भावा गेलाह। राति भरि कोना समय सौम्या व्यतीत केलक से हि बुईझ सकैत छलीह।

हि अभय अपन पती हेमा सँग बहुत रोमान्टिक छलाह। कामकलाक अनेक आसनक पयोग करैत छलाह। कखनो पयोगक नाम पर स्नायुगत सीमाक अतिक्रमण सेहो करैत छलाह। अभयके दू बेटा भेलक। दुनुक मध्य अंतर मात्र सात बरखक। एक बेर राघबके पता लगलक जे अभय केर कनिया हेमा बिमार रहि रहल छथिन। हुनकर गिरमे ददचछक। गम्भीर इलाज रहि रहल छक। बादमे अभय केर दोसर मित्र जे राघबक मित्र सेहो छलथिन आ अभय सँग हुनके सोसाइटीमे रहैत छलाह, राघबके बतेलथिन जे अभय केर पती हेमा हुनकर पतीसँ कहलथिन जे अभय पृष्ठ भागसँ संभोग करबाक जिद ठानि देलथिन। ओहिक कममे ना रहि गेलक। खैर! ई अभय केर निजी मामला छलक।

अभय हमेशा कोनो नीक पढय बला केर संगतमे रहबाक यत्न करैत छलाह। हुनकर एक मित्र कोनो जोशी नामक छलथिन । बहुत तेज, सुन्दर। मुदा सबकमी आ एक नंबर केर फ्रॉड। शरीरीक कलामे परिपूर्ण। एकबेर जोशी महोदयके लकऽ अभय राघब केर होस्टलमे आबि गेल छलाह। राघबके कतौ जेबाक रहक। अभयके अपन घरक

राभी राघब दऽ देलकान। बादमे जखन राघब अएलाह तऽ पता रललक जे जोाी जी राघबक अनेक स्तिा, पोनी आक्ष रोराकऽ रक्ल गेल छलाह।

हेमा, अनात कभ्च केर पती बहुत सास्कक्लक आ शंह्मावक सभाकि छलीह। अक्षक काल नुआ ब्लाऊज पक्हरैत छलीह। दूक्षया गोडाई। एक तऽ कभ्चसँ नौ रिखक छोट ऊपरसँ बहुत छरहक, दूभर पातर। कतेक समय तऽ कभ्च आ हेमाक जोडी वपिरीत अनात वाता पुती सँग लगैत छल।

हेमा भोजन, संगीत, कक्ला वरतकला, योग, नह्म सबमे पयोग करए राहैत छलीह। ओ जीनिक संगीत देखय राहैत छलीह। स्तिकला केर नीक जान छलक क्नका। ब्यूटी पालच्च केर जानमे पारंगत छलीह हेमा।

एक आध बेर हेमा नौकरी करबाक यत केलीह मुदा कभ्च तकर अनुमक्त नक्ह देलकान। हेमा ओना ई मनैत छलीह जे कभ्च बहुत पुिि लोक छक्त।

जाक्हयासँ राघब कला कला संसनान जॉइन कएलाह कभ्च लेल रिदान भऽ गेलक। अपन सडी सबके पीएरिी उपाक्षसँ कभ्च बहुत उत्पेवरत भेलाह आ पीएरिी लेल कोनो यूक्तक्सिच्चीसँ पंजीयन लऽ लेलाह। समस्या ई छलक जे कोना क्लखताह? अपने कोनो क्स्नक्तमे नक्ह क्लखताह से बुझल छलक। कतेक बेर राघबसँ पत्यक आ परोक रपमे कक्ह देलकान मुदा राघब टालैत रहलकान।

संयोगसँ कभ्चके माता वाता राघबसँ पक्वत छलकान। एकबेर कोनो पयोजनसँ राघब हुनका लग गेलाह। राक्तमे ओतए रकलाह। राक्तमे भोजनक बाद कभ्चक वाता राघब लग दूनू हान जोक्ड ठाढ भऽ गेलकान्ह। राघब घोर आशयचे पक्र गेलाह। तखन कभ्चके वाता

कहलथिन: "राघब, अहा हमर पुत्तुल्य छी। हम आ विभाष्क माए अहामे अपन पुत देखैत छी। हम नौकरीसँ सेवानिवृत्त भऽ चुकल छी। हृदय रोगक रोगी छी। जीवनिक की भरोसा? ई विभाष नालायक अछि। एकरा बूते पीएचडी एहि जन्म के कहैत अछि, सात जन्ममे नहि हेतैक। अहा हमरा सबपर एक उपकार करू आ एकर पीएचडी लिखि दियौक। अहाक अहि योगदानके हम जीवनि पर्यन्त नहि बिसरब। "

विभाषक माय सेहो मौन भेल अपन आँखिसँ बहुत किछु कहि देने छलथिन। राघब उठि गेलाह। विभाषक पिताक हाथ अपना हाथमे लैत बजलाह: "हमहुँ अहा सबमे अपन माता-पिताक छवि देखैत छी। ओना ई बहुत दुष्कर कार्यछअछि। विभाष किछु तऽ करत नहि, सब काज हमरे करय पडत। लेकिन हम तीन मासमे पीएचडी थीसिस लिखि दैत छी।"
ई बात सुनि विभाषक माता-पिताक नेत एक दोसरे आभासँ चमकि उठलनि। राघब एक भारसँ दबि गेल छलाह।
राघब कलाकेन्द्र आबि गेलाह। विभाषके बजा सब सामग्री अपना लग मंगा लेलाह। पीएचडी थीसिस लिखनाई राति-दिन शुरु केलनि।

अहि तरहे राघब तीन मासमे विभाष लेल पीएचडी लिखि विभाष केर माता-पिताक भावनात्मक ऋणसँ उऋण भेलाह।
विभाष पुरा थीसिसमे पूर्णविराम के कहैत अछि अर्धविराम तक नहिं लिखलनि। ऊपरसँ विभाषके राघब कहलथिन जे अपन धन्यवाद ज्ञापन लिखि लेथि। विभाष ओहू लेल तैयार नहिं भेलाह। राघबक आगा अस्त्र राखि देलनि। लाचार अपन मानक कोर नोरैत राघब विभाष केर धन्यवाद ज्ञापन सेहो लिखलनि। ओहिमे राघब जानि बुझि

कऽ अपन नाम नहिं लिखलाह। विशास छलनि जे विभय या तऽ स्वयं लिख लेताह अन्यथा राघबके कहतनि जे अहा अपन नाम लिख लीय। मुदा विभय कहाघ पाणी छलाह। राघबक योगदान हुनका लेल अतबे महत्त्वपूर्ण लगलनि जतेक योगदान एक हरबाहक कृषिकार्यक संपादन मे। बल्कि ओहू सँ कम। कारण हरबाहके काजक बदला ओकर बोइन भेटैत छैक।

लेकिन विभय अतबो जरूरी नहि बुझलनि जे राघबक पक्ष कहलजता अवगत करवनि। ऊपरसँ अपन पती मेधा, आ किछ बात लग अपन पा ंसक पुल बनहैत रहला विभय।
संयोगसँ किछकबे दिनक बाद विभयक माता पिता विभयसँ भेट करक हेतु दिल्ली एलखिन। राघबके जखन पता लगलनि तऽ राघब भेट करऽ गेलाह। भेट होइतहिं विभयक पिता बाजि उठलनि: "कतेक आ ीिद दिय अहाके राघबजी! अगर अहा नहि लिखबा लेल तैयार भेल रहितौ तऽ सातो जन्ममे विभय बूते पीएर ि नीबिसस लिखल नहि होयतैक।" राघब विनिमतासँ सब बात सुनैत रहला।

फेर विभयके पिता बजलाह: "लेकिन अहाक नाम कतौ धन्यवादिमे नहिं अछि राघबजी?"
राघब: "पता नहि, ा ायद विभय बिसरि गेल हेताह।"
विभयक पिता: "ई कोना भऽ सकैत अछि? हमरा बुझल अछि जे स्पूर्णनीबिससमे विभयक नाम सेहो राघबजी लिखने छथि। फेर विभय नाम किएलेल नहि देलाह?"
विभय सकपकाईत बजलाह: "हम पूछने रही। राघब जी नहि लिखलाह।"

काभचक वाता कहलकान: “अहा अपन अकमण्यता अहूमे पदव त्त केलहुँ। अहाक हम वाता छी हमरा अक्ह बातक घोर दुःख अक्छ।” काभच मुडी गोतने बात सुनैत रहला।

कक्छु मासक बाद काभच केर पीएरिी पूणचभऽ गेलक। अिािचभेक्ट गेलक। काभच आब िॉ काभच भऽ गेल छलाह।

एकबेर हेमासँ कोनो बात पर गप्प भेलक तऽ राघबक पती कक्ह देलकान जे राघब काभच केर पीएरिी नीक्सस क्लखने छलाह। हेमा काभचसँ पुछलक। काभच रुप भऽ गेलाह। हेमा मुरझा गेलीह। पक्हल बेर हेमाके काभचक पती बनबा पर ग्लाक भऽ रहल छलक। “अहा हमरा एखन असगर छोक्ड क्दय! बस।” अतेक कहैत हेमा अपन हान कपार पर धऽ लेलक। काभच कारनक्क गंभीर बनल ओतएसँ दूर भऽ गेलाह।

दोसर क्दन काभच एकबेर पुनः राघबसँ पुक्छ देलकान: “राघब! अहा अपन पतीके बता देने छलयक जे अहा हमर पीएरिी नेक्सस क्लखने रही?”

राघबके इ पश जेना तामस रढा देलकक्ह “अहा की बुझैत छी! ओ हमर पती छक हम हुनका नक्ह सूक्त करबक तऽ ककरा कहबै? अहा अतेक काल्चज छी जे हमर नामक कतौ उदलेख तक नक्ह केलहुँ। अपन पती हेमा लग अपन िदुश्यक बखान करैत छी। आ हम ओतेक मदक केलाक बादो रोर जका रही! एहने बात छल तऽ अपनेसँ क्लख क्लतहुँ।” एकर बाद दूनू रुप भऽ गेलाह।

खैर, कक्छु क्दनक बाद राघब नौकरीसँ त्यागपत दऽ देलाह। काभचसँ मुक्कात भेट गेलक। समय रलैत रहलैक। पार मासक भीतर एकक्दन काभच दस बजे राक्तमे कनैत फोनसँ सूक्त केलकान जे काभचक वाताक कधन एकाएक हृदयगक्त नवह गेलासँ भऽ गेलक। राघब

बहुत दुखी भेलाह। जतबे दुःख अपन बाबताक मृत्यु पर भेल छलन्हि ओतबे ददचतखनो भेलन्हि। एक बातक संतोष जरूर भेलन्हि नीक भेल कनभचा केर पीएरिी भऽ गेलन्हि अन्यथा हुनक बाबताक आत्मा भटकैत रहितन्हि जे हुनक पुत कुमार कनभचासँ िॉ कनभचा नहि भऽ सकलाह!

समयक रक रलैत रहलैक। ककछु व्यक्तिगत विितासँ राघब नौकरीसँ त्यागपत दऽ देलन्हि। कनभचा संस्थाके धेने रहलाह। सरकारी तंतमे जेना होइत छैक, होइत रहलैक। कनभचाक तरकी हुनक पीएरिीक कारण होइत रहलन्हि। कुरता-जीन्स पहिरने कनभचा अपन देहक आ िस्थाक स्पेषणसँ विदान भेल रहैत छथि। भीतरक कनभचाके के देखैत अछि? ककरा लग समय छैक?

नोट: इ कना पुणतः कादपनिक अछि। एकर सम्बन्ध कोनो जीवित अनि मृत व्यक्ति या संस्थानसँ नहि छैक।

फकडाक संग याता करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानविस्तीय विवेचना

लोकक सूसार अनंत महासागर जका अछि। लोक जखन मिथिलाक लोक हो अथवा मैथिलक लोक हो तऽ एकर विस्तार कल्पना सू बाहर भऽ जाइत छैक। मिथिलाक लोकक जड़ि छथि मैथिलानी। हुनक जीवन आइओ लोक सू छन्हि, लोक सूगे छन्हि। आजुक भौतिक आ वैज्ञानिक समाज मे सेहो मैथिलानी लोक के धेने छथि: लोक मैथिलानी सू बढैत अछि, मैथिलानी लोकक गति सूग गतिमान छथि। गति मुदा दिशाहीन नहि अछि। गति एहेन अछि जे जड़ि सू जुडल अछि। ओकरा उडब, घुमब, दौडब, बाहर-भीतर करब नीक लगैत छैक मुदा ओ अन्ततः अपन जड़ि लग बेर-बेर आबि जाइत अछि। ठीक ओहिना जेना पक्षी सभ चारै एक दिशामे 40,000 किलोमीटर अपन पारिस्थितिकी सू दूर उडला, घुमला आ परिभ्रमण केलाक बाद पुनः अपन भूमि अथात मूल पारिस्थितिकी मे आबि जाइत अछि। ओहिना जेना सूरदास (1478 — 1573) केर जहाजक चारै बेर-बेर उडलाक बाद जहाज पर अबैत रहैत अछि:

"जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आबै"

मिथिलाक अथवा आजुक वैज्ञानिक युग मे मैथिलक लोकक पथा, परम्परा, खान-पान, बोध-बेबहार, गीत-नाद, अनुष्ठान, पूजा-पाठ, तिथि-पाबनि, खिस्सा-कहानी, फकडा, सब किछु अधिकांशतया मैथिलानी बचा कऽ रखने छथि। ताहू समय मे जखनिया हुनका पढबाक स्वतंतता पुरुष जका नहि छलनि अथवा नाम मात्र मध्यला के छलनि तखनियो इ सब लोक परम्परा के अपन भावना — प्रेम, विरह, वेदना, कष्ट, यातना, जान, उदेग, शोषण, दोहन, आर्थिक विपनता, पुरुषक उत्पात,

आछि व्यक्त करबाक पछिलक स्पेस केर रूप मे व्यवहार करैत छलीह। ओ स्पेस एहेन स्पेस छल जाहि मे कनकालोकक के अपन कथ्य व्यक्त करबाक स्वछंदता छलनि, बल्कि एखनो छनि। पुरुषक कोनो दखलन्दाजी ओहि स्पेस पर नहि छलैक आ ने आइओ छैक। इ बात कहि गंभीर कलखा गेल आ मानविधिकार सूत्र होइत नारी स्वतंतता, नारीवाद आ स्त्री विषयक अध्ययन, विचिन कदस टघकर गेल। बात अनेडे बहुत पैघ स्वरूप लऽ सकैत अछि। ओना एहि बात पर मंथन आ घमर्थन केर जररत अपन मैथिल समाज मे अछि लेकिन ताहिलेल इ प्लेटफामहिमरा उक्यत नहि लावा रहल अछि। तखन की हो? किछु नहि, बात के लोकक जागत मनःस्थिति मे राखि आगा बढि जाइ। जखन अधजिगवत सू पूर्णजागवत कदस ध्यान जेतनि तऽ अहि पर विचार त्र हएत। विचारक घमर्थन असगरे नारी नहि करती, पुरुष सेहो ओहि भाव, इतिहास, पितृसतात्मक समाजक सूरचना आ ओहि सूरचना मे कालक अनुरूप पवरतिन आबि लेल उदार हेताह आ स्त्री-पुरख दूनू कावल जीविनक गाडीक दू पहिया बनि एकर सम्यक कदान कदस अगसर हेताह।

बात पर अबैत छी जे कोना लोकक एक विधा फकडाक माध्यम सू मैथिलानी अपन सब तरहक मनोभाव के अदौ सू व्यक्त करैत आबि रहल छथि। फकडा के 'कहबी' , 'लोकोक्ति' सेहो कहल जाइत छैक। सबसू पहिने इहो जानब आवश्यक जे फकडा' क अर्थ की भेल? एकर कोनो सर्वमान्य परिभाषा सेहो भऽ सकैत अछि की? सर्वमान्य परिभाषा अछि तऽ मैथिली लोक सूसारक फकडा ओहि विशाक परिभाषा सूग कतऽ धरि चलि पेबा मे सक्षम अछि?

फकडा खाटी लोकक स्तुि क्थक लोकक उक्ति अर्थात "लोकोक्ति" । लोकक कहब अर्थात "कहबी" । लोक पुरान फकडा के

सहेजने रहैत अछि आ निकि क्रमाण करैत ओकरा ठोसगर आधार दैत रहैत अछि जाहि सू आजुक गढल फकडा भविष्य मे सार्भिौमिक बनि सकय। सूस्कृत मे ‘‘लोकोक्ति’’ अलंकारक एक भेद सेहो मानल गेल अछि। अंगेजी मे फकडा अर्थात लोकोक्ति के Proverb कहल जाइत छैक। ताहि जाने अंगजी Proverb केर परिभाषा किछु अहि तरहे करैत अछि:

“A proverb is a saying without an author.”

एकर अर्थ भेल फकडा एहेन उक्ति अछि जकर कोनो रचनाकार नहि होइत छथि। मैथिली लोक मे व्याप्त फकडा के देखला सू इ जात होइत अछि जे मैथिलीक फकडा अपन स्वरूप मे एहि सू अधिक व्यापक अछि। हमरालोकनि अनेक एहनो फकडाक पयोग करैत छी जकर रचनाकारक नाम हमरा सबके जात रहैत अछि: गोनू झा, विद्यापति (1352-1448), तुलसीदास (1511-1623), मीराबाई (1498-1557), कबीरदास (1398- ?) आदि। रामचरितमानस सू अनेक दोहा के मिथिला आ मिथिला सू बाहर फकडा’ क रूप मे व्यवहार होइत अछि। जेना कि

“यहा न लागै राउर माया”

अर्थात

“लंका निसिचर निकर निवासा
यहा कहा सज्जन केर बासा”

इ दूनू तुलसीदासक रामचरितमानस सू लेल गेल अछि।

अहि तरहे

“पुरखक नहि विशासे”

“एकसर तारा कियो नहि देख
लिखल कुमास अमंगल लेख”

"भनहि विद्यापति सुनू हे सुनयना
सब बेटी सासुर जाथि"
महाकवि विद्यापतिक रचित पद सू लेल गेल अछि।
किछु फकडा गाम विशेष आ स्थान विशेष मे पचलित होइत अछि। ओहि फकडाक निर्माण मे गामक कोनो विशेष घटना अथवा ओहि घटना सूग व्यक्ति विशेषक नाम जुडल रहैत अछि। उदाहरण लेल मधुबनी जिलाक अरेड गाम मे 55 विधिपतिने नाथ बाबू नामक एक आशु कवि आ सभालोचन भेलाह। ओ अपन पत्युत्पन्नमति लेल विख्यात छलाह। ओ किछु-किछु एहेन पदक रचना केलनि जे फकडा बनि गेल। सब फकडा हुनक नाम सू जानल जाइत अछि। नाथ बाबू के तीन बीघा खेत छलनि। एकबेर ओ अपना खेत मे मौथा घास उखाडैत छलाह। बाट चलैत गामक लोक पुछि देलकनि:
गामक लोक: ''नाथ! की करैत छी?''
नाथ:
"नाथ बाबू छथि काल वारहस्त
तीन बीघा केर जोता
सबहक खेत मे धान उपजैत अछि
नाथक खेत मे मौथा"
तहिया सू इ फकडा पसिध भऽ गेल:
"सबहक खेत मे धान उपजैत अछि
नाथक खेत मे मौथा"
अहि तरहे विभिलाक अधिकांश गाम मे किछु ने किछु लोक भेल छथि जे फकडा निर्माण केने छथि आ ओ फकडा गाम मे पचलितं अछि। ओहि फकडा सूग ओकर निमाता सेहो गामक लोकक कंठ मे रचल बसल छथि। उदाहरण हमरा लग अनंत अछि मुदा विषय सू

विषयातर नञि होई ताञे आगा बढब जररी।

िहद् िहंदी कोि मे लोकोक्ति केर पिरभाषा कञा विस्तार सू भेटैत अछि:

"विभिन पकार के अनुभिो, पौरािणक तथा ऐितहािसक व्यक्तियो एिं कथाओं, पाकृितक िनयमो और लोक िशासो आिद पर आधािरत चुटीली, सारगिभत, सूक्ति, लोकपचिलत ऐसी उक्तियो को लोकोक्ति कहते है, िजनका पयोग िकसी बात िक पुिष्ट, िवरोध, सीख तथा भिवष्य-कथन आिद के िलए िकया जाता है।"

एिह सू एक बात िदस स्पष्ट सूकेत इ भेटैत अछि जे हमरा लोकिन अपन िमिथला मे उपलब्ध फकडा के देखैत एक स्थानीय अथिा काजक पिरभाषा बना ली। इ पिरभाषा हम अपन जान, मानिसिस्त, लोकिवदा (फोकलोर) मे पिवशण आ िमिथला सू पाप्त फकडाक सूचयन आ ओकर सूरचना के आधार पर गढबाक यत कऽ रहल छी:

"मैिथली फकडा जकरा लोकोक्ति सेहो कहल जा सकैत अछि, लोकक दारा पचिलत एहेन कथन अछि जे पौरािणक कथा, गन्थ, धमिसिस्तक दृिष्टान्त, घटना िविशेष सू िवकिसत िवचार, हास, पिरहास, मनोभाि, दुःख-ददि पेम, अपनिय, िलंग भेद, जातीय अथिा सामुदाियक सिभाि आ गुण, छोभ, िैराग्य, उदासी भाि, पकृित सू तारतम्य, जिड सू जुडाि, पूििज सू िसनेह, जानक सूचरण, आिद भाि व्यक्त कएल जाइत अछि।"

फकडा के सिरप के अगर गंभीर बिन देखी तऽ स्पष्ट हएत जे फकडा' क उधरण देमय बला लोक ओिह सूग व्यक्ति अथिा पिरिस्थित के ओिहना सीब लैत अछि जेना कोनो मिहला सुई मे ताग घुसा ओिह सू कोनो िस्तु अथिा कलाक िनमाण करैत अछि। तीनू

सुई, ताग आ स्त्रि आपस मे एना गुथा जाइत अछि जे तीनूक अलग-अलग अस्तित्व ताकब दुष्कर। तीनूक समग अस्तित्व सू कला बनैत छैक। सएह भेल फकडा। फकडा के एकाएक उमडल मनोदशाक सम्प्रेषण सेहो कहल जा सकैत अछि जाहि मे सम्प्रेषण के अधिक प्रमावणक आ प्रभावित्पादक बनेबा लेल उधरणक मदति लेल जाइत छैक।

कनि फकडा केर स्वरुप आ ओकर अनेक रुप पर विचार सेहो करक चाही। मिथिला मे व्याप्त फकडा के स्वरुप आ उपलब्धता देखैत कहल जा सकैत अछि जे फकडा के चारि भाग मे विभक्त कएल जा सकैत अछि:

(क) वैश्विक फकडा

(ख) अखिल भारतीय स्वरुपक फकडा

(ग) मिथिलाक फकडा

(घ) स्थानीय फकडा

आब कनि उपलिखित फकडाक स्वरुप पर विचार करैत छी।

(क) वैश्विक फकडा

वैश्विक फकडा, जेना कि नाम सू स्पष्ट अछि, एहेन फकडा भेल जे समस्त विश्व मे पचलित अछि। अहि तरहक फकडाक पयोग मैथिली मे मूल फकडा के अनुदित कए होइत अछि। उदाहरण हेतु:

Rome was not built in a day। -"रोमक निर्माण एक दिन मे नहि भेल"

Child is the father of a man। - बच्चा पैघ लोकक पिता होइत अछि

Necessity is the mother of invention। - "आवश्यकता अविष्कारक जननी होइत अछि" ।

विशाक फकडा अपन विशाक सभाकि कारणे आ सास्कृताक आदान-पदानक कारणे मैथिली आ आन भाषा आ सूस्कृता मे सदैि पयुक्त होइत रहल अछि। लोकक विभिन्न देि मे भमण, दोसर देि आ सूस्कृताक मध्य आदान-पदान, साहित्य आ भाषाक अध्ययन आदि एकर फैलाि आ व्यिहारक कारण बनैत छैक।

(ख) अखिल भारतीय सिरपक फकडा

अहि तरहक फकडा समस्त भारत आ ताहू मे हिंदी बहुल क्षेत्र मे पयुक्त होइत अछि। मिथिला मे सेहो ओकर मूल रप मे एकर पयोग होइत अछि। कखनोकल भाषाक अनुिाद सेहो कऽ देल जाइत छैक। किछु उदाहरण देखैत छी आ ओकर विििचना करैत छी:

ना राधा को नौ मन घी होगा ना राधा नाचेगी —नहि राधा के नौ मोन घी हेतिन ने राधा नचती।

ऊंट के मुह मे जीरा —"ऊंटक मुह मे जीरक फोडन"

ऊपर के उदाहरण मे मूल हिंदी फकडा के मैथिली मे अनुदित कए कहल गेल अछि।

आब दोसर देखू:

"लेना देना कुछ नही मुहब्बत एक चीज है।"

"का िषा जब नदी सुखाने/ समय चुक पुिन क्या पछताने"

"कबीरा खरा बाजार मे लिए लुकाठी हाथ/ जो घर जारे आपना चले हमारे साथ"

"ढाई आखर पेम का पढे सो पण्डित होय"

"बडे मिया तो बडे मिया/ छोटे मिया सुभानअल्लाह"

"मिया की जुती मिया का सर"

उपरोक्त सब फकडा अपन भाषा आ ओकर सूस्कार सूग मिथिला मे अबैत अछि। मैथिली भाषी एकर पयोग अपन भाषा आ व्यिहार मे

एकर मूल रूप मे बिना कोनो जोड-तोर केने, बिना कोनो अनुवाद के करैत छथि आ एकर भाव सेहो बिना कोनो झंझट के स्पष्ट होइत जाइत छैक। अखिल भारतीय फकडा मे कोनो भाषा जेना मगही, भोजपुरी, नेपाली, बंगाली, अवधी, उदू आदिक फकडा आबि सकैत अछि। अखिल भारतीय कहक अर्थ हिंदी मात्र नहि लागक चाही।

(ग) मिथिलाक फकडा

मिथिलाक फकडा कहब के तात्पर्य भेल जे कोनो फकडा जे समस्त मिथिला क्षेत्र मे बाजल जाइत अछि (ओ देवघर, सूथाल परगना, दुमका, भागलपुर, मुंगेर सू लऽ कऽ नेपालक मैथिली भाषी क्षेत्र धरि पसरल लोकक फकडा), व्यवहिरत होइत अछि से फकडा। इ फकडा सब कमोवेश एक स्वरूपक अछि। अहिमे यदकिा एक बातक सम्भावना भऽ सकैत अछि जे किछु फकडा जे अखिल मिथिलाक स्वभाव अथवा प्रकृति के अछि तकर सूचयन सब मैथिली भाषी क्षेत्र सू लोक परम्परा सू लिखित परम्परा मे नहि भेल हो। अगर से नहि भेल अछि तऽ मैथिली साहित्य आ सूस्कृति के विधकमी एवं साहित्यजीवी लोकनि एहि बात के गंभीरता सू लेथि आ समस्त मिथिला क्षेत्र सू लोक परम्परा मे व्याप्त फकडा सबहक सूचयन कए ओकर सूरचना आ व्यवहार पर विध करथि।

(घ) स्थानीय फकडा

स्थानीय फकडा ओ फकडा भेल जे कोनो विशेष गाम अथवा ओकर अगल-बगल मे कोनो घटना विशेष, अथवा कोनो व्यक्ति विशेष दारा रचल गेल हो आ ओहि परोपटा मे लोक व्यवहार मे प्रचलित हो। स्थानीय फकडा के सम्बन्ध मे एक बात कहब अछि जे कालक यात्रा सूग नहु-नहु महत्वपूर्ण फकडा किछु समयक बाद अखिल

मिथिला आ बाद मे अखिल भारतीय आ कखनो काल अंतिम डेग फानैत विश्वक फकडा सेहो बनि जाइत अछि। स्थानीय फकडा केर उदाहरण ऊपर मे देल गेल अछि तांहि एकरा फेरो सू देमाक दरकार नहि अछि।

अहि तरहे दू बात एक सामान्य पाठक लेल स्पष्ट भऽ गेल:

· पहिल, फकडा की अछि, एकर परिभाषा विशेष रूप सू मैथिली भाषा आ सूस्कृतिक सन्दर्भ मे की होबक चाही।

· दोसर, मैथिली सूस्कृति मे प्रचलित फकडा के कतेक श्रेणी मे बाटी देखल जा सकैत अछि।

आब अहि प्रारम्भिक जानकारीक बाद अहि लेख के आत्मा अर्थात फकडा द्वारा मानवि या मैथिलानी के मनोदशाक सम्प्रेषण कोना होइत अछि। कोना ओ सब अपन मोनक भाव, उतार-चढाव, नीक-अधलाह, प्रेम, वेदना, विरह, सामाजिक स्थिति, उमंग, दुःख, आर्थिक विपनता, आदि के व्यक्त करैत छथि। व्यक्त करब एक बात भेल आ ओहि अभिव्यक्ति के बुझब आ ओकरा सूग आत्मसात करब दोसर बात। इ दूनू बात अगर मैथिली फकडा आ नारी मनोदशा के देखब तऽ भेटत। भाव अधिकाश अवस्था मे एकक अर्थात व्यक्ति विशेषक नहि अपितु समस्त नारी समाज लेल, तऽ कखनोकाल एक वर्ग विशेषक नारी समाज लेल होइत अछि। समाजक सूरचना जे आइ तीव्र गति सू बदलि रहल अछि तांहि मे सामाजिक-सास्कृतिक-इतिहासिक आ जेडर डिसकोर्स के ध्यान मे रखैत अहि विषय पर गहन शोधक दरकार अछि। हम अपन सीमित जान आ साधन के हिसाब सू अहि पर किछु लिखबाक यत कऽ रहल छी।

लिखबा सू पहिने इ स्पष्ट कऽ देनाइ आवश्यक जे समाज बदलि रहल अछि। प्रकृति अपन गति पकडि रहल अछि। प्रकृति सूग

मैथिल मानविकता सेहो बदलि रहल अछि। लोक बेटा बेटीक विभेद कम कऽ रहल छथि। सब क्षेत्र मे आन समाज जका मिथिलाक धीया सेहो पगतिक पथ पर साधल डेग दऽ रहलि छथि। हालहि मे मिथिलाक एक बेटी भारतीय ायु सेना मे पायलट के र प मे चयनित भेलीह अछि। हुनकर चयन पर समस्त मैथिल समाज अपना आपके गर्िवत अनुभ कऽ रहल अछि। ओहि धीया के चार दिस सू ुभकामना भेटि रहल छनि। इ घटना बदलैत मनःस्थितिक पर्िचायक अछि। एकर अथर् इहो नहि जे सब किछु ठीक भऽ गेल अछि। विशि समुदायक बाते छोडी दी, भारतषिर् मे सेहो हम सब बहुत समुदाय, समाज, िआ राज्य सू नारी सूचेतना, विकास मे एखनो बहुत पछुआएल छी।

समाजक सूरचना देखला सू एहेन सन लगैत अछि जे समाज मात बेटा लेल बनल अछि। ककरो अनेक बेटा भेलैक तऽ ओ भागि्त आ एकर विपरीत किनको अनेक बेटी भेलनि तऽ बडड अधलाह। अहि स्थिति मे समाज ओहि बेटी सभक तुलना चालुआ सू करैत कहैत अछि जे फला व्यक्तिगन अथार्त पुरख के “खद-खद बेटी” छनि। स्मरणीय तथ्य इ अछि जे खद-खद ब्दि चालुआ लेल कएल जाइत अछि।

बातक अंत अतए नहि होइत अछि। सम्मर गीत जे बेटीक बिआह सू पहिने गाएल जाइत अछि मे माय अपन व्यथा बतबैत कहैत छथि, ‘बहुत भऽ गेल कोनो ढंगक बर नहि भेट रहल अछि। बेटीक जन्म पहाड भऽ गेल! की करी कि नहि?’ बेटी मायक दुःख सू रवित होइत अपन नारी होबाक अस्थिा सू पिताप करैत गीत आ फकडा के मादे कहैत छथि ‘माय, अनेडे हमरा जन्म कथिलेल देलहू? अहि सू बढ़िया तऽ इ रहैत जे हमरा अथात बेटीक जन्म सू पहिने चालीस

पचास मरीच बुकि कऽ खा लेलतहु जकर झास सू बेटी गभहि मे तुरन्त जाइत आ जिनगी भरि लेल कनियाक सूताप सू मुक्ति अहाके भेट जाइत!

"कन्था लए आहे अम्मा कनियाक जनम देल
खैतहु मरिच पचास
मरिचक झास सू धिया दूरि जैतय
छुटि जाइत कनियाक सूताप"

समाज एहि मानसिकता मे जीबैत अछि जे बेटी घर मे अधिक भेलाक अर्थ भेल धनक क्षय आ लक्ष्मीक पस्थान। एक फकडा मे अहि बातक स्पष्ट पमाण भेटैत अछि:

"विप टहलुआ मेष धन
या बेटीके बाढी
ताहू सू धन नहि घटए
करि पैघ सू रािड"

इ फकडा पमाणक सूग डंकाक चोट पर कहैत अछि जे बाम्हणक बालक के नौकर टहल टिकोरा करक हेतु राखब सू, छागर-बकरी पोसला सू आ बेटीक सूख्या बढला सू धनक क्षति होइत अछि; तकर बादो अगर सम्पत्ति बाकि गेल तऽ अपना सू पैघ हैसियत केर लोक सू लडाई ठानि लिय, सम्पत्ति बरबाद भऽ जेबे टा करत।

फकडाक विचिना सू लगैत अछि जे बेटी के लोक स्नेह करैत अछि, मुदा बेटी कोखि मे अबैक तकर कामना नहि करैत अछि। भले बेटीक सुरक्षा कखबही घैल जका कएल गेल होइक मुदा ओकर प्यार आ दुलार बेटा जका केल जाइत छैक। अर्थभेल, बेटा अधिक महत्पूर्ण। अन्यथा, बेटी के बेटी जका दुलार किएक नहि?

"घीबक घैला जका पोसलहु गे बेटी
बेटा जका कएल दुलार"

मिथिला मे कोनो महिला लेल बेटाक कामना अतेक पबल होइत छैक, तकर उतर देब कठिन। एक चिरै बहुत कारुणिक स्वर उत्पन्न करैत रहैत अछि। ओहि चिरै के सम्बन्ध मे पचलित मान्यता इ छैक जे कोनो जन्म मे ओ चिरै एक मानवी छलि। ओकरा अनेक बेटा होइत गेलैक आ सब मरल गेलैक जखन कि जतेक बेटी भेलैक सब जिअल गेलैक। जखन ओ महिला मरलि तऽ बहुत दिन धरि ओकर आत्मा बेटा लेल भटकैत रहलैक बाद मे ओकर स्वरूप बदलि गेलैक आ ओ चिरै बनि जनम लेलक। एखनो ओकरा पूर्वजन्मक बात सब स्मरण छैक तहिं ओ कारुणिक स्वर मे अपन व्यथा कथा कहैत रहैत अछि:

"टी टी टी बिसी तेल
बेटा भेल मरि मरि गेल
बेटी भेल जीब जीब गेल"

अगर सिर्जनात्मक दृष्टिकोण सू उपलब्ध फकडा सबहक विवेचन कएल जाय तऽ पता चलैत अछि जे फकडा तत्कालीन समाजक दर्पण अछि; समाजक ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। अहिबातक पुष्टि निम्नलिखित फकडा सू होइत अछि:

"जनक नगर सू चलली हे सीता
अम्मा देलकि रोदना पसार
के मोरा सीता लए बनिया जोगेतै
के मुख करत दुलार"

इ फकडा जेना भक सू लोकक आँखि खोलैत हो! इ कहैत अछि

जे ताजा, तप्पत भोजन खेबाक अधिकारी बेटा अछि, आ छि, बसिया भोजन बेटीक भाग मे लिखल रहैत अछि। बेटी जखन बिआह के बाद सासुर जा रहल अछि तऽ माय कनैत सोचैत छथि, ‘आब सासुर मे हमर बेटी लेल इ बसियो अन के जोगा’ क राखत आ के एकर गाल पकड़ि दुलार करतैक?’ इ फकडा बहुत पैघ याता लेल चलि पडैत अछि। लडकी मायक चिंता एहि फकडा मादे देखू। ओ कहैत छथि जे आब हुनका बेटी लेल इ बसियो भोजन ओकर सासुर मे के रखतैक? के ओकरा सू पेम सू बजतैक? यएह सब सोचि-सोचि मायक छाती बेर-बेर फाटि रहल छनि। इ फकडा बतबैत अछि जे कोना लडकी सासुर जाइते देरी उतरदायित्यकि भार सू दबा जाइत अछि। इ फकडा देखन मे छोटन लगे/ घाि करे गंभीर जका अछि। एक आर फकडा ऊपर विगति फकडाक अथसि्पस्ट करैत अछि आ बेटीक बिआह भेलाक बाद सासुर गेला पर की व्यस्थिति होइत छैक तकर खाका खीचैत छैक:

“जब डाकि चलल ससुर घर देस
घरक चालनि होयबो हे”

अथाइ भेल जे आइ धरि जे धिया नैहर मे सुकुमारि छलीह से आब दोसर देस दोसर लोक मे जा रहल छथि, ओतय हुनकर की गति हएत! काज करैत-करैत आ लोकक बात सुनैत-सुनैत अपसियात रहतीह। मोन चालनि जका अनेक खंड मे विखिण्डत भऽ जेतनि। मतलब, इ फकडा भविष्यक यातना दिस इािरा करैत अछि।

मिथिलाक नारी एक वंचित मनोदाि आ परििि मे जीबैत छलीह। कछुके जीिन मे पतिनि आदि रहल छनि अधिकाि एखनो माता, ज्येष भाता, शेष एि अविभाकि पर आश्रित छथि अथाि हुनक क्षणिि के बलधकेल स्ीकार करबा लेल विि छथि। आ यिकि बात

इ छैक जे लडकी के कहेन लडका चाही आ ओकरा मोन मे की बात घुमि रहल छैक तकर निमित्ति सेहो गीतगाइन सब अपन गीत आ फकडाक माध्यम सू बजैत छथि:

"जखन चलला बाबा रिताकय
आगा भए रुक्मिणी ठाढ़ हे
कर जोड़ि विनती करै छी यौ बाबा
सुनू बाबा विनती हमार यौ
जुनि बाबा ताकब चोर चंडाल के
जुनि आनब तपसी भिखारि यौ"

नायिका अपना लेल अपन शेष सू एक सामान्य बर जे स्नेहक अर्थ जनैत होथि के आकांक्षा रखैत छथि। हुनका चोर, चंडाल, लुच्चा-लफंगा अथवा कोनो नंग धरंग साधू सन्यासी नहि चाहियनि। इ फकडा एक महिलाक दासताक जीबैत साक्षी अछि।

फकडा पढैत चलू आ समाजक गढनि देखैत चलू। फकडा एक-एक तह खोलैत चलत। स्थिति इ भऽ जाइत अछि जे कोनो महिला अवाला जनम मे फेरो महिला नहि बनए चाहैत छथि। दिनकर दीनानाथ सू निहोरा करैत कहैत छथि जे आब कहियो हुनका तिरिया अथात नारी रुप मे जन्म नहि देथि:

"बेर-बेर अरजलौ हे दीनानाथ
दीनानाथ तिरिया जनम जुनि देहु"

पितसतात्मक समाज अपन मायाजाल मे तेना ने स्त्रीगन के फंसा लेने अछि जे ओ सब छरपट- छरपट तऽ करैत रहैत छथि, मुदा ओहि मायाजाल के तोड़ि कहा पबैत छथि! समाज सुग्गा जका रटा देने छनि, रटि लेने छथि:

"बेटी ससुरे नीक की सरगे नीक"

फेर की सब मैथिलानी इ मानि लैत छथि जे कोनो विषम परिस्थिति हो, प्रताड़ना हो, शोषण हो, पति सौतिन लऽ अबैथ, भोजन सम्मान भले ने भेटए, कोनो स्थिति मे सासुर नहि छोडी आ नैहर के तऽ चर्चे बेकार! बेटीक डाला नैहर सू सासुर लेल उठैत अछि आ सासुर सू बेटीक लाशि कि डोली उठक चाही। फेरो एकरा समाजिक सूरचना सूगे जोडि देल जाइत अछि। विआह होइते देरी नैहर मे बेटीक अधिकार समाप्त आ भाउजक चिर्सि पारम्भ। अगर विआहलि आ सासुर बसैत बेटी नैहर मे किछु दखल देलकि तऽ इ अमान्य। फकडा एकरा एहि तरहे प्रमाणित करैत अछि:

"घर आूगन भौजी के
छल छल करथि ननदो"

अथस्पि भेल आब जे बेटी विआह सू पूर्वि पिताक घर पर अपन अधिकार बुझैत रहैत छलीह से हुनकर नहि अपितु हुनक भाउजक भऽ चुकल छनि। ओ अधिकारहीन भऽ चुकलि छथि। कोनो पुरुख ज अहि बातक अनुभि करए चाहैत छथि तऽ एकबेर इ कल्पना मात कऽ लेथि जे विआहक बाद एकाएक हुनका सम्पति सू बेदखली कऽ देल जाइत छनि, सामाजिक व्यिहार मे ओ विष्कासित भऽ जाइत छथि। फेर कहेन अस्थिा मे रहि सकैत छथि। इ कल्पना मात हमरा सबके कशकारी लगैत अछि आ तकरा एखनो धरि मैथिलानी जीब रहलि छथि से कतेक दुखक बात! आ अहि बातक भान फकडा कोना खोलिकऽ स्पि करैत कहैत अछि।

एक अस्थिा एहेन होइत छैक जखन एक महिला अपना आपके असहाय पबैत अछि आ लगैत छैक जे सब सूस्था, सामाजिक मयादा, विआह-दान, कुल-परिि‍ार सब किछु बेकार छैक! लोक अनेडे मायाक बंधन मे बन्हा जाइत अछि! इ सोच कखन होइत छैक? तखन जखन

ओ पसकि दिना सू लहालोट भेल इमहर-ओम्हर ओंघरैया मारैत रहैत अछि। तखन ओकरा लगैत छैक जे अहि सू बढ़िया ओ बिआह नहि केने रहैत आ माता-पितामाहक घर मे जीनि भरि कुमारि बनल रहैत:

"कथिलेल बाबा बियाहलनि देलनि ससुर घर रे
ललना रे रहितहु बारी कुमारि दरद नहि जनितौ रे"

अनेडे बाबा हमर बिआह करा ससुर घर भेज देलनि। नीक रहैत जे कुमारि भेल नैहर मे रहितहु। कम सू कम अहि पचण्ड ददिसू बंचि तऽ जैतहु!

मिथिलाक सब लोकगन अपना आपमे सीता देखैत छथि। हुनका सबके लगैत छनि जे सीता सूगे रामक व्यहिार उचित नहि रहलनि। अतेक कोमल सीता के कोना कठोर भेल राम नाना तरहक यातना देलाह! एहेन राम सूग बिआहक की लाभ? जिनगी भरि सीता के सुख कहा भेटलनि:

"राम बियाहने कोन फल भेल
सीता जन्म अकारथ गेल"

आ अन्ततः सीता के राम धोबी के कहला पर तखन घर सू भगा देलथिन जखन सीता रघुकुलक कुल दीपक के जन्म देबा लेल गर्भ सू छलीह! एहनो कही कतौ भेलैक अछि:

"राम बियाहने कोन फल भेल
सीताक जन्म बियोगे गेल"

बात अतए समाप्त नहि होइत अछि। कहल जाइत अछि जे जखन सीता दिनाक अवधिकता सू भरि गेलीह आ राम हुनका बाल्मीकि आशम सू लि कुकि सूग अयोध्या चलबा लेल जिद ठानि देलथिन तऽ सीता पुछि देलथिन: "हमर अयोध्या मे आब कि पयोजन, हमरा

तऽ अहा कककाल देने छी?"
एक्ह बात पर राम उतर दैत छकथन: "अहाक कबना हमर अशमेध यज सूभि नक्ह अकछ।"
सीता: "फेर एखन धकर अहा कोना करैत रही अशमेध यज?"
राम: "अहाक कोनो उदेस हमरा लग नक्ह छल। हम माकन लेने रही जे अहाक कधन भऽ चुकल अकछ। एहेन अकस्थिा मे िास्त्र इ विधान दैत अकछ जे यजमान सोनाक पती बना यज पर बैस सकैत अकछ। हम सएह कएल। सोनाक सीता बना अशमेध यजक िदी पर बैसल रही।"
रामक इ बात सुकनतक्ह सीताक करेज फाकट गेलकन। आूखी नोरा गेलकन। भेलकन, 'रामो सन पकत अतेक मतलबी भऽ सकैत छकथ!' भािििि मे अबैत सीता बाकज उठलीह: "एकर मतलब इ भेल जे अहा हमरा अपन यजक लोभे अयोधया लऽ जेबा चाहैत छी?"
राम चुप रहला।
सीता फेरो बजलीह: "एकर अथि तिखन इ भेल जे अहाक यज मे हमही िाधिक छी?"
राम एखनो चुपे छलाह।
आब सीता कणधि दैत बजलीह: "ठीक छैक, हम अहाक समस्याक तुरत समाधान करैत छी।"
राम ककन गंभीर तऽ भेलाह मुदा मौन भेल रहलाह।
सीता धरती माता कदस हाथ जोकड बैस गेलीह आ किदिन केलकन: "हे धरती मा! अकहंक कोकख सू हमर जन्म भेल अकछ। हम आब अकधक िदिना नक्ह बरदाश्त कऽ सकैत छी। अहा आब हमर उपाय तयकरण कर । फाटू! एखन फाटू! अतए फाटू! हमरा अपन कोरा मे सुता कलय। आब हम अक्ह लोक सू उकब गेल छी!"

निर्देशी सीताक गोहार धरती माता तुरत स्वीकार केलक्नि। धरती मे तुरत दरार पड़ि गेलैक। जाबेत राम सीता के रोकैथ तावति सीता धरती मे प्रविष्ट कऽ गेलीह। धरतीक पुत्री धरती मे विलीन भऽ गेलीह। धरती पुनः यथावत भऽ गेलीह। एखनो जखन कोनो मैथिलानी कष्ट सू भरि जाइत छथि तऽ एकाएक हुनका मुह सू निकलि पडैत छन्नि: "फाटू हे धरती" । से कहिते ओ सीताक समकक्षचर भऽ जाइत छथि।

फकडा पकृति सू उधरित सेहो होइत अछि। कखनोकाल जखन व्यक्तिगन अपन सूतान आ पक्ति सू तंग भऽ जाइत छथि तऽ अपन तुलना काकोर सू करैत छथि। तहिना जेना अनेक बच्चा सबके जन्म दैत काल काकोर अपन जान गमा दैत अछि तहिना मैथिलानी सब बाल-बच्चा, पक्ति आ परिवार लेल अपन शरीर आ इच्छा के गला लैत छथि। दुखक भार बढला पर बाजि उठैत छथि:

"क़कोरबा खायान क़कोरबै खाय"

महिला मनक मनोदशा नहु-नहु अनेक तरहे फकडा मादे परिलक्षित होइत रहैत अछि। दुख मे, सुख मे, आनंदातिरेक मे, दिनाक सघनता मे मैथिलानी स्वतःस्फूर्त होइत अपन परिस्थिति के कोनो ने कोनो फकडा सू जोडि लैत छथि। तथाकथित निम्न जाति अर्थात समुदायक लोक सू ओना तऽ तथाकथित उच्च वर्गक लोक सामाजिक मेल मिलापक दूरी रखैत छथि अर्थात सीमित अवस्था मे करैत छथि लेकिन जखन पहसन अर्थात मजाक पदवृत्ति करबाक होइत छन्नि तऽ ओहि समाजक स्त्री सू साक्षिप्यक आकाक्षा रखैत छथि आ मर्यादाक अतिक्रमण करबा मे सेहो सूकोच नहि करैत छथि। महिला सेहो बुईझ लैत छथि जे पुरुखक इच्छा आ आकाक्षा की छन्नि। जखन पुरुख मर्यादा के त्याग करैत छथि तऽ हुनका इहो भान नहि रहैत

छथि जे ओ महिला हुनका गाम अथवा समाजक पचलित मानदण्ड पर भाउज, भाहि, पुतोहु अथवा की हेतथि! अहि क्रम ओ वस्तुगण हुनका भाऊज सन लगैत छथि जकर बहुत मुंहतोड जवाब फकडा दैत अछि:
'रारक बहु सबहक भौजी"

अहि दिश के देखैत विद्यापतिक एक पद स्मरण अबैत अछि जाहि मे अस्पृश्य सुनरि युवतीक पति बिदेस गेल छैक, सासु बहिर तऽ छैके, ओकर आँखि मे रतौधी सेहो भेल छैक। ओना तऽ समाजक उच्च जातिक उच्च लोक, पुरख ओकर देह सू सटब पाप बुझैत छथि लेकिन राति मे एहि पुरख ओहि कामिनी सूग अपन काम पिपासा शान्त करबा लेल उताहुल छथि, ओहि क्रम लेल ओ महिला हुनक सजाति भऽ जाइत छथि:
"अध्ययन कर अपराधहू साति
पुरख महते सब हमर सजाति"

महाकवि विद्यापति आगा बढैत कहैत छथि:
"भनहि विदपति एहि रस गाब
उकतहू अबला भाव जगाब"

विद्यापति तऽ अतेक आगा बढैत ई तक बाजि लैत छथि जे लोक अनेडे हुनका रसिक कवि कहैत छथि, पेमक-शृंगार, मिलन-अभिसार आ रतिक्रिया के कवि कहैत छथि; असली रस तऽ ओ निवांत आ अर्थहीन युवतीक दुखक बयान करब छथि। ओ अबलाक भाव के पदवित्ति करए बला कवि छथि:

"भनक्ह विदापक्त एक्ह रस गाब
उक्कतहु अबला भाि जगाब"

कखनोकाल क्स्थक्त एहेन भऽ जाइत अक्छ जे ददिआ भाानािय्मक िािषण आ दोहन सू जखन मैक्थलानी भक्र जाइत छक्थ, क्हम्मत जखन जाब देमय लगैत छक्त, माथ जखन क्मनाय लगैत छक्त, तखन ओ अपन भडास क्तकलैत बजैत छक्थ:
"नहु नहु मुती तऽ सन-सन उठय"

उपरोक्त फकडा पदर्विति करैत अक्छ जे जखन चार क्दस सू मोनमे नाना तरहक दन्द चलैत रहैत छक्त, िािषणक अक्धकता एकठाम ढेर भेल जाइत छक्त, एक क्तर्विति अक्धिक बाद ओ अपन भडास क्तकाक्ल लैत छक्थ। ओ कतऽ करतीह। लोकपटल पर लोक धारणाक हेतु। सएह करैत छक्थ।
एक अक्स्थता एहेन होइत अक्छ जखन क्कयोक अपन बैभि के बारे मे अनेडे बखान करैत छक्थ, ताक्ह क्ण क्कछु घोर सय्यािदी मक्हला के अनेडे फुइसक बडाई अथािि पदबडाई अनसोहात लगैत छक्त। बात जखन बहुत आगा बक्ढ जाइत छैक तऽ बाक्ज उठैत छक्थ:
"गारी कहलक पटोर पक्हरने रही
आूक्ख कहलक सडे रही"

उपरोक्त फकडा यथाथिआ फेकब मे अंतर स्पाि करैत अक्छ। नारी मानर्विकताक यथाथिआ कक्ल्पत मानर्विकता केर दन्द स्पाि करैत अक्छ। एक सू दोसरक पक्रस्पधाक र्विािचन करैत अक्छ, समाजक मानर्विकता देखबैत अक्छ।

कोनो महिला (अर्थात विषेष अवस्था मे पुरुष) जखन व्यथित भऽ कऽ आ अनघोल करैत छथि, अपन कृत्य (अर्थात कुकृत्य) के झपबाक यत मे नीक अर्थात भर महिला के दोख तकैत छथि तऽ उक्त ति किता स्वभाविक मैथिलानी हुनका पर तंज कसैत बाजि उठैत छथि:
"बट हगनी ने लजाय
उपराग देमय जाय"

गुनमंती मैथिलानी नारीक महत्व नीक जका बुझैत छथि। हुनका ज्ञात छनि जे मायक भूमिका मात माय कऽ सकैत छथि। पिता अथात पुरुष तऽ मतलबी होइत अछि, भमरा होइत अछि। पुरुख के सूतक्स सूग पती सेहो चाही। महिला के सूतक आगा किछु नहि। कोनो तरहक बात भेला पर पुरुख लेल कामकलाक्षत फकडा पढल जाइत अछि:
"माय मुइने बाप पितिया"
अर्थ भेल मायक मरैत मातर पिताक व्यवहार सूतानक पति बदलि जाइत छनि। पिता दोसर पती केर जोगार मे लावा जाइत छथि। पिता कतबो करुणाशील होथि मायक स्थान लेब असूभ छनि। एक फकडा देखु तऽ अर्थ स्पष्ट भऽ जायत:

"जे मायक दूध सू नहि हएत
से बापक आंड चटने कतऽ हएत"

ई फकडा जखन कखनो सुनैत छी तऽ हिंदी सिनेमाक एक गीत स्वतः श्मरण आबि जाइत अछि:

"बाप का जगह मा ले सकती है
मा की जगह बाप ले नही सकता
लोरी दे नही सकता
सो जा सो जा"

बेटी सामान्यतया मायक गुण आ बेटा पिताक गुण आ स्वभाव किछु ने किछु स्वतः ग्रहण करैत अछि। एकर प्रमाण निम्नलिखित फकड़ा सँ भेटैत अछि:

"माय गुण धी पिता गुण घोर
नहि किछुओ तऽ थोड़बो थोड़"

दोसर फकड़ा माय आ बेटीक बात करैत कहैत अछि जे मायक गुण बेटी सहजे ग्रहण करैत अछि:

"भनहि विद्यापति बासक टोटी
जकर जेहन माय तकर तेहेन बेटी"

आब पुरुखक बारी अबैत अछि आ फकड़ा कहैत अछि जे जहिना मायक गुण बेटी करैत छथि तहिना बापक गुण बेटा ग्रहण करैत छथि:

"भनहि विद्यापति बासक टोटा
जकर जेहन बाप तकर तेहेन बेटा"

महिलाक़े जतेक अधिकार अपन पति पर रहैत छनि ततेक पुत अथवा पुती पर नहि। पतिक सम्पत्ति आ टाका पर हुनका पूर्ण अधिकार, सम्पूर्ण स्वतंत्रता रहैत छनि, ने रोक ने टोक। लेकिन बेटाक सम्पत्ति

आ रावि पर मायक अन्धकार एकाएक जेना सीमित भऽ जाइत छन्हि। अहि बातक पुर्वि लिमिखित फकडा सू होइत अछि:
"सइया राज अर राज
बेटा राज मुहतककी"

पितृसतात्मक समाजक सूरचना लोकक मोन मे ई धारणा स्थापित कऽ देने अछि जे बेटी आ बेटीक लोक -पति आ पुत - आन होइत अछि, अपन नहि। यएह बात फकडा सेहो स्थापित करैत अछि। लिमिखित फकडा देखला सू ई बात नीक जका फरिछा जाइत अछि:
"धी, जमैय्या भवाना
ई तीनू ने अपना"

मैथिलानी सेहो सहज मोन सू एकरा स्वीकार कऽ लैत छथि। धियिक जीनि बहुत दुःखद होइत रहल अछि। महादेब बर, भंवाया भिखारी पतिक रि सदैि मैथिलानी के विषि र प सू बाह ण बालिका के भेटैत रहलथिन्ह अछि। बेमेल बिआह एखनो कतौ-कतौ दृष्टिगोचर होइत अछि। हालहि मे हम एक विहि मे गेल रही। लडकी बहुत सुन्दरि, देहगरि, कटगर, देखनूत रहैक। लडका किछ दब। ऊपर सू एक हाथ मे किछ समस्या। राति भरि कतेक बेर स्त्रीगण सब चारि पंक्ति केर गीत गबैत रहली आ पिताप करैत रहलि। गीतक दू पंक्ति हमरा जीनि भरि लेल स्मरण भऽ गेल जे फकडा जका व्यहित होइत रहैक:
"लोहा मे जडि गेल सोना
हम कनिबै कोना"

जातक्ष इ जे अतए लोहा बर आ सोना कक्नया छैक।
पसूग वधिाकि छल। चलू अव्ह क्दि मे चचकिरैत छी। धिक्यक क्स्थक्त बहुत खराप होइत छल। अगर इ घटना बाहण अथि कणि कायस्थ अथि आन उच्च गिमि होइत छल तऽ क्स्थक्त भयाहि भऽ जाइत छल। बारह, तेरह, पन्रह षिक्ि लडकी वधिि कतेक ठाम भऽ जाइत छक्ल। वधिि होइतक्ह पुनर्विाहिक तऽ कल्पनो नक्ह कएल जा सकैत छल, उपर सू ओक्ह लडकीक सब सुख-क्संगार, नीक भोजन आक्द छीना जाइत छलैक। कतेक ठाम तऽ वधिि के अंगेजी दबाई तक गहण करबाक आजादी नक्ह छलैक। ओकरा सुगक्धत तेल, साबुन, आक्दक क्यहिार करब पर पक्तबंध लावा जाइत छैक। ओ केि वन्यिास नक्ह कऽ सकैत अक्छ, नि क्याहल बर कक्नयाक चुमान करब तऽ दूर, ओकरा लग ठाढ तक नक्ह भऽ सकैत अक्छ। जेक्हना पथम साझ मे असगर तारा देखब अिुभक लक्ण अक्छ तक्हना तऽ वधिि सेहो आब असगर तारा बक्न गेल छक्थ! समस्त हाहाकार मचल अक्छ। यएह क्स्थक्त के देखैत वदिापक्त क्लखैत छक्थ:

"असगर तारा केओ नक्ह देख
अमंगल लेख"

वधिबा पर पक्तबंधक झडी लावा जाइत छक्त। प्याज-लहसुन, माछ-मास के पुछैत अक्छ गक्रि भोजन तक करबाक आजादी नक्ह रहैत छक्त। हुनक जीनिक ऋतुचि जेना एक रंगाह भऽ जाइत छक्त जाक्ह मे सब ठाम दुखक डंका बजैत रहैत छैक! क्मक्लक्खत फकडा के देखला सू क्स्थक्त स्पि भऽ जाइत छैक:

"वधिि घर मे सभ क्दन भादब

करधन घर मे काक्तक
राजा घर मे सभक्दन अगहन
फागुन घर अक्हबाक्तक"

अक्ह तरहक विपक्तक सामना करैत विधिाकि करेज कराक्ह उठैत छैक। कुहेस फाक्ट कानए लगैत अक्छ। आ भगिानि सू कहैत छक्स कोन पापक कि ओ भोवा रहल अक्छ? ओ अपन ि‍दिना ककरा कहतैक:

"हे भगिानि कोन कसूर विधिना भेल बाम
कहब दुःख ककरा सू"

एकर विपरीत पुरख लेल कोनो पक्तबंध नक्ह। पतीक क्तधन भेलाक बाद ओ सब क्कछु खा सकैत अक्छ। फेरो क्बआह कऽ सकैत अक्छ। पती मरलैक तऽ की भेलैक! फेर दोसर क्बआह भऽ जेतैक। दोसरो पती मक्र गेलैक तऽ क्वंताक कोनो पयोजन नक्ह, फेरो क्बआह भऽ जेतैक! पतीक क्स्थक्त अखरा नोनक ढेप सन होइत छैक खक्स पडल तऽ उठा क्लय:

"नोनक ढेप खसल
उठा लेब"

अक्त ृिवि आ अनाृिवि सू क्मक्थला अदौ सू परोनि रहैत आक्ब रहल अक्छ। लोक भूखे रहैत छल। क्स्त्तगणक दिा तऽ आरो दयनीय छलक्। ओ बाहर जा नक्ह सकैत छलीह। भीख कोना मंगती? कखनो कुअन, कखनो साग पात, कतेक साझ उपास करैत जीानि चलबैत छलीह। अक्ह तरहक क्स्थक्तक विभयक्सता दिा रहल अक्छ क्तमक्लक्खत फकडा:

"क्बपक्त जाक्त के आनल बजाय

अक्षपन के चाउर गेली कबाय”

स्थितक गंभीरता देखू। घर मे वस्तुगन नाना तरहक कि सहैत रहैत छथि। अतेक खाराप स्थिति भऽ जाइत छल जे अक्षपन लेल जे चाउर राखल छल सेहो कबा जाइत छथि।

कोनो महिला के अगर कियोक अनेडे मजाक अथि तंग करैत छल आ हुनका लग काजक, मूलरूप सू गृहकार्यक तऽ ओ बाजि उठैत छथि:

“घरबला सू फुरसत ने

देओर मागए चुम्मा”

बाल विहि एक समय मे बहुत पैघ समस्या बनि गेलैक। बेमेल विहि जेना पसरि रहल छलैक। तकर विरिण कोना फकडा दैत अछि से देखू:

“कनिया तेरह, मरद अठारह

कन्याक चमकए आँखि, विआह होअय तमाम

छौडी बेर-बेर देखए अएना”

एक फकडा इ इंबात करैत अछि जे कोना महिला कुअन खा अपन पाणक रक्षा करैत छथि आ कोना बूढ सू विआह कए विआहक पवित्रया छोडा लैत छथि:

“गुडा-खुदी खेलौ उपास भंग भेल

बूढ विआहलक कुमारि पद गेल”

बेमेल विहिक परिणाम नीक नहि होइत छैक। वस्तुगन जीनि पर्यन्ति ओहि दिना आ सामाजिक उपहासक पात भऽ जाइत छथि। अनेडे हुनका सू पैघ उमेरि के लोक- स्त्री आ पुरुख सब हुनका जेठ कहि अपमानित करैत छल। एहने मनोदशाक चित्रण विमलिखित फकडा मे देखाएल गेल अछि:

"हम नहि बूढ़ि गे हम नहि बूढ़ि
बूढबा काआहलक ते हम बूढ़ि"

अर्थात्सामि अछि, ओ महिला बूढ़ि नहि छथि, परिस्थितिवश जाहि करणे हुनक विाहि बुढबा सू भऽ गेल छन्हि ताहि ओ बूढ़ि छथि। उपरोक्त फकडा नारी मनोदाािक ओहि विाेष अस्थाक गूढ मनोिजाक्क सम्प्रेषण छैक।

नारी मनोदाािक अनेक परत होइत छैक। अपन किक सम्प्रेषण एक महिला लोक मात मे लोक व्यिहार मात सू कऽ सकैत छलीह। लोक व्यिहार हुनका लेल ब्लैकबोर्डछिलन्हि। ओ मात हुनक स्पेस छलन्हि। महिला लोक आ किछु पुरष बच्चा मात हुनक शोता। िदनाक अधिकता सू जखन करेजक कुहेस फाटैत छन्हि तऽ स्त्रीक दग्धल छाती सू शाप वाकलैत छन्हि:

"जे मोरा खेलन्हि खीकरया पुकरया
कानको होइहनु नािि"

आर ओ की कऽ सकैत छलीह। हुनका लगैत छन्हि जे पुरखक एहने कुकृत्य, अहंकार, कारंकुि व्यिहार सू संसार मे अकाल, महामारी आदि भऽ रहल अछि। इ बात लोक सू कखनोकाल मैथिली साहित्य मे सेहो अपन स्थान बना लैत अछि। बैदनाथ मिश "याती" आ कािीकात मिश "मधुप" क रचना मे लोक जेना चढि कऽ बजैत हो! लोक भािि साहित्यक पबल पक बनि उठैत अछि। यातीक कलम नोर आ ािकातक धार बहबए लगैत अछि। नारी आ विधिा मनोदाा मे जेना ओ तह धरि घुइस जाइत छथि। एक-दू-सौ-सैकडा के पुछैत अछि, हजारक हजार विधिा हुनक माथ पर अपन व्यथा लेने सािर भऽ जाइत छन्हि। "विलाप" कविता मे याती सत्यक अनिेषण करैत कविता लिखैत छथि। यथार्थविचार चढि बाजय लगैत अछि। के नहि

कनैत अछि! पाठक, समाज आ कवि सब बहाबैत अछि नोरक धार:

"विधि हमरे सन हजारक हजार
बहौने जा रहल अछि नोरक धार
ओहि मे ई मुलुक डूबि बर जाय
ओहिमे लोक-दि भसिया बर जाय
अगडाही लगौ बर बज खसौ
एहेन जाति पर बर धसना धसौ
भूकम्प हौक बर फटो धरती
मा मिथिले रहिये क' की करती!"

याती नहि रकैत छथि दोसर-तेसर-चारिम विहि करयबला बूढबा बर सब पर कलम उठा लैत छथि। अगाब सामाजिक कुरीति पर पहार करैत रहैत छथि। नारी शिषण के पाठक हेतु पढबाक सामगी बनबैत छथि। हुनक दोसर कविता "बूढा रि" सेहो एकर पमाण अछि। मुदा वस्तुगन अपन बात ताबेत धरि लोक पटल मात पर करैत रहलथि।

जमिन्दारक शिषण सू तंग भेल बुचनीक पक्तिमिधि बथि अपन अमर रचना "घसल अठनी" मे मधुप बुचनीक मुह सू कहा लैत छथि जे शिषण आ अन्याय के चलते जगत मे भऽ रहल अछि अकाल। इ लोकक अभिव्यक्ति नहि तऽ की भेल? घसल अठनी केर बुचनी डरल जरूर रहैत छैक लेकिन अपन बात आ शाप दुनू व्यक्त करैत अछि:

आहा! देह तोडि क' कएल काज
सुपथो न बोलि अछि भेटी रहल
ते जगमे ई पडलै अकाल
उठबितहिं डेग लागए अन्हार

मक्र जाएब एतइ
ककरा कहबै?
क्हत क्यो ने हमर
अनुक्यतो पैघ जनके िभा
भगािन आह!”

मधुप नारी िषण के देखैत छव्थ, अनुभि करैत छव्थ, अपन हृदय मे ओक्ह पव्रक्स्थक्त के आयमसात करैत छव्थ, आ कलम हुनका क्स्तगणक स्पोकपसिन बना दैत छक्त। कविता बक्त पडैत अक्छ।

मैव्थली लोक परम्परा मे फकडा अनंत अक्छ – विपुल क्नव्ध जका। कतबो ताक्क लेब तैओ बहुत रक्हये जाएत। लेक्कन लोक क्यिहार मे ताकब तऽ कोनो क्नरथकि नक्ह लागत। इ भेल फकडाक पयोजन आ उपयोवाता। जखन मक्हला कोनो िदना सू रवित होइत छव्थ आ हुनक बात क्कयोक नक्ह बुझैत छक्त तऽ अनायास बाव्ज उठैत छव्थ:

“गुडक माक्र धोकडे बुझैत अक्छ”

इ फकडा कतेक साथकि छैक तकर अनुभूक्त या तऽ मक्हला कऽ सकैत छव्थ अन्यथा ओ जे नजदीक सू ओक्ह िदनाक पययक्दिी रहल अक्छ।

क्कछु एक्ह तरहक भाि क्नमक्लक्खत फकडा मे कहल गेल छैक:

“समाठक माइर उखैरे बुझैत छै”

स्मरण इहो राखब जररी जे सब भाि अधलाहे नक्ह होइत छैक। मनोदिा पेमक सेहो होइत छैक। लोक जखन अव्धक उक्धयाइत अक्छ तऽ कहल जाइत छैक:

“क्टटही टेकल पहाड”

अथिभेल अपन औकात सू अव्धक ने बाजी ने करी।

कतेकबेर पक्त पती अथाि क्कयोक आर अपन सियिम के जीिन आ

पेम अथवि व्यवस्थिा मे अतेक लीन भऽ जाइत छथ्वि जे हुनका दोसरक जीवि अथवि सामाविजक मयादा केर भान खयम भऽ जाइत छवि। एहन लोक लेल वविम फकडा कतेक सटीक होइत छैक:

"हम सुनरी की वावया सुनरी
गामक लोक बनरा बनरी"

उदाहरण अनेक अवछ __ बहुत अजात आ कतेको जात। सबहक समावि केनाइ पहाड सन लगैत अवछ। एवि पर गंभीर काज करक दरकार छैक। इ विषय अनंत महासागर जका अवछ। अवि पर साववहत्यक अवतवरक्त समाजवास्त्र, मनोविजान, नारीवादि विजानं, मानविवधकार, मानववास्त्र, राजनीवतवास्त्र, इवतहास आवदक विधकमी के विवभन उदेश्य आ पवरकल्पना संग काज करक चाही। इ एक अलग संसारक रचना कऽ सकैत अवछ। हमर आलेख के अनंत महासागर मे खसल वकछु बुंद मात मानल जा सकैत अवछ जकर समय पडला पर अपन उपयोग भऽ सकैत अवछ।

सन्दभवि

वमश, कैलावि कुमार (2017). "मैवथली लोकगीतमे नारी-दुदवाक वचतण" , घर-बाहर, विवि17, अंक 61, जुलाइ-वसतम्बर: 11-17.
वमश, कैलावि कुमार (2018). "वमवथलाम अथात लोक सूस्कृवत: एक पवरचय" तीरभुवक्त, विवि1, अंक 1, जुलाइ-वसतम्बर: 29-35।
वमश, पंचानन (2017). "मैवथली लोकोवक्तमे स्त्री-जीवि" , घर-बाहर, विवि17, अंक 61, जुलाइ-वसतम्बर: 18-20.
विमा, रामचन्र (2009). लोकभारती बृहत् पामावणक वहन्दी कोवि. वदल्ली: लोकभारती पकाविन.
याती, बैदनाथ वमश (--). "वबलाप" , कविता कोवि:

kavitakosh.org
याती, बैदनाथ मिश्र (--). ‘‘बूढ़ा वर”, कविता कोश: kavitakosh.org
मधुप, काशीकात मिश्र (---) ‘‘घसल अठनी” : गजेन्द्र ठाकुरक सूं कविता भेटल

नॉनचकछार क्लद्स: धरतीक नुकाएल सगिच(यायारी-१)

''ररना'' मैथिली साहित्यिक पत्रिकामे ''यायारी'' स्तंभक पास्त स्तंभकार शी कैलाा जीक ''विदेह'' लेल पार्भ कएल गेल ई यायारी स्तंभ दीघचकाल तक स्थायी रहत ताहि कामनाक संग पस्तुत अछि अहा लोकक्षक समक ई पहिल खेप।

यायारी

नॉनचकछार क्लद्स: धरतीक नुकाएल सगिच

-हमर अंगेजीमे लिखल लेख पढ़ि लोक सभ हमरासँ मैथिलीमे लिखबाक हेतु अनुरोध करैत छथि। स्पष्ट कए दी जे अंगेजी हमर व्यसिाय केर भाषा थिक। कहियो मैथिलामे नहि रहलहुँ, संस्कृत आऽ सोसियामी मैथिली नहि तँ पढलहुँ आऽ ने लिखलहुँ। तथापि मैथिलीमे लिखक कदपना जखने करैत छी तँ हान कापय लगैत अछि। तीन षिचपूिचर्ािँ विशनान झा अपन तैमासिक पत्रिका ररना हेतु लिखबाक लेल भािनात्मक र पे हमरा बाध्य कऽ देलनिह। िराइत-िराइत हम ररनामे "यायािरी" नामसँ अपन याता-िहिान्त लिखनाइ पार् भ केलहुँ। पार अंकमे लगातार लिखलाक बाद कायक्षि अत्यधिक व्यस्तताक कारणे यायािरी लिखनाइ बन्द कऽ देलहुँ। घुमब आ अंगेजीमे लिखबसँ समय कहा बरैत अछि।
एहर नौ-दस माससँ गजेन्द्र बाबू अपन पत्रिकाक हेतु पुनः मैथिलीमे लिखबाक हेतु कहि रहलाह अछि। अतेक रेक्वेयेलनिह जे अन्ततः याता-िहिान्तक "यायािरी" पार् भ कऽ रहल छी। पाठक लोकनिसँ नम्र निदिन जे हमर लेखक विषिय आ िणिचके पढथि आ भाषा-विन्यासक गलतीपर बेसी ध्यान नहि देथि।

यायारीक पार्भ हम असम केर एक छोट भव्य, र्य, आकषर्क, कवठन परन्तु अनेक रंग आऽ उदलाससँ भरल भूखण्ड, नानचकछार व्हदससँ कऽ रहल छी।

अपन संस्था इक्रदरा गान्धी रार्षीय कला केन्रक सदस्य सवरि र्ी कदयाण कुमार रकिती महोदय केर क्वदो एर्ि कायर्शैलीसँ पभावित भऽ हम समस्त उिर-पूिचि भारत एर्ि क्वसकममे विभिन कक्रयाकलाप पार्भ केलहुँ, जाक्हसँ स्थानीय संस्कक्ृत आऽ विरासत केर रक्षा कएल जाऽ सकय। असममे कायर्क शीगणो हमरा लोकक्न "शीमंत ि ंकरदेि कला केक्त" गुआहाटी केर सवरि शी गौतम ि माक संग कएल।

लगभग ६४ बीघा पहाडी धरतीमे बनल शीमंत ा ंकरदेि कलाक्षेत्र बडि रमनगर जगह बुझना गेल। जे कियो गुआहाटी घुमए जाथि आऽ हुनका कलासँ नोरेकबो पेम होइन तँ शीमंत ा ंकरदेि कलाक्षेत्र अ शिय जाथि, ई हमर कहि दिन। कलाक्षेत्रमे पाथिक फब्बारा, फुलबारी, वी ाल आऽ कलात्मक अनेको भि नि, दू टा अवासि गह, आवर्टस्ट वलिज; कलाकार सभके रहबाक हेतु ि ॅरमेटरी; संगहालय, कला दीघा, बच्चा सभक लेल टॉय रेल एिं अन्य व्यवसि्था; असम केर इतिहासक स् बन्धमे ‘‘लाइट एण्ि साउंि’’ कायक्रम; पुस्तकालय, व ि सागर कजलाक ऐतिहासिक रंगघर केर व्रपोि कि न इत्यादि बरि ि कुनो घुमए बलाके मोन मोहि लैत छैक।

असम केर अधिकाा ऑफस आऽ घरसभमे लोक अपन जुत्ता-रपाल आदि घरक बाहरे खोलल पिछत करैत छथि। हमहूँ एहि परम्पराक पालन जखन-जखन असम जाइत छे, तखन-तखन करैत छी।

स्मष कऽ दी जे शीमंत ा करदेि कलाकेत सोलहम ा ताब्दीक महान

ि षणि सन्त ा ंकरदेि केर नामपर असम रा् य सरकार, भारत सरकारक आर्ािक सहायतासँ समस्त उि र-पूि चिभारत, वि ा`षर पेण असम केर संस्कि्ा, वि रासत तना गौरवि संरक्ण एि स् ि धिच करबाक दि्ष सँ बनल छैक।

ा ंकरदेि जार्ासँ कायस्न छलाह। शी बादमीकि पसाद वि्संह जे असम कािर केर आइ.ए.एस.पदाविकारी छलाह; बादमे भारत सरकारक गह सि्र ि भेलाह आऽ अन्ततः वि शिबैक केर कायिकारी वि्दे ा क पदसँ अि िका पाप्त कएलि्ह, हमरा कहलाह जे ा ंकरदेि मैि्ल छलाह। हुनकर वि्ाता मि्लासँ असम पि सि कऽ गेलि्ह। पञीसँ ईहो पता रलैत छैक, जे ा ंकरदेि तँ नि्ह परन्तु हुनकर वि्ाता तीन-रार् बेर मि्ला आयल छलाह। एि्ह बातक एतय उद्लेख करब केर पयाय ई जे एि्ह वि षयपर गहन ा ोध करबाक आि श्यकता र्ाक। यि्द ई बात पमाि्त भऽ गेल जे ा ंकरदेि मैि्ल छलाह तँ आइ हमरा लोकि् वि् ापि्ाक मैि्ल होएबापर गि चिकरैत छी, तक्िना

ांकरदेिपर गचिकरब। हमरा क्हसाबे तँ पबुि मैक्ाल सभ क्ाहार सरकारसँ ांकरदेिपर एक गहन ाेध करबाक पक्रयोजना पार्भ करबाक हेतु क्ादिन करक्ा। गजेन्रजी एक्ह क्दा ामे आगा बढक्ा तँ नीक बात। संयोगसँ ाद्मीक्क बाबू आइ-कावि क्सक्कम पदोक रा्यपाल क्ाकाह। हुनकर मदक्ासँ पक्रयोजनाक पार्भ कएल जाऽ सकैत अक्छ। ओऽ हमरा कतेको बेर एक्हपर कायचकरक हेतु कक्ह रुकल छक्ा। एक समय एहनो छलैक जखन बंगाली सभ वि्ापक्ाके बंगाली बुझैत छलाह। परन्तु आब पमाक्ात भऽ गेल जे वि्ापक्ा मैक्ाल छलाह। यक्द एहने क्कछु सबरा पर्परा केर जनक शीमंत ाांकरदेकि उतेढपोनीसँ रक्ल जाय तँ बुझू जे हमरा लोकक्ा धन्य भऽ जाएब।

शीमंत ाांकरदेि कलाकेतक सक्ि गौतम ामा आऽ सुलझल व्यक्कत छक्ा। लगभग पराास ाेषिक्क गौर ािचआऽ मध्यम कद-काठीक आकषचक व्यक्कत्ति। क्सनर क्ि। पनम दक्ेमे लागत जे ओक्हना क्कयो छक्ा। परन्तु मुदा ायिनेक्ाक लोक। कलाकेतक १२५ आदमी

हुनकर इा ारापर नरैत रहैत अछ। हमो ा ओऽ अपन सहयोगी सभके पवरिरक सदस्य जेका स्नेह करैत छी।

गौतम ा माक सहयोगक कारणे हमरा लोकक गुआहाटी आऽ तेजपुरमे बहुत सफलतापूर्वक अनेक कायक्रम कऽ रुकल रही। हमरा लोकक असम केर कछु एहन क्षेत्रमे ओकह क्षेत्रक संस्कृत आऽ विरासतपर कायकरए राहैत रही, जाकपर विीेष कायनकह भेल हो। ा माजीसँ पता रलल जे सास्कृत्क दृषएँ असम पदो के मोटा-मोटी राक क्षेत्रमे बाटल जाऽ सकैत अछ:

१.अपर असम

२.लोअर असम

३.बराक घाटी

४.नॉनचकछार घाटी

ा माजीसँ इहो पता रलल जे नॉनचकछार क्षेत्र सास्कृत्क विध्यितासँ भरल अनुपम स्थान छाक, जाकपर कोनो विीेष कायच नकह भेलैक अछ। परन्तु ई घाटी उपरि, विभिन घटना, बन्द आदक कारणे बेाी जानल जाइत अछ। लोक सभ सामान्यतया एतय जाएसँ बरए राहैत छथि। मुदा सौन्दयचआऽ सास्कृत्क विभिनताक कारणे ई छाक असम केर ा ंगार-नकमुनी।

ा माजीक बात सुिन हमरा मोनमे ई भािना पबल भऽ गेल जे नॉनच कछार घाटीमे अिश्य कायचकरब।
गौतम ा मा हमर मनोदा ाके बुझैत कहलाह: “कैलाा जी, अगर अहा एतए कायचकरए राहैत छी तँ हम व्यिस्था कए देब। एतए केर व्जला अवधकारी आऽ नॉनचकछार घाटी ऑटोनोमस काउिंसल केर वांिसपल सवचि अिनल कुमार बरआ हमर वमत छवथ। एस.पी.के हम सेहो जनैत वछयवन्ह। ऑटोनोमस काउिंसल केर संस्कृवत विभागक अवधकारीगण हमरा लग बराबर अबैत रहैत छवथ। सभ वकयो मदवत करताह।

गौतम ा माक बातसँ हमर मोन पसन भऽ गेल। तुरतक्ह ि ॅ कद्याण कुमार रकतिीसँ अनुमक्त लए २३ न्िबर २००७ ई. सँ ८ क्दनक संस्कक्त एि ं विरासत केर पलेखन केर कायक्रम नॉनचकछार धारी केर मुख्यालय हाफलौगमे करबाक फ्लान बना लेलहुँ। ई कायक्रम गौतम ा माक सहयोगसँ करक छल। तदनुसार पूक्निाधाक्रते योजनाक अनुसार हम २१ न्िबरके साझे क्दद्लीसँ सँझुका हिाई-जहाजसँ गोिाहाटी पहुँक्र गेलहुँ। गुआहाटीसँ हाफलोग केर दूरी सडकमागसँ २६१ क्कलोमीटर छैक। हमरा लोकक्न (हम आऽ ा माजीक ३ सहयोगी) टाटा सूमो (जीपसँ) २२ न्िबरक सादे राक्र बजे पातः गुआहाटीसँ हाफलौगक लेल पस्थान कऽ देलहुँ। ा माजी बडि पाक्रािक्रक व्यक्क्त छक्त। ओऽ पूरा टीमक लोक सभक लेल भोजन,

टेन्ट, जलखै, जेनरेटर आदिक व्यवस्था गुआहाटीसँ कए किमे लाबऽ हॉफलोग लऽ गेलाह।

समय दुगापूजाक छलैक। रास्तामे अनेक ठाम स्थानीय युकि सभ हमरा लोकनिके रन्द्धा लेल रोकैत रहल। एक ठाम हमरा लोकनि केर रा न-पानि आऽ करीब २५ आदमीसँ भरल बडका बसक रका सडकक कात माटिमे धसि गेल। रावि घन्टाक इन्तजारक बाद सेनाक सहायता लए रकाके दलदलसँ बाहर निकालल गेल। अन्ततः साढे एगारह बजे राविमे हाफलौग पहुँरलहुँ। मोनमे रि छल। हेबो कि एक नहि करैत! हमरा सभके अएबासँ दू दिन पहिने पार आदमीक बीर हाफलौग ा हरमे गोलीसँ मारि देल गेल रहैक।

खैर! ा माजीक पयास आऽ ाॅ के.के.रकिती जीक असम केर मुख्य सकार ि केर नाम क्लखल करटीक कारण हमरा हाफलौग सक्कच्च हाउसमे रहबाक व्यसिना भऽ गेल। सक्कच्च हाउस ाहरक सभसँ ऊँर स्नानपर बनल अंगेजी हुकुमतक समयक भव्य मकान छैक। एतएसँ पकब्ला केर अिलोकन तना समस्त हाफलौग ाहर एिं अगल-बगलक इलाकाके देखल जाऽ सकैत अच्छ।

हमर कमरा काफी पैघ आऽ साफ सुनरा छल। हँ, पाक्कक कक्कक

व्दकत अशिथ्य छलैक। कपडा बदक्लते सुक्त रहलहुँ। भेल जे रात्तमे भोजन नक्ह करब। परन्तु गौतम ा मा कतऽ मानऽ बला छलाह! कक्तकबे कालक बाद एक स्तानीय कलाकारके लए आक्व गेलाह। हम व ष ताि नक्हओ राहैत बैक्स रहलहुँ। ा माजी कहलक्ह, ‘‘जद्दी रलू। भोजन तैयार अक्छ’’। नॉनच्कछार क्हदस ऑटोनोमस काउक्सल केर कला एि संस्कक्त विभागक क्तदो क शी लंगनासा सेहो ा माजीक संग छलक्तन्ह। हुनके पयाससँ संस्कक्त भनि केर पागणमे हमरा लोकक्तके कायक्रम करबाक अनुमक्त भेटल छल। लंगनासा उदार आऽ संस्कक्त पेमी छक्त। सयिं क्दमासा जनजाक्तक छक्त। कहलक्ह ‘‘हमरा सभ लेल ई गौरि केर बात नीक जे अहा लोकक्त क्ददलीसँ आक्व एक्ह इलाकामे जतए क्कयोक नक्ह आबए रहैत अक्छ, अयलहुँ अक्छ आऽ हमरा लोकक्तक संस्कक्त एि धरोहरक रक्तक पक्त कक्तसंकक्दपत छी। एतए तँ ओना असम राइफदस, सैक्तक, पुक्लस आक्दक जमघट लागल रहैत अक्छ, परन्तु संस्कक्त आऽ विरासतक क्रन्ता ककरा छैक? अहा सभके केना धन्याद दी’’।

हम लंगनासा महोदय क्दस तकैत बजलहुँ: ''अहा सभ यक्द राही तँ हमरा लोकक्न एक्ह केतक सास्कक्ष्तक धरोहरके संरक्ण एि संधिचक

हेतु बेर-बेर आएब''।

हमरा बातपर उत्साहित भऽ लंगनासाजी बजलाह: हमरा लोकनि सभ तरहक सहयोग करबाक हेतु तैयार छी। एतय केर तमाम अलगाववादी, सरकार विरोधी जत्था समूह संस्कृति रक्षणक विरोधी नहि छथि। तमाम लोकसभ अहाक कार्यक्रमसँ पसन्न अछि। जाधरि अहा सभ एतए रहब ताधरि अतए कुनो मार-काट नहि हैत। अहा जे कोनो तरहक स्थानीय सहयोग चाही, हमरा लोकनि करबाक हेतु तत्पर छी''।

एकर बाद हमरा लोकक्न राक्ताक भोजन हेतु वदिा भेलहुँ। रटगर भोजन-भात, माछ, दाक्ल, सजमक्न केर तरकारी, सलाद, क्नठाई, रटनी- केलाक बाद पुनः सक्कद्य हाउस आक्न सुतबाक तैयारीमे लावा गेलहुँ। सुतएसँ पक्हने अपन पतीके दूरभाषसँ आशस्त कए देक्लयक्ह। जे क्नन्ताक कोनो बात नक्ह। हम एतए ठीक छी”। एकर तुरत बाद सुक्त रहलहुँ।

अवाला क्दन पातः पार बजे उक्ठ बाहर अएलहुँ तँ मनोरम दृश्य देक्ख मोन मस्त भऽ गेल। सक्कद्य हाऊससँ एना बुझना गेल जेना सुरज अपन लाक्लमा लए लाल गेन जका उगैत छक्न। हक्रयर जंगल, कलकल करैत छोट परन्तु घुमािदार नदीक पभाि, दूरमे बनल जंगलक मध्य आक्दवासी सबहक छोट-छोट घर, सभ क्कछु मनमोहक लगैत छल।

ककछु कालक बाद गौतम ा मा स्ािद पठओलक्ह जे हमरा लोकक्ाक कायक्रम साझ ६ बजे पार्भ हैत। ककछु कालक बाद सत्यकाम आऽ कुा ा महन्त ककछु स्नानीय लोक संग हमरा लग आब्ा कहलक्ह जे खाली समयमे हॉफलौग आऽ अगल-बगलक केतके देखबाक राही। हमरा ई विरार नीक लागल। तुरत तैयार भऽ गेलहुँ।

स्नानीय लोकसभसँ पता रलल जे हाफलोग मूलतः “हंगक्लौग” सँ बनल छैक जकर अनच्नीक स् पन आऽ रतगभा धरती। बादमे क्कछु दोसर विदान लोकक्न कहलक्ह जे “हॉफलौग” ा ब्द क्दमासा जनजाक्तक ा ब्द “हाफलाऊ” (HAFLAU)क विकह्ह र प नीक।

“हाफलाऊ” । कहक अनचभेल ीदमीक पहाडी (Ante hill)। हाफलौँग । हरक कमाण अँगेज पा ासन दारा १८९५ ई. मे बोराइल रेजपर एकटा छोट कछन कहल स्टो नक र पमे कएल गेलैक। पार् भमे रीर, देदिारक पाकासँ लागल गाछ, नौ छेदक गोदफ कोसद्ग छोट परन्तु आकषकक आऽ कलात्मक बंगला, हाफलौग लेक, रेल कि कमचारी सभ लेल स्टाफ कीटच, छोट बजार, रेल स्टो न आक्द सुविधाक संग एक्ह । हरक विकास पार् भ कएल गेलैक।

अंगेज सबहक क्‍मक्ताक पा ंसा करए पडत। ३६ खोह (tunnels) कऽ बना रेल लाइन लऽ गेनाइ ओक्ह जमानामे अनाते १८९५-९८ मे की छोट बात छैक? रेलिक क्तमाण कायक्त हेतु ठीकेदार, मजदूर, कमचारी, व्यापारी आक्द सभ उिर-पदो , क्वहार, बंगाल आऽ असम केर अन्य स्नानसँ आनल गेल। पुनः आपसमे िताालापक हेतु एक न तरहक बजार क्वन्दी वकिक्सत कएल गेलैक। एक्ह क्वन्दीके *हॉफलौग-क्वन्दी* कहल जाइत छैक। ई क्वन्दी व्याकरणक क्तअमक पालन सिंतं भऽ करक अक्वकार दैत छैक। हाफलौग क्वन्दी रोमन क्तलक्तमे क्तलखल जाइत छैक। स्नानीय बुिजीि लोकक्तक कक्वन संघषक्त फलसिरप आइ-कािल हॉफलौग क्वन्दीक मान्यता साक्हत्य अकादमीसँ भऽ गेल छैक।

नानचकछार क्वदस असम केर बहुरंगी रुनरी नीक। एतए क्तमक्तलक्खत एगारह जनजाक्तक

लोक रहैत छक्त:

१.दीमासा (Dimasa or Cachari)

२.ह ार (Hmar)

३.जेम्म नागा (Zeme Naga)

४.कुकी (Kuki)

५.बंइते (Baite)

६.काबी (Karbi)

७.खासी अनि पार (Khasi or Pnar)

८.हागखल (Hrangkhals)

९.ि इफी (Vaiphies)

१०.खेलमा (Khelma)

११.रोगमई (Rongmei)

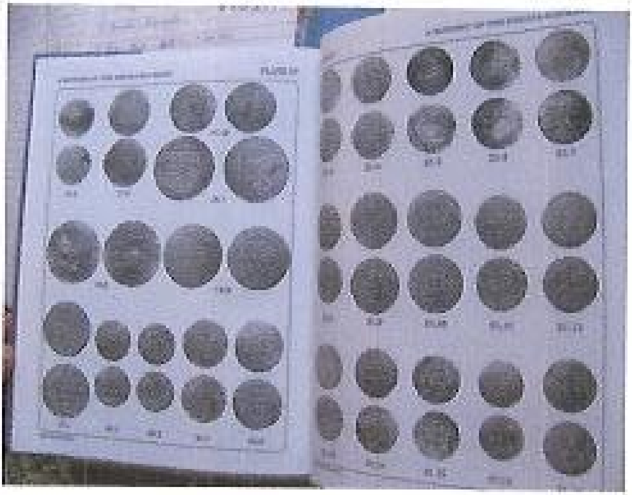

एकर अतिरिक्त अन्य समुदाय जेना कि बंगाली, असमी, नेपाली, मणिपुरी, मुसलमान, देसाली आदि सेहो एतए रहैत छथि। सभ समुदायक बीर हमरा भावनात्मक एकताक कडी बुझना गेल। भारतक अनेकतामे एकताक सरिप बुझाएल जेना अपन मणिएर र धारण कए एकहि छोट धरामे मोलि बिस "संगे-संगे रली", "संगे-संगे खाई", "संगे-संगे रही" के रक्षतानचकरैत छल।

सतिन्त्रता पाबाक बाद भारतक अन्य ा हर जका हॉफलौग सेहो ा नैः-ा नैः विकसित भऽ रहल अछि। १९७० ई. मे एकरा जिलाक मुख्यालय बना देल गेलैक। आब नॉनचकछार हिदस ऑटोनोमस काउन्सिल केर मुख्यालय, विभिन्न सरकारी विभागक दफ्तर आऽ मकान, आसीय परिसर, पाकर् जेहल, खेल परिसर आऽ मैदान, दू टा रेल स्टे न, सिविल अस्पताल, पाइमरीसँ हाइयर सेकेण्री स्तर केर विभिन्न व् ालय, सभ सुविधासँ परिपूण सरकारी महाव् ालय जाहिमे कला, विजान एिं ाव् य संकाय केर अधिका विषयक पढाई केर सुविधा सहजतासँ उपलब्ध छैक; पाकक सुविधा, ाक, टेलीगाम, टेलीफोन आदिक सुविधा, बैक, रर मन्दिर, मस्जिद, पुस्तकालय अनेक तरहक सामाजिक-सास्कृतिक किया-कलापमे संलग्न संस्था; सिनेमा हॉल, बस स्टेण आदि सुविधासँ भरल अछि।

अगर रेलसँ हाफलौग आबय राही तँ गुआहाटीसँ नॉनचपन्टीयर हिल सेक न केर मीटरगेज दारा ल् ािगक रस्ते लोअर हाफलौग स्टे न आबि सकैत छी। एकर दूरी गुआहाटीसँ २८५ किलोमीटर छैक। सिलररसँ बदरपुर होइत हिल हाफलौग स्टे न केर दूरी ९२ किलोमीटर छैक।

रेलक वि ामे बैसि नॉनचकछार हिदस केर नील पहाडीक अिलोकन केनाई स िगचकेर अिलोकनसँ कम नहि छैक। जीग-जैग (टेढ-मेढ) रस्ता नगा ासँ पार् भ भय समस्त नॉनचकछार हिदसक उ ारसँ दक्षिण दि ामे जिलाक तीन पमुख नदी- माहुर, दीयूंग आऽ जटिंगा- कऽ संग-संग रलैत रहैत छैक। बुझाएत जेना पानि, रेलक पटरी आऽ मनुक्खक मोन तीनू आपसमे तालसँ ताल मिला गतिमान भेल होए। उपरोक्त तीन नदीक अतिरिक्त एहि धरामे राकर छोट-मोट नदी आरो नीक। एहि नदी सबहक नाम छैक: जीनाम, लंगटीग, कोपली,

विलेयमा। सभसँ पैघ नदी दीयूंग छैक जकर लम्बाई २४० किलोमीटर छैक।

१८६६ मीटर केर ऊँचाई पर अवस्थित नुंगजाग पहाडी सभसँ ऊँच स्थान छैक।

नॉनचककछार ज़िला पूबसँ असम केर पडोसी प्रदेश नागालैण्ड आऽ मणिपुर; पश्चिममे मेघालय आर काबी अंगलौग जिला; उत्तरमे नगांव आऽ काबी अंगलौग जिला तथा दक्षिणमे बराक घाटीक कछार जिलासँ घेरल अछि। ४८९० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रमे पसरल नॉनचककछार ज़िला केर सामान्य ऊँचाई समुद्र तलसँ ३११७ फीट छैक।

नॉनचककछार ज़िला जिलामे ६११ ग्राम; पाँच प्रखण्ड, दू सब डिविजन (हाफलौग आऽ मइबाग)मे विभक्त अछि।

अतए केर आदिवासी मूल रूपसँ झूम खेती करैत छथि। झूममे एक भागक जंगल-झाडके काटि ओहिमे आवा लगा पुनः खेती कएल जाइत छैक। तीन-चारि वर्षक बादओहि भूमिमे पुनः जंगल झाडके बढए देल जाइत छैक आऽ जंगल-झाडसँ भरल जमीनके आवा लगा साफ कय ओहिमे खेती कएल जाइत छैक। एतए १७,२९३ हेक्टेअर जमीन झूम खेतीक रूपमे, टोटल फसल हेतु उपयुक्त जमीन ३६७५८ हेक्टेअर आर बीया रोपए बला समस्त जमीन २९२०५ हेक्टेअर छैक। एहि जनपद केर करीब ४५२९वर्गकिलोमीटर धरती जंगलसँ भरल छैक। ६१०.५१ वर्गकिलोमीटर सुरक्षित आऽ बाकी हिस्सा राज्य सरकार द्वाराघोषित। तीन सुरक्षित जंगल क्षेत्रक नाम क्रमशः :

लागटीग-मूपा सुरक्षित जंगल (४९७.५५ वर्गकि.मी.)

कूरंग सुरक्षित जंगल (१२४.४२ वर्गकिलोमीटर)

बोराइल सुरक्षित जंगल (८९.८३ वर्गकिलोमीटर)

ओहि दिन लगभग साढे बारह बजे भोजन कयल। तत्पश्चाते नॉनच कछार हिल्स ऑटोनोमस हिल्स काउन्सिलक कला एवं संस्कृति विभागक निदेशक लंगनासा महोदय, उप-निदेशक शी संजय जी दूंग एवं किछु अन्य लोकनि हमरा लग अयलाह आऽ कहलन्हि जे “रलू अहाके पहादेई हिल्स लऽ रलैत छी। यदि समय बरत तँ जटीगा पहाडी आऽ गाम सेहो रलब”।

गुआहाटीमे किछु लोक सभ जानकारी देने छलाह जे जटीगा पहाडीपर करडै सभ रात्रिमे रोशनी देखलापर झुण्डक-झुण्ड आबि रोशनीपर पहार करैत छथि तथा सामूहिक रूपेण आत्महत्या कऽ लैत छैक। इहो पता रलल छल जे पक्षी शास्त्री लोकनि एहिपर गहन शोधमे बहुत दिनसँ लागल छथि परन्तु एखन धरि कोनो ठोस निष्कर्षपर नहि आबि सकल छथि जे आखिर एकर रहस्य की छथि? आऽ एकर सत्यता की थिकैक? गुआहाटीमे मोन बना लेने रही जे जटीगा पहाडी अवश्य जायब। आइ ई अवसिर हमरा लंगनासाजी देलन्हि तँ मोन गदे गदे भऽ गेल। हम तुरत हुनका लोकनिक संग जटीगा गाम जयबाक लेल तैयार भऽ गेलहुँ।

जटीगा पहाडी आऽ गामक रस्तामे विभिन्न पकारक बेतक झाडी आऽ बास भेटल। नॉनच कछार हिल्सक टोटल धरती (४८९००० हेक्टेअर)मे लगभग ३०७९०० हेक्टेअरमे बास लागल छैक। बास अनेक पकारक अनेक पजातिक, असम पदेशमे ३३ नस्ल केर बास होइत छैक, जाहिमे लगभग २० नस्ल वा पजाति एहि क्षेत्रमे उपलब्ध छैक। पमुख पजातिमे काको/ पीछा वा पीछा, जाति, विलू, मूली, हिलजाति, कता, मकालू, काली-सूर्णी, टेराई आदिक नाम सामान्यो मनुक्खक जीभमे ररल-बसल छैक। बास एहि क्षेत्रक लोकक जीविनक पमुख आधार छैक। एकर पयोग झोपडी, जाफरी, जारनि, पूल आदि

बनेबाक लेल कएल जाइत छैक। बासक कोपडसँ तरकारी, अर ार आदि सेहो बनायल जाइत छैक। बासके स्थानीय र ाऊर, मकई आदिसँ बनल दार पीबाक हेतु बतच (ग्लास-कप)क र पमे कएल जाइत छैक। जमीनक कटा ि रोकबाक हेतु बासक आधार देल जाइत छैक। एकर अला ि बासक पयोग बतच, फनीर र, कृषियन्त्र एि उपकरण, धनुष-ि ाण, सजेबाक कलात्मक ि स्तु, हस्तकला, बि ी, सीढी इत्यादिमे उपयोग होइत छैक। बादमे हम अनेको ि ् या लोकि ् यंत देखलहुँ जाहिमे बासक पयोग कएल गेल रहैक।
अन्ततः हमरा लोकनि जटीगा गाम पहुँर लहुँ। ई गाम बोराइल रेज केर पादवाक (foothills) पर बसल छैक। ई पहाडी तरह-तरहक पि ासी एि दो ी कर डै सबहक वशिाम-स्थली थ ाकैक। एहि स्थानमे अंगेजी मास िसत् बर-अक्टूबरमे कर डै सभ अन्हरिया पक्क रातिमे रो ा नीक कोनो सोत जेना कि टॉर ्च मा ाल आदि देखि झुण् कि-झुण् मे आबि खसि पडैत छैक आऽ आत्महत्या कऽ लैत छैक।
जटीगा गाम हॉफलौग ा हरसँ आठ किलोमीटर केर दूरीपर बसल छैक। लोक सभसँ जात भेल जे कर डै सभ अन्हरिया रातिमे रो ा नी देखि झलफलाक खसय लगैत छैक; जकर फायदा उठा कऽ कर डैमार सभ बासक लग्गी अनि ा बि ीसँ र ोन्हरायल कर डै सभपर पहार करय लगैत छैक एि पकडि लैत छैक।
अन्हरिया रातिक संग-संग एक िशिेात िताि रिणक भेनाई कर डै सबहक सामूहिक आत्महत्याक लेल सेहो कारण बनैत छैक। ई िताि रिण छैक हि ाकि बहबाक िदा ा। हि ाकि िदा ा दक्षिण-पश्चिमसँ उ ि र-पूबमे हेबाक र ाही। बोराइल पहाडीक अगल-बगलमे धूंध आऽ ा ीत लागल रहनाई सेहो जर री। धूंधमे कनीक झलफलाईत रो ा नी हेबाक र ाही। एहन िस्थतिमे जखन दक्षिण िदा ासँ धूँध र लैत छैक तखने कर देऐ

सभ जकटंगा क्देस आगा बढैत अक्छ। सामूक्हक आत्महत्या करय बला क्र डै सभमे लाली क्र डै (Indian ruddy), कौक्डदला (King fisher), भारतीय नौरंग (Indian pitta), हाक्रल, क्लैक डोगो, उजरा बगुला, क्र तकबरी पौरकी, बटेर आक्द पमुख छैक।
आशयक्क बात ई जे अक्धकाा क्र डै जे कक्ुम रोा नीक रकारौधसँ सामूक्हक रपसँ झुणि क-झुणि मे झलफला या रौक्धया कऽ खसैत छैक ओ सभ दोी क्र डै छैक। पिासी क्र डै सभ संगे ई घटना घक्टत नक्ह होइत छैक। स्थानीय लोकसभसँ ईहो पता रलल जे ई पक्िि समस्त जटीगा पहाडीमे नक्ह भऽ कऽ क्कछु खास क्ेत्र जे क्क मात ढि क्कलोमीटर केर ल्बाई आऽ २०० मीटर केर रौडाईक सीमामे बन्हल छैक।
जटीगा गामक एक पच्रासी बषक्क क्िि जे पार (खासी) जनजाक्तक छक्ा सँ पता रलल जे क्र डै सबहक जटीगामे कक्ुम रोा नीसँ सामूक्हक आत्महत्याक पक्िि केर जानकारी सक्यिम १९१४ ई.क आसपास रललैक। भेलैक ई जे एक राक्त ककरो राक्र-पार बरद जंगल क्देस भावा गेलैक। बरदक माक्लकके भेलैक जे अगर बरदके राक्तयेमे नक्ह पकडल गेलैक तँ बाघ-ा`र सभ खाऽ जेतैक। तक्ि पार आदमी एकटा टोली बना बासक फटीमे कपडा बाक्न्ह ओक्हमे मक्टया तेल िाक्ल ओकर माा ल बना कऽ तना हानमे लालटेन लय बरद सभके ताकक लेल जंगल क्देस क्वदा भेल। कनीक कालक बाद आशयच्ानक ढंगसँ क्र डै सभ झुणि मे आक्व माा ल लग आक्व खसय लगलैक। परन्तु ई लोकक्न ओक्ह क्र डै सभके नक्ह पकडलकैक। य् क्प ओऽ सभ क्र डै मासक पयोगमे लाबए जोग रहैक। एकर कारण ई छलैक जे स्थानीय जेक्म नागा समुदाय (जनजाक्त) क लोकक बीर ई भाक्त रहैक जे जटीगा क्ेतमे राक्तक

भूत-पेत विरिरण वरडै बक्त करैत रहैत छैक। हुनका लोकक्तके तवि रि भेलक्हि जे वरडै के पकडलासँ कव्हं कोनो अक्तष ने भऽ जाए। १९१७ ई.क आसपास लाखन-सारा नामक एक व्यक्कत्त कव्हाम रोा नीसँ झलफलाएल वरडै सभके सघिनम पकव्ड घर अनलाह एिं ओकर मासके भुक्ज पका कऽ खयलक्हि। आऽ ओकर कोनो दुषभावि हुनका सभके नवि भेलक्हि। एकर बाद वरडै सभपर आफत ा ुर भऽ गेलैक। लोकसभ अन्हकरया राक्तमे कव्हाम रोा नीक मदक्तसँ वरडै सभक संहार पार्भ कऽ देलक। हालाक्क जखन अंगेज पा ासनके एक्ह बातक जानकारी भेटलैक तँ एक्ह पर्परापर रोक लगा देल गेलैक।

सतिन्तता पावक्तक बाद लोक पुनः नुका-रोरा कऽ वकार करए लगलाह। आब पयारिणविदे, पक्री ास्ती, पतकार एिं अन्य लोकक्तक अनक पयासक बाद पा ासन पुनः कव्हाम रोा नीसँ वरडै मारबाक पनापर पक्तबन्ध लगा देलकैक अक्छ। हम ओक्ह स्नानपर गेलहुँ। ओतए रंग-क्बरंगक वरडै सबहक आकषक्क फोटो टागल रहैक। एक मूल ाक्य नीक लागल। ाक्य ई रहैक: “shoot these birds with your camera, not with bullets:.

घडी देखलहुँ तँ साझ भऽ गेल छल। आब हमरा लोकक्त जटीगासँ सोझे सक्कत्त हाउस आक्ब गेलहुँ। मुँह हान धोलाक बाद कायक्कम स्नलीपर पहुँरलहुँ। ओतए पार हजार लोक सभ आयल छलाह। सभ जनजाक्त केर स्ती-पुरष, बच्रा सीयान सभ क्कयो अपन समुदायक पर्परागत रंग-क्बरंगक ास्त पक्हरने सुसव्जत भेल पहुँरल छलाह। पा ासन केर सहयोग तँ छले। विप्युटी कक्मशर, नॉनचक्कछार क्हदस ऑटोनोमस काउक्तसल केर रेअरमेन, सदस्य, पमुख सकरि, एस.पी., स्नानीय कॉलेजक वक्क एिं छात सभ क्कयो पहुँरल

छलाह। स्नानीय पतकार सभ सेहो उत्साहित छलाह।
सभ कयो हमरा माध्यमसँ आऽ गौतम ा माक माध्यमसँ इक्दरा गाधी रार्षीय कला केन्र केर पक्त धन्यादि दैत छलाह। हम सोरलहुँ जे केहेन वि्बना छैक। जे केत्त सास्कत्कक स्पनताक खान क्ाक ओकर एहेन अपमान! मुख्यधारासँ एक्ह केतके िवरत कएक कएल गेल छैक! हमरा भेल जे समस्त विशमे नॉनचकछार क्दससँ ा ान्त आर सास्कत्कक िविध्यसँ भरल आर कोनो जगह नवि भऽ सकैत अक्छ। हम अपन भाषणमे बजलहुँ: “हमरा लोकक्त अहा सभके क्सखाबए नक्ह अएलहुँ अक्छ। हमरा लोकक्त अएलहुँ अक्छ अहा लोकक्तके जागत करक हेतु जे अहा सभ अपन सास्कत्कक िविध्यता तना गक्रमाके बुझू आऽ एकरा सासित राखू। हमरा लोकक्त एतए केर सास्कत्कक विरासतके जानए आऽ ओकर िक्युमेन्टो न करए आएल छी। अगर अहा सबहक सहयोग रहल तँ बेर-बेर आएब। हमर कायक्रममे आऽ एक नमे कौमा (,) ि अधविराम भऽ सकैत अक्छ, पूणचविराम कखनहुँ नक्ह हैत”।
लोक सभ हमर बातके सही अनमो लेलक्ह। पक्हल क्दनक कायक्रम लगभग साढे-नौ बजे रात्त धक्र रललैक।
जखन रात्तमे भोजनक उपरान्त विशाम करए गेलहुँ तँ एक आदमीक देल एक पुस्तक पढय लगलहुँ। पुस्तक नॉनचककछार क्दसपर छलैक। ओक्ह पोनीमे रातु हकमओसा नामक स्नानीय कविके नॉनचकछार क्दसपर क्लखल कछु पंक्त बडि उपयुक्त बुझना गेल: पंक्त यनाति अंगेजीमे पाठक लेल क्लक्ख रहल छी:

A harmonious game of hide and seek
Behind the bushes, marshy meadow
Under shadow with clouds view,

Ever ready for worthwhile, cherish at dawn,
The blues make enchanting heart of lovers
Midst of covers white
Changing scene that lively for romance
Beauty and bounty of brooks that flow.
Moments of joy, love to cherish
Insight the harmony game of hide and seek
Behind thick trespasses of white and blue
With narrow path of zig-zag.
The beauty of hills under cover
Orchids, white fall, violet at hills
Every moment thrilled with behalf
Nature disposal at North Cachar Hills.

नॉनचकछार क्हदस-२ (यायारिी-२)

िॉ कैलाा कुमार क्ाश, इक्द्दरा गान्धी रार्षीय कला केन्रमे कायस्रत छक्ा। ‘ररना’’ मैक्ाली साक्हक्तयक पक्ाकामे ‘यायारिी’’ स्तंभक पा स्त स्तंभकार शी कैलाा जीक ‘विदेह’’ लेल पार्भ कएल गेल यायारिीक पस्तुत अक्छ ई दोसर खेप।

हमर एक बंगाली मानि ास्ती क्ात छक्ा। हुनकर नाम छक्ह िॉ अक्भक घोष। बहुत समक्ाच लोक। अपन विषय मानि-विजानक पक्ा घोष साहेबके अगाध पेम छक्ह। आइ-कावि पंजाब विशवि् ालय, रर्णीगढमे मानि-विजान पढा रहल छक्ा। झारखण्कि मुण्िा जनजाक्तपर पी.एर.िी. केने छक्ा। हालक्हमे घोष साहेब हमरा लग हमर पुत ा ाकके देखबाक हेतु क्दल्ली आएल छलाह। हुनकासँ हम अपन नॉनचकछार क्हदस केर याताक स्बन्धमे ररा केलहुँ। ओऽ बहुत पसन भेलाह। कहलक्ह ‘‘कैलाा जी, हमर पती उिर-पूिि भारतक छक्ा। ओऽ हमा ा हॉफलोग केर पा ंसा करैत रहैत छक्ा। हालक्हमे हम एक संगोषीमे भाग लेबाक हेतु कलकिा गेल रही। ओतए सेहो हॉफलोग केर पसंग रललैक। कलकिामे बंगालक एक पक्सि पतकार अक्ाताभ रकिती हमरा कहलक्ह जे नॉनचकछार

क्लदस भारतक संीटजरलैण्ि नीक''।

ि अवमक घोषक एक्ह बातपर हम कहक्लयक्ह ''अवमकजी, हमरा अइ बातक जानकारी क्दयऽ, की अक्मताभ रकिती अरणारल पदो क तािग गेल छलाह''?

''हँ हँ, अनेको बेर''। अवमक फटाकसँ बहुत आत्मविशासक संग हमर पशक उिर देलक्ह। फेर ओऽ एक्ह बातके स्पष करए लगलाह, ''देखू। दुनू स्थानक अपन-अपन महतव छैक। तक्हँ तुलना करब उवर त नक्ह। पुनःश हम तािग गेल छी, परन्तु नॉनचकछार क्लदस जयबाक अिसरसँ एखन धवर विरत छी। ताक्हँ एक्ह स्बन्धमे कुनो क्टपणी करब यनोवर त नक्ह''।

हमरा क्लस मुँह कय आँक्खक भंवामाके हमरापर सत-पवा त केक्रत करैत ि अवमक घोष हमर ध्यानके अपन कथ्यपर आकवषव करैत कहलाह, ''कैलाा जी, अहा एक्ह विषयपर सोरबाक लेल एिं क्नणवय लेबाक लेल सही आदमी छी। कारण अहा दुनू स्थान-तािग आऽ नॉनचकछार क्लदस- केर रपाा-रपाा घुमल छी''।

हम ि अवमक घोषक बातपर अपन मूरी क्हला देल। कवाक कालक बाद हम नॉनचक्कछार क्लदसक पवरी मे एक बेर पुनः मानक्सक रपसँ

पहुँचि गेलहुँ। जुआएल, पाकल, सुखाएल, कुहलाएल, अधपाकल, वक्चरा, कोमल, हरियर, गाठसँ भरल झुणकि-झुणि बासक बीट हमरा मोनमे स्मरण आबए लागल। कल-कल करैत टेढ-टाढ नदी, सुन्दर हरियर पहाडी, नि बालक-बालिका, युकि, युती एिं हिि अपन परंपरागत बहुरंगी िस्तमे नरैत-गबैत विभोर भेल हमर मानस पटलपर रंगमंरक अद्वितीय नायक एिं नायिका जका स्मरण होमय लागल; लागल जेना सबपहुँ हम सेकेण्डिमे दिल्लीक ािरगुलसँ हजारो किलोमीटर दूर असम राज्य केर नॉनचकछार क्षदसमे पहुँचि गेलहुँ। की धरती, की पहाड, की संस्कृति आऽ केहेन आत्मीय आऽ रमनगर लोक! जतेक पांसा करी कम। अनुभूतिके याद करैत आत्मक पसनता होइत अछि।

यायारिीके आगा बढबैत पुनः नॉनचकछार क्षदस रली।

बात बासक करैत रही। साधारणतया ५०-६० िषिक अन्तरालमे बासमे एकाएक फूल आबय लगैत छैक। फूल केहेन तँ धानक धानक सीस जका। दाना सेहो धाने जका। फूल पकलाक बाद नीरा खसय लगैत छैक। मूस सभ ओहि फूलके धान बुझि झुणकि-झुणिमे आबि ओकरा कुतरनाई पारंभ कऽ दैत छैक। मूसक संख्या आिश्यकतासँ

अवधक भऽ जाइत छैक। फलस्रि प जखन धानक खेतीक समय होइत छैक, तखन जतेक धान लोक सभ बीयाक र पमे बाऊग करैत अछ, मूस सभ एक-एकटा धानक बीयाके खाऽ जाइत छैक। लाख पयासक बादो लोक धान उगेबामे असमनर्चभऽ जाइत अछ। पकरणाम ई होइत छैक जे घोर अनक आपदा समस्त क्षेत्रमे व्याप्त भऽ जाइत छैक। एह आपदासँ अरणारल पदो आऽ क्षसक्कमके छोड़ लगभग समस्त उ रि-पूिचभारतक भू-भाग कहियो ने कहियो तािह होइते टा अछ। हालाक आइ कािर्व सरकारी मदक्त भेटैत छैक। कर्षक सभ सेहो जागरक भेल जाऽ रहल छक्त; समय रहते मूस मारबाक एिं मूसके भगेबाक पूणचइन्तजाम कएल जाइत छैक। आब कदपना कऽ सकैत छी जे एहेन विभमकाकासँ हाक्त कम हेतैक।

बासक फुलेनाइक र र ा करैत छी तँ अरणारल पदो क र र ा केनाई अवामियचा जेना कक बता रुकल छी जे एह पदो क लोक एह विभमकाकासँ नह पभावित होइत छक्त। एकर कारण ई जे अरणारल पदो क तमाम भू-भागक आदिवासी लोकक्त मूस पकरबामे क्नपुण होइत छक्त। एतबह नह मूस हनका लोकक्तक बहुत रक्तगर भोजन छक्ह। जखन हम लोअर िदबाग घाटी आऽ लोहत कजलामे भमण

करैत रही तँ लोक सभके (वि`षण रपेण इदू कासमी, कुगार कासमी, काजो-कासमी तना खामती जनजाक) मूसक व कार करैत आऽ ओकर मास खाइत देखलहुँ। एक पर्पराक नीक पक्रणाम ई होइत छैक जे बास फुलेलाक उपरान्तो मूसक जनसंख्यापर कायन्तण बनल रहैत छैक, आऽ एतय केर लोक बास फुलेला उपरान्त होमय बला वभीकाकासँ बरल रहैत छक।

हमरा लोकक नॉनचकछार क्दस केर तमाम जनजाकक स्तीगण सभके वजलाक तमाम केतसँ बजा समाजक वकास एिं सास्कक्तक उनकामे नारीक योगदानपर अलग-अलग जनजाकक मक्लाके अलग-अलग समूहमे राव्ख हुनका लोकक्के अलग-अलग समूहमे राव्ख हुनका लोकक्के वरारसँ अपना-आपके अगित कराबय राहैत रही। स्पष कऽ दी जे ई एकमात कायकम नक् छल। अनेक कायकममे ईहो एकटा महतपूणकायकम छल। एकर पक्रणामसँ हम गदगद भेल रही। ई कायकम पार क्न रलल। पारो क्न मक्ला लोकक हमरा लोकक केर अनुमानसँ ्यादेक संख्यामे उपक्सत छलीह। सभ क्न अपन पर्परागत िस्त, आभूषण एिं दैकक जीिनक रपरेखा पस्तुत करैत। भेल जे शंहारक जंगलमे छी। एहेन जंगल जकर कदपना

मात कैल जाऽ सकैत अछि। िस्तामि एहेन रंगमंर- उत्साहमय आऽ जीिन्त जीिनक आऽ संस्कृितक पमाण असंभि। परन्तु छल तँ सत्य आऽ संभि भेल अनुपम दृश्य!

हरेक मिहला समूहमे हमरा लोकिनक तीन-राि कायरकता साकात्कार करबाक हेतु तना अिधकसँ अिधक जानकारी पाप्त करबाक हेतु तत्पर छलाह। एिह कायरकता लोकिन केर र ुनाि हमरा लोकिन अपन सहयोगी-संस्था- शीमंत ा ंकरदेि कलाकेतक सहयोगसँ केने रही। तमाम कायरकता स्थानीय छलाह एिं हॉफलोग िहन्दी, अंगेजी आऽ असिमया भाषाके झूरझार बाजैत आऽ िलखैत छलाह। कायरकतामे आधासँ अिधक लडकी सभ छलीह।

हम पितिदन पातः सभ समूहके मुख्य हॉलमे बैसा अपन कायरशालाक उदेश्यक जानकारी सहभागी लोकिनके दैत छिलयिन्ह। अगर िकनको कुनो तरहक सं ाय रहल तँ तकरो िनराकरण करबाक पयास करैत छलहुँ। अपन संस्कृित, संस्कार एिं संस्कारक नीक रीज एिं पर्पराक रका आधुिनकताके सीकारैत केना करी तािहपर हम पभािपूणरतािगसँ जोर दैत छलहुँ। हमरा एना बुझना जाइत छल जेना सहभागी मिहला लोकिन एिं स्थानीय पतकार सभ हमरासँ पभािित

छलाह। स्थानीय अखबारमे एवं टेलीविजिनपर कार्यक्रम समाचार अबैत छल। प्रत्येक दिन साझमे सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छलैक, आऽ अन्ततः भोजन (रातिक भोजन)सँ पहिने कार्यकर्ता लोकनि हमरा दिन भरिक क्रिया-कलापक सम्बन्धमे संक्षिप्त जानकारी दैत छलाह। ओहि जानकारीक आधारपर हम अगिला दिन की करी तकर निर्देश दैत छलियन्हि।

कार्यक्रम अपन पूर्णचरमपर रहल छल। एक दिन साझमे हम राह चलैत रही। ओतए दिमासा जनजातिक किछु महिला हमरा लग आबि निवेदन केलन्हि, "श्रीमाने! कनी हमरा लोकनिक कार्यशालामे चलब?"

हम कहलियन्हि: "हँ, हँ। अवश्य जाएब"। आऽ राहक प्याला हाथमे लेने विदा भऽ गेलहुँ। हमर एहि व्यवहारसँ ओऽ सभ गदगद भऽ गेलीह।

जखन हम पहुँचलहुँ तँ ओतए केर माहौल दोसरे जका रहैक। तीन स्थानीय पत्रकार अपन कैमरा संग आऽ एक टी.वी.पत्रकार गुवाहाटीसँ आयल छलाह। ई महिला लोकनि हमरा पत्रकारक समक्ष अपन परम्परामे हाथक बनाओल कलात्मक रचनासँ सुसज्जित करबाक हेतु बजेने

छलीह। हम एहि बातके सुनि कनी घबरेलहुँ। कारण एहि तरहक परंपरामे हमरा नेतावारी केर दुर्गन्ध बुझना जाइत अछि। परन्तु विमासा महिला लोकनिक स्नेहके अपमानित हम नहि करय रहैत रही। ताहि रदकेँ स्वीकार कएल। एकर बाद देखैत छी जे तमाम जनजाति समूहसँ दू-तीन महिला रदर, गमछा आदि लय हमर सांगित हेतु आयल छथि। लोकक स्नेह देखि मोन भरि आएल। सभसँ भेट स्वीकार कएल। फेर सोरए लगलहुँ: “जखन ई सभ एतेक नीक छथि तँ आतंकवादी गति-विधि, खून-खरापा किएक? की समस्याक समाधान लोक सभसँ मिलि कऽ नहि भऽ सकैत अछि”? ई बात सोरए लगलहुँ। लोकक पेममे आकंठ भऽ गेलहुँ। अतबेमे काबी जनजाति समूहक तीन महिला अयलीह। ओऽ सभ कहलनि: “शीमाने, कनी हमरा सबहक कार्यशालामे पार विनट हेतु रलबैक”?

हम बिना किछु कहने अपन मूरीके स्वीकारात्मक अस्निामे हिलबैत काबी महिला सबहक कार्यशाला दिस पस्थान केलहुँ”।
ओतए गेलाऽ पर दलक महिला लोकनि कहय लगलीह: “शीमाने, अहा लोकनि पनम बेर हमरा सभके ई असिर देलहुँ अछि जे हम सभ अपन समाज, अपन संस्कृति, अपन परंपरा दिस ताकी। परंपराक

ताकक्ताके आँकी। एतए तँ इसाईयत, आधुक्नकता, व क्र एि आतंकादिक कारणे लोक सभ पर्परा क्वासरल जाऽ रहल अक्छ। अपन जनजाक्तक ािगसँ रहनाई, क्यहिार केनाई, खेनाई-क्पनाई, गीत-नृत्य आक्द तँ आजुक युगमे क्पछडापनक क्नाानी छैक। ककछु जनजाक्तक लोक जे इसाईयतके अपन धमचर्स्ीकार कऽ लेलक्ह अक्छ, तक्नका लोकक्नके क्वाािह आक्दक तमाम रीक्त ककक्शायन रीक्तक अनुरूप करए पडैत छक्ह। वारजाघरमे क्वाािह केनाई, आधुक्नक क्स्त्र अनाते पेन्ट-ाटचपक्हर कऽ क्वाािह केनाई। ओऽ लोकक्न राहैतो अपन जनजाक्तक सनातनीक पर्परासँ क्वाािह, जन्म-संस्कार एिं मृत्यु संस्कार नक्ह कऽ सकैत छक्न। लेककन अहाक कायचालाक बाद हमरा लोकक्न एक्ह तथ्यपर गंभीरतासँ क्वराार कऽ रहल छी। धमच कुनो भऽ सकैत अक्छ, परन्तु स्नाानीय पर्पराक पालन अक्नायच हेबाक राही। स्नाानीय पर्परा धरती, एतए केर ाितािरण, पाक्न, पहाड, पर्कक्स्नक्त जे अटूट रूपे जुडल छैक। ई सभ बात हमरा लोकक्न अहीं सबहक कारणे एक्ह कायचालाक माध्यमसँ बुक्झ सकलहुँ अक्छ"।

हम मोनक्ह मोन पसन भेलहुँ आऽ अपन संस्नााक सदस्य सक्ारािें

कदयाण कुमार रकतिीक दूरदवचापर आशयचहोमए लागल हमरा। जखन-कखनो ओऽ हमरा एक्ह तरहे अनेक रीज संगे करय कहैत छक्त, तखन हमरा बुझाइत छल जे ई हमरा मनुक्ख नक्ह सचिकक्नमान भगािन बनबय राहैत छक्त, जे कक्हयो स्भि नक्ह नीक। एतेक रीज कही एक संगे संभि छैक? परन्तु आइ पता रक्ल गेल जे अगर नीक भािनासँ सही िगसँ कायचकएल जाय तँ सभ कक्छु संभि छैक। ओहो मनुक्ख दारा। एक्ह हेतु भगािन बनक कुनो पयोजन नक्ह।

हम ई बात सोक्र रहल छलहुँ। एकाएक एक पर्परागत पक्रधानमे सजल काबी मक्हला हमरा लग अयलीह आऽ कहलक्ह: ''क्नशा साहेब, एक बात कही''?

हम कहक्लयक्ह: ''हँ, हँ। अिश्य कहू''?

ओऽ मक्हला बजलीह: '' अहा जखन संस्कक्त इत्याक्दक स्बन्धमे हमरा लोकक्नसँ बात करैत छी तँ बडि नीक लगैत अक्छ। आब हम सभ िरिार केलहुँ अक्छ जे सप्ताहमे कमसँ कम एक क्दन अपन पर्परागत िस्त्र एिं गहनामे अिश्य रहब। लेक्कन एक रीज हमरा सभके पक्हले क्दनसँ परेशान कऽ रहल अक्छ। अहा क्नकलासँ छी।

पढल-लिखल छी। समस्त भारतक परंपराके जनैत छी। परंपराक नीक रीजके पालन हो आऽ ओऽ रीज ाशित रहय ताहि लेल पयासरत छी। परन्तु अहा कहियो अपन परंपराक ित्तमे हमरा सभ लग नहि अएलहुँ। हमरा सभके एहि रीजसँ आशयचभऽ रहल अछि। हमरा लोकनि एहि विषयपर काफी विरार-विमा चकएल आऽ अन्ततः एहि ाषकषपर पहुँरलहुँ जे अहासँ एहि संबन्धमे बात करी। आा अछि अहा हमरा लोकनिक भािनाके सही अनमे लेब। एकरा अन्यना नहि मानब''।

हम ाना कोनो देर केने अपन गलतीके सीकार कऽ लेलहुँ। हम ओहि काबी महिलाके कहलियन्हि: ''ई हमर घोर गलती नीक। ायद िदली ाहरक जीनिरकमे फँस हम अपन परंपरासँ दूर भऽ गेल छी। हमरा अहाक विरार उिम लागल। अहा हमरा अपन मोनमे अपन मैिली परंपरा आऽ संस्कारक पत घोर आस्ा जागत केलहुँ, ताहि लेल हम अहाक पत हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी। अहा

बातके अन्यना भला केना लऽ सकैत छी? हम अहाके रिन दैत छी, जे हम आब जतए कतहु जाएब एक जोड धोती-कुर्ता अशिय लऽ जाएब आऽ कमसँ कम एक दिन अपन मिलाक परम्परागत परिधानमे अशिय रहब''।

हमर एहि बातसँ ओऽ काबी महिला बडि पसन भेलीह। एकर बाद हम काबी कायचालासँ दिमासा जनजातिक कायचाला दिस गेलहुँ। दिमासा जनजातिक महिला लोकनिक कायचालामे एहि बातपर रत्त रलैत रहैक जे ा हर (अनाते हॉफलोग) के साफ एवं सचिछ रखबाक लेल महिला सभके की करक राही।

हम पुछलियन्हि: ''अहा सभ एकटा बातक उत्तर दिअ। की एहि हॉफलौग ा हरमे गन्दगी नहि फैलैक, एतय मच्छड आदिक पकोप नहि हो, विकिक नअमक पालन होइक, ई कतव्य ककर छैक? सरकारक? पा ासनक? पुरषक? नेताक? आकि आनो ककरो? अहूँ लोकनिक अनाते एतय केर सजग महिला सभक सेहो''?

हमर एहि पशक उरि देमाक हेतु एक अधेर महिला अयलीह। ओऽ कहलहि: "शीमाने ा हर तँ सबहक छैक। की महिला आऽ की पुरुष! एकटा उदाहरण हम एहि स् बन्धमे देमय राहैत छी। किछु दिन पूचि हॉफलोग ा हरमे मलेरियाक भयंकर पकोप भेलैक। रार कात गन्दगी पसरल रहैक। सडकपर सफाई नहि। ककरो एहि बातक चिन्ता नहि। नॉनचकछार ऑटोनोमस काउन्सिलक अधिकारीगण एिं नेता लोकनिसँ दिमासा महिला एसोसिएशन केर सदस्य सभ बात केलहि तँ ओऽ लोकनि आशसन देलाह परन्तु ओहि आशासनपर कोनो कार्यवाही नहि केलहि। मलेरियाक कारणे स्त्रीगणक जीनि नकच बनल छलैक। बच्चा सभ ्यादे परोान। बच्चाक कारणे मायो परोान। की कर की नहि। अन्ततः हमरा लोकनि ा हरक सफाई करक बीडा सिंयं अपना हानमे लेल। करीब परास महिला एकत्रित भेलहुँ। पच्चास टा बाढनि, पच्चास पन्नाया, पार कोदारि कीनल आऽ सफाई केर अभियानमे लावा गेलहुँ। सबिधानम विजलाधिकारीक ऑफिसक बाहरक गन्दगीके साफ करए लगलहुँ, फेर ऑटोनोमस काउन्सिलक दफ्तर, फेर ा हरक रोि। सामान्य जनता सँ गीत गाबि-गाबि एिं अपन सफाई अभियानसँ ा हरके साफ रखबामे मदति करबाक निदिन करय लगलहुँ। एक दिन तँ लोक सभ हमरा सभपर ध्यान नहि देलाह। परन्तु दोसर दिन पतकार सभ एहि बातके उजागर केलहि आऽ सरकार, पाासन एिं नेताक अकमण्यताक बारेमे लिखय लगलाह। आब लोक सभके एहसास भेलहि जे गलती भेल। तेसर दिन एकाएक समस्त पाासन साकाक भऽ गेल आऽ रप्पा-रप्पामे सफाई होमए लगलैक। हमहूँ सभ जनता लोकनिसँ साफ एिं सच्छि रहबाक निदिन करैत रहलहुँ। ा हर हमर अछि तँ एकर ध्यानो हमरे सभके राखए पडत"।

कमासा महिलाक एहि जाबिसँ लागल जे नीक रीजक शीगणो संसारक छोटसँ छोट कोनसँ भऽ सकैत अछि। समाजमे जागरूकता लेबाक लेल महिला गिक योगदान अतुलनीय भऽ सकैत अछि। कमासा महिला हमरा कहलकि: “शीमाने, हमरा लोकनिक आनो अनेक तरहक समाजक समस्या छैक जाहिपर एकजुट भए कायकरए रहैत छी। पुरषक ाराब पीनाई, एकसँ अधिक पती रखनाई आदि किछु एहन विषय छैक जाहिपर हमरा लोकनि ग्भीरतासँ सोचि रहल छी”। हम जाबि देखलयकि: “अहा लोकनिक पयास पांसनीय अछि। अहाक पयोग पभाविकारी अछि। एहि तरहक पयोग सूतल पाासन एिं अधिकारी सबहक कान्द खोलबाक नीक औषधि नीक। हमरासँ जतेक मदति संभि भऽ सकत से हम करब”।

ओऽ मिहला कहलीह: “िकमासा मिहला उत्थान समािज नामक एक संस्थाक गठन हमरा लोकिन केलहुँ अिछ। एकरा हमरा लोकिन िदल्लीसँ अिखल भारतीय संस्थाक रूपमे रिजस्ट्रेशन करबय रहैत छी। एिह पंजीकरणमे अहाँक सहायता चाही। अगर पंजीकरण भऽ गेल तँ हमरा लोकिन अनेक तरहक कायर्क्रम करब”।

हम उत्तर देलियिन्ह: “अहाँ लोकिन जखन चाही िदल्ली आिब जाउ। हम दू-तीन िदनक भीतर अहाँ संस्थाक पंजीकरण अिखल भारतीय संस्थाक रूपमे पंजाब रेगुलेशन एक्ट केर अन्तगर्त सोसाइटीक रूपमे करबा देब। एिहमे कोनो तरहक पैसा इत्यािद निह लागत”।

दिमासाक बाद हम जेमि नागा महिला समूह दारा आयोजित कार्यशाला दिस बढलहुँ। जेमि नागाक स्‌बन्धमे ई जानकारी देनाई उचित जे ई नागा मात असम टा मे रहि गेल अछि। आन रा्‌ यमे तीन नागा मिलि एक जिलियागरोग (zeliangrong) बनि जाइत अछि। तहिँ नागा बहुल पदो नागालैण्ड आऽ मणीपुरमे एकर सतिंत अस्तित्व नहि रहि जाइत छैक। सर पूछी तँ जेमि जनजातिक महिला सबहिक आभूषण एवं वस्त्र सभसँ आकर्षक आऽ मनोहारी लागल। जेमि महिला लोकनि कहलीह जे हुनकर सबहक अपन महिलाक संस्था छन्हि। संस्थाक उदेश्य जेमि नागा समुदायमे अपन संस्कृति आऽ पर्‌पराक रक्षा केनाई छैक। एक उदेश्य इहो जे एहि समुदायक लोक इसाईयतके नहि स्वीकार कय अपन मूल जनजातीय धार्मिक मान्यता आऽ आस्थासँ जुडल रहथि। नागालैण्डमे लगभग ९५ प्रतिशत नागा समुदाय केर लोक इसाई भऽ चुकल छथि, ओतहि कमो-बेश मणीपुरक नागा समुदायक सेहो यैह छन्हि। परन्तु सौभाग्यसँ नॉनचकछार जिलादस केर जेमि नागाक अधिकांश परिवार एखनहुँ धरि अपन मूल मान्यता, धर्म, देवी-देवता, पूजा-पाठ आदिसँ जुडल छथि।

वजम नागा मह्लला समूहमे एकटा २७ षिीय अविाह्त युिती भेटलीह। हुनकासँ पतार लल जे वजम नागाक मह्लला सभ अपन संस्कह्ताक रकाक पक्त बडि सरेत छक्त। ओऽ २७ षिीय नागा नाक्यका हमरा ईहो बतेलीह जे ओऽ तीन षिचधक्र रार्ष्टीय सयिंसेकि संघ केर मुख्यालय नागपुरसँ पव कग लय आयक्ल छक्त।

हम कहक्लयक्ह: "अहाके रार्ष्टीय सयिंसेकि संघ केर िताशिण केहन

लागल? ओतए केर लोक सभ कहन्दू धमक पक्त अनेरे काषा । तँ नक्ह जगेबाक पयास कयलक्ह? एक्ह सभ कारणे अहाके अपन जनजातीय धाक्मक विशास आऽ रीक्त-क्रिजिपर कोनो आघात तँ नक्ह पडल''?

हमर पशक उिर दैत नागा नाक्यका कहलक्ह: ''की कक्ह रहल छी शीमाने! ओऽ लोकक्त तँ हमरा सभके हमो । यैह कहलक्ह जे अपन मान्यता, धमच्चपर्परा आक्दक त्याग नक्ह कर । अगर पर्परामे कोनो अन्ध-विशास अनिा विनाा कारी तत्त अक्छ तँ ओकर कदान अिश्य कर । जेना हमरा लोकक्त पर्परासँ जानिर आक्दक बक्ल रढबैत छी। ओऽ सभ कहैत छक्त क अगर संभि भऽ सकय तँ कमसँ कम कानुन, साढ या भैसाक बक्ल क्दअ। वजक्त नागा समुदायमे क्वयाहल स्तीगण क्सनूर नक्ह लगबैत छक्त। फेर कोनो लडकीके देक्ख ई पता कोना लगाएल जाऽ सकैत अक्छ क ई लडकी कुमाक्र अक्छ आक्क क्याहता? पर्परागत संस्कक्लाके अगर पालन करी तँ ई बात सहजतासँ पता रक्ल जाइत अक्छ। पर्परा तँ ई छैक जे कुमाक्र कन्या विािहसँ पक्हने कपारक आगा क्कछु को के आधा कटा ओकरा कपारपर लटकबइत अक्छ। संगक्ह कनपटीपर को विन्यास करैत अक्छ। एक्हसँ सहजतासँ पता रक्ल जाइत छैक क फला-ने-फला लडकी

कुमारि नीक"।

हम ओहि नागा नायिकासँ पुछि केलियन्हि: "अहाँ ई बताउ जे व्याहता महिला केर पहरान फेर कोना होइत छन्हि"?

हमर पुछब जखनि दैत ओऽ नागा नायिका कहय लगलीह: "विवाहित होइते नागा महिला कपार परक केसके कटेनाई बन्द कऽ दैत छथि आऽ केसके कपारपर नहि लटका मानक सीन सहित ऊपर कय बान्हय छथि। संगहि विवाहित होइते मातर नागा महिला कनपटी बला केस छु लट दुनू कात कटा लैत छथि। एहिसँ कियोक सहजतासँ पता लगा सकैत अछि कि फलाँ ने फलाँ स्त्रीगण व्याहता नीक"।

नागा नायकका फेर हमरा कहय लगलीह जे पक्तिषिचसमस्त बराक घाटी आऽ नॉनचकछार पहाडी केर जेक्स नागा लोकक्सक मक्हला सभ जनरिी-फररिी मासमे कोनो क्दन कोनो-ने-कोनो क्जक्स नागा गामि जुटान करैत छक्स। मदक्सक कोनो पयोजन नक्ह। पत्येक क्जक्स नागा गामक मक्हला सभमे एक पधान, एक सहायक तना एक िजरार होइत छक्स। मदक्सक कायचकेलि एतेक जे ा क्सयाना लाबक्स, स्टेज बनाबय इत्याक्दमे मक्हला लोकक्सके मदत करक्स। हजारक संख्यामे स्त्रीगण सभ अबैत छक्स। हुनका लोकक्सके रहबाक एिं खेबाक इन्तजाम गामक मक्हला सभ करैत छक्स। पत्येक घरमे तीन-राक्र या सामथ्र्यक्सक क्हसाबे कम-् यादे मक्हला सभ रक्ह जाइत छक्स, जाय कालमे अक्तक्स गामक मक्हला सभके अपना संगे आनल राऊर, क्सछु पाई, हक्रयर तरकारी आक्दक संग क्सछु पाई दऽ दैत छक्सन्ह। एक्हसँ ककरोपर कोनो अनेर भार नक्ह पडैत छैक। पत्येक िषिचनि पदाक्धकारीक रुनाि होइत छैक, एिं अवाला िषिक्सक जुटान कोन गाममे हैत तकर क्सणचय सेहो लेल जाइत छैक।

एकर महिला सभाक उदेश्य मूल रूपेण परम्परागत वस्त्र नागा जनजातिक परम्पराके महिला लोककलाक माध्यमसँ बरेबाक नीक। ई सभा एक सास्कृतिक जनचेतना नीक। एकर सूतधार छलीह महान स्वतंत्रता सेनानी आऽ परम गम्भीर, रतुमुख पवित्रभासँ सम्पन्न जेलियागरोग नागा समुदायक रानी गैदीन्लियू (Gaidinliu)। गैदीन्लियूक जन्म आजुक मणीपुर प्रान्तमे २६ जनवरी १९१५ ई. मे भेल छलन्हि। हुनकर गाम तामेगलोग जिला अन्तर्गत तौसेम सब-डिविजनमे छन्हि। गामक नाम लोगकाओ छैक।

कहल जाइत छैक कि पारम्भिकसँ गैदीन्लियू जनका कि स्थानीय लोक

सभ रानी मा कहैत छलक्हि, बहुत पकाभास् पन आओर साहसी छलीह। कावटा सरकारक सामाक्जक आर राजनैक्तक कक्रया-कलाप देक्ख तेरह षिक्क छोट अस्नािामे रानी मा वरि क्लत भऽ गेलीह आऽ एकरा वरि संघषक्क कागुल बजेबाक फ्लान करए लगलीह। ककंविदन्ती तँ ई छैक जे छोटे उमक्रमे रानी मा मे दैवकि ा कक्त पा ि कऽ गेलक्हि। हुनकर एक्हि आशयचानक ा कक्तक भान सिक्षिनम हुनक वतताके भेलक्हि। रानी मा के तेरहम अस्नािामे पहुँरैत एक्हि बातक अनुभूक्त होमय लगलक्हि जे अंगेज सभ पा ासनके मादे आऽ पुनः कक्वशायन कव नरी केर माध्यमसँ आजुक तीन उिरपूी रा् य- असम, नागालैणि आऽ मणीपुर- केर नागा जनजाक्तक तमाम उपजाक्त सबहक संस्कक्त, संस्कार आऽ पर् पराक ना ि कऽ रहल अक्छ। ठीक ओही क्ण रानी मा हैपु जदोनाग नामक नागा वरिोहीसँ भेट केलक्हि। जदोनाग रानी मा के बतेलक्खन्हि जे केना कक्वशायन कव नरीक लोक सभ स्नानीय संस्ककक्त आऽ संस्कारक सि ा ा कऽ रहल अक्छ। जदोनाग महोदयक दा चसँ पभाक्ती भय रानी मा हुनकर परम अनुयायी भऽ गेलीह। फेर की छल १९२७ ई. मे एकाएक लोक सभ आन्दोलन पार् भ कऽ देलक। रानी मा ओक्हि आन्दोलन केर पमुख सूतधारमे एक छलीह। लोक सभ एकाएक अंगेजक ा ुदक आऽ बलपूक्क बेगारीक पनाक वरिोध करय लागल। सबतक्र हडताल पवि गेलैक। धीरे-धीरे रा क्र-पार षिमे आन्दोलन अपन पराकाष ापर र क्छ गेल। दुभाग्यसँ ओक्हि समय हैपू जदोनागके अंगेज सभ छलसँ कैद कऽ लेलकक्हि आऽ ककक्कबे क्दनक बाद २९ अगस्त १९३१ ई. मे आजुक मणीपुर रा् यक राजधानी इ् फालमे फासीपर क्नदचयतापूणच िगसँ र ढा देलकक्हि। एक्हि घटनासँ रानी मा बडि दुखी भेलीह, परन्तु अपन क्नशय पर र टान जका ठाक्ढ छलीह।

आब आन्दोलन केर समस्त कमान रानी मा के हानमे आबि गेलन्हि। कतेक ठाम हुनकर गुरूदलानुमा अनुयायी सभ अंगेज सभके पशस्त कएलक। अंगेज क्षिपाही सभ रानी मा के युक्ति कौशलसँ ताकि-ताकि करय लागल। अही नॉनचकछार धरतीक हंगरम नामक गाममेअंगेज क्षिपाही आऽ रानी माक समनर्थकक बीर भयानक संघषर्चमेलैक। बादमे घोर तामसमे आबि अंगेज सभ समस्त गामके आवामे झोंकि देलकैक। जान-मालक बडि क्षति पहुँरलैक। एतबहि नहि अंगेज अधिकारी लोकनि एक गुप्त मीटिंग केलन्हि जाहिमे ई निर्णय लेल गेलैक जे कियोक रानी माक हुलिया बताओत तकरा पा ासन दिससँ पार सय टका इनाम देल जेतैक। परन्तु रानी माक पक्ष कछार क्षेत्रदस, मणीपुर तना नागालैण्कि लोकके बडि शक्ति छलैक। दुभाग्यसँ तिथ्यिान नागालैण्ड पान्तक पोइलिा गाम सँ १७ अक्टूबर १९३२ ई. मे अंगेज सैनिकक रानी मा के बन्दी बना लेलकन्हि। एहि सैन्य टुकडीक संरालन कैप्टन मैकिानादि करैत छलाह।

रानी माक दुनू हान बाक्ह देल गेलक्ह। रौदमे बान्हल हान उठेने ठाढ छलीह। एक रस्ता रलैत बूढके नीक नक्ह लगलक्ह। तमसा कऽ बाक्ज उठलाह: “सचिाा हो अहा लोकक्के। लाजे मक्र नक्ह होइत अक्छ। एक मक्हलाक दुनू हान बाक्ह ऊपर उठेने छी। मदच छी तँ हान खोक्ल क्दयौक”?

ताक्हपर अंगेज क्सपाही बूढापर क्रक्र आए लगलक्ह। बूढो आक् देखलाह ने ताक्। उठेलक्ह एकटा पानर आऽ पहार कऽ देलक्ह। संयोगसँ अंगेज क्सपाही बक् गेल। तुरतक्ह बूढाके कैद कऽ लेलकक्ह। तीन

मासक बाद बूढाक उमके ध्यानमे रखैत हुनका जेहलसँ रिहा कऽ देल गेलन्हि। रानी मा इम्फाल, तूरा, कोहिमा आऽ शिलागक जेहलमे अपन समय बिताबय लगलीह।

१९३७ ई. मे पण्डित जवाहिर लाल नेहरू रानी मा सँ शिलागक जेहेलमे भेट केलकान्हि आऽ हुनका पक्ष अपन सहानुभूति व्यक्त केलाह। हुनका जेहलसँ बाहर निकालबाक पयास सेहो पण्डितजी करय लगलाह। नेहरू जी रानी माके पहाडीक बेटीक संजा देलकान्हि आऽ हुनकर नामक संग सम्मानित रानी जोडि देलकान्हि। नेहरू जी रानी माक तुलना जॉन ऑफ आकचआऽ रानी लक्ष्मीबाई सँ केलकान्हि। हालाकि रानी मा के छोडेबामे नेहरू जी असमनर्थ रहलाह।
अन्ततः भारतक आजादी भेटलाक उपरान्त १४ अक्टूबर १९४७ ई. मे लगभग १५ षिर्चक विमन जेलमे रहलाक बाद रानीमा आजाद भेलीह।

हालाक कछु षिक बाद रानी मा अपन जनजातीय धमर्च्र्ग संस्कारपर कवशायन संस्ना दारा आघात बदाश्त नक केलक्ह आऽ पुनः अणरिगाउणि भय संघषचकरय लगलीह। १९६० ई मे सेहो हुनकर लगभग ३०० समनकक जान रक्ल गेलक्ह। बादमे रानी माके १९७२ ई. मे तामपत सतिन्ताता सेनानी अिाचि १९८१ मे पद भूषण आर १९८३ मे विकिानन्द सेि अिाचिदेल गेलक्ह।

अन्ततः १७ फरबरी १९९३ के लगभग ७८ षिक असिामे रानी मा पंर ततिमे विलीन भऽ गेलीह।

एखनहुँ धरि स्त्रीगण सभ (विशेष तौरपर नॉनचकछार क्षेत्र केर जनजातिक नागा जनजातिक स्त्रीगण) सभ रानी मा के सामाजिक आऽ राजनैतिक रचनाक मन्तके स्मरण करैत अपन संस्कृति आऽ सभ्यताक रक्षामे लागल छथि।

नॉनचकछार क्षेत्रमे अनेको तरहक पयोग हमरा लोकनि कएल। आन पयोग सभ पूर्णतः शैक्षणिक आऽ दार्शनिक छल। तँइ पाठकसँ ओहि विषय सभपर चर्चा कय हम अनेरे बोर नहि करय चाहैत छियन्हि। नॉनचकछार क्षेत्र केर यात्राक यायावरीके एतय अन्त कऽ रहल छी।

लोअर व्दािग घाटी: इदु-क्नासमी जनजात्तिक अनुपम संसार (यायािरी-३)

डॉ कैलाि कुमार क्नश, इक्नद्दरा गान्धी राष्टीय कला केन्द्रमे कायरति छव्थि। "रचना" मैथ्थली साव्हव्त्ययक पक्तकामे "यायािरी" स्तंभक पिस्त स्तंभकार शी कैलाि जीक "विदेह" लेल पारम्भ कएल गेल यायािरीक पस्तुत अव्छ ई तेसर खेप।

केत्तफलक दृवि कोणसू अरणाचल पदेि सम्पूणि उतर-पूिि भारतमे सबसू पैघ राज्य थीक। हालाक्क जनसंख्याक घनर्यि एतए सबसू कम छैक। समस्त राज्य हक्ररयर जंगल, पहाडसू भरल; रम्य आ आकषिकि। एव्ह राज्यमे २६ मूल जनजाक्त अनेक उपजाक्तक संग रव्ह रहल अव्छ। अरणाचलक अव्धकाि केत्तमे पहूुचनाई आइयो बहुत कव्ठन कायि छैक। एक ठाम पहूुचबाक हेतु कतेको बेर नदी पार केनाइ, कतहु पका सडकक नव्ह भेनाइ, कतहू जमीन धक्स जेबाक कारणे रस्ता अिरिध भऽ गेनाइ इत्याव्द सामान्य बात छैक। एव्ह कव्ठन पक्ररस्थक्तक कारण एतय केर जनजाक्त सब एखनो धक्र अपन मूल परम्परा, खान-पान, आभूषण, िस्त-विन्यास, रीक्त-क्रािजके सहेजने छव्थि। अनेक व्दस चीन एिं आन अन्तराष्टीय सीमासू सटल भारतक ई नैसवाकि पदेि सौन्दयकि दृवि सू भारतषिकि शृंगार थीक। एकर पाकृक्तक सिरिपक जतेक पिसा कएल जाय से कमे होयत। अरणाचलक नाम लैते मात तािग, ईटानगर (पदेिक राजधानी), बोमव्डला, बन्दरदेिा, रोईग, जीरो, क्तराप, सुबंसरी, नामसाई आ अनेक रम्य स्थान हमरा मानस पटलमे घुमय लगैत अव्छ।, आ घुमय लगैत अव्छ रंग-विरिंगक परम्परागत पक्रधानसू सजल अरणाचल पदेिक

जनजाति- सेडोपेन, खामती, आदी, इदू-मिसमी, दिगार-मिसमी, मिजो-मिसमी, आपातानी इत्यादिक झुण्डक-झुण्ड अपन सहजतामे हूसैत आ आबय बला प्रत्येक अतिथिके अपन स्वभाविक आ स्वीकारात्मक मुस्कानसँ स्वागत करैत। बिना कहने सब किछु कहैत।

तािहू यायावरीक एिह अंकमे हम अपन लोअर िदबाग घाटी िजलाक यात्रा वृतान्तक चरचा कऽ रहल छी। प्रदेशक िदबाग घाटी दू भाग-अपर िदबाग घाटी आ लोअर िदबाग घाटीमे बाटल छैक। हम अपन यात्रा अपन संस्थाक एक सहयोगी डॉ. ऋचा नेगीक संग िदसम्बर २००७मे केने रही। लोअर िदबाग घाटी तँ ठीक रहैक परन्तु अपर िदबाग घाटी जनपदमे अित बफर्खसलाक कारणे िबल्कुल अवरुद्ध छलैक। तािहू हमरा लोकिन ई िनणर्य लेलहुँ जे अपना आपके िसफर् लोअर िदबाग घाटी जनपद तक सीिमत राखब आ ओतय केर इदु-िमसमी जनजाितपर कायर्करब। कायर्क मतलब ई जे इदु-िमसमीक जीिवका-चयर्, गृह-िनमार्ण, पािक-िवहार, िस्त्र-िवन्यास, शृंगार-प्रसाधन, गहना, िववाह, कृिष-कायर्, स्त्री-पुरुषक सम्बन्ध, परम्परागत क्रीडा आिदक िवस्तारसँ प्रलेखन आ डाक्युमेन्टेशन केनाइ। इदु-िमसमीक भाषा, संस्कृितसँ अपना-आपके अवगत करेनाइ।

डॉ. ऋचा नेगी एक प्रख्याित आ िवरष्ठ मानविवज्ञानी प्रोफेसर रघुनाथ िसंह नेगीक पुत्री छिथ। ओना तँ िहनकर िवषय अंग्रेजीमे एम.ए. एिफल अंग्रेजीयेमे लोक नाटयपर छिन्ह, परन्तु भ्रमणमे खूब मोन लगैत छिन्ह। ई अलग बात छैक जे ओ एको आखर िलखयसँ सदिखकाल बचबाक बहाना बनबयमे मािहर छिथ। ऋचाजीके समस्त अरुणाचल प्रदेशसँ अथाह प्रेम छिन्ह। हमरासँ ज्यादे ओ अरुणाचल प्रदेशमे रहैत छिथ। जखन-कखनहु हमरा लोकिन उत्तर-पूवीर् भारतक यात्रा करैत छी तँ गोिहाटी जाइते मात्र ऋचाजी कोनो-ने-कोनो बहाना बनाय

अरुणाचलक हेतु पस्थान कऽ जाइत छथि। पुनः दिल्ली घुरि अयबाक काल कोलकाता बिच्ने गोहाटी आबि जाइत छथि। कद-काठी, उजरी गोराइ एहेन छन्हि जे सहजतासू अरुणाचलमे खइप जाइत छथि। लम्बाई पाच फुटसू ज्यादे नहि हेतन्हि। एहि सब कारणे अरुणाचलमे लोक ऋचाजीके स्थानीय बुझैत छन्हि। एहि बातपर ओ बडड पसन रहैत छथि।

बात लोअर दिबाग घाटी जनपद केर याताक सम्बन्धमे करैत रही। ई हमर पथम याता छल, परन्तु ऋचाजी एकबेर पहिने आबि एहि जनपद केर डिप्टी कमिसनर, भाषा अधिकारी, जिला कला आओर संस्कृति अधिकारी एवं किछु स्थानीय लोक सभसू बातचीत कय कार्यक्रम केर रुपरेखा बना कऽ गेल छलीह। ताहि पर्योजनाक कायानवयनमे हमरा लोकनिके कोनो तरहक दिकत नहि भेल।

लोअर दिबाग घाटी जनपद केर मुख्यालय केर नाम रोईग छैक। रोईग ओना तू जनपद केर मुख्यालय थीक परन्तु जनसंख्या आदिक दृष्टिए एना लागत जेना कोनो पखण्ड-स्तर केर कस्बा हो। ताइमे रोईग पहूचनाइ बहुत दुश्कर। हमरा लोकनि दिल्लीसू हवाई जहाजसू असम राज्य डिबूगढ अयलहू। डिबूगढसू दू टाटा सूमो टेक्सी लेल। एक टेक्सीमे हम आ डॉ. ऋचा नेगी आ दोसर टेक्सीमे हमरा लोकनिक विडियो कैमराक सदस्य लोकनि अपन असला-खसला लय सवार भऽ गेलाह। डिबूगढ हवाई अडडासू हमरा लोकनि तीनसुकिया अयलहू। ओतय जरुरीक किछु समान जेना कि टॉर्च, रेनकोट, छता, खयबाक हेतु नमकीन आदि कीन रोईग लेल पस्थान कएल। तीनसुकियासू रोईग कोनो बडड दूर नहि छैक। लगभग ७५-८० किलोमीटर हेतैक मुदा पहूचनाइ दुष्कर। सर्वप्रथिम हमरा लोकनि सदियाघाट नामक स्थान जे कि बहपुत नदीक कछेरपर छैक, पर पहूचलहू। ओतयसू

एक पाइिट फेरीलासू बात कय अपन दुनू टेक्सीक संग बहपुत पार करबाक हेतु मोटरबला नामे सिर भेलहु। सिर होमाक पवियामातमे लगभग सि घन्टा लावा गेल।
आब हमरा लोकक्नक नाि बहपुतक दोसर कछेरक याताक हेतु पस्थान कऽ चुकल। नाके चक्लते एना बुझायल जेना कोनो समुरक बीच आक्ब गेलहु। चार क्दस जलमग्न। ऊपरसू साझ से भऽ गेल रहैक। बहपुतक ि नत्त सिभा आ नाकि मोटरक पाक्त काटक पवियाक कारणे एक अलग कक्सम केर बनैत पाक्नक सिरप, िषाक कारणे मक्टयाएल पाक्त, हमरा नीक लगैत छल। नाि बला सभ कहलक जे सक्दयाघाटसू दोसर दीयरा क्दस जायमे लगभग सि घंटा लागत। लगभग १० क्मनट पाक्नमे चललाक बाद नाकि मलाह अपन खोलीसू एक छोट क्छन्ह बोतल क्नकाललक। बोतल पौआ देिी दारक रहैक। आधा भरल। दू आरमी क्लना पाक्त क्मलेने आधा-आधा घटक्क लेलक आ जय कमला मइया कहैत खाली बोतलके बहपुतमे फेक्क देलकैक। पुनः ओ सब आपसमे मैक्थलीमे िातालाप पारम्भ केलक।
हम पुछक्लयैक: ‘‘अहा लोकक्न कतय केर छी’’?
हम सब क्बहारक छी’’। ओ सब उत्तर देलक।
हम पुनः पुछक्लयैक:’’क्बहारक छी से तू हम बुक्झ गेलहु, क्बहारक कोन क्जलामे अहा लोकक्नक घर थीक?’’
ताक्हपर ओ जिाब देलक- ‘‘हमरा लोकक्न पूक्णयािी क्जलासू छी’’।
एक्हपर हम कहक्लयैक- ‘‘हम मधुबनीसू छी’’।
एकर बाद हमरा लोकक्न अपन िातालाप मैक्थलीमे िुर कऽ देल।
मलाह हमर क्दस इंवात भय कहलक- ‘‘सरकार अहा लोकक्न कतयसू आयल छी’’।
एक्हपर हम कहक्लयैक, ‘‘हम मधुबनीसू छी’’।

एकर बाद हमरा लोकनि अपन गितालाप मैथिलीमे शुरु कऽ देल। मलाह हमरा दिस इंगित भय कहलक: “सरकार अहा लोकनि कतयसँ आयल छी”?

हम जबाब देलियैक: “दिल्लीसँ। हमरा लोकनि भारत सरकारक अधीनस्थ कर्मचारी छियै। लोअर दिबाग घाटी जिलामे ओतय केर लोकक विशेषतः इदु-मिसमी जनजातिक संस्कृतिके बुझबाक हेतु एवं ओकर संस्कृतिपर कार्यक्रम करबाक हेतु आयल छी”।

हमर जबाब सुनि मलहबा भैया पुछलक: “सरकार, अहा सब कहियासँ कहिया धरि लोअर दिबाग घाटीमे रहब? लोअर दिबाग घाटीक मुख्यालय रोईंग छैक। रोईंगमे कतय रहब”?

हम कहलियैक: “भाई, हम सब दिन भरि तँ भिन्न-भिन्न गाम सबमे कार्यक्रम आऽ रातुक विश्राम रोईंग केर कोनो होटलमे करब। रोईंगक ई हमर प्रथम यात्रा थीक तैँ होटल आदिक नाम हमरा बुझल नहि अछि। हँ ओतय केर जिला शिक्षा अधिकारी श्री शुक्लाकर हमर पूर्व परिचित लोक छथि। हमर जे महिला सखी छथि (डॉ. ऋचा नेगी) सेहो रोईंग एवं आस-पास केर इलाकासँ पूर्व परिचित छथि। श्री शुक्लाकर एवं डॉ. ऋचा नेगी दुनू गोटे सम्भवतः नीक जगहमे हमरा लोकनिक रात्रि-विश्रामक व्यवस्था करतीह ई विश्वास अछि। जहा तक कार्यक्रमक बात छैक तँ हमरा लोकनि २४ फरबरीसँ १ फरबरी २००८ धरि सम्पूर्ण लोअर दिबाग घाटीमे कार्यक्रमक योजना बना कऽ आयल छी। आगा भगवानक मर्जी”।

हमरा लोकनि बात करिते रही, ओहि बीच एकाएक बरखाक एक-आध बुन्द खसय लगलैक। हम डरि गेलहुँ। भेल कही बीच बहपुत धारमे नहि फूसि जाइ। डरैत पुछलियैक : “कही जोरसँ बरखा तँ नहि हेतैक? आ भेलैक तऽ हमरा लोकनि केर की गति हैत”?

हमर अकुलायल पशसू परेशानि होइत मलहबा भाइ हूसैत एिक भीक स्वरिमे बाजल- "सरकार, अनेरे कएक परेशानि भऽ रहल छी? ई बरखा ओना तू हैत नहि आ कनसाइत भइयो गेल तू कन्ताक कोनो बात नहि। हमसब जलकर केर सन्तान छी। महाराज कोइलाबीरक पुजारी छी। कोशी माइ केर कोरामे बढल छी। कहू मालिक! कोसीसू खतरनाक भला कोनो धार दुनियामे भला भऽ सकैत अछि? कमलेसरी मैयाक कृपा हमरा सब पर छन्हि। लगभग १५ बरखसू नाि चला रहल छी, आइ तक कोनो दुघटिना नहि घटल भेल। बाना कमलेसरी आ कोइलाबीरक सुमिरन केने घरसू नहि ककलैत छी"।

मलहबा भाइ केर ढाढससू मोन कनि चैन भेल। वितालापक कडी टूटल नहि। हम पुछलियैक: "अहा सब हमरा ई कहू जे पुरनियासू सहरमाघाट कोना अयलहू।

मलहबा भैया कहलक : "सरकार, पेट अनलक। गाममे बडड गरीबी छल। एकटा बाभनसू हमर बाबू तीन सय टाका हमर बहिनक बियाह लेल सूदिपर लेलकैक। एहि आशिमे जे धान-पान नीक जका हैत तू धान बेचि एिक मखानक खेतीक पाइसू कजा सधा देबैक। दुभाग्यसू लगातार तीन बरख कोसीमे बाढि अबैत रहलैक आ बभनाक पाइ सधेनाइ तू दूर हम सब अपन पेट भरक लेल धान आ अन सेहो डेढापर लय लेललयैक। सब टा चीज बढैत गेलैक। अन्ततः पाच बरखक बाद डकूबा बभना सब टा जोडि-जाडि चालिस हजार टका बना देलकैक। गाममे पंचैती बैसलैक। हमर बूढ बाबूके बभनाक बेटा सभ बाहि कऽ मारलकैक। हमरा सबहिक तीन बीघा जमीन बलजोरी लिखा लेलक"।

"मालिक! मरता क्या नही करता! एक दिन साझ खन हमर बाबू हमरा दुनू भाइके बजौलक आ कनैत कहलक। 'बौआ! हम तू बीट-

बीट धरतीके बेच देलयौ। आब तो सब धरतीहीन छै। जो कलकता-असम कतहू कमा आ पाइ भेज जाइसू गुजर चलौक '। एकर बाद बाबू हमरा दुनू भाइके पकड़ जोर-जोरसू कानय लागल"।

"बाबूक बात तू सत्य छलैक। हमर दुनू भाइ गामसू ककयाक गहना बन्हक राख कलकता आबा गेलहु। कलकतामे मोहयाबुजि नामक स्थानपर रकि चलाबय लगलहु। ि र मे तू बडड थकान भेल परन्तु धीरे-धीरे मोन लावा गेल। बाबू आ बच्चा सबहक बडड ध्यान अबैत छल। एक दिन साझमे टेलगाम आयल जे "बाबू मर गेल"। देखयौ सरकार, हमर बाबूक दुभाग्य, मरऽ काल हम दुनू भाइ बाबू लग नहि रहयैक। हमर कायौत आवा देलकैक"।

"बाबू शाधमे गाम गेलहु तू कछु लोक कुटमैतीक नोत पूरक हेतु अयलाह। ओ सब कहलक असम चलू। हम सब असम आबा गेलहु। तहयेसू सदिया घाटमे छी। बाबू तू हमर जमीनक ि कमे मर गेल, मुदा हम सब १५ बरखमे पाच बीघासू ऊपर जमीन लेलहु। माय एखनहु जीबैत अछ। माय हमेि कहैत अछ। 'रे रामओतार! तोहर बाऊ तोरा स गिसू आि ि ि द दैत छौह। बभनाके देख, कुि फुट गेल छैक। बेटासभ लगो नहि अबैत छैक। घरबाली मर गेलैक। अपने असगरे टाइं-टाइं करैत अछ'। सरकार हमरा सबके होइत अछ जे स गि न्निरक सब एहि धरतीमे छैक"।

हम रामओतारके कहलयैक- "हमरा बडड पसनता भेल जे तो सब एतय इमानदारीसू मएहनक कय सम्मानक अजि करैत छह। नीक चीजक परिणाम नीके होइत छैक"।

संयोग नीक छल। कनीक बुन्दी-बान्दी भय आकाि स्वच्छ भऽ गेलैक। बरखा नहि भेलैक। मोन खरहर भऽ गेल। ओना जनिरी-फरिरी महिना पचण्ड जाड, बरखा आ बफि खसबाक समय छैक

लोअर क्दबाग घाटीमे। अपर क्दबाग घाटी तू एक्ह मासमे आबाजाही साफे बन्द भऽ जाइत छैक। समस्त इलाका बफ़र्आऽ पाक्सू भरल। रस्ता सबपर बफ़कि परत दर परत जमल रहैत छैक। स्थानीय लोक सब दू तीन मास पक्हने जर री समान जेना क्क नोन, तेल, मसल्ला, दा िइ, िस्त, इन्धन, अन आक्दक भण्डारण कऽ कए राक्ख लैत अक्छ।

खैर! थोरेक कालक बाद घाटक दोसर कछेरपर हमरा लोकक्त पहूक्च गेलहू। आब राक्त भऽ गेल छल। पता चलल जे ओतयसू रोईंग िहर लगभग ५५ क्कलोमीटर केर दूरीपर अिक्स्थत छैक। ५५ क्कलोमीटरमे लगभग १५ क्कलोमीटर क्दयारा अथात् बालु आ कादोसू भरल कच्चा रस्ता। पक्हने गेल गाडीक लीकपर चलैत रही। खूब सा िधानीक संग। डाइ िरक गक्त आ क्दमाग दुनू चीजक आि यजिनक सामंजस्यक संग चलबाक जर रत। से नक्ह भेल तू कतहू फूक्स जाएब।

हमरा लोकक्तक गाडी टाटा-सूमो छल। गाडीक डाइ िर धमा बडा तेज आ बातूनी। ऋचा नेगीके हा मे हा क्तला कऽ बेबकूफ बनेबामे माक्हर। ओना डाइ िरीमे ओतेक क्तपुण नक्ह जतेक बात बनेबामे। हम सब अन्हक्रया राक्तमे ओक्ह सुन-सान क्दयारामे जाइत रही। एकाएक गाडीक पक्छला चका थालमे फूक्स गेलैक। हम सब क्कयो बाहर क्तकललहू। क्कछु कारण ि ऋचाजी सू बाताबाती भऽ गेल रहए ताक्हू िितालाप नक्ह चलैत छल। ऋचाजी अपन िखी बखारय लगलीह। तुरत अपन भायक दोस्त जे क्क गोरखा रेजीमेन्टमे छलक्ह तकरा फोन करय लगलीह। एम्हर हमरा लोकक्त डण्टा आऽ खन्तीसू पक्छलका चका आ मडगाड िलग जमल माक्टके हटाबय लगलहू। लगभग आधा घण्टा धक्र ऋचाजीके फोनो नक्ह लगलक्ह। जखन

लगलक्हि तू गोरखा रेजीमेन्टक केर ऑफिसर सब कहलकन्हि जे आबयमे ओकरा सबके थोरेक देर लगतैक कारण ओऽ सब कोनो दोसर ठाम फूसल गाडीके निकालबाक हेतु पहिनेसू कतहु गेल छैक। खैर! हमरा लोकनि अपन पयासमे लागल रही। हमरा लोकनिक मणीपुरी कैमरामेन या विडियोगाफर रोनेल हाओबाम आ जेम्स बडा उत्साही युवि छलाह। ओ सभ पूर्ण तिन्मयताक संगे कादो निकालयमे लागल रहलाह। हुनका लोकनिक साहसके देखैत हमहू सेतु बान्हक लुक्खी जका कनी-कनी माटि निकालैत रहलहु। हमरा सभ लग दुर्भाग्यसू टॉर्च आदि सेहो नहि छल।
ओहि बीचमे धमा डाइरि बाजल जे एहि रस्तामे चलबाक हेतु जररी छैक जे गाडीमे एक कोदारि, एक खन्ती, एक टॉर्च आदि लऽ कऽ चलए"।
धमा पहिनहु ऋचाजीक संग लोअर दिबाग घाटीमे आबि चुकल छल। हम आब ओकरापर कनी तमसेलहु- "तो पहिने किएक नहि खन्ती, कोदारि, टॉर्च आदि नहि अनलैह? जखन रस्ताक बारेमे बूझल छलौक तू एना केयरलेस किएक"?

ऋचाजी धमाके बचेबाक मुरामे हमरा लग अयलीह। एहिसू पहिने जे ओऽ किछु बजितथि, हम कहलियैन- "अहा लेल नीक हैत जे अहा एकौ शब्द नहि निकालू। हम एखन घोर तामसमे छी! अहा सभ पहिने की एतय घासकटिक मनेबाक हेतु आयल छी"?
ऋचाजी हमर तामससू पूर्व परिचित छलीह। ओऽ चुपे रहबामे अपन कल्याण बुझलन्हि आ किछु बातक जवाब नहि देलीह। ओना रोनल आऽ जेम्स केर जतेक प्रशंसा करी से कम। दुनू बिना एकौ मिनट केर आरामक कादो हटबैत रहलाह। हमहू तमसाइत, खिसियाइत

रहलहुँ मुदा कादो हटेबाक कायक्रि रकय नक्ह देक्लयैक। अन्ततः हमरा लोकक्त अपन उदेश्यमे सफलता पाप्त कएल। गाडी कादोसूँ बाहर भेल। आब रात्तमे बौआइत डेराइत हमरा लोकक्त अपन गन्तव्य क्दस बढय लगलहुँ। लगभग १५ क्कलोमीटर आगा बढलाक बाद गोरखा रेजीमेन्ट बला सब एक जीप आऽ एक टकक संग हमरा लोकक्त लग आयल। धमा डाइरि ओकरासभके बता देलकैक जे हमरा लोकक्तक टाटा सूमो सतिः हमरा लोकक्तक पयाससूँ ठीक भऽ गेल।

मुदा ऋचाजी कतय मानयबाली। सेना जीपके रोकबाक इारा करैत सयिं गाडीसूँ बाहर अयलीह। हाथ क्तलेलक्ह। मुरा एहेन बनेली जेना भारतक तीनू सेनाक सायिक्र अक्धकारी होक्थ। हम तामसे भेर रही।

खैर लगभग साढे दस बजे रात्तमे हमरा लोकक्त रोईग आक्त एक स्थानीय होटलमे अयलहुँ। आब पाक्त खूब जोरसूँ होबय लगलैक। होटलक मैनेजर एक बंगाली भरलोक छलाह। कनीक फुचफुचाएल। लगभग ६२ षिक्र श्यामर्िण। मोटुका चश्मा धारण केने। हम सभ जखन होटल अयलहुँ तूँ पता चलल जे क्जला ाध अक्धकारी डॉ. पी.के.शुक्तकर एि क्जला भाषाक्धकारी शी जेक्त पुलू महोदय हमरा लोकक्तक रहय केर क्यसिथा डॉ. ऋचा नेगीसूँ दूरभाषसूँ भेल बातचीतक आधारपर पूक्हिूं एक्ह होटलमे केने छलाह। डॉ. शुक्तकर सयिं कतहु क्यसत्त छलाह ताक्हूं लोअर क्दाग घाटीक क्जला कला एि संस्कृक्त अक्धकारी शी गोगोई लीवा एि क्जला भाषाक्धकारी शी जेक्तपुलूके हमरा लोकक्तक सागत एि क्दा क्तदेन हेतु होटलमे पठा देने रहक्थ। जार पचण्ड रहैक। थर-थर कूपैत आ ऊपरसूँ पाक्तमे क्भजैत कोनो तरहे हमरा लोकक्त होटलक पागणमे पि

केलहु। होटलक संगित कक्षमे पर्णि कक्षते मात बिजली गुम भऽ गेलैक। अन्हार गुप्प!!! होटल केर मैनेजर साहेब तुरत एकटा १३-१४ षीय बच्चाके बजौलाह। ओऽ बच्चा सेहो मोतीहारी जिलाक रहैक। बच्चाके डटैत मोमबती लयबाक आदेश देलखिन्ह। हम कहलियन्हि- ‘‘एतय जेनेरेटर केर व्यवस्था नहि छैक की’’? ताहिपर गोगोई लीवा महोदय कहलाह- ‘‘एतय ई सभ सुविधा कोना भेटत? एतय केर सभसू नीक होटल यैह छैक। समय कोहुना बिताबय पडत। एहिसू नीक समस्त रोईग शिरमे कोनो स्थान नहि छैक’’। कनीक कालक बाद ओ बच्चा (होटल केर नौकर) तीन टा मोमबती लय हमरा लोकनि लग एक आरो नौकरक संग आयल। पता चलल जे हमरा लोकनिक व्यवस्था होटल केर तेसर तल्लापर अछि। जखन तेसर तल्लापर पहुचलहु तू घोर पश्चाताप भेल। तमाम कमरासभ दुगन्धिसू भरल। कोनो कमरामे लैट्रिन-बाथरूम संलग्न नहि, मूस सभ एम्हर-ओम्हर दौडैत; ओछाओन सभ मैल, मसुआएल आ दुगन्धिसू भरल। भेल, हे भगवान। कतय आबि गेलहु। अन्ततः एक कमरा कनीक नीक लागल। हम अपन लैपटॉप बला बैग लय ओहि कमरा दिस आगा बढि कहलियैक जे- ‘‘हमर समान एतय राखू’’।

बीचहिमे जिला कला एवं संस्कृति अधिकारी शी गोगोई लीवा महोदय झटाक दऽ बाजि उठलाह- ‘‘नहि, नहि। एहि कमरामे अहा नहि रहि सकैत छी। कोनो आन कमरा पसन्द कऽ लिअ। ई कमरा हमरा लोकनि डायरेक्टर महोदया लेल सुरक्षित रखने छी’’।

ई कहि गोगोई लीवा ऋचाजीक बैग लय ओहि कमरामे आबि गेलाह। फेर होटलक नौकरके आदेश देलखिन्ह: ‘‘एहि कमराके ठीकसू साफ कय डॉ. ऋचा नेगी लेल तैयार करह’’।

हम तामसे भेर भऽ गेलहु। तामससू कापैत कहलियैक: ‘‘कियोक

डायरेक्टर नहि अछि एतय। जैह ऋचा नेगी छथि, सैह हमहू छी। दू तरहक कमराक किदेि अहा लोककेके के देलक”?

तािति ऋचाजी ओतय आबि गेल छलीह। ओऽ तुरतहि अपन गलतीके ठीक करऽ लगलीह। गोगोई लीवासू हमर परिचय करओलिन्ह: “ई डॉ. कैलाि कुमार मिश छथि। हम सभ दुनू गोटे िधि अधिकारी छी। ई ज्यादे काल असम, मणीपुर, मेघालय, नागालैण्ड, त्रिपुरा आदिमे व्यस्त रहैत छथि। अरणाचल मूलतः हमही अबैत छी। हिनका यैह कमरा देल जाय”।

हम ऋचाजीके किछु नहि कहलियन्हि। अपन समान ओही कमरामे राखि लेल। गोगोई लीवा महोदय एिं भाषाधिकारी जीमि पुलू महोदयसू हाथ मिला अपन समान सभ ठीक करय लगलहु। ओऽ सभ ऋचाजी एिं हमर टीमक आन सदस्य सभ लेल कमराक व्यिस्थामे लावा गेलाह। आब बिजली सेहो आबि गेल छलैक। हम मुह हाथ धोबय चाहैत रही। मुदा पानि सदिएतेक जेना बफििहो। की कर? घंटी बजाय मैनेजर साहेबके बजाओल आ किदेि देलोयन्हि जे तुरत गरम पानिक व्यिस्था करओल जाय।

पन्द्रह मिनटक बाद एक लडका एक बाल्टीन पानि लए पििि कएलक। आब हम कपडा बदलि मुह हाथ धोलहु। हाथमे थाल इत्यादि लागल छल। तकरा नीक जका साफ कयल। कनीक कालक बाद रातिक भोजन केर व्यिस्था भेल, मोटका चाउरक भात, हरियर तरकारी, स्थानीय साग, मुगाक मास, मसुरिक दालि, टमाटर, पियाज, मुरइ, हरियर मिरचाई इत्यादि केर सलाद। रोटीक कल्पना केनाई मूखति। ताहू भोजन करय लगलहु। मुदा भोजनमे कोनो सिाद नहि। भूख हदसू ज्यादा, मुदा सिादहीन भोजन खाऊ तू कोना! तातिमे कैमरामेन रोनल आ जेम्स हमरा लग आबि गेलाह। कहलन्हि- “सर, ई भोजन

अहा नहि खाऽ सकैत छी। स्थानीय मसाला आऽ बिना तेलक बनल छैक। हमरा लोकनि बडड भुखायल छी। एतय एक सप्ताह रहबाक सेहो अछि। अहा दू पैग रमक लऽ लिअ। जाड सेहो ठीक भऽ जाएत। एक आज्ञाकारी विषिय जका हम बिना कोनो तकिकेने रोनल आ जेम्सक बात मानि लेलहु। जेम्स एक स्टील बला ग्लासमे एकै बेर दू पैग रम ढारि पानिसू भरि हमरा लग अनलन्हि। हम धीरे-धीरे पी लेलहु। आ नीक जका भोजन कय डायरी लीखय लगलहु। कनीक कालक बाद ऋचाजी अयलीह। कहलन्हि: “हम अहासू किछु बात करय चाहैत छी”।

हम कहलियन्हि: “हम एखन बात करबाक मूडमे नहि छी। काफी थाकल छी। अपसेट सेहो छी। अहा हमरासू भोरमे बात कर ।

ऋचाजी फेर कहलन्हि- “हमरा बुझा रहल अछि जे गोगोई लीवाक बातसू अहाके हमरा परति किछु गलतफहमी भऽ गेल अछि। हम ओकरा दूर करए चाहैत छी। हमरा मात ५-१० मिनट समय दिअ। हम फेर चलि जाएब”।

हम साफ मना कऽ देलियन्हि। “देखू ऋचाजी। हम एखन बहुत डिसटबिआऽ थाकल छी। अहासू हम कोनो तरहक ितालापक मूडमे नहि छी। जतेक गलतफहमी अछि तकरा भोरमे ठीक करब। एखन हम असगर रहए चाहैत छी। चिन्तन करए चाहैत छी। आऽ पुनः सुतए चाहैत छी। अहू थाकल छी, जाउ आऽ सुति रहू”।

ऋचाजी बुझि गेलीह जे हम नाराज छियन्हि, मुदा ितालाप सेहो सम्भि नहि। किछुक उदास भय नहु-नहु हमरा कमरासू बाहर भऽ गेलीह। जाइत-जाइत िभ-राति कहलन्हि, मुदा हम कोनो उतर नहि देलियन्हि। किछुक काल तक हम तमाम परियोजनापर सोचैत रहलहु। रोईगक एहि विकिट होटलमे अपन पुत ििकक याद बेर-बेर अबैत

छल। सोच्च रहल रही जे पूनम (हमर कन्नया) बडड परेिान हेतीह। बात करय चाहैत रही। परन्तु नेटकिसाफे इंवात नहि भऽ रहल छल। काफी कचोट भेल। अन्ततः सुक्त रहलहु।

यायारिी: संगाईपाऊ : नागा पूिचाक स्मरणक धरोहर

उिर-पूिचभारतक तमाम पदो हमरा नीक लगैत अिछ। नीक लगैत अिछ ओतए केर पहाड, पठार, जंगल, गाछ, बिृक, फल, फूल, खेत, खिरहान, सुर् य झरना, जीि-जन्तु आ ओइ पिरिी मे बसल भाित-भाितक लोक जे अपन बहुरंगी संस्कृितक संग जीब रहल अिछ। तखन जखन हमर मणीपुर केर राजधानीसँ लगभग 7 िकलोमीटर केर दूरीपर समतल भूिममे बसल कबुई नागा जनजाित बहुल गाममे जएबाक िनमंतण ाोधक कारणे भेटल तँ मोन गद-गद भऽ गेल। ई समए नीक िसत् बर 2010 केर मध्य। हमरा लग हिाई जहाजक टीकट याता करक पार िदन पिहने आिब गेल छल। इहो िनणचय भऽ गेल छल जे ाोध कायचमे हमरा एकटा कबुई बाला - बीजू जे िक ओही गामसँ नीकीह से मदित करतीह। बीजू समाजाास्तमे पूणे विश्वि ालयसँ एम.ए. केलाक बाद आइ-कािल असम सेनिल विश्वि ालय िसलररसँ पी.एर.ि. कऽ रहल छिथ। बीजुक आयु लगभग 26 िषचक हेतिन्ह। मोट मुदा मजगुतगर देह हिलट। नुलनुन निह, आकषचक। नाक कनी पीरल, आँिख कनी धसल मुदा सोहनगर। गसल-गसल बाल, भरल गाल, उनत कि आ मध्यम कद-करीब 5फीट 2 ईर, गौर िणिच गसल-गसल दुिधया दात रमरम करैत।

हँसैत मुँह, ल् जाभासिँ भरल, अक्ताक्त सो-सत्कारमे सदक्ताकाल तैय्यार। अंगेजी बीजू मातभ्भाषा जका बजैत छक्त तँए हमरा हुनका संगे स् पेषणमे कुनो तरहक क्दकत नै भेल। ओना हमर पक्रयोजनाक स् बन्ध मक्हला वकास, इन्फॉरमो न टेक्नोलॉजी, आ संस्कक्तसँ रहैत अक्छ आ बीजू सोसल किम्बे ा ेध कायचककरैत छलीह। मुदा हुनकर फोकस उ र-पूचिभारत केर जनजातीय मक्हला समुदायमे एडस एिं अही तरहक वमारी (अनि महामारी)क पकोपपर छलक्ह। सोर ल, नारी र ेतना क्दस तँ कायचकक्रते छक्त, कक्छु किंग आ उत्साह स् बधच्च केर पशर ात हमरो संगे काज कऽ लेतीह . यएह सोरैत बीजूके हम अपन पक्रयोजनामे राक्ख लेलयक्ह।

जखन पक्हल बेर मक्णपुरक राजधानी इ् फालसँ संगाइपाऊ गाम क्दस गामक र ाक्र युकि आ *Read Global* संस्नाक एगो सहयोगी नाक्हद जुबेरक संग हमरा लोकक्त वदा भेलहुँ तँ लागल जे युकि सभ उत्साही छक्त आ क्हनका लोकक्तक मदक्त से हमरा एतऽ कायचककरैमे सुवधा हएत।

संगाइपाऊ एक साफ आ सुन्दर गाम नीक जे क्क पक्शर मी इ् फाल क्जलाक अन्तगच्च लमजाओतोगबा गाम पंर ायतमे अबैत अक्छ। अगर इ् फाल ा हरसँ हाई अडा क्दस पारंभ करब तँ ा हरसँ लगभग 7 क्कलो मीटर र ललाक बाद दूटा रार्ष्टीय राजमागचसंख्या 53 और 150 केर मध्य ई गाम बसल अक्छ। संगाईपाऊ नाम मक्णपुर रा् यक

माइनोलॉजीसँ लेल गेल छैक। तै मीनक अनुसारे संगाईपाऊ संगाई जे कि र्‍ यक जानबर छैक केर आिस स्‍थान मानल जाइत छैक।

ओइ गाममे अधिकाा लोक सभ कबुई नागा समुदायसँ छथि। कबुई नागाके रोगमेई नामसँ सेहो जानल जाइत छैक। गाममे पिा करते हमरा बीजू भेट भेलीह। हम बीजूके कहलिएक जे हम अतए केर किछु बुढ-पुरान, किछु महिला, किछु युिक आदि सँ भेट करए र‍ाहैत छी आ हुनका लोकनिसँ ऐ गाम, एकर लोक इतिहास, एतुका पर्‍परा, आर्थिक-सामाजिक पिर्‍ि इत्यादि पर अपन जानकारी बढबए र‍ाहैत छी जैसँ रिपोटचलीखबामे सुविधा रहत। हमरा बातके सुनिते बीजू हमरा गामक सभसँ बुढ आ जातीय पधान लग लऽ गेलीह। बुढ 86 िषिक छलाह। सातमा पास केलाक बाद सरकारी स्कूलमे मास्टर भऽ गेलाह। बेटा-बेटी सभके नीक वि का देलखिह। हुनकासँ जात भेल जे हुनकर पूिज किछु आरो लोक सबहक संगे पहाडसँ उिर ऐ गाममे लगभग 1780 ई.मे बसलाह। य्‍ वि हुनका लग ऐ बातक ऐतिहासिकताक कुनो लिखित पमाण नै छलखिह। हुनका हिसाबे पार्‍भमे मात ग्यारह पििर ऐ गाममे बसल। ऐ ग्यारह पििरके मुखियाक नाम आइयो गामक बूढ-पुरान सबहक मुँहमे छै। ई ग्यारह व्यक्ति छलाह-

1. गोन्खी

2. *नो बुई*
3. *बोकमलाक*
4. *सराऊ*
5. *लंगखोंगटबा*
6. *गंगबी*
7. *ममुईबा*
8. *गंगनागिम*
9. *मईपाक*
10. *तरागबोनाग*
11. *कपजीलुपूई (मक्हला)*

अगर दन्ताकनाके मानी तँ ई लोकक्स बडि उ मी छलाह। स्थानीय राजा क्हनकर उ ब्मतासँ पसन भऽ क्हनका लोकक्सके अगल-बगल केर पक्सगर खेत सभमे धान उपजेबाक लेल कहलक्खन। ई सभ बडा साहसी आ दबंग सेहो छलाह। तै क्दनमे क्हनका लोकक्सके गुणि आ अपराधी ततकि पकरबाक तना सजा देबाक अक्धकार सेहो दऽ देलक्खन। ई ग्यारह पूचि संगाईपाऊ बचरा संगे बक्स अशिय गेलाह मुदा अपन-अपन मूलगामसँ स बन्ध सेहो बनौने रहलक्ह। ओतए अनात पहारक घर इत्याक्दके नै छोडलाह। जाइत-अबैत रहलाह।

जखन द्वितीय विश्वयुद्ध रहल छल, तै काल नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अपन आजाद हिन्द फौजक संग जापानक सहयोगसँ अही रस्ते ताकिह समएक ब्रिटिश (आ आजुक म्यंमार)सँ सम्पर्क रखने छलाह। मणिपुर म्यंमारक सीमा सं सटल अछि। फलत: अतए केर लोकके भयंकर बमबारीक समाना करए पडलैक। पहाडीपर रहैबला लोकक जीनि लगातार, बमबारीसँ परेशान भऽ कखनहुँ झाड-झंखाड दिस तँ कखनहुँ मैदानी भाग दिस दहा तसँ पाणरक्षाक लेल भागए लागल। ओहुकाल पहाडीपर बसल गामसँ किछु कबुई नागा लोकनि संगाईपाऊ गाममे आबि बसि गेलाह।

तँ बात करैत रही गामक सभसँ बुढ पुरुषक। ओ परम्परागत रूपसँ कबुई समाजक पधान छथि। ओ कहलनि जे आब ऐ गामक लगभग 35 पतिशत नागा लोकनि ईसाई भऽ गेलाह अछि। एकर बादो आपसमे कुनो भिन्नता नै लोक सभ परम्परागत पाबनि-तिहार, नाच-गान, सभ एके संग अखनहुँ बड उत्साहसँ मनबैत छथि। अखनहुँ ई लोकनि अपन पूर्वजके देवतासँ बेसिए सम्मान दैत छथि। अखनहुँ अपने-आपके कुनो धर्म आ संस्कृतिसँ ऊपर उठि नागा बुझएमे गर्वक अनुभूति करैत छथि। जातिक पति अतेक स्नेह कतहुँ नै देखल हम अपन आइ धरिक यायावरीक परिधिमे। जातिक पति अतेक समर्पण जे कबुई नागामे देखलहुँ से एकाएक हमरा अपने-आपके अपन जातिक पति सचेत कऽ देलक। जातिक पति अतेक इमानदारी जे गामक एक नागा शिल्पकार पनरह ग्यारह पूर्वजक शिल्प बनाए गामक निर्माणक एक भव्य पेन्टिंग बनौलनि। पेन्टिंग भव्य आ पैघ। आकर्षक आ रंग तथा तुलिकाक समायोजन केर सर्वश्रेष्ठ उदाहरण। केनवासमे एक-एक इंच जगह भरक असाधारण पयास। बाह रे कलाकार! बाह रे

कला! बह रे व्यक्तिक पक्तिक समपर्ण! हम पूरा आत्मविशिसिक संग कहि सकैत छी जे अतेक कसनेह हमर व्यतताक अलाि आर कतेयोक आन पुर ष हमरा नै दऽ सकैत छल।

पर्परागत कबुई नागा धर्मकेे मानैबला पकल्हिक सक्षप छक्ति। ओ एकटा सचिकक्तिमान भगािन अनाते *तीगकाओ रगािग'* के मानैत छक्ति, एकर अक्तिरक्ति अनेक तरहक देिी-देिताक अराधना आ पूजा-उपराार सेहो करैत छक्ति। पर्परागत कबुई नागाके बीर ई विशिास अखनहुँ छक्हि जे मनुक्खि तखने विमार पडैत अछि जखन ओकरा कुनो भूत-पेत परेाान करैत छैक आ ओकरापर सािर भऽ जाइत छैक। कखनो काल िाइन-जोवान सभ सेहो जादू-टोनासँ लोकके परेाान करैत छैक। भूत-पेत याा ैतानी आत्मासँ मुक्ति करबाक लेल विमार व्यक्तिक सामने गामक ओझा हक्यर तरकारी, फल, फूल, मुगीक बच्चााक ािक्ति, राउर, देाी दार आक्सिसं अपन ईष्ट देिातहइत्यादिके अक्तिर्न करैत अक्छि आ क्ाषापूिक्त पूजा करैत अक्छि। विशिास ई कएल जाइत अक्छि जे एक्हि पकिया आ आराधनासँ लोकक कष्टक समाधान भऽ जएतैक।

संगाईपाऊ गामक कबुई नागा मूलत: छः गोतक छक्ति। ई 6 गोत गामक बुजुर्गलोकक्तिक कननानुसार क्तिमक्तिलक्खित अक्छि-

क. कामेई 27 घर

ख. पालमेई 09 घर

ग. गोलमेई 11 घर

घ. गंगमेई 08 घर

र. माक्रगमेई 08 घर

छ. न्यूमेई 01 घर

इसाइयक पभाि तेजीसँ बढ़ि रहल छैक। गाममे एकता मध्यम आकबुत केर वाक्रजाघर आ एकटा एक्टीभीटी केन्द्र इसाइ क्मा नबला बना देने छैक।

गामक लोक सभ, मुख्यर पेण मक्हिला लोकक्न बडा कलात्मक आ रर नात्मक पिबित्तक छक्न। *Read- Global* संस्थाक सहयोगसँ पच्रास पक्ता त साझेदारीके र्सीकारैत ऐ गामक स्त्री-पुर ष गामक गैरमजर आ भूक्तपर साचिाक्तक पयोगक हेतु एगो पुस्तकालय, क् प्यूटर पव कग्ग केन्द्र, मक्हिला िगिक्क लेल आक्ताक्क उपाजच हेतु क्यिसायिक पव कग्ग केन्द्र बना रहल छक्न। ऐ पागणाक नाम *तजाई* राखल गेल छै। पूछलापर पता रलल जे स्थानीय भाषामे तजाई केर अनच्होइत छै पहाडी जंगलमे एहेन पोखक्र जतए नूनगर पाक्न उपलब्ध होइत छै। आ सभ तरहक जानरि ओइ पाक्नक सिद सतिंत भासिँ अतए लैत अक्छ। तक्हिना *तजाई* पागण अगल-बगलक तमाम लोकक हेतु राहे ि स्त्री-पुर ष, बच्रा-बुढ, नि-पुरान, जनजाक्त-सामान्य जाक्तक क्कएक नै हो, सबहक लेल छै। सभ क्कयो अतऽ आक्ब ऐठाम उपलब्ध सुविधाक लाभ उठा सकैत अक्छ। आब बुझैमे कुनो भागठ नै अक्छ जे आपसी सौहादक्क बीर कोना कऽ कबुई नागामे क्याप्त अक्छ।

ई रहस्य अखनो धक्र पता नै रलल जे बीजू क्कएक बहुत रास अगरबिि जरेने छलीह। हलाक्क कुनो विि`ष तरहक दुरगन्धक अनुभूक्त अिशिय भऽ रहल छल। जखन ओइ गामसँ स् बक्न्धत नाना तरहक जानकारी लऽ लेलहुँ तँ ओइ बुजुगक्के कहक्लएक्न- ‘‘बीजू हमरा लेल जानकारी इकक्त्रत कऽ रहक्ल छक्न। अहा लोकक्न लग बेर-बेर एतीह आ विक्भन तरहक पश्न करतीह। क्तिदिन जे ऐ गामक नागा

समाजक पधान होमाक नाते, सभसँ बुजुगच होबाक नाते, अनुभर्ी होबाक नाते अहा क्हनका यनासंभि मदक्त करबक्ह ; गामक लोक सभसँ सेहो आगह करबक्त जे ई लोकक्त बीजूके सहयोग करक्त।''
बुढ बजलाह- ''कुनो बात नै। बीजू तँ गामक बेटी नीकीह। आर अहा लोकक्त तँ हमरे सभ लेल कायचकऽ रहल छी। फेर सहयोग तँ करबे करबक्त।''
एकर बाद हुनका नमस्कार कए एक मक्हला लग र्विदा भेलहुँ। रास्तामे बीजू कहलक्त- ''शीमाने, ऐ घरक बारी मे एकटा तीन क्दन पूर्चिमरल बरदक मास क्तकालल जाइत छलैक तना खालके अलग करैत छलीह घरक मक्हला लोकक्त। तकरे दुगचन्ध आक्त रहल छल। दुरगन्ध कक्त कम भऽ जाए तँए तीन-राक्त मुटी अगरबर्ी जरा देने रही।''

आब हमरा लोकक्त गामक एक 64 र्षीए नागा मक्हला शीमती एनेनाक घर पहुँरलौ बडि साफ-स्चिछ आ कलात्मक घर। रार कात फूल आ हक्रयरीसँ भरल। घरक भीतरसँ एक युर्कि बाहर एलाह। हमरा लोकक्तके बैसाकि लेल कहलक्त। कनी कालक बाद शीमती एनेना कमरमे फनेक लपेटने तना ब्लाऊज पक्हरने एलीह। सहज आ सुन्दर सरिप। क्तशछल मोन। ाात सरिप। बात होमए लागल। कहलक्त- ''ह्मर माता-क्पता कक्ह नै क्कएक इसाइ भऽ गेलाह। मुदा हमरा लोकक्त नागा पर्पराके धेने रहलहुँ। क्पताजी हमरा एदक्तकाल बेटे जका क्तसनेह देलक्त। अन्तत: 1969 ई.मे गुर्िहाटी र्विशर्वि्ालयसँ राजनीक्त ाास्तमे एम.ए. केलहुँ। हम पक्हल कबुइ नागाक मक्हला छी जे एम.ए. केलहुँ तकरबाद हमर र्िर्िाह भऽ गेल। हमर पक्त इक्तजनीयर छलाह। ओ हमरा कहलक्त जे अहा राही तँ नौकरी कऽ सकैत छी।

फेर की छल। भारतीय ािक विभागमे भेकेन्सी एलैक हम अपन आिदिन पत जमा केलौ आ हमरा नौकरी भेट गेल। आब अिकाा पाप्त कए अपन गाममे रहि रहल छी। बेटा अपन मकान गौहाटीमे बनौने अिछ आ बेटी ॅदिल्लीमे। दुनू कहैत अिछ गौहाटी कििा दिल्ली आिब जाऊ। अतए तमाम सुविधा उपलब्ध छै। मुदा हम कतौ नै जाए राहैत छी। हमर पिा केन्सरसँ मिर गेलाह। हम देखैत छी जे गामक बचरा सभ ुिदा ािहन भऽ रहल अिछ। युिक सभ बेरोजगार आ सडकछाप छिा। महिला लोकिा ािवत जीिन जीबाक लेल बाध्य छिा। लोकमे देाी दार बनेबाक आ पीबाक जबरदस्ती रोग भऽ गेल छै। बचरासभ लेल कुनो एहेन सािंत्तिकक स्थल नै छै जतए ओ सभ खेल-कुद सकए, कला आ ररनात्मक पिवििके आगा बढा सकै, महिला एिं युिा ािचसभ लेल कुनो आमदनीक जिरया नै छै। सोरैत छी गामेमे रहि ऐ ुिदा ामे कायचकरब। आब *Read Global* संग कायचपारंभ भेल अिछ। किछु-ने-किछु अिश्य भऽ जएतैक।”
एनेनाकसँ इहो पता रलल जे गामक अनेको युिक दार पीब समएसँ पहिने काल-कििलत भऽ गेलाह। हुनका लोकिनक विधिा सभ बडा कष्टक जीिन जीािक लेल बाध्य छिा। संगाईपाऊ गामक अिधकाा महिला लोकिा स्थानीय दार भातसँ बनबैत छिा। ाहरक लोक सभ घरे-घरे आिब दार पीबैत अिछ। पचरास टकामे एक मग दार आ ओकरा संगे सुगरक मास, कििक सलाद सेहो भेटैत छै। एक गाहक सँ लगभग 20-25 टकाक आमदनी भऽ जाइत छै। अगर एक घरमे एक दिनमे पाराेटा गाहक आिब गेलैक तँ औसतन 125 टकाक आमदनी। मुदा एकर विपरीत पभाि स्पष्ट छै। दार पीऐबला सभ महिला सभके कुदिष्टसँ देखैत अिछ। आिािक विािता तना पैसाक लोभे किछु नागा महिला देह व्यापारमे लागिल छिा। घरमे

दार सदव्स्काल उपलब्ध रहबाक कारणे पुरष सभ बच्चेसँ दारक सेनि पार्भ कऽ लैत अछ। मह्लिला सभके अगर असिर भेटक्ति तँ ऐ धंधा छोव्ड अनोपाजच केर कुनो आन ब्यौत करतीह।

ई बडा आ रयक्क विषिए क्तक। मणीपुर रा्य दू पकारक लोकमे बाटल अछ। समतल भू-भागमे रहएबला मैतेई आबादी जे मूलत: षिणा छक्ति, कब्रक कायचो दक छक्ति, आ रा्यक जनसंख्याक पैघ पक्ता त छक्ति, आ दोसर क्दस पहारी केत्मे बसक्हार 31 जनजातीय समुदाय। मैतई मह्लिला लोकक्ति बडि उ्मी छक्ति। मवापुर केर पत्येक वजला तना ब्लॉक स्तरपर *आमा माकेट* अनात मातह्बाजार लगैत छै। ऐ तरहक अमा-माकेटमे केलि स्तीगणे सभ दोकान लऽ सकैत छक्ति। आश्रयच्क बात ई जे समस्त मवापुरमे अमा-माकेटमे एकौटा दोकान आक्दासी मह्लिला लोकक्ति नै लेलक्ति अछ। आर-त-आर संगाईपऊ गाममे जे तरकारी बेरैलिली मह्लिला सभ छलीह सेहो सभ मैतेई मह्लिला छलीह। एकर एगो कारण इहो बुझना गेल जे मैतेई पुरष बडा उ्मी होइत छक्ति। मह्लिला लोकक्ति कपडा बुक्ति, खेत-पनारमे कायचक्कऽ क्कछु तरकारी इत्याक्द बेर, क्कछु समानकेँ बाजारमे बेर आ नेरेगाक कायक्कममे क्कछु क्दन कायचके अपन-अपन घरक हेतु क्कछु अक्तवक्त आमदनीक ब्यौत कऽ लैत छक्ति। ऐ तरहे गहस्तीमे स्ती-पुरषक सौहादच्पूणचसहभावाता देखल जा सकैत अछ।

हलाक्क एनेना आ संगाइपाऊ गामक अन्य उत्साही मह्लिला लोकक्ति हमरा कहलक्ति जे अगर मह्लिला लोकक्तके तकनीक्क जानक वक्त, उ्क्तताक पवकग आ इन्टरीपेन्युअर केर जान िजाक्तक िगसँ देल जाक्त तँ ई लोकक्ति िस्तक बुनकरी, सुगर-आ अन्य मासक आरार आक्द पोसेक्सग आ पेकेवजग, नेबो, हक्तयर क्तररााइ, बासक कोपर

इत्यादि अरार बना बजारमे बेर सकैत छथि। आ एनेना ऐ व्यापारमे पयासरत छथि।

अगर सास्कृतिक पक्के देखल जाए तँ ऐ गामक कबुई नागा अपन संस्कार, लोक रीति-रिवाज, रिति-विन्यास, शृंगार, परम्परासँ अखनो जुरल छथि। बुजुर्गक सम्मान सर्वोपरि अछि। युवक आइयो बिना बुजुर्गक आज्ञा लेने कुनो विशेष कार्यमे महत्वपूर्ण निर्णय नै लैत अछि। बहुरंगी रिति आ आकर्षक युवती-युवकके नरैत-गबैत देखब तँ देखते रहि जाएब। सौन्दर्यपर जेना ऐठामक लोकक बीर कैद भऽ गेल हो। बाह रे देह सौष्ठव। बाह रे सुन्दरता! बाह रे शृंगार! बाह रे युवक आ युवतीक मध्य नैसर्गिक प्यार!

कबुई नागाक पत्येक घरमे पूर्वजक फोटो टागल देखलहुँ। फोटोमे नागा जनजातिक लोकक पहाड, या पकृतिसँ सम्बन्ध सेहो सवमक्लित रहैक। अपन घर आ दैनिक जीनिसँ सम्बन्धित उपयोगक तमाम रिस्तुके कलाकृतिसँ मण्डित कए जीबाक कला सीखबाक हो, सम्पन्न केना रही से जनबाक हो, कोनतहके सदकालकाल केना याद रखी से व्यक्त लेबाक हो, गरीबी जीनिमे रहियो अपन माटि-आ संस्कारसँ स्नेह देखबाक हो, सदकालकाल रौअनी मुस्कान बला रेहरा बनेनिक हो तँ कुनो नागा समाजमे जा कऽ किछु दिन रहू। पता लावा जाएत।

यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात

गाम बद याद अबैत अछि दिल्ली मे हमरा मुदा गाम अतेक नजदीक त नहि अछि जे रट दनी बिदा भ जाएब! ताहि जखन कखनहु दिल्ली स मो औने लागैत अछि त हम ऋषिकेश दिस भाग जीत छी। एक दू दिन गंगाक कट मे आनंद स रही फेर दिल्ली मे कमचधुन रैल अबैत छी। हिमालय केर विभिन्न भाग मे जेबक आ कायचक्करबाक असिर भेटल अछि- कखनो विसर्जन मे जा कन्रंजनघक दाच, भूकिया आ लेपरा जनजातिक जीबंक अध्ययन एवं सास्कृतिक विश्लेषण त कखनहु अरणारल पदो क तागि मे जा ओते केर पर्परक अलिोकन। अनुभव हमो उिम। हिमालय दाच केर कम मे काटको बेर हिमारल पदो , कश्मीर आ उत्तराखंड सेहो गेल छी. अहे साल छल 2005 जखन हम उत्तराखंड गेल रही। ओतए स िपस एलक बाद 2005 ई. मे हम नन्दा-राजजातपर एकटा लेख हिन्दीमे अपन मानिास्तीय सर्किण केर आधारपर लीखने रही। ओ लेख इन्दिरा गान्धी रार्ष्ीय कला केन्र केर ििसाइटपर पकाव त भेलैक। किछु दिनक बाद हमरा उतराखण्डसँ बहुत लोक सभ लेख लीखबाक हेतु साधुिद देअए लगलाह। कतेको लोकिन ओइ लेखक लिकके अपन ब्लॉगसँ जोडलिन। हालहिमे एक उतराखण्डक नियुक अपन माटि आ पहाडसँ सिनेह देखबैत एकटा प्मय पत लिखलिन। पत किछु एना लीखल छल-

“आँखो के आगे निशी के खुलते पट न्यारे-न्यारे है,

छोटे-छोटे खेत और आडू सेबो के बगीरे,

देिदार नि, जो नभ तक

अपनी छवि जाल पसारे है।

मुझको तो क्रम से भडे
अपने पहाड ही प्यारे है।"

ऐ कवितामय वरटीके पढलाक बाद मोन भेल जे उतराखण्डिक नन्दा राजजातके मैक्ाली पाठक लोकक्न केर लेल मैक्ालीमे सेहो अपन यायारीक माध्यमसँ लीख ली।

नन्दाराज-जातक अनचभेल नन्दादेवीक याता। लोक इक्तहासमे जाइ आ वॅस्नक्तके अध्ययन करी तँ पता लगैत अक्छ जे नन्दा गढिलिक राजा लोकक्नक संग-संग कुँमाऊ केर कत्युरी राजिक ईस्टदेवी छलीह। ईष्टदेवी हेबाक कारणे नन्दादेवीके राजराजेशरीके रपमे सेहो स्बोक्धत कएल जाइत छक्ह। नन्दाके लोक ओना पाक्वीक बक्हन सेहो मानैत छक्न। समस्त उतराखण्डमे समान रपे पूक्जत हेबाक कारणे नन्दादेवी समस्त पदो मे धाक्मक एकता केर सूत सास्कक्वक रपसँ मानल जाइत छक्न। अनात क्हनकासँ समस्त पदो एक सूतमे जेना बन्हा जाइत हो!

स्नानीय दंतकना तँ ई कहैत अक्छ जे नन्दादेवी दकपजापक्त केर सात कन्यामे सँ एक छलीह। एहेन मानल जाइत अक्छ जे क्हनकर वआिह भगनि महादेसिँ भेल रहक्न। भगनि महादेकि संग ऊँर आ क्हमसँ आच्छाक्दत पहाडपर नन्दा देवी रहैत छक्न। पक्तसँ एहेन क्सनेह जकर णिच असंभि! पक्त जखन संग रहैत छक्नन तँ सुखक बदलामे धोरसँ धोर कष्टके नन्दा दाइ सक्ह लैत छक्न। कुनो-कुनोठाम तँ नन्दादेवीके पाक्वीक साक्ाते रप मानल जाइत छक्ह। नन्दाके बहुत नामसँ जानल जाइत छक्ह- वि, सुनन्दा, ाुभानन्दा, नक्ददनी इत्याक्द।

उतराखण्डमे देवी-देवताक स्तुति या स्मरणमे गाबि-राखि जाबा कऽ गाबैबला गीत अनि कीर्तनके जागर कहल जाइत छै। तहिना जेना अपना मिथिलामे अष्टयाम होइत अछि। नन्दा देवीक बारेमे अनेक जागरक अनुसार भाँति-भाँतिक दन्तकथा भेटैत छै। एहने एक कथामे नन्दा दाइके नन्द महराजक बेटी मानल जाइत छन्हि। नन्द महराजक ई बेटी भगवान श्री कृष्णाक जन्मसँ पहिने कंसक हाथसँ छुटि कऽ आकाशमे उडैत नागाधिराज हिमवन्तिक पत्नी मैनाक कोरामे पहुँचि गेलीह।

एक दोसर जागरमे नन्दा दाइके चान्दपुर गढके राजा भानुपतापक पुत्री कहल जाइत छन्हि। एक जागरमे लोक सभसँ पता चलल जे नन्दा देवीक जन्म ऋषि हिमवन्ति आओर हुनकर पत्नी मैनाक घरपर भेल छलन्हि।

मुदा तमाम तरहक अलग-अलग धारणा भेलाक बादो पर्वतीय अंचलमे रहनिहार लोकनि नन्दादेवीके लोक मानस केर एक दृढ आस्थाक प्रतीक मानैत छन्हि। संगहि नन्दा राजजातके परम्परा केर अक्षुण्ण विरासत मानैत प्रत्येक बारह बर्षमे राजजातक भव्य आयोजन करैत छथि।

राजजात कहि नन्दाजातक अर्थ भेल राज राजेश्वरी नन्दादेवीक यात्रा। गढवाल क्षेत्रमे देवी-देवताक जात अर्थात यात्रा खूब धूमधामसँ मनाएल जाइत छै। अर्थात एतऽ ऐ क्षेत्रक लोकक दृष्टिमे जातक अर्थ भेल देवयात्रा।

लोक विश्वास इहो छै जे नन्दा देवी भादवि अन्हरिया पक्षमे अपन

नैहर अबैत छथि। किछु दिनक बाद अष्टमी दिन हुनका नैहरसँ सासुर विदा कएल जाइत छन्हि। राजजात या नन्दाजात नन्दा दाइके अपन नैहरसँ एक बनल-ठनल, स्त्रि आ गहनासँ सुसज्जित नि यात्राक ताकया जका सासुर जेबाक याता छन्हि। सासुर के स्थानीय भाषामे सौरास कहल जाइत छै। ऐ अवसिर पर नन्दादेवीके सजा कऽ बना ठना कऽ महफामे बैसा तना स्त्रि, आभूषण, खाद्यान्न, पैसा, मिठाइ इत्यादि सनेस दऽ गढ़लिक पर्म्पराक अनुसारे विदा कराएल जाइत छन्हि।

ओना तँ हरेक साल नन्दाजात आयोजन करबाक पना छै परन्तु बारह वर्षमे भव्य आओर मनोरंजक राजजातक आयोजन कएल जाइत छै। आयोजन एहेन जकरा शब्दमे नै कहल जा सकैत अछि। केबल अनुभव कएल जा सकैत अछि। नन्दाजात पवित्र पिचइजोक्रया पक्क अष्ठमीक दिन मनाएल जाइत अछि। तही दिन नन्दा दाइके महफामे बैसा कऽ विदा कएल जाइत छन्हि।

नैनीताल, बैजानान आ अल्मोडामे वीशेष धूमधामसँ ऐ महापाक्षिके मनाएल जाइत अछि।

नैनीतालमे पवित्र षिच्नन्दा-सुनन्दा मेलाक आयोजन कएल जाइत छै। ऐ अवसिरपर नन्दा आओर सुनन्दा दुनू बहिनके विशिष्ट रूपे केराक गाछसँ बनल मूर्त्तिके महफामे बैसा शहर तरफ घुमाएल जाइत छन्हि। केराक एहेन आकर्षक मूर्त्तिचकुमाऊँके अलावा कतौ अन्यत नै बनाएल जाइत छै। आ सभसँ अन्तमे मूर्त्तिक विसर्जन नैनी झीलमे कऽ देल जाइत छै।

कुमाऊँ केतक बात भऽ रहल अछ तँ एक बात आरो स्पष्ट कऽ दी। कुमाऊँमे नन्दाक एक वी`ष बात ई छक्ह जे गरडके कोट भामरी मक्दरमे नन्दादेीक अतिार एक पुरषक ा रीरमे होइत छक्ह जखन क उतराखणि क अन्य केतमे देीक अतिार स्तीक ा रीरमे आ देिता लोकक्ाक अतिार पुरषक ा रीरमे होइत छक्ह।

पक्सि इक्तहासकार एटक्कसन महोदय क्हमालयन गजेक्टयरमे पत्येक बारह बषर्पर नन्दा राजजात मनेबाक क्वस्तृत िणर्न करैत छक्थ। ऐ यातामे करीब 250 क्कलोमीटर दूरी- नौटीसँ होमकुणि धक्र पैदल करए पडैत छै। ऐ याताक मध्य धनधोर जंगल, दुगर्म रोटी आ बफर्सँ झापल पहाडके पार करए पडैत छै। याताक कक्ठनता आ दुरहताक कदपना अहा ऐ बातसँ लागालीय बाण गासिँ आगा क्रणकीधारसँ याती सभके पएरे- क्बना जूि-रपालके ् यूगरालीदार देसी करीब 18000 फीटक ऊँराइ पार करए पडैत छै। याता जखन क्रणकीधारसँ आगा बढैत छै तँ नाना तरहक पक्तबन्धक पालन केनाइ अक्नायिचभऽ जाइत छै जेना स्तीगण, बच्रा, अभक्ष्य गहण करैबला जाक्तक लोक रामक बनल क्सतु- गाजा बाजा इत्याक्द क्नक्ष भऽ जाइत छै।

स्भति: ई याता संसारक सभसँ पैघ, दुगर्म आ कक्ठन धमर्याता नीक। ऐ याताके केबल समक्पर्त तना क्नष्ठाािन भक्त लोकक्ाके सकैत छक्थ। हजारोक संख्यामे शालिु लोकक्, धमचतना पर्परामे क्शिास करैबला आइयो केर धोर कक्लयुगमे ऐ याताके शािपूिर्क पूरा करैत छक्थ।

यायाावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन

“बृन्दावन सन वन नही
नन्दगाम सन गाम
बंशीवट सन बट नही
रामनाम सन नाम”.

जखन बच्चे रही तँ हमर धर्माथी नानी हमरा संस्कृतक किछु श्लोक आदिक संगे उपरोक्त दोहा सुग्गा जकाँ रटा देने रहथि। सूरदास, विद्यापति, रसखान आदि कवि लोकनिके रचना पढलाक बाद बृन्दावनिक बारेमे सदिकाल कल्पना करैत रही। यमुनाक जल हरियर कचोर आ स्वच्छ कल-कल करैत होइ छैक। ई कहब छलन्हि हमर नानीक। अपनो मोनमे अबैत छल, तावि तँ गोपी सभ ऐ यमुनामे कखनो स्नान तँ कखनो पनघट लए धधरा चुनरी पहिरने, पएरमे पाजेब पहिर झुमैत-गबैत अबैत छल हेतीह। केतेक नैशर्गिक दृश्य होइत हेतैक यमुनाक कछेरमे! कदम्बक गाछ, गामक ग्वाल-बाल सबहक मधुर स्वर, मुरलीक तान, गोपीक गान, साधु- संतक शंखनाद, हरे-कृष्ण राधे-राधेक नाओंसू उच्चारित आ मुग्धमय वातावरण, पण्डित, पण्डा आ विद्वान लोकनिक भगवद् चर्चा एवं राधा-कृष्णक प्रसंगपर वाद-विवाद, मस्त वातावरण। कृष्णमय बृन्दावन। राधामय बरसाना। नन्दमय नन्दगाम। कान्हाक मथुरा। भगवानिक कनगुरियापर उठल 18 किलोमीटर केर परिधिमे पसरल गोवर्धन पहार। दूध-दही, मक्खन, रबडीसू रेलम-पेल भेल समस्त चौरासी कोस। सफ-स्वच्छ निर्मल हरियर कचोर जलसू अप्लावित आ कल-कल करैत यमुना। कातमे रंग-विरंगक गाछ-कदम्ब, जामुन,

आम, नीम, बैर इत्यादि। नाना तरहक हरियरी। काते-काते मस्त भासि चरैत गाए-बाछा-बाछी। होइत छल एहने किछु दृश्य हेतैक समस्त बजकेतक।

माए ऊपरसू हमरा हमेशा कहैत छलीह: समस्त बजक धरतीमे किछु देखिवा भार्भ छैक। आकर्षक छैक। आइयो ऐ धरतीक छटा किछु अलगे छैक। एकबेर जाएब तू आबक मोने ने करत। हएत ओतै रहि जाइ। सुग्गा सभ चौचसू चौच मिलबैत, गाए-बछरा सभ आनन्दक उन्मादमे चरैत। खेत खरिहानमे मोर धुमैत, एहने छटा छैक बृन्दावनि केर।

माएक बातके नै मनबाक पश्ने कहा छल। रसखान स्मरण अबैत छलाह :

मानस हो तो वही रसखान।

बसहु बज गोकुल गॉव केर ग्वारिन।

जौ पसु हो तो कहा वसु मेरो।

चरौ क्त नन्दक चेनु मन्जारन।

आर तू आर रसखान तू ओकर कौआ केर भागके नीक बुझै छथि जकर जन्म बजभूमिमे भेल छैक। भगवानि जू पाथरो बनाबथि आ बजभूमिमे रही तू जीवनि कृत-कृत। ई मान्यता छलन्हि रसखानक।

दिल्लीमे पढैकाल किछु लोक सभ मथुरा बृन्दावनिक चर्चा करैत छलाह मुदा कहियो नै किएक कहियो ओतए जएबाक योजना नै बनल। बादमे जखन 1997 ई.मे हम इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्रमे अधिकर्मीक रूपमे नौकरी प्रारम्भ केलौ तू हमर विभाग जनपद-सम्पदा केर विभागाध्यक्ष प्रोफेसर बैद्यनाथ सरस्वती हमरा मुख्यरूपे दू कार्यपर केन्द्रित करबाक आदेश देलन्हि। पहिल, UNESCO, UNDP केर ग्रामीण भारत परियोजनापर कार्य करब आ दोसर, विभागक क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम केर अन्दर बज प्रकल्प परियोजनाके देखबाक छल। क्षेत्रसम्पदा केर अन्तर्गत ई विभाग कुनो विख्यात सांस्कृतिक क्षेत्र लय ओकर क्षेत्रक सांस्कृतिक व्यापक संदर्भ अध्ययन करैत छलैक। संदर्भसँ तात्पर्य ओइ सांस्कृतिक क्षेत्रक सम्बन्धमे उपलब्ध रचना, ओतए केर लोकक मान्यता, ओतय केर इतिहास, पुरातत्व, वास्तु निर्माण कला, मूर्तिकला, लोक गीत, संगीत, वाद्य, वाद्ययंत्र, कृषि-कार्य पद्धति केर दक्षता, वेश-भूषा, गहना, वस्त्र विन्यास, शृंगार आर नै जानी की की सबहक समग्रता मे अध्ययन, ओकर ज्ञानक प्रकाशन केनाइ, ओइपर चर्चा, परिचर्चा, सम्बाद, संगोष्ठी, कार्यशाला आदिक आयोजनसँ छलैक। ओइ समएमे क्षेत्र परम्परा केर अन्तर्गत दू क्षेत्रपर कार्य चलैत रहैक- दक्षिण भारतमे

बृहदेशर मन्दिर तथा उतर भारतमे बज पकल्प। बज पकल्पमे ओना तू बहुत रास विदान आ अन्य विषयक विषिज सभ छलाह परन्तु हमरा जे सिविधक पभावित केलाह से छलाह शीतित्स गोस्ामी। शी तित्स गोस्ामी बृन्दानिसू छथि। हिनकर पूरखा पिचम बंगालसू आबि बृन्दानिक खोज केलन्हि आ ततय केर मुख्य पुजारी भेलाह। अखनो बृन्दानि केर बाके बिहारी मन्दिर केर मुख्य पुजारी हिनके बापतऔत छथिन्ह। ई लोकनि एक अपन संस्था बनौने छथि- बृन्दानि िाेध-संस्थान। ई संस्था बृन्दानि केर इतिहास, पेम, परम्परा इत्यादिपर िाेध करैत अछि। हिनकर छोट भाए भागित कथा करैत छथि। शीतित्स गोस्ामी बिना सील िसत पहिरैत छथि। केिल धोती आ िरीरपर चदरि। धोती आ चदरि दुनू पीताम्बरी। महग आ ििध टीिस्टेड रेिमसू बनल। बहुत छोट-छोट केस। बिना मोछ दाढीक चिकन मुह आ गाल। नमहर-नमहर पिनगर डोका जका आंखि आभासू चमकैत कपार, गोर िणि करीब सािठक उमेरि, पाथरक आकषिक मूर्तिजका तरासल सनक मुह, नाक, कान, आखि, गोखूर जका टीकी, कपारपर कुमकुम चानन केर टीका, छह फूटा काया, छरहर िरीर, सुडोल पेट, धोधि केर नामो-निान नै, सीटल-टोटल स्माटि तइपर सू संस्कृत, बजबोली, हिन्दी, बंग्ला, अंगेजी, फेन्च आ जमिन, अतेक भाषा धारा पिह बजैत-लिखैत। के नै मन्त-मुग्ध भ' जेता अहेन ियिक्तत्िसू? हमहू भेलौ तू कून आिचयि

त भेलै ई जे एक दिन शीतित्स गोस्ामी एक अन्तराष्टीय संगोष्ठीमे बृन्दानि केर बाके बिहारी मन्दिरमे छप्पन भोगपर अपन एक आलेख पढलनि। रसगर विन्यास, सोहनगर सामगी, मधु टपकैत भाषा आ

तइपर पॉवर प्वाईन्ट पजेन्टेशन। हुनकर ऐ पजेन्टेशनके सुनला आ देखलाक बाद सभागारमे उपस्थित तमाम देशी-विदेशी विद्वान लोकनि मन्त्रमुग्ध भ' गेलाह। हमहू भेलौ। हुनकर पजेन्टेशनसू ऐ बातक जानकरी भेल जे पत्ता दिन बृन्दावन केर बाके बिहारी जीक मन्दिरमे मन्दिरक मुख्य देवता (पस्तर पत्तमा) राधा-कृष्णके कमसू कम छप्पन-पच्चास आओर छ-छप्पन भोज्य सामगीसू भोग लगैत छन्हि। लोक सभ एवं स्थानीय पण्डा लोकनि अपन-अपन धरक कनिरसू अत्त सूक्ष्मताक संग बिना पीयाज, लहसून एवं कुनो विजत आ अखाद वस्तुके देने बनल व्यंजन लबै छथि। कायम तू ई छै जे छप्पन व्यंजन हेबाक चाही मुदा सामान्यता ई संख्या दू गुना बढ़ि जाइत छैक। शीवत्स गोस्वामी केर स्लाइड ततेक नीक रहैक तकर वर्णन शब्दसू नै कएल जा सकैत अछि। व्यंजनक आकर्षन आ मनमोहक सौन्दर्य विविध स ल' क' सजेबा धरि केर बिहंगम दृश्य। सौन्दर्य संयोजन आ समर्पण केर बेजोड उदाहरण। एकाएक बुझाएल जेना व्यंजन बनेबा आ सचार लगेबासू पैघ कुनो कला नै भ' सकैत अछि। गाम स्मरण आबए लागल। जखन कखनो हमर बहिनक ससुर हमरा ओतए अबैत छलाह तू हमर माए नाना तरहक व्यंजन आ तरकारी, तरुआ, पापर, अचार, चटनी, सलाद, सम्दास, बर, बडी आ नै जाने की की बनबैत छलीह। घरमे पाबनि-तिहारबला उत्साह भ' जाइत छल। अलग- बगल केर महिला सभ सेहो माएके मदति करबाक लेल आबि जाइत छलथिन्ह। भोजन बनलाक बाद गाएक गोबरसू ठॉव नीपल जाइत छल। बडका कासक थारी (बल्कि थार कहु) मे कमसू कम एक सेर अरबा चाउरक गम-गम करैत छरहर भात सजाएल, थारी किसनसू अर्धचन्द्राकारक स्वरुपमे पैघ आ छोट विभिन्न पकारक बाटी सजाएल ओइ सभमे दालि, घृत, तरकारी,

अचार, सना, चटनी इत्यादि राखल एकटा मध्यम आकारक छिपलीमे तर आ इत्यादि सजाएल पापर हमर माए जाकि-बुझि क' भटक ढेर पर राखैत छलीह । कलपरसू टटका पानि लाबक जिम्मेदारी हमर होइत छल। लोटाक संग एकटा फुलही गीलास सेहो होइत छलैक। जखन माए केर ई सभ तैयारी पूर्ण भ' जाइत छलन्हि तँ हमरा कहैत छलीह- “जाऊ दरब्ज्जापर ददा (हमर पिताक बेमातर जे हमर पितासू करीब 20 वर्ष पैघ छलाह। हम हुनका पितामह तुल्य मानैत छलअछि। आ स्नेहसू दादा कहैत छलयछि।) के कहिऔन्ह जे भोजनक सचार लवा गेल अछि। समधिके भोजन करा देथुन्ह।”

हम माएक सम्वाद ल' चट दनी दरबज्जापर चलि जाइ छलौ आ दादाके कातमे बजा माएक सम्वाद नहु-नहु बता दै छलयन्हि। दादा साकाक होइत बहिनक ससुरके बडा विनिमतापूर्वक कहैत छलथिन्ह- “समधि, भोजन तैयार अछि। हाथ-पएर धोल जाओ। चलू भोजनक हेतु।”
आ पाहून महोदय बडा विनिमता स दादाक आगहके स्वीकार करैत ओछायनपर सू उठि खराम पहीर- हाथ-पएर धो दादाक संग भोजनक हेतु विदा होइत छलाह। आगा-आगा हम आ पाछा-पाछा ओ सभ। बडड पेमसू भोजन करैत छलाह। अन्तमे माए बडका बटामे छालीसू भरल गरम दूध आ सभसू अन्तमे दही भेजबैत छलथिन्ह। पाहुन महोदय थारीक परोसल ब्यंजन एवं तमाम विस्तुक लगभग 75 पकवान्ति व्हस्सा बडा मनोयोग पूर्वक गहण क' लैत छलाह। एक-आध-बेर भोजनक प्रशंसा सेहो मुक्त कंठसू करैत छलाह। किछु हूसी-मजाक आ कटाक्ष सेहो चलैत छलैक। दादा हुनका सामनेमे

एक छोट पीढीपर बैसल, बेत पकरने हुनकर आि-भगतमे लागल रहैत छलाह। ओह!!!! कतए भटक्क गेलौ हम छप्पन भोगक चचामे!!!

शी ि‍त्स गोस्ि‍मी हमरा मोनमे एक क्हसाबे बजपकल्पक खूब नीकसू जनबाक क्जजासा उत्पन क' देलन्क्ह। बीच-बीचमे क्कछु सास्कृक्तक कायि‍ममे बजभूक्मसू कलाकार आ कथाि‍चिक सभ अबैत छलाह। गीतमे आ कथा ि‍चिनाक ि‍ममे ई लोकक्न बजभाषाक क्कछु खाटी ि‍ब्दक पयोग करैत छलाह। ओ ि‍ब्द एहेन जे एकाएक पेमक नि‍ामे मनुक्ख धूत भ' जाए। फेर की छल हम अपन संस्थाक बज-पकल्प पक्रयोजनामे लावा गेलौ। मुदा एकाएक आरो पक्रयोजना सभ आक्ब गेलै आ हमरा बज-पकल्प छोडए पडल। मोन हमेि‍ा कचोट करैत रहल मुदा की कएल जा सकैत छल।

2007 ईमे गामसू हमर माता-क्पता क्दल्ली ऐलाह। माए मथुरा ि‍ृन्दाि‍न जेबाक इच्छा ि‍्यक्त केलक्न। हम तुरंत तैय्यार भ' गेलौ। मुदा समयाभाि‍ छल। हमरा लग समएक कमी रहैत अक्छ ऐ बातसू क्पताजी नीक जका अि‍गत छलाह। ओ कहलक्न- "ठीक छै। हमरा लोकक्न क्दल्लीसू तीन बजे पात: बृन्दाि‍निक हेतु पस्थान करब। बाके क्बहारी, रंगनाथ इस्कॉन मन्क्दर आ क्कछु अन्य पक्सध मन्क्दरक दि‍ि‍न करैत सीधे मथुरा चक्ल पडब। मथुरामे दारकाधीि‍ि‍ पूजा कए आ भगि‍ान शीकृष्णक जन्मस्थली (गभि‍गृह) देखलाक बाद भोजन- तत्पि‍ि‍ात गोबरधनक पक्रि‍मा (कारेसू) आ अन्तत: बरसाना जाय राधा-रानी या लाडलीजीके दि‍ि‍न करैत देर-सि‍िर ओही क्दन क्दल्ली ि‍ापस आक्ब जाएब।"

व्पताजीक ऐ योजनासू हम पसन्न भेलौ। भेल जे सभ कायएिके व्दन (रवि व्दन) मे भ' जाएत। इहो भेल जे व्पताजी बजक्तेसू नीक जका ि क्कफ छव्थ। माए सेहो व्पताजी केर योजनाके सहषि स्ीकाक्र लेलक्त।

दोसर व्दन पात: हमरा लोकक्त स्नान-ध्यान कए ठीक तीन बजे बृन्दावि याताक हेतु व्दल्ली सू क्तकक्ल गेलौ। रस्ता साफ आ भीडक नामो क्ताि नै। गाडीक चालक साकाक। बहुत िगसू मुदा सधल गाडी हूकैत। ठीक- दू घंटामे बृन्दावि पहुच गेलौ। सभसू पव्हने इस्कान मन्व्दर, फेर रंगनाथ मन्व्दर क्कछु- छोट-मोट आनो मन्व्दर आ अन्तत: बाके व्बहारीक मन्व्दर जा ओतए राधा-कृष्णक दििि केलौ। सभ कमििि्घतामे आ अन्हारेमे। ओतएसू सीधे मथुराक हेतु, पस्थान केलौ। होइत छल िघ दारकाधीिक दििि भ' जाएत तू माए-बाबूजी अनजल गहण करताह। दारकाधीिक दििि कए कृष्ण जन्मस्थलीक दििि केलौ। पुन: एक होटलमे भोजन कए व्बना समए गमौने हमरा लोकक्त गोबधिि पबति व्दस व्बदा भेलौ। आब सुर ज पूरा उवा गेल छलाह। जाड कम भ' रहल छल। गोबधिि कोनो दृष्व्टकोणे पहाड नै लावा रहल छल। मुदा माए कहलक्त- ‘‘बाऊ, भाि देव्खओ स्िर प नै। कलयुग केर मनुक्खक दुष्कमिआ पापसू गोबधिि नीचा भ' गेल छैक। अहा पढल-लीखल छी। कनी सोचू : भगािन कृष्ण जै गोबधििके अपना आंगुरपर उठेने हेताह से की सामान्य पहार छल हेतैक? क्कनौ नै।’’

माएक बातके हम बिना कुनो तर्क केने सुनि लेलौं। एक बात ई नीक लागल जे गोबर्धन साफ-सुथड़ा छलैक। बीच-बीचमे अगल-बगल केर गामक महिला सभ गोबरक चिपड़ी आ गोईठा पथैथ। कतौ-कतौ गाए-बाछी (आ बाछा) चड़ैत। चहुओर हरियरी। रस्तामे झुण्डक-झुण्ड महिला आ पुरुष लोकनि बिना जूता-चप्पल पहिरने गोबर्धनक परिक्रमा करैत। राधे-कृष्ण, राधे-कृष्णक रट लगबैत। मुरलीधर की जाय। शीकृष्ण की जय। करैत। आ किछु लोक सभ गीत गबैत पेमक उन्मादमे विभोर भेल चलल जाइत। एक ठामक ई दृश्य देख माए भावुकि भ' गेलीह। कहलनि- "बाऊ, 10-१५ मिनट लेल हमरा कारपर सू उतारि दीअ। कमसू कम 1008 डेग पएरे तू चलि ली ऐ भूमिपर! ई माटि जौ पएरमे लावा जएत तू जीनि धन्य भ' जएत।"

हम गाडी रोकि माए केर संग लगभग दू किलोमीटर पैदल चलैत रहलौं। माए बड पसन भेलीह। मुदा ई कचोट रहिये गेलन्हि जे शियद पूरा गोबर्धनक परिक्रमा पएरे-पएरे करितौं। बादमे हमरा लोकनि कारपर बैस गेलौं। गोबर्धनसू हमरा लोकनि बरसानाक हेतु विदा भेलौं।

बरसाना पहूंच क' राधा-रानीक मन्दिर जेबाक छल। ओतए गेलाक बाद जात भेल जे मन्दिर तू पहाडीपर छैक जै लेल लगभग चारि सए सीढीक पैदानपर चढह पडतैक। धर्मसू ओतपोत भेल माए बडा

सहजतासू सीढी चढए लगलीह। बाबूजी घुटनाक ददसि गरसत छलाह तथापि नहु-नहु ओहो सीढी चढैत रहलन्हि। बीच-बीचमे सुसताइत आ आगू बढथि। अन्तत: हमरा लोकनि मन्दिरक पागणमे पर्वि केलौ। मुदा पर्वि केलाक बाद पता चलल जे मन्दिरक पट बन्द छैक। तइकाल दू बजैत रहैक। लोक सभ कहलक जे मन्दिरक पट साढे चारि बजे साझमे खुजतैक। थाकल तू रहबे करी। एकठाम भुईयेमे ओछाइन ओछा, जाजीम बीछा हमरालोकनि बैस गेलौ। कनीकालक बाद दूटा 8-10 बखर्कि लडका आ दू टा बालिका सभ स्थानीय, हमरा सभ लग पहूचल। कहए लगल- “बाबू जी, राधा-रानी की गीत सुनाऊ?” कहि नै कियाएक हम तुरत कहि देलिऐक- “ठीक है सुनाओ।”

आ ओ सभ गीत गाबए लागल:

“राधा रानी की जय। महरानी की जय......।”

सभ आखर सुन्दर बोली मनमोहक। स्वरि खाटी लोकल आ सुअदगर। गीतक बाद गीत। ओ सभ गबैत रहल। बजबोलीमे समस्त ातिारिण राधामय। माए भाि-विभोर भ’ हाथ जोडने राधा-रानी की जाय, माहरानी की जय, राधे-कृष्ण, राधे-कृष्ण बजैत रहलीह। गीत सुनैत रहलीह। तीथर्कि इच्छाक पूर्तािभेलनि तै सुखसू उहाक्दत भ’ गमगिमि नोर खसैत रहलन्हि। जेना-जेना माए केर आूखिसू नोर खसन्हि तेना-तेना हुनकहि आूखि आ मूह सुनर भेल गेलन्हि। बाबूजी सेहो पसन छलाह। ठीक साढे चारि बजे मन्दिरक पट खुजलैक। लोक सभ जोरसू राधा- रानी की जय केर धोष केलक आ मन्दिरमे पर्वि केलक। दर्शनि केर बाद हमरा लोकनि किछु काल आरो ओतए रहलौ। जखन अन्हार होमए लगलैक तू पहाडीपर सू नीचा उतरए लगलौ।

नीचा उतकर चाह-नाि्ता क' एकबेर पुन: भगिान शीकृष्ण आ राधा रानी केर जयकार करैत क्दल्लीक हेतु पस्थान केलहु। क्दन भक्रक थाकल आ भोरे ऑक्फस जेबाक बोझ तूए सूक्त रहलौ। मुदा मोनमे ई भािना पबल भ' गेल जे एकबेर चैनसू बजक्ेत घूमब। यमुनाके देखक इच्छा आ बरसानेक सौन्दयकि अिलोकन सदक्रकाल मोनमे औढ मारैत रहल।

जनिरी 2011मे हमर सासु बृन्दािन जेबाक इच्छा हमरासू ि्यक्त केलक्त। ओ हमर स्िगीय स्िसुर पण्क्डत कालीनाथ झा केर पथम पुण्यक्ताक्थसू पूिि एकबेर यमुनामे स्नान एिं अपन गौरक िक्सजनि करए चाहैत छलीह। हम तुरत अपन संगी शी िरिन्र कुण्डुसू बात कए जनिरी मासक अन्क्तम रवि क्दन अप्पन सासुक संग िरिन्रक कारसू बृन्दािन जेबाक योजना बना लेलौ.......।

बह्न्दािन केर हमर एक िि्ानी िभुि ािमा कहलक जे ओर अनुज पाण्जल हमरा लोकक्तके तमाम स्नानीय सहायताक व्यिस्ना करता क्ददलीसँ स्नान-क्ययान कए हमरा लोकक्त 5 बजे भोरे िक्दा भेलौ। सीधे ि्हन्दािन पहुँलौ। ओतए इस्कान मक्न्दर लग पान्जल ािमा हमरा लोकक्तक पन हेर रहल छल। पान्जल संग पििण ािमा नामक एक स्नानीय गाइि छलैक। पान्जल हमरा कहलक जे ई आहाके सभ कछु देखोताह।

हमर सासु केर इच्छा सचिपनम यमुनामे स्नान आर गौर िक्सजनिक

छलक्हि। पीणि कहलक जे बन्दावनिक कोि घाट सािमि छैक। कोि भगानि शीकष्णाक घोडाक नाम छलक्हि। ओ बडा पतापी तना पूण्यात्मा घोडा छलै। पीणि स्नानीय होमाक कारण बन्दानि केर एक-एक गलीसँ पक्रक त छल। रमणरेती क्दससँ ल' क' जाय लागल। कहलक- ‘‘यएह छी रमणरेती।’’

देखैत छी रार क्दस गली, मकान, मक्न्दर, मधाघाला इत्याक्द। एको ईर धरती खाली नै। एको र्मर रेतक माने बाउलक नामो क्ना ान नै। रहुँ क्दस तंगी, आ गन्दगी। भेल यएह नीक रमणरेती? खाइर! गली-कुचरी होइत अंतत: हमरालोकक्न कोि घाट पहुँरलौ। यमुनामे जल कुनो विेष नै। 15टा नाह कछेरपर लागल। पार-सात तीनायाती स्नान करैत। मोनमे भेल- रलु रैनसँ स्नान करब। यमुनामे गाडीसँ उतक्र कछेरपर एलौ। कछेरपर अक्बते पाक्नसँ दुॅगन्धा आबए लगल। कारीसीयाह पाक्न। तीनठामसँ पूरा ा हरक गन्ध-भरल पाक्न यमुनामे हडा-हडा क' खसैत। मोन धष्णासँ भक्र गेल। नहेबाक इच्छा समाप्त भ' गेल। यमुनाक तमाम कल्पना आ णिच क्बसक्र गेलौ। एकाएक एना बुझना गेल जेना हम दुक्नयाक सभसँ पैघ गन्दा नालामे आक्ब गेल छी। कष्णा-राधा-गोपी कद्बक गाछ यमुना....। सभ क्कछु खतम!!! नाबिला सभ कहलक- ‘‘शीमाने, नाहपर रढा, हम यमुनाक ओइपार लए जाइत छी। ओतए नीक जल छै।’’

हमरालोकक्न नाहपर रढ गेलौ। जलसँ दुगन्धा अबैत छल। मोन घोर छल। ओइकात जा बालुपर सभ समान रखलौ। एक आंजुर जल उठेलौ। कारी-भीस आ दुगन्धासँ भरल। दय स्नान करैसँ साफ मना क' देलक। मुदा हमर सासु क्जद ठाक्न देलक्हि। ओ यमुनाक ओइ जलमे गयारह िुब्बी मारलक्न। सबहक हेतु आ अपनो लेल। हम कहक्लयक्न- ‘‘एक िुब्बी हमरो लेल माक्र लेक्न।’’

हमरा लग रन्दन केर पेस्ट छल। हम हुनक मान एि हानमे रगडलौ आ फेर बहाि नि केर मन्दर दस पस्रान केलौं। सभसँ पहने रंगनायक मन्दर, तकरबाद एक आर मन्दर- जइमे कष्ण जीक बालस्निाक मूत्ताचका ोरी जीक संग छलन्ह। तइमे अएलौ। पणिा सभ नाना तरीकासँ विधिबा, कद्याण, अनान आशम, गौसेि- लोक सभसँ पैसा ऐंठबामे मान्ह र। गली सभ गंदगीसँ भरल।

समए बीतल जाइत छल। हम पिणके कहन्लऐक- "सीधे हमरा लोकनके बाके बाहारी जीक मन्दर ल' रलु।"

करण हुनकर दा च काना हमर सासु अन-जल गहण नै क' सकै छलीह। पिणि संग हमरालोकन बाके-बाहारी मन्दर केर पागण दस बढलौ। पूरा गलीमे बडि भीड। मनुक्ख रुटीक धारी जका ससरैत। हरे-कष्ण, राधे-राधेक उच्चारणसँ िताि रिण गनगनाइत। रार दस गली सभमे गंदगी। कतौ-विधिबा सभ भीख मंगैत तँ कतौ भगिि स्तिमे साधु! मोन खन-खन! भेल। कतए आब गेलौ। पिणि स्नानीय होबाक कारणे एकटा नुकौका गलीसँ हमरा लोकनके मन्दरक पागणमे घुसेलन्ह। मनुक्खपर मनुक्ख रढैत। हमरा लोकन कोहुना-कहुना बाके-बाहारी जीके एक झलक देख पेलौ। आब मोनमे आबए लगल जे कखन बाहर नकली। जखन िपस अबैत रही तँ कातमे एक भव्य साधु जे करीब 65 षिक छल के कनैत आ भाि-विभोर होइत देखलऐक। हम कहलऐक- "क्यो रो रहे हो बाबा?"

जबाब देलाह- "आज ठाकुर जी का ब्याला है।"

हम ब्यालाक अनचनै बुझलौ पुछलयन्ह- "ब्याला क्या होता है?"

साधु- "जब किसी का मनत पूरा हो जाता है तो ठाकुर जीका ब्याला करबाता है। ब्याला अनाते विि हि। इसमे तीन लाख रपये का खरच है। फूलो से पूरे मन्दर को सजाया जाता है। बरात का आयोजन,

पालकी मे बैठाकर ठाकुर जी एिं ककशोरी जी को पूरे बृन्दािन मे घुमाया जाता है। पालकी पुन: बरसाना ले जाया जाता है और िहा से िापिस बृन्दािन।”

हमरा मुँहसँ ननकलल- “ठीक है। अच्छा है। ये तो उत्सि का माहौल है। किर रो क्यों रहे हो?”

साधु- “रोने का ही तो समय है। राधे-राधे इसललए रो रहा हूँ कक राधा मेरी बहन है। अब ठाकुर जी से उसका ब्याहला हो रहा है। इसके बाद िह हमसे बबछुड जाएगी। मै नही रोऊँगा तो कौन रोएगा।” ई कहह ओ भोकासी पाकर पुन: कानए लगल। ओकर कानब िास्तविक। कुनो माटककएता नै। सहज आ स्िाभाविक। ओहहना जेना एक सहोदर भाय अपन बहहनक दुरागमनक काल कनैत अछछ। बहहनसँ बबछुडबाक िएह टीस। िएह भािनात्मक लगाि। हमर मोन ओकरा प्रनत श्रद्धासँ भरर गेल। बृन्दािनसँ स्नेह बढए लागल। धीरे-धीरे भीड समाप्त होमए लागल।

एकाएक नजरर एक लगभग 45 िर्षक युिकपर गेल। फुलपेन्ट-शटच पहहरने, मानामे राजनन मुदा िस्त्र जीणच-शीणच नै। धरगर-पतरगर। गरदननमे तुलसीक माला लपेटने-बबदकुल गरदननमे सटल आ लपटाएल। ओ बाके-बबहारी जीक सामने ठाढ भ’ ककछु बडबडाइत छल। हम अनायास ओकरा लग बढलौ। सुनैत छी ओ ककछु एना बाजज रहल अछछ-

“बडो जीजा जी। क्या लीला करते हो। बडो-बडो को नचाते हो। मै मस्त हो गया। धन्य हो गई मेरी बहना। मुझे और क्या चाहहए। अगर मेरी बहन और जीजा पसन तो मै भी पसन। लग रहो।”

हमरा बुझना गेल ई की बाजज रहल अछछ। हम टोकैत कहहललयक- “ककससे बात कर रहे है आप?”

युिक- “बाके-बबहारी जी से और ककससे।”

हम- “किनकर जीजा जी किससे कह रहे ने?”
युकि- “बिहारी जी को।”
हम- “बिहारी जी को?”
युकि- “जी। मैने अपने गुर जी के आदो से बिहारी जी को अपना जीजा बनाया है। इस तरह राधा जी मेरी बहन हुई। मै ऑप लोगो की तरह इनसे कुछ मागने नही आता। भाइ भला अपने जीजा और बहन से क्या मागेगा। ि तों देगा ना। मै तो देने आता हूँ। इनके लीला को देखने आता हूँ।”
हम आश्चर्यचकित होइत बजलौ- “आपका क्या नाम है?”
युकि- “मेरा नाम रोलो ा मा है। मै दिल्ली से हूँ। पत्येक सप्ताह रवििर को यहा आता हूँ।”
हम- “अब यहा से कहा जाऐंगे?”
युकि- “आज मनुरा नही जाऊँगा। यहा से सीधे बरसाने जाऊँगा। अपनी लालिी राधा से मिलकर िपिस दिल्ली रला जाऊँगा।”
हम- “क्या हमलोग भी आपके सान रल सकते है।”
युकि- “क्यो नही। आप भी रले। हमारी गाडी के सान-सान।”
रोलो ा माक भामि सेहो हमरा सहजता आ समपर्ण बुझना गेल। हमरा लोकनि मनुराक याता कुनो आन बेर लेल छोवड िरसाना दिस विदा भेलौ। बहुतानि केर किछु नगद राव आ धन्यािद दैत रोलो ा माक संग हमरा लोकनि आगा बढलौ। हम अपन एक आदमीके रोलो ा मा गाडीमे बैस रोलो राधा-कृष्णक कना आर एक-एक स्नानक गुणगान करैत रहल। समस्त बहुतानि एक भव्य लाग'-लागल। अन्तत: दू बजे दिनमे बरसाने पहुँरलौ। पहाडपर रढि राधा-रानीक मन्दिरमे पिा केलौँ। करीब 25मिनट रढैमे लागल। पता रलल जे मन्दिरक पट बन छै। साढे राकर बजे साझमे खुजतैक।

रोलो क संग मन्दिरक बाहरी वस्साक आिरणक वारकण करए लगलौ। बस्सानेके मध्यमे ई पहाडी बरसानाके मानपर मनटीका जका लागल। ऐँ मन्दिरके लाडलीजीक मन्दिर कहल जाइत छैक। मन्दिरक वॅनमाण राजस्नानक राजा िर वसह 1675ई.मे करोलवन्ह। मन्दिरक स्नाप्त्य दवकण आर उि र भारतक सोहनगर वमशण केर अनुपन उदाहरण बुझना गेल। मन्दिर 90फीटक छैक। व खर उजर, नीला गेनाईट पानर तना सोनासँ बनल छैक। मन्दिरक कलाकवृतक वॅनमाण दवकण भारतक 15कलाकार केर सहायतासँ कएल गेल छै। मन्दिरक पागणक रार कात राजस्नान ।ैलीक पेवन्टगसँ सजाएल। कतौ कष्ण गोपीक रीर हरण करैत, कतौ मत्स्याितारक वर तण, कतौ नटखट कन्हैयाके यसोदाजी उखवडमे बन्हने, कतौ कवलया नागके ननैत कष्ण, कतौ कद्बक गाछपर बैस बासुरी हेरैत कष्ण, कतौ गोधिच पहाडके आंगुरपर उठेने कष्ण, कतौ यमुनासँ जल भरैत गोपी, कतौ ऐ मंवदरक ररनाक उदलेख-वर तकलाक उिम पस्तुवत। रोलो ।मा एक स्नानीय साधु शी भोलालाल दासक सहायतासँ एक-एक रीजक दा च हमरा लोकवनके करौलवन्ह।

मुख्य पट खुजबामे अखनो समए छल। हमरा लोकवन मन्दिरक पाछामे बनल एक छोट करी वदस बढलौ। एक साधु भेटलाह। रालो ओइ साधुसँ बात करए लगलाह। बीर-बीर झुणि क-झुणि स्नानीय मवहला सभ धधरा-रुनरी पवहरने राधा-कष्णक लोकगीत गबैत अबैत रहल। मोन, पसन भेल। साढे राव्र बजे पट खुवज गेलैक। राधा-कष्णक बडा वाक्रर न्ततासँ दा च भेल। आब हमरा लोकवन वदलीक हेतु पस्नान केलौ। जतए-कतौ खाली स्नान रहैक ततय राधे-राधे लीखल। हमहूँ राधे-राधेमे मग्न भ' गेलौ।

इहो पता रलल जे बरसानाक पूि चिनाम ब्हसरीन छैक। दंतकना ई

छैक जे एक बेर ब्रह्माजी भगवान श्रीकृष्णसँ धरतीपर किछु दिन रहबाक विनती केलखिन्ह। कृष्ण कहलखिन्ह ब्रह्माजीसँ- ''ठीक छैक अहा एकटा पहाडीमे अपने-आपके परिवर्तित कर। ब्रह्म तुरन्त पहारी भ' गेलाह। तै बरसाने केर राधार पहारी ब्रह्माजीक राधार मस्तक या स्वरूप मानल जाइत अछि। तै ब्रह्माकस्वरसँ ब्रह्मसरीन भेल या ब्रह्मसरीन कालान्तरमे बरसाने भ' गेल।''

यायारी- मकलक भाय केर फुटपाथी कचिंतन

मकलक भाय हमरा बडड वाय छथ। वाण्डयाम णि लगभग 48-50 केर आयु, मोट नाक मुदा नीक आ सुडौल काया। सदकाकाल गंभीर बनल। कपडा-जूता पकहरबाक नीक लैी। खानदानी मुसलमान छथ। कहनकर वाताजी अलीगढ मुस्कलम वि्विदालयमे इक्तहासक पखयात पोफेसर छलथन्ह। आब अिकाि पाप्त जीनि जीबैत छथन्ह। मकलक भायक नाम मुतजि मकलक छन्कह। कहनकर पकरिर विकक्त आ उदारिदी पकरिर छन्कह। मकलक भाय डाक्यूमेन्टरी कफल्म बनबैत छथ। पकहने बहुत कदन धकर रंगमंचसू जुडल छलाह। हबीब तनीिर केर संग नाटक केलन्कह। नौटंकीमे नीक अवमर कय छन्कह। विषि रपसू कानपुर, हाथरस आ मथुराक नौटंकी परम्पराक पका कहनकर लगाि अि्त छन्कह। ओकह लैीके पुनर्जीवित करबाक लेल सदकाकाल तत्पर रहैत छथ। मुसलमान समाजक बुकधजीवि, आइ.ए.एस., आइ.एफ.एस., आइ.पी.एस., रंगकमी, साकहत्यकार, मकहला इन्टर पेन्युअर इत्याकदक बीच ई अपन ठोस पकड बनौने छथ। मुसलमान राजनेता चाहे कुनो पाटीक कएक ने होथ, मलीक भायके सम्मान करैत छथन्ह। जखन अब्दुल कलाम राष्टपका छलाह तू मकलक भाय सदकाकाल राष्टपका भनि केर चकर लगबैत रहैत छलाह। मुदा काना बजौने ककहयो नकह गेलन्कह। तखने जाइत छलन्कह जखन बजाहट अबैत छलन्कह। तिमीन उपराष्टपका डॉ. अंसारी लग सेहो कहनकर बडड नीक पहुच छन्कह। अंसारी महोदयके बडड करीबी मानल जाइत छथ मकलक भाय। एन.डी.ए. केर ासिन कालमे मकलक भाय राष्टीय स्यिंसेकि संघ,

भारतीय जनतापाटी एिं एन.डी.ए. केर घटक दलक नेता सभसू बडड सम्पक नाता रखैत छलाह।
मक्लक भायसू पथम पक्रचए हमरा एन.डी.ए. केर िासन कालमे नेिनल म्युक्जयम संस्थान केर एक होनहार ि‍िाथी शी आनन्दिधिन जे आइ-काक्लि Delhi Institute of Heritage and Research Managemenet मे क्सक्नयर लेक्चरॉर छक्थ, भारतीय जनतापाटी केर मुख्यालयमे करोलन्क्ह। अक्ह बातके लगभग नौ िषि भिऽ गेल। आनन्दिधिन हमरा कहलन्क्ह- “भैया, ई छक्थ मक्लक भाय। बडड नीक लोक। Documentary film बनबैत छक्थ। राष्टीय स्ियंसेिक संघ आ संस्कार भारती सं बडड नीक सम्बन्ध छन्क्ह। भारतीय परम्परासू क्सनेह छन्क्ह। भारतीय परम्परा केर संरक्षण आ सम्बधिनमे सदक्रकाल लागल रहैत छक्थ। उदारिादी पृक्त्त केर मुसलमान छक्थ। अयोध्यामे राम मक्न्दर बनए, तकर पक्षधर छक्थ। पाक्रकस्तानक घोर िरोधी छक्थ। क्हन्दु-मुसलमान एकताक समथिक छक्थ...।" इत्याक्द-इत्याक्द।
आनन्दिधिन केर अक्ह पक्रचएपर मक्लक भाय क्रबना क्रकछु बजने आूक्खमे धूपबला कीमती चश्मा लगौने बडा गम्भीर अहूकार-हीन भािना सं हमरा लग आक्रब गमजोिी सू हमरासू हाथ क्रमलौलन्क्ह। आनन्दिधिनजी मक्लक भायके सेहो हमर बडा िस्तारपूििक पक्रचए देलक्थन्ह। नक्ह तू आनन्दिधिनजी हमरा मक्लक भायक पूणि नाम बतौलन्क्ह। आ नक्हये हम जनबाक पयास केलहू। मुदा तकरबाद मक्लक भायसू क्दन-पक्तक्दन सम्बन्धक पगाढता बढैत गेल। मक्लक भायसू जतेक नजक्दकी अबैत गलहू ततेक क्हनका पक्त हमर क्सनेह आ सम्मान बढैत गेल। एक क्दन मोनमे आएल- आक्ह रे बा! मक्लक भाय केर नाम तू हमरा पते नक्ह अक्छ। कही क्कहयो क्रकयो पूछलक जे मक्लक भाय अथात के,

तू की उतर देबैक? मुदा पगाढता अतेक बढ़ि गेल छल जे हमरा मलिक भायसू हुनकर नाम पुछबाक हिम्मत नहि भेल। जखन आनन्दजी भेट भेलाह तू पुछलिएन्हि- “मलिक भाय केर नाम की छन्हि?” आनन्द जबाब देलन्हि- “हमरो जात नहि अछि। हमहू हुनका मलिक भाय केर नामसू जनैत छयन्हि।”

एक दिन मलिक भाय हमरा इमेल भेजलन्हि। ओहि इमेल आइ.डी.मे इमेल भेजएबलाक नाम मुतजिा मलिक रहैक। एकहि क्षणमे ई इमेल हमर समस्याक समाधान कऽ देलक।

जखन राम जन्मभूमि आ बाबरी मस्जिद केर विबादपर इलाहाबाद हाइकोर्ट(लखनऊ बेन्च)क निर्णय अएलैक तू झट दनि मलिक भाय हमरा ई एस.एम.एस. केलन्हि- “Congrats now me can build temple”

किछुकालक बाद मलिक भाय फोन सेहो केलन्हि। कहए लगलाह- “कैलाश भाय, भारतक मुसलमान आब शान्ति चाहैत अछि। हमरा लोकनि हिन्दु-समाजक संग मिलि कऽ रहए चाहैत छी। आब अतए केर मुसलमान कुनो नेता आ मुल्लाक मायाजालमे नहि ओझराए चाहैत अछि। मुसलमान समाजक युवािगिआब विकासमुखी भऽ गेल अछि। आब एहि तरहक बात लऽ कऽ हमरा लोकनि खून खराबा नहि कऽ सकैत छी। बहुत भेल आब कुनो नेता किंवा कठमुल्लाक झपासामे देशक मुसलमान नहि आबएबला अछि। हमरा लोकनि तू बल्कि ई सोचि रहल छी जे देशक मुसलमान सभके विभिन भौगोलिक क्षेत्रसू बजा अयोध्या लऽ जाइ आ हिन्दु लोकनिक संग मिल कऽ एक भव्य आ पैघ राम-मन्दिर केर निर्माणक कार्यारम्भ करी। अगर एहेन भऽ गेल तू समस्त विश्वमे एकटा बात पहुचत जे भारत सहीपहूमे अनेकतामे एकता, आपसी सामंजस्य तथा वैविध्य

संस्कृतिक समागम स्थल अछि। एहेन पमाण अन्यत संभि नहि।"
मल्लिक भाय केर एहि तरहक विचार सुनि मोनमे एक बेर फेर हुनका पति अपार स्नेह आ सम्मान जावा गेल। मोन भेल जे मल्लिक भायके हृदएसू लगा ली। तैय्यार सेहो भेलहू। मुदा किछ नहि कएक एकै झटकामे अपने-आपके रोकि लेलहू। भेल मल्लिक भाय सोचताह- "राम-मन्दिर लेल कैलाि भाय अतेक चिन्तित छथि मुदा मुसलमानक भाि नि केर चिन्ता कहा छनि। कैलाि भाय कते मतलबी लोक छथि!"
करीब दू बरख पूि मल्लिक भाय पुनीता ि मा नामक एक पाण्डि्याम मुदा आकषिक नाक-नक्ािली बालाक संग हमरा लग अएलाह। पुनीता ि माक सम्बन्धमे मल्लिक भायसू हमरा ई जात भेल जे पुनीता ि मा कत्थक नृत्यागना छथि। ओ अपन संस्थाक माध्यमसू सास्कृतिक कायि मक आयोजन करैत रहथि छथि। पुनीता ि मा बिहारसू छथकीह। नृत्य संग-संग नृत्य-नाटकाक सेहो मंचन एक उभरैत कलाकारक र पमे करैत छथि। पुनीता ि माक संग एक आरो ि्यामे ि णि छटगर मुदा आकषिक आ मूहक पातमे पुनीता ि मासू कनी अठारह, एक नायिका हमरा लग आएल छलीह। एहि नायिका केर नाम छलन्हि अनु चौधरी। बातालापक ि ममे पता चलल जे अनु चौधरी मुलत: मिथिलासू छथि। हिनकर पिता कुनो संस्कृत विदालयमे गणित केर विक्क छथिन्ह आ दिल्ली महानगरीक पि्चिमी कछेरमे बसल नजफगढमे अपन घर-दार बना रहि रहल छथि। अनुक जन्म, पालन-पोषण एि विक्ष इत्यादि सेहो दिल्लीए मे भेल छन्हि। अनु हिन्दीसू एम.ए. केलाक बाद दिल्ली वि ि्विदालयसू पी.एच.डी. कऽ रहलि छलीह। आब पी.एच.डी. लगभग लवाचाए गेल छन्हि। मुदा अनु पुनीताक तुलनामे कनी गंभीर बुझना गेलीह। जखन अनुके

हमरा बारेमे जात भेलन्हि जे हम मैथिल छी तू ओ हमरासू हेल-मेल गेलीह आ खाटी मैथिलीमे वार्तालाप करए लगलीह। “राग-विराग” संस्थासू अनु सेहो जुडल छलीह। पुनीता शर्मा आ अनु चौधरी दुनूके बिहारक संस्कृति आ संस्कारसू घोर लगाव बुझना गेल हमरा। ई दुनू मिल अपन संस्था- राग-विरागक माध्यमसू हम्मर ताहि समएक संस्था- इन्दिरा गान्धी राष्टीय कला केन्र केर पागणमे “बिहार उत्सव” मनबए चाहैत छलीह। ओहि सास्कृतिक कार्यक्रममे पदर्शनी, लोक तथा शास्तीय नृत्य आ संगीतक मंचन, बिहारक सास्कृतिक विरासत तथा बिहारमे विकासक संभावनापर एक दू-दिनक संगोष्ठी इत्यादि करबाक विचार छलन्हि। यदवि बिहारक पति हुनका हृदएमे अगाध पेम छन्हि। जखन ई दुनू नायिका मल्लिक भायसू बिहार उत्सव करबाक इच्छा व्यक्त केलन्हि तखन तू मल्लिक भाय हुनका लोकनिक संग मिल एहि सपनाके साकार करबाक लेल लागि गेलाह। मुदा स्पॉन्सर भेटबाक लेल एक परियोजना तथा एकटा आधार लेख जरूरी। ओही परियोजना तथा आधारक निर्माण, संगहि-संग इन्दिरा गान्धी राष्टीय कला केन्र केर पागणमे कार्यक्रम करबाक अनुमति केर लेल मल्लिक भाय एहि दुनू नायिकाके लए हमरा लग आबि गेलाह। हम मल्लिक भाय केर बिहारक पति पेम एवं पुनीता तथा अनुक इच्छाके सम्मान करैत परियोजना तैय्यार कऽ देलयन्हि। संगहि अपन तात्कालीन सदस्य सचिव डॉ. कल्याण कुमार चक्रवर्तीसू तीन दिन कए पूरा कला केन्रक पागण हुनका लोकनिके बिहार उत्सव केर आयोजन करबाक हेतु दिया देलयन्हि। आब मल्लिक भाय पसन भऽ पुनीता आ अनुक संग बिहार उत्सव केर तैय्यारीमे जुटि कऽ लागि गेलाह। स्पॉन्सरशिप केर लेल सेहो जतय-जतय दौड-धूप करए लगलाह। हमहू उत्साहित रही। मुदा एकाएक कोसी अपन

बाकराल र पसू सहरसा, पुरबायामे सभिाि कऽ देलक। जान-मालक जबरदस्त हाक्त भेलैक। समस्त देि कोसीक विभिकाकासू काबा गेल। अबह बाकरालताके देखैत हमरा लोकबा ई बाणधि सभिम्मबासू लेलहू जे कायिमके बाछु बादन लेल स्थवात कऽ देल जाए।

एबह घटनाक एक पभाि ई भेल जे हम मबलक भायके आरो समीप आबा गेलहू। जतेक बेर भेटबथ मबलक भाय ततेक नजबादक अबैत गेलहू हम हुनका संग।

हालबहमे एक बादन हम मबलक भायसू नौटंकी परम्पराक सम्बन्धमे एक िोध पबयोजनापर बादल्लीक मंडी हाउसमे शीराम सेन्टर केर केफेटेबयामे बैसल गप्प-सप्प करैत रही। मबलक भाय नौटंकी परम्पराके पुन: पबाष्ठाबपत करबाक लेल बडड बाचंबात बुझना गेलाह। जखन ओ नौटंकी केर बात करैत छबथ तू हुनकर भाि-भंबामासू एना लागत जेना कलाकारक टीस बाहर भऽ रहल हो आ एक िोधथी केर उत्कंठा। बहुत तरहक आ नौटंकीक विविध आयामपर मबलक भाय केर सोच देख मोन हबयर भऽ जाइत अबछ। विचार-पर-विचार होइत गेल। सोचक शृंखला बढैत गेल। मबलक भय कॉफी पीबाक एक तरहसू एबडक्ट छबथ। ओना हमरा कॉफीसू कुनो बासनेह नबह अबछ मुदा एकरसता समाप्त करबाक लेल तथा विचारधारामे नि-नि बुलबुला अनबाक लेल हमहू कॉफी-पर-कोफी पीबैत रहलहू। मबलक भायक साथ दैत रहबलएबा। बात बाखचाइत रहल सोच बढैत रहल। पबयोजना अपन स्िरिप पकडने गेल। लगभग पबयोजनाक बाहरी आिरिण बबा गेल छल।

एकाएक मबलक भाय कहलन्बह- ‘‘कैलाि भाय, हमरा लोकबा तीन घंटासू नौटंकीपर चचा कऽ रहल छी। बाना कुनो अिरोधक। बाना

कुनो विरामक। कनी काल आब हमरा लोकनिके मोन फेरि करक चाही। चलू धूमि कऽ 15-20 मिनटमे घुरि पिस आबि पुन: नौटंकीबला कायर्क्रम समाप्त करब।" ई कहि मल्लिक भाय उठि गेलाह। हम्मर हाथ पकड़ि केफेटेरियासू बाहर विदा भेलाह। हमहू एक आजाकारी विष्य जका मल्लिक भाय संग बाहर धुमबाक हेतु विदा भेलहू। मोनमे भेल- चलू कनी मोनमे नि संचार उत्पन कऽ ली।

जखन बाहरमे घुमैत रही तू एकाएक राजनीति, राजनीतिमे भष्टाचार आदि विषएपर गप्प होमए लागल। गप्प ए.राजा आ 2जी. स्पेक्ट्रुम केर भयंकर धोटालासू पारंभ होइत नीतीि कुमार केर डेबलपमेन्ट प्लान आ जीत आ पुन: गुजरातक मुख्यमंती नरेन्र मोदीक विचारधारा धरि होइत रहल। हम उपनिषदक अजानी चेला जका अपन जिजासा एक-दू ाकि्यमे रखैत गेलहू, आ मल्लिक भाय उपनिषद केर धोर तपस्ी आ ममजि जका हमर जिजासाक समाधान विस्तारसू करैत गेलाह। मल्लिक भाय जेना हम्मर उधेर-बुनके बिना पुछने बुझि लेने होथि। ओ बजैत गेलाह बेिक। कुनो ममजि राजनैतिक वि्लेषक जका। 15मिनट समए कोना डेढ घंटामे बदलि गेल से पते नहि चलल।

भष्टाचार आ धोटालापर मल्लिक भाय कहलन्हि- "कैलाि भाय, भष्टाचार आ घोटाला नेता नहि बडका बाबू अथात् आइ.ए.एस. ऑफिसर सबहक लॉबी करैत अछि। ओ सभ नेता आ मिनिस्टर सभके अपना हाथक खेलौना बनेने रहैत अछि। कायिओ सभ अतेक दक्ताक संग करैत अछि जे अपने तू कहियो नहि फसत मुदा बदनाम नेता कि मंती भऽ जएत। I.A.S. केर अथि होइत छैक-

Im Always Safe . मंतीके बडका बाबू एक तरहे विि कऽ दैत छैक जे ओ जाहि कागतपर कहै ताहिपर हस्ताक्र लऽ

लै।”

मल्लिक भाय बजैत रहलाह आ हम विजासासू आँखि फाडने आ कान खोलने हुनकर बातके सुनैत गेलहुँ। मल्लिक भाय कहलन्हि- “जनैत छी कैलाश भाय, एखनि पौने दू लाख हजार करोडक घोटालामे चारिओ अना विस्सा ए राजा के नहि भेटल हेतैक। दससू बारह अना विस्सा तँ बडका बाबू सभ गट दनि पचा लेने हेतैक आ छौसू चारि अनामे अपना पार्टीक मुखिया, देशक सभसू पैघ पार्टीक मुखिया आ अन्तत: अपन लगुआ-भगुआ सभमे बाटए परल हेतैक। मुदा बडका बाबू सभ कागजके तेना ओझरेने हेतैक जे तमाम पार्टियासू लऽ लऽ सी.बी.आइ. केर जाच धरि अगर कियो फसत तँ मंती। पतकार सेहो बडका बाबूपर चुप रहत आ नेता आ मंतीके देषी बनेबामे अपन दिमाग आ खोजी पतकारिताक तमाम टीप्सके लगौने रहत। मंतीक स्क्रिप्ट किछुए दिनमे नायकसू खलनायक बनि आओत।”

हम मल्लिक भायके पुछलएनि- “अहाक जनैत की कारण छैक जे अखनि बेरक बिहार विधानसभा केर चुनाविमे कागेस, लालू यादव आ रामविलास पासवानि, तीनूके नीतीश कुमार खडडा लऽ कऽ खडकि देलन्हि। एहेन किएक भेलैक?”

मल्लिक भाय कहलन्हि- “देखू, लोक आब नेहरू-गान्धी परिवारिक विनुगत राजनीतिसू तंग आबि गेल अछि। लालू यादवकि जातिक राजनीति पारम्भमे छोटका जाति सभके नीक लगलैक, किएक तँ पहिल बेर ओ सभ चुनाविमे विस्सा लेलक, अप्पन बातके बिना कुनो डर आ आतंकके बाजल। लोकके बुझेलैक जे पजातंतो कुन चीज होइ छैक। मुसलमानके कॉंगेजसू मोह भंग होमए लगलैक। 1991 केर बाबरी मस्जिद ध्वस्त भेलाक बाद मुसलमान सभ बुझि गेल जे कागेस आ भारतीय जनता पाटीमे कुनो विशेष अन्तर नहि अछि।

बिहारमे मुसलमान सभके सभसँ ज्यादे भय गुआर सँ रहलै। कखनहुँ कुनो सम्पदायिक उन्माद होइक तँ मुसलमान सबहक जानमालक छत्ति सभसँ ज्यादे गुआरे सभ करैक। ताहि मुसलमान विकल्पहीन भऽ गेल। मुसलमान सभ लाचार भऽ लालू यादि केर साथ भऽ गेल। मुदा बादमे मुसलमानो सभके ई बुझएमे आबि गेलैक जे लालू यादि केलि बातक धनीक छथि आ कमकि छोट। जखन कि ठीक एकर विपरीत नीतीि कुमारजी एक मात विकासक अपन आधार बनौलन्हि। बिना कुनो कन्टोिसीमे गेने विकासक कायिकरैत रहलाह। महिला सभके नौकरी भेटलैक विकिसत बनल, गाम पंचायतसँ विजला पंचायत धरि साझेदारी बढलैक, बहुत महिला सभ विकिका बनिल, ए.एन.एम. बनिल, बालिका सभके स्कूली िदी, मुफ्त साइकिल, विदालयमे भोजन भेटलैक। फेर की छल- की छोट आ की पैघ- सभ कियो अपन लडकी सभके इसकूल भेजनाइ पारंभ केलक। लालू जी समएक तमाक गुण्डा आ लफन्दर सभ जे कि डाका डालैत छल, लोकके अपहरण करैत छल, छीना-छपटी करैत छल आतंकक माहौल बना समस्त भारतमे बिहारके बदनाम बनौने छल, तकरा सभके पकिड-पकिड नीितिजी जहलमे ध देलन्हि। मातहत पुलिस सभके स्पष्टीनिदेष देलखिन्ह जे एहि उपरिी तत्किे एहेन इलाज करए जाए जे फेरो जीिनमे ई सभ एहेन कायिकरब तँ दूर सोचबो नहि करए। एकर पभाि बडड नीक रहलैक। िनै: िनै: लोक भय-मुक्त होमय लागल।”

महिलक भाय बजैत रहलाह- “नीितिजी इहो बुझलन्हि जे बिहारक सडक कंडम भऽ गेल अछि। ताहि सडकके मरम्मत तथा निि सडकक िनमाणक कायिकि तीबताक संग-संग दक्तासँ करबाक िनदेि देलखिन्ह। हुनका पता चललन्हि जे ठेकेदार सभ कनी-मनी कार्य

कय सभटा पाइ पंती, ओफीसर आ अपने-ओपमे बाक्ट लैत अछ। फेर की छल। नीतीजी इहो केदेि देलथिन्ह, कि जे कियो ठेकेदार सडकक जीणोधार या निमाणक ठेका लेत सएह एक निश्चित अवधि माने पाच या दस षिधिकर ओकर सडकक रखरखाि सेहो करत। अगर कुनो तरहक कमी भेलैक तू ठेकेदारक जिम्मेदारी हेतैक आ ओकरा ठीक कराबए पडतैक। एकर केदेिक बडड उतम पभाि परलैक। बिहारक जनता सडक बनबासू आ सडकक उधार होमासू गद-गद भऽ गेल। मुदा सामान्य जनताक बीच एखनहु लालू जीक गुण्डा सबहक डर छलैक जकरासू ओ मुक्ति पाबए चाहैत छल। आ ई मुक्ति चुनाििमे लालू जीक पाटीके हरा कऽ देल जा सकैत छल।"

"रामविलास पासिन अपन इमेज एकटा अिसरिदी नेताक रपमे बना लेने छथि पहिने एन.डी.ए. मे मंती रहलन्हि, फेर एन.डी.ए. छोडि उ. प अ. मे आबि झट दिन मंतीक कुसीपर बैस रहलाह। हमेि लालू यादकि धोर विरोध केलन्हि मुदा अिसरिदितासू अतेक गिसत भऽ गेलाह जे हुनके संगे राजनैतिक गठबन्धन कऽ लेलन्हि। बिहारक अति पिछडा गिि र्विि र पे हरिजन सभपर अपन अधिकार बुझए लगलन्हि। नीतीजी सििथिम दिलतके दू भाग- दिलत आ महा-दिलतमे बॉक्ट रामविलास पासिनक आधारके निै: निै: अतेक तोडि देलथिन्ह जे वािज बूक ऑफ बल्डि रिकॉडमे सभसू ज्यादा मत लए जीतक रेकॉडिबनबएबला रामविलास पासिन स्ियं एम.पी. केर चुनाि होिर गेलाह। धन्यािद दी लालू यादकिे जे हुनका राज्यसभामे स्थान देलथिन्ह। अन्यथा आइ सडकपर रहितथि। इमहर कुमी, कोइरी, धानूक मल्लाह, मुसहर आदि लालू यादसिू अलग आबि अपना-अपने-आपके नीतीि लग सुरक्षित बुझए लगलाह।"

मक्लक भाय हमरा क्दस देखलन्क्ह। हमर क्जजासा भाकिे क्बना कहने बुक्झ गेलाह आ अपन कथ्यके आगा बढबैत बजलाह- "रहल बात मुसलमानक। तू नीतीिजी एक्ह बन्दुपर अपन कौक्टल्य नीक्त केर सितिम उदाहरण पस्तुत केलन्क्ह। एक क्दस तू भारतीय जनता पाटीक अपन घटक दल बनौने रहलाह मुदा दोसर क्दस कॉमन क्मकमम पोगामक धोषणा केलन्क्ह जाक्हमे मंक्दर बनेबाक इ्ि िमील नक्ह रहैक। संगक्ह गुजरातक मुख्यमंती मुख्यमंती नरेन्र मोदीके अपन कुनो कायिममे जाक्त-बुक्झ कऽ नक्ह आबए देलक्थन्ह। नीतीि कुमारक एक्ह क्कणएिसू भारतीय जनता पाटीक नेता सभ क्मफक्र गेलाह। मुदा नीतीिजी अपन क्कणएिसू टससू मस नक्ह भेलाह । आर-तू-आर ओ बी.जे.पी.के साफ कक्ह देलक्थन्ह जे नरेन्र मोदी क्बहार-विधान सभा २०१० केर आम चुनाभिे पाटीक पचारक हेतु क्बहार नक्ह अबक्थ। ई क्कणएि भारतीय जनता पाटीक लेल बडड पैघ धका छलैक। मुदा गठबंधन केर धमक्कि स्ीिकारैत तथा नीतीि जीक बढैत कदके देखैत बी.जे.पी.केर शेष्ठ नेता सभ चुप्प रक्ह क्कणएि स्ीिकाक्र लेलन्क्ह। बेगर Beggar cannot be chooser."

हम अक्हपर मक्लक भायके विचारक शंखला तोडैत कहक्लयन्क्ह- "मक्लक भाय, अगर मोदी अतेक खरािछक्थ आ क्मक्डयासू लए कऽ तमाम विपक्ी दल हुनकर धोर विरोध कऽ रहल अक्छ तू फेर बेर-बेर गुजरात सनहक पैघ राज्यमे ओ जीतैत क्कएक छक्थ?"

मक्लक भाय कहलन्क्ह- "देखू कैलाि भाय, मोदी क्हन्दु विचारधाराक बदौलक क्कंािगोधरा आ आन ठमहक नरसंहारक कारणे नक्ह जीतैत छक्थ। मोदी जीतमे हीरा जिाहरातक कारोबार करएबला ्यिापारीक हाथ छैक। पक्हने एक्ह कायमिे चाहे कीमती पत्थरके कटाइ-छटाइ हो, पॉलीसीग हो, धसाइ हो या खानसू उपलब्धता या पुन: आयात-

केयात, तमाम पवियामे मुसलमान सभ डोमनेट करैत छल। एकाएक विि-बाजारमे जखन कीमती पत्थर तथा हीरा जिहरात वसस इजराइल केर यहुदी ियापारीक हष्व्ट गेलैक तू निै:-निै: ओ सभ अव्ह धंधामे एकाधकार स्थावत कए लेलक। फेर गुजरातक व्हन्दु-ियापारी सभके सेहो अपना वसस आकवात कए मुसलमान सभसू पृथक करक पयास करए लागल। स्थाव्य आ अपत्यावित लाभके ध्यानमे रखैत गुजरातक व्हन्दु ियापारी सभ हीरा-जिहरात तथा तमाम िि कीमती पत्थरपर अपन आधपत्य बनेबाक युक्तपर विचार करए लागल। आ एव्ह तरहक एकाधपत्य बना राजनैवाक सहयोग एिं हस्तक्षेपसू संभि नव्ह अव्छ। अव्ह तरहक सहयोग जखन मोदी पथम बेर मुख्यमंती भेलाह तू देनाइ पारम्भ कऽ देलथन्ह। फेर की छल व्हन्दु ियापारी सभ हुनका समथनि करए लगलन्व्ह आ हुनकर चुनािमे आथकि एिं अन्य तरहक मदवा करए लगलन्व्ह। अन्तरराष्टीय स्तरपर इजरायल तू मदवा कैयो रहल छन्व्ह। संगव्ह गुजरातक आव्दिासी तथा कहरपंथी व्हन्दु िगिव्हन्दु अस्वमताक नामपर व्हनकर संग छन्व्ह।"

मवलक भाय गंभीर रहलाह आ बजैत रहलाह- "गुजरातमे मुसलमान समुदाय केर साथ खून-खरापा उच्च िगि व्हन्दु अथिा ियापारी इत्याव्द नव्ह केलक। एव्ह लेल ठेकेदार सभ आव्दिासी लोकवाके पटोलक . ओकरा सबहक मोनमे मुसलमान समुदायक पवा धृणा आ िैमनस्य उत्पन केलक। आहाके की कहु कैलाि भाय, हालव्हमे हम गुजरातक कछु आव्दिासी बहुल क्षेतमे पतकारक टीम संगे याता केने रही। जखन एक आव्दिासी गाममे गेलहू आ पुछवलऐक जे बगलबला गाि जाव्हमे मुसलमान सभ रहैत अव्छ तकर सबहक की हालत छैक? हमर वजासापर आव्दिासी सभ तमतमाइत कहलक-

शीमान्, अहा मुसलमान सबहक बात नक्ह कर । ओ सभ गदार अक्छ। ओ सभ कक्छु अंट-संट जाक्र सेहो बाजल आ अन्तमे कहलक- जनैत छी, हमरा लोकक्त गुजरातक दंगाक समएमे मुसलमान सभके खुब मारलहु। सभटा बदला लऽ लेलऐक। पूरा देिमे जे भारतीय जनता पाटी 2004केर चुनाि हारल तकर कारण कुतुबुहीन अन्सारीक बान्हल आ र्विितामे हाथ जोडैत फोटो। ओ भीडक उन्मादमे मातल लोक सभसू हाथ जोडने अपन पाणक भीख मागैत छल। ई फोटो मात समस्त भारतमे भारतीय जनता पाटीक पक्त लोकक मोनमे घृणा अत्पन कऽ देलकैक आ एक्ह बातके बी.जे.पी.केर नेता नक्ह बुक्झ सकलाह। पक्रणाम बहुत नीक जका सरकार चलेबाक बादो भारतीय जनता पाटी एिं घटक दल सतामे नक्ह आक्ब सकल। आ सम्पूणपिक्रपेक्यमे नरेन्र मोदीके एकर सूतधार मानल गेलैक। एका-एक पूरा देिक मुसलमान मोदी विरोधी भऽ गेल। मुसलमान डरे हरकम्प कापए लागल। अपने-आपके घोर असुरक्क्त बुझए लागल। जानैत छी कैलाि भाय, हम तू मुसलमान समाज आ र्विेष रपसू बुक्धजीिी सभ लग बैसैत छी। मुसलमान समाजमे ई चचा भऽ रहल छैक जे घोर राष्टािदक नामपर भारतमे मुसलमान सभके जान-मालक अपार छक्ष्य हेतैक। कक्छु िषिअथात 30-40 िषिक्र बाद मुसलमान सभ अपन नाम क्हन्दु नाममे पक्रक्ताि कऽ लेत। इजरायल अपन पभुति भारतमे घोर राष्टािदी संग क्मल मुसलमानके परेशोन कऽ कऽ देखाओत। भारतक अगल-बगल केर छोट-छीन देि सभ भारतमे क्मल जएत। मुदा मुसलमान सभ इहो सोचैत अक्छ जे चीन जाक्ह तरहसू अपने-आपके हर दृष्टकोणसू मजबूत कऽ रहल अक्छ- एक क्दन लगभग डेढ-दू साए िषिक्र बाद ई स्क्थक्त हेतैक जे चीन भारतके क्छन-क्मन करएमे सफल भऽ जाए।

हलाक्क चीनक लेल क्यन्ताक विषए छैक तीब गक्तसू ओतए केर जनताके इसाइ धमर्मी पकरीतिनि।”

एकरा बाद पुन: मक्लक भाय क्बहारक सन्दभर्मी बाजए लगलाह कहलन्क्ह- “क्बहारक मुसलमान नीतीि जीक अक्ह कोणएसू संतुष्ट छल जे चलू ओ नरेन्र मोदीके क्बहार नक्ह आबए देलाह। उच्च गिसिभ पक्हल बेर एक भेल आ अपन मत नीतीि कुमारक पाटी एि भारतीय जनता पाटीक उम्मीदिर सभके आूक्ख मूक्त कऽ देलक। अक्ह तरहे नीतीिके महा-दक्लत आ दक्लत, मुसलमान, मक्हला, युकि, बेरोजगार आ विकास पक्सन करएबला जनताक आधार भेटलन्क्ह। लालू जीक पक्मे यादि एि अन्य हुनकर परम्परागत लोक सभ एखनहू छल। मुदा सेन लगलन्क्ह तू मुसलमान, उच्चगिएि दक्लत समुदायमे जकरा कारणे ओ भयंकर हार देखलन्क्ह। रामविलास माक्टमे सेक्हया गेलाह। कागेस ध्सि्त भऽ गेल। राहुल गान्धी सोनीया गान्धी आ पधानमंती जीक दौरा क्बहारक जनताके नक्ह पक्सन कऽ सकल। नीतीिजी क्बजयी भेलाह। आब विकास पुरषक मोहर लावा गेल छन्क्ह। आगा आरो आत्म विििसिसू कायिकरताह। क्बहार आब िघक्ह एक आदििराज्यक दजा पाप्त करत।”

एकर बाद घडी देखैत मक्लक भाय हमरा कहलन्क्ह- “कैलाि भाय, हमरा लोकक्न 15क्मनटक लेल बाहर क्नकलल रही आब डेढ घन्टा भऽ गेल। चलु अपन नौटंकीक पक्रयोजनापर चचा करी।”

हम एक आजाकारी विष्य जका हुनका संग एक बेर पुन: शीराम सेन्टर केर केफेटेक्रयामे नौटंकीपर विमिमिि ियिस्त भऽ गेलहू। आब सोचैत छी, मक्लक भाय केर फुटपाथी गप्प कही यथाथकि िणिनि तू नक्ह अक्छ! सोचल एक्ह बातके क्बना कुनो भेद-भाकि पाठक संग यायािरीक माध्यमसू बाटी।

सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत-बिगड़ैत- विवेचना

श्री सुभाषचन्द्र यादव केर कथा संकलन आद्योपान्त पढ़लहुँ। लेखक महोदय अपन भावनाके विविध रूपे प्रस्तुत कएने छथि। कथा पढ़ब तँ लागत जे केना एकटा निम्न-मध्यम-वर्गीय परिवारमे बढ़ल-पलल एक पढ़ल-लिखल मनुक्ख अपन जीवनक घटना, अनुभव आ सम्वेदनाक विविध अवस्था: कऽ रहल अछि। परम्पराक नीक चीजसँ लेखक अपना-आपके जोड़ने छथि आ परम्पराक पाखण्डक विरोह करबामे कखनो नहि हिचकिचाइत छथि। गाम, घर, परम्परा, परिवार, खेत, खरिहान, गामघरक आपसी कलह, समन्वय, कोसी नदीक कहर, सौन्दर्य यात्रा वृतान्त आदिक विविध सोहनगर लगैत अछि। सुभाषजीक कथा-संग्रहके हमरा जनैत दू दृष्टिकोण सँ विश्लेषित कएल जा सकैत अछि:

(क) भाषा विन्यास आ लिपि वाली दृष्टिकोण सँ ,
(ख) कथा-वस्तुक दृष्टिकोण सँ।

आब उपरलिखित दृष्टिकोण पर विचार करी:
भाषा विन्यास आ लिपि वाली दृष्टिकोण सँ कथाकार बड्ड प्रसंसनीय कार्य केलन्हि अछि। प्रकाशि सेहो एहि तरहक रचनाके प्रकाशित कए एक नीक परम्पराक प्रारम्भ केलन्हि अछि।
मैथिली भाषाक सब सँ पैघ समस्या, हमरा एकटा मानविज्ञानक छात्र हेबाक नाते, ई बुझना जाइत अछि जे जखन ई भाषा लिखल जाइत अछि तँ किछु तथाकथित संस्कृतनिष्ठ ब्राह्मण एवं कायस्थ लोकनिक हाथक खेलौना बनि रहि जाइत अछि। अनेरे संस्कृतक

िब्दके घुसा-घुसा भाषाके दुरह बना देल जाइत अछि। छोट जाति, एिं सहिराक िब्द, विन्यास, ियिहार आदि के नजरअंदाज कऽ देल जाइत छैक। सही अर्थमे भाषा माटिक सुगन्ध आ लोक परम्परासू दूर भऽ जाइत अछि। सहिरा िगिसू कटि जाइत अछि। एहिना वस्थतिमे छोट जाति, स्तीगण आदि अपना-आप के भाषाक तागसू बान्हल नहि बुझैत छथि। भाषाक प्रति लोकक स्नेह कम भऽ जाइत छहि। बाजब धरि तू ठीक परन्तु पढब आ लिखब परमपरासू ई लोकनि अपन नाता समाप्त कऽ लैत छथि।
मैथिली भाषाक समस्या केिल जाति अथिा समुदाय मातसू नहि छैक। विभिन्न सास्कृतिक एिं भौगोलिक केतक हिसाबे सेहो लोक भाषाके ऊच-नीच बुझैत छथि। सौराठ (मधुबनी) एिं सौराठ गामक चार दिशामे पाच कोस धरिमे उच्च िगिक लोकक दारा पयुक्त मैथिलीके सिाधिक नीक मैथिली , पुन: समस्तीपुर सू कनीक दक्षिण दिस आगू गेलाक बाद पयुक्त मैथिलीके निम्न शेणीक मैथिली बुझल जाइत अछि। दक्षिणमे जे मैथिली बाजल जाइत अछि, तकरा पंचकोसिला लोकनि दछिनाहा , पूबमे ियिहरित मैथिलीके पुिहा एिं पश्चिम, विषिर पसू सीतामढीमे पयुक्त मैथिलीके पछिमाहा भाषा कहि ओकर अपमान करैत छथि।
एहि सभ कारणसू कुजरा मुसलमान, तेली, सूरी, यादब, बनिया, कोइरी, धानुख आदि अपना आपके मैथिली भाषाक बाजय िला नहि बुझैत छथि। दक्षिण, पश्चिम केर लोकके एहन बुझाइ छनि जेना ई लोकनि भाषाक मुख्यधारासू अलग-थलग होथि। लोकविदा अथिा फॉकलोर एतेक सम्पन्नो होइतो एहि केतमे बहुत नीक स्थान बनाबयमे मिथिला एखन धरि असमथि रहल अछि।
नामकरणक उदाहरण जे ली तू बुझायत जेना बाहण एिं कायस्थ

लोकक संस्कृतकष्ठ नामक पयोग करबाक पूरा ठेका लऽ लेने छव्थ। जरनि क पंजाबी भाषाक उदाहरण बहुत उल्टा अछ। पंजाबी भाषामे नाम आद, लोक एि सामान्य जनमानस केर हसाबसू कधाकत होइत अछ। गुर गन्थसाहेबके एखनहू धक गुरगन्थ साहेब, कहल जाइत अछ। स्मरण आइयो कसमरन थीक। फॉकलोर जागत छैक। एकर पकणाम ई होइत छैक जे की स्ती, की पुरष, की छोट, की पैघ सभ जाकक लोक अपना आपके भाषा, संस्कार आ संस्कृकसू जुडल बुझैत अछ। सब भाषाके अपन हृदयसू सटेने रहैत अछ।

अतेक सम्पन्न फॉकलोर रकतहु, कमथलाक फॉकलोरपर कछु वि षि कायनिक भऽ सकल अछ। सुभाषजीक कथा-संगह एक उल्लेखनीय कदम थीक। एक तू सुभाष जी पंचकोकसया नक छव्थ आ दोसर ओ बाह ण अथाि कणाि कायस्थ सेहो नक छव्थ। से अपन पकि ि क पयुक्त िब्द, ाकिय, परम्परा, नाम आदक िि क ाणिन कयलक अछ। कताबक सब पन्ना पढ लेलाक बाद अपन ठेठ गाम, गामक परम्परा, लोक पकि ि इत्याद स्मरण होबय लागत। लोकमे पयुक्त खाटी देसी नाम जेना क मुकया, कुसेसर, उकया, कहारी, बौकू, कसबननन, रामसरन, रघुनी, नटा, नथुनी, बैजनाथ, सकुन आद पाठकके एकाएक गामक ठेठ पकि िमे मानकसक रपसू लऽ जाइत अछ। भाषा सेहो अग्गब देसी। कुनो बनाबटीपन नक। जेना सुभाषजी केतक लोक बजैत अछ, तकना ई कलखलक अछ।

एक तरहक यथाथािदी परम्पराक पारम्भ केलासू मैथली साकत्य सम्पन्न हैत। िराइटी बनतैक। पाठकक संख्या बढत। अनेरे संस्कृतकष बक जेबाक कारण मैथलीक पाठकक संख्या लगभग िून्य जका अछ। कस्थक ई अछ जे लेखक एि कवि लोकक

स्यिं कताब छपा मुफ्त बाटैत छथ्। तैयो कयोक पढयबला नहि। बिलि्डिक विकास हेमाक कारणे कछु पािसी एिं मथलासू बाहर रहनहार मैथिल आब आइ काव्िं कछु सामगीके सफकिय देख लैत छथ्। हालाक इहो लोकन सब सामगी मैथलीमे लखल पढैत नहि छथ्। हुनका सबमे अधकाधक लोक अपन कथ्य अंगेजीमे ियक्त करैत छथ्।

सुभाषजी जका अगर आरो लेखक, कवि इत्यादि आगा आबथ् तू यथाथािदी परम्परा समृध हैत। मैथलीमे नि-नि िब्दािली विकसत हैत। सब केत्, सम्पदाय, जाित, गिकि लोक मैथलीक संग सनेह करताह। मैथली पढबाक पत जागत हेताह। कोसी, कमला, जीबछ, करेत, गंडक, बूढी गंडक आ गंगाक बीच संगम हैत। मैथली कछु विषि केर हाथक खेलौनासू ऊपर उठि सहिाराक भाषा बनत।

आब सुभाषजीक कथा-संगहक कथा-सि्तु पर कनी विचार करब जररी। कथा-सि्तुक दृवि ये सेहो लेखक अपन पर्िसू बान्हल छथ्। कथा सभमे लेखकके परम्पराक नीक तयकि पत सनेह, पाखण्डक पत विरोह, एक नम्न-मध्यम गिकि बेरोजगार विकत युिकि केर फस्टेिन, एक युिकिक सुन्दर नायकाक पत आकषिण, कोसीक कहर, गाममे पर्तिनि केर पिहि, गामक समस्या, याता-ितान्त, मोनक अन्तःदन्द, सुन्दरता आ सुन्दरताक पत मृगतृषणा आदक मनोिजानक आ सहज िणिन भेटत।

“बनैत बगडैत” कथामे माए-बापक मनोदिा, जकर संतान बाहर रहैत छैक, नीक िणिन कएल गेल छैक। कथाक मुख्यपात माला टाहि-टाहि करैत कौिकि आिजसू डरैत अछि। ओकरा हकार दैत उडबै चाहैत छैक। लेकन “टोकारा आ थपडी सू नै उडै छै तऽ माला कार कौिि के सरापय लागै छै – “बज्जर खसौ, भागबो ने करै

छै"।

परदेसमे रहि रहल संतान सबहिक पक्ष मालाक मनोदशा लेखक किछु ऐना लिखैत छथि:

कौआ किछमिये सू ने काँ-काँ के टाहि लगेने छै। कौआक टाहि सू मालाक कलेजा धक दिसन उठै छै। संतान सब परदेस रहै छै। नै जानि ककरा की भेलैक! ने चिट्ठी-पतरी दै छै, ने कहियो खोज-पुछारि करै छै। कते दिन भऽ गेलै। कुशल समाचार लय जी औनाइत रहै छै। लेकिन ओकरा सब लेखे धन सन। माय-बाप मरलै की जीलै तै सू कोनो मतलब नै।

"हे भगवति, तूही रच्छा करिहबु। हाह। हाह।"–

माला कौआ संगे मनक शंका आ बलाय भगाबय चाहै छै।"

आ मालाक बात पर हमरा जनैत लेखक सतोक माध्यमसू अपन विस्मय व्यिक्त करैत छथि। मायक मनोविज्ञानक तहमे जयबाक पयत्न करैत छथि: माला सब बेर अहिना करै छै। सतो लाख बुझेलक बात जाइते नै छै। कतेक मामला मे तऽ सतो टोकितो नहि छैक। कोय परदेस जाय लागल तऽ माला लोटा मे पानि भरि देहरी पर राखि देलक। जाय काल कोय छीक देलक तऽ गेनिहार के कनी काल रोकने रहल। अइ सब सू माला के संतोख होइ छै, तै सन्तो नै टोकै छै। ओकरा होइ छै टोकला सू की फैदा ? ई सब तऽ मालाक खूनमे मिल गेल छै। संस्कार बनि गेल छै।

सन्तोके छगुन्ता होइ छै। यैह माला कहियो अपन बेटा पुतौह आ पोती सू तंग भऽ कऽ चाहैत रहै जे ओ सब किछैन ने चैल जाय । रटना लागल रहै जे मोटरी नीक, बच्चा नै नीक। सैह माला अखैन संतान खातिर कते चिंतित छै।"

अही तरहे अपन खिस्सा 'कनिया-पुतरा' मे लेखक टेनमे ठाढ़ एक बारह बर्षक लडकी आ लडकीक कनिछल दृष्टिसँ आत्मविभोर भय, लडकी सू एहन सम्बन्ध बना लैत छथि जेना जो लडकीक भाय अथवा पिता होथि। टेनक भीड भरल बोगीमे ठाढ़ लडकीक छाती जखन कथाक सुतधारक हाथ सू सटैत छैक तू लडकीक निर्विकार मुरासू एना बुझना जाइत छैक जेना ' ऊ ककरो आन संगे नै, बाप-दादा या भाय-बहीन सू सटल हो।'

लडकीक भविष्यपर लेखक चिंतित होइत सूतधारक माध्यमसू सोचय लगैत छथि : "ओकर जोबन फुइट रहल छै। ओकरा दिस ताकैत हम कल्पना कऽ रहल छी। अइ लडकीक अनमोल जोबनक की हेतै? सीता बनत की दरोपदी ? ओकरा के बचेतै ? हमरा राबन आ दुरजोधनक आँखि धेरने जा रहल ऐछ।"

'ओ लडकी' नामक कथामे सुभाष बाबू निम्नवर्गीय दब्बूपनीक मनोदशाक चित्रण करैत छथि। जखन एक आधुनिका अपन हाथक ऐूठ पात नर्तकीके थमाबय चाहैत छैक, तू सूतधार बाजि उठैत अछि: "सड़ल खतम होइते नर्तकीक नजरि लडकीक चेहरा सू उतरि के ओकर हाथक कप पर चलि गेलै आ ओ अपमान सू तिलमिला गेल। ओकरा भीतर क्रोध आ धृणाक धधरा उठलै। की ओ ओकर दुनूक अूइठ कप ल' जायत ? लडकीक नेत बुझिते ओ जवाब देलकै – 'नो'। ओकर आवाज बहुत तेज आ कडा रहै आ मूह लाल भ' गेल रहै। ओकरा ओहि बातक खौझ हुअए लगलै जे ओकर जवाब एहन गुलगुल आ चिलचिल किएए भ' गेलै। ओ किएैक नहि कहि सकलै - हाउ डेड यू डेयर?' तोहर ई मजाल ! मुदा ओ कहि नहि सकलै। साइत निम्नवर्गीय दब्बूपनी आ संस्कार ओकरा रोकि लेलक"

रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विंचिना

कोलकाता मिथिलासू बाहर बहुत झमटगर सृजन भूमि रहल अछि मैथिली डायस्पोरा लेल। एकरं सभ कारण ियद ई रहल अछि जे लोक कोलकाता तू जर र जाइत छलाह काजक तलाशिमे मुदा आत्मासू गामे रहैत छलाह। ऊपरसू ओहि भूमिमे भेट जाइत छलथिन गामक लोक, दोसर गामक सम्बंधी, हित-मित, जानकार आ कतियोक नहि तू मैथिली भाषा बजनिहार। बस भऽ जाइत छलनि आपन पेम, सरोकार,परदेसमे अपन देसक लोक आ बात विचार। फेर बनि जाइत छल अडडा नौकरीके बादक नौकरी तकबाक भऽ जाइत छल ओ स्थान रोजगार कायालय। सब पुरान लोक लावा जाइत छलाह अपन-अपन तरीकासू नौकरीके जोगारमे। आ ुिर भऽ जाइत छल कविता साहित्य, नाटक, आदिक निमाण । ई सब एहि लेल होइत छल जे लोक अपन गामक कमीक अनुभि नहि करथि। ओहुनासूस्कृत सभिासिू नॉस्टैल्जिक होइत अछि। नोस्टाल्जिया तखन अपन पभा देखेतैक जखन लोक अपन जड़िसू फुनगी दिस बढतैक। कोलकातामे सएह भेलैक। रामलोचन ठाकुर ओहिपरदेसमे देसक खोज करैत छलाह। मैथिली जेना हुनका भंवाया देने होनि! लगातार रचना आ बादमे पत्रिका केरसूपादन आ देखरेखमे व्यस्त रहला। की-की कएलनि से किनकोसू छुपल नहि अछि।

आब अबैत छी रामलोचन ठाकुरक एक पोथीपर। पोथीक नाम छैक "मैथिली लोककथा"। नामे जाने ई कथा नेनपनसू लेखकके सुनल कथा केर स्मरण करैत लिपिबध करबाक यत कएल गेल छैक। कवि त र पसू ई उतम पयोग आ पोथी छैक। कथा लोकक छैक।

लोककंठसू सुनल छैक तू सभािवक छैक जे कथापर लोकक अधकार छैक। अहि पोथीमे कुल जमा 36 कथाकसूचयन छैक: 1. हरामक सुगा 2. अबकी बेर फतंग 3. महाराज का मिाक्षय4. गदहा खेने कोनो ने दोष 5. एकटा वनमा खेललऐ रओ भइया 6. काजर7. सदबा-बदबा 8. एकटा बुढ़िया रहय 9. एकटा गरीब बाभन रहथ 10. नारदमुक आ साप 11. लाल बुझकर 12. जामुन अन्त न पाबेउ 13. राभणो नतु राणि 14. मीतारे 15. ठठपाल 16. एकटा रहथ राजा 17. एकटा गरीब बाभन रहथ18. महाकाली19. पतबरता 20. एगो रहथ राजा 21. वन्ता रोग 22. हम देिी चंवडके23. एगो रहए जोलहा 24. चतुर भावान 25. कािो कसयारो 26. ीित-बसंत 27. हंसराज-िािराज28. झोडाकपरताप 29. मोहन बरही 30. पडोसयाक दुनू 31. चारबाह राजा 32. अहदी 33. कुल्टा34. कलजान साहु35. गल हस्तोन धोधरः 36. कलखलाहालोक बहुत सहज आ बहुत जटल िबद छैक। एकरा सब कयोक बुझैत छी आ सब कयोक भममे रहैत छी। एहेन भमक कस्थक रामलोचन ठाकुरके छथ। ओ पहने िास्त्रीय, पमाण, हंदी साहत्यक पमाण आ ैशक पमाणसू लोक िबदक व्याख्या सन्दभकिथामे (अथाि भूमका) करैत छथ। ृिहदेष्णुपुराणसू ािर करैत, ज्योतरीशर, विदापत होइत हजारीपसाद वदिीसूग मैकसम गोकी तक केर भाि सि करैत हुनकर लोकक भािसू पाठकके अािगत करेबाक लघु कन्तु गंभीर पयास करैत छथ. मुदा एक बात, हमरा बेर-बेर एना बुझना गेल जेना ओ लोकक अथि ओहेन जन सामान्यसू बूझझ रहल होथ जे बहुत विकत्त आ विकसत नहि होथ। ई लोकसूग साहत्य आ तथाकथत एडािस विषय अथाि िास्त्रीय विचारधारा केर विदानक ियरस जका अछ। लोक, लोककथा, लोकविदा अलग-अलग बात

भेल। लोकविदा ओ विधा भेल जाहिमे लोक जान, लोक ज्योतिष, लोक चिकित्सा, लोककृषि, लोकगीत, लोकसंगीत, लोककथा, जेंडर स्टडीज, नूतन प्रयोग, शृंगार, समाज आदिक बातपर विचार होइत अछि। जकरा ई लोक कहैत छथि तकरा पश्चिमक लोक पोपुलर कहैत अछि। तखन लोक की भेल? लोक भेल एक क्षेत्रविशेषित भूभागमे रहय बला मानि समुदाय जे अपन भाषा,संस्कृति, प्रकृति, स्थानीय जान, परंपरासँ रहैत अछि जाहिमे स्त्री, पुरुख, बच्चा, बुढ़, सब कियोक अबैत छथि। जाहिमे मार्क्सक लोक आ मार्क्ससँ बाहर रहनिहार पाश्चात्य सेहो अबैत छथि। आजुक युगमे लोक एक प्रजातात्त्विक समूह छैक। आजुक युगमे एक व्यक्ति लोक छथि आ हिनि मॉडर्न अर्थात् पाश्चात्य सेहो छथि। तखन लोक भेल की? लोकक मादे ई प्रश्न एखनो ठाढ़े अछि।

लोक कही ओ तँ नहि जे लिखल नहि हो? आ शास्त्र ओ जे लिखल हो? नहि, ईहो बात नहि अछि। उपलब्ध जान आ डाटाबेस कहैत अछि जे मौखिकपरम्परा आ लोक अलग-अलग बात अछि। कतेक मौखिकपरम्परा एहेन अछि जे लोक नहि अछि, आ कतेक लिखितपरम्परा एहेन अछि जे लोक अछि। उदहारण स्वरूप वेद, उपनिषद तँ श्रुतिपरम्परा अछि मुदा लोक नहि अछि। सुकरात कहियो अपन बात नहि लिखलनि। ओ बजैत रहला आ हुनक शिष्य सब सुनैत रहल। ओ कहैत छलाह जे लिखलासँ ओहि बातक उपयोगिता खत्म भले नहि होइक लघु अशिष्ट भऽ जाइत छैक। ओ लिखित जानकेँ संग्रहालयमे राखल मृत वस्तुसँ तुलना करैत छथि। आर-त-आर रामलोचन ठाकुर जीक अहि पोथीक अंतिम कथाक नाम छनि "लिखलाहा"। लिखब केर अर्थ भेल ठोस प्रमाण; अंतिम सत्य; सिद्ध

बम्ह; अथवा तुलसीदासक रामचरितमानसक पसंगसू बात करी तू सत्यम शिवम् सुन्दरम। मुदा लिखब सेहो लोक भेल। विद्यापति अपन गीत अशिक्षि लिखने हेताह। बादमे ओकर महता देखैत लोक ओकरा अपन कंठक रूपमे सदा सुरक्षित हेतु सेवि कऽ लेने हयत। ई भम ओना तू बहुत ठाम अछि मुदा भारत आ विशेष रूपसू मिथिलामे अधिक अछि कारण जे लोकपर फोकलोर, एथनोगाफी, मानविज्ञान आदिक विद्वान सब काज नहि कऽ रहल छथि। अतेक स्पष्टीकरण देने बिना हम अपन बात के आगा नहि कहि सकैत छी। ताहि कारण चर्चा किएल।

आब पुनः पोथी दिस बढैत छी। कथा लिखित हो अथवा शौत जखन लोकमे अबैत छैक तू लोक ओहि कथाक मूलके रखैत अछि आ अपन जान, शिक्षा, शैली, भाषा, भंवामासू ओकरा अपन अंदाजमे पस्तुत करैत अछि लोकक मादे मौखिक कथा सब दिन सब ठाम, निश्चित सबसू नित नूतन स्वरूप गहण करैत छैक यदयपि कथाक मूल भाव स्थिति रहैत छैक। लोककथा (संचित कथा या कथा संचिन) मूलतः तीन ढंगसू लिपिबध होइत अछि:पहिल, ओहि समाजसू कोनो बाहर केर व्यक्ति दारे। ई काज मानविज्ञान, फोकलोर अथवा एथनोगाफी केर लोक करैत छथि। हुनका एहेन टेकिंग रहैत छनि जे जाहि तरहे कथा संचिक हुनका सुना रहल छथिन तहिना ओ लिखथि। ओहिमे कोनो तरहक सुधार अथवा अपना दिससू किछु नहि जोडैथ।सूभव हो तू एक कथा अलग-अलग व्यक्तिसू सुनिक लिखथि। दोसर, कतेक व्यक्ति एहेन होइत छैक जखन लोक अपन समाजमे काज करैत छथि। मुदा हुनकासू आशा ई रहैत अछि जे ओ ई विसरक

जाइथ जे ओ ओकर समाजक कहसना थकाह। आ गंभीरतासू ओतबे लिखइथ जे कथा िचक अथिा िवचका कहर रहल होइथ। ई कम सहज काज नहर छैक। लोक नहयो चाहैत पूािगही भऽ सकैत छइथ। एहर तरहक काज करेबला लोकके ऑटो- अन्थोपोलोजिस्ट कहल जाईत छक। चंदा झा आदद विदापक गीत लोकसू सुनबाक िममे अहर धरमक पालन नहर कऽ सकल छलाह। मुदा तकर पयोजन अते नहर अछ. अहपर विस्तारसू कहयो लिखब.

तेसर, एहेन जे जखन लोक अपन समाजमे पचलित सुनल कथाके बहुत ददनक बाद अपन स्मरणसू लिखैत अछ। रामलोचन ठाकुर तेसर शेणीक लोक छइथ। हनको कथािचक कहल जा सकैत अछ। कहल की जा सकैत अछ, ई छइथए। जेना कोनो कथा िचक कथाके अपन भाि, भंवामा, आ िबदालीसू मनोरंजक आ पभािी बना सुनबैत अछ तहना ई कथा सबके अपन शबािलीसू सजेने छइथ। ओहमे व्याकरण, आ शबदसंयोजनासू आकषिि उत्पन केने छइथ। ताहूं हनक कथा मूल कथा बुझल जाए। उपरसू अपन दाई मायाइनसू सुनने छइथ से ई स्मि करैत अछ जे कथापरम्परासू एक पुस्तसू दोसर पुस्त दने चलैत हनका लग आबा गेल छक। आब ई कथाके कहर कऽ नहर लिख कऽ अपना पीढी आ आबय बला पीढीके िसिति पमाण केर रपमे हस्तातरत कऽ रहल छइथ - चरैिित- चरैिितक ननादसू कथा बढ रहल अछ।कहैत चली जे रामलोचन ठाकुर बहुत साकाक भेल कथा लिख रहल छइथ। कोनो कथा एहेन नहर भेटत जाहमे ठोस आ ठेस मैथिली केर िबदािली नहर भेटत। नीक तू ई हएत जे आलेख केर अंत मे हनका दारे व्यिहृत ठेठ िबदक एक ग्लोसरी बना दी। मुदा ताहर अिस्थामे

अएबाक हेतु अछि पोथीपर कमसँ कम तीन खेप लिखनाई जरूरी अछि। प्रमाणक रूपमे किछु शब्द के देखल जा सकैत अछि:“पातर, ओजीर, भोजन-साजन, हेट, कदि डा भीड, पएर दाबब, पहरूआ, दू टूक, करमान, कौआ टाहि, ईतस्ततः, फुरफुरा क उठल, यार के बाझ,हरलल ने फुरलल, टहाटही, मन मेछंत, चौर-चाचर, लहालोट, अहर बीतल, पहर बीतल,ठकमुरी,घेट,कचडै मडा के,वडगवडवाया,हरबडरो,सीधा सम्मर,नग,बासनाइत,पहर सभ,फूले-फले मात्त उठल,गाजु,पोखरिक भीड,ले बलैया,खा लौक,कन-साग,गदहा बौक गेल,बास पडै छल,गदहा डोभ चरन्त, झी-चाकर,बोरसी,धुरखुर,बरबरना,लगे दाढी पडोसे छूरा,कपारपर कटही मरडाइ छइ,उफाट,पत्ताया-पराछुत,किछु मुक्या,चीन,फूजल ऊक,खलोदर,दरेग,अगहरी पात,मन मेछंत,तरबाक लहक कटकासन,ठेसी,मकुनीहाथी,डारबथ,चुटीक धारी, वस्तुआ चोख”एखन अतबे अहि पोथीपर लिखब सहज बात नहि अछि। एकर अनेक बिंदु, कहबाक शैली, बातक प्रमाणिकता, आ लेखक महोदय केर भाषा किछु एहेन बात अछि जाहिपर गंभीर भेने नहि लिखल जा सकैत अछि।

आब कथा कदस फेरो बढी। जेना-जेना हिनकरसँ कल्लत आ हिनक मस्तिष्क केर मेमोरीसँ निकसल कथा सभ पढने जायब, एक पाठकक रूपमे लोक सङ लोक भेल जायब। जेना लोकमे होइत छैक तहिना हिनको कथा सभमे पकृति अथात कचडै चुनमुन, जानरि सब बजैत छैक। बाजब प्रमाण छैक। अतेक ठोस प्रमाण जे पकृति केर मानवीकरण कखनो अहाके बनाबटी अथवा अनसोहात सन नहि लागत। लोककथामे नदीक पाहि, बटोहीक चलब, फुलरिरी, सब

कछु अबैत छैक। धोबियाक घाट, बाह्मणक दरिद्रता, जोलहाक चतुराई, सब किछु अबैत छैक। लोककथा लोकके कथा सङ जोड़ैत छैक। रसद सङ चलैत बैलगाडी बकियाक आक्द सेहो अपन भूमिका सङ रहैत छैक। लोककथा यथार्थक कल्पनाशीलता छैक। अहु बातक भान कथा सङ एक गंभीर पाठक केर रूपमे अहा अशिथ देख सकैत छी। लोककथा अपन भाखिसूँदिना अनेक भाषा आ भाषाक पसंग जेना की फकडा , गीत, दोहा आदिक मादे पयुक्त होइत छैक। लोककथा अक्क तरहे मोनोलॉग नहि मल्टी डायमेन्शिनल डायलाग होइत छैक। लोककथा एकरंगी विधिर प्रधान नहि अपितु बहुरंगी चुनरी होइत छैक। अतय कक्क कम साकाक छथि रामलोचन ठाकुर जी। ओ गद्य जखन लिखैत छथि ताहि काल ओ अपन भाषासू अलग लोकक आयामामे नहि जा पबैत छथि। एकरा एना बुझु: कहियो कखनो मधुशाणी कथा सुनने हएब, अथवा गाम घरमे ककरो कथा सुनने हएब। ताहिमे अगर बकियाक छैक तू दोसर भाषा बजतैक। अगर पात दोसर भूमिके छैक तू कथा शिचक (अथवा शिक्षिका) ओकरा लेल अलग भषा केर पयोग करतैक। कथा शिक्षक बात कहतैक, भंवामा पदर्शित करतैक। ओ नाटकीयता कक्क खटक रहल छैक। मुदा रामलोचन ठाकुर एकरा लोकक एक ओहेन शेणी जे शिक्षकके लिखितपरम्परामे बदलैत छथि, मूल के यथावत रखने ओकर विन्यास आ सौदर्यी पकरितिनि करैत छथि तू ईहो स्वीकार होबाक चाही।

मुदा जखने पसंग पदक अबैत छैक तू लोकक कशछल सरिप स्पष्ट दृष्टिगोचर होमय लगैत छैक। उदाहरण सरिप "अबकी बेर फतंग" कथाके देखू। ई कथा अपन शिक्षित शैलीमे स्मारणक पटारासू लिख

रहल छथि लेखक । जहा की पद अबैत छैक लोक जेना जावा जाइत छैक:"थप्पा गप्प-गप्प रोटी पकओलक्क गदहा ढोभ चरन्तघोडा बास फसन्त कव्वाआ कहैत जे नेव्वाआ आएव्वलघर-पछुआर मे भुस्सा तइ मे ल गेल मुस्सा अबकी बेर फतंग" (पृ. 25)

एहने सन भाि "गदहा खेने कोनो ने दोष" मे भेटैत छैक। ई एकर कछु मातक िब्दक दू आखर पूरा कथाक सीख बना जाइत छैक। अंतममे जखन ई कहैत छैक:"तीन राड एकसूतोष गदहा खेने कोनो ने दोष"

एकर आिय भेल जे तीन बुरीलेल (मुरखक बाहुल्य) अपन बेबकूफीसू गलत काज करैत अछ तू ओकरमे केहेन आिय! एकरसूदभिसू बुझक दरकार होइत छैक।

लोककथा गतिमान होइत छैक। कथा कहनहार आ सूनयबला दुनू गतिशील होइत छैक। गति सङ जेना टेन अथि बसक सिरीमे खिडकी लगसू नदी, पहाड, झरना, धरतीक िवििध्य अबैत जाइत रहैत छैक आ याती गतििल भेल रहैत अछ तहिना लोककथा केर कथानक पाठकके गतििल बनने रहैत छैक। ई गतििलता कथा आरो डायनामिक भऽ जाई ताव्ह लेल गदमे पदक पिि होइत छैक। रामलोचन जी बहुत गंभीरतासू ई बात बुईझ पबैत छथि आ ओ पद सब हेव्र अनैत छथि। एक उदाहरण "एकटा कानमा खेक्लाऐ रओ भइया"सू देखल जाओ:

"बरदबला भाइ !परबत पहाडपर खोता रे खोताभूखे मरै छै बच्चा एकटा कानमा खेक्लाऐ रओ भइयातइलए पकडने जाइए "।

उपरोक्त पद पूरा कथाक आत्मा छैक आ पात्रव्यस्थकीसूतुलन केर दि मंत जेना काज क रहल छैक। कथाक पात मुक्या ई पद घोडव्हया, हाथीबला, आ खुदीबला सबसू कहैत छैक आ ओकर समस्या केर

समाधान भऽ जाइत छैक।
एक स्पष्ट उदाहरण देखू जाहिमे भाषिकसूक्ष्मता आ कथ्यक गंभीरताके डायनामिक बना भाषा केर देबार कोना तोडैत छैक शुक्लकथा। ई पद "लालबुझक्कर" कथामे भेटत:"लालबुझक्कर बुझ्झ बाया कि आर न बुझा कोइ।पएर मे उखरि बाक्कह के हरिन चरका होइ।।"
कथा आगा बढैत छैक। फेरो उपरोक्त पदक पथम पंक्ति केर बेस बनबैत दोसर पंक्ति केर मादे बात स्पष्ट होइत छैक :"लालबुझक्कर बुझ्झ बाया कि आर न बुझा कोइ।पहूचे लगसू काइट दो कि अपने बाक्हर होइ।।"
आ अंततः कथा अपन याताक अंतिम पडाव दिस अबैत छैक:"लालबुझक्कर देखितहि बूझक्कि हो हाथी की अमरद।"

बात बायोडायविर्सिटी केर लोककथा के मादेसूरक्षण केर बात करैत रही। एकर पमाण भेटैत अछि "जामुन अन्त न पाबेउ" नामक कथा मे। ई कथा अपन नामकरणसू शुरि होइतसूसंस्कार धरि समस्त सरिपमे बायोडायविर्सिटीके हारमनी पदर्शित करैत छैक। कोना लोक शिक्षत्रपर कखनोकाल बीस पडैत छैक आ कोना अपन पारिस्थिकताकी जानसू अबल होइत छैक तकर पमाण छैक ई कथा। जखन चारि दोस्त सामान्य शिक्षभूषामे राजा लग अबैत छैक त शिक्षतीय विदान लोकनि ओकरापर हूसैत छथिन। मुदा जखन ओ चार लोकजानी एक चारि पंक्ति केर पद कमल कऽ सुनबैत छैक त सभक होश उडि जाइत छैक। पद छैक:"जामुन अन्त न पाबेउ पीपर आनेउ नार उमर कटंती जाक्क क रि तर ठानेउ राड।" आब कोना एकरा चारि व्यक्ति कहैत छैक से देखल जाओ:"चार दोस्त उच्छ क ठाढ भेल।पहिल कहलकै --- जामुन अन्त न पाबेउ दोसर कहलकै -- पीपर आनेउ

नार तेसर कहलकै -- उमर कटंती जाला कचाक्रम कहलकै -- रि तर ठानेउ राड।“ हमरा लगैत अछ ई कथा कला विस्तृत विरिण आ विचिना मूगैत छैक। से केना? एना जे किछु लोक जे अनेडे लोकपर िस्सा थोपने रहैत छथि आ अपना के सिमिेष स्थापित करैत छथि, एहेन लोकपर ई कथा कामनि पहार छैक। ई कथा बतबैत छैक "साधिान भऽ जाऊ! लोक अहाके विदाक सम्मान करैत अछ मुदा लोकक जान अगाध छैक। एकर विािलताके अहू सम्मान कर । से नहि करब त लोक कखनो अहूके धोखाया पाट दऽ देत!"ई पोथी अनेक तरहे उपयोगी छैक। मैथिली साहित्य अनुरागी सब एकरा अधिकसू अधिक पढथि। एकर अनेक पक्षपर बहुत गंभीरतासू फैलसू लिखबाक दरकार छैक। एहि पोथीपर एक अखिल भारतीय स्तरक सेमिनार आयोजित कएल जा सकैत अछ। एकर अनुिद अनेक भाषामे होबाक चाही। हिंदी आ अंगेजीमे तुरत होबाक चाही। अहिपर बात होइत रहक चाही। एकर पट दरपरत खुजिते रहक चाही। एक एहेन मैथिली केर साधक रामलोचन ठाकुर जे एकरा अपनसूस्मरणसू िबद्ध देलका कानका पक्षसूिदनाील भेनाइ हमर सभक सक्रमिलत जािबदेही अछ। एहि पोथीपर हम तू लिखते रहब आरो लोक सब लिखथि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता

हमरा लोकनि अपन मानवीय धरोहरक सम्मान आ सत्कारमे कने कंजूस रहल छी। ई संस्कार आजुक नहि अछि, अदौसँ मानवीय धरोहर केर पक्ष कमजोर यताक स्थानीय धरोहर अथवा संस्कारक रूपमे आबि रहल अछि। आब मैथिल समुदाय बहुत पोखगर अनुपातमे पसि आ अपन योगदानक कारणे वैश्विक भऽ रहल अछि। हम सब वैश्विक सोच आ शरीरिक उपस्थिति दुनू रूपमे भऽ रहल छी। वैश्विक भऽ रहल छी तँ हमर सबहक ई दायित्व बनैत अछि जे हमरा लोकनि वैश्विक संस्कृतिक नीक बात, पथा, परम्परा आ संस्कारके अंगीकार करी। ई कहब सहज छैक जे हमर संस्कृति, संस्कार, लोक व्यवहार सर्वोत्तम अछि, मुदा ओहूसँ पैघ बात अपन संस्कृतिमे जे घाव अछि तकरा ठीक करब। कायाके निरोग रखबा लेल रूग्ण अंगक समुचित व्यवस्था आ जरूरी पड़ला पर शल्यचिकित्सा सेहो आवश्यक। अवश्येसँ भले पारम्भमे कने कष्टक अनुभूति हो, बादमे जीवन सुखद भऽ जाइत छैक।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर दीर्घ आयु व्यतीत कऽ मृत्युलोकसँ अनन्तक यात्रा हेतु पस्थान कऽ गेलाह। आब ओ हमर सबहक स्मृतिमे स्मरणीय व्यक्ति छथि। हुनक रचना पर किछु लिखब नब नहि हएत। एक बात अवश्य जे ओ जन-जनमे व्याप्त गीतकार छथि। हुनकर रचना लोक पढ़ि कऽ कम आ सुनि कऽ, दोहरा कऽ, गुनगुना कऽ, अनुकरण, अनुसरण करैत सीख लैत अछि। अगर बाजार पोथी देखने हुनकर रचनाक संकलन करबाक हो तँ 45 आ 80 बरखक बीच केर करीब एक सए स्त्री पुरुष लग चर्चा करू, सब मिलि हुनक सब गीत लिखा देताह। अगर ओहूमे आलस्य भऽ रहल अछि तँ सोशल साइट पर

लोक सबसू कार्दिन कर, किछुए दिनमे अहाक संकलन तैयार। लोक कंठमे अछि तरहक कमोर्ि मिथिला भूमि अछि पार, ओहि पार आ तमाम भौगोलिक उपकेन्त अथिा पॉकेटमे लिंगभेद ओ जातिक आधार तोडबाक मोनोपोली महाकवि विद्यापतिक बाद अगर ककरो भेटल अछि तू ओ छथि रविन्द्रनाथ ठाकुर। हुनक गीत जखन महेन्द्र जीक गलाक धापमे सेट भऽ जाईत छल तू ओकर भाि देसी राहडिक दालिमे घी संग तेजपत, जीरक फोरन जका भऽ जाइत छल। मिथिलामे जन सरोकारक गीत कार्ीकात मिश "मधुप", स्नेहलता (कमल देि ठाकुर), मैथिलीपुत पदीप आदि लिखलिन। सभक रचना अपना आपमे अपूर्ि छल। मधुप सियिं गबैत नहि छलाह। गीतक र्विएन सीमित छलनि; स्नेहलता राधा-कृष्ण आ सीता-राम भक्तिमे एककिाष योगी जका केन्द्रित रहला; पदीप किछु गीत समाजिक व्यस्थापर केन्द्रित करैत अन्ततः सीता-राम, जगदम्बा आ भगािन भजनमे सन्तक डेगसू लिखैत रहला। रविन्द्रनाथ ठाकुर की नहि लिखलिन? हिनक रचनामे नायक नायिकाक पेम, तरणक पेमक उदेग, मिथिला भूमिक कण-कण केर गान, सीताक बेदनाक चितण, ओकर ओहि पर सोच, चिंतन, मनन, राम संग लडबाक हिम्मत, पुरख मोनमे नारी भाकि व्यस्थापन, बाल गीतमे नेना मोनक अबैत जाइत मनोर्िजानक भाकि छोट-छोट खाटी बिंद आ कवितिसू पस्तुतिकरण भेटत। हिनक गीतमे नाटक भेटत, स्ती-पुरषक पेम, नोक-झोक भेटत। हिनक गीतमे परदेसिया मैथिलक दर्द, माता पिताक समस्या, जनरेिन गैप, संगतुरिया मस्ती, पयटिन, यायािरी पृति, गामक लोकक िहर अथिा नगर केर जीिनक अनुभि, ओकर र्िचिन, गाम आ नगरमे तुलनात्मक र्िचिन सब किछु भेटत । हिनकर गीतमे अत्तािदी सेहो लोकिादी बनल अिड बनल भेटता।

हुनक गीतमे की मधुबनी, की पुरनिया, बेगुसराय, सीतामढी, दरभंगा आ नेपालक मिथिला सब एकाकार भेटत। रवीन्द्रनाथ जी शब्दक जादूगर छलाह। भाखि आ गीत आ छंदक पेटार छलाह। चूकि स्वयं स्टेज पर गीत गबैत छलाह तू उतार-चढाव सब बात बुझैत छलाह। श्रोता संग आँखि आ बॉडी लैंग्वेजसू वार्तालाप करैत तदनुकूल रचना करैत छलाह। हुनक गीतक कुनो एक उदाहरणसू हम अतए स्थानके अनेरे नहि छेकए चाहैत छी। ताहि हम बिना उदाहरणके अपन बात लिखैत छी। पढैत रहू।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी केर गीत संग मिथिलाक हवा, पानि, पोखरि, इनार, नदी, खेत , पथार, चिडइ-चुनमुन सब मस्त छैक। सब हूसै छै। सब पात छैक। सभक अभिनय छैक। एक लडकी जे सासुरसू नैहर जा रहल छैक, आ नदी उमटाम भरल छैक, तकरा लेल मलाह मात मल्लाह नहि भैया छैक। एिह धार पार करेतैक। परदेशी मिथिला चलैत मस्त हवासू वार्तालाप करैत छैक। तप, जप, काम सब किछु छैक। की नहि छैक। अगर किछु नहि छैक तू रवीन्द्रनाथ ठाकुर लेल उचित सम्मान। से कियैक ?

रवीन्द्रनाथ ठाकुर केर तुलना हमर बउआइत मोन असमिया गीत लेखक आ गायक भूपेन हजारिकासू करैत अछि। संयोग देखू जे दूनु गोटे समकालीन छलाह। मिथिला अनेक प्राकृतिक आ सांस्कृतिक वैविध्य केर आधारपर असमसू बहुत लगीच अछि। मल्लाह, हवा, धार, जन मानस, स्थानीय प्रेम आ खाटी देशी शब्द भूपेन हजारिका आ रवीन्द्रनाथ ठाकुर दुनुक रहल छन्हि। दूनू अपन-अपन मातृभाषा क्रमशः असमिया आ मैथिलीसू बहुत स्नेह करैत छलाह। दूनुक रचना काल एक रहल छन्हि। ओना भूपेन हजारिका रवीन्द्रनाथ ठाकुरसू दस बरख पैघ छलाह। दस बरख पैघ छलाह तू हुनक मृत्यु सेहो

रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ लगभग दस वर्ष पहिने 2011मे भेलन्हि। मुदा दुनूमे आसमान जमीनक समान अंतर छन्हि। की? भूपेन हजारिका स्टार नहि सुपर आमेगा स्टार छथि। हुनका फालके पुरस्कार भेटल छन्हि। ओ देवरत्न थिकाह। असम केर लोक भूपेन हजारिकामे भगवान देखैत छल। एखनो देखैत अछि। भूपेन हजारिका केर मृत्यु केर बाद हुनका पदविभूषण, आ भारतरत्न भेटलन्हि। भारतरत्न तँ मृत्युक 8 वर्ष बाद भेटलन्हि। ई सब बात हुनका अलग व्यक्तित्व प्रदान करैत छन्हि। चाहे असमिया कुनो जाति, सम्प्रदाय, धर्म केतक हो, भूपेन हजारिका सबहक पूज्य छथि, असमिया संस्कृति केर नायक छथि। कनेक्टिंग फैक्टर छथि। ई बात ई प्रमाणित करैत अछि जे असम केर लोक अपन मानवीय धरोहर केर सम्मान करब जनैत अछि। हमरा लोकनि अर्थात मैथिल रवीन्द्रनाथ ठाकुरके बजैतमे सेहो दूर धकेलने रहलहुँ अछि। मानवीय धरोहर केर सम्मान कोना करी ई कला हमरा सभके मराठीसँ सिखबाक चाही। ध्यानचंद, कपिलदेव, अमिताभ बच्चन सन धुरंधर लाइनमे लागल रहलन्हि आ अपन एकता आ मुखर प्रवृत्ति केर बलपर मराठी सब सचिन तेदुलकरके भारतरत्न दिया लेलक। सचिन केर कंटेम्पररी धोनी मुँह देखैत रहि गेलाह। एकरा कहैत छैक मराठी मानुष केर संस्कार। अपनामे भले लडब मुदा अपन आइकॉन लेल, अपन संस्कृति संरक्षण लेल एक रहब। कतिसयाइत ई गुण मैथिल मानुषमे आबि गेल रहैत !

ठीक छैक, मैथिल साहित्यकार केर लॉबी रवीन्द्रनाथ ठाकुरके साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ वंचित रखने रहलन्हि। साहित्यकार लोकनि हुनक प्रयोग जे ओ साहित्यमे गीत लेखनके छोडि आन विधा जेना गद्य लेखन, कविता आदिमे केलन्हि तकरा संज्ञानमे नहि लेलन्हि। बहुत रास बात भेल। मुदा तहि लेल जनताक आशीष कहाँ भेटल?

मिथिला, पटना आ दिल्लीमे कार्यरत असंख्य संस्था कहा कोनो उचाचि केलक िहनका लेल! सब सुतल रहल। जनता आ दरभंगा, पटना, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई आदि नगर आ महानगरक संस्थाक सभक सहयोगसू, क्ष ा आ आन्दोलनसू राजनीितक दबाबसू रिीन्द्रनाथ ठाकुर लेल पद शी आ पद भूषण बहुत छोट चीज छल। मुदा, हाय रे मिथिलाक दुभाग्य! अिह लेल संस्था सब सोचबो ने केलक। अपना आपके समाजक पक्तकिनयर्य कहय बला संस्था आ संगठन घोडा बेिच सुतल रहल।

रिीन्द्रनाथ ठाकुर जेना महेन्द्र जी संग अपन स्टेजके जोडी बनेलाह तिहना किछु जोडी स्त्री-पुर ष केर तैयार कएल जा सकैत छल। स्त्री पुर ष केर जोडी बनलासू गीत सभहक पस्तुित आरो नीक भऽ सकैत छल। यद्यिप 1970 आ 80 केर द ककमे अनेक ठाम पुर खक जोडी बनल मुदा कूनो िशित जोडी निह बिन सकल। बेर-बेर ईमानदारीसू किह रहल छी जे हमरा लोकिनके अपन मानिीय धरोहर केर पित किन साकाक होबाक दरकार अिछ। साकाक होबा लेल समस्त समाजमे अपन संस्कृित संरक्ण हेतु सामूिहक िसनेह उत्पन भेनाइ आिश्यक। कतेक उदाहरण देखैत छी जािहमे हम सब िधि पुरौआ काज करैत लोकके, समाजके आ अपना आपके ओिहना मनबैत छी जेना कोनो माता अपन छोट नेनाके पािनसू भरल थारीमे चान केर पितिबम्ब देखा ओकरा मना दैत छिथ जे चान थारीमे आिब चुकल अिछ।

बहुत दुखद िस्थित अिछ। हम सब एखनो धिर चंदा झा (किि चन्द्र), याती, पदीप आ रिीन्द्रनाथ ठाकुर लेल किछु निह कऽ पािब रहल छी। तीन मिहना जखन मृत्युके भऽ जाइत छिन तखन अपना आपके पैघ कहए बला संस्था िलली रे केर स्मृितमे िक सभा

बजबैत अछि। कतेक संस्था सब तँ facebook आ सोशल साइटस पर लिख काज चला लैत अछि। हम एक प्रयोजनसँ किछु दिन लेल अप्रैलमे पटना गेल रही। ओतय कियोक सूचना देलाह जे दिल्ली आ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रक तमाम मिथिला मैथिली लेल कार्यरत संस्था श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर केर सम्मानमे बहुत पैघ कार्यक्रम केर आयोजन नॉएडामे कऽ रहल अछि। ई बात सुनि आनंदित भेल रही। बादमे पता चलल जे ओ कार्यक्रमक्रिमअछि सामान्य रहैक। सब कियोक रंगीन भेल रवीन्द्रनाथ ठाकुर संग फोटो खिचा अपन व्यक्तिगत आ संस्थागत आकाइवजमे संचित कऽ लेलाह। जखन ओ आब नहि छथि तँ सब कियोक हुनकर छवि संग अपन छवि बला फोटोके साथ शोक सन्देश पेशित कएलक। दिल्ली आ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्रमे लगभग 100 जागत संस्था अछि। सब कियोक सांस्कृतिक कार्यक्रम करैत रहैत छथि। दिल्लीमे मैथिली भोजपुरी अकादमी सनक दिल्ली सरकार केर संस्था अछि। अहि संस्था केर उपाध्यक्ष संजीव झा मैथिल छथि, तीन बेरसँ विधायक छथि, आ दिल्ली सरकारमे हिनक बहुत नीक पकड़ छनि। मैथिली-भोजपुरी अकादमी लेल अगर हुनकासँ सब संस्थाक कता-धता लोकनि वार्तालाप केने रहितथि तँ असगरे मैथिली भोजपुरी अकादमी पचास लाख टका आसानीसँ अहि कार्यक्रममे खर्च कऽ सकैत छल। सब संस्था अगर एक-एक लाख खर्च करैत तँ एक करोड सहजतासँ भऽ सकैत छल। दिल्ली केर मैथिल उद्योगपति, एवं जन मानस सेहो यथाशक्ति अपन सहयोग दऽ सकैत छलाह। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री अथवा उपराष्ट्रपतिके अहि आयोजन केर मुख्य अतिथि बनाओल जा सकैत छल। मुंबईसँ उदित नारायण, दिल्लीसँ मैथिली ठाकुर, बिहारसँ शारदा सिन्हा आदिके आमंत्रित कएल जा सकैत छल। अहिसँ दिल्लीक लोक आन भाषा भाषी, मीडिया, नेता,

सभ कियोक बुझैत जे एहेन मैथिल आइकॉन छथि रवीन्द्रनाथ ठाकुर। अतबे मात केलासू हुनका लेल पदशी आसानीसू भेट सकैत छल। कतेक तत्परता, कने स्नेह, कने समपणि बहुत किछु कऽ सकैत छल। मुदा भेल की! हुनकर कदके आरो छोट कऽ देल गेल। मुदा दोष आयोजक केर नहि, दोष तू हमरा लोकनिक सोचक अछि। भऽ सकैत अछि बहुत लोक हमर अहि बातसू बिलबिला उठथि आ हमरे पर नाना तरहक पश्न ठाढ करथि। मुदा ताहिसू स्थिति थोडे ने बदलि जायत?

मैथिल समुदाय चाहे मिथिला भूमि केर होथि अथवा पवासी होथि,मे विदान, समाजिक संस्था, युवा संगठन आ विदाथी संगठन अथवा यूनियन केर मध्य सामन्जस्य नहि भेटैत अछि। ई बात आजुक नहि ऐतिहासिक अछि। भोगेन्द्र जीमे सब गुण छलनि मुदा ओ विदान सभ के दिल्ली केर अखिल भारतीय मिथिला संघ केर कोर समितिमे बहुत सघन भूमिकामे नहि आबय देलथिन्ह। भोगेन्द्र जी ओना तू अखिल भारतीय मिथिला संघ केर पदाधिकारी नहि छलाह मुदा सही अथमि एिह संसिा छलाह। ई पसंग लिखबाक पयोजन ई जे एखनो हमरा लोकनि अहि सब बात पर गंभीर होइ आ सब तरहक समायोजन करी। एखनो हम सब अपन रत: लिली रे, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, फणीशर नाथ ‘‘रेनू’’, याती, स्नेहलता, पदीप लेल बहुत किछु कऽ सकैत छी। कोआवर्डिनेशन ताहि लेल बहुत आवश्यक।

बहुत बात लिखा गेल। लेकिन सोचब तू हमरा बातमे कोनो ने कोनो समाधान भेटत। स्वगीय रवीन्द्रनाथ ठाकुर मिथिलाक अनुपम रत छथि। ओ सदैव अपना रचनाक संग जनमानस केर हदयमे जीवित रहताह।

इंरधनुषी अकास

हम मानि विजान एि कलाक ा ेध छात छी। ा ेध छातक भाषा तँ पाणहीन होइत छैक। उपमा, अलंकार, सौन्दनयत्र सलिप आद्द ा ेधछातक हेतु जेना कुनो बाहरी पक्रि ा क स्तिुभ होइक। मुदा छी हम घोर आा ािदी आ पॉजीटीि। ा ायद अपन अही पॉक्जटीि सोर आ दक्ष्म कोणक कारणे हम परमादरनीय जगदीा पसाद मणि ल केर कविता संगह इंरधनुषी अकास केर आमुख क्लखबाक क्ज् माह लऽ लेलहुँ। मणि लिजी वि ारसँ पगक्ता ील आ सभ तरहक लोक-वि ारधारा, पक्रक्स्नक्खत आ पक्रि ा मे सामंजस्यल स्ना वाात करएबला साक्तहत्याकार छक्त। अदट रनेक्टि ि िलिपमेन्टष आ इकोलॉक्जकल कन्सेतप् के स्र्नॉनीयताक दक्षि कोणमे बुझबाक आ अपन जान गंगाके कना, उपन्योस, नाटक एि कविताक र पमे बहेबाक असाधारण क्मता छक्हे मणि टलजीमे। क्हनकर रर ना पढैत जाऊ आ ब्योपत-पर ब्यौ त सुनैत जाऊ! क्हनकर बात आ ब्यो त सभ सहज, र मतक्का री मुदा विशा नीय लागत।

आब बात करी रर नापर। क्हनक रर ना इंरधनुषी अकास सक्रपहुँ कविताक पकार, छोट-पैघक क्हसाबे, भाि नाक पि ाहक क्हसाबे, अनेक विषयमे होबाक कारणे बहुरंगी र ुनरी अक्छ। अतेक विस्तृौह्म विधा आ विषयके समेटबाक कारणे ऐ संकलनक नामकरण अक्हसँ उि म नै भऽ सकैत अक्छ : ैिविध्य सँ भरल, मनोरंजक, रंगारंग, दीि सि किप, सोहनगर-मनोरंजक आ मनोहारी अकास। ऐमे जीि निक यना ान अक्छ, कवि कि कदपंनाक संसार अक्छ, उपमा आ अलंकार अक्छ, जीि निक दा च अक्छ, माक्टसँ क्सनेहक उदगार अक्छ, गीत अक्छ, भाि अक्छ,

अनचर्व न्यािास अछ, पेमक अनुभजिन्यएे पक्रभाषा आ पिहि अछ, पकृक्लाक अनुराग अछ, गा्यप-जीनिक झाकी अछ रीर पारीन आ रीर नीन वरिार अछ।

“इंरधनुषी अकास” नामसँ अपन क्लखल एकटा छोट कविता सपादरण अबैत अछ, आ सा रण अबैत अछ ओ पक्रक्सनकत जइसँ पेक्रत भऽ पार षिचपकहने इंनरसधनुषपर एक छोट कविताक ॅनमाण केने रही। पक्रक्सनक्त ई छल जे हमर पार षिीय पुत ाािक हमरासँ क्जद करय लागल जे ‘हमरा इन्र धनुष देखाउ।’ मुदा देखाऊ कोना! घोर समस्यार। ककछु काल सोरमे पड़ गेलौ। अन्तँत: क्युरसे टर खोक्ल इन्टरनेट रालू कय ओकरा इन्रहधनुषक अनेको फोटो देखा देक्लऐक। ााािकक बाला ुलभ मोन पसन भऽ गेलैक। राक्तमे सुतबासँ पकहने मोनमे आएल जे ऐपर ककछु लीखी। पेन आ कागत लऽ क्लखए लेल बैक्स गेलौ। सोरल कविता क्लखल जाए। कविताक ाीषक्क सेहो फुरा गेल- ‘इन्र धनुषक विन्यााास’ कविता सीत: पार्भट भऽ गेल-

“सुरजक इजोतसँ भरल आकास दग्धल कतेक अछ
गमीक धाहसँ मोन विदग्धी कतेक अछ
कोना करी एक्ह परणिधि गीमीमे ीतलताक आभाष कोना करी
टहटहाइत इजोतमे इन्रिर धनुषक विन्याभस?
मुदा हाक्र मानब हमर पकृक्तमे कतअ अछ एकाएक बुझाएल जेना
इन्र धनुष अतअ अछ। मोन हक्रयाएल ब्योँत फुराएल इन्र धनुषक
ॅनमाण हेतु कदपहनाके सकार कय इन्रल-धनुषक ररना हेतु सोरल
कोना नै हैत इन्र धनुषक विन्याधस?
टहटहाइत सुरजदेकिे ऊपर आँजूरसँ पोखक्रक पाक्न छीक्ट, सुखल
धरतीके अक्रयर करबाक हेतु कऽ लेब एकता छोट मुदा यनानक्क

इन्र धनुषक विन्यालस। फेर की सभ भऽ जाएत सोहनगर, की धरती आ की अकास।”

आब बाना इमहर-ओमहर भटकने जगदीा पसाद मण्लि जीक कविता संगहके देखी। 110 कविताक समेव्टने 146 पनाक ई पोनी मैक्सली साव्हत्यस केर एकटा अविश्मरणीय धरोहर अव्छ। हरेक छोट आ पैघ कवितामे कव्छु संदो, कव्छु संस्कावॅर आ कव्छु नि विरार पसर्फुव्टत होइत छैक। लोक क्मवालासँ बाहर पलायन करैत छव्स तँ मण्सिलजीके करोट होइत छव्हन। मुदा जखन लोक क्मवालासँ साफे वर्श्तात समाप्त कऽ आनठाम बैस जाइत छव्स तँ मण्निलजीक हहृए जेना भोकाव्स पाव्ड-पाव्ड कानय लगैत छव्हक। ऐ बातक सहज अनुभूक्त उव्डआएल वरडैमे पव्रलव्क्त होइत अव्छ :
“उव्डआएल वरडैक ठेकाने कोन
उव्ड कतऽ जा बास करत। भव्र पोख घोघ भरतै जतऽ
व्दन-राव्त जा रास करत। ओहन वरडैक आा` कोन जे व्बासव्र जाएत िीहो-िारि।”

देख! देस परदेस कतहु जाऊ मुदा अपन माव्ट आ अपन संस्कव्ज्ञाव्तसँ अपनाके व्बमुख नै कर । ा ायद यएह बात नीक ऐ कविताक मूल। अगर आँव्ख मूव्न पलायन करैत रहब आ असिर एि सफलता मात पेबाक कारणे अपन िीह-िाबिर सदाक लेल त्या वा लेब तँ भला अहा केहेन मनुव्ख ! अहाक केहेन संस्कााार? छोट कविताक माध्यासँ कतेक ममव्क बात बजैत अव्छ जगदीा पसाद मण्किल केर कवि मोन!
एक आर कविता- “रल रे जीनि” अहाके रोव्क लेत। कविता पढ़ु,

ओकर ा ब्द क युग्म के देखू आ कविताक संग अपना-ऑपके गक्तमान बना लीअ। ने कविता रकत आ ने अहा। बाह रे बाह! एहेन आसाधारन स् बतन्ध्र- कविता आ पाठकक बीर जीनि गक्ता ील क्तक। ई बात अनेको कवि अनेको भाषा आ कालमे अपन-अपन िगसँ कविताक माध्यपमसँ कहने छक्ता। मुदा अही बातके सह्यिाराक ा ब्दाॅवलीसँ कहब। कहब की रलैत पक्र्यापर एना बैसाएब क्त पाठकके जोा आक्त जाइक। ई कला मणि ा ल जीमे छक्तहह। कविताक क्तछु अं ा देखू- “क्तछु दैतो रल क्तछु लैतो रल क्तछु कक्हतो रल क्तछु सुक्ततो रल क्तछु समेटतो रल क्तछु बक्टतो रल क्तछु रक्खतो रल क्तछु फेक्कतो रल क्तारो-बीर तूँ रक्लते रल। रल रे जीनि रक्लते रल।
समए संग रल ऋहु संग रल गक्त संग रल मक्त संग रल। गक्त-मक्त संग रक्लते रल। रल रे जीनि रक्लते रल।”
हँ, कवि केलि गक्तमान होमाक पेरणा टा नै दैत छक्त। ओ कहैत छक्त जे जोा संगे होा मे रहू : गक्त संग रल/ मक्त संग रल/ गक्त-मक्त संग रक्लते रल।

‘सासु-पुतोहु िता’ कवितामे जेनरो न गैप आ मनोॅिजाक्तक विश्लेषण भेटत। जखन कविता पढब तँ लागत मनोरंजक अक्छ। जखन सोरब तँ लागत एकटा अनुभजिन्या विश्लेमषण अक्छ। एक-एक ा ब्द ।क रयन कविताके समाजसँ सीधे जोडबामे पभाकिारी अक्छ। “अपनेपर हँसै छी” व क्ताक घटैत स्तर, रॉरी, घूस दय नौकरी पाप्तज करबाक तरीका, अिसिरदिी नेता लोकक्तक पॉपुक्लजम आ व क्त क्तत इत्या क्द केर माध्ययमसँ क्तछु पाइक माक्सक भािमे राखब, ओइ लेल मुक्खयासँ नेता आ अक्धकारी धक्र घूसक परलन आक्द पनापर सोझे-

सोझ पहार अछि। जकरा फबलै से बाना पढने नकल कऽ परीक्षा पास कए विगी हासिल कय कोनहुना लाख-िढ लाख टकाक बखौअत कऽ नोकरी हिथया लेलक। भारमे जाउ वाक्य बेसिना या रौपट होकि व्ािनी! वाकामत लोकसकके ऐ सँ की मतलब???

“बाट” कविता कवि रविीन्द्र नाान ठाकुरक कविता यिद तोर िाक ाुने केऊ न आसे/ तबे एकला रलो रे/ केर समानरण करबैत अछि। संगिह-संग गीताक मूल मंत “कमर्ण्येव-ािधकारस्ते मा फलेषु कदारन,” अनात अहाक अिधकार कमचतक सीिमत अछि। तँए अहा कमचकरैत जाऊ, फलक इच्छो नै कर ... केर सेहो पुनस्र्थाा?वात करए राहैत छिथ।
कवि भाा्िक सेहो छिथ। होबाको राही। भाा्िक नै भेल तँ कविताक कोना ररना करत कवि! कविक भाा्िक मोन गीतमे बहय लगैत छैक। “गीत-2”मे किछु एहने दााक िणचत कािक। भाानिासँ रविति मोन बाजत तँ कोना? बोल कुना फुटतै? :
मुँहसँ बोल कना कऽ फुटतै
दरदसँ दुखाइ छै टीससँ टिसकै छै छाती लिह-लिह लटुआएल छै मुँहसँ बोल कनाल.....। आााक सभ मेटेलै बाटे सभ घेराएल छै ककरो कहने किछु ने भेटत अपने बेने बेनाएल छै मुँहसँ बोल कना ... रोटसँ रोटाएल छै मन िहि-िहि कऽ िनमनाइ छै तैयो हँिस-हँिस नारय गाबए
रािि-िदन बडबडाइ छै मुँहसँ बोल कनाद...।
अही तरहे जाल आ गालक उपमा लऽ कवि लोकके अगाह करै छिथ : जिहना जाल सभ तरहक माछके पकडैत अछि, परन्तु. अगर मदला ह जालके ठीकसँ नै ओछेलक आ काबूमे नै केलक तँ जाल फािट

जाइत छैक, माछ भावायो जाइत छैक। तहिना मनुष्याके अपन बोलीपर संयम करक राही : ाबदैजाल छी महाजाल जइमे समटल महाकाल देखैमे जहिना विकिराल तहिना अछियो महाकाल। सभ किछु भेटत आँखियेमे सभ लटकल अछि जालेमे सभ किछु छै गालेमे।
जे जेहन अछि जलाहि से तेहन फेक फेकैए। गैरी ने गैबर या जाइए रोहु, भाकुर तँ फँसतेए। सभ किछु भेटत जालेमे सभ किछु छै गालेमे। गाल बजबैमे जे जेहन से तेहन जाल फेकैए। इरना-कोतरीके के कहए ािका-काकोर धर फसैए। सभ किछु छै गालेमे सभ फसल अछि जालेमे...।"

वॅिरार तँ विस्तृता रपूिक अनेकों कविताापर किलखल जा सकैत अछि। हिनकर ई कविता संगह हानक आंगुर जका काक। सभ आंगुर सतिन्तान अछि, मुदा सभ जुडल अछि तरहत्तीजसँ। तहिना हिनकर ररना "इंरधनुषी अकास" नामक मालामे गानल एक सय दस कविता किसतिंत अछि- विषिय, भाि, ाबद रयन, पेम, उपमा आदिक सिभासिँ परन्तुस अन्तानत: सभ कविता एक तागसँ गानल अछि ओ ताग काक जगदीा पसाद मणि लक व्यिककितनर्त आ सोर। सभ कविता एक-सँ-बढि कऽ एक अछि। "माछक फूल, गोधन पूजा, झगडा, नजर, भभूत, पुरषानऱुअगहन, केना मेटत गरीबी, बाढिक सनेस, बेरोजगारी, पू-भर, बेना, एकैसमी ादीक दो , आदि किछु एहन कविता अछि जकरा पाठक बेर-बेर पढताह।

पोथी समीक्षा- गामक जि‍नगी- जगदीश पसाद मण्‍डल

समाजमे पकृतिक किछु पि‍रस्‍थि‍तिक अनुसार कुनो अल्‍टरनेटि‍व उपायक ब्‍यौत करक हेतु हमेशा कुनो अवतार, पैगम्‍बर, महान पुरुष, विद्वान, राजा राममोहन राय अथवा महात्‍मा गान्‍धीक जरुरत नै। अनेको पि‍रस्‍थि‍तिमे ऐ तरहक कार्यक्रियोक- गामक सामान्‍य एवं कारकर मि‍हला, वृक्ष चलबैबला, बारह बखक बाि‍लका, चाह बेचैबला युवक, गामक लोकके बेर विपि‍त आ पािन-आहारमे कायआबए वाली वृद्धि मिहला, पोखि‍रमे माछक धंधा करैबला मल्‍लाह कऽ सकैत अछि। पकृित आ संस्‍कृतिमे सामंजस्‍य कए कऽ मनुष्‍य रिह सकैत अछि। जापानमे बेर-बेर भुकम्‍प होइत छैक। तकर मतलब तू ई नै जे जापानक लोक जापाने छोि‍ड़ देलक! जापानक लोक अपना देशसू बडड बि‍सनेह रखैत छिथ। ओइ भूि‍मक रचना आ भुकम्‍पके देखैत घरक रचना एवं संस्‍कृतिक विकास करैत छिथ। जापान विश्‍वमे एक चमकैत आ उदीयमान नक्षत्र अछि। तिहना अपन 19 गोट कथाक माध्‍यमसू जगदीश पसाद मण्‍डल कहए चाहैत छिथ जे बाि‍ढ़, रौदी एवं अन्‍य पाकृतिक विपदाके समाधान अगर ओइठामक लोक चाहिथ आ लगनसू कायकरिथ तू स्‍थायी तौरपर कएल जा सकैत अछि। लोकक जत्‍थाक-जत्‍था पडाइनके रोकल जा सकैत अछि। कथामे गामक पिरवेश आ पि‍रस्‍थि‍तिके सटीक िचत्रण कएल गेल अछि। अपन छोट-छोट कथासू लेखक पाठके सोचबाक लेल विवश कऽ दैत छिथ। ऐ कथा-संगहक नाम थीक- गामक जि‍नगी। गामक जीवनक लगभग पत्‍येक पि‍रस्‍थि‍तिक चचा अलग-अलग रुपे अलग-अलग कथाक माध्‍यमसू कएल गेल अछि।

पहिल कथा थीक भैटक लागि। ऐ कथाक तुलना कुनो भाषाक कुनो कालजयी लेखक केर कथासू कएल जा सकैत अछि। भयंकर बाढ़ि आ बाढ़िक विभीषिका संगहि-संग बाढ़िक बाद जे लोकके समस्याक समना करए पडैत छै तकर बेजोड चित्रण। एहिना स्थितिमे सामान्यतया साहित्यकार लोकनि जखन कुनो जमिन्दारक चरितक चित्रण करैत छथि तू ओकरा क्रूर, नृशंस, हृदएहीन बना मात ओकर व्यिक्तत्विक गलत पक्ष चित्रण करैत छथि। लेकिन मंडलजी त सामंजस्य स्थापित करबा मे माहिर छथि। एहि कथा मे महाजनो ओतबे परेशान अछि जतेक कुनो आन गामीण.। बल्कि महाजन ज्यादे परेशान अछि- कोना अपन इज्जत आ कोना गामक लोक सबहक भारपन राखत? कथा मे माहाजन शीकान्त परेशान जे बाढ़िसू धानक फसिल सुडडाह। “एको धुर धान नहि बंचल अछि जे अगहनोक आशा होइत। जे सभ दिन कीनि-बेसाहि कऽ खाइत अछि ओकरा तू कोनो नै मुदा हमरा लोक की कहत? चाह-पीबिते-पीबिते शीकान्तके चौन्ह आबए लगलन्हि। मन पडलनि जे बाबा कहने रहथि जे दरबज्जापर जू क्यो दू-सेर कि दू-टाका मागए लेल आबए तू ओकरा ओहिना नहि घुमबिहक। ओहिसू लक्ष्मी पडाइ छथि।” लेखक माहाजनक चिन्ताके सेहो उजागर करैमे सफल छथि। समान्यतया अन्य लेखक लोकनि ऐ तरहक भावनाके नै व्यिक्त कऽ सकैत छथि। शीकान्त बजै छथि- “जहिना सभ किछु बाढ़िमे दहा गेल तहिना जू अपनो सभ तुर भसि जइतहु, से नीक होइत। जाबे परान छुटैत, ततबे काल ने दुख होइत। आगू तू दुख नहि काटय पडैत।”

भैटक लागि कथाक दोसर आ मुख्य आधार या विशेषिता एक कारकर महिला- मलाहिन दारा भैटक खोज अनाजक रुपमे करब थीक।

कोना भैक्टक दानाके जमा करब, कुटब, छाटब आ लाि भुजबक पर्वि या जे जीबछी मलाक्हन करैत अक्छ से पाठकके एको क्ग कथासू भटकऽ नै दैत अक्छ। भैटक दानाक लाि गामक लोकके जीबाक एक पैघ सामगी बक्स जाइत अक्छ आ ओकर शेय जीबछीके जाइत छै। जीबछीक लाि के चीखैत शीकान्त पतीसू कहैत छक्थ- “एते सुनर ि स्तुके एखन धक्र जक्सतहू नक्ह छलहू। धन्य अक्छ जीबछीक जान आ लूक्र जे एहेन सुनर हराएल ि स्तुके ऊपर केलक। साक्सत देि छी जीबछी। जाउ, सन्दुकमे सू एक जोडी साडी आ आंगी क्सकालने आउ। जीबछीके अपना ऐठामसू पक्हरा कऽ वदिा करब। गरीब-दुक्खयाक देि छी जीबछी।” ऐसू ई पता चलैत अक्छ जे लेखक समाजक सभ ि गक्कि लोकके ध्यानमे रखैत अपन रचनाके आगा बढबैत छक्थ। जीबछीक जानक सम्मान होइएत अक्छ आ जीब्छी एकता ि क्स लाबैत अछ। आहे ि क्स जे समाज मे एकटा जीि नि जीबाक आधार देत अक्छ ।

नारी जान आ क्सपक्ता क क्गमे नारीक सुझाएल ओक्रयात जइसू रौदीके, वक्सिकाके सामाना कएल जा सकैत अक्छ केर जान क्ससाढ कथाक माध्यमसू होइत अक्छ। कथाक पात डोमन केर पती सुवाया दारा ई कहब जे, “जकरा खाइ-पीबैक क्सओरयान करैक लूक्र बुझल छैक ओ कथीक क्चन्ता करत?” ऐ बातक पमाण अक्छ। लगातार तीन-चाक्र षि रौदी हेबाक कारणे गामक गाम लोक खाली कऽ परदेि भावा गेल। मुदा सुवायाक सोझाएल क्सओरयोनसू ओकर पक्त डोमनके जखन ऐ बातक भान होइत छैक जे पुरैक्सक जक्डमे क्ससाढ फडैत छैक। अि ुए जका। आ ओ अपन कायक्ि लावा जाइत अक्छ। कोदाक्र चलाबैमे जखन परेि ानी होइत छै तू डोमनके सुवाया ई

कव्है कायकिरबाक पक्त जोि उय्मन करैत छैक- “हमर चूडी-साडी पहीर क्लअ आ हमरा धोती वेद्दअ। तखन कोदावर पाव्ड कऽ देखा दै छी।” पुरषक दंभ ओकरा गक्तमान बना देत छैक फेर जोिमे आवा डोमन कोदावर भाजय लगैत अव्छ। तकर पवरणाम ई जे क्वासाढक जव्ड भेटलैक। क्वासाढक णिनि जे लेखक करैत छव्थ तू यातीक कटहरक णिनिक स्मरण होमय लगैत अव्छ! क्वासाढक णिनि ने देखू- “उज्जर-उज्जर। नाम-नाम। लव्कआहा बास जेका। गोल-गोल, मोट। हाथी दात जेका क्यकन, बीत भवरसू हाथ भवरक। पाि भवरसू आध सेर धवरक।” लागत एना जेना क्वासाढक जव्डसू उय्म खाद पदाथदुिक्तयामे कुनो नै! बातो सैह अगर लोक के कव्छु खेबाक लेल नव्है उपलब्ध हेतैक त कव्छु त चाही जाही स पाणरक्ता भा सके। ओहो खोज एहेन जे लोकक दोसर ठाम जेनइए रोक्क दे। क्वासाढ एक उतम उपाय अथाि क्योत बक्त जाएत अव्छ।

पीरारक फड कथामे मण्डलजी एक पात धक्तयाक माध्यमसू पीरारक फड'क वििषताक णिनि करैत छव्थ। कोना धक्तया अपन पक्त व्यचकुन केर सहायतासू पीरारक फड तोवर-तोवर हाटे-हाटे गामे-गामे बेचैत अव्छ आ व्यचकुन अनेर आ माछ मावर बेचबो करैत अव्छ आ खाइतो अव्छ। धक्तया अपन युक्तत्तसू पीरारक फड आ अनेर आ माछसू अपन आव्थकि तंगीके दूर करैत अव्छ आ जीिनमे सभ कव्छु जोडबाक पयास। अगर मनुष्य लगन स कायकिरे त सब कव्छु संभि छैक । अनेरे गाम या क्वव्थला स पडा गेने समस्याक समाधान नव्है भा सकैत अव्छ ।

अनेर आ बेटा एक एहेन गरीब गृहस्तक थीक जे लगभग पचासक

बयसमे अएलाक बादो संतानहीन छल गंगाराम। हाटसू आबएकाल जखन एकटा जनमौटी अनेर आ बच्चाके कोरामे लऽ कऽ गंगाराम घर अबैत अछ आ घरलिीके कहैत छैक- “आइ भगानि खुि भऽ एकटा बेटा देलक।” दुनू परानी पसन भऽ ओइ बेटाके पोसए लागल। गंगाराम आ वििष र प स ओकर पतीक ओही अनेर आ विि‍क पक्ष पेमक अपूि सिोहनगर दृश्य उत्पन्न करैत अछ ई कथा। िरीरसू क्षखन होमाक कारने गंगाराम कछु उपाजनि करबा जोकरक नै रहल। बेटा मंगल कछु पढलक बाद आर्थकि विपिनताक कारणे पढाइ छोव्ड चाहक दोकान खोक्ल लैत छै। मंगल अपन पढाइ चाहक दोकानोमे रक्ह करैत अछ। मरै काल गंगाराम मंगलके ओकर जन्मक कथा बता देने रहैक। मंगल कताबक संग-संग समाजक बेबहारक अध्ययन सेहो करैत अछ। मंगलक कथा एकटा पतकार सुनैत छथ्य आ ओकरा छाया दैत छथन्हि। मंगलक एहने कथा पक्ढ सुनयना नामक एक पढक्ल नायिका मंगल लग अबैत छथ्य आ मंगलक पक्तभासू पभावति भऽ सुनयना अपन िकील माताासू दक्लल दऽ मंगलसू विाहि करए लेल माताके तैयार कऽ लैत छथ्य। आ अंततः मंगल आ सुनयनाक विाहि भऽ जाइत छैक। कामक दृवि कोने ई कथा उतम संगही अक्ह कथा केर मध्यम स लेखक समाजक दू ि‍गिक्ि जोडबक पयास केलक्ह अछ। पक्रिि‍क िणिनि यथाथि आ उतम बुझना जायत। एहनो बात नक्ह जे एक्ह तरहक कथा पूिि‍मे नक्ह क्लखल गेल हो मुदा ए कथा एकटा नि‍ पक्रकाक जन्म देत अछ, चीज के क्लखबाक एकटा सहज आ सुन्दर िैली पस्तुत करैत अछ।

दूटा पाइ कथा ओइ तरहक नियिुकिपर कटाक करैत अछ जे क्दल्ली, मुम्बई जा कऽ ओतए केर चकाचौधमे अपन जक्डके

बिसरल जाइत अछि। मुदा माइयक ममत्‍ तू अथाह समुर होइत छैक। फेकुआ अपन कमाइके स्ि‍त आ फैिनमे बरबाद कऽ लैत अछि। बिसरल जाइत अछि जे ओकर वृिधि माए गाम मे कोना जीबैत हेतैक। माए बेटा परदेि गेल अछि आ ापिस आएत तू कमा कऽ ढौआ लाओत तकर ख्याली पोलाि बनबैत छैक।
परन्तु जखन ओकरा बेटाके यथाथक पता चलैत छैक तखनो ओ अथात माए अपन महानताक परिचए देबए मे बाज नै अबैत छैक। माए बेटाके कहैत छैक- तो ापिस गाम आबि जो। हमरा तोहर कमाइक जररत नहि अछि। भाडा नहि छौक तू ककरोसू पैच लऽ ले, अतय अएलापर दऽ देबै।

बोिहाकरन मरनी कथा मािमकि ढंगे िलखल गेल अछि। बरबस सूयकिान्त िापाठी िनराला क स्मरण हिरयर भा जेट अछि: िहि तोडती पतथर इलाहाबाद के पथ पर/ कथाक एक-एक पाित्त अथपूिणि लागत िबना कुनो बनबत के यथाथिके जोडैत सत्य के बाचैत। कथाक मुख्य पात पचास ििकि मरनीक पित, बेटा आ पुतोहू तीनू बज खसलासू गाछक तरमे खून बोकिर कऽ मिर जाइत छै। असहाय अबला लाचार भऽ पाच ििकि पोता आ आठ ििकि पोतीक आि‍क संग जीब रहल अछि। मरनीक देह आ जीबनक विरिण देबामे लेखकक जििब नै- “कारी झामर एक हडडा देह, ताड-खजुरपर बनाओल िकडैक खोता जेका केि, आंगुर भिर-भिरक पीअर दात, फुटल घैलक कनखा जेका नाक, गाइयक आूिख जेका बडका-बडका आूिख, साइयो चेफडी लागल साडी, दुरंगमिया आंगी फटलाक बाद कहियो देहमे आंगीक नसीब नहि भेल। िबना साया-डेिढयाक साडी पहिरने। यएह छी मरनी।” राष्‍टीय राजमागकि पकी सडकक िनमाणमे

जखन मरनीके वाटी फोडैक कायभिटैत छै तू अपन थाकल आ जीर्ण-शीर्ण शरीर लऽ सेहो अपन छोट-छोट बच्चा सभ लेल ओ ओइमे तल्लीन भऽ जाइत अछि। लेखक वाटी फोडैत मरनीक बडा सजीब आ कारुणिक चित्रण करैत छथि : "पचास बरखक मरनी जे देखैमे झुनकुट बूढ़ि बूझि पडैत। सौसे देहक हडडी झक-झक करैत। खपटा जेका मुह। खैनी खाइत-खाइत अवाला चार दात टूटल। गंगी-जमुनी केश हवामे फहराइत। तहूमे सडकक गरदासू सभ केश नहाइत। मुदा तैयो मरनी अपन आँखि बचेने रहैत। जखन पुरबा हवा बहै तू पच्छिम मुहे घुरि कऽ वाटी फोडए लगैत आ जखन पछबा बहए लगैत तू पूब मुहे घुरि जाइत। बीच-बीचमे सुसताइयो लैत आ खैनियो खा लैत। मुदा तैयो ओकर मुह कखनो मलिन नै होइ। किएक तू हृदएमे अदम्य साहस आ मनमे असीम विश्वास सदिखन बनल रहैत। ते सदिखन हँसते रहए।"

मुदा मरनीमे आत्मबल छैक। जखन ठीकेदार मरनीसू बात करैत छैक तू औकर मन कानय लगैत छैक। ई लेखकक महानता कहल जा सकैत अछि। ठीकेदार की सोचैत अछि से देखू- "एते भारी काज केनिहारक देहपर कारी खट-खट कपडा छै, तहूमे सइयो चेफडी लागल छै, काज करै जोकर उमेर नै छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैत अछि। ठीकेदारक मन दहलि गेलै।" फेर लेखक दारा ठीकेदार मनोदशाक चित्रण देखू : "जहिना आकास आ पृथ्वीक बीच कहियाज अछि, जाहिठाम जा चिडै-चुनमुनी लसकि जाइत अछि, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसकि गेल। जेना सब कुछ मनक हरा गेलै। शून्य भऽ गेलै। ने आगूक बाट सूझै आ ने पाछुक। मरनीसू आगू की पूछब से मनमे रहबे ने केलै। साहस बटोरि पुछलक-

भकर दिनमे कते रपैया कमाइ छी?" ठीकेदारक पत्नि सुक्का मरनीक मोनमे झडक उठलै। बाजल- "कते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छै। चारि दिन एकटा पजेबाक ढेरी फोडै छी तू तीन-बीस रपैया दैए। आइसू तीन तूरक पेट भरत? भकर दिन ईटा फोडैत-फोडैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोल्टयो कीनब से पाइ नै बचैए।"

लेखक कथाक निष्कर्ष बडड संक्षेपमे करैत छथि : ठीकेदारक आँखिमे नोर आबि गेलै। मनुष्यता जावा गेलै। मुदा ई मनुष्यता कते काल जिनगीमे अूटकतै? जिनगी तू उनटल छै। जाहिमे मनुष्यता नामक कोनो दरस नहि छैक।

हारि-जीत कथा Internal innovation केर संदेश दैत अछि। एकटा कुम्हारक परिवार जकर गाम कोसीक बाढ़िसू कोसीमे धूसि जाइत छैक। अपन जरूरी समान लऽ अन्तहीन दिशा दिस बढैत अछि। रस्तामे लछमीपुरक एक बटोही भेट जाइत छै। लछमीपुरमे कुम्हार नै रहैत छैक। सोमन ओही गाममे बैस जाइत अछि धंधा चलए पडैत छैक। लेखकके विशेषता ई जे कुम्हारक चाकसू सम्बन्धित तमाम परिवयाक बनाएल समागीक सेहो पैघ फेरसहित पस्तुत करैत छथि। लागत जेना कुनो कुम्हार अपन विरिण पस्तुत कऽ रहल अछि। खएर : कथा आगा बढैत छैक कुम्हारक एक छोट बेटा मेलामे हेरा जाइत छैक। बादमे नै भेटैत छैक। स्टील आ आन तरहक तिमि अएलाक कारणे परम्परागत तिमि केर माग खत्म भऽ जाइत छैक। अहिना स्थितिमे दुनू पाणी इहो गाम छोडबाक पण करैत अछि। सभ ब्यौत कऽ लैत अछि।

ठीक ओही समएमे बाछुरल बेटा जनि भऽ आबि जाइत छैक। समएक अनुसारे ओ नि-नि चीज बनाएब सीख आएल छैक। तूए पुन: कुम्हारक धंधा चलि जाइत छैक। लेखक कथाक अन्तमे ियद ई कहबाक पयास केलन्हि अछि जे परम्पराके नूतन पिरपेक्ष्यमे अपने-आपके मिलान कऽ कऽ चलक चाही। अगर समय अनुसरे परंपरा मे पिरतिनि आनब त परंपरा कहिओ निह मरत। कुनो बस्तुक उपाय जर री भागने कही कल्याण संभि छैक?

ठेलाबला कथा एक िसधान्तक जन्म दैत अछि। भोला नौकरीक तलािमे कलकता जाइत अछि। ओतय ठेला चलबए लगैत अछि। दूटा बेटा गामपर छैक तकरा कि ो काव्ट पढबैत अछि। मैट्रिक पास केलाक बाद दुनू भाइ के अपन पीटक पािरिस्थितक आभाष होइत छैक। पैसाक तंगीक कारण आगा नै पिढ पबैत छैक, परन्तु गामक स्कूलमे िक्ष-िमतक नौकरी दुनू भाइके लावा जाइत छैक। जखन भोलाके दुनू पुत हुनका पत लीख कऽ कहैत छन्हि जे आब गाम आिब जाऊ तू भोला गाम आिब जाइत छिथ। बेटाक पत पढलाक बाद भोलाक मनोदिाक िचतण बडड मािमक लगैत अछि : “समाजसू िकिल छातीपर ठेला घीचि, दूटा िक्ष समाजके देलिऐक, की ओिह समाजक आरो ऋृण बाकी छैक?” ए कथ्य अपना आप मे अभूत िकछु छैक!

जीविका कथाक माध्यमसू परम्परासू जुडल मानक पिरि सू िसनेह, पिरािरक दाियत्कि िनािह करक संदेि देल गेल अछि। लोक िहरीकरणक नकलमे अपन अिहतत्कि आ संस्कार कोना समाप्त कऽ लैत अछि, तकर िचतण कएल गेल अछि। माता-िपताक

पक्ष दावयत्कि केहि केने कोन लाभ भऽ सकैत अछ तकर िणिन।

वकक्साबला कथा ई संदेि दैत अछ जे सम्पक्ष अथाि पैसा आ भोग-विलासक िसुतुसू लोक पसन नै रह सकैत अछ। पसन रहबाक लेल आत्मसंतोष भेनाइ जररी। कथाक रचना पभाकिारी आ उदेि्यपूणाि पातके कथा आकदसू अंत धिर अपनामे सराबोर केने रहैत अछ।

कमथलामे डोका, वसतुआ कक्ी खूरचन आकदसू चून बनेबाक पथा पाचीन छल। ऐ कायकि सम्पादन करैत छलीह मल्लाह िगकि मकहला लोकक्न आब लगभग ई पथा समाप्त भऽ गेल। ओकरा बदला लोक आब एकेठाम बजारसू चून कीन कऽ लऽ अबैत अछ। सुखल चून। जकरा सहजतासू गील कय िएह मलाह सभ बजारे-बजारे आ घरे-घरे बेचैत अछ। ऐ कथाके पढलासू समाप्त पाय परम्परापर दृष्क्ट देबाक एक पयास कएल गेल अछ।

विक्ष आ संस्कार अलग-अलग चीज थीक। गामसू पढ इन्कजनीयर बक्न गलत-सलत पैसा कमा जतय गामक दू कायतयौत भाय अकिाि पाप्त करबाक बाद गाममे रह फइलसू मकान बनबए लेल सीकमत घरारीमे सू धुरफन्दी कय 10 धूर जमीन ज्यादे लेबाक ब्यौतमे लागल छक्थ। व्डहक बटबारा कथामे गामक लोक हुनका दुनूके ऐ गलत मंसाके बुझ्झ जाइत अछ आ दुनूसू पैसा ठक्क लैत अछ। अंन्तत: जमीन दुनूमे बक्हस्सा बराबर बटैत अछ। ने ककरो कम आ ने ककरो बेसी। गामक लोकक दृष्क्टमे पढला-कलखलाक बादो दुनू इन्कजनीयर चक्रतहीन आ गामक िताििरणके पदुक्षत केक्नहार

मानल जाइत छथि। लेखक ऐ परम्पराके ममजितासू उजागर करैत छथि।

भैयारी कथा िहरी जीिनक चकाचौधसू लोकके सािधान करैत अछि। जे ऐ बातके नहि बुझैत छथि आ अपन परम्परा आ संस्कारके नै ध्यान मे राकेट गामक जमीन जत्था बेच, गामक जड़ के समाप्त कए जे िहरमे बैस जाइत अछि तकर परिणाम नीक नै होइत अछि। ई कथा लेखक केर आत्मासू नजदिक छन्हि।

बहीन कथाक माध्यमसू मण्डलजी कहए चाहैत छथि जे केबल माइयक कोरासू जन्म लेने बहिन या माए नै भऽ सकैत अछि। एक दिस जतऽ अपन बेटी अपना कायमि अतेक लीन अछि जे मरनासन माएके देखबाले समए नै ककाकल पाबि रहल अछि औतहि दोसरठाम माइयक एक मुसलमान सखी हल्ला-फंसाद रहितहु रातिमे चोरा कऽ माएके देखए अबैत अछि। ई कथा हिन्दु-मुसलमानक संग आपसी पेमक गंगा-जमुनी पिहि कहल जा सकैत अछि। मैथिलीमे ऐ तरहक कथाक रचना हेिकि चाही।

मण्डल जीक रचनाक एक विषिता हमरा जनैत पातक नामकरण छन्हि। हरेक नामक पक्त साकाक रहै छथि आ उदेिियपूणि ढंगसू नाम रखैत छथि। एकर उतम उदाहरण थीक एक कथा पीहुआ। पातक नाओं पीहुआ किएक पडलैक तकर विरिण सुनू : “छियार राति, दाइ-माइ पुहुपलाल नामकरण केलखिन। जखन ओ आठ-दस बखकि भेल, तखन जाडक मास बाधमे फानी लगबए लागल। गहीर खेत सभमे िसल्कियो आ पीहुओ आबि-आबि धान चभैत। जकरा ओ

फानी लगा-लगा फसबैत। अपनो खाइत आ बेचबो करैत। किछु दिनक बाद स्तीगण सभ पीहुआबला कहए लगलैक। फेर किछु दिनक पछाति भौजाइ सभ पीहुआ कहए लगलैक। तूए पुहुपलाल बदलि पीहुआ भऽ गेल।”

पछताबा एक एहेन कथा थीक जकरा माध्यमसू ई कहक पयास कएल गेल अछि जे आधुनिक आ तकनीकि विकास पाप्त कए लोक बाहर भागल जाइत अछि। बाहर जाए जीनि मशीन भऽ जाइत छैक। रघुनाथ किछु एहने कायिकेलन्हि। चलि गेलाह अमेरिका। मुदा अन्तमे अपन गलतीक अनुभि भेलन्हि आ अपने-आपके बोनिहार-मजदुरसू निचाह मानए लेल तैय्यार भेलाह- “हमरासू सइयो गुना ओ नीक छथि जे अपना माथापर घैल उठा मातृभूमिक फुलाडीक फूलक गाछ सीचि रहल अछि। अपन माए-बाप समाजक संग जिनगी बिता रहल छथि। आइ जे दुनियाक रुप-रेखा बनि गेल अछि ओ किछु गनल-गूथल लोकक बनि गेल अछि। जिनगीक अन्तिम पडाभिे पहुचि आइ बुझि रहल छी जे ने हमरा अपन परिवारि किन्हैक बुझि भेल आ ने गाम समाजके।”

डॉ. हेमन्त परिस्थित्ि करैत छथि ओइ तमाम डाक्टर समुदायके जे अपन विधाके मयादा बिसरि िहरी जीनि जीबैत अछि, पैसा कमाइत अछि, गाम-घर किा दुगमि स्थानमे जेनाइ जहल जेनाइ किा कालापानीक सजा बुझैत अछि। जखन डो. हेमन्त कोसिकन्हामे बसल बाढिसू पभावित गाम जाइत छथि तू एक बारह षिकि किारी सुलोचना अपन ियिहार आ गामक लोकक सिनेह पाबि ओ कृत-कृत भऽ जाइत छथि। अभाकि सिनेह कतेक रमनगर

आ सुअदगर भऽ सकैत अछि। सुलोचनाक मुहसँ गाम आ शहरी जीविनक तुलना मिरचाइ आ चीनीक कीडासँ कए लेखक कहानीमे नि शिल्पक रचना करैमे सफल होइत छथि। कथामे सुलोचना डॉ. हेमन्तके कहैत छन्हि- "हम तँ बच्चा छी डोक्टर सहाएब ते बहुत नै बुझै छी। मुदा तइयो एकटा बात कहै छी। जहिना चीनी मीठ होइत अछि आ मिरचाइ कडू। दुनूमे कीडा फडै छै आ ओइमे जीवि- यापन करैत अछि। मुदा चीनीक कीडीके जँ मिरचाइमे दऽ देल जाइए तँ एको क्षण नै जीवित रहल। उचितो भेलै। मुदा की मिरचाइक कीडाके चीनीमे देलाक बाद जीवित रहत? एकदम नहि रहत। तहिना गाम आ बाजारक जिनगी होइत।"

बाबी कथाक माध्यमसँ लेखक एक एहेन सामाजिक महिलासँ परिचए करबैत छथि जे ओना तँ अपन नाओं लिखऽ नै जनैत छथि परन्तु व्यिहार आ बुद्धिसँ समास्त गाममे पूज्या थीकी। गामक लोक कुनो कार्य हुनका पुछने बिना नै करैत अछि। बाबी सबहक लेल छथि आ सभ बाबी लेल तत्पर। कथाक पारम्भमे एकटा उपमा खाटी देसी आ औरिजनल लगैत अछि कातिक मासक णिनि करैत बाबी कहैत छथि जे ई एहेन मास अछि जैमे लुंबाया मिरचाइक घौदा जका पाकिक घौदा अछि। एहेन उपमा हमरा अन्यत नै भेटल अछि। अही कथामे "पथियामे दूटा नारियल, पान छीमी केरा, दूटा टाभ नेबो, दूटा दारीम, दूटा ओल, दूटा अडुआ, दूटा टौकुना, दूटा सजमनि, एक मुटी गाछ लागल हरदी, एक मुटी आदी नेने रहमतक माए आंगन पहूँचि बाबीक आगूमे रखि बाजलि- बाबी अपनो डालीले आ हिनकोले नेने एलिएन्हे।" ई कथा हिन्दु-मुसलमानक बीच पेम आ सास्कृतिक एकताक कडी थीक। अपन बेटा रहमत जे कि बच्चामे बीमार भऽ

गेलैक आ बाबी ओकरो लेल छव्व मइयासू कबुला कऽ देलव्थन्ह, तूए ओकर माए बाबीक माध्यमसू पाच ि षिधिव्र व्मष्ठाक संग छव्व मनबैत अव्छ। ओव्हना उपास, सभ चीजक पालन, छव्वक पव्त आस्था। बाबी जखन खरनाक खीरक पसाद रहमतक माएके दैत छव्थन्ह तू ओ खुि ीसू नाव्च उठैत अव्छ। छव्व इमयाके गोर लगैत छन्व्ह आ बेटाके व्मरोग व्जनगी जीबैक आि ी सेहो लगा लैत अव्छ।

काव्मनी कथामे काव्मनीक व्मता भैयाकाका काव्मनीक विि हमे पाच लाख टाका खचि केलाक बादो ऐ बातके सि ीकारैत छव्थ जे ओ कें जुसाइ केलन्व्ह। व्मएक? तू हुनका दस बीघा जमीन आ अन्य सम्पव्त। काव्मनी तीन भाए-बव्हन माने दू भाइ आ एक बव्हन। खेतक मात कीमत अस्सी लाख! तै व्हसाबे काव्मनीक व्हस्सा 25 लाख टाकासू बेसी होमाक चाही मुदा खचि भेलन्व्ह पाच लाख। ओ इहो मानैत छव्थ जे व्हनका लेल जेहने बेटा तेहने बेटी। तूए जखन काव्मनीक पव्त दोसर पती आव्म लैत छव्थ आ काव्मनीक पव्त हुनकर सौव्तन आ पव्त व्मछु प्लान बनबए लगैत छव्थ तू काव्मनी अप्पन दूटा बच्चाके लऽ सोझे गाम आव्ब जाइत छव्थ।

सभ कथा पभाि त्पादक आ वि व्मपद लागत। मण्डल जी लोक वि धा अथाि फोकलोर केर नीक जाता छव्थ। गाम-घरक पव्रि ि कि ठेठ उदाहरण, उपमा, कहाि ति, इत्याव्दक समाि ि देखब तू मोन तीरपीत-तीरपीत भऽ जाएत। रौदीक ि ािन्म देखू : "जे मूस अगहनमे अंगेजी बाजा बजा-बजा सत-सतटा विआह करैत छल ओ या तू व्बलमे मव्र गेल ि ि कतऽ पडा गेल तेकर ठेकान नव्ह।"

"डोमनक मनमे आि ि रहए जे जव्हना लुवि यो कव्नया बेटा जनमा

कऽ वारथाइन बक्स जाइत, तक्हना तू पाक्स भेने परक्तायो खेत हएत कक्ने।"

पीरारक फडक िणिि करैत मण्डलजी लीखै छक्थ- सहतक कोथी जेका चोखगर काट, डाक्र र पी पहर दारके सजौने। छडगर-छडगर डाक्रमे चौरगर-चौरगर पात जेना इन्रकमल ि तगड फूलक होइत। तक्हना फूलो।

आन उदाहरण जेना
"अनकर पहीक्र कऽ साज-बाज छीक्स लेलक तू बड लाज।"
"गागाी-जमुनी केि हिमे फहराइत।"
"मेघनक दुआरे सतभैया झूपाएल। जेम्हर साफ मेघ रहए ओन्हुरका तरेगन हूसैत मुदा जेम्हर मेघौन रहए ओम्हुरका मक्लन।"

सुभाष चन्र यादि मण्डल जीक कथाक बारेमे क्लखैत छक्थ : "हुनक कथाक सन्दभमिं जे सिाक्धक उल्लेखनीय बात अक्छ से ई जे हुनक सभ कथामे औपन्यात्सक विस्तार अक्छ।" परन्तु हमर तू मानब ई अक्छ जे क्हनक कथा अपने-आपमे सम्पूणि अक्छ आ अपन सम्बाद या क्ताचोरक सहजतासू कक्ह दैत अक्छ।
हलाक्क पोथीमे कतहु-कतहु छपबामे गलती सभ भेल अक्छ। जेना क्क डाक्टर हेमन्त कथामे हेमन्त केर स्थानपर हमन्त भऽ गेल अक्छ। मुदा पूरा पाथी अपने-आपमे एकटा उतम आ संगह योग्य िस्तु थीक। मैक्थली पाठकके ऐ तरहक कथाके पढबाक आदक्त लगेबाक चाक्हएक्स।

जीनि संघषि(पोथी समीक्ष)

शी जगदीि पसाद मण्डलक उपन्यास जीनि संघषिएक नीक रचना थीक। एहेन रचना अगर मैथिली साहित्यमे लगातार हो आ अहि तरहक रचनाक पचार-पसार नीकसू कुनो जाति-पाति, शिि सम्पदाय, स्थानीयता आदिक दुभाििनासू दूर भऽ कएल जाए तू मैथिली साहित्य महिमा-मण्डित भऽ एक गौरिििाली परम्पराके पारम्भ कऽ सकैत अछि।

हम विज्ञ, ियिसाय आ स्िभािसू मंथरगतिक पाठक छी। नीकसू नीक पोथी चाहे ओ कोनो विषिएसू सम्बन्धित कियाएक नहि हो, हम एक बैसारमे पच्चीस पनासू अधिक नहि पढि सकैत छी। एक दिन अनायास कमप्युटरपर बैसबासू पूििइच्छा भेल जे जगदीि पसाद मण्डल जीक अहि रचनाके ऊपर-झापर देखि ली। यएह सोचि पढए लगलहू। आ जखन पढए लगलहू तू अतेक मग्न भऽ गेलहू जे एकहि बैसारमे १०९ पनाक एहि पोथीके आदिसू अन्त तक पढि गेलहू। बुझना गेल जेना कुनो समाजिास्त्री कििी मानिििास्तक घोर अिलोकनाथी अपन विधाक टेकिंग लए एक समाजमे रहि सघन सहभागी अिलोकन करैत ओहि समाजक एथनोगॉफी लिख रहल होथि। अतिि नहि ओ स्ियिं समाजक सदस्य होमाक मादे अगर कुनो समस्याके उजागर करैत छथि तू ओकर समाधानक हेतु इन्टरििन्सन सेहो करैमे नहि सकुचाइत छथि।

आब जखन कि जीनि संघषि पोथीके अदोपान्त पढि चूकल छी तू अनेक तरहक विचार मोनमे हिलोड लऽ रहल अछि। होइत अछि अगर कुनो कुिाग-बुद्धिबला िििध विदाथी भेटत तू ओकरा उत्साहित करबैक जे जगदीि पसाद मण्डलके

रचनाशैली, जीनि-शिम आ व्यिक्तगत इतिहास तीनूके समेटैत मैथिली समाजक सन्दर्भमे एक समाजशास्त्रीय अध्ययन करए। हम अहि बातके नीक जका बुझैत छी जे हमर एहि तरहक टिप्पणीसू किछु आलोचक आ मैथिली साहित्य केर सुयोग्य विदान लोकनि विफिर जेताह आ हम्मरा इम्मेचीओर आ किछु आनो तरहक उपमासू बजेताह। मुदा हम ई बात बिना कारणे नहि कहि रहल छी। मण्डलजी अहि उपन्यासक पारंभ बूसपुरा गामक परिपेक्ष्यसू करैत छथि। बसपुरा गामक एक नवविआहल अटारह-बीस बखक लडकी जे मात तीनिये मास सासुरसू बसल छलि गामसू एक कोस दूर बसल विसौनीमे दुगापूजाक मेला देखए गेल छलि। ओतए ओहि लडकीके पूजा कमिटीक तीन गोटे फुसला कऽ भंडार घर लऽ गेल। मेला-गनगनाइत। नाच-तमाशाक लाउड-स्पीकर चारि कोसीक नीन उडौने। तीनू गोटे ओहि लडकीक संग दुरबेहिार केलक। बेसि भऽ ओ लडकी सभ किछु बरदास केलक। चारि बजे भोर ओकरा सभ छोडि देलक। मेला भरि ओ किछु नहि बाजलि। मुह-कान झापि मेलासू निकलि सोझे गामक रस्ता धेलक। गामक सीमापर पहुचतहि छाती चहकि गेलइ। छाती चहकितहि हबो-ढकार भऽ कानए लागलि। भिनसुरका कानब सुनि एके-दुइये गामक लोक घर-आंगनसू निकलि रास्तापर आबि-आबि देखए लगल। टोल पर्शि करितहि एका-एकी लोक पूछए लगलै। कानि-कानि अपन बीतल घटना सुनबए लागलि। बिना किछु पुछनहि माए, बेटीके कनैत देखि, छाती पीटि-पीटि कनति करए आ दुनू हाथे पूजिया कऽ पुछलक- “की भेलौ, हम माए छियौ, हमरा ने कहमे ते केकरा कहीही।”

जेना-जेना माए बेटीक मूहक बात सुनैत तेना-तेना देहमे आवा सुनगए लगलै। सुनैत-सुनैत बमकि कऽ पतिके

कहलक - “जखना हमर बेटीक इज्जत खसौनीबला लुटलक तखना खसौनीक दुगास्थानमे मनुक्खक बक्ल पडत।”

फेर की छल! समस्त बसपुराक लोकमे पक्ताधिक ज्ज्ञिला धधकए लागल। खसौनी गाममे आक्रिमण कए कचरमधि करबाक प्लान बनए लागल। मुदा उपन्यासकारक सोझरल मोन देखू। जखन समस्त गामक लोक कचरमबध करबाक योजनाके लगभग ध्विनिमतसू स्वीकृक्त दऽ देने छल ताखि काल गाममे एक-आध एहेन व्यिक्तिक पर्ति होइत अछि जे दुनू गामक बीच सामंजस्य स्थापित करैत छथि। गामक सभसू बुजुर्ग मनधन बाबाक पर्ति लोकक भीडके एक दोसर कदिमे लऽ जाइत छैक। परम्परागत व्यवस्थला समाजमे आइयोक समएमे बुढ-पुरान आ अनुभवी लोकक बडड सम्मान छैक। एकर पमाण अहि सन्दभसिू भेटैत अछि जे जखन मनधन बाबा लोकके दुनू गाममे झगडा नहि करबाक अपन विचार दैत छथिन्ह ताखिखन बेटीक इज्जतक बदला लेबाक लेल बदलाक आवामे जडैत ओहि लडकीक माए पर्विती सेहो मानि जाइत अछि। पर्विती बोम फाबिड कानैत कहैत छैक- “बाबा, ई तू गामक मेह छथिन तूए कहनकर बात मानि लेक्लएक। नै तू आइ खसौनीमे आवा लगौने बाना छोड्बिताऐ। जखैनसू बेटी आइक्ल तखैनसू एको बेर मूह उठा नइ तकैए। कनैत-कनैत दुनू आँखि डोका जका भऽ गेलै। सदिखन एकेटा रट लगौने अछि जे जीवि ये कऽ की हएत? जखन इज्जत चक्लये गेल तखैन कोन मूह समाजके देखाएब।”

कल्पना कर एक माए केर आर्ति आ दिनाके ! आ ओहि समाज आ गामके जकर ब्याहल जनि लडकीक इज्जतक संग कुनो पडोसी गामक लफन्दर सभ खक्ल खेलबार केने होइक!! सभ लड-मरऽक लेल अमादा!! मुदा एक अनुभवी बुजुर्गक पक्त गामक लोकक

आि्चयजिनक सम्मान। जकरा कारण अपन खूनक घूघट पीबा सभ िान्त भऽ जाइत अछि। एक निितारिणक संचार होमए लगैत अछि। लेखक अहि कायकि एक माजल साहित्यकार जका उतम ढंगसू करैत छथि।

उपन्यासक समस्त िया-कलाप बसपुरा गामक इदगिीदि घुमैत समस्त मिथिला समाजक समस्याक वितण करए लगैत अछि- लोकक पलायण केर समस्या, सरकारी मदति आ कायिमके ठीकसू नहि पहुचबाक समस्या, मल्लाह-पोखरि (जलकर) आ सोसाइटीक समस्या, किसान बोनिहारक समस्या, कोिीक कहरक समस्या, एक विधिा जकर पति कमे िएसमे मरि जाइत छैक, बेटी ब्याहल छैक आ बेटा नौकरी करए लेल जे पदेि गेलै से तीन बरख धरि गाम नहि अएलैक, तकर समस्या, मिथिलाक विधिा सबहक समस्या आ विधिा सबहक सामाजिक ििजाितक जका विभिन शेणीमे विभक्त कए ओहि शेणी सबहक समस्या, कोिी नदीके कटाब कोना बसपुरा गामक लोकके मातृभूमि केर परिभाषासू दूर करैत अछि तकर समस्या, एक कुमहार आ ओकर सपनाके सही अथमि साकार करबाक समस्या, दू-गामक लोकक बीच उपरिी तति दारा समस्या उत्पन करब आ गामक समझदार लेल अथक पयास करबाक समस्या, आदि-आदि। एना बुझाएत जे बसपुरा गाम उपन्यासकार, जगदीि पसाद मण्डल जीक पयास दारा एकटा मिनिएचर मिथिला बनि गेल अछि।

पोथीक एक-एक पात्र-पोथिक नामकरण जीबन संघषि के सटीक पमाणित करैत आगा बढैत अछि। पाठक उपन्यासक संग जीिनसू संघषि करए लागैत अछि : हूसैत, बाजैत, जुझैत, कानैत आ फेर उपन्यासकारक पयाससू नि उत्साह आ नि

चेतना पाबि जीनिके पुन: साथकि बसध करबाक योजनामे संलग्न होमऽ लगैत अछि। मण्डलजी भेरचाल चलऽ बला उपन्यासकार आ साहित्यकारसू हटि अपन स्तिन्त अस्तित्ि बनबैत एक दिस तू समस्याक णिनि करैत छथि आ दोसर दिस समस्यासू घबराइत नहि छथि। कुनो ैमिनस्यता कंि ि बदलाक भािनासू गिसत नहि छथि। समस्याक समदान जे कि यथाथािदी समदान सेहो पस्तुत करैत छथि। आ उपन्यास बिना कुनो अिरोधके आगा बढल जाइत अछि।

रमेसरा दिल्लीसू िपस आबि आब गामेमे अनेक तरहक समानक दोकान खोलने अछि। समानमे लोहा आ लकडी दुनू िस्तु छैक : "हूसुआ, खुरपी, टेगारी, पगहिरया, कुडहिड, खनती, चकू, सरौत, छोलनीक संग चकला, बेलना, कता, रेही, दाइब, खराम.......।"

दिल्लीमे जे लोक जत्थाक जत्थामे मजदूरी करए अबैत अछि तकरा बारेमे ओकर िचार बडा सटीक छैक : "दल्ली सेट सभके फुलपेट, चकचकौआ िटि घडी, रेिडयो, उनटा बािरी देिख हमरो मन खुरछाही कटए लगल। गामपर ककरो कहिि ने केिलऐ आ पडा कऽ चिल गेलौ। अपने जाितक-बरही ऐठाम नौकरी भऽ गेल। तीन हजार रपया मिहना दरमाहा आ खाइले दिअए। मुदा तते खटबे जे ओते जू अपने गाममे खटी तू कतेक बेसी होइए। घुिर कऽ चिल एलौ। जिहया सुनिलऐ जे अपनो गाममे काली-पूजाक मेला हएत तिहयासू एते समान बनौने छी। कहुना-कहुना तू चािर-पाच हजारक समान अछि। कोनो की सडै-पचैबला छी जे सिड जाएत। तोरा सभके ने बुिझ पडै छौ जे दिल्लीमे हुन्डी गारल अछि। हम एके मासमे बुिझ गेिलऐ। जखन अपना चीज-बौस बनबैक

लूटि अछि तखन अनकर तबेदारी किअए करब। अपन मेहनतसूँ मालिक बनि कऽ किअए ने रहब। तूँ सभ ने अनेक कोठा आ सम्पत्तिके अपन बुझै छीही। मुदा ई बुझै छीही जे धनिकहा सभ तोरे मेहनत लुटि कऽ मौज करैए। अखैन जो, कनी दोकान लगबै छी।''

माटिसूँ जुडल उपन्यासकार मण्डलजी रमेसराक माध्यमसूँ मिथिलासूँ पलायन करैत लोकके मिथिलेमे रहि अल्टरनेटि धन्धाक उक्ति बता रहल छथि।

उपन्यास आगा बढैत अछि। डोमक धंधा आ ओकर विया-कलापक सजीि णिनि एहेन जे सोझे गाम चलि जएब। बिना कोनो नोन-मिरचाइ लगौने, सहज आ स्भाविक। मण्डलजी जनसामान्यक बात आ परिस्थितिक णिनि जनिणीमे करैत छथि। समस्त उपन्यासमे कुनो एहेन िब्द नहि भेटत जकर अथिएक साकिर मातोके बुझएमे दिकत हो। एक दिस यातीजी मिथिलाक परिस्थितिसूँ परेिान होइत जतऽ दिल्ली अथिा आनठाम पलायन करबाक विचार दैत स्िंयं दिल्ली चलि जाइत छथि : ''आब जू तू अतए रहि/ कहतौ लोक बताह/ तूए हम्मर बात मान आ सोझे दिल्ली जाह/'' कहै छथि ठीक एकर विपरीत मण्डलजी परिस्थितिसूँ सामना करबाक लेल अपन पातकके ब्यौत बुझबै छथि। चाहे ओ मिठाइ बनाबैबला हो, लोहार हो, कुम्हार हो, अथिा कियो आर हो। मण्डलजी कथनी आ करनीमे सामंजस्य रखै छथि आ स्िंयं गामेपर रहै छथि। कहियो चाकरीक खोजमे मिथिलासूँ बाहर नहि गेलाह।

उपन्यास आगा बढैत अछि। भगता जहल किएक गेल रहै तकर णिनि ियद समाजक अन्ध ि्यस्थापर पहार थीक। केना ओ एकटा कलकतामे नोकरी करनिहारक घरबालीक

संग मध्यरात्रिमे गलत कार्य किरबाक कोशिश केलक आ भण्डा-फोरी भऽ गेलै, तकर नीक शिक्षा पोथीमे भेटैत अछि।

पोथीमे जखन जोवानदर अपन गह ठीक करबाक लेल विविध रपे दान पूण्य करबाक विचार करैत अछि तू मंगलसू बात करैत मसोमात सभके मदति करबाक हेतु तैयार भऽ जाइत अछि। अतय सेहो मण्डलजी सरकारी सुविधा आ मसोमातपर मंगलक मूहसू समाजक पदस्थितिपर पहार करैत लिखैत छथि- “अपना ऐठाम दू तरहक मसोमात अछि, एक तरहक सरकारी अछि आ दोसर तरहक समाजक अछि। सरकारी मसोमात ओ छी जे सरकारक देल सभ सुविधा पबैत अछि। आ समाजक विधि ओ छी जेकरा ने सरकार जनै छै आ ने ओ सरकारके जनैत अछि। कछु गनल सरकारी मसोमात अछि जे ओकर पोसुआ छी। जे कोनो सरकारी सुविधा मसोमात सबहक लेल औत ओ ओकरे भेटतैक। अजीब खेल सरकारो आ मसोमातोक अछि। ओहि पोसुआ मसोमातके इन्दिरो आसिक घरो छै आ बाढि-बरखामे घरखस्सीक रपैआ सेहो भेटतै आ बाढिसू क्षति फसलक क्षतिपूर्तिक रपैआ सेहो ओकरे भेटतै। ततबे नहि, वृधावस्था पेंशन सेहो ओकरे भेटतै आ रोजगार चलबैक नामपर सबसीडी सेहो भेटतै। ते सरकारी मसोमात छोडि जे गरीब समाजक मसोमात अछि, जू ओकरा जीबैक उपाए भऽ जाए तू उपाय केनिहारके अइसू बेसी दान-पुनक फल कतऽ भेटतै। धन्यवाद ओहि माए-दादीके दी जे सतर-असी बखक बितौलाक बादो जेठक दुपहरिया, भादिक झाट आ माघक शीतलहरीमे, जी-जानसू मेहनत करैत अछि। धन्यवाद ओहि अस्सी बखक मैयाके दी जे माथपर धान, गहूम, मकैक बोझ लऽ कऽ दुलकी चालिमे गीत गुनगुनाइत खेतसू खरिहान अबैत छथि।..... तूए पहिने जा कऽ ओहि मैया सभके गोड लागा कहिहक

बाबी, समाजर पी पविरिक अहू छी आ हमहू छी, तूए कमाइबलाक ई दाियत् बिन जाइत अिछ जे पविरिमे बृध आ बच्चाक सेि इमानदारीसू होय। हम अहाके मदित सेिक र पमे दऽ रहल छी। तखन ओ िचारी हूिस कऽ अिसरि द देथुन।"

साििहत्यके समाजक दपिण कहल जाइत अिछ। दपिण तखन जखन साििहत्यकार पारखी होिथ। समाजक संग चलिथ। सामािजक ियिस्थाके समएक संग िचिना करैथ। साििहत्य सृजनक धमिक बुझिथ। मण्डलजी एिह कायिक इमानदारीपूििक केलन्िह अिछ। एिह उपन्यासके िहन्दी, अंगेजी इत्यािद भाषामे अनुिािदत कए पचार-पसार होमाक चाही। ई रचना समाजक दपिण अिछ। एक नि्चल आ आििन िचारधाराके पितपािदत करैत अिछ। जगदीि पसाद मण्डल अपन कृितमे Native intelligence केर अभूतपूिि पिमाण दैत छिथ। पुस्तक केर साज सज्जा, आिरण इत्यािद नीक अिछ। पकाि क सेहो धन्यिादक पात छिथ।

मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य

परिचय

५००० वर्षपुरान भारतीय संस्कृति अपन आगामी पीढी के परंपरा, आधुनिकता आ मूल्य प्रणालीक संयोजन सँ युक्त विरासत प्रदान कएलक, जे समयक गति , बेर बेर भेल विदेशी हमला आ जनसंख्या मे पैघ वृद्धिक बाजूदो नीक सँ राखल गेल अछि । ई हुनका लोकनि के विविध अभिव्यक्ति प्रदान कएलक । २० म सदी अनेको क्षेत्र मे महत्वपूर्ण रहल आ एहि संबंध मे कलाक उल्लेख सेहो कएल जा सकैछ । २०म सदी मे बनल गीत, नाचक रूप, साहित्यिक काज आ कलाक काज मे नव अभिव्यक्ति आयल आ ई बात साबित भऽ गेल जे ई सदी नहि केवल मानव इतिहास मे महान रहल वरन नव आविष्कार आ तेज नवीकरणक अवधि सेहो रहल । जहन कि कलाक सभ रूप पर्याप्त उपलब्धि प्रदर्शित कयलक, सिनेमा, पॉप म्यूजिक आर टेलीविजन सन नव - नव एहेन नव कला रूप सेहो आविष्कृत आ लोक-प्रिय भेल । मिथिला चित्रकला (पेंटिंग) जे मधुबनी चित्रकला (पेंटिंग) क रूप मे सेहो जानल जाईत अछि । मूल रूप सँ एहि क्षेत्रक सभ जाति आ समुदायक महिला द्वारा बनाओल जाइत अछि । एहि देशक महिला अति प्राचीन समय सँ विभिन्न रूपक रचनात्मकता मे स्वयं के संलग्न रखलनि । हुनक रचनात्मकताक सभ सँ नीक चीज प्रकृति, संस्कृति आ मानव मनोवृत्तिक बीच सम्बंध अछि । ओ ओही सामग्रीक उपयोग केलनि जे हुनका लग पास मे पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध छल । लोक चित्रकला आ कलाक आन रूपक माध्यम सँ ओ अपन इच्छा, सपना, आकांक्षा के व्यक्त कलनि आ अपन मनोरंजन सेहो केलनि । इ

समानान्तर साकरता थिक, जेकरा दारा ओ लोकनि अपन सौदर्यविषयक अभिव्यक्ति के व्यक्त केलनि । हुनक रचनात्मक कला स्वयं मे लिखनाईक शैली मानल जा सकैत अछि, जेकरा दारा हुनक भावना, आकांक्षा, विचारक स्वतंतता आदिक अभिव्यक्ति होइत अछि । हुनक पृष्ठभूमि, पेरणा, आशा, सौदयविषयक सजगता, संस्कृति जान आदि हुनक सभ संभव कला मे व्यक्त भेल । हुनक कलाक विषय मे लिखबा आ गप्प करबा सू पहिने हुनक आंतरिक संस्कृतिक स्तर आ सिखबाक तरीकाक विषय मे जानब आवश्यक अछि । ई आलेख महिला के केन्द्र बिन्दु मे राखि के लिखल गेल अछि ।

एहि देशक कोनो क्षेत्र महिला रचनात्मकता सू फराक नहि अछि । हम पंजाब मे फुलकारी, गुजरात मे शिरली, लखनऊ मे चिकन कशीदाकारी, उतर मे बुनाई, बंगाल मे कंथा, राजस्थान मे लघु चितकला, बिहारक मिथिला क्षेत्र मे सुजनी आ केथरीक रूप मे मिथिला चितकला (पेंटिंग) क उदाहरण देखैत छी ।

मिथिला पेंटिंग एहि क्षेतक महिला लोकनिक जीवित रचनात्मक काज अछि । ई मुख्यत: मिथिलाक गामीण महिला दारा कागज, कपडा, बन- बनायल पोशाक आदि पर चित्रित कएल गेल पसिध लोकचित अछि । मूलत: ई मुसलमान सहित सभ जाति आ समुदायक महिला दारा पाकृतिक रंग सू देबार आ सतह पर बनाओल गेल लोकचित थिक । बाद मे किछ लोक एहि मे रुचि लेलनि आ महिला लोकनि के अपना कला के देबार आ सतहक अलावा कैनवास पर उतारबाक पेरणा देलनि आ एहि रूप मे एहि कला के कला जगत मे आ बाजार मे पहचान भेटलैक । एहि लोक कलाक अपन इतिहास, सास्कृतिक पृष्ठभूमि, महिलाक एकाधिकार आ विशिष्ट क्षेतीय पहचान अछि । मिथिला कतय अछि ? एहि भूमिक सास्कृतिक अ ऐतिहासिक महत्व

की अछि ? इ कला मिथिला मे विशेष रूपे किएक अछि ? एहि कला रूपक विषय मे किछु लिखबा सँ पहिने एहि प्रश्नक समक उत्तर अपेक्षित अछि ।

भारतक पैघ शहर आ आधुनिक दुनिया सँ दूर एक सुंदर क्षेत्र अछि जे कहियो मिथिलाक रूप मे जानल जाईत छल । ई पूर्वी भारत मे स्थापित पहिल राज्य छल । ई क्षेत्र उत्तर मे नेपाल, दक्षिण मे गंगा, पश्चिम मे गंडक आ पूब मे बंगाल धरि पसरल मैदानी भाग अछि । तिमान बिहारक चंपारण, सहरसा मुजफ्फरपुर, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढी, सुपौल, समस्तीपुर, मुंगेर, बेगूसराय, भागलपुर आ पूर्णियाँ जिलाक भाग मिथिला अछि । ई पूर्णत: समतल अछि । एकर माटि दोमट अछि जे गंगा नदी द्वारा आनल गेल अछि । यदि मानसून मे विलंब भेल या कम वर्षा भेल तँ फसल मे रुकावटि अबैत अछि । लेकिन यदि प्रकृतिक देवताक कृपा भेल तँ पूरा मैदान हरियरे हरियर रहैत अछि । मधुबनी पेन्टिंगक हृदय स्थली अछि । एहि क्षेत्रक सघन हरियाली प्राचीन दर्शक लोकनि के ततेक आकर्षित कयलक जे ओ एहि क्षेत्र के मधुबनी (मधुक जंगल) कहलनि । आब इ जिला पेन्टिंगक लेल सब सँ बेसी जानल जाइत अछि । एहि पौराणिक क्षेत्र मे राम (अयोध्याक राजकुमार आ विष्णुक अवतार) सीता सँ वियाह केलनि । सीताक जन्म हुनक पिता जनक द्वारा हर (हल) जोतबाक समय भेल । मिथिला ओ पवित्र भूमि अछि जतय बौध धर्म आ जैन धर्मक संस्थापक आ संस्कृत विद्याक छह परंपरागत शिक्षाक विद्वान जेना कि याज्ञवल्क्य, वृद्ध वाचस्पति, अयाची मिश्र, शंकर मिश्र, गौतम, कपिल, सचल मिश्र, कुमारिल भट आ मंडन मिश्रक जन्म भेलनि । १४ वीं सदीक प्रसिद्ध कवि विद्यापतिक जन्म मिथिला मे भेल जे अपन पदावलीक माध्यम सँ एहि क्षेत्र मे राधा आ कृष्णक

बीचक संबंधक व्याख्या करैत पेम गीतक नि र प के अमर बना देलक्ष । इएह कारण अच्छ जे लोक हुनका जयदेकि पुनजन्मि र प मे (अवमनि जयदेि) स्मरण रखलक । कणमियोर (बंगालक एकटा ाित्तीय संस्कृत कवि) अपन पक्सध भक्तिमय महाकाव्य "पावरजात हरण" मे मिथलाक लोकक विदताक वर्तण केलक्ष । कृष्ण अमराितीसू दारका जेबाक मागमे एक्ह भूमक ऊपर सू उडैत काल सत्यभामा सू कहलक्ष, "कमलनयनी ! देखू ई मिथला थक, जतय सीताक जन्म भेल । एतय विदान लोकक्तक जीह पर सरसिती सगनिचैत छथ (मश, कैलाि कुमार २०००) " । मिथला एकटा अद्भुत केत्र अच्छ जतए कला आ विदता, लौकक आ विदक व्यिहार दुनू पूणसौहारसिक्हत संग संग चलैत अच्छ ।

पृष भूम

भारतक विविधता जेका एकर लोक कला एक्ह देकि बहुविध संस्कृत के विभिन रंग दारा पदविति करैत अच्छ । ई कला (पेन्टंग) लोक कलाक समुरक र प मे मानल जाइत अच्छ, जाक्ह मे पाचीने समय सू लोकपय कला रचना भारतीय उपमहादीपक हर भाग सू अबैत रहल । भारतक कला मध्य मिथला पेन्टंगक अपन महयपूणस्थान अच्छ । मिथला मे मक्हला देबार, सतह, चलायमान स्तिु आ कैनिस पर पेन्टंग करैत छथ, माक्ट सू देिता, देिी] जानिर आ पौराणिक पातक पतिमा बनबैत छथ; मक्की घास सू टोकरी, छोट- छोट रितन और खलौना बनबैत छथ, केथरी आ सुजनी बनेबाक र प मे कशीदाक काज करैत छथ, विभन तरहक धाकमिक आ काजक चीज बनबैत छथ । ई कलाक काज मक्हला दारा दैकमक काजक र प मे कएल जाइत अच्छ, जे हुनका पूणरिचनात्मक व्यक्ति, एकटा गायक, मूर्तिकार, क्चतकार , कशीदाकार आ सभ ककछु बनबैत अच्छ । पीढी

दर पीढी मिथिलाक महिला विभिन्न विधि पेंटिंग बनेलक अछि ।

चचा

मिथिला मे सामान्यतया पेंटिंग महिला द्वारा तीन रूप मे कएल जाइत अछि : सतह पर पेंटिंग, देबार पर पेंटिंग आ चलायमान वस्तु पर पेंटिंग । प्रथम श्रेणी मे अरिपन अबैत अछि जे सतह पर अरबा चाऊर (कच्चा चाउर) क लई सू बनायल जाईत अछि । सतहक अलावा एकरा केरा आ मैना पात आ पीढी पर सेहो बनाओल जाइत अछि । एकरा दहिना हाथक आंगुरक प्रयोग सू बनाओल जाइत अछि । तुसारी पूजा (कुमारि लडकी द्वारा नीक पतिक कामना सू शिव और गौरी के प्रसन्न करबाक लेल व्योहार) क अरिपन उज्जर, पीयर आ लाल रंगक चाऊरक चूर्ण सू बनाओल जाइत अछि । विभिन्न अवसरक लेल विभिन्न तरह क अरिपन होईत अछि । अष्टदल, सप्तिभर दशियत आ स्वस्तिक एकर मुख्य प्रकार अछि । देबार परहक पेंटिग अनेको रंगक होईत अछि । एहि मे मुख्यत: तीन सू चारि रंगक प्रयोग होईत अछि । एहि मे नयना जोवान, पुरैन, माछक भार, दही, कटहर, आम, अनार आदिक गाछ आ चिडै जेना सुग्गाक चित्र बनाओल जाइछ । चलायमान वस्तु पर पेंटिंग मे शामिल अछि माटिक बरतन, हाथी, सामा- चकेबा, राजा सलहेस, बासक आकृति, चटाई, पंखा आ सिक्की सू बनल वस्तु । एहि मे सू कतेक पेंटिंग तान्त्रिक महत्व क अछि । विवाहक समारोहक दौरान किछु आधिकारिक प्रथाक सेहो पालन विशेषमहिला द्वारा कएल जाइत अछि जेना ठक-बक, नयना- जोवान आदि, जे मिथिला तंत्र सू संबंधित अछि ।

देबार परहक पेंटिंग आ सतह परहक पेंटिंग जे घर के सुन्दर बनेबाक लेल आ धार्मिक उद्देश्य सू कएल जाईत अछि, महाकाव्य युग सू चलि रहल अछि । तुलसीदास अपन महान काव्य रामचरितमानस मे

सीता आ रामक वियाहक अिसर पर कएल गेल मिथिला पेंटिंगक िणिन केलक्ि अिछ । राम आ सीतक सुंदर जोडी सू पभावित भऽ कऽ गौरी वियाहक समारोह मे भाग लेलक्ि आ कोहबरक चितण करय चाहलक्ि जतय सुमंगलीक के एिह आदि िजोडीक लेल गीत आ संबंधित विधि व्यिहार करक छलक्ि । एिह चितण मे परंपरागत चित, हिन्दू देिी- देिताक चित आ स्थानीय जीि-जन्तु आ िनस्पितक चित बनाओल जाइत अिछ । मिहला कलाकार एिह कलाक एकमात अिमरक्क छिथ, जे ई चितण करैत छिथ आ पीढी दर पीढी ई माय सू बेटी के हस्तातिरत भऽ जाइत अिछ । ओ एिह कला रप के पाचीन समय सू बचा के रखने छिथ । लडकी बि आ रंग सू नेने सू काज करब िुर करैत छिथ जेकर पराकाषा कोहिर मे देखल जा सकैछ । वियाह सू संबंधित सभ धािमिक समारोह कोहबर मे होइत अिछ । अिहितक पाििल के चािर िदन लगातार जरा कऽ राखल जाइत अिछ । मिथिला पेंटिंग (मधुबनी पेंटिंग) क ितिमीन रप देबार पेंटिंग, सतह पेंटिंग केर कागज आ कैपस पर रपातरण िथक । ई पयोग बहुत पुरान निह अिछ । २०िी सदीक सािठक दिक मे भयंकर अकालक चुनौती के सामना करक लेल मिहलाक लेल काजक अिसर िािमत िकछु मिहला लोकिन देबार आ सतह परहक अपन कला के कागज या कैनिस पर उतारब िुर केलक्ि । पारंभ मे एकरा देखिला कम लोक छल परन्तु बाद मे एिह मे ििृद्ध भेल । एिह काज मे मिहला लोकिन के खूब सफलता भेटल आ व्यिसायक एकटा नि मागि खूजल । ताहि समय सू पेंटिंग मे विविधता आएल अिछ । देबार पेंटिंग के हाथ सू बनल कागज पर हस्तातिरत कएल गेल आ धीरे- धीरे ई आन स्थान यथा गीिटंग काडि डेस, सनमाइका आिद पर सेहो उतरल । नीक चिताकन,

चमकदार सिंदेिी रंग, सभ संभि सिंदेिी पयोग आदि सू पूरा दुिनयाक दिृि आकिषत भेलाह । पारंभ मे िकछु बाह ण मिहला के एिह कला कमक अिसिर देल गेल परन्तु १० िषक बाद िकछु कायिस्थ मिहला एक िन रीक्षक संग एिह क्षेत्र मे एलीह । एखन धिर हिरजन मिहला एिह क्षेत्र मे निह आयल छलीह । सीता देिी िमिथला पेिटंगक बाहमण स्टाइल के आगा बढेलीह । एिह मे मुख्यत: कोहबर और देिी देिताक िचत छल । बौआ देिी आ हुनक बेटी सिरता सेहो एिह क्षेत्र मे अपन पयाप्त योगदान देलिन ।

कायस्थ मिहला एिह क्षेत्र मे सेहो आगा अएलीह आ सतिरक दिक मे हुनक पहचान बनल । ओ लोकिन गाम आ धािमक दृि्य के पेिटंग मे स्थान देलिन । गंगा देिी, पुष्पा कुमारी, कपूरी देिी, महासुन्दरी देिी आ गोदािरी दत पमुख कायस्थ मिहला कलाकार छलीह । एिह दुनू िगिक मिहला कलाकार लोकिनक पयास सू िमिथला कला के मूतिरिप भेटल ।

तेसर समूह हिरजन मिहला १९८० क दिक मे आगा अयलीह । दुसाध आ चमार जाितक मिहला लोकिन परंपरागत पेिटंग क पयोग अपन धािमक काज आ घर-िािर सजेबाक लेल करैत छलीह । ओ लोकिन गोदना आ अन्य चमकदार रंगक पयोग अपन पेिटंग मे करय लगलीह । बाद मे एिह मे लाईन, तरंग, िृित आिद सेहो जुिड गेल। जमुना देिी आ लिलता देिी पिसध हिरजन कलाकार भेलीह । ओ लोकिन पेिटंग मे दैिनक जीिनक िस्तु जातक सेहो िचतण करय यगलीह । आब तू सभ जाितक लोक एिह कलाक उपयोग जीिवका अजिन िनिमत करैत छिथ ।

सभ कलाकर लोकिन रंगक लेल मुखयतया पकृित पर िनभिर करैत छिथ । ओ लोकिन माटि, छाल, फूल , जामुन सू कतेको पाकृितक

रंग नकालैत छथि । रंग मुख्यत: लाल, नीला, हरियर, कारी, हल्कापीयर, गुलाबी आदि होईत अछि । पारंभ मे घर मे बनाओल गेल रंग सू काज चलैत रहल तथापि एहि विदि सू पाप्त रंगक माता कम होईत छल आ ते महिला लोकनि बाजार मे उपलब्ध रंगक पयोग करब सेहो ि र केलनि ।
कोहबरक चितांकन पौराणिक , लोकगाथा आ तांत्रिक पतीक पर आधारित अछि । कोहबरक चितण नि जोडाक के आ ीषक निमित कएल जाईछ । एहि पेन्टिंग मे सीताक वियाह या राधा कृष्णक चितांकन अछि । कि्त भूमि हेबाक कारणे मिथिला पेन्टिंग मे वि ि, कि्त, काली, दुगा, हनुमान , रा णि आदिक चितण सेहो भेटैत अछि । उ रिता आ संपनता पतीक यथा माछ, सुग्गा, हाथी, काछु, सूरज, चन्द्रमा, बास, कमल आदिक चितांकन पमुखता सू होइत अछि । एहि पेन्टिंग मे देतिाक स्थान बीच मे आ हुनक पतीक, निस्पति आदिक स्थान पृष भूमि मे रहैत अछि ।
ि ाणज्यीकरण सू एहि कला के नोकसान पहूचल अछि । महिला आ पुर ष एहि कला के ि हिर आ नगरक बाजार सू सीखि रहल छथि । पवि किण देखिहार स यिं एहि कलाक तर्य आ सौदय ि सू अनभिज छथि । किछु गोटा तू रंगक संयोजीकरण, पकृति सू एकर पाप्ति, पृष भूमिक निमाण, लय, रंग, गीत, विधि, नृत्य सू एकर संबंध आ पेन्टिंगक ढंग सू सेहो अपरिचित छथि । पेन्टिंगक विषय बा डिजाइन आब अधिका ि मामिला मे खरीददार दारा निणीत होइत अछि । खरीददार केन्द्रित पहल एहि महान कला र पक रंग, डिजाइन, मूल, सं ि दिना आदि पर खतरा अछि । हम देखैत छी जे तांत्रिक पेन्टिंगक नाम पर महिला मिथिलाक परंपरा सू बहुत अलग किछु बन ि ति छथि । ि ाणिज्यकरण सू बहुतो पुर ष कलाकार सेहो एहि मे र चि लेब

ि र केलक्त अछि । ओ एहि मे महिलाक महत्व के बुझने बिना पेन्टिंग करैत छथि । ओ मिथिला पेन्टिंगक नाम पर खरीदनाहारक जर रुचिक मोताबिक कोनो पेन्टिंग करक लेल तैयार रहैत छथि । लेकिन जहन हम लोक आ परंपरागत पेन्टिंगक र प मे मिथिला पेन्टिंगक गप करैत छी , जे धार्मिक अ सिर पर बनाओल जाइछ या भारतक कोनो धार्मिक पेन्टिंगक गप करैत छी तू हम देखैत छी जे एहि मे कतेको कार्यकलाप जूडल अछि । ई संयोजन िस्तुत: कला के वि षि महत्व दैत अछि । अधिारणा आ अनुभ कि आधार पर देखला सू सभ स्थानीय, क्षेत्रीय, अखिल भारतीय आ भारत सू बाहर कलाक अभिव्यक्ति आंतरिक मन सू उभरैत देखाइत अछि आ जीनिक एकटा अभिन अंग अछि । पेन्टिंग, गीत, नृत्य, कविता आ आन कायात्मक चीज के पौराणिक कथा, धार्मिक रीति, व्योहार आ संस्कार सू अलग कऽ कऽ नहि देखल जा सकैत अछि । जहन एकटा पेटर देबार या सतह के पेट करैत रहैत छथि तू अन्य महिला लोकनि गीत गाबि कऽ हुनका मदद्द करैत छथिन । लोक कथा सू लेल गेल जान सेहो हुनका पेन्टिंगक लेल विषिय पदान करैत अछि । तांत्रिक पेन्टिंग िस्तुत: मधुशाणिीक कथा पर आधारित अछि । आ एहिना पेन्टिंग आ आन कलाक संबंध कतेको लोक कला सू अछि ।

एकटा महिला जहन देबाल पर चित्ताकन करैत छथि तू ओ कतहु सू आर्थिक लाभक आि नहि करैत छथि । तथापि जहन ओ अपन पेन्टिंग के बेचबाक लेल बनबैत छथि तू हुनक पूरा ध्यान संस्कृति सू गाहक दिस चलि जाईत अछि । तहन ओ परंपरा के जीवित रखबाक लेल पेन्टिंग नहि करैत छथि, िरन जीविकाक लेल पेन्टिंग करैत छथि । मिथिला सू जीविकाक कारणत सतत पलायन सेहो एहि पेन्टिंग के बाहर अनलक अछि आ बाजार मे एकरा नि खरीददार भेटलैक अछि

।

किछु चित्रकार अर्थात कर्पूरी देवी, गंगा देवी आ जमुना देवी अपन खानदानक जरूरतक अनुसार पहल केलन्हि अछि । गंगा देवी अपन पेंटिंग मे रामायण चित्र के उतार लेलन्हि अछि । गंगा देवी मधुबनी सँ अपन यात्रा शुरू केलन्हि । ओ इलाजक सिलसिलामे दिल्ली एलीह । ओ अपन पेंटिंग मे रेलगाडी, डॉक्टर, अस्पताल, सीरिंज, मेडिकल आदि सभ किछुक चित्रांकन केलन्हि । हुनक पहल अनेको तरह सँ विवादित छल । किछु लोक हुनक आलोचना केलन्हि जे एहि सँ मिथिलाक लोक चित्रांकन के हानि होएत, तथापि बहुतो लोक हुनक समर्थन केलन्हि ।

जमुना देवी आ हुनक भाई शिवन राम चमकीला रंगक स्टाइलक विकास केलन्हि, जेकर बराबरी मिथिला कला मे नहि अछि । ओ स्वयंभू कलाकार छथि आ जानवर जेना कि गाय आदिक चित्रण सँ आनंदित होईत छथि । हुनक चित्रण पक्षपाती सँ स्वतंत्र अछि । तथापि ओ रंगक पाबन्दी, कैनवासक पृष्ठभूमिक निर्माण, सजीव चित्रांकन आदि मे परंपराक पालनक पक्ष दृढ छथि ।

इ चित्रकार लोकनि भूकंप, नदी आ आन कोनो वस्तुक चित्रांकन करैत छथि, जे ग्राहक हुनका सँ चाहैत छथि । जितवारपुर आ राटी गाम मे मिथिला पेंटिंग व्यावसायिक कार्यकलापक रूप मे उभरल अछि । जहन हम हाले मे जितवारपुर गेलहुँ तँ देखलहुँ जे जमुना देवी १५ सँ बेसी छात्र के, जे हरिजन सँ लऽ कऽ ब्राहमण परिवार सँ छल, पढबैत छलीह । पुछला पर ओ उत्तर देलन्हि, "हम एकरा सभ के माय जेना पढबैत छियैक । ई सभ एहिठाम अपन घर जेका अनुभव करैत अछि । हम एकरा सभ सँ कोनो फीस नहि लैत छियैक । अगर हम फीस लेबैक तँ हमर कला गंदा भऽ जायत ।

सब सू उतम पुरस्कार हमरा लेल इ अछि जे जहन कोनो बाह ण लडकी अपन पर्व किए पूरा केलाक बाद हमर पयर छुबैत अछि तू हम ओकरा हृदय सू आशिष दैत छियै आ एकटा पमाणपत सेहो दैत छियैक।"

कोबर्थला पेंटिंग कला सू उपर अछि । एहि रचनात्मक क्षमता सू महिलाक एक समूह अपन इच्छा, सपना, आकांक्षा, आि आदि के व्यक्त करैत छथि । यदि अहा हुनका सू पुछबक जे की कऽ रहल छी तू उतर भेटत "गहबर या कोहबर लीख रहल छी"। हुनका लोककलाक लेल हुनक स्टाइल एक तरहक कविता थिक, जेकरा माध्यम सू ओ पुरष समुदाय या दुनियाक बाकी लोक सू संवाद करैत छथि । ओ कलात्मक लेखक छथि जे अपन भावना के पेंटिंगक माध्यम सू लिखैत छथि । वस्तुत: ओ सृजनकता आ ईशरक समीप छथि । आधुनिक युगक कारणे यदपि किछु पुरष-पात सेहो एहि क्षेत्र मे उतरलह अछि, परंतु मूलत: आईयो ई महिलाक रचना थिक ।

निष्कर्ष

यदि भरत नाटयम, मणिपुरी, कुचीपुडी, ओडिसी आ सतरिया नृत्य के मूल र प मे रखैत दिनानुदिन लोकप्रिय कएय जा सकैत अछि, तू एहि महान लोक चितकला के मूल र प मे किएक ने राखय जा सकैत अछि? कला वस्तु के बेचनाई खराब नहि थिक, तथापि खरीददारक समक कलाक संपूर्ण परंपरागत रचनात्मकता आ मूल्यक समर्पण ठीक नहि थिक । कोबर्थला पेंटिंगक मूल र प मे बचा दऽ रखबाक लेल गभीर चिन्तनक आवश्यकता अछि । अन्वेषणकता, गैर सरकारी संगठन पेशेवर, लोक कलाकार आ संबंधित व्यक्ति के एहि कलाक मौलिकता बचेबाक लेल एकजुट भऽ जेबाक चाही।

मेिड आ मालिक साझी लोककला : एक पक्चय

मक्हला संस्कृक्त रकण केर संिक्हका छक्थ। ई परम्परा सनातनसू िशत अक्छ। संस्कृक्त अगर लोक संस्कृक्त हो तू मक्हला लोकक्के लगभग एकाक्धकार भऽ जाइत छक्ह। जइ कायि संस्कार, रीक्त इत्याक्दके िास्त्तीय परम्परा दारा मक्हला लोकक्त नै कऽ पबैत छक्थ तकरा लोकपरम्परा आ लोक विधान दारा विस्तारसू करैत छक्थ। क्मक्थला संस्कृक्त मे तुसारी, मधुशािणी, आम-महु क्बआह, जटा-जक्टन, क्बआहक पाित् कोहबर घरमे सम्पाक्दत अनेक क्दनक विक्ध-बेिहार एकर उदाहरण अक्छ। लोक परम्परा समकि ति परम्परा होइत अक्छ। एक विक्धक संग अनेक विया-कलाप आ रचनात्मकता संलग्न रहैत अक्छ- पूजा पाठ, तंत-मंत, क्पतृ आराधना, गीत-संगीत, जादू-टोना, िस्त विन्यास, विक्भन कलाक पदिि इत्याक्द। सभ आपसमे ताना बाना जका जुटल। एक-दोसरक पक्त समक्पित। एकके क्बना दोसरक सम्पादन असंभि।

15 क्दनक क्पतृपक एखने अथात् 15 अक्टुबर 2012क समाप्त भेल अक्छ। ऐ पन्रह क्दनमे हमरा लोकक्त अपन समस्त स्िगिसी क्पतृ एिं मातृके स्मरण करैत हुनका लोकक्के तील-जलसू तृप्त करैत छी। आिह तपिि आ पुन: जयबाक केर्िदन :

"ऊ आगच्छन्तुमे क्पत इमम् गहनन्तु जलाजक्लम्।।"

"हे क्पत (मातृ) आऊ आ जलके स्िीकार कर । आब अहा देिलोकमे छी। तूए हमरा लोकक्क कल्याण कर ।")

क्पतृ पकमे लगातार पन्रह क्दन धक्र राजस्थानक

मेिाड (अथात् उदयपुर, महासमद) आ मध्यपदेिक मालिा (उज्जैन, इन्दौर ग्िालियर आदि)))))) मे कुमािर कन्या सभ साझी पूजैत छथि। साझीमे अनेक तरहक िचतकलाक आ िबम्बक िनमाण करैत छथि, गीत गबैत छथि आ अन्तत: साझीके जलकरमे भसा दैत छथि। साझीक पूजा स्िगीया मातृ लोकिनक, आिह आ कृतजताक अपिन मानल जा सकैत अिछ।

साझीक पूजा आ पचलन ओना तू राजस्थान, मध्यपदेि, पििमी उतर पदेि, उतराखण्ड , उडीसा आ अपन िमिथलोमे कुनो ने कुनो रपमे ियाप्त अिछ। हिरयाणामे ई सेहो बहुत उत्कृष्ठतासू मनाएल जाइत अिछ। साझी केर अनेक नाम यथा- साझी, साजी, संझया, संध्या, संधा, हाजी, हज्जा इत्यािदसू जानल जाइत अिछ।

िपतृपकमे पन्रह िदन धिर मेिाड आ मालिक कुमािर कन्या लोकिन घरक बाहरी देबालपर गाएक गोबरसू आ मािट स मोटगर लेप बना एक तरहक िगाकार आकृित कऽ ओइपर िविभन तरहक िचताकनक िनमाण करैत छथि। संगे अनुष्ठान, गीत-नाद, पूजा-पाठ सेहो चलैत रहैत छैक। ओइ समैमे अगर उज्जैन िहरक िसहपुरा आिद केतमे जएब तू लागत जेना कुनो कला िदघाक िीथिका मे आिब गेल छी। कलाकृितके देिख भाि-िविभोर भेने िबना नै रहब। तेरहम िदन िकला-कोटक िनमाण होइत छैक। िकला कोटक अथिभेल कलाके चारिदस सू राजमहलक िकला जका गढ बना देनाइ। अन्तत: पन्रहम िदन साझीक पूरा रप पसस्त भऽ जाइत छैक। पन्रहमे िदनक साझमे तमाम िचतके खुरेिच कुमािर कन्या, निबयाहल लडकी (जे िबआहक पथम िषिम साझी देिक उदापन करैत छथि।) समस्त खुरचल सामगीके लऽ

पोखवर धार, नदी आवदमे विसजनि कऽ दैत छवथ। विसजनिक दृ्यि बडड भामिय होइत छैक। लडकी सभ गबैत, नचैत नि स्ि्तसू सजल माधुयकि ितािरण बनेने रहैत छवथ।

साझीमे पयुक्त विम्ब आ रप साझी लोककथाक आधारपर होइत छैक। गोबरसू नीप बेस बना ओइपर फुलक पंखुरी, चमकम कागत आवदसू क्यत बनाएल जाइत छैक। साकी देिीक गीत गएल जाइत छैक। ककछु क्यत एहनो होइत छैक जे नि ब्याहताके पावरिावरक जीिनिक आि्यिकताके सूक्यत अथबा पदवितर करैत छैक। ओइ शेणीमे टी.िी., फीज, मोटर बाईक, गैसक चुिा आ क्सकलण्डर इत्यावद सेहो मनोहारी ढंगसू क्यवत्त कएल भेट जाएत। साझी के छलीह? ऐ सम्बन्धमे अनेक तरहक दंत कथा छैक। जेना कक साझी दुगाक एक रप छवथ; बहाक पुती छवथ; साझी पािितनी अथात विकि अधाबानी छवथ; साझी िंकदक देिी छवथ वजनकर उपासना संध्या अथात् साझमे कएल जाइत अवछ; साझी लक्मी नारायणक पवतरप छवथ; साझी निदुगाक पवतमूर्ति छवथ; साझी बृन्दािनि धामक देिी छवथ; साझी राजस्थानक संगानेरक कन्याक छवथ वजनकर वबआह अजमेर छलन्वह; साझी कुमावर कन्या-सबहक अराध्य आ पीय देिी छवथ, साझी राजस्थानक बगडाित केतमे लोक आख्यायनमे पिवसत देिी थीकीह आ अन्तत: साझी सूयिदेिकि अधावानीक रपमे सेहो जानल जाइत छवथ।

क्यवत्त क्यताकन आ मनुक्खक आकृवतसू एना जात होइत अवछ जे साझी एक ब्याहल कन्या छलीह। वजनकर िैिाहिक जीिनि सफल नै रहलवन। अनमेल वबआह छलन्वह। पवत, सासु, समाज सभ िोषण केलकन्वह।

कुमावर कन्या सभ भोरे उवठ ताजा गोबर चूवन फूल,

पतीक बेिस्था कऽ साझी कलाक कमाण मे लावा जाइत छथ। देबाल एक केतके िगाकार आकृतके गोबरक आ माक्टक लेपसू भरल जाइत अछ। परम्परा आ ि रकके कशण कऽ मोटीफ केर कमाण होइत अछ। हरेक कन्याक कल्पनाशिलता कभन होइत छन्ह। माय, कक्तयाइन सभ सेहो मदत करैत छन्ह जइसू साझी रमणगर आ सौन्दयसिू पकरपूणभिऽ जाइक। बनेबाक सामगीक रपमे गोबर, फूल, पात, धास, मकैक बाल, रंगारंग कागज, टीन फाइिल, कौडी, बासक -बती, कसन्दुर कुमकुम इत्याकदक पयोग सबतर भेटत। मालिा अथात उज्जैन कदस गुल-तेिारी, गेन्दा लाल, चमेली, बरमासा फूल जेकरा सदा सुहागन सेहो कहल जाइत छैक केर पयोग होइत छैक। गुलाबी, उज्जर, पीकीस बाउन, आकद रंगक विेिष स्थान होइत छैक।

सिमिथम आंगुरसू पथम परतक कमाण कैल जाइत छैक। जकरा गोहाली कहल जाइत छैक। ऐमे िगाकार केत अथिा अष्टकारक कमाण गोबर आ माक्टक मोट लेपसू देबालपर कएल जाइत छैक। पथम तीन आंगुरक सहायतासू फीगरक कमाण केलाक बाद फुल, पात, घास, आकदसू साक्ट फीगरके सजाएल जाइत छैक। पथम कदनक कडजाइनके दोसर कदन उखाक्ड देल जाइत छैक। पत्येक कतथक अनुसारे मोटीफक कमाण कएल जाइत छैक। राजस्थानक एक गाममे पयुक्त तेरह कदनक साझी कचतण हमरा एना भेटल-

एकम (पकहल)- िन्दरािि

बीज (दोसर)- बीजना (पंखा)

तीज (तेसर कदन)- तीन, किािडी (तीन कखडकी)

चौठ (चाकरम कदन)- चौपड

पंचम (पॉचम कदन)- पाच कुिारे (पाच कुमार बालक)

छठम (छठम दिन)- फूल छडी (फूलक डंडा)

सातम (सातम दिन)- साकाया (सुिस्काक)

आठम (आठम दिन)- अष्टकोणी बाजोट (बैसैबला टूल)

नम (नमि दिन)- डोकरा-डोकरी (बुढआ बुढी)

दमि (दसम दिन)- दस पकानि (दस तरहक ब्यंजन)

ग्यारस (ग्यारहम दिन)- जनेऊ

बारस (बारहम दिन)- सीडी (सीढी)

तेरस (तेरहम दिन)- कोट (ऐ दिनक साझीमे सभ दिनमे युक्त कृतक िनमाण कएल जाइत छैक। एकरा अलाबे आरो बहुत रास काम्कि िनमाण होइत छैक।)

साझी कलाक रूप आ ओकर अथलोक कलामे आयिजनक जान आ परम्पराक समाहि होइत छैक। कुनो चीज िनरथक नै भेटत। जेना कि कतौ-कतौ सातम दिन हत्यारी-हतम केर रूपक विन्यास करबाक परम्परा छैक। तइ दिन ओइ आयाक स्मरणमे रूपके गढल जाइत छैक जिनकर या तू हत्या भऽ गेलन्हि या ओ स्वयं आत्महत्या कऽ लेलन्हि। नमि दिनमे डाकिया नम बनैत छैक। ओइ दिन बुढ आ बुढीक कृतण होइत छैक जे नमिी िावस्थ मे अई जीनिके त्याग केलन्हि। बीजना या बीजनी खजुर पंखाके कहल जाइत छैक। तेसर दिन तािडी अथात तीनटा खिडकीक िनमाण कएल जाइत छैक। चौपड खेलक कृतण चािरम दिन कएल जाइत छैक। कतौ-कतौ छठम िाथमे फूल छाबरी अथात् फुलडालीक िनमाण करबाक परम्परा भेटत। सकाया अथाि हकाया सुिस्काकके कहल जाइत छैक। एकर िनमाण सामान्यतया सातम दिन कएल जाइत दैक। अठकली फूलक िनमाण आठम दिन कएल जाइत छैक। कतौ-कतौ

नमि कावथमे नंगटा-नंगटी (ादि यंत) रचना सेहो कएल जाइत छैक। लोक परम्परा ास्तीय परम्परामे सेहो पयुक्त कएल जाइत छैक। राजस्थानक शीनाथ जीक मंदरमे मुक्तिकि पाछा वापछाइ कला आ केराक पातपर साझी बनैत छैक। एकर दोसर ठाम जलमे साझी बनैत ैछक। ृन्दानिमे फिरि रंगोलीक रपमे अनेक तरहक रंग आ चाउरक आंटाक पयोगसू कलात्मक साझी राधा आ कृष्णक पेमकथा आ भक्तिके स्मरण करबाक अपतीम कलाक रपमे बनाएल जाइत छैक।

बहुत तू जानकारी नै अछि परन्तु बुझना एना जाइत अछि जे वाथलामे साझ पूजक परम्परा आ कुमारि कन्या सभ दारे तुसारी पूजन साझीक परम्पराक एक रप अछि। नेपाल आ उतराखण्डमे सेहो किछु एहन परम्पराक विधान छैक।

एक दिन राजस्थानक उदयपुरसू हल्दी धाटी घूमए लेल गेल रही। ओतए केर साझी स्थानीय फूलक सहायतासू बनाएल जाइत छैक। आ ओइमे राधा-कृष्णक पेमक पबलता दृष्टिगोचर भक्ति-भासू कलात्मक रपे होइत छैक। फूलक एहेन विन्यास अन्यत असंभि। ओना लोककलामे कून नीक आ कोन खराप ई कहब असंभि मुदा मालि अबाते मातर साझीक कलासू कुनो बटोही मंत मुग्ध भऽ जाइत अछि। ओतए केर नायिका केर आूख अतेक कतरगर जे मोन करत दखते रही। जेहने कािरी तहने चितकला। मोन करत केकर पिसा करी चितक अथि चित बनेलहारके?

राजस्थानमे एक कथा पता लागल। संझा छलीह साकि आ सामान्य गरीब घरक कन्या। हुनकर बिआह किछु खाि पवरस्थितमे एकटा नागर बहण जेकर नाम खोडया बाहण रहैक- करा देल गेलन्हि। बेचारी संझाके सासुरमे बडड कष्ट भेलन्हि। पत कहियो हुनकर

भानिाके सम्मान नै देलकन्क्ह। नैहरमे जनम हेबाक तुरंत बाद माय मव्र गेलथ्थन्ह। कष्टेमे जनम भेलक्त, विकिट स्थ्थक्तमे बाआह भेलन्क्ह आ कष्टेमे मव्र गेलीह साझा। हुनका मरला उतर दैि लोकमे स्थान भेटलक्त। आ जे कुमाव्र कन्या शाध पक्मे हुनकर तेरहसू पन्रह क्दन अराधना करतीह क्तनकर िािक्हक जीनि सफल रहतैक। अही तरहक लोक मान्यता ओइ केत्तमे छैक।

क्तथ्थलाक सामा-चकेबा पाबक्त जका मालिामे साझीक भाइ-बक्हनक सम्बन्धके मधुर बनेबैबला लोक-उत्सि मानल जाइत छैक। लडकी सभ अपन बीराजी (भैय्या)क लेल मंगल कामना करैत छव्थ। जे चीज नै भेटैत छन्क्ह तइ लेल भायसू क्ादिन कऽ ओइ चीजके मंगा संझाक नीक जका क्तमाण , पूजा-पाठ करैत छव्थ।

अन्तत: यएह कहल जा सकैत अक्छ जे साझी लोक परम्पराक एक अनुपम उदाहरण अक्छ. अहेन उदाहरण जइमे क्चतकला, नृत्यकला, संगीतकला, िस्तुकला आक्दक समन्वित समाििि भेटत। ऐ तरहक अनुपम लोक कलाक रक्ण भेनाइ अक्ाियि।

लघुकथा- चन्दा

राघिके चन्दाक संगक्त सोहनगर लगैत छलन्क्ह। राघि आ चन्दा समयिस्क रहथ्थ- लगभग पंरह बखक्कि। दू-चाक्र मासक दुनूमे क्कयो छोट तू क्कयो पैघ। चन्दा छलीह साक्रि, सुन्दक्र। िरीरसू पुष्ट मुदा लोथगर नै। सामक्र चाम मुदा चमकैत। आूक्ख मध्यम कदक मुदा रसगर। ठोर मोट मुदा चहटगर। नाक पातर आ नोक लेने। ियद राघि केर दृष्क्टमे सुन्दरताक नीक वििरण यएह छलन्क्ह। चन्दा छलीह चंचल, कनीक ठसकसू भरल आ ऐ गुमानमे तनल जे ओ दबंग क्पता एिं दबंग पक्रिरसू छथ्थ! चन्दाके केिल दू बक्हन आरो छलक्थन्ह। एको भाइ नै। ताक्ह चन्दा अपने-आपके बेटा बुझैत छलीह। पन्रहम ियक्समे अएलाक उपरान्तो चन्दा अपन उनत क्किके नै झपैत छलीह। ऐमे हुनक उदेस अपने-आपके कामुक बनेबाक नै छलन्क्ह बल्क्क बेटा जका बेटी छथ्थ तइ बातक गुमान! मुदा जुआनीक दरबज्जा खटखटबैत कि, नाक, आूक्खक गुमानसू की मतलब! चन्दाक गुमानमे हुनकर िरीक्रक अंग अपन कामुकताक भाकिे अनेने पदिनि करए लगैत छलन्क्ह। आर-तू-आर चन्दा राघि एिं अन्य समयिस्की छौडा सभ संगे कखनो कबडडी तू चोरा-नुकी खेलाए लगैत छलीह। जखन कबडडी खेलाइत छलीह तू चेतऽकऽबऽडडी..... डी...डी...डी... करैत हुनकर कि सेहो िब्दक लयक संग संगीतक धूनमे मस्त भऽ ऊपर-नीचा होमए लगैत छलन्क्ह।

कतेको बेर जखन चन्दा कबडडी पढैत राघि क्दस अबैत छलीह, राघिके मारबाक हेतु तू राघि चन्दाके पकडबाक पयास करैत छलाह। पयास ई जे चन्दाक सास टूक्ट जाइन्क्ह। मुदा चन्दा ऐ पयासमे जे क्बना सास तोडने राघिके छू ली, आ क्बना राघिक चंगुलमे कबडडी पढैत अपना क्दक्स आपस भऽ जाइ। एक-आध बेर

चन्दा अपन रणनीतिमे सफलो भेलीह। मुदा अन्तत: छलीह लडकी। केना सकतथि, राघवकि ठोस, बलीष्ठ कद-काठीक समक? अधिकतर समैमे राघव चन्दाके पकडि लैत छलथिन्ह। आब चन्दा राघवसँ अपने-आपके छोडेबाक हेतु पूरा पयास करैत छलीह। राघव सेहो अपने-आपके ऐ पयासमे लगा लैत छलाह जे बिना सास टुटने चंन्दा नै छुटथि। ऐ नोक-झोकमे बिना कुनो गलत भावनाके कतेको बेर छीना-झपटी करैत राघव केर हाथ अनायास चन्दाक विक्षपर लावा जाइत छलन्हि। चन्दा बुझैत छलीह जे राघव कुनो दोसर विचारसँ ई सभ नै कऽ रहलाह अछि। तँए चन्दाक मुँहपर कुनो तामस, लज्जाक भाव, पतिकार, घृणा आदिक भाव नै अबैत छलन्हि। बिल्कुल स्वाभाविक रहैत छलीह। मुदा कहि नै किएक राघवकि कठोर हाथक स्पर्शकि अनुभव करैत छलीह। हुनका किछु-किछु होमय लगैत छलन्हि। आँखि अनेरे आनन्दातिरेकमे मुदा जाइत छलन्हि। की होइत छलन्हि तकरा ओ मात्र केवल अनुभव कऽ सकैत छलीह, ओकर बखान शब्दक माध्यमसँ संभव नै। एहने हालत राघवोके होइत छलन्हि। नहु-नहु राघवके एना लागए लगलन्हि जेना चन्दाक बिनु जीवन अर्थहीन हुअए। चन्दासँ जइ दिन राघव भेंट नै करथि तइ दिन मोन खिन्न भऽ जान्हि। चन्दा सेहो राघवसँ ओतबे स्नेह करैत छलीह। मुदा राघव आर चन्दाक स्नेह छल कहिछल!

राघव छलाह आर्थिक रूपसँ विपिन बाह्मण कूलक बालक। एकर ठीक विपरीत चन्दा छलीह एक सुभस्य बाह्मण कन्या। चन्दाक पिताके तेरह बीघा ठोस खेतीहर जमीन आ खूब नीक लगानी केर कार्य चलैत छलन्हि। चन्दाक पिताक नाओं छलन्हि बुलेसर। बुलेसर बलंठ छलाह। छह फूटा मर्द पहलवान, केवल अपन नाओं आ

संख्याक जान छलन्हि। लगानीक ललका बहीके कऽ टऽ कऽ लिखैत-पढैत छलाह। गरीब लोक सभके सूदिपर टाका दैत छलथिन्ह। बन्धकमे गहना, तिमि, जमीनक कागत इत्यादि राखि लैत छलथिन्ह। सूदिक दरसूदि जखन गरीब लोक सभ आसीन-कातिक मासमे भूखे मरय लगैत छल तू बुलेसर बाबू ओतए सबैया-डेओढापर धान अथिा आन अन लेमय जाइत छल। बुलेसर बाबू अपने हाथे अन जोखैत छलाह। एक मोनक बदला हमेसा 38 सेर दैत छलथिन्ह। ओहूमे अनाजमे धूल-माटि मिलल। छाटल पखरा अथिा आन कुनो मोटका धान। आ लेबय काल एक मोनक बदला 41 सेरक आसपास लैत छलाह।

कतेको लोक पाइ दैयो दैत छलन्हि तैयो अपन लगानीक ललाक बहीसू नाओं कटैत छलथिन्ह। चारि-पाच बखिचुप भऽ जाइत छलाह। फेर एकाएक एक दिन बही लऽ कऽ ओइ ियक्तिक घरपर महाजन बनि पहुँचि जाइत छलाह, तगेदा हेतु। बेचारा परेिान! मुदा अपन बलंठीसू चूर बुलेसर बाबू ओइ ियक्तिके गरदनि अपन गमछासू जकड़ि लैत छलाह। फेर ओकरा लाचार कऽ दैत छलथिन्ह पंचैती बैसेबाक लेल। पंच की तू छह-सात चमचाक दल। सभ बुलेसर बाबूके हू-मे-हू मिलबैबला। सभ हुनके सबहक बात कहएबला। बेचारा असहायक बातके सुनैत अछि? लाचार कऽ ओइ ियक्तिसू ओकर जमीन आर गहना इत्यादि हथिया लैत छलाह। अही पर्वियासू चारि बीघासू तेरह बीघा जमीन भऽ गेल छलन्हि बुलेसर बाबूके।

एकबेर तू बुलेसर बाबू एहेन काज केलन्हि जेकरा लोक अखनो धरि नै बिसरल अछि- नृिसकारी, जघन्य, हत्या समान,

बल्कि साक्षात हत्या! एना भेलैक जे टुनटुनमा मलाह बुलेसर बाबूसँ अपन पतीक इलाजक हेतु तीन सए टाका सूदिपर लेलकन्हि। ई कहि जे छह मासमे सूदिक संग आपस कऽ देतन्हि। मुदा किछु कारणसँ एक बखमधिक आपस नै कऽ सकलन्हि। एक दिन पचण्ड जाडसँ कपैत टुनटुनमा राघकि दरबज्जापर आबि राघकिे पितामह संगे घूर तापि रहल छल। तमाकूल चुना राघकि पितामहके देलकन्हि आ अपनो खेलक। किछु कालक बाद अपन एक लठैतक संग बुलेसर बाबू सेहो राघकिेर दरबज्जापर घूर तापअ आबि गेलाह। टुनटुनमाके देखैत मातर हुनका तामस चढ़ि गेलन्हि। वभित्स गारि देमय लगलथिन्ह ओकर-

"रौ बहान ...ौद! तू एखन धरि पाइ आपस नै केलयू?"

टुनटुनमा कहए लगलन्हि-

"मालिक! हमर हाथ तंग अछि। बेटा कलकतासँ आबैबला अछि। अबिते मातर दऽ देब, विश्वास नै करब।"

मुदा बुलेसर बाबूक तामसे दुर्गति बनल छलाह। आरो गारि पढ़ैत गमछा टुनटुनमाके गरदनिमे फूसा उठा लेलथिन्ह। टुनटुनमा लाचार भऽ घेघयाए लगल। बुलेसर बाबू सोहाइ चमेटा ओकरा ओकरा कानक जाड़िमे मारलथिन्ह। हे भगवानि! जाडक मास बुढ शरीर, भुखाएल पेट, जीने काया, बेचारा टुनटुनमाक कानसँ खून बहए लगलैक। मुदा तखनो बुलेसर बाबूके संतोष नै भेलन्हि। गमछासँ टुनटुनमाके घिसियाबए लगलाह। ई देखि राघकिे पितामहके भेलन्ह जे कही टुनटुनमा हुनके दरबज्जापर नै मरि जान्हि। ओ बीचमे आबि गेलाह आ कहलखिन्ह-

"हौ बुलेसर! ई हमरा दरबज्जापर आएल अछि। मरि जएतैक। अतए किछु नै करहक।"

ऐ बातपर बुलेसर बाबू कहलखिन्ह-

"ठीक छै कारी कका, हम ऐ सार मलहाके धोबिया गाछी लऽ जाइ छी।"

ई कहि टुनटुनमाक गरदनिमे फूसाओल गमछा कसैत धोबियो गाछी दिस लऽ गेलन्हि। 'मरता क्या नही करता, बेचारा टुनटुनमा जेना कसाइ लग गाए जाइत अछि तहिना बुलेसर बाबूक संग विदा भेल। आ बुलेसर बाबू जखन धोबिया गाछी गेलाह तू एक लात मारि टुनटुनमाके धरतीपर पाड़ि पुन: एक ऐर मारलखिन्ह। फेर अपन ठेगा ओकर कोकासमागि -गुदामागिमे घुसा देलखिन्ह। खूनक फुचुका फेकए लगलैक। बेचारा ओतहि कनैत बेहोि भऽ गेल। मुदा बुलेसर बाबूक चेहरापर अफसोस पसरि गेलिन आ मुहसू फेकलन्हि-

"ठेगो अपवित भऽ गेल!"

टुनटुनमाके ओतहि ओही हालतिमे छोड़ि अपन घर दिस विदा भऽ गेलाह।

लगभग आधा घंटाक पछाति ऐ घटनाक जानकारी टुनटुनमाक बेटाके पता लगलैक। जो ओकरा उठा कऽ घर लऽ गेलैक। पैसा नै रहैक तूए देसी दबाइ पारम्भ केलकैक। भरि पेट खेबाक सेहो सामथ्रि नै, तइ मनुक्खपर एहेन अत्याचार! बेचारा टुनटुनमा 10 दिनक भीतर कराहि-कराहि कऽ मरि गेल। मनुक्खपर मनुक्ख दारा एहेन अत्याचार! हे भगािन किएक नै देखैत छी एहेन लोक सभके। किछु अही तरहक विचार राघि केर लोक किरि मनमे अएलन्हि जखन टुनटुनमाक सम्बन्धमे पता लगलन्हि। मुदा बुलेसर बाबूक हृदैपर कुनो पभाि नै पडलन्हि। ओ अपन बलंठगरीरीमे लागल रहलाह।

बुलेसर बाबूक दू ्यिक्तत्ि छलन्हि। लहनाक मामलामे ओ बलंठ, हृदैहीन, कसाइ आ कईया छलाह। ठीक एकर विपरीत बपताक रपमे स्नेहिील, उदार आ अनुरागी। राघिके चन्दाक नेनपनक दृ्यि याद्द आबए लगलन्हि। जखन चन्दा चािर-पाच बखिक छलीह तू बुलेसर बाबू सद्दकाल चन्दाके अपना कन्हापर चढेने रहैत छलाह। दुलारक अन्त नै। चन्दाके सद्दकाल चन्दा बेटा कहि सम्बोधित करैत छलाह। चन्दा अगर कुनो कारणे रबस जाइत छलीह कनि कनैत छलीह तू बुलेसर बाबू चन्दाके कोरामे उठा गीत गाबि-गाबि बौसैक पयास करैत छलाह। गीतक आखर कछु ऐ पकारक होइत छलैक-

“चन्दा तोरे देबौ गे
सभ धन तोरे देबौ गे
तेरह बीघा के जोता चन्दा तोरे देबौ गे
गहना तोरे देबौ गे
सोना-रपा तोरे देबौ गे....।”

आ गुमानसू तनल चन्दा िनैः िनैः कानब बन कए अपन बपताक चौरगर छातीसू चीपकि जाइत छलीह। बपता-पुतीक अगाध पेम। एहेन पेम जइमे पेमाधिक्य आ बसनेहक धार सद्दखन बहैत रहैत छल।

राघिक कििर मनमे बुलेसर बाबूक पति धोर घृणा उयपन होमय लगलन्हि। मन होन्हि जे ‘बुलेसराके उठा कऽ पटकि दी बीच चौबटियापर। लाते-लाते खबस दी।’ मुदा ई हुनका नीक जका जात छलन्हि जे बुलेसर बाबूक समक्ज हुनकर पबरिरक अस्तित्ि ्िन्य छन्हि। आर-तू-आर राघि केर बपता सेहो बुलेसर बाबूसू ॠृण लेने

छलखिन्ह। फेर राघिके विचार अएलन्हि जे किएक नै चन्दासँ बात कएल जाए? मुदा फेर ओ अपना-आपके चेतलाह। चन्दा तँ थीकीह अन्ततः बुलेसरेक बेटी ने। सापक गभसँ कुनो हंस जन्म लेलकैक अछि। सापक नेना सापे जका डसबे करतै। चन्दाके कहने की लाभ? ऊपरसँ अगर चन्दा अपन मातासँ विकाइत करतीह तँ हमरो घरमे विपत्तिक भूकम्प आबि जाए!

...ई सोचैत राघि चुप्पी साधि लेलन्हि। मुदा जखन-जखन टुनटुनमा बेटाके बापक कमि करैत देखैत छलाह तखन-तखन घृणा आ पितापक ज्विालामे जरए लगैत छलाह। मुदा छलाह बेिि! लचार!! मरता क्या नही करता!!!

कहि नै किएक चन्दा राघिके बिना अपने-ओपके अनेरे बेचैन अनुभि करए लगलन्हि। एकबेर राघि आठ दिनक हेतु मातृक गेलाह। चन्दाके बिना कहने। चन्दा राघि केर घर लगका पोखरिमे नहाए अएलीह। जखन राघिके नै देखलन्हि तँ मनमे ई भेलन्हि जे राघि कतौ इम्हर-उम्हर चलि गेल छथि किछु कागक हेतु। मन तँ नै लगलन्हि। चुप-चाप जल्दी-जल्दी स्तगनाही घाटपर जाए पोखरिमे हम डुम देलीह। एक लोटा अछिंजल लए ओतुके पंचमुखी महादेिपर आधा मनसँ जल ढारलन्हि। राघिसँ भेट नै भेलन्हि ऐ बातक कचोट करैत घर चलि गेलीह। घर जाए आधा मनसँ आधा-छीधा अन खेलीह आ सोझे आमक गाछी आम ओगरए लेल चलि अएलीह। आमोक गाछीमे चन्दाके मन नै लगलन्हि। चन्दा मोने-मन भगिानिसँ पाथनिा करए लगलीह-

"हे भगिान! जल्दी-जल्दी राति कर। सूति रही। जल्दी-जल्दी भोर कर जे राघि भेट जाए।"

मुदा राघि तू आठ दिनक हेतु गामेसू बाहर भऽ गेल छलाह। खैर! चन्दा मुन्हारि साझक बाद घर अएलीह। माय पुछलथिन्ह-
"चन्दा, अतेक देरीसू किअए अएलेह?"
चन्दा बजलीह-
"चोरा सभ आम तोरबाक फिराकमे छल। सोचलौ जखन मखना रखबार आबि जाएत तखने कलम छोडब।"
चन्दाक ऐ जबाबसू पसन भऽ बुलेसर बाबू अपन सीना चौडा करैत पतीके कहलथिन्ह-
"बुझलिऐक, कतेक जानी आ बुझनुक अछि अप्पन चन्दा? चन्दा सन भगिनि अगर बेटी देथि तू बेटाक कुन पयोजन?"
तइपर चन्दाक माय कहलथिन्ह-
"अहा अनेरे बजैत छी। लडकीके कुनो हालतिमे साझ भेला उतर घरसू बाहर नै रहबाक चाही। समए-साल खराप चलि रहल छैक। कुनो ऊच-नीच भऽ गेलैक तू की हेतैक।"
मुदा बुलेसर बाबू कतए चुप हुअएबला छलाह। कहलथिन्ह-
"की बाजि रहल छी? केकरा हिम्मति छैक जे हमर चन्दा संग कनीकबो बदतमीजी करए। जे सोचबो करत तकर आूखि निकालि लेबैक।"
मुदा चन्दा अपन माता-पिताक विक्-युधमे हिस्सा नै लेलन्हि। बिना कुनो हर्ष-विषादक चुपचाप ठाढि रहलीह।

चन्दा मोने-मन पसन भेलीह- "चलू, बाबूजी हमरा अतेक सिनेह करैत छथि। हे भिबान! जन्म-जन्म भरि एहने पिता देब। ओना माइयो कुनो अधलाह नै कहलकि। अतेक साझ धरि आमक गाछीमे हमरा नै रहबाक चाही।" मुदा माता-पिताक पसंगसू चन्दाके एक लाभ ई

भेलक्ि जे चन्दा राघिकि कमीके किछु कणक हेतु बिसरि गेलीह। भोजन-भात करैत रातिक आठ बाजि गेलैक। चन्दा अपन दू छोट बहिन सबहिक संग सूति रहलीह। कनीकाल राघिके स्मरण एलन्हि। तामसो चढलन्हि- ‘‘कतए चलि गेलाह राघि! भेट नै भेलाह।” फेर भेलन्हि, ‘‘भऽ सकैत अछि कुनो पयोजनसू कतौ गेल होथि। काल्हि तू भेट भइये जाएत। मोन भेलन्हि, राघिके पुछबिक्ि जे कतए गेल रही। मुदा लोक अगर सुनत तू की कहत। राघि सेहो की सोचताह! फेर विचारलन्हि, किछु नै कहबन्हि।” अही तरहक अनेक विचारक शृंखलामे चन्दा तल्लीन भऽ गेलीह। पता नै सोचैत-सोचैत कखन क्िसभेर भऽ गेलीह।

भोरे उठि चन्दा नकिा पोखरि दिस स्नान करक हेतु विदा भेलीह। सोमक दिन रहैक। माय कहलथिन्ह-
 “चन्दा, पंचमुखी महादेकिे आइसू हरेक सोम एगारह लोटा अछिजल चढाउ। गंगेि पण्डित कहलन्हि अछि जे ऐसू अहाक कल्याण हएत।”

बुलेसर बाबू पतीसू पुछलखिन्ह-
 “गंगेि पण्डितजी कल्याणक अर्थकिी कहलन्हि?’’
चन्दाक माय- ‘‘कल्याणक अर्थई भेल जे चन्दाके योग्य घर-रि भेटतिक। सोम दिन महादेि आ पार्तिीक दिन छन्हि। सोमक जल ढारक बडड महत छैक। ताहिसू सोलचौ, गंगेि पण्डित जीक उक्तिसू चन्दाके अिगत करा दियन्हि।”
बुलेसर बाबू पतीक बातके स्ीिकृति गदिमि हिला देलखिन्हि। किछु बजलाह नै। मोने-मन भोलानाथसू ियाहुत बेटी लेल नीक रिक

िरदान अिि्य मंगलन्कह। सभके ठसकसू लगानीपर रि्य आ िस्तु देक्महारक हाथ आइ भगिान भोलानाथ लग आतभिािसू लेबाक लेल पसरल छलन्कह। कनीक कण लेल अनुभि भेलन्कह जे बेटीक बाप भेनाइ केकरा कहैत छैक!!

खैर! चन्दा फुलडाली, फुलही लोटा, िस्त, बासक कचीक दतमक्न लऽ निका पोखक्र क्दस विदा भेलीह। एकपेकरया रस्तामे चलैत मोने-मन उमंगमे डूमल जे आ राघिसू भेट हएत। उल्लक्सत मोनसू चलैत नाक्यका सेहो एकपेकरया रस्तापर अपन िरीर आ सोचक संग एक अनुपम सामंजस्य स्थाक्पत कऽ लैत अक्छ। मोन जेना-जेना अपन सोचमे उतार-चढाि, गक्त, उदेग, तरंग अनैत छैक, तक्हना िरीरक अंग सभ पदिि कए मोनक भािनाके ि्यिक्त करैत छैक। चन्दो संग सएह भेलन्कह। भक्र रस्ता चन्दा कखनो राघि तू कखनो अपन माइक कहल आदेिक सम्िन्धमे सोचैत रहली। राघिपर चन्दाके तामस आ क्सनेहक भाि एके संग आबए लगलन्कह। तामस ऐ हेतु जे राघि कतए गेला क्कना कहने।”

क्सनेह ऐ दुआरे जे राघि बडड नीक लोक अक्छ। सोचलन्कह- गरीब तू छक्थ राघि, मुदा छक्थ ि्यिहार आ विचारसू नीक।

चन्दाके एक कण लेल पक्हल बेर ई एहसास भेलन्कह जे िायद राघि हुनका जीिनमे बहुत पैघ स्थान रखैत छक्थन्ह। चन्दाके याक्द आबए लगलन्कह कबडडी आ नूका-चोरी। चन्दाके याक्द एलन्कह तीन-चाक्र षिक्ि पूिक्ि एक घटना जखन चन्दा कक्छु आर लडका-लडकी संगे क्मक्ल कऽ कक्नया-पुतराक खेल खेलाइत छलीह। राघि सेहो आइ खेलक पात छलाह। राघिके घरमे कक्यो नै रहन्कह। दुपहक्रयाक समए छलैक। पाच-छह नेना सभ कक्नया-पुतरा खेलाए लागल। भेलैक ई जे ऐ खेलमे एक बर आ एक कक्नया हेतैक। कक्नयाक

बापता आ माता हेतैक। बर आ कक्नयाक बाआह हेतैक। गीत-नाद आ विधि बेहिार हेतैक। चन्दा बनलक्ष कक्नया आ राघि बर। दुनुक बाआह भेलन्क्ह। गीत-नाद भेलैक। चतुथी भेलन्क्ह। कोहबर बनलै। कोहबर घरमे चन्दा आ राघि बर कक्नया बक्ष आराम करए गेलाह। कोहबर घर की तू राघिके बापताक मच्छरदानी टावा ओकर चार कात नूआसू झावा देल गेलैक। राघि आ चन्दाके कोहबर घरमे रावख सभ बच्चा सभ थोडेक कालक हेतु बाहर चक्ल गेल। राघि आ चन्दा अपना-आपके ठीकेमे बर-बक्नया माक्ष एक दोसरके पकव्ड सूक्त रहलक्ष। कनीक-कालक बाद बच्चा सभ आवा गेलैक।

चन्दा यएह सभ सोचैत-सोचैत नकिा पोखक्र क्दस जाइत छलीह। कखनो कमर लचकन्क्ह तू कखनो कि क्हलय लगन्क्ह। कखनो क्तम्ब डग-मग करए लगन्क्ह तू कखनो आनंदाक्तरेकमे अति चलबाक गक्त तेज भऽ जाइन्क्ह। जखन तेज चलवथ तू कि आ जखन नहु-नहु आनन्क्दत होइत चलैत तू क्तम्ब डोलए लागन्क्ह। दुनू असि्थामे चन्दा लगैत छलीह सुन्दक्र, आकषकि......।

फेर चन्दाके भेलन्क्ह जे राघि तू हमर कुनो मूलो-गोतक नै छवथ। तखन की चन्दा आ राघिके बाआह भऽ सकैत छन्क्ह? फेर सोचलन्क्ह, केना हेतैक? एके टोलमे जे छी। आर राघि तू गरीब घरसू छवथ। हमर बापता कखनो ऐ लेल तैयार नै हेताह। ई सोचैत चन्दाक चाक्ल मध्यम भऽ जाइन्ह। माथपर पसीना आबए लगलन्क्ह। चेहरा उदास भऽ गेलन्क्ह। मुदा सुन्दरता अपन दोसर रपमे पस्फुक्टत होइत रहलन्क्ह। क्तम्ब नहु-नहु उभारक पदविृति करए लगलन्क्ह। आब चन्दा अपन बाआहक संबंधमे सेचए लगलीह।

केकरासू बाजओह हएत? ओ लडका केहेन हेतैक! हमरा संग ठीक बेहिार करत की नै? छोटकी बहिन सभके जिम्मेरिी माय असगरे केना सम्हारतीह। आब-आब। फेर चन्दा अपना-आपके भगिन भोलानाथपर छोडि़ देलन्हि। मोने-मन गाबए लगलीह- ‘‘पूजाक हेतु िकर, आएल छी हम भीखारी।’’

यएह सोचैत-सोचैत चन्दा आबि गेलीह निका पोखरि लग। पोखरिसू ठीक पछिने राघि केर दलान। दलानपर राघिके पुन: नै देखलखिन्ह। मोन रोष आ अ्यिक्त विरहसू विदग्ध भऽ गेलन्हि। चारु कात देखलक। मुदा राघि कतौ नै। चन्दाक मुह ओइ फूल जका मुरझा गेलन्हि जकरा तोडि़ लोक जेठक पचण्ड रौदमे छोडि़ दैत छैक। निष्ठुर राघि कएक कतौ बिना कहने चलि गेलैक।

खैर! चन्दा चारु कात राघिके तकलन्हि। मुदा राघि जखन घरपर रहतथि तखन ने चन्दाके भेट होइतन्हि। अन्तमे चन्दा मन्दिरक पाछा फुलिरीमे फूल लोढए गेलीह। चम्पाक गाछमे पीअर-पीअर रमनगर आ सुगन्धित चम्पा फुलाएल रहैक। रहैक मुदा बड ऊचका ठाढ़ि़पर फुलाएल। चंदा सोचलीह चलू अही बहाने राघिक घर जाइत छी।
ई सोचैत चंदा राघिक घरपर आबि गेलीह। राघिक मायके पुछलखिन्ह-
“काकी, हमरा चम्पा-फूल पंचमुखी महादेकिे चढेबाक अछि। मुदा फूल तू बडड ऊचका डारिपर फडल छैक। हम नै पबैत छी। कनी राघिके कहबिन जे किछु फूल तोडि़ देताह?’’
राघिक माय कहलखिन्ह-

"बुच्ची, राघि तू मातृक काल्हि भोरे गेल। कलकतासू ओकर छोटका मामा-मामी सपरिवार आएल छथिन्ह। कव्हि कऽ गेल अछि जे सात-आठ दिनक बाद आओत। आब अही कहू जे केना फूल टुटत?" फेर किछु देर सोचैत राघि केर माय अंगनासू एक गोट पाहुनके बजेलखिन्ह। जे जरैलसू अपन बहिन लग आएल छलाह। ओइ पाहुनके कहलखिन्ह-

"यौ पाहुन, ई थीकीह चन्दा, हम्मर गामक बेटी। हिनकर पिता बडड कलामा। ई भगिनि पंचमुखी महादेकिे चढेबाक लेल किछु चम्पा फूल तोडए चाहैत छथि। मुदा फूल गाछक फुनगीपर लागल छैक। कनी अहा हिनका फूल तोडि दियौन्ह। फूल तोडैबला सेहो फूल चढबैबला अतेक धमहिोइ छैक। राघि रहैत तू कुनो बाते नै। ओ मातृक गेल अछि। कनी, अही फूल तोडि दियौन्ह चन्दाके।" पाहुन हाथमे लग्गी लऽ बिना किछु कहने चम्पा फूल तोडए लेल चन्दा संग विदा भेलाह। चन्दाक मुह जेना लटकि गेलन्हि। गाल जेना विसयाह भऽ गेलन्हि। आँखि नोराह भऽ गेलन्हि। ठोर सुखाए लगलन्हि। छाती धरकए लगलन्हि। मुदा जनिी केर दरबज्जापर आबि गेल चन्दा सोचलक जे कनिया काकी अथात् राघकि मायके धन्यिाद अिि्य देल जाए। जाइत-जाइत कहनखिन्ह-

"कनिया काकी, पाहुन खराप तू नै सोचताह?"

राघकि माय झट दऽ उतर देलखिन्ह-

"की सोचै छी बुच्ची? पाहुन आन कियोक ने छथि। जरैलििली कनियाक भाय छथिन। बहिनक ननदि लेल फूल कनी तोडि देलखिन्ह तू की भऽ जेतन्हि। अहा निश्चिन्तसू जाऊ।"

चम्पा फूल अपन फुलडालीमे राखि चंदा स्तीगनाही घाटमे स्नान

केलक। माइक आजाके मानै डोले-डोले अछजल लऽ एगारह लोटा जल पंचमुखी महादेकि ऊपर ढाडलक। लगभग 15 मनट घर महेिानी, नचारी इत्याद सेहो गेलीह। आ अन्तत: घर दस बादा भेलीह।

घरपर माय पुछलखन्ह-

"चन्दा, पंचमुखी महादेकिे जल चढेलौ बेटी?"

चन्दा बना कछु कहने गदमि हलबैत हू कह देलखन्ह। माइक मोन तीरपीत। जल्दीसू चन्दाक आगूमे भोजन परस देलखन्ह। मुदा चन्दा मोनसू नै खेलीह। राघकिे यादमे डुमल रहलीह। केकरो लग नै बजलीह अपन दिना।

समए बीतए लगलैक। एक दन बुलेसर बाबूक पती अथात् चन्दाक माय बुलेसर बाबूके कहलखन्ह-

"सुनै छी, चन्दा आब बआह जोगरक भऽ गेल अछ। हमरा सभके बेटा ई तीनू बेटये अछ। तूए नीक घर-बर ताक ऐ तीनूके बआह कऽ दऔक। सम्पत राख की करब? जखन तीनू बेटीके बआह भऽ जाएत आ ओ सभ अपन-अपन सासुर बसए लागत तू धराडी आ कछु कलम छोड तमाम सम्पत बेच, सभ पैसाके बैकमे राख अपने दुनू पाणी कािी चल जाएब। बैकक सूदसू जीनि चलत। नौमनी तीनू बहनके बना देबैक। मुदा ई सभ तखन सम्भि अछ जखन अहा जीमन, लगानी, सि्तु, पैसा इत्यादके बूटािरा कऽ लेब। कहयनु कन्हाइ बाबूके जे बाट कऽ सभ सि्तु ब-हस्सा बराबर कऽ कऽ दऽ देथ।"

बुलेसर बाबू कहलखन्ह-

"हू, हू। कन्हैया कएक नै देत। ओकरा तू तरीकासू हमरा जेठास देमाक चाही। बपौती सम्पतक अलाबे जे अजिन भेल अछ तइमे

हम्मर योगदान कन्हैयासू बहुत ज्यदा अछि। हम कावि ये कन्हैयाक लग ई पस्ताि राखैत छी।”

बुलेसरके पती कहलखिन्ह-

“जखन कन्हाइ बाबू दऽ देताह तखने कहब। कहि नै किएक हमर मोन बडड घबरा रहल अछि।”

बुलेसर बाबू बजलाह-

“अहा अनेरे घबराइ छी। स्ती छी स्तीगन जका रहू। जाउ भोजन-भात बनाउ गऽ। हम कावि ये कन्हैया लग ई पस्ताि राखब आ एक मासक भीतर सभ चीज बाटि लेब। फेर नीक जका तीनू बेटीके बिआह करब। आब ऐ केर अलाबा हमरा सभके काये की?”

दोसर दिन दुपहरमे बुलेसर बाबू दरबज्जापर अपन छोट भाए कन्हाइ बाबू लग बैसल रहथि। कन्हाइ बाबू कनीक बुलेसर बाबूसू ज्यादा पढल छलाह। मुदा पाचसू ज्यादे नै। एक नम्बरक घुइया आ कइया। कन्हाइ बाबूके चारि बालक आ दू बालिका। बालक सभ पढैमे भोथ मुदा कन्हाइ बाबू घरेमे खिबडल स्कूल केर एक मास्टर साहेबके रखैत छलाह। हुनका मुफ्तमे भोजन आ रहबाक ियिस्था कऽ देने छलखिन्ह। कखनौ कालके किछु आर्थिक मदति सेहो कऽ दैत छलखिन्ह। कृतज मास्टर कायमत र पसू कन्हाइ बाबूके भोथ आ नालायक बेटा सभके पढबैत रहैत छलाह। कन्हाइ बाबू चोरा-चोरा कऽ पैसा इत्यादि अपन पती तथा बेटा सबहक नामसू गामक पोस्ट ओफिस तथा अपन सासुरमे रखैत छलाह। ऐ बातक जानकारी बुलेसर बाबूके नै छलन्हि। कन्हाइ बाबू मोने-मोने ई प्लान कऽ रहल छलाह जे बुलेसर बाबूके बेटीक बिआह कुनो सामान्य पवरिारिमे करा बुलेसर बाबूक तमाम जमीन आ चल-अचल सम्पत्तिके हथिया

लेताह।

बुलेसर बाबू कहलखिन्ह-

"कन्हैया, हम आ तू दुनू भाइ एके संग रहलौं। मिल कऽ सम्पत्ति बनेलौं। तोरा भगिनि चारिटा लडका देने छथुन्ह। मुदा हमरा तीनटा बेटिये अछि। ई तीनू बेटी हमरा लेल बेटासू कम नै अछि। आब चन्दा बिआह जोगरक भऽ गेल अछि। आनो सभ उपरे-नीचा छैक। चन्दाक माय हमरा सदिखन एकर सबहिक बिआह करा देबक हेतु कहैत रहैत छथि। हम सोचैत छी, जे मरला उतर हम्मर सम्पत्तिके हकदार यएह सभ हएत। फेर हम अपन जीबैत सम्पत्ति बेचि एकर सभके नीक घरमे कएक नै बिआह करा दिऐक? मुदा हमरा तू अधिकार केलि अपन हिस्सापर अछि। सझिया-साझपर नै। तूए दुनू भाइ अपन तमाम सम्पत्तिक बूटिरा कऽ लैत छी। तोहर की विचार करतौक। तो अनेरे चिन्ता नै कर।"

ई बात होइते रहैक ताबतेमे चन्दाक माय आंगनसू दरबज्जापर आबि गेलीह। कहए लगलखिन्ह-

"सभ चीज ठीक छै कन्हाइ बाबू। मुदा बूटिरा तू भऽ जेबाक चाही। सझिया-साझमे हमरा समस्या अछि कुनो चीज करहौक मन हएत तू मोन मसौसि कऽ रहए पडत। बिआह-दानक बाद जे सम्पत्ति रहतैक से अहुना अहिक बच्चा सभके रहत। अहा हमरा सभके सभ सम्पत्ति बाटि दिअ।"

कन्हाइ बाबू ऐ बातपर चिचिआइत बजलाह-

"भौजी! अहा आंगन जाउ। हमरा दुनू भैयारीमे अहा नै बाजू। हमरा सभके जेना हएत तेना करब। अहा जाउ। लप्प दनी दरबज्जापर आबि जाइत छी। जएब की नै?"

बुलेसर बाबू बीचेमे अपन पतीक बातक समर्थन करैत बाजए उठलाह-
"कन्हैया, भौजी तू ठिक बात कहै छथुन्ह जे हम कहए रहल छिअह। तो तामस नै कर आ सम्पत्ति बाँट ले। सभटा लहनाके बही, रुपिया-जात, पैसा इत्यादि एकठाम कर आ बाट।"
कन्हैया तामसे घोर भऽ गेलाह। कहए लगलखिन्ह-
"भैया, लगानीमे बारह अना हम्मर अछि केवल चार अना तोहर। तो घरमे जोखैत छे, खेती करैत छे।"
हम चार बापुते गामे-गामे, घरे-घरे जा कऽ तगादा करैत छी आ डुमल पाइ निपस लबैत छी।"
बुलेसर बाबूके आँखिक आगु अन्हार भऽ गेलन्हि। बजलाह-
"हम की नै केलौ। कर्म-कुकर्म सभ। रात्त-दिन तोहर संग देलयौक। लोक सभसू झगरा-फसाद केलौ। आब कहैत छे जे रुपिया-जात एवं पैसापर हम्मर हक केवल चार आना? हे भगवानिक डागसू डर कन्हैया!!! चल पाचटा पंच बैसबैत छी। कानिये ऐ बातक फबटारा भऽ जेबाक चाही।"
कन्हैया कहलखिन्ह-
"फटिारा की हेतैक भैया, फबटारा भेले बूझ। तोरा चारि आना हिस्सा भेटतै रुपिया-जात ओ लटनामे।"
ई कहि कन्हैया अपन बरका बेटाके लगानी बला सन्दूर चाभी देमए लगलाह।"
ई चीज बुलेसर बाबूके बरदास्त नै भेलन्हि। तुरत झपटि कऽ चाभी छिन्हि लेलन्हि आ बाजय लगलाह-
"रे ककर मजाल छैक जे हमर आधा हिस्सा रोकि लेत। तकरा कुटी-कुटी काटि देबैक।"

बुलेसर बाबू सन्दुक चाभी छीक्न घर क्दस क्वदा भेलाह।
पाछासू कन्हाइ बाबू हुनका भक्र-पाज कऽ पकरलन्क्ह आ हुनकर हाथसू चाभी छीनए लगलाह। बुलेसर बाबू छलाह बक्लस्ठ। एकै बेरमे कन्हाइके उठा कऽ पटक्क हुनकर छातीपर चक्ढ गेलाह। मुदा पाछासू कन्हाइ केर ई बालक लाठी लऽ ताबर-तोर बुलेसर बाबूपर पहारक देलकन्क्ह। कपार फूक्ट गेलन्क्ह। माथक िक्तत पोछए लगलाह। अतबेमे कन्हाइ बाबू हुनकर हाथसू चाभी छीनए लगलक्थन्ह। मुदा बुलेसर बाबू चाभी नै देलक्खन्क्ह। आब कन्हाइ बाबू तीनू-बाप बेटा क्मल बुलेसर बाबूपर पहार करए लगलक्खन्ह। हत्थम, लतम, शुतम आ लाठीक पहार। असगर बुलेसर बाबू की कक्रतक्थ? देह चूर-चूर भऽ गेलन्क्ह। चाभी सेहो क्छना गेलन्क्ह।

बेचारी पती लाचार भऽ अपन देअर आ देअरक बेटा सभके गाक्र दैत रहलीह। सरापैत रहतीह।
"क्पुतीपर हाथ उठेलक अक्छ। सिमिा भऽ जएतैक। तडक्प-तडक्प कऽ मरत कन्हैया सरधुआ! कुस्टी फुटतैक। िक् बन्द भऽ जएतैक। देहसू गन्ध क्नकलतैक। अपन संतान आ घरिली तक काज नै अएतैक।"
बुलेसर बाबूक पती गाक्र पढैत रहलीह आ अपन ढेर भेल पक्तके मरहम पटी करैत रहलीह। कनीक कालक बाद चौकसू जीतू कम्पाउण्डर अएलाह आ बुलेसर बाबूके मिम-पटी केलन्क्ह। ददि बडड रहन्क्ह तकर क्नािरण हेतु दूटा सूई आ बहुत रास दबाइ सेहो देलकन्क्ह। बुलेसर बाबू कराहैत रहलाह। छटपटाइत रहलाह। चंदा पाथर भेल ठाढ छलीह। आूक्खसू नोर दहो-बहो खसैत रहलन्क्ह। गुमान जेना धरासाइ भऽ गेलन्क्ह।

जखन ऐ घटनाक जानकारी राघिके भेटलन्हि तँ राघि मोने-मोन बड पसन भेलाह। राघिके भेलन्हि जे आइ गुलेसर मलाहक अपमान आ ओकरा सतेबाक बदला बुलेसरके नीक जका भेटलन्हि। हलाकि भोरे-भोर जखन पोखरिक कछेरपर चन्दाक मूहके देखलकि तँ कनीक कष्ट जरूर भेलन्हि। सदिकाल गुमान आ ठसकसँ चूर चन्दा आइ ग्लानि आ बेदनाक मूरामे छलीह खीन आ चिन्ति। चियद असहाय सेहो। फेर यादि अएलन्हि बेचारा लाचार मल्लाहक दशि-आइ गाय जका जे ई जनैत अछि जे ओ कसाइ लग बाध्य हेबाक लेल जा रहल अछि। तथापि ओ लाचार भऽ डंटाक भयसँ जाइत अछि कसाइखानामे। तहिना अपन फूसल गदमिक संग असहाय भय गुलेसरा बुलेसर बाबू संगे अखाडा गाछी गेल छल। आ ओतय एहन यातना भेटलैक जे ओही बेथे तडपि-तडपि कऽ पाण तियागि देलक। जखन राघिके ई बात सभ स्मरण अएलन्हि तँ फेर मोन पसन भेलन्हि। सोचलाह।
नीक भेल सार बुसेराके! कसाई बनैत छल। अपन तागत आ सम्पत्तिक नाशिमे बतहा कुकुड बनल छल। आब बुझह।
मुदा राघि चन्दाक पक्का पेमक भाशि रखैत छलाह। कहि नै किएक राघिा चन्दाके चन्दासँ कम सिनेह नै करैत छलाह।
ऐ घटनाक तीन दिनक बाद चन्दा दुपहरमे नहिका पोखरिपर आबि पंचमुखी महादेिक मन्दिर केर पाछा फुलशिरीमे अएलीह। राघि ओतय पहिनेसँ छलाह। आर कियोक नै छलैक। राघिके देखैत चन्दा कहलखिन्ह-
"राघि, अहाके एगो बात बूझल अछि?"
राघि बजलाह-

"की?"

चन्दा कहलखिन्ह-

"कन्हाइ काका हम्मर बाबताके बडड मारलखिन्ह अछि। हमर बाबता छलाह असगर आ कन्हाइ काका तीन बापुते। गलती हमर बाबताके केलि एतेक जे ओ कहलखिन्ह जे तमाम सम्पत्तिक बटबारा कऽ दिअ। ओ सभ जानि जका मारलकन्हि। कपार फोर देलकन्हि। शरीरमे कम-सू-कम 25 लाठी लागल छन्हि। पचायाहा चण्डेशर पंच जे अपनाके सरकार बुझैत अछि हमर बाबताके थाना नै जाय देलकन्हि। कहलकन्हि जे ऐसू कन्यादानमे विधिान हएत। की ई हेबाक चाही?"

राघि बजलाह-

"हू चन्दा, हमरा सभ बात कावि जखन हम मातृकसू एलौ तू जात भेल।"

एकाएक राघि केर ध्यान चन्दा दिस गेलन्हि तू देखैत छथि चन्दाक आँखिसू नोर खसि रहल छन्हि। राघि केर मोनमे चन्दाक पति दयाक भाि उमड़ि गेलन्हि। चन्दा लग गेलाह आ अपन गमछासू चन्दाक नोर पोछए लगलाह। फुलिरीमे राघि आ चन्दाक अलाबे आर कियोक नै छलैक। चन्दो राघिके पकड़ि कानय लगलीह। राघि चन्दाके भरि पाज कऽ पकड़ि लेलन्हि। राघिकू चन्दाक हृदैक धरकन स्पष्ट सुनाइत छलन्हि। बुझेलनि जेना चन्दा आ राघि हमेिाक लेल एक भऽ गेल छथि। चन्दा सेहो राघिके बाहिसू गरसित भऽ अपना-आपके सुरक्षित बुझैत छलीह। मुदा कनीकबे कालक बाद दुनू अलग भऽ गेलाह। भलन्हि लोक देखत तू की कहत???

कन्हाइ बाबू पंच लोककेँ कहलखिन्ह-

"अहा सभ चारिम दिन बैसारमे आऊ। हम आब बुलेसर भैयासूँ बटबारा कऽ लेब।"

इम्हर कन्हाइ बाबूक बेटा आ पती सभ मिलि कऽ दलाल रूपी लोभी पंच सभकेँ किछु-किछु पलोभन दऽ सभकेँ अपना पक्षमे कऽ लेलन्हि। ऐ तमाम प्लॉटसूँ बुलेसर बाबू अनजान छलाह।

निर्धारित दिन आ समैपर पंच सभ अएलाह। पंचायत शुरू भेलैक। पंच सभ काचे गाए खेलाह। केलि 30 प्रतिशत लहना आ नगदी हिस्सा बुलेसर बाबूकेँ भेटलन्हि। खेत-पथार-घडारी इत्यादिमे आधा हिस्सा जरूर भेटलन्हि। चन्दाक माय भरि इच्छे पंच सभकेँ गारि पढलन्हि-

"एक कप चाह, एक सेर तेल, पाच सेर धानमे अपन इमान बेचैत अछि सरधुआ पंच। आ ई चन्द्रशेखर सरकार। ई तूँ साक्षात यमराज अछि। बहुखौका! जनिीमे घरलिीकेँ खा गेल। दिन भरि चौकपर चाहक जोगारमे लागल रहैत अछि। बेटा कचरी-मुरही आ चाह बेचैत छैक। ओहीसूँ गुजर चलैत छैक। सरधुआ केँ जरूर कन्हैयाक बहु सए-सैकडाक पलोभन देने हेतैक। अगर भगवान कतौ हेताह तूँ गूह गीज कऽ मरत सरधुआ सरकार!!"

बटबाराक बाद बुलेसर बाबूक पहिल उद्देश्य छलन्हि चन्दाक बिआह। एक दिन ओलारपर बैसल छलाह बुलेसर बाबू तूँ बाध दिससूँ लूटन एलखिन्ह आ कहलखिन्ह-

"बुलेसर भाय, अहा कन्हाइ लेल की नै केलौं। से कन्हाइ

सम्बन्धक मयादाके बिसरा गेल। अपने तू मारबे केलक बेटा सभसू सेहो मरबेलक अहाके। एहेन जधन्य कृत्य! फाटू हे धरती!"

बुलेसर बाबू कनैत बाजए लगलाह-
"की कहू लूटन भाय, ई भाए नै कसाइ बथिक। हम सापक पोिके पोसलौ। कून-कून कमिनै कएल कन्हैया लेल। सभ बिसरा गेल। हे महादेि जकाहे तुही। जखना हमरा कना रहल अछि तखना ओहो कानत।"

लूटन बाबू बजलाह-
"भाय, एक बात कहू?"
जटैतके बंगट पहलमानक दोसर बेटाके पछिल कनाया मरा गेल छैक। पथम पतीसू मात एक पूत दैक अपार संपिा तू छैक। लाठी केर जोरगर ओ सभ सेहो अछि अगर अहा कही तू चन्दाक बिआहक चचा करी। अगर ई काज भऽ गेल तू कन्हाइ औकातमे आबिा जएताह। अहा ताकतिर भऽ जाएब। चन्दा आ लडकामे करीब चौदह बखकि अन्तर छैक। ताहि लेल कुनो बात नै। पहलमान छै, अपना उमेरसू दस बखिकम्मे लगैत छैक। आ चन्दो तू ऊचाइमे ठीक अछि।
लूटन केर पस्तािब बुलेसर बाबूके नीक लगलन्हि। बजलाह-
"कन्हैयाके औकात देखेनाइ जरूरी।"
फेर कहलखिन्ह-
"लूटन भाय, ई कायि हमरा पसन्द अछि। चन्दा सभ तरहे ओइ घरमे राज करत। नौकर-चाकर सभ छैक। कुनो िस्तुक कमी नै छैक। लडकाके पछिल पतीसू एक बेटा छैक तू की भेलै? मुदा हमरा

ऐ सम्बन्धमे कक्कक चन्दाक मायसू विमिि किरबाक अक्छ। हमरा विशास अक्छ ओ मना नै करतीह। कावि हम अहाके नीचोड बता देब।”

घर जाइते मातर बुलेसर बाबू चन्दाक मायसू जरैलक बंगट पहलमानक बेटाक सम्बन्धमे बात केलन्क्ह। दोती बर छैक ई जाक्त चन्दाक माय कनी दुखी भेलीह परन्तु जखन आरो बातक जानकरी भेलन्क्ह तू माक्त गेलक्खन्ह। फेर की छल, 15 क्दनक अन्दर चन्दाक क्काआह भऽ गेलन्क्ह।

जक्हया क्काआह रहन्क्ह चन्दाके तक्हया राघि सेहो सक्रयाती क्दससू छलाह। जखन राघि चन्दाक रिके देखलक्खन्ह तू मोन दग्ध भऽ गेलन्क्ह। 17 बखक्कि चन्दाके 31 बखक्कि रि। बाक्ह सभपर गाठ पडल। चौरगर हाथ। माथपर तलबार आ कहटाक चाक्र नीिन! हे भगिन! चन्दा तू बानरक हाथमे नाक्रकेर भऽ गेलीह। खैर! पीअर पक्रधानमे सजक्ल चन्दा बडड आकषक्कि लगैत छलीह। क्काआहमे बुलेसर बाबू तीन बीघा खेत बेचलाह।

छह मासक बाद चन्दा सासुर गेलीह। इम्हर राघि क्दल्ली आक्क गेलाह। राघि जखन चाक्र-पाच बखक्कि बाद गाम गेलाह तू संयोगसू चन्दा सेहो आएल छलीह। हक्ल कऽ काट-काट भेल! लोक सभके पुछलक्खन्ह तू पता चललन्क्ह जे चन्दाके कुनो असाध्य क्कामारी भऽ गेल छन्क्ह जकर इलाज संभि नै छैक। चन्दा शीहीन भऽ गेल छलीह। अक्धकाि समए नैहरमे क्कतबैत छलीह। चन्दाक छोट बक्हनक क्काआह सेहो भऽ गेल छलन्क्ह।

छह मासक बाद चन्दा मक्र गेलीह। चन्दाके कुनो संतान नै भेलन्क्ह। चन्दाक मृत्युक समाचार सुक्त बुलेसर बाबू ओछाइन पकव्ड लेलन्क्ह। लुटन बाबू एक बेर फेरो चन्दाक माय लग आक्ब कहलक्खन्ह जे चन्देक िरसू चन्दाक सभसू छोट बक्हनक क्बआह करा देल जाए। चन्दाक माय माक्त गेलीह। बुलेसर बाबू सुक्धहीन भऽ गेलाह।

चन्दाक छोट बक्हनक क्बआह चन्दाक दोती िरसू भऽ गेलन्क्ह जे चन्दाक बक्हन लेल तृती िर छलक्खन्ह। क्बआहक सोिमे क्दन क्दरागमन भऽ गेलैक। क्दरागमनक दस क्दनक भीतर बुलेसर बाबू पाण त्यावा देलाह। चन्दाक माय नीकसू शाध-िर केलक्थन्ह। आब लगभग चाक्र बीघा जमीन आ घराडी िष छलन्क्ह। चन्दाक माय सभ बेक्च दक्रभंगामे एक कमरा भाडा लऽ चक्ल गेलीह। पैसा बैकमे राक्ख देलक्थन्ह। ओही पैसाक सूक्दसू गुजर चलए लगलन्क्ह।

इम्हर कन्हाइ बाबूके कंठमे घाि भऽ गेलन्क्ह। पैघ ऑपरेिन कराबए पडलन्क्ह। जखन ऑपरेिन भऽ गेलन्क्ह तू पता चललैक जे कैसर छन्क्ह। धीरे-धीरे आबाज समाप्त भऽ गेलन्क्ह। गदक्नसू सदक्रकाल पीज चूबए लगलन्क्ह। मुह आ गदक्नसू दुगन्धि गन्हाए लगलन्क्ह। बड बेटा-पुतोहु क्कयोक आगा लग नै आबन्क्ह। धन्य कही एक बेरोजगार नाक्तके जे नानाक क्कछु-क्कछु सेिा करन्क्ह। िकिहीन कन्हाइ बाबू सन्दूकसू चोरा कऽ अपन पाइमे सू लाख टका अपन नाक्तके दऽ देलक्थन्ह। बहुत क्कछु बाजए चाहैत छलाह कन्हाइ बाबू मुदा िकि् बन्द भऽ गेल छलन्क्ह। घािमे क्पलुआ सेहो फक्र गेल छलन्क्ह। ियिद ओ मोनक्ह मोन अपन कमपिर पििताप करैत छलाह। ऐ घोर कष्टमे सेहो कन्हाइ बाबू नौ मास छटपटाइत रहलाह आ

जीलाह।

अन्तत: एक दिन कन्हाइ बाबू अपन शरीरक त्याग केलन्हि। शरीरसू अतेक गन्ध अबैत छलन्हि जे एग्यारह आदमी कचहयारीमे जएबाक लेल तैय्यार नै। राघवि संयोगसू गाम आएल छलाह। माय कहलथिन्ह-

"राघवि, अहा जाउ। हमरा लोकनि ऐ समाजमे रहैत छी। अहू नै जएबैक तू अहूक माता-पिता बेरमे कियोक नै आएत।"

राघवि माइक आजाके सम्मान करैत कन्हाइ बाबूक दाह संस्कारमे गेलाह। जखन मृतक केर शरीरमे आवाक ज्वाला बढलैक तू राघवि के लगलन्हि जेना ओतए ओइ मृत्युपर गुलेसरा मल्लाह, बुलेसर बाबू आ चन्दा जेना समष्टि रूपसू जश मना रहल छथि। गुलेसरा मल्लाह जेना डंटा उठा बुलेसर बाबू आ कन्हाइ बाबूके डाग मारि-मारि अपन बदला लऽ रहल हो। आ चन्दा गुलेसरा मल्लाहसू अपन पिताक रक्षाक क्रन्दिन करैत छलीह। अही परिवयामे कन्हाइ बाबूक शरीर खाक् मे विलिन भऽ गेलन्हि। सबहक संग राघवि सेहो कचहयारीसू आपस आबि गेलाह। मोने-मोन सोचए लगलाह राघवि- स्त्रिगनिकति तू अतबि अछि। जे जेहेन करत से तेहेन पाऔत।

लघुकथा: पकृक्त सुन्दक्र आ चूहर क्मस्ती

छोटानागपुर अथात आजुक झारखण्ड केर धरती, पहाड, झरना, जंगल, नदी न्यिजीि आ अन्तत: क्मश्छल क्मष्कपट जनजाक्तसू हम जेना नेनपनेसू एक अटूट सम्बन्ध स्थाक्मत कऽ लेने रही। हरदम अपना-आपके जनजातीय गिक्ति बच्चा एिं उमरगर लोक सभ लग हम सुरक्मक्त अनुभि करैत रही। कुनो संिय अथिा भय कक्महयो नै भेल।

मुदा जखन-जखन माए हमरा सभ लग सेन्हा रहय लेल अबैत छलीह तू अनेरे परेिान भऽ जाइत छलीह। हम्मर माएके अगल-बगलक स्तीगण सभ कहलकक्म जे अतए केर आक्मदिासी, र्विष रपे उराि धानक बीया छीटैसू पक्महने गाम्य देिता, स्थान देिता, कृक्म देिता एिं कुल देिताके पसन करबाक लेल पथम सात बाकुट धानके मुगा, कुनो आरो क्मडै, चाऊरसू क्मक्मिि स्थानीय िराब - हंक्मडया आ अन्तत: मनुक्खक िक्मतसू साक्म ओइके अक्मभमंक्मत कए ओकरा सििथिम गामक पधानक हाथसू खेतमे बाउग करैत अक्मछ। मनुक्खोमे बच्चा सभके खूनक पयोगक उतम मानल जाइत छैक। ऐ लेल चोरा कऽ कुनो बच्चाके पकक्मड ओकर घेटक टेटुआके तेजगर चकूसू काक्मट ओकर रक्तके बासक फोफीमे क्मकाक्मल ओइ रक्तसू पूजा कएल जाइ छै। ऐ पक्मियामे जै बच्चाके गदक्मिके टेटुआके काटल जाइ छै तकर मृत्यु ओतक्म भऽ जाइ छै। टेटुआके पूजामे पयुक्त होबाक हेतु काटक परम्पराके स्थानीय भाषामे ओरका कहल जाइ छै। हलाक्मक अप्पन जीिनिक 23 षििधिक्र हम कक्महयो कुनो घटना अपना आूक्मखसू नै देखक्मलऐक। लोक-सबहक मुूहे ऐ विषयमे

चचा करैत अनेको बेर सुनने अि्यि रही।

हम्मर कारी भेनाइ िइद हमरा लेल एकटा िरदान छल। छोटानागपुरक आव्दिासी सभ हमरा कारी होबाक तथा घुरमल-घुरमल केस होबाक कारणे अपने समुदायक सदस्य बुझैत छल। उपरसू सेन्हा तथा सेन्हाक अगल-बगलक लगभग 15 गाममे आव्दिासी मव्हला सभ चरखा चलबैत छलीह। बाताजी खादी भंडारक ि्यिस्थापक छलाह, तै कारणे सेहो आव्दिासी-मव्हला-पुरष हमरा बडड व्सनेह करैत छल। हम सदव्काकाल कोनो-ने-कोनो बहाना बना गामे-गाम घुमैत छलहू। कखनो-काल माए सेहो कहैत छलीह- “जो राधि, बगलक आव्दिासी गामसू खेतक टटका हव्रयर तरकारी लऽ आ।”

आ हम अही सभ चीजक व्करराकमे रव्हते छलौ चटदव्क कुनो आव्दिाी गाम व्दस विदा भऽ जाइत रही।

केिलि धनरोपनीक समैमे हमर माए साकाक भऽ जाइत छलीह। साफे मना कऽ दै छलीह- “देख राघि, कुनो पव्रस्व्थव्तमे भव्र रोपनी तो कुनो गाम व्दस नै जएबै। हमरा कतेको लोक सभ कहलक अव्छ जे अही समैमे आव्दिासी सभ ओडका पूजै छै। हम तोरा बाताजीके सेहो बुझा देने व्छयव्क जे ऐ एक-डेढ मास धव्र तोरा कतौ असगरे नै भेजथुन्ह।”

हम्मर पव्रिारमे माइक आजाक अिहेलना करबाक व्हम्मत हमर कुनो भाए-बव्हनके नै छल। बाताजी सेहो हरदम माइक बातके

सिपिकर मानैत छलक्थिन। हमरा लेल तूए ओ एक-डेढ मास बडड बेकार होइत छल। हम रोपनीक समैमे अपना-आपके जहलमे कैद, लाचार अपराधी मानै छलौ। मुदा दोसर कुनो उपायो तू नै छल। आक्दिसिी मक्हिला सभ चखा हमर क्पिताजीक अथक पयासक कारणे कटनाइ पारम्भ केलक्ि। हुनका सभके हरेक पनरह क्दिनपर सेन्हा खादी भण्डारपर बजा कऽ बीट करा कऽ तूरक पोला देल जाइत छलक्ि। पोला जोक्खि कऽ देल जाइत छलैक। जखन मक्हिला सभ ओइ पोलाके चरखापर चढा ताग बना लैत छलीह तू हरेक 15 क्दिनपर ओइ तागके जोक्खि कऽ खादी भण्डारमे लऽ लेल जाइत छलैक। क्िहनताना तागक एकबधता तथा सूक्ष्मताक आधारपर देल जाइत छलैक। सूक्ष्मताक माप 40 अंकसू पारंभ भऽ 160 अंक धक्ि चलैत छलैक। जतेक कम अंक भेटतैक ततेक मोट आ उखरल सूत मानल जेतैक। क्किछु एहेन बेबस्था छलैक। आ जतेक पातर आ समरस हेतैक ततेक बेसी नम्बर भेटतैक अथात् ई जे कम नंबर िलीके कम क्िहनताना जा ज्यादे पातर या सूक्ष्म ताग तैयार करैिलीके ज्यादे क्िहनताना।

चखाक मरम्मत, रखरखाि, लोक सभके सेन्हा मुख्य खादी भण्डार तथा गाम-गाम जाइक जानकारी देबाक क्जम्मेिारी खादी भण्डारक छलैक। खादी भण्डारमे ई कायिएकटा कायक्िता शी मंगनू ठाकुर करैत छलैक। मंगनू ठाकुरक अिस्था ओइ समए करीब 52 षिि छलैक। ओ जाक्िके बढइ तथा समस्तीपुरक कुनो गामक छल। दुबर-पातर चेरा सन िरीर आ ियाम बरण केर छल ँगनू ठाकुर। निमे केलि तम्बाकू चुसै छल। महा कंजुस। सदक्िकाल पैसा बचेबाक पिृक्िमे मग्न रहैत छल। ओकर जेठ बेटाक िियाह-दान

भऽ गेल रहैक। खादी भण्डारक तमाम चखा तथा ओकर कल-पूजाक बडड नीक जानकारी छलैक मंगनू ठाकुरके। अपन धंधा अथात चखा विषि र पसू अम्बर तथा पेटी चखाक महारथी छल ओ। यएह कारण छलैक जे हमर बाता ओकरा दोसर ठामसू स्थानान्तरण करा अपना लग सेन्हा अनने छलथिन। इम्हर पाच षिमी दू बेर मंगनूके स्थानान्तरणक आदेि पधान कायालय, छोटानागपुर खादी गामोदोग संस्थान, कारील, राचीसू अएलैक मुदा दुनू बेर हमर बाताजी अपन पभुत्कि बलपर ओकरा सेन्हासू कतौ आनठाम नै जाए दलथिन।

जनजातीय समुदायसू हमर आत्मीयता बढाबैमे मंगनू ठाकुर केर भूमिका बडड पैघ रहल छैक। ओ अनेको जनजातीय गाम सभमे जखन चखा कारीकण मे जाइत छल तू हमरा कहैत छल- “बउओ, अहू चलब?”

आ हम अपन माए लग कानिदन करए लगैत छलौ। मंगनू दरिारी पितृक आरमी छल। ओकरा बूझल रहैक जे अगर मैडम (हमर माए) पसन्न रहती तू मैनेजर साहेबसू कुनो कायिआसानीसू भऽ जाएतेक। आ माएके पसन करबाक लेल हमरासू पैघ कुनो हथियार नै भऽ सकैत छलैक ओकरा लेल। ओ माए लग आका कहए लागैत छलैक- “जाय दियौक बउओके मैडम! कुनो दिकत नै हेतैक। हम अपना संगे साइकलपर बैसा कऽ लऽ जाइत छियैक आ अपने संगे तीन-चार घंटाक भीतर िपिस लेने अएबैक। अतए ओहुना तू बच्चा सभसू मार-पीट करैत रहैत अछ। ओतए लोक सभ लग एकर मोनो बठा जेतैक।”

अन्तत: हमर माए किछु ना-नुकुर केलाक बाद मंगनू हमरा लऽ जेबाक हेतु अनुमति दऽ दैत छलथिन। पिताजीसू आजा लेबाक कहियो पयोजन नै परल। ओ हमरा पर हरदम खिबरल रहैत छलाह। आ ऐ तरहे हम अनेको बेर सेन्हाके अगल-बगलमे बसल जनजातीय गाम सबहक भमण मंगनू ठाकुर संग करैत रही। साइकिलक पाछामे बैस कऽ पहाडी इलाकामे भमण करबाक एक अलग तरहक आनन्द अबैत छैक- परमानन्द! उबर-खाबर पगडंडी, ऊूच-नीच रस्ता। कतेको ठाम मंगनू ठाकुर साइकिल चलबैत-चलबैत हॉफय लगैत छल। कतेकोठाम ओकरा इंच चढाइपर डबल लोडमे साइकिल नै हॉकल होइत छलैक। ऐ स्थितिमे साइकिलपर सू अपनो उतरि जाइत छल आ हमरोसू पैघ आत्मीय ढंगसू कहैत छल- “बौआ, उतरि जो। आगा बडड चढाइ छैक। जखने चढाइ समाप्त भऽ जेतैक तखने पुन: साइकिलपर हमरा लोकनि चढि जाएब।”

हमर चंचल मोन मंगनू ठाकुरके ऐ तरहक पस्ताि विना कुनो प्िन आ उतरक मानि जाइ छल। हम तुरन्ते साइकिलपर सू उतरि जाइत रही। आ जखने चढाइ समाप्त होइत छलैक तू हमरा साइकिलके पाछामे बैसा ढलानपर मंगनू मस्तीमे एक-आध पैडल मारि साइकिलपर झुमैत हर-हराएल चलल जाइत छल। मुदा एहेन रास्ताक लेल साइकिलके पछुलका आ अगुलका दुनू बेकके बिल्कुल फीट आ टंच भेनाइ जर री, जैसू कुनो बेलैस ढिगडलापर अथाि रस्तामे कुनो तरहक बाधा अक्समात अएलापर साइकिल सिार बेक मारि अपन तथा अन्य लोकक सुरक्षा कऽ सकए। एक बेर तू हम कालक गालमे जाइत-जाइत बचि गेल रही। भेलै ई जे हम्मर साइकिलके

दुनू बेक ढील भऽ गेल रहए। हम एकटा बिल्कुल नीचा दिस ढलकैत सडकपर अपन साइकिल चलेने तीरिगतिसँ जाइत रही। साइकिलके आरो तेज करबाक रोमासमे रोमाञ्चित होइत हम आरो जोर-जोरसँ पैडलके अपन पएरसँ चलाबए लगलौं। लगैत छल साइकिलके बदला कुनो फटफटिया चला रहल छी। एकाएक नीचामे टी प्वाईट-क्रॉस सेक्सन-पर एकटा टक तेजीसँ जाइत रहैक। हम टकक बिल्कुल लग आबि गेल रही। झटाक दऽ बेक मारि साइकिलके काबूमे करबाक पयास केलौं। मुदा बेकार। बेक कायनि नै केलक। आब लागल जे मृत्यु अवश्यिम्भावी अछि। मुदा के नै अपन पाणक रक्षा करए चाहैत अछि? हमहूँ बिना एकौ क्षण बरबाद केने टाग-हाथ, मुह-कान टुटबाक चिन्ता केने चलैत साइकिलपर सँ कुदि गेलौं। साइकिलके एना धका देलियैक जैसँ ओ कातक खतामे खसि गेलैक। हम स्वयं सडकक कछेरमे खसलौं। पाच मिनट धरि किछु पते नै चलल। जखन होश आएल तँ देखलौं जे हमर पिताक एक मित हमरा लग बडा चिन्तित अवस्थामे ठाढ छथि। हुनकर चेहरापर क्रोध स्पष्ट पकरलकित छलन्हि। हमरा लागल जे आब ई हमरा नीक जका बेइज्जत करताह। मुदा से नै भेल। ओ केवल अतबे कहलन्हि-

“राघव, आइ अहा कालक गालसँ बचि गेलौं। बच्चा छी बच्चा जका साइकिल चलाउ।”

हम पश्चातापक स्वरमे कहलियन्हि- “की कहु काकाजी, एकाएक बेक कायकिनाइ बन्द कऽ देलक। साइकिलमे दुनू बेक ढील भऽ गेल रहैक तकर जानकारी हमरा नै छल। आब जिन्दगीमे एहेन गलती नै करब।”

ओ कहलन्हि- “कुनो बात नै। पहिने उठि कऽ ठाढ होउ। देखू कतौ चोट तँ नै आएल अछि?”

ई कहैत ओ हमरा उठबए लगलाह। मुदा हम अपने फुरफरा कऽ उठलौ। खास चोट नै लागल छल। केहि ठेहुन आ कौहनी कनी छला गेल रहए। साइकिल उठेलौ तू ओकर हैडल कनी टेढ भऽ गेल रहैक। काकाजी साइकिलके ठीक करैमे मदति केलकि मुदा कहलकि- “राघि, पहिने अहा साइकिलक बेक ठीक कराउ तखने ऐपर चढब।”

हम अपन गदनि हिला हुनकर आजा मानबाक स्वीकृति दैत साइकिल गुडकबैत लऽ गेलौ।

चली आब कथाक पसंग दिस। मंगनू कास्ती हमरा बच्चा सभ लग छोडि स्वयं घरे-घरे लोकक चखाके मरमम्ति करए लगैत छल। लोक सभ हमरा बडड स्नेह करैत छल। हमर घरक नीपा-पोता तथा बरतन-बासन धोइलिी चेरी जकरा झारखण्डमे लोक दाई’ कहै छैक, एक उराि महिला छलि। ओकर बेटा-बेटी हमरा संगे खेलाइत छलैक। दाइ सेहो हमरा माइये जका स्नेह करैत छलि आ हमर ध्यान रखैत छलि। ओकरा सबहक संगतिमे हम उराि भाषा धारापहि बाजब सीख गेल रही। तूए कुनो उराि बहुल गाम अथि इलाकामे हमरा सम्पेषणमे कुनो तरहक समस्या नै छल। बीच-बीचमे मंगनू ठाकुर हमर खोज-खबरि लैत रहै छल। पिस जाइकाल हमरा लोककि अपना संगे बहुत रास हरियर तरकारी, फल इत्यादि लऽ जाइत रही।

जे महिला सभ चखा कटैत छथि, तकिका लोककिके खादी भण्डारक िब्दलीमे कतिन’ कहल जाइत छलैक। ओ सभ हरेक पन्रह

दिनपर अपन काटल सूत-ताग-लऽ सेन्हा अबैत छला। बीटमे सूतक नम्बरक आधारपर ओकरा सभके मेहनताना देल जाइत छलैक। कुल आयमे सँ बागक पैसा काटि लेल जाइत छलैक आ बचल आमदनीके चारि अना दिस्साक खादी भण्डारमे जमा कऽ लेल जाइत छलैक, जकरा एजिमे ओ सभ साल भरिक भीतर कखनो कुनो खादीक ि स्त यथा चद्दर, कम्बल, धोती, कुता, लुंगी, ओछाइन इत्यादि किंिा िस्तु जेना कि सरिसबक तेल, मधु, साबुन, अगरबती आदि लऽ सकैत छला। बाद बाकि बारह अना दिस्साक पैसा तुरत भुगतान हमर िपताजी अपना सामने करबा दैत छलथिन।

ओइ कतिन सभमे एक कतिन छलैक- राजकुमारी। ओ सेन्हासूँ करीब 8 किलोमीटर दूरक गामसूँ पन्रह दिनपर पैदल आबैत रहैक मुदा ओकर विियाह नै भेल रहैक। बाइस िखिि अिस्थामे ओकरा विियाह नै भेल रहैक से कुनो आियि बात नै रहैक। कारण ई जे उराि जनजाितक लोक पूरा िएस भेलाक बादे अपन लडका अथिा लडकीक विियाह करैत अछि। राजकुमारी बडा िित आ गंभीर स्िभाि कि महिला छला। चेहरामे हरदम एक पििित्ि हंसिक भाि लेने तथा चुपचाप अपन काजमे मग्न। यएह छलैक राजकुमारीक ियक्तित्ि। ओ सािरि छला। नाक किछ पीचकल, चाम अन्य आदििासी िलाक तुलनामे कनी साफ, कनी चमकगर, कनी रमनगर। िस्त ओ बडा तल्लीनतासूँ धारण करैत छला। कहियो ओकरा उटपटाग िस्त पहिरने तथा अपन िरीक कुनो अंगके देखार केने नै देखलिऐक। राजकुमारी स्िभािसूँ अतेक िित छला जे अगर ओकरा संगे िितालाप केनिहार दस आखर बजैत तूँ राजकुमारी एक आखर। मुदा ओ अपन उपस्थितिसूँ लोकके अििय पभाित करैत

छलि। राजकुमारी सेन्हा मिडल स्कूलसू सातमी धरि पढ़ने छलि। आगा मिथिल आर्थिक तंगी आ अगल-बगलमे हाइ स्कूल नै हेबाक कारणे नै पढ़ि सकलि। हमरा आमिथिहिरदम ऐ बातक होइ छल जे ओकर नाम राजकुमारी किआएक छलैक। एक दिन यएह पश्न हम अपन पितासू पुछलियनि। हमर पिता कहलाह- "राजकुमारीक माता-पिता कुनो विशेष कारणसू एकर नाम राजकुमारी राखि देने हेथिन।"

मुदा अपन पिताक जबिसू हम संतुष्ट नै भेलौ। हमर पिता सेहो बुझि गेलखिन जे राघव ऐ उतरसू संतुष्ट नै अछि। हमर पिता हमरा लोकनिक पसनतासू आनन्दित आ हमरा लोकनिक कष्टसू दुखी होइत छलाह। ओ झटदनि कहलखिन- "ठीक छै राघव। अहा चिन्ता नै कर । ई पश्न हम राजकुमारीक पिता करमा उरावसू पुछबैक। फेर अहाके बताएब।"

एक दिन जखन राजकुमारी अपन पिताक संग खादी भण्डार आयलि तू हम दौगल अपन पिताजी लग गेलौ। हमरा देखते पिता जीके याद एलनि। ओ हमरा दिस देखैत हूसए लगलाह आ करमा उरावके पुछलखिन- "करमा उरावजी, अहा अपन बेटीक नाओं राजकुमारी किएक रखलौ?"

करमा उराव कहलकनि- "शीमान, हमरा सेन्हा स्कूलक हेड मास्टर एकटा बडड सुन्दर कथा सुनौलनि। ओइ कथाक मुख्य पात एक गंभीर आ सुन्दरि कन्या छलैक। ओइ पातक नाओं छलैक राजकुमारी। ई नाम जेना हमरा हृदेमे रचि-बसि गेल। ओइ कथाक

दू षिक्रि ादि जखन भगानि हमरा बेटी देलक्त तू हम झटदक्त एकर नाओं राजकुमारी राक्ख देल। शीमान, नामे अनुसार एकर ियक्तत् भऽ गेल छैक। बडड गंभीर, बुझनुक आ क्तलनसार अक्छ हमर राजकुमारी। बेटा नालायक भऽ गेल अक्छ। सदक्तकाल नामिे धूत्त रहैत अक्छ। मुदा हमर ई बेटी बेटोक भूक्तका करैत अक्छ हमरा सभ लेल। ऐ सभ कारणे एकर वियाह एखन धक्र टाक्ल रहल छी। अनेको क्षत्ता लडकाबलासू आक्त रहल अक्छ। मुदा डर भऽ रहल अक्छ जे कही ई चक्ल गेल तू हमर सभके की हाल हएत? इहो कहैत अक्छ, बाबा! हमरा वियाह नै करक अक्छ। हम अहा सबहक सेवा करए चाहै छी। मुदा शीमान एना कही भेलैक अक्छ? वियाह तू करेबे करबै। राजकुमारीक माए हमरा आब सदक्तकाल खोचारैत रहैत छक्थ : कहै छक्थ कयो बेटीके भला अपना सुख लेल क्तना ब्याहने अपना लग क्तजनगी भक्र रखै छै? लोक की कहत? राजकुमारी नेनमक्तमे ई बात कक्ह रहक्ल अक्छ जे वियाह नै करब। हमरा अहाके मृत्युक पाित एकराके देखतैक? आ शीमान हमरा राजकुमारीक मायके बात कुनो अनरगलो नै लगैत अक्छ। हम तू राघाजीक माएसू सेहो कक्दिन केक्लयक्त अक्छ जे ओ राजकुमारी के वियाह लेल मनाबक्थ। राजकुमारी अहा लोकक्तके बात मानैत अक्छ।”

क्तताजी राजकुमारीक क्ततासू ाितालाप चक्ल रहल छलक्त। आब हमरा राजकुमारीक नामक रहस्यक पता चक्ल गेल छल। राजकुमारी एहेन संस्कारी बेटी अक्छ जे अपना माता-क्तताक कारण वियाहो नै करय चहैत अक्छ, ई जाक्त राजकुमारीके पक्त हम्मर शधा बक्ढ गेल। हमर क्तता सेहो राजकुमारी आ ओकर ियक्तत्तासू बडड पभावित भेलाह।

िमि अक्हना चलैत रहलै। कछु दनक बाद हम एक दन ई अनुभि केलौ जे मंगनू मस्ती राजकुमारी दस कछु बेसी आकर्षित भऽ रहल छल। ठीक एकर विपरीत राजकुमारी ओकरासू दूर हेबाक पयास। जखन हमरा मंगनू मस्ती देखलक तू ओकरा अपन गलताक अनुभूत भेलैक। कहलक- ‘‘बौओ। अहाके मैनेजर साहेब ताक रहल छलाह। हमरो पुछैत छलाह क राघि कतए गेल अछ? अहा जल्दीसू हुनका लग जाउ। ियद कछु अत्याि्यक कायछिक्ह। जाउ बउओ जल्दी जाउ। "

हमरा भेल जे मताजी हमरा तकने हेताह। आ हम तुरत मताजी लग विदा भेलौ। हम जखने मताजी लग जाए लगलौ तू मंगनू मस्तीक मोन पसन भऽ गेलैक आ राजकुमारी कछु परेिन आ विििि बुझना गेल। तथाम हम मताजी लग चल गेलौ। आब चखाक कायिाला मे राजकुमारी आ मंगनू मस्तीके अलाि कयोक नै छलैक!

राजकुमारीक ्यिक्ताि मे कछु विषि अि्ि्य छलैक। ओ हमेि बडड साफ-स्च्छि स्ित धारण केने रहैत छल। ओकर केि बडड नमहर आ झमटगर रहैक। आूख छोट मुदा पकगर, दात दूध जका उज्जर सफेद, गसल-गसल, िरीर ने मोटे आ ने पतरे, कद करीब पाच फीट-पाच ईच। कनीक विक पाप्त करबाक कारणे राजकुमारी स्नो-पोडर इत्याद लगबैत छल। ओ आन आदिसी लडकी सभ जका अपन िरीरमे कतौ गोदना नै गोदेने छल। ओकर हाथ, गदनि, छाताक कछु भाग, नाम पदेिक केछु भाग आद देखलासू एना बुझना जाइ छलैक जेना ओकर समस्त िरीरमे कुनो दाग िि धब्बाक नामो कािन नै छैक- Spotless beauty!!! ओ हमरा हरदम

अप्पन छोट भाए जका क्सनेह करैत छक्ल। यदा-कदा हमराले अपन गामसू मधु, आम, खीरा, ककरी, नेबो एिं अन्य चीज अिि्य आनैत छक्ल।

एक क्दन मंगनू क्मस्तीक संगे हम पुन: साइक्कलपर चक्ढ राजकुमारीक गाम घुमए गेलौ। मंगनू क्मस्ती हमरा गामक मध्यमे बच्चा सभ लग छोक्ड देलक। हमहू ओइ बच्चा सभ संगे पाकल-पाकल बीजू आम तोरए लगलौ। एक कतीन बडड क्सनेहसू अप्पन बारीसू कुन्दरी देलक आ कहलक- “राघि, अहा ई कुन्दरी मैनेजर साहेबले लेने जाउ। हुनका नीक लगै छन्क्ह।”

हम कुन्दरीबला झोरा उठा लेलौ। पता चलल जे मंगनू राजकुमारीक घर गेल अक्छ ओकर चरखा ठीक करक हेतु। हमहू एक हम-ि्यस्क आक्दिासी क्कशोर संगे राजकुमारीक घर क्दस विदा भेलौ। हमरा लोकक्नके रस्तामे राजकुमारीक क्पता करमा उराि भेटल। ओ कहलक- राघिजी, हम तू जंगल क्दस जाडक्न लाबए जा रहल छी। क्मस्ती साहेब हमरे घरमे राजकुमारीके चरखाक भाङठी कऽ रहल छक्थ। अहू सभ ओतए जाउ। करमा उराि अप्पन हाथमे तेजगर आ भक्रगर कुरहक्र लेने छल। ओकर पती चाक्रटा रस्सी लेने ओकरे संगे जंगल जाए रहल छलैक।

खाइर, हम मस्तीमे चलैत राजकुमारीक अंगना लग एलौ। अंगनामे अबैत मातर बहुत विक्चत स्क्थक्तक सामना करए पडल। एहेन स्क्थक्त जकर कल्पनो नै केने रही। अंगनामे अबैत मातर देखै छी जे राजकुमारीक घरक दरबज्जा आधा ओटाएल आ आधा खुजल।

राजकुमारीके कानक आिज आबा रहल छलैक। हमरा लोकबा जखन ओतए गेलौ तू देखलौ जे मंगनू बास्ती राजकुमारीक संग बलजोरी िरीवरक सम्बन्ध स्थािपत कऽ रहल अिछ। राजकुमारीके अपना बाहपाि मे दबेने!! विल्कुल क्हंस पि जका! अचानक राजकुमारीक बयान हमरा क्दस गेलैक। हम अपन गदबिा मोबड िपस जाए लगलौ। राजकुमारी बहुत जोरसू धका मािर मंगनू बास्तीके अपनासू अलग केलक। मंगनू बास्ती पुणित: िस्तहीन छल। अतबा काल धिर हम आ आब्दािसी किािर राजकुमारीक अंगनासू बाहर चिल आएल रही। लगभग 10 िमनटक बाद मंगनू बास्ती हमरा लग आएल। साइिकल बाकालैत कहलक- “चलू बउओ, आब िपस सेन्हा चलै छी। नै तू अन्हारमे अनेरे परेिानी हएत। जंगल दने रस्ता छै। लोक सभ कहैत छल जे कखनो काल बाध-भालू, हाथी आिद रस्तापर आबा जाइ छै।”

हम िबना िकछु कहने ओकर साइिकलक पाछा बैस रहलौ। आनबेर राजकुमारी जाइकाल हमरा भेट करए अबै छिल। ओइ िदन नै आएिल। हमहू भगािनसू यएह मनबैत रहलौ जे 'हे भगािन आइ हमरा राजकुमारीसू दिन नै हो तू बडड उतम।'

मंगनू बास्तीक साइिकलपर पाछा बैसल हम चुपचाप ओकरा संगे सेन्हा आबा रहल रही। रास्तामे कुनो तरहक िितालाप नै भेल। हमरा मोनमे मंगनू बास्तीक पित घोर घृणा उत्पन भऽ गेल छल। ओ हमरा मनुक्ख कम राक्स बेसी लगैत छल। मोन होइ छल ऐ पापीके घेट दबा दी आ एकर जीिनक अन्त कऽ दी। मोनमे राजकुमारीक पित दयाक भाि सेहो आबा रहल छल। ओकर िििता

आ लाचारीपर क्रंदित छलौ। होइ छल केना कऽ राजकुमारी अप्पन चेहरा हमरा देखाओत आ केना कऽ हम ओकरासू बात करब!! मोनमे घृणा, आक्रोश, लाचारी, विवशता-तमाम भाव एक संगे आबि रहल छल।

एकाएक मंगनू अपस्ती साइकिल रोकि उतरि गेल। हमरा कहलक- “बौओ, कनी नीचा उतर ।”

हम उतरि गेलौ मंगनू हमरा कनीक डेराएल लागल। परेशान चेहरा, घामसू तर-बतर, आँखि लाल-लाल, समस्त मुखाकृतिपर पश्चातापक भाव। ओ हमर हाथ पकड़ि बड़ा आत्मीय भावसू जोरसू दबेलक आ छोट बच्चा जका कानए लगल। दुनू आँखिसू दहो-बहो नोर झहड़ए आ मुँहसू निकलए लगलैक- “बउओ, अहा तू हम्मर दुनू बेटासू छोट छी। हमरासू गलती भऽ गेल। माफ कऽ दिअ। हम अहाके पएर पकडै छी। राजकुमारी सेहो अप्पन माथ-कपार पीट रहलि छलि। बउओ, अगर अहा ई बात अप्पन माए-बाबूजीसू कहबनि तू हम आत्महत्या कऽ लेब। राजकुमारी सेहो अप्पन जीनिक अन्त कऽ लेत।”

हम कहलियनि- “अहा एहेन काज किएक केलौ?”

तैपर मंगनू कहए लागल- “बउओ, गलती भऽ गेल। ई हम्मर जीनिक पथम आ अन्तिम गलती थिक। भविष्यमे आब कहियो नै हएत। अहा अप्पन माए-बाबूजीसू ऐ बातक चर्चा नै करबनि। हम आहाक पएर पकडै छी।”

हमरा मंगनू कास्तीपर दया आबि गेल। हम कहलियकि- "ठीक छै, हम अप्पन माए-बाबूजीसू ऐ सम्बन्धमे कुनो चचा नै करबकि।"

हमर ऐ अशासनपर मंगनूके जान-मे-जान एलेक। ओ हमरा नीक जका जनैत छल : जे हम एकबेर जे बाक्ज देलौ से बह लकीर होइत छै। एकर बाद हमरा लोकक्त सेन्हा आबि गेलौ। मंगनूक पक्ति हमर मोनक घृणा आइयो धक्र नै कम भेल अक्छ।
ऐ घटनाक बाद हम दू मास धक्र राजकुमारीक गाम नै गेलौ। घटनाक बादक 15मा क्दनक बीटमे राजकुमारी नै अएलै। सूत लए बीट करक हेतु ओकर कािता : करमा उराि असगरे अएलै। करमा कािताजीके कहलकक्त जे राजकुमारी केर तकायत ठीक नै छै।

कक्छु क्दनक बाद हम एक षििलेल अपन गाम आबि गेलौ गामे केर स्कूलमे भैया नाओं क्लखा देलकि। पुन: एक षिक्रि पाित सेन्हा गेलौ तू पता चलल जे राजकुमारीक वियाह भऽ गलैक आ ओ आब अपन पक्तक संगे अप्पन सासुरमे रहैत अक्छ। चरखा ओ सासुरोमे कटैत छक्ल। सामान्यतया ओकर पक्ति बीटक क्दन कऽ सूत लऽ कऽ आबि जाइ छलैक। एक क्दन एक मक्हला पाछासू हमरा टोकलक- "राघािजी"!

हम पाछा तकलौ तू राजकुमारी छक्ल। एकदम पातर, रोगी जका िरीर, आूक्खक पाक्त गाएब, चेहराक लाक्लमा समाप्त, केि ओझराएल, फाटल मैल सनक नुआ पक्हरने.....। पक्हने तू क्चन्हेमे नै आएक्ल। फेर ओ स्यिं कहए लागक्ल- "विमार पडल छी। डाक्टर कहैत

अछि टी.िी. भऽ गेल अछि। बडड महग इलाज छै। कौहुना चला रहल छी। राघिजी, अहा कोना छी?”

राजकुमारीक बगे देख हमर मोन खिन्न भऽ गेल। भेल एक लहलहाइत फूल असमैमे केना मुरझा गेलै? भगिान एकरा की केलखिन? अतबे कहलखिऐक- “हम ठीक छी। कखनियो अहाक सासुर अिियि आएब। जल्दीये आएब कखएक तू बाबूताजीके तबादला होबएबला छन्हि।”

ई कहि हम अप्पन संगी सभ लग खेलाइले चलि गेलौ।

तकर बाद करीब चारि मास धरि हम सेन्हा रहलौ। मुदा हम कखनियो राजकुमारी लग नै गेलौ आब हम राजकुमारी ओइ मुरझाएल, बिमार आ आभाहीन मुखमण्डलके नै देखए चाहै छी। एक दिन भोरे-भोर करमा उराि हमर माए लग आबि कानए लागल। ओकर बूढ ििरीर हीलए लगलैक। माए पुछलखिन- “की भेल?”
तू करमा उराि आरो जोरसू ठोहिपाडि कानए लागल। बडी-कालक बाद टुटैत स्िरिमे कहलकनि- “की कहू मालकिन, हमर राजकुमारीके दुखिया उजडि गेल। ओकर सििााि भऽ गेलैक।”

हमरा माएके भेलनि, ििइद राजकुमारीक पतिक देहान्त भऽ गेलैक। चिंतित एिि ियिग होइत पुछलखिन- “साफ-साफ बाजू ने की भेलै राजकुमारीके? अहा जमाएके तू ने किछु भेल?”

तैपर करमा उराि कहलकनि- “ओइ कसइयाके किए किछु हेतै मालकिन। पहिने तू हमरा बेटीके दुखित कऽ देलक। फेर अििहेलना।

तकर बाद दोसर वियाह कऽ लेलक। आब हम्मर जमाए आ ओकर सगही बहु, दुनू मिल कऽ राजकुमारीके अपना घरसू मारि-पीट कऽ भगा देलकै।''

हम्मर माता-पिता एवं हम स्वयं करमा उराकिके ऐ स्थिथासू बडड रवित भेलौ। मुदा की कऽ सकै छेलऐक। कनी-कालक बाद भोजन बनलै। माए ओकरा बलजोरी भोजन करा देलथिन। एकटा नवि नुआ, ब्लाउज, साया तथा तीन खण्ड पुरान नुआ राजकुमारीके पहिरैले देलखिन। पिताजी किछु नगद सेहो देलखिन।

एक मासक बाद पिताजीक स्थानान्तरण सेन्हासू राची भऽ गेलनि। हम सभ राची आबि गेलौ। करीब एक षिबीत गेलै। एक दिन राची किछु समान लेबाक लेल मंगनू मिस्त्री अएलैक। ओ हम्मर माएसू भेट करए अएलनि। अनेक तरहक बात भेलैक। अन्तत: माए पुछलखिन- ''राजकुमारीक की हाल? दोसर वियाह केलकै की नै?''

मंगनू मिस्त्री कहलकनि- ''वियाह की करत बेचारी। ओ तू ऐ दुनियेसू विदा भऽ गेल। राजकुमारीक मरला करीब पाच साम भऽ गेलैक। पहिने बाप मरलै बादमे अपने दिाइ दारक बेतरे कहरि कऽ मरि गेल।''

ई बात सुनि हम्मर माए बडड दुखी भेलीह। हमरा भेल- 'चलू नीक भेलै, बेचारीके कष्टसू मुक्ति भेट गेलै।' हू मंगनूपर धोर तामस होइत छल। भेल ई आदमी 10 बर्खससू टी.बी.सू गसित अछि। मुदा नीक स्तिु सभ खा पी कऽ दिाइ लऽ कऽ सामान्य जीवि जीब

रहल अछ। ई नीच, चवरतक्हन आ चूहर क्नस्ती अप्पन ीिमारी राजकुमारीके पटा देलकैक। एके संग ओकर पकरािरक सिनिाि कऽ देलकैक। भगािन एकरा कएक नै कुनो दण्ड दैत छव्थन!!!

राक्तमे हम असगरमे बडड कनलौ। मुदा अन्तत: ऐ बातक चैन जर र छल जे आब बेचारी राजकुमारी संसाकरक कष्ट आ यातनासू आजाद भऽ गेल। पुनजन्मिक बारेमे हमरा ककछु नै बूझल अछ। अगर पुनजन्मि होइ छै तू हम भगािनसू यएह पाथनाि करबक्त जे हे भगािन राजकुमारीके अवाला जनममे कुनो राजाक घरमे सतेमे राजकुमारी बना देबैक आ अगर संभि हो तू ओकर बाप करमा उराकिे राजा बना देबैक आ तकरे बेटी राजकुमारीके बनेबैक। हे भगािन अगर राजकुमारीके राजा घर नक्हयो जन्म देबैक तू ठीक मुदा ओकरा चूहर मंगनू क्नस्ती सनक घक्टया आदमीसू दूर रखबैक।

लघुकथा- सखी कुन्ती

हम करीब तेरह षिक्ि भऽ गेल रही। रही बडड खुलक्ििी आ अगाध बदमास। कक्हयो एहेन नक्ह होइत छल जक्हया ककरोसू झंझट नक्ह होइत हो। माय हम्मर लोकक उपरागसू तंग आक्ब गेल छलीह। सब उपाय केलक्ह; डाटब, बुझाएब, मारब। मुदा बेकार हम अपन खुलुक्िी स्भिाकिे नक्ह य्यागलहू।

एहनो बात नक्ह छल जे हमरा अपना मोनमे अपन कमक्ि पक्त घमण्ड हो। पक्त क्दन सूतबा काल ई क्ाणयि लैत रही जे आब लोक सभसू झगडा फसाद नक्ह करब। खूब मोन लगाकऽ पढब। लोक आब माय लग ई कहय अयतक्ह जे आहाक बेटा अपन कक्ाक सबसू नीक क्वदाथी अक्छ। लोक सभसू आपसी पेम बना रखैत अक्छ। आक्द आक्द। ‘‘मुदा ई सब क्कछु क्गाक क्ाणयि होइत छल। भोर होइतक्ह हम अपन बदमासीक पक्र्कामे पुनः संलग्न भऽ जाइत रही।

माय सोचलक्ह; ‘‘आब ई बबाद भऽ जाएत’’। तामससू घोर होइत बाढक्न उठा एक क्दन कतेको बेर मारलक्ह। बीचमे हफैत रहली या कहैत रहलक्ह ‘‘राघि! तोरासू नीक कुकुर! कमसू कम अपन पोसनहारक बात तऽ मनैत अक्छ’’। माएक हाथ चलैत रहलक्ह, आ हम माक्र खाईत रहलहू। फेर ओ बजलीह; तू तू बतहा कुकुर छै मारैत मारैत माए थाक्क कऽ चूर भऽ गेलीह।

ओना तू कतेको क्दन माएसू माक्र खाईत छलहू मुदा ओक्ह क्दनक बात जीक्नपर्यंत याद रहत। िरीर बेदनासू कराहए लागल। माए के सेहो बुझेलक्ह जे आई ओ क्कछु ज्यादे माक्र देलक्ह। हम क्बना क्कछु कहने मक्गडल (मक्ददर)के पाछा जाए कानए लगलहू।

आधा घंटाक बाद माए मालीमे करक तेल लेने अयलक्ह। पाछासू

हमर झोटके सहलाबए लगलन्हि। हमरा भेल फेर मारतीह। मुदा जखन हुनका दिस ध्यान गेल तऽ देखलहुँ आँखिसँ नोर चुबैत छलन्हि। कहए लगलन्हि; “चारिटा बाल बच्चा भगवान देलन्हि। तीनटासँ कहियो कुनो शिकायत नहि भेल। सबहक कसरि तो पूरा कऽ देलह राघव। माए कहैत रहलीह आ माथा सहलाबैत रहलीह। आब हमहुँ कानए लगलहुँ। कहलियन्हि “माए! आब हम बदमासी नहि करब! हमरा आई आहा बडड मारलहुँ। पूरा शरीर गूड घाव जकाँ ददरिकरैत अछि”। ई कहि हम माएके पकडि हुनकर गरसँ लावा बडड जोरसँ कानए लगलहुँ। पूरा शरीरमे बाढ़िके ओदरा पडि गेल छल। माए ओकरा देखैत हमरे जकाँ जोरसँ कानए लगलीह। फेर तेल लगौलन्हि। स्नान केलहुँ आ भोजन केलहुँ। माए दिन भरि कनैत रहलीह। दिन भरि अन नहि खेलन्हि। लोक सब आगह केलकन्हि तँ कहलखिन्ह जे हम्मर प्रायश्चित यैह थीक जे हम 24 घंटा अन जल ग्रहण नहि करी”।

जखन हमरा पता चलल हम दीदीके हाथसँ चाह लए माए लग गेलहुँ। हमरा बुझल छल जे माए अन बेतरे तँ रहि सकैत छथि मुदा चाहके बिना नहि। हम कहलियन्हि माए! अहा चाह पी लिअ। आब हम कहियो गलती नहि करब। लोक कहत ‘राघव केहेन नीक लडका छैक’। माए हमरा दिस देखलन्हि आ बजलीह; चुपचाप चाह लऽ कऽ घर चलि जो। जाई हम किछु नहि खैब! रातियोमे माए नहि खेलीह। भोरे भईया दरभंगासँ अयलाह। आबिते मातर माए हुनका कहलथिन्ह; “पशिजी, राघब हमर जीनाई दुलभि कऽ देने अछि। लोकक उपरागसँ तंग आबि गेल छी। कावि जानवर जकाँ मारलियैक। कचोट बादमे बडड भेल। ई महामुखवि निकलि गेल। ते एकरा पिताजी लग दिसमडेगा भेज दहक। रामनगर शिली बहिन कहैत छलीह जे रोहित चारि पाच

दिनक भीतर राची जाए बला छथि। हुनके संगे पठा देहक। बाबूजीके एकटा चिटी लिख देहुन"। हम्मर घरमे माएक राज चलैत छलिन्ह। भैया हुनकर आजाके स्वीकार केलन्हि। साझमे भैया रोहित भाईके लऽ कऽ अयलाह रोहित भाई माएके कहलथिन्ह; कुनो बात नहि करिया काकी, हम राघबके सिमडेगा बला बसपर बैसा देबैक। सिमडेगामे बसे स्टेड लग खादी भण्डार छैक। बसक कण्डक्टर राघबके ककाजी लग पहुचा देतैक"।

माए हमर जएबाक तैयारी करए लगलीह। हमरा गामसू सिमडेगा गेनाई नीक नहि लाबा रहल छल, जे एकबेर जे कुनो बात माए मोनमे ठानि लेलन्हि तकरा दुनियाक कुनो ताकत नहि टारि सकैत अछि। ताहि बिना कुनो पतिकार केने हमहू सिमडेगा जेबाक तैयारीमे लाबा गेलहू। अपन तीन चारिटा लंगौटिया यार सबके कहि देलयैक; "हम आब सिमडेगा चललीयौक। तू सब रह अतय केर राजा"।

चारि दिनक बाद हम रोहित भाई संग सिमडेगा लेल पस्थान केलहू। आबए काल माए बडड कनलीह। बड हृदयसू लगौलन्हि। पहिल बेर पता चलल जे माए हमरा कतेक मानैत छलीह। कहलीह; "बाबूजी लग, मनुक्खि जका रहबाक पयत करिहै राघब। तंग नहि करियेन्ह। माए एकटा चिटी सेहो बाबूजी के लिखलथिन्ह। चिटी अंतिम भागमे लिखल रहैक;

"राघब बडड बदमास अछि। पतिदिन लोकक उपरागसू मोन आजिज भऽ गेल अछि। ताहिसू एकरा अहा लग पठा रहल छी। शायद अहाक डरसू बदमासी कम करत। हम जनैत छी ई हमर कोर पछुआ अछि। तइयो एकर उतम भविष्य केर लेल अपन छातीपर पाथर राखि अहा लग दूर देशमे पठा रहल छी। एकरा डॉट फटकार अधिक करबैक, मुदा अहाके हम्मर आ चारि धीया पुताक सपत

अछ, एकरा मारबै नह"।

माएक कटी हम कसमडेगा अयलाक आठ दनक बाद पढलहु। माएक यादमे चुपचाप बडड कनलहु। लागल केहेन महान चीजक नाम छैक 'माए'। सयिं तू मारैत छलीह, मुदा जखन बाबूजी लग भेजलकह अछ तू बाबूजीके सब तरहे बुझा रहल छथन्ह जे राघबपर हाथ नह उठेबैक। बाह रे माएक ममता!

बाबूजी माएके बडड मनैत छलथन्ह। ओ हमरा बुझबैत छलाह; "राघब, अहा खूब मोनसू पढु। अहाके जे कुनो चीज चाही से कहअ जा पढु। लोक सबसू झगडा दान नह कर"।

अगल बगल केर चार पाच लडका लडकी सबसू बाबूजी हमर परचय करा देलकह। हम अपनामे आियजिनक परितित अनलहु आ लोक सबसू लडाई झगडा ययावा देलहु। बाबूजी पसन छलाह, जे चलू राघबमे एहेन परितित अयलकह।

हमरा लोकक्क घरक बगलमे एकटा तमाकुल बेचय बला बकया छल। ओकर नाम रहैक सोहन साहु। सोहन साहु केर बेटी ीला छलैक। हलाक ीला हमरासू एक कक जुनीयर छल। ीलाक नाक नर्क बड सुन्दर, रंग कारी मुदा सोहनगर। ीला जानि भऽ रहल छल, से रीरक अंगसू सपि परलकत होइत छलैक। पातर ठोर, डोका सनहक आख, मध्यम कद। कपडा लता सेहो ठीक पहरैत छल। ीलाक माए हमरा बडड मानैत छलीह। कहैत छलथन्ह; "बेचारा राघब,! बना माएके कसमडेगामे रहैत अछ"। ीला सेहो हमरा बडड मानैत छल।

कपताजी हमर नाम कसमडेगाक सरकारी स्कूलमे कलखा देलकह। हमर स्कूलके ठीक पाछा ीला कन्या विदालयमे पढैत छल। हलाक ीला बरसमे हमरासू डेढ षिकि पैघ छल, परंतु ककामे हमरासू एक

कक्ष पाछा। स्कूलक समय दूनू स्कूल एकै रहैक। हम पक्काकदिन स्कूल मिलेक संग जाइत रही। मिलाक संग मिलाक एक सहछात्रा सेहो हमरा लोकक्कके संग विद्यालय जाइत छक्ल। ओक्ह छात्राक नाम रहैक कुंती। कुंती मध्यम कदके करीब पन्द्रह षिक्कि सिस्थ आ गोर लडकी छक्ल। नमहर कारी कारी केश, सुन्दर नाक, कान। कनीक मिससू ज्यादे बुझना जाइत छक्ल कुंती। नैः नैः कुंतीसू हमर नीक बातचीत होमए लागल।

पता नक्ह कियाएक कुंती हमरा मिलासू ज्यादे नीक लगैत छक्ल। क्षशछल, सहज आ सुन्दक्र। ओकर आंक्ख क्दस जखन कखनो ध्यान जाइत छल तू एना बुझाइत छल जेना ओ सहज भाषिसू मोनक कुनो बात हमरासू बाटए चाहैत अक्छ। बात मिमे पता चलल जे कुंती मैक्थल बाहमणी थीक्क। पूरा नाम रहैक कुंती झा। चुंक्क हमरा लोकक्ष सभयिस्क आ संगीक रुपमे रहैत रही, आ उपर कुंती हमर सखी मिलाक अक्भन संगी रहैक ताक्हसू हम सब ओकरासू तू कक्ह कऽ बात कक्रयैक। हलाक्क एक क्दन मिलाक माए हमरा कहलक्ह, राघि, अहा सब कुंतीके तू नक्ह कक्हयौक"!

हम पुछक्लयक्ह, "क्कयाएक काकीजी? कुंती आ मिला दूनू हमर संगी जका थीक्क। हम मिलोके तू कक्हकऽ बजबैत क्छयैक मुदा अहा कक्हयो मना नक्ह केलहु, परंतु कुंतीक लेल ई बात क्कयाएक कक्ह रहल छी"?

मिलाक माए हमर पशक जिाब देमए लगलीह, यही बीचमे मिला आ मिलाक क्पताजी हुनका रोक्क देलक्थन्ह। मिलाक क्पताजी मिलाक माएसू कहलक्थन्ह; "अहा बक्चा सबके बीचमे क्कयाएक टाग अरबै छी? "जखन कुंतीके कुनो समस्या नक्ह छैक, तू अहाके की समस्या अक्छ? राघबके अनेरे अहा विक्ष नक्ह क्दयौक"। मिला सेहो अपन

माएके भाषण देमए लागल; “गे माए, ई तोहर बडका समस्या छौक। अपना जे करक छौक से कर। जकरा जेना बजबै चाहैत छै, बजा। हमरा सभक्क बीचमे नक्ह बाज। हम कुंती आ राघब ओक्हना रहब जेना रक्ह रहल छी। हमरा सबके क्यथमि नैक्तकताक विका नक्ह दे माए”।

हमरा बूझ’मे नक्ह आयल जे एकाएक बाप बेटी क्ललकेर बेचारी ि्धि मक्हलाके कयाएक बजबासू रोक्क देलकैक। ओना ि्ला माएक बातपर हमरा कछु विस्मय जका सेहो लगैत छल। ि्ला हमरा क्दस देखैत बाजल; “राघब,! तो जेना चाहैत छै तक्हना कुंतीके सम्बोक्धत कऽ सकैत छै। जेना कयाएक, ओक्हना जेना हमरा कहैत छै। तक्हना कह” कुंती कहैत रहल। समय चलैत रहल। हम अपन माएक देल िचन पर थोडेक पक्तबध रहलहु। खूब मोनसू पढी। लोक सनसू झगडा फसाद लगभग छोव्ड देलकै। स्कूलक विक्क सब सेहो हमर व्यिहार आ कुनो चीज अथिा जानके सीखबाक उत्कंठा या व्जजासासू पसन छलाह। बाबूजी हमर पि्सा सुक्त गद् गद् भऽ गेलाह। झट दक्त माएके क्चटी लीक्ख देलक्थन्ह। क्चटीक मजबून ई रहैक।

राघबमे आियजिनक पक्रतिक भेलैक अक्छ। गामसू एकरा क्समडेगा ऐनाई करीब 7 मास भऽ गेलैक मुदा भाई धक्र ककरो कुनो विकायत राघबके क्खलाफ नक्ह भेटल अक्छ। विक्क सबसू राघबके सम्बन्धमे हमेिा जानकारी लैत रहैत छी। सब कयोक मुक्त कंठसू राघि केर पि्सा करैत रहैत छक्थ। हमरा राघि कुनो तरहसू परेिान नक्ह करैत अक्छ। राघब अतेक नीक भऽ जाएत तकर तू हम कल्पनो नक्ह केने रही”।

क्पताजीक पत पक्ढ मा बडड पसन भेलीह। तुरत क्णपि लऽ लेलक्ह

जे कमसँ कम दुइयो मासक लेल बिसमडेगा अयतीह आ हमरा सब संगे रहतीह। मा बाबूजीके पत दारा सूचना देलखिन्ह जे धनकटनीक पिाित् ओ बिसमडेगा आबि रहल छथि।

किछु दिनक बाद माए बिसमडेगा आबि गेलीह। हम बडड पसन रही। माएक स्नेह, माए हाथक भोजन भेट रहल छल बाबूजी सेहो पसन छलाह। लगभग हमर झंझटसँ सिंतंत किछु दिन लेल भऽ गेल छलाह। माए अपन मिलनसार सिभाकि कारणे बिसमडेगाक नीचे बजार मुहल्लामे पिसाक पात भऽ गेलीह। स्त्रीगण सब अपन तमाम नीक कायमि हुनका बजबय लगलखिन्ह।

हमरा बिसमडेगा आयलाह आब लगभग एक िषि भिऽ गेल छल। एहि बीचमे किछु अपयािित घटना घटित भेलैक। कुंती लगातार चािर पाच दिनसँ नहि आबि रहलि छलि। िीलासँ जात भेल जे कुंतीक घरमे किछु झंझिट चलि रहल छैक, ताहि कारणे ओ नहि तँ स्कूले आबि रहल छलि आ ने हमरा सब लग।

लगभग दस दिनक बाद कुंती िीलाक घर आयलि। हम िीलेक घरमे रही। हमर माए सेहो ओतय छलीह। कुंतीक चेहरा उतरल रहैक। मुँह कारी स्याह। आँखिक उपर नीचा फूलल। अहिसँ पहिने कि हम किछु ओकरासँ पुछिितयैक, हमर माए आ िीलाक माए कुंतीके आबितहि ओकरा भाषण देमय लगलखिन्ह। माए हमर बाजए लगलीह; “देखू कुंती! अहाक बाहमण कुलक स्त्रीमे जन्म भेल अछि। पिि नीक, अधलाह जेहेन होइत छैक, स्त्रीगण हेतु भगिान होइत छैक। अहाके भोलाझा पति छथि। अहाके हुनकर आजाके अिशय मानक चाही। बिना हुनकर आजाके कुनो कायि केनाइ या कतहु जेनाइ उचित नहि। अहा अपन गलतीके सिीकार कर आ जीिनिके आनन्दसँ पूिकि जीबू”। हम माएक बातके सुनलहुँ तँ आियमि पड़ि गेलहुँ। पहिल बेर इ जात

भेल जे कुंती कुमारि नहि अविवाहित महिला छथि। आब बुझना गेल जे शिलाक माए हमरा कियाएक कहैत छलीह जे कुंतीके तू कहियो नहि बजेबाक हेतु! चिंताक अथाह सागरमे डुबि गेलहू। कतए 17 वर्षक कुंती आ कतए 52 वर्षीय भोला झा। केहेन अनमोल विवाह!!! हे भगवान, ई केहेन जोडी बना देलयैक! लोहामे सोना सटि गेल। भरल दुपहरियामे अन्हार!! एक क्षण लेल एना बुझना गेल जे कुंतीक आत्मा हमर शरीरमे प्रवेश कऽ गेल! हम अपना आपके कुंती बुझि मोनहि मोन कानए लगलहु, कापए लगलहू। अपन बाबतयौत बहिनक विवाहक कालक स्त्रीगण सब हारा गाएल गीतक एक पाँति बेर बेर मोनमे हुमरय लागल;

"लोहामे जड़ल गेल हम्मर सोना।

हम जीबै कौना"!!

मुदा कुंती पाथरक मूर्ति बनलि हम्मर माएक आ शिलाक माएक अनर्गल भाषण सुनैत रहलि। बिना कुनो उचाबच केने। कुंतीक माथ जमीन दिस रहैक। किछु कालक बाद देखलियैक जे धरतीपर नोरक बुन्द मारितै पडल छैक। मुदा ओ सब ठोप बेकार भऽ गेलैक। दकियानूसि परिवेशमे हमर माए ततेक रमलि छलीह जे हुनका कुंतीक नोर नहि देखेलन्हि। किछु कालक बाद कुंती मुह ऊपर उठा अपन गालपर हाथक लाल निशान भोला झा चमेटाक निशान छलैक। माए अपन हाथसू कुंतीक गालके सहलाबए लगलथिन्ह। माएक ममत्वके देखि कुंतीके हृदय फाटि गेलैक। कुहेस फाटि कानए लागलि। हम्मर माए अपन छातीसू लगा लेलथिन्ह। कहलथिन्ह; "अहा आब नीकसू रहू। भोला झा गलत काज केलन्हि अछि। हम मैनेजर साहेब (हम्मर पिताजीके बारेमे) कहबन्हि जे हुनका समझेथिन्ह। अहाक जेठ बहिनसू हुनकर छोट भाएके बियाह भेल छन्हि आ अहाक जेठकी भवानी

अहासू एकै षिकि छोट अक्छ। मुदा आगू नीकसू रहू। केलि स्कूल जायकाल स्कुटिआक्द पक्हर । स्कूलसू िपस अयलाक बाद सारी पक्हर , नीक जका रहू। जतए ततए नक्ह बौआऊ। छौरा सबसू हसी ठटा नक्ह कर"।

आ लाचार कुंती हम्मर माएक बातके सुनैत रहक्ल। एना बुझना जाइत छल जेना ई सब माए बेटी हो। अही बीचमे ीिलाक माए चूराक भूजा आ कचरी बनाए सबके खाए लेल देलक्थिन्ह। कुंतीक नक्ह लैत छक्ल मुदा हम्मर माए एि ीिला ओकरा बडड आगह केलक्थिन्ह तू कुंती खाए लागक्ल। नोर मुदा एखनहू खक्स रहल छलैक।

ओक्ह क्दन साझमे ीिला हमरा कुंतीक सम्बान्धमे तमाम जानकारी देलक। भेलैक ई जे कुंतीक जेठ बक्हनक वियाह भोला झाक छोट भाएसू भेल रहैक। कुंतीक बक्हनके दूइ लडकी आ दूइ लडका छलैक। भोला झा समस्तीपुरक कुनो गामसू कम्मे िरसमे क्समडेगा आक्ब गेल छलाह। अतय आक्ब गुजर बसर करबाक लेल मुख्य सडक केर कातमे एक लाइन होटल खोक्ल लेलक्ह। होटलके बगलमे क्समडेगाक नामी पेटोल पंप रहैक। पेटोल पंपक अगल बगलमे गाडी घोडा ठीक करबाक माक्रते दुकान आ मेकेक्नक सबहक भरमार। अक्ह सब कारणे पाच दस बस टक आ अन्य गाडी सदक्रकाल ओतए लागल रहैत छलैक। आ गाडीक डाईिर, सहायक इत्याक्द भोला झाक लाईन होटलमे सामान्यतया खाटपर बैक्स भोजन करैत छलैक। लाईन होटल केर भोजन होइत छलैक अक्त सिक्दि आ चहटगर। कक्हयो कालक हम्मर क्पताजी ओक्ह होटलसू तरकारी इत्याक्द मंगबैत छलाह। तू भेलैक ई जे भोला झा अपन पक्रिरके ठीक करयमे लागल रहलाह। तीन कुमाक्र बक्हनक विािह, माए बापक संस्कार, विया कमि दूटा छोट भाएक रोजगारक तलाि आ वियाह दान करैत

करैत कहियो अपना बारेमे सोचबे नहि केलकहि। अही बीच जखन कुंती करीब 14 षिक्कि छलि तू अपन जेठ बहिन लग कसमडेगा आयलि। ओहि समयमे भोला झा 51 षिक्कि छलाह। कुंतीक रीर भरल रहैक। आ देखबामे 18 19 षिक्कि लगैत छलि। भोला झाके अचानक वियाह करबाक इच्छा भेलकहि। अपन छोट भाए अथात् कुंतीक जेठ बहिनोईके कहलथिन्ह जे ओ कुंतीसू वियाह करैत छथि। तातिे धरि कुंतीक माताक सगिािि भऽ गेल छलकहि। विधाि माए ओहि जमानामे चारि हजार टकाक लोभसू कुन्तीक वियाह भोला झासू करा देलकैक। पहिने तू कुंतीक नहि बुझि सकलि अहि सब चीजक परिणाम। मुदा नइ नइ व्यस्थता सामि होमए लगलैक। हालहिमे भोला झा कुंतीके राक्तमे हिि के विकार बनबय चाहैत छलथिन्ह, जकर ओ पतिकार केलककहि तू झोटा नोचि गालपर बडडपर मारलथिखन्ह। ीिला ईहो कहलक जे भोला झा दिन भरि गाजा पीबैत रहैत छथि, राकस जका मोछ रखैत छथि, मुहसू गंध अबैत रहैत छकहि, ताहि सब कारणे कुंती हुनका लग जाएसू बचय चाहैत अछि।

खैर! अहि घटनाक बाद आ कुंतीक अतीत जनबाक कारणे हम्मर व्यिहार ओकर पति बदलि गेल। कुंती आन ठाम जेनाई बन्द कऽ देलक परंतु ीिला आ हमरा लग एनाई नहि रकलैक। हम आब ओकरा कछु सम्मानसू बचबय लगलियैक तू बाजि उठलि; “नहि राघब, ई ठीक बात नहि। तो हमर परम मित छैह! हमरा पूि जका कुंती कहि सम्बोधन कर तू नीक लागत। हम एकबेर पुनः कुंतीक संग हि पुरनका व्यिहार करए लगलहु।

समयक चि चलैत रहलैक। एहि बीच हमरा लोकनि दसमी कक्षामे पहुच गेलहु। हम्मर उम करीब सोलहके भऽ गेल। कुंतीक लगभग अठारह षिक्कि। एकाएक कुंतीक रीरमे आियजिनक पक्तिनि आबए

लगलैक। ओकर कि एकाएक बडड भारी भऽ गेलैक, गाल मोट भऽ गेलैक। रीरक जिन बढ़ि गेलैक। आँखि छोट भऽ गेलैक। हलाकि एहि तमाम परिवर्तनिके बादो कुंतीक सौन्दर्यमे कुनो कमी नहि भेलैक। एखनो हमरा कुंती अजीब सुन्दर लगैत छलि। करीब आठ मास पहिने एकबेर पता नहि कियाएक कुंती हमरा भरि पाज पकड़ि अपन हृदयसू सटा लेलक आ हम्मर माथा चूमि लेलक। हम सन्न रहि गेलहु। लाजे किछु नहि कहलियैक। मुदा तहियासू सदिकाल मोनमे यैह सपना आबए लागल, जे किनको सयायत कुंती हमर जीनि संवानी बनि जाईत। हलाकि हमरा ई नीक जका बुझल छल जे ई संभि नहि अछि। एक दिन हम कौतुहलमे पुछलियैक, “कुंती तोरामे अतेक परिवर्तनि कियाएक भऽ रहल छौक। तौ कियाएक अचानक मोट भऽ रहल छै”?

हम्मर कौतुहल सुनि कुंती हूसय लागलि। केलि कहलक; “राघि, तौ नहि बुझबै!! से कहि कुंती चलि गेल।

एहि घटनाक लगभग एक मास बाद कुंती स्कूलो गेनाई बन्द कऽ देलक। कुंती हमरा ई कियाएक कहलक जे “राघि, तौ नहि बुझबै”!! हमरा किछु नहि फुराइत छल। अंततः एक दिन जखन स्कूलसू डेरा आबैत रही तू बाटमे जेल लग िीला भेट भऽ गेल। िीलासू कुंतीके बारेमे जानकारी लेबए लगलहु तू पता चलल जे कुंती गभिती थीकि। आब बूझऽ मे आएल जे कुंती कियाएक हूसलि आ कहलक जे तौ नहि बुझबै”!!! हम िीलाके पुछलियैक; “आब कुंतीके पढाईके की हेतैक”? िीला कहलक; “किछु नहि भोला झा कहलकैक अछि पढाई छोड़ि देबाक हेतु। आब डेढ मासमे कुंती अपन बच्चाके जन्म देत आ बच्चाल लालन पालनमे। पढाईक अंत भऽ गेलैक। खैर, छोड राघब! हमरो पिताजी आब हमरा लेल लडका ताकि रहल छथि।

हमरा माए लग तीन लडका ताक रहल छथि। हमरा माए लग तीन लडकाक फोटो छैक। हम तोरा देखा देबौक''।

मुदा हमरा कुनो लडकाक फोटोसू कुन मतलब! खैर! करीब डेढ मासक बाद एक दिन ीिलासू जात भेल जे कुंती सरकारी अस्पतालमे एक लड़काके जन्म देलकैक अछि। दोसरे दिन भोला झा दू किलो मिठाई लऽ कऽ हमर पिताजीके दऽ गेलथिन्ह। भोला झा खुीिसू गद् गद् छलाह।

अहि घटनाक किछु दिनक बाद पिताजी स्थानातरण सिमडेगासू वाकडीह भऽ गेलन्हि। पिताजी संग हमहू वाकडीह आबि गेलहू। करीब चाकर षिक्ि बाद सिमडेगा गेलहू तू ीिला नहि भेटल। ीिलाक माए कहलन्हि जे ीिलाक वियाह राऊरकेला भऽ गेलैक। लडका चाऊरक व्यसायी छैक। ीिलाके एक सालक एकटा लडकी छैक। ीिला अपन पति आ बच्चा संगे बडड पसन अछि। हलाकि कुंतीसू भेट नहि भऽ सकल मुदा ीिलाक माए बतौलन्हि जे कुंतीके एकटा लडकी सेहो छैक। आब ओकर पति भोला झा अपन माएसू भिन भऽ गेल छथि। कुंती पूणरिपेण एक सफल गृहणी, पती आ माए बनि गेल अछि। सदिकाल अपन परिवार, बेटा, बेटी आ पतिक सेिमे लागल रहैत अछि। ीिला नहि छल तू हमरा कुंतीसू भलाके मिला सकैत छल। इच्छा रहितहू हम कुंतीसू नहि भेट कय सकलहू।

इमहर करीब 20 षिक्ि बाद कुनो पयोजने सिमडेगा गेल रही। राचीसू जखन सिमडेगा लेल बस पकडलहू तू कुनो विीेष परिवतिनि ओहि क्षेतमे नहि बुझना गेल। किछु मकान इय्यादि अिश्य बनि गेल रहैक। सिमडेगामे कुनो विकास नहि बुझना गेल। पिताजीक मित शी देिचन्द्र मिशजीक ओतए हम ठहरलहू। पाच दिन सिमडेगामे रहलहू। बहुत पुरान लोक सबसू मुलाकात भेल। ीिलाक छोट

बच्चहनक विाहि सेहो भऽ गेल रहैक। ओकर माए एखनो ओकहना नीक सभािक सािकनी छक्ल। िलाक छोटका भाई दीपू बड पैघ पीबाक भऽ गेल रहैक। हम्मर घरमे कायिकरए बला दाई असहाय जीिन जीबा रहल छक्ल। पक्त मक्र गेलैक आ बेटा नालायक। चन्दन काश िकील साहेबके नकिली सब हुनका बेटा संगे कुटी कुटी काक्ट देलकक्ह।

आ अंततः जखन कुंतीक सम्बन्धमे जनबाक पयत केलहू तू पता चलल जे जाक्ह छोट भाए लेल भोला झा अतेक यागा केलक्ह, अपन जिनी बबाद केलक्ह, बुढापामे बयाह केलक्ह, सैह छोट भाई हुनका संगे बेइमानी केलकक्ह। लाईन होटलसू बेदखल कऽ देलकक्ह। भोला झाके दम्मा भऽ गेलक्ह। पैसाक तंगीमे ठीकसू इलाज नक्ह भऽ सकलक्ह। कुंती आब कसलाईके कायिकऽ रहल अक्छ। आ अपन बच्चा सबक्हक पोषण कऽ रहल अक्छ। बच्चा सब की, तू बेटी 10िीमे पढैत छैक, आ बेटा एक नम्बरके नालायक। देिचन्र काशक पती कहलक्ह; “राघि, अगर अहा चाही तू साझमे हम सभ कुंतीक दुकान जाएब”। मुदा हम मना कऽ देलयक्ह। हम ओक्ह कुंतीके नक्ह देखए चाहैत छी जकर चेहरा पर िधिक्य होइक, शीहीन हो, किसू कनैत हो। हम जीणिािणिकुंतीके नक्ह देख सकैत छलहू। तै हम पुरनके कुंतीक यादमे जीबए चाहैत छलहू।

<u>मैथिली लोक गीत मे पोफेसर चण्डेशर झा केर सी. डी./डी. ि. केर पयोग</u>

जीनि मे किछु एहेन क्ण अबैत छैक जखन लोक अपना के अनेरे असहाय अनुभि करैत अछ सब किछु रहैत छैक आ किछु नहि रहैत छैक। एहने सन अिस्था एखन हमर भेल अछ। सिगीयपोफेसरचण्डेशर झा के गीतक सी. डी. अथिा डी. ि. डी. पर तीन दिन सं लिखक पयास क रहल छी मुदा नहि क पाबि रहल छी। से कथी लेल? एहि लेल जे हुनकर सब किछु हुनके हाथक देल हमर व्यक्तिगत संकलन मे हमर पुस्तकालय केर एक कोण मे रहैत अछ। अचरज ई भ रहल अछ जे नहि त कुनो पोथी आ नहिये कुनो सी. डी./ डी. ि. डी. भेट रहल अछ। ऐना मे आिषि अनचिन्हार हमरा पर उपकार केलिन आ यू टयूब केर लिंक भेजलनि जाहि मे आ आरो लिंक सं तकला पर सब मिलाक पोफेसर चण्डेशर केर लिमलिखत चारि गीत भेटल अछ:

(क) जोवाया मोर जगत सुखदायक दुःख ककरो नहि देल https://youtu.be/buED_dpmsxg

(ख) हे हरि हे हरि सुनिय शणि भरि अब ने बिलासक बेरा https://youtu.be/klSuYBZko4s

(ग) सबहक सुधि अहा लै छी हे अम्बे हमरा किऐक बिसरै छी हे https://youtu.be/KpKbUeeLG-0

(घ) बड अजगुत भेल वाकरि के भंवाया कुटुम्ब भए गेल https://youtu.be/mXPmW8I-Dgg

एहि चारि गीतक माध्यम सं हुनका बारे मे किछु लिखब झुझुआन सन लगैतअछ मुदा दोसर कोनो उपाय नहि अछ। जे अछ तहिये मे संतोष करैत लिख मे भलाई।

पोफेसर चण्डेशर झा अपन सहज स्भािा, गीत-नाद आ नाटयक पक्त समपिण, मैक्थली िग्मय के पक्त सोच, िस्त के पक्त ध्यान आ लोकजान के पक्त अक्भमानक कारने हमर ाय, सम्माक्त आ अक्भभािक तुल्य िदान आ गायक रहल छक्थ। हुनका संग आत्मीय लगाि १९९२ ईसिी सं जे िर भेल से ४ जनिरी २०११ अथात हुनकर देहािसान क्दन तक िशत रहल। क्त पगाढ होइत रहल। लगाि भौक्तक आ िस्तीय जान दूनू कारने दुनू स्तर पर छल। भौक्तक अक्ह हेतु जे जखन कखनो क्दल्ली सं गाम जाई त हुनका सं भेट अक्तायि छल। सब तरहक गप्प —पाक्रिक िस्तीय। िस्तीय मे साक्हत्य आ समाज; लोक आ िस्त दुनू के बीच परस्पर सामंजस्य, लेन-देन, आिजाही। ओ एक के देह त दोसर के आत्मा बुझैत छला। भािुक होइत गप्प करैत छला। बीच-बीच मे क्कछु गाबय लगैत छला। अतेक िषिय सं लगाि रहैत छलक्न जे क्बना कहने हमहू भािुक भ जैत छलहुं।

पोफेसर चण्डेशर सं गप्प करैत ई अनुभूक्त होइत छल जेना ओ उपक्नषद परंपरा केर ऋक्ष (गुर) होक्थ आ हम घनघोर अजानी िष्य। हमर काज मात एक पश पुछब तक छल। ओ क्क्न गंभीर होइत िर भ जैत छला। उतर देक्थ। अपना आपके हमर मनोदिा मे आक्न जे हमर क्जजसा अथिा िका भ सकैत छल तकरा बुक्झ जाक्थ आ कहक्थ, “कैलािजी, अहाके एकर बाद एहनो पश भ सकैत अक्छ?” हम मंतमुग्ध होइत गरदक्न क्हला हा कक्ह दैत रक्हयैनआ ओ पशो केने जाक्थ आ ओकर क्नराकरण सेहो। ओहमरमनोदिा के ऐना हृदयंगम क लैत छला जे हम भाि िहिल भ हुनका घंटो सुनैत रही। अहु क्चंता सं मुक्त रही जे कुनो पश अथिा क्जजासा करबाक अक्छ। एकौ क्नक्सया समयक बरबादी नक्ह। भले हम िििकानन्द नक्ह

रही मुदा पोफेसर चण्डेशर झा कम-सं-कम हमर मोनक वजगेसा हेतु रामकृष्ण परमहंस सं एको रती कम नव्ह छला। हमेि अपन िध, नि राग मे अन्य रागक वमशण, वमक गीतक रचना, फेर ओव्ह गीत के गेनाई, आवद विषय पर गप्प करैत छला। सेहो सहज आ वमश्छल हदय सं।

एक बात जे हुनका संगे भेलवम आ ियद ओ बात हुनका दीघायु नव्ह होमय देलकवम ओ बात छल वशिवदालयकेर पबंधन आविक्क समुदाय केर तुच्छ राजनीवत।एव्ह कारने ओ बहुत दुखी रहैत छला। अगर दरभंगा छोवड कोनो आन ठाम रव्हतवथ त पदशी कोनो पैघ बात नव्ह। मुदा पोफेसर चण्डेशर त लवलत नारायण वमवथलायूवनविसटी मे बावरक पटुआ छला। लोक सभ जे िक्वणक कायिमे घासलेट आ तुच्छ राजनीवत आ वबतंडािद मे माव्हर ओ सब हमेि व्हनकर संगीत साधना के िवचत करैत रहलवथन। कल्पना कर की जाव्ह यूवनविसटी मे एक जॉइंट रवजस्टार अनेरे एक विदान पोफेसर केर विदा केत्र मे बलगेग करैक आ दोसर विदान सब इष्या सं विदान के विपरीत जावथ ओत की भ सकैत अवछ? सरसिती भोकासी पावर कानती। सैह ने? सैह भेल। ओ मैवथली गीत, संगीत, लोक विदा आवद पर बहु विषयक विदानक संग पवरयोजना करए चाहैत छला। कतेक बेर विश्वदालय अनुदान आयोग एि अन्य संस्था सं अपन िदुश्यक बल सं पवरयोजना हेतु धन सेहो आवन लैत छला मुदा विश्वदालय केर लोक सब हुनकर सब मनोरथ के अनेरे अडंगा लगा धिस्त क दैत छलवन.पश ई उठैत अवछ जे एहेन संस्था के की हैत? पवरणाम पयक्ष अवछ।अकादवमक स्तर पर लवलत नारायण वमवथला यूवनविसटी के की हाल अवछ से ककरो सं अजात नव्ह अवछ।

चण्डेशर जी वमवथलाक गामे गामे घूवम क लोक सब सं १५००

गीतक अि्त संगह केने छथ,विभिन राग पर आधारित एक सए सं अधिक गीतक रचना केने छथि।एकर अतिरक्त निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण सी. डी./ डी. ी. डी. (केसेट) केर निमाण किनकर मधुर सरि मे भेल छनि:

(अ) दुर्गति दूर कर मा (सी. डी. एि केसेटस निमाण) २००५ ईसी

(आ)जागू वाकरजाजागू महेि (सी. डी. निमाण) २००६ ईसी

(इ) चंदा झा रचित मैथिली रामायण केर सुन्दरकाण्ड (सी. डी. निमाण) २००७ ईसी

मिथिला मे रागक बात करैत चण्डेशर कहैत छला जे मैथिली साहित्य मे धूर्तसिमागम पहिल रचना अछि जाहि मे रागोल्लेख भेटैत अछि। उदाहरणसरि परचना मे राग एि तालक विरिण पस्तुत अछि। पथम अंक मे - विभास रागे गीतं, सालंगी रागे पचताले गीतम, िराली रागे एकताली ताले गीतम, ललित रागे एक ताली ताले गीतम, मालि रागे एक ताली ताले गीतम, नटरागे यति ताले गीतम, कानल रागे पति ताले गीतम, द्वितीय अंक मे िालंगी रागे यतिक ताताले गीतम, देिाख रागे एकताली ताले गीतम, कोलाि रागे पचरमंठ ताले गीतम, धनछी रागे एक ताली ताले गीतम अछि. एहि तरहे अगर पोफेसर चण्डेशर के मानी त मैथिली साहित्य मे राग परंपराक याता ज्योतिरेशर ठाकुर के समय सं पारंभ होइत अछि।

मुदा एक बात जे महत्वपूर्ण अछि ओ ई थिक जे एक तरह सं ओ सीकार करैत छथि जे मिथिला के इलीट या विषि िगिमे िस्तीय गीत आ संगीत केर परंपरा बहुत पहिने आबि गेल परन्तु जखन ओ गीत गबैत छथि त लोक सं अपना आपके जोड़ि लैत छथि आ िहि

संपर्क हि सरोकार, हि पर्व आ अंत मे आर त आर अपना आपके कतौ-कतौ नारी हृदय मे घुसा लैत छथि। एकर कारिण हुनकर चारू गीत के जौ गंभीरता सं देखल जाय त स्थितिः भ जैत।

आबएक-एक गीत पर कनी विचार करी:

पथम गीत पाती अथात भोरक गीत छैक जे विदापति रचित अछि:

हे हरि हे हरि सुनिअ स्रवनि भरि, अब न बिलासक बेरा।
गगन नखत छल से अबेकत भेल, कोकुल कुल कर फेरा।
चकबा मोर सोर कए चुप भेल, उठिअ मलिन भेल चंद।
नगरक धेनु डगर कए संचर, कुमुदनि बस मकरंदा।
मुख केर पान सेहो रे मलिन भेल, अबसर भल नहि मंदा।
विदापति भन एहो न उचित थिक, जग भरि होएत कंदा।

ई गीत शृंगार आ भक्ति के सोन्हगर आंच मे पाकल पाती अछि। एकर चुनावि बहुत गंभीरता सू चण्डेशर जी केलनि अछि। अपन बोलक उतार चढाव सू भोरक भान करबैत छथि। पुरुष स्वरि मे नारी मनोदशा के चित्रण केने छथि। से तखने संभव छैक जखन ओहि भाव आ संवेदना के आत्मसात कैल जाए। एक गायक के रूप मे ओ नारीक हृदय के तह मे पैसि क जाइत छथि। गीत पुरुष के बुझना जाइत मुदा अंतर्मन स्त्रीगण के। भोरक अनुभूति जखनो कखन एहि गीतके सुनब तखने हैत। गीत केलि ऑडियो छैक तकर लाभ शोता के ई भ सकैत छनि जे आँखि मुनि गीत सुनथि आ भाव के स्वप्निलोक मे भमण करथि। सुरज केर इजोत, कोइली के

बोल,भोरक सुगंध, नि ऊजा सब किछु त भेटबे करत ओकरा संगे पेम, सृंगार आ भक्ति के अनुपम समंजस्यक भान अलग। एक्हि गीत मे िास्तीय आ लोक दुनु केर मध्य आि यिजिनक मशण भेटैत छैक। बुझना ऐना जाइत जेना ई गीत लिखले अछि पोफेसर चण्डेशर झा के गेबाक लेल। गीत सुनला बाद मोन मे बैकुंठक िक्ति भेटैत छैक।

दोसर गीत:

सबहक सुधि अहा लय छी हे अम्बेहमरा कियै बिसरय छी हे।
हमरा कियै बिसरय छी हे माताहमरा कियै बिसरय छी हे।
छी हम पुत अही के जननीसे तऽ अहा जनय छी हे।
एहेन कोष्ुर कियै अहा भेलौककाको दृवि नै दय छी हे।
कण-कण पल-पल ध्यान करय छीनाम अही के जपय छी हे।
रैन दिसि हम ठाढ रहय छीदरसन बिनु तरसय छी हे।
छी जगदम्बा जग अिलम्बाताकिणी तरणि बनय छी हे।
हमरा बेर कियै न तकय छीपापी जाकि फेरय छी हे।
सबहक सुधि अहा लय छी हे अम्बेहमरा कियै बिसरय छी हे।।

उपरोक्त गीत मे जे की एक भक्ति गीत छैक जाहि मे एक भक्त आतिभाि सं भक्ति मे लीन भेल भगबती सं अपन सम्बाद गीतक रप मे क रहल छैक,मे एक नूतन पयोग ई छैक जे एहि मे कनि झटकारकेर गकि छैक मुदा संतुलन यथाित छैक। गकि एहेन जे गायक एकरा बटगमनी के बाट देखबैत आवइये धुवइये जेना भक्ति मे लीन कुनो मंदिर दिि जा रहल होथि। भक्ति भािना मे कोनो कमी नहि। अहि गीतक एक अिित अनुभूकि जू पहिल गीत जका एकरो

आूख मुक्त आ कान खोक्ल क सुनब त अनुभूक्त हैत जेना एक भक्त स्नान ध्यान सू क्नबृत भ अपन हाथ मे अक्छन्जल आ नाना तरहक फूल आ बेलपात सू भरल फुलडाली लए भगबनाक ध्यान मे लीन भेल गीत गबैत कुनो मंक्दर मे भगबती जगदंबा केर पूजा अचर्ना के हेतु जा रहल हो। एकपेक्डया रास्ता संगे ि रीरक संग गीतक संतुलन बनएबाक हेतु गीत जेना कक्न दौडैत हो। मुदा गक्त सू गीत सुगीत बनैत छैक। एकर भाि आरो पबल भ जाइत छैक। भक्त केर आतर्ि भाि स्पर्ि होइत रहैत छैक। शोता अपना आपके गायक संगे ताल मे ताल क्नला ई गीत सुक्न आ गाक्ब सकैत अक्छ।

बड अजगुत भेल वाक्दरि के भंवाया कुटम्ब भ गेल।
पक्हरन मे विि के पीताम्बर देल।
सेहो छोक्ड विजिी मृगछाला ओक्ढ लेल।
कोबर मे विब के जे तेल फुलेल देल।
सेहो छोक्ड विबजी जे भसम लोक्प लेल।
भोजन मे विबके खीर पूरी देल।
सेहो छोक्ड विबजी जे भाग क्पब लेल।
बड अजगुत भेलवाक्दरि के भंवाया कुटम्ब भ गेल।।

ई लोककंठ मे बसल महेिबानी अक्छ। एक्ह विलक्षण महेिबानी के गेबाक हेतु चयन कैल गेल अक्छ। गीत सुनब त मोनक घबराहट, बेमेल विािहक पीडाक सूग-सूग भक्तक भगबान सू स्नेहाक्भव्यक्त केर स्ति: आिगिक अपक्तम अनुभूक्त भेटत। भाकि सूग िब्दक उतार-चढाकि सूग लय मे सेहो उतरब चढब केर परंपरा मे चक्ल जैब। िास्त्रीय राग चलैत छैक लेक्कन एखुक्लना नक्ह लोकक ताल आ

व्यहािरक सूगे। भाि भक्तकनक आहाद केर अनुभूक्त हैत, व्खदाि नक्ह। क्हनक सिरक पक अतेक पिल छक्त जे तमाम भाि के पाछा छोडैत आगु बढैत जाइत छैक। गीतक आखर-आखर मोन मे छपल जाइत छैक। िब्दक अथर्िक्छलका जका बाहर भेल जाइत छैक। तमाम अिगुणक सूग विब पिंिनीय, िदनीय, आ सहज संीकायि छक्थ। िब्द कखनो काल भले भाििना केर संपेषण मे कमजोर भ गेल हो परंतु चण्डेशर जीक सिर, हुनक सतत संगीत साधना आ ििधक कारणे एक एक िब्द के कान मे जेना क्मिरी के घोल जका घुसा दैत हो। िद यंत बोलक सहचर अक्छ, गीतक पाबल्य छैक हुनकर सधल सिर।

अक्ततम गीत पुनः विदािपक्तक रक्चत एक महेिबानी छैक:

आगे माई , जोवाया मोर जगत सुख दायक , दुख ककरो नक्ह देल।
दुख ककरो नही देल महादेि, दुख ककरो नक्ह देल।
एक्ह जोवाया के भाग भुलेलक, धतुर खोआए धन लेल।
आगे माई, कात्तक गणपक्त दुइजन बालक , जग भर क नक्ह जान।
क्तनका अभरन कक्छुओ न क्थकईन, रक्तएक सोन नक्ह कान।
आगे माईसोना र पा अनका सुत अभरनअपन र रक माल।
अपना सुत लए कक्छुओ ने जुरइक्तअनका लए जंजाल।
आगे माईछन मे हेरक्थ कोक्ट धन बकसक्थ
ताक्ह देबा नक्ह थोर।
भनक्ह विदापक्तसुनुहे मनाईनक्थका क्दगम्बर भोर।।

अहु गीतक अन्तास मे पर्ि क जैत छथ्थ गायक-साधक चण्डेशर झा. सरि साधना मे अतेक पर्ीन जे कान्ना कुनो अरिोध के गबैत रहैत छथ्थ। गीत घुसकैत नक्ह दौरैत अक्छ।बिक्दक अनुर प आरोहन अरिोहन अशि्य होइत छैक मुदा भानिा के सम्पोषण त बेजोड छैक। गायक गीत संगे न्याय करैत छथ्थ, वदािपक्त संगे न्याय करैत छथ्थ, आ अंततः गीतक भाि संगे न्याय करैत छथ्थ।

स्पि क्कनाई आशि्यक अक्छ जे क्हनकर उपलब्ध सी. डी. अथाि डी. िी. डी. केर सम्बान्ध मे हम कुनो छंद, ताल, माता, अथाि रागक क्याकरण आ गक्णत केर सूत के आधार पर नक्ह क्लखने छी। अहेन नक्ह त हमर वकिा अक्छ आ नक्हये हमर सामथ्र्याि हमर पयास गीत सुक्न, बुक्झ जे गीतक कोवत्मक्टक आ बोल केर भाि आ गायन के पक्त सामान्य शोता केर भाि जैत छैक तकर सम्बान्ध मे िितालाप करब। सैह एक्ह मे कएल गेल अक्छ।

<u>*परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भमे (परिचर्चा)*</u>

िधक्य अविभा ाप अछि आ कोनो महिला के परित्यक्ता बनेनाइ महा-दुष्कर्म। ई दुष्कर्म विनतिह ाित्मक समाज मिलिजता सँ, कूरता सँ ऐतिहासिक समय सँ करैत आबि रहल अछि। स्त्री ा ोषणक एहि सँ घृणित उदाहरण भेटब दुलभ। आशयचिकतखन होइत अछि जखन जाहि पुरषक कारणे हुनक पती परित्यक्ता बनलिन तिनका समाज हुनकर आर्थिक संपनता, सामाजिक गरिमा (नाम), उच्च व र्ग आ ओहदा, व्यसायिक सफलता आदिक कारणे स् मानित करैत अछि, मयादाक रदिर ओढबैत अछि, किन्ना बनबैत अछि। सबसँ अधिक दुःख तखन होइत अछि जखन तनाकिथत आधुनिक महिला जे पढल-लिखल छिथ, सब बात बुझैत छिथ, नारी स्वतंतताक द् भ भरैत छिथ, नारीिादिक झण्ा हान मे लेने कोनो ऑलयव्पकक धावि का जका सनसन करैत दौडैत रहैत छिथ; लेकिन समय एला पर अपन व्यक्तिगत हितक कारणे ा ोषिक पुरषक सङ देमए लगैत छिथ। जखन रक्के भक्क भ' जाए त' ककर आा ? एहि विषयके बुझबाक लेल एकर तह मे घुस' पित। इतिहास सँ ितमानक जे बहुत वी ाल दूरी एकपेिडया उबड-खाबड बाट अछि ताहि पर याता सहभागी अिलोकनानी बनि करए पडत। यनानिक नजिरक जयबा लेल लिङ भेदक भािके त्याग करए पडत। कागद की लेखी आ आँखन की देखी दुनू साक्ष्य के बेर-बेर ख़रोर मार' पडत। जखन ई सब काज पूणच्छिष ा आ ईमानदारी सँ समय लगाक' क' लेब त' बातक गह मे पहुँर सकैत छी। नारी सँ स् बिन्धत ई विषय अछि ताहिं जौ कियोक गुनमिन ग् भीर मैथिलानी एहि पर काज करिथ त' सजातीयताक भाि एहि मे स्तिः आबि सकैत अछि।

हम श्रीमती अपणा झाक व्यंजासक व्याकरण अनि हुनका दारे ठाढ कएल समस्या पर विचार करबा लेल एकटा विषय पर अपन कलम उठाओल अछि। अपणा पुछैत छथि "परित्यक्ता अनि पन बाट जोहैत स्त्री या पतीक्षारत स्त्री?

अपणा झाक कहबाक शैली आ हुनका दारा उक्तित कएल किछु लोकजीनिक घटित दृष्टान्त हमरा झकझोरि देलक।

सबसँ पहिने ई स्पष्टाकरत क' ली जे परित्यक्ता ककनका कही? हमरा जनैत आ लोकजीनिक जीन्त उदाहरण देखैत परित्यक्ता ओहेन स्त्री भेलीह जनका विवाहिक बाद कोनो-ने-कोनो कारणे हुनकर पति त्यागि देने छथिन। बहुत दृष्टान्त मे पति दोसर स्त्रीगण के घोषित आ अघोषित रूपे आनि लैत छथि। बाट जोहए बाली स्त्रीगण ओ होइत छथि जनकर पति कतौ गेल छथिन मुदा हुनका नहि बूझल छनि जे कतए गेल छथि, की क' रहल छथि। सब बिदेसिया गीत एहेन स्त्री पर लिखल गेल अछि।

"*परदेसिया के चिट्ठी लिखै छै बहुरिया*
पडलै अकाल काया कटै छी अहुरियां"।

या फेरो:

"*कियेक दुईए दिनक छुटी मे गाम एलयै*
भरि दिन घुमते रहलयै ने आराम केलयै"।।

एहि गीत सब मे पतीक्षा छैक। एहेन पतीक्षा जाकर अंत सुखात हेतैक। ई एहेन बाट जोहब छैक जाहि मे सब किछु मधुर-मधुर हेतैक।

मुदा ओकर मकलाक की हेतैक जकर पति ओकरा विाहिक बाद छोड़ि देलकान, पवरत्यकता बना देलकान? जकर शंसार, टिकुली, काजर, पाउरि, गहना, स्ति, सब बेकार भ' गेलैक। जकरा पति त' छोड़िये देलकैक समाज सेहो नीक भाि सँ नहि देखैत छैक। ओकरा सँ नीक त' विधिबा जकरा लेल समाज एक व्यवस्थित बात, स्ति, खान-पान, व्यिहार आ आररण तय करैत ओकरा समाजक मुख्यधारा मे कछु हद धरि जुडबाक असिर पदान करैत छैक।

वास्तसाित्क समाज समाजक संररना मे बहुत रालाकी सँ पवरत्यकताक स्थान वाधावरत करैत अछि। विधि-बेभार आ देिता वातर मे एहि पना के जोडैत अछि। एकर उदेश्य कही ई त नहि जे व्यस्तागत समाज मानवाक रप सँ पवरत्यकता बनबा लेल तैयार भ' जाय? रलू लोक पर्परा मे रलैत छी। मधुशाणिी कना मे एक पसंग सन्ध्याक विाहिक अबैत छैक। सन्ध्या के छल? सन्ध्या वािनी गौरीक छोट बहिन छल। अपन सुनरि सारि सन्ध्या सँ महादेब के पेम भ' जाइत छल। सन्ध्या सेहो अपन बहिनोई महादेब सँ पेमक आदान-पदान केनाई ाुर केलक। पवरणाम ई भेल जे जखन सन्ध्या विाहि योग्य भेलीह त' महादेब गौरी सँ रोराक सन्ध्या सँ विाहि करबा लेल रल गेलाह। एहर गौरी महादेब के तकने वफरथि मुदा ओ कतहु नहि भेटलान्हि। बहुत खोज कएला पर गौरी के महादेबक विषय मे जानकारी भेटि गेलक जे महादेब सन्ध्या सँ विाहि करए गेल छथि। गौरी के बड दुःख भेलक ओ कानय लगलीह। कनैत-कनैत देह सँ घाम रललक आओर मैल छुटए लगलक-गौरी मैल छोडा कए जमा कएलक आओर ओकर एकटा साप गवि कए बाट पर राखि देलकान-महादेब जखन सन्ध्या के विाहि क' ल' अनलक त' गौरी के कनैत देखल संगहि बाट पर मैलक साप सेहो।

महादेब ओकरा साप मे पाण दए देलाह ओ लह-लहाए लागल। महादेब आओर सन्ध्या के देखि गौरी कानए आओर गारि-श्राप देमए लगलीह:

"की ए हम आहे व ब रोरनी की रटनी
की ए हम कोखिया विहूत
की हम आहे व ब सेजि मे रुकलहुँ
केलहुँ दोसर विवाहि"

तखन महादेब कहलखिन:

"*नहि अहा आहे गौरी रोरनी रटनी*
नहि अहा कोखिया विहूत
नहि अहा आहे गौरी सेजि मे रुकलहुँ
हमरा कर' परल दोसर विवाहि"

तखन गौरी कहलखि:

"*मरिहौ गे सन्ध्या तोरो जेठ भइया*
होएबे मे कोखिया विहूत"

तखन महादेब पुनः समझाबैत कहलखि:

"*जनु गारी दिअ गौरी अपनो जेठ भइया*
जनु कहिओ कोखिया विहूत
तोरहि सन गौरी पातरि छितरि
तोरहि सन सुकुमारी
बतिसो दात बिजुली छिटकलि
सन्ध्या हुनकर नामें"

बहुत अधिक विनिमता स सन्ध्या कहैत छथिन:
“*काितक गणपित गोद खेलाएब*
होएब रे कन्या तोहार”

आब महादेब ताक्षकषचदैत बजला: “अहा अनेरे कािन्ह रहल छी। अहाके ई साप बेटी भ’ क’ जन्म लेने अिछ। अही नवहकीरबी के खेलाएबा लए हम एकटा कन्याया आिन देल अिछ।
कना अतर्कं अंत भ’ जाइत छैक। आशयर्क बात ई जे गौरीक एिह पश आ ा ंका पर किहयो कोनो सिर निह उठल। पुरख किालेल उठेता? स्त्रीगन सब सेहो मौन छिथ। पवरित्यक्ता एिह कना मे गौरी आ सन्ध्या दुनू छिथ पाटर्ध्याइम या आंव क पवरित्यक्ता। पिहक 100 पिहा त पेम सँ गौरी आ सन्ध्या दुनू जेना िवरत भ’ जाइत छिथ! पवरित्यक्ता ा बिद सँ जेना दुनू विभूिषत भ’ जाइत छिथ।
बात आगा बढबैत छी। हमरा लगैत अिछ महिषर्गौतमक पती अिहल्या बिदलाक पिहल पवरित्यक्ता छिथ। इन्र गौतमक अनुपिस्थित मे आिब गेला। हुनका लग रिह गेलीह। फेर तािह लेल अतेक पैघ आ दुदार्न्तक दण्ड! अपने विािह केलाक बादो तप, तपस्या। पती लेल सभ बन्धन? कोना रलत काज? आ फेर ओिह बन्धन अनि शाप सँ मुक्त के करतिन हुनका? एकर कारणच सेहो शाप देमय बला पित रपक पुरष करताह। गौतम कहैत छथिन जे जखन राम तेता युग मे अतए अऔताह तखन व ला मे पवरणत अिहल्या हुनक ररणक स्पर्श चसँ फेरो मनुख-योिन मे िपस लौटती।
दोसर पवरित्यक्ता सीता छिथ। सीता अपन पती धमर्क पालन करैत राम संगे कत’-कत’ निह जाइत छिथ। िह राम गभर्वती सीता के असगरे जंगल भेज दैत छिथ। मयादा उिम भ’ जैतिन अगर सीता

संगे राम सेहो फेर सँ जंगल रल जैतक? से कहा करैत छक? आर त आर अशमेध यज काल सेहो हुनका सीता कहा समरण अबैत छकन? सोनाक सीता बना यज-िदी पर बैस जाइत छक। जखन लि-कुा भेट जाइत छकन तखन सीताक समरण अबैत छक। वियोग आ ददचसँ छटपटाइत सीता धरतीक कोवख मे विलीन हेबाक लेल कंदिन करैत छकन ‘‘फाटू हे धरती!’’ धरती अपन पुतीक बात सुनैत देरी फावट जाइत छक आ सीता ओवह मे विलीन भ’ जाइत छक।

कवलाक तेसर पवरतयकता भामती छक. उदट विदान आरायच िरसपक अपन गहन जान, पवरशमक कमता आ हठयोगक कारणे उिर सं दककण धवर खयावत अवजत कएने रहक। आरायचिर अनेक गंनक ररना कएलक ताहमे पमुख अछ: (1) नयायवकाका, (2) बहतति समीका, (3) तति विनदु, (4) नयायिवकवा तातपयचटीका, (5) नयायसूरी कबंध, (6) साखयतति कौमदी, (7) ततिि िरदी। एकरा अवतवरकत ततकालीन पारम निम ा ताबदी मे ा ंकरारायक आगह पर ‘‘अठारह िषचसिगह मे साधनारत भए सासावरक सुख तयावा 6 भागमे मंिन कवशक बहसूतक ा ंकरभाषयक टीकाक ररना कएलक। आ ताह मे भामती मूक योगदान दैत रहलकन। तैँ हेतु ताह मूक अिदान के अमर करए लए टीकाक नाम भामती संजा सँ जोवड देलक। ई मूक अिदान बडि कवछन ा बद अछ। अगर िरसपक के साधने करक छलक त’ विािह ककलेल केलाह? एक लेल जे पती रप मे भामती कवना िउआ के आ कवना भािनाक संरार के सेविका बनल रहक? िरासपकक विदताके नमन मुदा भामतीक पवत हुनक पयोग हुनका दारे जावत-बुवझ क’ भामती के पवरतयकता बनाएब कक।

मैथिली लोक व्यवहारक गीत मे अनेक गीत भेटत जाहि मे सौतिन शब्दक पयोग अछि। सौतिन लेल कुबजो, कुब्जा शब्दक पयोग अछि जे हमरा जानैत घृणा सूचक अछि।

बात पकृतियथार्थताक क रहल छी त' उदाहरण समाज स लेमए पडत। समाज दिस आँखि उठाबय पडत। समाज के निहारए पडत। नारी मनोदशा आ ददक, टीसक अनुभूति करए पडत।

एक बहुत ख्यातिपात साहित्यकार अपन इच्छा सँ विपरीत माता-पिता के मन आ मान रखबाक रकर मे एहेन परम्परागत आ अति सामान्य लडकी सँ विवाह क' लेलाह जे कोनो रप सँ हुनका संग साम्य नहि रखैत छलि ___ नहि दैहिक सौन्दयचमे आ ने विद्या मे। विदान आ दैहिक सौन्दयचआ सौष्ठव सँ पकरपूणचसाहित्यकार मन बना लेलाह जे विवाह क' लेताह मुदा ओहि लडकी सँ कोनो तरहक कोनो सम्बन्ध नहि रखता। सैह भेल। विवाह भ' गेलनि। रतुनी धरि सासुर मे रहला। संपन्न सासुरक लोक पाहुनक स्वागत मे कोनो कमी नहि रखलक। उपर सँ अधिकरी अति रातुकर। नीत-नूतन बात कहथि। संस्कार, मनुहार, पेमक बात मे ओझराबए लगलखिन। दियासलाई आ काठी एक ठाम रहतैक त' आवा लगबे करतैक। सैह भेलैक। जाहि पती सँ कहियो कोनो सम्बन्ध नहि रखबाक उदेश्य सँ विवाह केने छलाह ओकर पेम मे फँसि गेलाह। मन भले नहि मिलल होनि देह मिल गेलनि। 15 दिन रहला। बहुत रंगक बात भेलनि। कतेक बेर केलि केला। 15 दिनक बाद घर आबि गेला।

घर वापस अएला पर पुनः अपन वैदुष्य आ सौन्दयचपर दंभ भेलनि। भेलनि, आहि रे बाप, विवाह त' गलत पकृति, गलत पकृति आ गलत लडकी सँ भ' गेल। अविकसित, बैकग्राउन्ड सँ भ' गेल! आब की हो? नहि-नहि, एहेन लडकी संग जीवन कोना कटत? असंभव।

महानगरक सभ्य समाज लग कोना रहब? मयादा आ इ् जत नीलाम भ’ जाएत। फेर की उपाय? यैह जे त्यावा दी। पवरत्याग करी। पवरत्यक्ता बना दी। पवरत्यक्ता कोना बनत? अपमान सँ, ा ोषण सँ, दैवहक-मानवा क उत्पीडन देला सँ। से के देत? हम सयिम देब। ई कणचा अक्ततम? एकदम अक्ततम। कवना एकर दोसर कोन उपाय?” यैह सब सोरैत भवष्यिक महान साव्हत्यकार आ कलामा नारी उत्पीडनक ठीका ल’ लेलाह। एक दुखद, तकहीन, अनगला आ अमानिीय घटनाक बीया बाउग़ भ’ गेल छल। ओ अपन िभत्स र प लेल तैयार छल। एक विदान एक र ाालि बक्त गेल छल।

साव्हत्यकार महोदय के सासुर सँ अएबाक हेतु बेर-बेर समाद अबक्त। ई एहेन क्तष्ुर जे जेबे ने करक्त। सासुरक लोक व्हनक फ्लाट सँ अनजान। अंत मे ससुर महोदय सयिम व्हनकर दरब् जा पर आवा गेव्हनन। आब की करताह? कोनो उपाय नव्ह बरलक्त। लारार भय सासुर गेला। खूब मान-दान भेलक्त। नाना तरहक सरार लागल। खूब मन सँ भोजन केलाह। राक्त मे पती एव्हनन। आवाते कावमनी मावमनी बनैत कहलक्तन:

“जाऊ! कतेक क्तष्ुर लोक छी अहा? नव्ह अएलहुँ आ ने वरक्टयो भेजलहुँ? एहेन कतौ मनुख भेलैक अव्छ? हम रसल छी अहा स।” से कहैत कवमया मुँह ववपरीत अस्मिा मे करैत झुटे सुतबाक भगल केलक्त।

विदान साव्हत्यकार रुप रहला। गंभीर रहला। वकछु नव्ह बजला। की बवजतक्त? मन त कोनो धराने अपन व्याहत धमपत्नी सँ मुवक्तक कामना आ ब्योत मे बाझल छलक्त। पती व्हस देखबो ने केलक्त। तुरते पती के बुझा गेलक्त जे वकछु त’ गबि अव्छ। झट दक्त विरार केलक्त: “आवखर ई वकछु पवतवकया वकयैक नव्ह देला? हे

भगबती! किछु अकिष बुझना जा रहल अछि हमरा। कही कोनो वादय मनुखक संग त' हमर हान विधाता नहि लगा देलकि? की करी? ककरा पर मानिनी बनी हम? जे मनुहार करत से त' कोनो ध्याने-बात नहि द' रहल अछि। फेर की करी? अहिना सुति रही? से कोना हएत? भले बाबा कि् पकि कहि गेला 'पुरखक नहि कासिसे'। कोनो स्तिनति मे पुरख पर विशास नहि करी। फेर की करी? एहि हदयहिन पुरख के हदय-िन पुरख बनाबी। से कोना? एकरा अपन पेमक जाल मे गछानी।" यैह सब सोरैत बेरारी नि ब्याहल ककिया अपन जीनिक नैया के ूबिए सँ बरेबाक उकिन सोरय लगलीह। करबट अपन पति महोदय िदस बदलैत बजलकि: "की बात पाहुन! रसल छी की? किछु गलती भ' गेल हमरा सँ की? अगर गलती भेल त' कहू। हम माफ़ी मावा लैत छी"।

अतेक बात ककिया कहलकिन मुदा पाहुन पर कोनो पभाि नहि परलकि। गुम-सुम-गंभीर बनल रहलाह। ककिया के आुभक आंका भेलकि। हिनकर आँखि मे कति काकराल, काकट सरिप देखली। कति कसाई कति वादयातक भाि लगलकि। कति जानक यनच घमणकि अनुभूति भेलकि। लेकिन दोसर कोन उपाय? पैघ जाति आ कुलक मयादा सँ छेकएल छी। दोसर विािह त' आब सपनो मे नहि देखल जा सकैत अछि। तखन की करक राही? किछु नहि अतबे जे येन-केन-पभािनि हिनका मना ली। से कोना मनाबी? पेम सँ आ अपन मनुहार सँ। देखैत छी, भगबती सफलता दैत छथि की नहि? अहि तरहक अंतदंद्व सँ जुझैत ककिया पाहूनके अपना छाती सँ जकरबाक यत ाुर केलकि। आहि रे बा! ई की? पाहुन त' एक कण मे बज उग भ' गेलाह। हान झकझोिर देलकिन। अपन बलक पदा च करैत ककाघ धिन मे बजला: "खबरदार जे आई के बाद

हमरा सँ कोनो तरहक स् बन्धि रखलहुँ। हमरा अहा सँ कोनो तरहक स् बन्धि नक्वि रखबाक अक्छि। हम आई सँ अहाक I रीर नक्वि छुब। अहुँ अपन मयादा मे रहू। अगर से मयादा के तोरबाक रेष I करब त' हमरा सन खराप लोक नक्वि भेटत"।
कक्नया आब पूणचसाकाक भ' गेल छलीह। भेलक्न साक्हत्यकारक नाम पर राकस सँ वि ाहि भ' गेल। आब की करी? कक्न दह्व भेलीह। कहलक्नन: "देखू, हम अहाक क्याहता छी। हमर स् बन्धि मे हमर क्पाता अपनेक क्पाता सँ सब क्कछु स्पष क' देने छलाह। अहेन समस्या छल त' नक्वि कक्वि क्दतहुँ? हम आब कत' जा सकैत छी? अही कहू? आ फेर वि ाहिक याता मे त' अहा हमरा संग सब क्कछु कएल जे एक स्त्री-पुरष करैत अक्छि?"
अक्वि बात सँ बेक्फक मद मे रू र साक्हत्यकार अपन राग अलापैत रहला: "हमरा से सब क्कछु ने बुझल अक्छि। हमरा अहा सन जाक्हल स्त्री संग कोनो स् बन्धि नक्वि राखक अक्छि। अहाक रस्ता अलग, हमर रस्ता अलग। नदीक दू स तिन्त्त कछेड। ककरो सँ ककरो क्मलन संभ नक्वि अक्छि। ख़बरदार जे हमर देह मे सटबो केलहुँ।"
पती पाछा कोना होइतक्न? लागल रहली। क्कछु मनुहार, क्कछु कंदन, क्कछु नोरक धार रुएलक्न। क्कछु अपन माता-क्पताक वि ि ताक भान करेलक्न। कक्न वादरभभकी सेहो देलक्नन। मुदा साक्हत्यकार महोदय त' अवि ग रहला। अपना के लंठ-साक्हत्यकार मानैत छला। एक्वि पती सँ कोनो स् बन्धि नक्वि रखता से बह ाक्म्र छलक्न।
तनाक्व पती क्व् मत करैत अधचक्स्त मे एकबेर साक्हत्यकार महोदय के अपन बाहुपाा मे लेबाक पयाा केली। एक्वि बेर कोध सँ बताह भेल साक्हत्यकार अपन पती के उपर पहार क' देलाह। बेरारी लारार भेल मार खाइत रहली। बंद घर मे विक्रत सरि सुक्न लडकीक माए

आ भाऊज जावा गेलखिन। घर खोलबाक आदेश देलखिन। लडकी घर खोलैत माएके गर लागा कानए लागली। कनैत रहली आ बजैत रहली: ‘‘सब अनर्थ भ’ गेल। हमर कपार फुटि गेल। मनुखक बदला हैवानक संग भ’ गेल।’’

माए आ भाऊज पुछैत रहि गेलीह: ‘‘की भेल बुच्ची?’’ मुदा हुनकर मुँह सँ बकारे ने निकललनि। कतेक काल धरि कनैत रहली। लोक सब बोसैत रहलनि। उम्हर साहित्यकार महोदय काल-नाग आ यमक अवतार बनल कोध मे मातल घर मे कोधक ज्वाला मे धू-धू जरि रहल छला। हुनका सँ लोक पुछलनि: ‘‘पाहुन! की भेलैक? किछु बकझक भेलनि की?’’ पाहुन पहिने त’ चुप रहला। फेर किछु सोचि मे उत्तर देलाह: ‘‘हमरा की पुछैत छी? अपन बेटी के पुछू। ओ जे कहती हमहुँ सैह कहब।’’ बहुत देर धरि वातावरण शान्त रहल।

जखन कनिया भरि इच्छा कानि अपन मनक दरदबहा लेलनि त’ कहलनि: "हुनका हमरा सँ कोनो सिनेह नहि छनि। ई माता-पिताक इज्जत हेतु विवाहक स्वांग केने छथि। हुनका हमरा सन सामान्य नहि आधुनिका चाही जे हुनका सँग महानगर मे हान-मे-हान मिलाकए स्वच्छन्द घुमि सकए। ई हमरा सँ कोनो तरहक सम्बन्ध नहि राखय चाहैत छथि। उलटे हमरा सँ जतेक जल्दी हो मुक्ति पाबै चाहैत छथि। मंत्रोच्चारण सँग जे पती बनेलनि तकरा पालन करैत अपन अधिकारक मांग करैत हम किछुए क्षण पूर्व हुनका देह छुबि जएबाक अनर्गल प्रयास कएल तकर परिणाम देखू।" ई कहैत अपन छातीक ओ निशान सभ देखा देलखिन जतए आदरणीय साहित्यकार अपन घुसाक निर्दय प्रहार केने छलाह। कलाह-स्याह ओहिना देखा रहल छलनि। एक क्षण मे साहित्यकार महोदयक असली रूप बाहर आबि गेल छलनि। ओतय उपस्थित महिला सभक हृदय कापि गेलनि।

अननचभ' रुकल छल। एकर कतेक बाकट रप भ' सकैत अछ एक पर कयोक कावशत नह छली।
अंत मे कन्याक माए नोडेक ग्‌भीर होइत अपन जमाय लग नहुँ-नहुँ गेलह। कानरे सँ कान लग फुसफुसा क' बाजय लगली:
"पाहुन! सब कछु ठीक ने? ई छौरी कोनो गलत बात त' नह कह देलकह? राक भाई मे असगव छैक ने, ताहं कका कछडया गेल छैक। ओना मनक बड ाु छैक। जे रहल से मुहँ पर कह दैत छैक।"
साहत्यकार काराकार भेल सब बात सुनैत रहला। अंत मे सासु पुछलकान: "अगर कोनो तुक छका त' बाजका? हम सब हनकर सब मागक पूवाचअपन हैसयत हसाबे करक पयास करबका।"
गहीर सास लैत साहत्यकार ठाई-पठाई बजला:
"देखू! ई वाहि नह रलत। हनका सँग नह हम खुा रह सकैत छी आ ने यैह रह सकैत छका। हनकर सोर आ हमर सोर मे कोनो सा्य नह अछ"।
सब बात जेना एकहं सास मे साहत्यकार महोदय बाज गेलाह।

सासु अपन मायक ममतकि कारणे गुम सधने रहली। फेर बजनाई ार केलका: "देखनु पाहुन! ई बाहणक बेटी छैक। एना कोना हेतका? वाहि एक के कहैत अछ सात-सात जन्मक स्बन्ध छैक। उठनु आ दुनू काल क' रहनु।"
बेटी कदस तकैत माए बजली: "सोना, एना नह रलैत छैक जीनि। दुनू गोटे हल-काल रहू। सब रीज़ नीक रहत। जाउ घर।" ई कहैत माय बलपूवक बेटी के पाहुन सङे घर कदस ल' गेलह। आब सब कछु सामान्य भ' रुकल छल। घर मे आवा आ घी केर सकाधा

एकक्षात छल। केलि होम करबाक मंत फुकक पयोजन छल। ई पयोजन कन्याक माए पूरा केलक्ह। अवाम सुगंधित भ' धू-धू पजरए लागल। दू देह एक भ' गेल। साक्हत्यकार महोदय के एक्ह व्याहता मे आधुक्नका देखाय लगलक्ह। दुनू मस्त भ' गेलाह। ओक्ह क्दन एक आर बात भेल। पेमक अवाम ततेक पबल छलक्ह दुनूक जे ओही राक्त आ क्ण नाक्यका के गभचठहक्र गेलक्ह। वििहक, अक्ह तरहे एक उदेश्य पूरा भ' गेलक्ह।

सोझे साल क्दरागमन भ' गेलक्ह। जक्हया सँ नाक्यका अपन सासुर अएक्लह तक्हया सँ साक्हत्यकार फेरो अपन उग र प मे आक्ब गेलाह। मार-क्पट ा ुर भेल। कखनो ि ि सँ त कखनो बेदट सँ। कक्हयो-कक्हयो आनो रीज़ सँ पहार करैत रहला। संगक्त साफे बन्द। पूणच विराम। यातना अबाध गक्त सँ र लैत रहलक्ह। एक साक्हत्यकार अपन कुकक्ृत्य सँ दोसर साक्हत्यकार लेल सामगीक ओक्रओन करैत रहला। नारीक ा ोषण होइत रहल। ा ोक्षताक गभचमे ा ोक्षतक बीज पनपैत रहल। विनाा क कक्रया मे क्नमाणक पक्रया अपन स रि प पकरैत रहल।
कोनहुना अपन सासुर मे रहैत नाक्यका एक पुतीक जन्म देलीह। पक्त सँग क्सम्बन्ध नकचजका भ' गेलक्ह। बहुत यत केलीह मुदा असफलता हान लगलक्ह। यातना सहैत-सहैत तन -मन जबाब द' देलकक्ह। सासुर सँ नैहर आक्ब गेलीह। को र ललैक।
अक्ह बीर साक्हत्यकार अपना सँ 18 षिक्र छोट लडकी सँ रुपे-र ाप विाह क' लेलाह। ककरो कानो ने लागय देलाह। ि र छलक्ह नौकरी र क्ल जेतक्ह। नाम बदनाम भ' जेतक्ह।

बाद मे विधिपति तलाक भ' गेलक। आर जे केला से केलाह। एक नीक काज जरूर केलक जे अपन जन्मल बेटीक विाहि अपन अरजल पाई सँ नीक जका करा देलकान।

हुनक पती सेहो अपन जीिन अपने जका वजबक कोवा करैत छक त' लोक हुनका नीक-अधलाह कहैत छक। यैह काक सामावजक मयादा। यैह काक महानता। साक्हत्यकार महान भेल छक। नारी रेतना, साक्हत्य आ संस्कार केर बात करैत छक। एक दू आधुक्नक आ तनाककात विदुषी हुनकर सब कहृय आ कुकहृय बुझैतो हुनका हँ मे हँ कालबैत छक। किषि साक्हत्यकार लोकक क्वाक लोभे हुनका सङे घुमरैत रहैत छक। हुनक या क झंिा फहरबैत रहैत छक।

हालक्हं मे एक नाक्दत साक्हत्यकार के एक्ह तनाककात महान साक्हत्यकारक पूिपती जे आब तलाक ाुदा आ पक्रत्यक्ताक टैग सँ जानल जाइत छक, भेटलकान्ह। नाक्दत साक्हत्यकार हुनका लग गेलाह। अपन पक्ररय एक साक्हत्यकारक रूप मे देलक। पक्रत्यक्ताक ददचसाक्हत्यकारक पक्त घृणा बक्स ािर-भटा जका फुइट पडलक। अपन ब्लाउज खोक्ल एक-एक दागक पदा च करैत बजली: "कही एहेन साक्हत्यकार त' नक्ह छी अहुँ जे अपन पती सँग जलाल जका व्यिहार करैत छी।" जखन ािला फ़ुटले रहक त' अनेक तरहक नीक अधलाह बात सेहो कक्ह देलकान, जे कोनो नाजायज नक्ह रहैक।

बात एतहुँ कहा समाप्त होइत अक्छ। साक्हत्यकार अपन दोसर पती के सेहो यातना मे रखने रहैत छक। मारैत-पीटैत छक। आधुक्नका

सब सङे घुमरैत छथि। खूब साहित्य लिखैत छथि, खूब भाषण करैत छथि। समाजक एक तबका एहि महापतित के आइकॉन बना रखने अछि। हुनक पनम पती के पत्रिकथ्ला आ कुलकणा कहैत अछि। एकरा की कही? ई बात पाठक पर छोड़ि दैत छी।

पत्रिकथ्लाक लिखल आ ऐतिहासिक सरिपक की बात करी, अपन आँखि सँ अनेक सरिप देखने छी। कतौ पत्रिकथ्ला स्बन्धी रहल छथि त' कतौ पत्रिकथ्ला बनबै बला। कतौ पत्रिकथ्ला त' कतौ दुदैकि मारल पत्रिकथ्ला।

एक उदाहरण विरित अछि जे समाजक मानविकता के आईना देखबैत अछि। से की? ई कना पार्भ होइत अछि एक अति सामान्य परिवारिक युकि सँ जे अपन माता-पिताक एसगर संतान छला। B. Com करैत देरी दक्षिण मे कतौ राय बागान मे ि प्थ्ुटी मैनेजर'क नौकरी लावा गेलथि।
हुनका गामक बगले के गामक एक कन्यागत जिनका 4 लडकी मात छलथि, नीक पैसा दहेज दए अपन जेठ बेटी सँ विाहि करा देलथिन। कन्यागत किछु नहि अपितु बहुत रास फुइस बाजल छला। लडकी पढल नहि ये जका रहैक। साकाक सेहो नहि, बहिक कथि अकान जका। देखबा सुनबा मे मुदा अपूचि रंग-विरंगक गहना, सित्र, पसाधन सँ सजल। बर कािया के देखैत दंग। रतुनी कोना िातलै से बुझबे नहि केलाह। रतुनी पात अपने सङे कोयंबटूर हनीमून लेल विदा भेला। जखन ओतए गेलाह त' जात भेलथि जे लडकी साफे साकाक नहि छैक। क्तिथकमचतक करबाक नीक सँ रेषा नहि छैक। आब की हो? तेसरे दिन िपिस आबि गेलाह। सासुर आबि

सासु आ ससुर के सब खेरहा कहलकान्ह। ससुर उि र देलकान्ह: "अपने उदास नक्ह होउ पाहुन, अहाक सासु सब बात बुझा देतीह।" ई कहैत ससुर दरब् जा क्दस रक्ल गेलाह।
सासु लग अबैत नहुँ-नहुँ कहलकान्ह: "पाहुन! ई मन छोट नक्ह करनु। हम सब क्नकर वि ाहि अपन दोसर बेटी सँ करा देबक्। दोसर एकरा सँ 2 बरखक छोट अक्छ। सि गुणस् पन छक् क्नकर साक्।

शीमान मैनेजर साहेबक रानी। क्दने सँ साक् पाहुन लग आक्ब गेक्लह। सब कक्छु नामक्। बक्नोई सँग सब कक्छु करए लगक्ल जे एक पक्त-पतीक बीर बन्द घर मे अन्हार मे होइत छैक। अक्ह कम मे 7 मास बीत गेल। 7 मास मे सोझे साल क्दरागमन भेलक्। क्दरागमन मे साक् कोना अक्बतकान? उपाय नक्ह छलक्। ताक्ं पती एलकान। गाम अक्बते देरी नि पुतोहुक असक्लयत सबके लावा गेलैक। आब की हौक?
पक्रि रे मे क्कनको सरबेटी गरीब मुदा अतीि सुनक्। तुरत लडकीक क्पता वि ाहिक क्दिन भेज देलकान। शीमान मैनेजर साहेब क्बसक् गेलाह जे ओ सात मास धक् अपन साक् सँग गुलछरा उडेने छला। सब रि न क्बसक् गेला। सब मयादा धो-पोक्छक राक्ट गेलाह। अपन दुखडा गबैत रहला। माए-क्पतायाइन सब अतबे कहकान्ह: "धन कही एकरा जे सात मास धक् एक्ह अकान आ बकलेल काक्नया सँग कोना क्बतेलक! एकरा आब ािघ अक्ह जंजाल सँ मुक्त भेटक राही।"
अपना पक्त एक्ह तरहक सहानुभूक्त पाक्ब शीमान मैनेजर साहेब मने-मन गदगद छलाह। वि ाहि तय भ' गेलक्। पनम पतीक सब सामान, रि स्त, गहना, रक्य-जात राक्ख राते-राती माक् पीट क' सासु भगा देलकान्ह। काक्नया नोडेक क्दिन अशि्य केक्नन जे हुनको रह'

देल जाइत। मुदा के सुनैत अछि?

आब श्रीमान मैनेजर साहेबक दोसर पत्नी हुनका ई आदेश, कि आदेश द' देलखिन्ह : "जाबे कदिन अहाँ पहिल पत्नी के अपन घर घुसा लेब ताबे ये कदिन हम माहुर खा आत्महत्या क' लेब।"
मैनेजर साहेब एकाएक एक परम पत्नीभक्त पति बनैत बजला: "राम-राम! अहाँ की बजैत छी? विधि सँ आई धरि हम एकर शरीर नहि छूल। आब घर घुसेबाक कोन प्रयोजन?"

मैनेजर साहेब के तीन टा धिया-पुता दोसर पत्नीक संतान सँ होमय लगलनि। बेटी-बेटा-बेटी। सब हरेक छह मास पर गाम आबथि। गाम अबैतहुँ नहि जाथि कोना प्रथम पत्नी जकरा अडोस-पडौसी सब बालविधवा यहुती कहैक बुझि जाइक। रास्ता क' आबि जाइक। मुदा, भोजन त दूर मैनेजर साहेब केर माय विमातायाइन सब समान छीन मारि-पीट क' भगा दैत छलखिन्ह। बेचारी रस्ताक भिखमंगी बनल अछि। मुदा कियोक मैनेजर साहेब के इहो नहि कहि सकलथि जे ओकरा अपना घर पर कम सँ कम अन-वस्त्र दियौक। आसरा दियौक। ऊपर सँ बाप-संबंधी सब सेहो ओहि अभगली परित्यक्ता के मारैत पीटैत छैक। जीवित नकच बनल छैक।

एहि प्रकरणक जड़ि मे अगर देखली त' एहि परित्यक्ता के परित्यक्ता बनेबै मे प्रथम दोख ओकर पिता के छनि। जखन हुनका बुझल छलनि जे हमर बेटी एहेन अछि त' विधि कथी लेल करा देलखिन्ह? ओहि पैसा सँ ओकरा लेल कोनो व्यहैबाक लटो न सेन्टर अनित किछु आरो क' सकैत छला। से नहि केलथि। जखन जमाय बेटी के

छोड़ि देलखिन्ह त' ओकरा जीनि लेल कोनो इंतज़ाम करक छलखि। दोसर दोख मैनेजर साहेब के? अगर साक्ष सँ विहि नहि करबाक छलखि त' संबंध कोन कारणे सात मास धरि रखला? पुनःश, अगर दोसर विहि केलाह त' पनम पतीक सब किछु िपस किएलेल नहि क' देलखिन्ह?

एहि पकरण मे दुनू पक्क समाज सेहो ओहिना पातकी अछि।

अनुभकि कना अनंत अछि। ककरा कही ककरा छोडी? कहब तखने बात फरिछायेत। बिना कहने कोना बुझबैक?

एक दष्टान्त हाले के अछि। से की? एक व्यक्ति विहि केलाह। विहिक एक षिर्क बाद कतौ नौकरी लेल गेलाह। जे गेलाह से 3 षिचधरि एबे नहि केलाह। सब उपाय भेल। जगह-जगह लोक पहुरल। नाना-पुलिस मे रपट लिखा देल गेल। मुदा किछु ने भेल। अंत मे ओहि युकि के माता-पिता हुनक पतीक विहि ओहि युकि सँ छोट भाई सँ करा देलखिन। पिरिार रलए लगलैक। स्त्री मानि लेलक जे हमर पनम पति आब एहि संसार मे नहि छथि, त देओर संग विहि कर' मे कोनो हजचनहि। पहिल पति सँ एक लडकी रहैक। दोसर पति सँ एक बालक। सब किछु पटरी पर ठीक सँ रलय लगलैक। करीब 9 षिर्क बाद एकाएक ओहि महिलाक जीनि मे भूराल आबि गेलैक। पहिल पति कहि नहि कोना कतए सँ िपस घर आबि गेलैक। अपन पती लग गेल। बाद मे पता रललैक जे ओकर अनुपस्थिति मे ओकर छोट भाई सँ विहि भ' गेल छैक पहिल पती के। बेरारी महिला दूनाि मे कोना पैर रखत? बडका समस्या। पहिल पति ओकरा पर अपन अधिकार जतबैक। दोसर पति कहैक जे हम त' सब रीज़ अधािर क' विहि केने रही। दुनू भाई मे दन्द रलैत रहलैक। अन्ततम कणय ई भेलैक जे महिलाक पनम पति

दोसर कोनो लडकी सँ विाहि करनु। जखन से भ' गेलैक त' मामला सुलझि गेलैक।
मिथिला मे एहनो विधान रहल अछि जे जाति-मूलक नाम पर एक आदमी 20-25 टा विाहि क' लैत छलाह। एक दू छोडि अधिकाा पती परित्यक्ताक जीनि जीबैत छली। परित्यक्ताक अनचिन्हेलि अन-स्ति-स्नानक तकलीफ अनि सामाजिक मयादे नहि अपितु ा ारीरिक, मानिा क सुख स िचत हएब सेहो भेल। जखन लाराार भेल अहि तरहक स्त्रीगण किछु दोसर पुरष दिस देखैत छथि त' समाज हुनका कुलटा, नल्चज, अपति, भष , दुशरित आ ने जानि की-की कहैत आबि रहल अछि? किनको ाईन त' किनको ाहि कहि टारस्त्र कैल जाइत छथि। समाज बौक बनल रहैत अछि। धनक इच्छाक पूतिच भ' सकैत अछि, तनक इच्छाक पूतिचकोना हएत?

खादी आ मिथिला/मधुबनी पेन्टिंग केर ाुरआत भेला सँ बहुत परित्यक्ता अपन आत्मिक मयादाक रक्षा करबा मे सफलं रहलि छथि। पेन्टिंग मे पदशी गंगा देी, गोदाािरी दाािक कना सबके बूझल अछि। खादीक आगमन सँ कतेको परित्यक्ता अपन अन, स्तिक उपाजच करबा मे सफल भेली। अपन सोर , अरमान, सपना, संहार सब किछु खादीक ताग मे देखनाई ाुर केलनि। कलात्मकता अपन पराकाषा पर पहुँर गेल। मिथिलाक सूती खादी देखैत-देखैत समस्त भारत मे अपन महिनी, कलाकारी आदि गुणक कारणे पसिद भ' गेल।

हम मानिास्त्र, कला-इतिहास आ मानिाधिकारक छात रहल छी। आदिािसी आ गामीण समाज मे काज करैत आबि रहल छी। आदिािसी समाज मे कोनो कारणे अगर पति-पती मे नहि प् लैक त' पति-पती

दुनू के ई स्तिंतता छैक जे अपन जीनिसानी के छोवि दोसर ताकि लए। एकरा सँ परित्यक्ता पना एकर तरहे ओकर समाज मे पभावि नहि छैक जाहि तरहे अपना समाज मे।

एक बात आरो हमरा अररज मे िलैत अछि। लोक जाहि मे वस्तुगत सेहो सवमकलत छथि, सभ कियोक अहि तरहक विधानक परिरालन लेल पुरख सँ अधिक दोष स्त्री के दैत छथि। जखन की सत्य ई अछि जे पतिसत्तात्मक समाज अपन जाल ऐना ने बिछेने अछि जाहि मे सामान्य के के पुछैत अछि आधुनिका आ पढ़ल महिला सेहो फंसि जाइत छथि। अंत मे अतबे कहब जे परित्यक्ता स्त्री समाजक समस्या नहि अछि। ई मानकि समस्या अछि। एहि पर गंभीर बनक जररत अछि। सबके एक संग आबि संगोर करैत अहि समस्याक निदान निकलबाक अछि। अहि अभिशाप के समाप्त करक अछि। से भेल तखने हम सब गविसँ कहि सकैत छी जे हम सब परगतिक पन पर बढ़ि रहल छी।

गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी कछनाव: मधुशाािणी कथा केर दंद?

मधुशाािणी कथा आ पाबक मनुक्ख आ पकृक्त, लोक आ ािस्त्र, स्त्री आ पुरख,बूढ आ नि, पेम आ केक्ल, पाक्स्थकाकी संतुलन केर सहज रपे क्मथलाक अिुत परंपरा अकछ। एकर जतेक चचा हो से कम। एक्ह पाबक के, एकर सब कथा, उपकथा, पसंग, उप-पसंग के नीक सं बुझनाई, कथा के क्मथलाक काक्भन केत्र मे उपलब्ध अंतर के संकलन, ओकर घमथनि, समाजिाास्त्रीय-मानिाास्त्रीय-मनोिैजाकनक विश्लेषण जररी अकछ। दुभाग्य सं इक्तहासकार, समाजिाास्त्री, मानिाास्त्री, मनोिैजाकनक आर-त-आर साक्हत्यकार लोकक सेहो एकर बहुत विचिना नक्ह क सकलक अकछ। ई क्चंताक विषय अकछ।मानिाास्त्र मे एक िब्द होइत छैक "enculturation" जकर अथ भेल जे लोक कुनो चीज, लूक्र, जान, भाि, परंपरा आक्द स्कूल अथिा क्लासरम अथिा कुनो विषि विक्क या विक्कका सं नक्ह बक्लक लोक व्यिहार के देखैत, ओकर अनुिरण करैत कना बुझने आ पयत केने क्सखने जैत अकछ। नक्ह क्सखबला/बाली के आ ने क्सखाबय बला/बाली के एकर विवि िभान होइत छैक मुदा ई सामाक्जक जान के एक पीढी सं दोसर पीढी मे हस्तातक्रत क्विि रप सं होइत रहैत छैक चरैक्त-चरैक्त। अपन अल्पजान सं मुदा मैक्थली संस्कृक्त के क्सनेह के कारण मधुशाािणी पर हम ककछु काज क रहल छी। पक्तक्दन नि बात जात होइत अकछ। विचिन नि क्दिा क्दस संकेत करैत अकछ। इम्हर अपन माय लग पुनः तीन क्दन धक्र अक्ह कथा के बुझबाक पयत कैल। लागल, ई कथा आ पाबक त पुरख केर पूजाक एकाक्धकार के सोझे-सोझ चुनौती द रहल अकछ। कथा सुनक्नहाक्र मक्हला, कथा कहक्नहाक्र मक्हला, कथा केर

सामगी, विधि, विधान, सब किछु बताबय बाली महिला, पुरख मे मात अक्तिम दिन रि आ ओहो महिला के इसारा पर चलयबला यंतति पाणी! बाकि सब चीज मे पुरख के एन्टी बन्द। किछु लोक एक पशउठोलक। ई विजासा पहिने बड पभावित नहि केलक सोचलहु, कथि लेल घमथनि कर? लेकिन एखन भेल जे थोडेक सोची जे आखिर ऐना कियैक छैक - गौरी आ विनाक?

एकरा कोना कही? जौ ास्ति धेने रहब त एकर उतर असंभि। धमाधिकारी सब आिमण करता। लोक सू करब त समाधान के समीप आबि सकैत छी।

लोक आ ास्ति मे एक अंतर स्पि छैक - ास्ति फेम मे बज गाठ सनक बान्हल छैक। ओहि फेम सू बाहर एबाक कल्पनो असंभि। ठीक एकर विपरीत लोक फेम मे रहैत अछि लेकिन आिश्यकता भेला पर फेम सं बाहर एबामे मे कनिकबो संकोच नहि होइत छैक।

लोक पेम मे भक्ति आ भगािन बिच जका, नौकर मालिक जका, पेमी-पेमिका जका व्यिहार करैत अछि आ ओहि व्यिहार मे ास्तिक गुण, विक्र, संस्कार समाहित रहैत छैक। लोक भगािन के आन नहि अपन बुझैत अछि। अपन नहि अपन परिािरक मनुख बुझैत अछि। सब निराकार सब गुणे साकार भ जाइत छैक। भगािन लोक मे मनुखे जका व्यिहार करैत छथि। ई बात ास्ति मे संभि नहि।

लोक महादेब के "उगना" बना दैत अछि। सबरी लोक अछि जे अपन निश्छल पेम मे राम के आिछ रि खुआबय मे संकोच नहि

करैत अछि। सधना जाट भगति के पछुने भोजन करबैत अछि तखने अपने खाइत अछि। लिंगायत समाज के एक महिला हमरा कहलक: "देखू, महादेब के ने माय ने पिता; ने भाई ने बहिन! बेचारे बाल रूप मे हमरा लग हमर गाय केर बछडा बनि हमर गौशाला मे खुटेसल रहैत छथि। अगर सदी भ गेलनि, नाक सू पानि बहै लगतनि त के पोछतनि? के तेलक मालिश करतनि? चलु छोडू सब के हे बाऊ महादेब। आई सू हम अहाके अपन बेटा बना लैत छी। हम तेल-कुर क देब, नाक पोछि देब, काढा पिया देब''।

सब सू पैघ बात ई जे ई महिला कार्यालयिक भाषि सू बजैत छलि। जे बजैत छलि सैह करबाक इच्छा सेहो छलैक।

ई भेल लोक अर्थात फोक के शक्ति। एहेन बात अर्थात व्यवहार शिस्त के जाता अर्थात विद्वान/विदुषि नहि सोचि सकैत छथि।

आब बात करी मधुशालिणी पात्रि आ कथा मे ओ प्रसंग जाहि मे गौरी लेल व्यञ्जनात्मक शब्द के प्रयोग कैल गेल अछि।

कथा के अनेक स्वरूप अछि। लेकिन सब स्वरूप मे व्यञ्जनात्मक शब्द के प्रयोग कैल गेल छनि।

मधुशालिणी के प्रयोजन निर्विवाहित लडकी के जीवन के सब किछु के व्यावहारिक जान देनाई अछि। व्यावहारिक जान मे शिस्तीय जान सम्मिलित छैक।

अगर मधुशाणिी के कथा के सब पसंग आ उपकथा के देखब आ गुनब त लागत जे कछु बाचल नञ्ह अछ। एक गृहणी के जतेक जान चाही सब कछु घोव्ट-घोव्ट एञ्ह कथा के मादे क्सखा देल जाइत छैक। गौरी देवी के भूमका के छोव्ड एक आदि स्त्री के भूमका मे छव्थ जकरा सामान्य क्स्थका मे अनेक तरहक पवक्स्थका के सामना कोना करक चाही तकर पैकक्टकल जान भेटैत छैक।

अञ्ह पसंग मे गौरी के भूमका एक एहेन विकक्का के रप मे छक्त जे नारी मनक दंद के समाधान करैत छव्थ। महादेब के भूमका एक एहेन पक्तक रप मे छक्त जे पती के भम के दूर करैत छव्थ, अपन पती के सम्मान करैत छव्थ आ हुनक सम्मानक आ िब्दक रक्त करैत छव्थ। संगञ्ह महादेब गौरी के मयादा के भान सेहो करबै चाहैत छव्थ।

एञ्ह सम्पूणा उपकथा मे स्त्री आ पुरख एक दोसरक पूरक छैक। दुनू के एक दोसरक मयादा के क्वंता छक्त। गौरी तीन सरिप - डाईन, चोरनी आ क्छनाक्र - मे ई संदि स्थाक्पत करय चाहैत छव्थ जे िका आ क्वजासा मनुखक पाकृक्तक गुण छैक। एकर पमाक्णकता के परीक्त करब अक्तायि। दोसर क्दस महादेब अपन कृत्य सू ई पमाक्णत करय चाहैत छव्थ जे पक्त-पतीक संबंध विशास पर क्टकल रहैत छैक। अञ्ह विशास के सम्मान आ रक्त करब दुनू के सामूक्हक क्वजम्मेदारी होईत छैक। अविशास सू संबंध टूटैत छैक।

बात गौरी आ वि िके होईत छैक ताञ्ह उपकथाक विषय िस्तु ओहने छैक। महादेब तंत के जनक छव्थ। ताञ्ह बात डाईन के भ रहल

छैक। गौरी डाईन बनय चाहैत छथि। महादेब ई कहैत छथिन जे ई कायसिभक नहि छैक। गौरी के दक्षिण दिशा के गाम मे जेबाक लेल मना करैत छथिन। गौरी कोना मानती? सिखनाई शुरु करैत छथि। कोना कहने महादेब साकी रहैत सब विद्या के देखैत अपना कंटोल मे लेने रहैत छथि। आ जखन गौरी चुपचाप डाईन केर सब मंत पढ़ि सिख जाइत छथि त गौरी अपन पुत गणेश आ कार्तिक के कोढ करेज देखै लगैत छथि। आब महादेब गौरी के पकड़ि लैत छथि आ कहैत छथिन: "हद भ गेल? हमरा मना केलाक बादो अहा गेलौ दक्षिण कोण मे?"तामसे भेड महादेब कहैत छथिन जे पूरा तंत डाहि देथिन। तुरत गणेश एक-एक मंत लिखने जाइत छथि आ कार्तिक डाहने जाइत छथि। गौरी के होइत छनि जे तंत कम सू कम मूल रुप मे बचि जाइक। साबर मंत मात अढाई आखर के होईत छैक जकरा कार्तिक सू चुटकी मे चोरा लैत छथि। चोरेबक उदेश्य मंत अथवा परम्परा के रक्षा छैक आर किछु ने। हमरा एना बुझना जाइत अछि जे एहि पसंग के पासंवाकता एहि बात मे छैक जे एक सफल गृहणी के सब तरहे अपन घर आ गृहस्थी के रक्षा करक चाही।

आब गौरी चोरनी छथि ताहि पकरण पर आबि। बहुत बेजोड पकरण अछि। आ एकर आधार सेहो गौरी तैय्यार करैत छथि। गौरी महादेब सू आगह करैत छथि जे अगर कियोक चोरी करैत अछि, किम्बा छिनरपन करैत अछि त ओकरा शरीर मे किछु एहेन चिन्ह अंकित भ जैक जाहि सू जन-सामान्य के ई सिख भेट जाइक जे एहेन काज नहि करी। महादेब ना-नुकूर करैत गौरी के किछु दिन माफ लैत छथि।

एक बेर पुनः गौरी मयादा के लाघेत छथि आ महादेब के मना केलाक बाद एक गाम मे भाटा चोरी करैत छथि। कानि के रप मे जखना-जखना गौरी भाटा चोरबैत गेली तखना-तखना नागक्ड बढैत गेलक। जखन गौरी के भान होईत छक त महादेब सू कानि दिन करैत पुनः ओकरा समाप्त करय कहैत छथि। फेर होईत छक ककाक अभिषि कयन्हक रप मे रहक चाही। आ कहैत छथिन जे कानि मात ई जानरि मे होबक चाही। सैह भेल।

आब कछनाक बला पकरण मे अबैत छी। एक बेर पुनः महादेब के मना केलाक बाद नहक कात मे गेलक। महादेब माल्लाह बनला। नाि पर राशता कटैत काल माल्लाह गौरी के कखनो गाल छुबा लैन।कखनो चुटी काक्ट लैन। भाि उतेजक भेल गेलक। जेना-जेना केक्ल भाि मे गौरी मगन भेली तखना-तखना हुनकर माथ पर कसंग बढैत गेलक।

मल्लाह जाल खसेलक। गौरी माछ बाछलक। एकर फायदा उठबैत मल्लाह गौरी सूग एमहर-ओमहर करैत केक्ल विया के सेहो आनंद नक्ह-नक्ह करैत लैत रहल।

केक्ल होइत गेलक आ कसंघ बढैत गेलक। आब गौरी के होि एलक : "हे भगानि! ई की भेल? आब की हैत?"

यैह सोचैत गौरी अपन कसंघ के साडी सू झपैत गेली। मुदा कसंघ बक्ढते गेलक। अंततः महादेब सू कानि दिन केक्लथन: "गलती भ गेल हमरा सू। ई मलहबा अपन सीमा नाक्घ गेल। छू-छाप हमर पक्तािध

के बादो करैत रहल। एकरा केकरो कहनाय उचित नहि। गलती सँ हम कहि देलौ जे कनि द दियौक। एकर उपाय अहाँ बताऊ?"

महादेब कहलखिन: "हे गौरा, हम त कहने रही अहाके जे कानि के चकर मे नहि पर। मुदा अहाँ जिद ठानि देलौ जे द दियौक। लेकिन अहाँ चिन्ता जूनि कर। ओ मलहबा कियोक आर नहि छल। हम रही। ताहिं अहाँ चिन्हाकर नहि भेलौ"।

महादेब बजैते रहलखि: "हमरा बुझा गेल जे अहाँ तथ्य के जानय चाहैत छी। हम सोचलहुँ, से त ठीक मुदा कही ऊंच-नीच भ गेल त की हैत? सैह सोचैत सिंयं मलहबा बनि अहाँ लग गेल रही। अहाँक चरित बाचल अछि। अहाँ अनेरे चिंता जूनि कर"।

गौरी के भेलखि जे ओ अनेरे महादेब पर शंका केलखि। कहलखिन गौरी: "हे महादेब! हमरा सँ गलती भेल। आब अहाँ एकर उपाय कर। सिंघ त कोनादिन लावा रहल अछि"?

गौरी के दुख देखि हँसैत महादेब आब सिंघ के समाप्त करय लगला। गौरी कहलखिन :"एक काज कर, कनि नाममात सिंघ रहय दियौ जे मृतभुनि मे जानरि के सिंगार बनत"। गौरी के बातक सम्मान करैत महादेब नाममात के सिंघ रहय देलखिन जे कथाक अनुसार आजुक जुग मे जानरि सब मे भेटैत अछि।

लोक व्यहिार के अनुरूपे अगर कथा के विचिना करब त लागत जे गौरी एक सामान्य हाड-मासक महिला बनि विकिा दैत छथिन।

गौरी कदाचित सब महिला के ई सिख दैत छथिन: "एखन धरि जे गलत-सलत केलौ से बिसरि जाउ। आब अपन दाम्पत्य जीवन मे संलग्न होउ। पत्नि-पती के बीच आपसी पेम, विशास बनल रहक चाही। इतिहास के छोड़ि तिमिन आ भविष्य के चिंता होबक चाही"। शिक्षित केर गौरी भले एहेन बात सोचि नहि सकैत छथि, लोकक गौरी अपने समाजक महिला बल्कि समाज के जन सामान्य महिला के मानविक अस्मिता के देखबैत चोरनी, डाईन आ छिनारि बल्कि एक नव सिखक परम्परा स्थापित करैत छथि। एकर नाम जे द दी ___ यथार्थवाद(realism), लोक परंपरा केर विकास, व्यावहारिकता, पुरुख-पकृति के समाविष्ट अर्थात आरो किछु। समग्र रूपे ई अद्भुत परंपरा अछि।

हा, मिथिला मे मधुश्रावणी पाबनि केएक बात कनि कचोट करैत अछि आ एकर सार्वभौमिकता पर भले खिडकी दोगे कथिलेल नहि मुदा चैलेज करैत अछि: "ई कुन कारण सं मिथिला के सब जाति मे समाविष्ट नहि भ सकल आ ब्राह्मण मात मे नुकायल रहि गेल?" भले ई पश्न छोट लगैत हो लेकिन एकर उत्तर देनाई अतेक सहज नहि अछि। उत्तर तकला सं एकर एक नव आयाम ठाढ भ सकैत अछि?

पूरा कथा सुनलाक आ बेर-बेर मनन आ विचिन केलाक बाद अहि क्षिप्रक्षितिक याता कैल. पाठक के भावि पतीक्षा रहत।

आभार: अपन माता शीमती विदुलारी देवी के कहल कथा के आधार पर एहि पसंग पर चचा कएलहु अछि।

लघुकथा- पुरषक नहि विशासे

आिुतोष गोडडा सं छला आ सैिनक स्कूल ितलैया सं 12िी पास केलाक बाद िदल्ली विशिदालय मे बी एस सी मे नामाकन लेने छला। पढबा मे तेज आ अपना विषय के पित साकाक छला। भाषा मे बहुत नीक पकड छलिन जािह कारने विक्क आ विदाथी मे बहुत चिचित छला।िबद केर पयोग, ओकर उचाचरण, लािलतय सब िकछु मे बेजोड छला आिुतोष।ई एक सामानय मधयमिगीय पिरिार सं छलाह। तीन भाई एक पैघ एक छोट आ आिुतोष बीच मे।आिुतोष केर जेठ भाय िहनका सं तीन िषिकेर पैघ आ ओहो सैिनक स्कूल ितलैया केर छात।िहनक िपता छोट छीन सडक इतयािद के मरममत के ठीकेदारीकरैत छलिथन आ घर इतयािद समहारक काज आिुतोष केर माय जे की चतुर गृहणी छलिथन करैत छलिथन। िकहु नहि किथलेल आिुतोष के सैिनक अिधकारी बनबाक भुत नेने सं सिार छलिन। हुनकर जीिन केर एक मात उदेशय सैिनक अिधकारी बनब छलिन। अपन कका केर एक लडकी चंरकला सं नहु-नहु आिुतोष केर सािमपय भ रहल छलिन। ओना पारमभ मे ई सािमपय सहज आ पढबाक िजजासा धिर िसमटल लेिकनिकत-ित आगा आ पगाढ होइत।

आिुतोष जखन बी एस सी मे पढैत छला तािह कण अपन क्लास केर सब छात संग फील्ड ििििलेल एक आतमीय पोफेसर के संगे गुजरात गेल छलिन। ओतय मनोयोग सं काज केलिन। करीब 25 िदन रहला। हुनका संगे चंरकला सेहो छलिथन। चंरकला साििर, सुनदिर छिल। अित संस्कारिती। चंरकला केर िपता इनकम टैक्स केर किमशर छलिथन। दू भाई के बीच असगर बिहन। चंरकला

बीच मे एक भाय जेठ आ एक छोट। उपर सं जेठ भाय आई आ भाउज दुनू आई आर एस आ इनकम टैक्स विभाग मे पदाधिकारी। मुदा अहि बातक लेि मात घमण्ड नहि छलन्हि। चंरकला सामान्य स्त्रि पहिरैत छली। मेक उप सेहो नाम मात। अपन पैघ-पैघ आंखि मे काजर जरर लगबैत छली जे हुनका सौन्दर्य के कतेक गुणा बढा दैत छल. चंरकला केर पहचान हुनकर सहजता, लज्जा भाि, आ पढाई मे समपिि छलन्हि। आि ुतोष संग काज करैत-करैत नहि कहि कोना चंरकला आि ुतोष संग पेम करे लगलन्हि। आि ुतोष के सेहो एहि बातक भान जल्दी भ गेलन्हि। बिना बिलम्ब केने आि ुतोष सेहो अपन ठोर मुसकियबैत चंरकला के अपन पेमक स्वीकृति द देलखिन। चंरकला के एकाएक भेलन्हि जे समस्त संसार केर खुिि जेना हुनका तुरत भेट गेलन्हि। मोन भेलन्हि जे मस्त भ सरसो के खेत सं भरल खेत मे नृत्य क सरसबक पीयर फुल सं भरल खेत मे घुसबो केली। दुनू हाथ आसमान दिस उठेली आ सिनेमा केर गीत ‘‘चलती फिरू उडती चलूं आज गगन मे’’ गेनाई िुर केलन्हि। एकै आखर के बाद लज्जा आ हुनकर संस्कार जेना चंरकला के हाथ पकडि रोकि दन्हि? थकि गेली। भेलन्हि ‘‘ई की भेल?’’ यैह सब सोचैत-सोचैत नहु-नहु चलय लगलन्हि। करीब पाच डेग चलल हेती की कनि दूर सं आि ुतोष केर हाकब सुनेलन्हि: ‘‘चंरकला, चंरकला? कत छी?’’

आब चंरकला आरो साकाक होइत झट दनि सरसबक खेत सं बाहर आबय लगली. लाज होम लगलन्हि, ‘‘कही आि ुतोष हमरा हाथ ऊपर केने सरसबक खेत मे गबैत आ नचैत त नहि देख लेलन्हि? हे भगबान! अगर देख लेला त की सोचता?’’ अहि तरहक भाि मोन

मे बेर-बेर आबय लगलक। डेग झटझारइत खेत सं बाहर आबय केर उपक्रम केली। अही बीच आशुतोष आबि गेलाह अकचकाईत पुछलखिन: “की भेल चंरकला! अहा खेत मे की क रहल छी? हम अहा के बगल बला गाम मे किछु जानकारी लेबाक हेतु अपना संगे ल जाय चाहैत रही।"

अकचकाइत अपन स्त्रिगत आ भाव-भंगिमा के ठीक करैत बाहर अबैत चंरकला बजली: “कुनो बात नहि। ओहिना सरसब के फूल नीक लागल त कनि भीतर खेत मे घुसि गेलौ। देखू ने कतेक सोभनगर लगैत छैक? दिल्ली मे की ई भेटत?”

आशुतोष बिना किछु कहने अपन मुस्किान सं हुनकर बात के हा कहलक।

आब चंरकला बजली: “चलू ने कुन गाम चलक अछि? हम तैयार छी. हमर रेकार्डर, पेन, नोटबुक सब किछु हमरा लगे अछि।”
आशुतोष कनि रोमान्टिक भ गेला। एकहि क्षण चंरकला हुनका कनि अधिके सुनदर लगैत छलखिन। आगा बढैत चंरकला के हाथ अपन हाथ मे लैत कहलखिन: “हा, सरसब के फूल त एहि खेत मे सते बडड नीक लगैत छैक। मोन त होइत अछि अहि खेत के बीच मे हमहु घुसी?”

चंरकला लजाईत बजली: “ठीके घूस चाहैत छी अहा?”

आशुतोष: “अहा मोने की झुटे? बहुत मोन क रहल अछि।"

चंरकला: “ठीक छैक। तखन घुसु ने सबरसबक खेत मे हमरा लग कैमरा अछि। हम फोटो खीचैत छी।"

आशुतोष: “मुदा हमर एक शर्त अछि।"

चंरकला: “की शर्त”?

आशुतोष: “हमरा संगे अहुं चलू खेत मे। आ दुनू गोटे एक संगे फुलक सौन्दर्य, प्रकृति केर सजल रूप आ खेतक हरियर-पीयर स्वरूप के देखी, निहारी आ ओकरा संगे तारतम्य स्थापित करी”। चंरकला लजा गेली। फुसिये के अभिनय करैत बजली: “नहि-नहि अहा जाऊ। हम की करब जाक?”

चंरकला के लज्जा भाव मे हा अर्थात स्वीकारोक्ति केर अभिव्यक्ति स्पष्ट देखल जा सकैत छल। चंरकला के प्रेम मे मग्न भेल आशुतोष जेना चंरकला केर अंतर्मन केर भाषा बुझि गेला। बिना समय बरबाद केने चंरकला के हाथ पकड़ि खेत के भीतर जाय लगला। उन्मादित मोन सं नहि-नहि कहैत चंरकला आशुतोष संगे खेत मे बिदा भेली। आशुतोष केर पकड जोर भेल गेलनि। चंरकला आशुतोष केर हाथक दबाब सं आनंदित छली। क्षण-क्षण अनुराग बढल जा रहल छलनि। आशुतोष सेहो गदगद छला। दुनू खेतक तह मे घुसि गेलनि। आशुतोष एकाएक चंरकला के अपन बाहुपास मे जकड़ि लेलनि। नहि-नहि कहैत चंरकला लाजवंती केर पात जका समटल आशुतोष केर शरीरक अत्यधिक सामीप्य प्राप्त पाबि बैकुंठक सुख मे विलीन होमय लगली।

बिना कुनो पश्चाताप केने अपना आपके आशुतोष के उपर न्योछावर भ गेली। एकरा कहैत छैक नैसर्गिक प्यार आ प्यार मे समर्पण। सघन खेत मे फेर दुनू के बीच सब किछु भेल जे स्वाभाविक आ कमिटेड पेमी-पेमिका मे होइत छैक। हा, अपन मोन के सबल करबा लेल चंद्रकला आशुतोष के छाती सं सटैत,आशुतोष केर हृदय केर धड़कन के जकरैत नहु-नहु कान मे अतेक जरूर कहलखिन: "आशु, अहा हमरा कहियो छोडब त नहि?"

पेम मे शरीर आ मोन दुनू सं पागल आशुतोष झट दिन किछ ठसकल स्वर मे बजला: "की कहैत छी चंद्रकला? हम आ अहा आब कहियो कुनो स्थिति मे अलग नहि हैब। हा भ सकैत छी अगर अहा के हम पसीन नहि आबि आ कुनो अहा के माता, भाई, आ परिवार के स्टेटस बला भेट जाय।"

चंद्रकला आशुतोष के एहि बात सं तमसा गेली। किछ रुसैत उतर देलखिन: "की कहैत छी आशु? हमरा लेल अहा सबसू उतम छी। अहा सफल रहि, असफल रही, हम अहा संगे आनंदित रहब। आई सं परिवार आ स्टेटस के बात नहि होबाक चाही।"
अपन गलती के अनुभव करैत आशुतोष बिना किछु कहने अपन कान पकरैत चंद्रकला सं माफी मांगि लेलक। चंद्रकला सेहो फेर सं हुनक छाती सं सटि गेली। दू शरीर एक आत्मा बनि चुकल छल आ निश्छल प्रकृति केर कोरा मे विहंसि रहल छल। ने कुनो छल ने पपंच। ने शहर केर कोलाहल ने थोपल स्टेटस केर मयादा। निष्कपट, पाजल, शुद्ध, आ नैसर्गिक पेम। आधा घंटा कोना बीत गेलक से पते नहि चललक। एक त निरजन मे खेत दोसर दुपहरिया

के बेर। कयोक नहि एलेक। आधा घंटा के बाद आ ुतोष चंरकला के माथ, आंखि, गाल, ठोर आ गरदनि मे चुम्मा लैत गदगद भेला। चंरकला कुनो पतिकार नहि केलखिन। अंत मे ओहो एक बेर आ ुतोष के पकरि ठोर मे चुमि लेलखिन। फेर दुनू गोटे चकि चकि ी जका हाथ मे हाथ देने खेत सं बाहर एलखि आ दोसर गाम दिस अपन फीलडकिलिल विदा भेलखि। भरि रस्ता गप्प कम केला मुदा दुनू खिबि मे रहखि।

किछु दिनक बाद दुनू आ ुतोष आ चंरकला फीलड-टिप सं िपस दिल्ली विशिदालय आबि गेलखि। आब पति दिन चंरकला आ ुतोष लेल किछु-ने-किछु जररर लबैत छली। क्लास समाप्त होइते एक ठाम बैसनाई, सिनेमा देखनाई,कारला मे किछु खेनाई, आची गैलरी सं बाविभन तरहक काडकीनब ओहि मे अपन मोनक अभिव्यक्ति करैत एक दोसर के देब, लेब करैत समय भागल जा रहल छलखि। चंरकला केर िरीर के दोसरे रंगक चुहचुही आबि गेल रहखि। मस्त अलमस्त, मुदा संयत भाि सं सुन्दर सिभाि आ संस्कार सं। अनुकरणीय, िकक पेमक परिभाषा या दृ ान्त एकरे कहल जा सकैत छल।

समय अपन पिहि सं चलैत अछि। एकर गति पर ककरो नियंतण नहि। चंरकला आ आ ुतोष बी.एस. सी. पास केलाक बाद एम. एस. सी. मे आबि गेलखि। आब चंरकला अपन अधिक सं अधिक कण आ ुतोष संग बिताबय चाहैत चंरकला। अपन िपता आ यूनिविसिर्टी केर एक पोफेसर सं सिफारिस करा विमेस हॉस्टल मे आबि गेली। तकदिलखिन जे िरसचिलेल अपना आपके तैयार करती। िपता आ

भाई कतेक बेर हुनका पाि सक्क सेिा लेल पोत्साहित केलथिन मुदा चंरकला अपन धुन मे मगन रहली जे िोध करती आ यूनिवर्सिटी मे पढेती। घरक लोक थाक्क क छोड्ड देलथिन।

आिुतोष कॉलेज के हॉस्टल सं यूनिवर्सिटी हॉस्टल मे राघब लग आबि गेला। आब 8 बजे राति धरि आिुतोष आ चंरकला एक दोसरक सान्निध्य मे रहे लगलाि। पेम काल-काल बढल गेलि। विभाग केर सब छात आ बहुत विक्क सेहो बुझ्झ गेल्थिन जे हुनक पेम सॉलिड रॉक छि। एहि बीच आिुतोष केर ध्यान एकाएक भारतीय सेना के अधिकारी बला नोकरी दिस चलि गेलि। अते चंरकला आ आिुतोष मे अंतर छलि। चंरकला केर इच्छा सामान्य जीिन जिबाक रहि। ओ चाहैत छली जे आिुतोष सेहो हुनके जका िोध करथि आ यूनिवर्सिटी अथिा कुनो कॉलेज मे पढाबथि। लेकिन आिुतोष अपन जिद पर डटल रहला। चंरकला आिुतोष केर भािना के सम्मान करैत चुप भ गेली। चंरकला कनि दब्बु पकृति के छली। कखनो काल आिुतोष हुनकर एहि सिभाब के गलत फायदा उठबैत छलि।

आिुतोष केर किछु व्यिहार राघब के विचित लगैत छलि। ओ हमेिा स्मार्ट बनि रहैत छला। ढंग सू िसि पहिरनाई,गदर्नि मे स्कार्फ केर पयोग, मोछ के ऊपर ऐंठब, छाती तानि क रहब, गदर्नि ऊंच आ सोझ केने चलब, हमेिा गंभीर रहब, अंगेजी केर उच्चारण आ िब्दाबली पर अधिक ध्यान राखब किछु एहेन गुण सू युक्त छला आिुतोष। पढबा मे आिुतोष नीक छला। कुनो बातक िनिि अथिा फील्ड िकिकेर रिपोर्टसाधल मानिािसिकी जका करथि। राघब के

जूनियर रहितौ आशुतोष राघब केर भाषा एवं अन्य चीज सबके ठीक करैत छलखिन। आर त आर राघब केर एम फिल केर रिपोर्ट केर जखन अंतिम रूप बनि गेलनि त ओ आशुतोष के भाषा शुद्धिकरण एवं श्रृंगार लेल देलखिन। आशुतोष सेहो एहि काज के बहुत पोफेशनल ढंग सू केलनि। 10 दिन मे पूरा रिपोर्ट के सुन्दर, सोभनगर आ व्यवस्थित क देलखिन। फाइनटयून भेलाक बाद राघब ओकरा बाइंडिंग लेल द देलखिन। आशुतोष सेहो राघब के बहुत सम्मान करैत छलखिन।

आशुतोष पत्रकारिता विषय करैत छला। अपन कक मे सदाम हुसैन केर फुल स्केल पोस्टर रखैत छला। पोस्टर के नीचा अपना हाथे लिखने रहथि - LET US IMBIBE HIM

ई किछु एहेन बात रहैक राघब के कोनादन लगलनि। एक दिन राघब हुनका सू जिज्ञासा केलखिन, "आशुतोष, ई सदाम केर पोस्टर आ ऊपर सू अहाक स्लोगन। एकर मतलब हमरा नहि लागल?"
आशुतोष विहूसैत बजला, "सर, सदाम केर दृढ इच्छाशक्ति, क्षणिय आ हिम्मत हमरा पभावित करैत अछि। अमेरिका सनक देश के असगरे हिलेने अछि। सैनिक शक्ति हो त सदाम सन। ताहि हम सदाम के पसन करैत छी। देखू, हमेशा ई सैनिक केर ड्रेस मे रहैत अछि। सब सू पहिने अपने क्षणिय लैत अछि । युध भूमि मे सेहो आगा रहय बला नेता अछि एहि सू एकर सेना मे जोश भरल रहैत छैक।"

राघब यदपि आशुतोष केर तर्क सू बहुत पभावित त नहि भेला

हुनकर जोि आ उमंग राघब के अशिय पभावित केलकक।

एकक्दन आ ुतोष राघब के संबोक्धत करैत कहलक्थन, "सर, हमरा जीनि मे मात एक नौकरी पभावित करैत अक्छ -सेनाक नौकरी। अगर रईसी आ गौरि के जीनि जीबाक हो त सेना मे अक्धकारी के नौकरी जॉइन कर ।"

आ ुतोष केर आूक्ख सू साफ बुझना जा रहल छलक जे हुनकर जीनि केर उदेशय की छक। राघब केर दोसर पश छलक: "आक्खर की बात एहेन छैक एक्ह मे? अहा नीक विदाथी छी, पिासक्क सेिा मे जा सकैत छी, आई पी एस बनू, क्कछु क सकैत छी। पुक्लस मे सेहो कम सुविधा थोडे ने छैक? अहा क्िसचि मे नीक क सकैत छी। बहुत उतम स्तर केर विक्क भ सकैत छी?"

आ ुतोष बजलक, ‘‘सर, हम अपने सू सेना के ऑक्फसससि केर ठाठ देख चुकल छी। भले पाई कतौ भेटय लेक्कन जे सुविधा, मस्ती, रोब आक्द सेनाक ऑक्फसर होबा मे छैक से कतौ उपलब्ध नक्ह।‘‘

आ ुतोष के सैन्य अक्धकारी बनबाक उच्च आकाका देक्ख राघब अपना आप के मौन रखनाई उचैत बुझलक। लेक्कन मोने मोन थोडेक आ ुतोष केर भविष्य के ल'क क्चंक्तत जर र भ गेला।

एम एस सी पीवियिस के निमि मास मे एकाएक एक क्दन आ ुतोष चंरकला के कहलक्थन , "देखू, हम परीका नक्ह देब। आब हम राक्त क्दन सैक्नक अक्धकारी बला एंटेस कर तैयारी करब।"

चंरकला : "ई बात त ठीक। मुदा परीक्षा देब मे की हर्जा? कम सू कम हॉस्टल मे रहबाक अधिकार त रहत?"

आशुतोष: "से त ठीक मुदा हम दू नाि मे पैर नहि राखै चाहैत छी। सब समय आ ऊर्जा हम अपन प्रतिस्पर्धा बला परीक्षा मे लगबे चाहैत छी।"

चंरकला के बुझा गेलनि जे आशुतोष के बुझेनाई असंभि अछि। चुपे रहब मे अपन आ आशुतोष दुनू के हित बुझना गेलनि।

खैर, समय बितैत रहल आ आशुतोष अपन तैयारी मे संलग्न रहला। अंगेजी आ जनरल नॉलेज कर चिंता हुनका नहि छलनि। हा किछ फिजिकल फिटनेस मे डर रहनि। पहिल बेर मे लिखित परीक्षा नहि पास क पेलनि। निराि भेला। दू-तीन दिन मौन भ गेला। ने बाजब ने भूकब। भोजनो नीक सू नहि करथि। हा, दू-तीन बेर राघब लग आबि अिश्य बाजथि, "ई नहि पचा पाबि रहल छी सर जे लिखित परीक्षा मे हमरा कथी लेल नहि भेल?"

राघब सेहो दुखी छला। भरोि दैत कहलथिन, "कम ऑन आशुतोष! ई प्रतिस्पर्धा केर परीक्षा छल कुनो यूनिवर्सिटी केर रुटीन परीक्षा नहि। रुटीन परीक्षा मे जतेक विद्यार्थी नीक लिखतै, सब पास भ जेतैक। एकर विपरीत कम्पटीिन केर परीक्षा मे निर्धारित पद रहैत छैक आ अनन्त परीक्षार्थी। ताहि बहुत गम्भीर छात्र सेहो छटा जाइत छथि। अहा मेधािी आ संस्कारी लोक छी। अपन कर्तव्य मे लागल रही। सफलता एक ने एक दिन अिश्य भेटत।"

राघब के बात सू जेना आ ुतोष के पाण मे पाण एलक। विसिाि फेर जागत भेलक। कहलक्थिन, "ठीक कहैत छी सर। हमरा अनेरे भूतकाल केर असफलता पर प ाताप के छोड्ड फेर सू पूणर्भिनोयोग सू तैयारी करक चाही। आब हम सैह करब आ बाहरी दुक्निया सू थोडेक दूरी राखब।"

एक्ह बीच चंरकलाकेर होस्टल मे एक ऋचा नामक लडकी एली। ऋचा के चंरकला सङे र म ियर करक छलक। थोडेक क्दन मे दुनू मे पगाढ क्मतता भ गेलक। ऋचा के चंरकला अपन आ आ ुतोष केर सब बात बता देलक्थिन। आ ुतोष सू भेट सेहो करा देलक्थिन। ऋचा गोरधप-धप, नमहर कद काठी, मुहू मे पाक्न, पैघ आूक्ख, आकषर्क ि ारीर,उंनत आ सुडौल कुच केर स्वाक्मनी छक्ल। जाघ तरासल, क्नतम्ब उठल आ गजगाक्मनी जका चलैत छक्ल ऋचा। जेहने ऋचा देखबा मे सुनक्र तेहने बजबा मे। ककरो पक्हल बेर मे अपन तनक सुंदरता सू आ िचनक चातुयर्सू अपन गुलाम बना लैत छली। मुदा आ ुतोष के ऋचा अपन जेठ भाय बना लेलक। इम्हर परीक्ा मे नक्ह भाग लेबक करने आ ुतोष के ऑक्फिवियली होस्टल खाली करय पडलक। यदक्प राघब हुनका अपना र म मे रखने रहलक। एक समस्या भोजन के छलक। आ ुतोष बाहर सू भोजन करे लगला।

आ ुतोष के घरक क्स्थक्त बहुत नीक नक्ह छलक। क्पता रइस आ एक नंबर कर देहचोर। क्कछु ठीकेदारी आ क्कछु खेतीबाडी सू जीिनिक गुजाडा चलैत छलक। ऊपर सू आ ुतोष तीन भाई। पक्हल

भाई सेहो सैनिक स्कूल कालैया सू पढल। बाद मे आमी अफसर बनलथिन। मुदा थोडेक दिन मे नौकरी छोड़ि लखनऊ आबि टेलीकॉम जगत मे अपन व्यसिाय स्थापित केलथि। लखनऊ मे अपना सू पाच षिपैघ अपने व्यसिाय के क्षेत्र केर विदेशीत बाम्हण कन्या सू पेम विाहि क लेलथि। माता पिता आ भाई सब सू कुनो संबंध नहि छलथि। लेकिन आिुतोष केर माय बहुत गुणमति स्त्रीगण छलि। ओ विपरीत परिस्थिति मे अपन दू छोट बालक के पढबैत छलि। आिुतोष एना परिस्थिति मे कार्णाि लेलथि जे आब ओ टयूिन पढा अपन खर्चा चलेता।

ऋचा छलि मध्यपदेि केर वासिन्धी। दू बहिन आ एक भाय। ऋचा सबसू पैघ, तकर बाद भाय जे इंजीनियरिंग केर द्वितीय षिकिेर छात आ सबसू छोट बहिन आ ओहो इंजीनियरिंग केर पथम षिकिेर छाता। आिुतोष सूग सैनिक स्कूल केर समय केर हुनक मित विजय सेहो छलथिन जे एम एस सी करैत छला। चूंकि विजय केर अंक बहुत नीक नहि छलथि ताहि ओ बाहर मे रहैत छला। ऋचा के भाई आ बहिन के सेहो होस्टल नहि भेटल छलथि।
जखन हिनकर सभक संबंध पगाढ होमय लगलथि त सब मिलक मुखजी नगर मे एक फ्लैट ियर मोड मे ल लेलथि। आिुतोष आब होस्टल छोड़ि देलथि। होस्टल मे राघब आ चंरकला रहि गेलथि।

चंरकला के पिता आब चंरकला सू विचार करैत लडका तकनाई ुिर करय चाहैत छला। मुदा चंरकला एकै बात कहै छलथिन, "बिना पी एच डी आ नौकरी केने ओ व्याह नहि करती।" हालाकि ई त चंरकला के बहाना छलथि। हुनकर मोन मे रहथि जे एकबेर

जखन आशुतोष आमी अफसर केर नौकरी मे चयनित भ जेता त हुनका अपन माता आ जेठ भाई सू भेट करा सब राज बता देलथिन।

एमहर आशुतोष लिखित परीक्षा मे दोसरो बेर असफल भ गेला। आब ओ बहुत तनाव मे आबि गेला। छेपक मे एहो बात बतेनाई जरूरी जे ऋचा मुक्त स्वभाव के।लडकी छलि। 11 वीं क्लास सू अनेक पुरुष मित्र सब सूग मानसिक आ दैहिक संबंध रखली। हुनका रति-रभस मे, चुम्बन मे आलिंगन मे आ काम कीडा मे बहुत आनंद अबैत छलनि। ओना त आशुतोष सू भाई बहिन केर सम्बन्ध छलनि तथापि आशुतोष सूग सटिक रहब, हुनका भरि पाज क छेकब, हुनका सङे आलिंगनबध भय सुतब आदि सहज भाव सू करैत छलि। आशुतोष सेहो अहि मे आनंदित होइत छला। जखन आशुतोष के दोसर बेर सफलता नहि भेलनि तखन ओ एकदिन चंरकला के कहलथिन, "चंरकला, आब अहा अपन माता के पसिन केर कुनो योग्य लडका सङे विवाहि क लिय। हमर जीवन अंधकार भेल जा रहल अछि।"

चंरकला के आूखि मे नोर भरि गेलनि। बजली, "की कहैत छी आशुतोष? हम अहा सू सिनेह केने छी। अहा जतय रहब हम ओतहि रहब आ खुश रहब। एहेन बात नहि बाजू अहा। अगर कही त आई हमर घर चलू। हम एखने अपन माता आ भाई सू अपन सबहक पेम आ विवाहि के बात करैत छी। अगर कही त हम कोटविवाहि लेल सेहो तैयार छी।"

आशुतोष कहलथिन : "हमर कहब अछि, अगर सफल नहि भेलौ त हमरा सङे अहूके जीवन बबाद भ जैत। अहाक पति हमर प्यार

ओतबे ि शित आ पाजल अछ जतेक अहाक सनेह हमरा पत।" ई कहैत आ ुतोष चंरकला के अपन बाहुपा ि मे ल लेलथिन। पेमाकम मे चंरकला छोट नेना जका कनैत रहल।

आब चंरकला पी एच डी करय लागली। बसतर केर मुडया जनजात केर जडी-बूटी केर जान, तंत-मंत आ कचकयसा पधत पर हनकर कय काज चल रहल छलक। मुदा आ ुतोष के पत पयार एि हुनक जीिन र पी नैया के डगमग करैत चलब के कारणे चंरकला केर ि ध कायजेना एक ठाम ठमकल पडल होक!

एह बीच आ ुतोष केर परि िर मे एक आरो घटना घटत भ गेलक। हुनकर जेठ भाय आ भउजी मे तलाक केर सथत आब गेलक। बेचारी आ ुतोष केर माय परेि ान। करती त की करती? एकटा बेटा छलक आ ुतोष के जेठ भाय के। ओ बेचारा ककरा लग रहत? काज धाज से र कल। जेठ बेटा घर मे बैसल।

आ ुतोष केर छोट भाय सेहो बी एस सी केलक बाद टेलीकमयूनकेि न केर केत मे नौकरी केनाई ुर केने छलाह। पारंभक संघषकेर बाद सथत नीक भ गेल छलक। गाम पर माता पता के सहयोग करब ुर क देलथिन। हुनकर नाम छलक पका ि । ओ बीच बीच मे आ ुतोष लग अबैत रहैत छलाह। हुनका ऋतु अपना पेमजाल मे फंसा लेली। पहने हूसब, बाजब आ बाद मे सब कछु ुर भ गेलक। बाद मे ई जानकारी आ ुतोष के सेहो चल गेलक। ऋतु आ पका ि घोषणा क देलथिन जे दुनू पयार करैत छथ आ वि िह करती। वि िहक रोडा आ ुतोष छलथ। मा कहलथिन, "जाबेत धरर

आशुतोष सेटल नहि भ जेता आ विवाहि नहि क लेता तावति धरि पकावि केर विवाहि कुनो हालत मे संभव नहि छलनि।" आब की हो? सब चुप।

एहि बीच आमी ऑफिसर केर एंटेस मे आशुतोष असफल होइत रहला। अंत मे आयु सीमा सेहो खत्म भ गेलनि। पताचार केर माध्यम सू पबंधन केर मास्टर डिगी हासिल केलनि। आ अंततः एक सवियं सेवी संस्था मे छोट छीन नौकरी पकडि लेलनि। हुनक पेम मे मातल दीपशिखा एखनो हुनका सू विवाहि करबा लेल तैयार। मुदा अपन हावि भावि सू एवि अन्य शोत सू आशुतोष चंरकला के ई सूचना द देलथिन जे हुनकर विवाहि आब कुनो स्थिति मे संभव नहि छलनि। चंरकला आब की क सकैत छलि।

चंरकला संगे हुनका सू एक साल जूनियर लडकी सौम्या सेहो बस्तर केर मुडिया जनजाति पर शोध करैत छलि। ओहो निखिल नामक एक क्लासमेट सङे प्यार करैत छलि। प्यार की त कवि इन रलेशिनशिप मे छलि। दुभाग्य सू निखिल केर पिता के ई संबंध नहि ठीक लगलनि। निखिल अलाइड सर्विसि मे आबि गेला। बाद मे ई विवाहि नहि भेलैक। हावि क सौम्या एक इंजीनियर सूग अरेंज्ड विवाहि केली। ई अलग बात छैक की विवाहि केर पथम दिन सू हुनका अपन इंजीनियर पति सू एडजस्ट होब मे दिक्कत शुरु भ गेलनि।

एक बेर एक मास लेल चंरकला आ सौम्या अपन शोध केर पयोजन सू बस्तर गेल छलि। जखन बस्तर सू एली त सौम्या सू चंरकला

के पिता कहलथिन जे एक इंजीनियर टाटा कंसल्टेंसी मे काज करैत छैक। नीक परिवार छैक। लडका के पिता आई आई टी दिल्ली मे पोफेसर, जेठ भाई सेहो लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स मे छैक। छोट भाय अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान सू एम बी बी एस क रहल छैक। लडका सहज छैक आ देखबा सुतबा मे सुनर। अगर चंरकला के इच्छा होइक त एक बेर भेट क सकैत अछि। सौम्या चंरकला के ओहि लडका के देख के हेतु उकसबय लागलि। चंरकला एक बेर फेरो आशुतोष लग गेली। आशुतोष अहि बेर साफ-साफ कहि देलथिन , "देखू, एहि स्थिति मे आब हमर आ अहाक विवाह संभव नहि अछि।" चंरकला के आँखि सू धाराप्रवाहि नोर खसैत रहलनि। थोडेक काल मे वापिस होस्टल मे आबि गेली। सब बात सौम्या के कहलथिन। सौम्या फेरो हुनका अपन दृष्टांत दैत एक बेर अपन पिता दारे चयनित लडका सू भेट करबा लेल मना लेलनि। दोसर दिन एक होटल मे चंरकला अनन्त अग्रवाल सू भेट केलनि। अनन्त हुनका ठीक लगलथिन।

अनंतो के चंरकला बडड नीक लगलथिन। दुनू अपन-अपन अभिभावक के विवाह करक स्वीकृति द देलथिन। एहि स्वीकृति केर 15 दिनक भीतर आशुतोष केर विवाह गोडडा कॉलेज केर हिंदी केर पोफेसर केर बेटी सू भ गेलनि। एक मासक बाद ऋचाक विवाह आशुतोष केर छोट भाई पक्का सूग भ गेलनि। आब चंरकला के सब बात बुझ मे आबि गेलनि। किछु त नहि बजली मुदा करेज भीतरे भीतर जेना दू फाक भ गेलनि। नहियो चाहैत ऋचा आ आशुतोष के शाप दैत कहलथिन, "जाउ! हमर विश्वास, पेम आ समर्पण के अतेक खण्ड-खण्ड केलौ अछि अहा सब मिल क! कहियो नीक

नहि हैत।" हा, ई शाप ओ चुपचाप मुक्त अकास मे ठाढ भेल देने छला। ओ बजली आ सृवि केर क्रयंता सुनलक। नीक जका सुनलक।

विाहि के संीकृत दैत देरी पाच दिनक भीतर चंरकला के दिल्ली मे एक यूनिवर्सिटी मे लेक्चरर केर नौकरी लावा गेलक। हुनकर मंगेतर जे पुणे मे पोस्टेड छलथिन से एकाएक नोएडा मे आबि गेलथिन। ाियद भगबानो के लागल होिन जे एकरा सङे बहुत अन्याय भेलैक आब न्याय होबक चाही!

ऋचा केर भाई एक मलयाली लडकी सू पेम विाहि क सऊदी अरब चलि गेला । छोट बहिन सेहो पेम विाहि एक महाराष्टीयन इंजीनियर सू केलक।

विाहि के दोसरे साल चंरकला के एक बेटी भेलक आ ऋचा के बेटा। सौम्या के सेहो एक बेटा रहैक। तीन साल के बाद चंरकला के बेटा आ ऋचा के बेटी भेलैक। बेटी भेलाक एक षिके बाद ऋचा आ पकाि मे भयंकर लडाई ुिर भ गेलैक। स्थिति एहेन भ गेलैक जे दुनू आब संबंध ने विच्छेद क लेथि। मुदा पकाि केर मा आ ऋचा के सोचक कारणे फेरो दुनू मे समझौता भ गेलैक।

आाुतोष आब दिल्ली छोिड पटना चलि गेला। पटना मे गुमनाम जिनगी जिबय लगलि। दू बेटीक पिता। आमदनी सीमित। दुखक एकाकी जीनि। ाियद एहि बातक अनुभि करैत जे सब किछु चंरकला सूग धोखा के कारण भेल अछि आ पता नहि भविष्यि मे

की-की हैत?

चंरकला राघब के भैया कहैत छथिन। किछु दिन पहिने भेट भेलिन दुनू के एक सेमिनार मे। एक कात मे आबि राघब लग चंरकला बजली: "भैया, ऋचा आ आशुतोष केर व्यवहार हमरा तबाह केने छल। हमर रोम-रोम सिहरि गेल छल। हम अन्हार मे चलि गेल रही। तहिना ओहो सब खुशि कहियो निह रहत।"

विजय गुरगाम मे एक ऐड एजेसी मे काज करैत अिछ। ओकर किनया सेहो मैनेजमेट कंसलटेट छैक। विवाह के 20 वर्ष भ गेलैक मुदा संतान एखन धिर निह भेलैक अिछ।

सौम्या केर पित ओकर जीवन नरक बना देने छलैक। अंत मे बहुत मुश्किल सू तलाक भेटलैक। आब दोसर विवाह केलिन अिछ आ अपन पित आ बेटा संगे जीवन जीब रहल छिथ। यूनेस्को मे नौकरी सेहो लागि गेल छिन।

चंरकला एक सफल पती, पुतोहु, मा, विशिका केर भूमिका िनभा रहल छिथ। जीवन मे आनंद आ परमानंद छिन। मुदा पुरुष जाित पर विश्वास निह छिन। कोना रहतिन??? पुरुषक निह विश्वासे।

मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई केर दिना

राम जगतपुज्य छथि। राम के हिन्दू सब आराध्यदेव बुझि पूजा करैत छथि। मिथिला मे राम सर्वाधिक पूज्य छथि। पूज्य होबाक कारण रामक देवता भेनाई त अछिए ओ मिथिला केर दुलहा छथि ताहू लेल। कारण मिथिला मे जमाय के विष्णुक अवतार मानल जैत अछि। सर्विशिस्ट पाहून जमाय होइत छथि। हुनकर मान-दान, आतिथ्य, भोजनक सचार, रंग-रंगक विध-बेभार, गीत-नाद आ सब किछु अपूर्व। मुदा मिथिला के लोक के अदौ सं ई होइत रहलनि अछि जे सीता संग रामक व्यवहार उचित नहि रहलनि।

आइयो मैथिलानी बात-बात मे सीता के दुखक स्मरण करैत नोरायल आँखि सू आ बझल कंठ सू अनायास बाजि उठैत छथि:

राम वियाहने कुन फल भेल।

सीता जन्म अकारथ गेल।

एकर अर्थ ई नहि जे राम मर्यादापुरुषोतम नहि रहला। एकर अर्थ इहो नहि जे मिथिलाक लोक अथात मैथिल विधर्मी भ गेलाह। ई त हिन्दू धर्म आ संस्कार के सौभाग्य अछि जे जकरा लोक पूजन करैत अछि ओकर गलत निर्णय, अनुचित डेग, आचरण पर ओकरा उपराग सेहो दैत अछि। यैह गुण सनातन धर्म के एखन धरि साशत रखने अछि। ताहि एहि लेख मे जे भाव अछि ओकरा एक मैथिल, मैथिल सं अधिक मैथिलानी के अपन कुमारी केर दुलहा रामक प्रति विभिन्न ग्रन्थ आ लोककथा केर मादे कैल गेल स्नेहपूर्ण उपराग बुझल जा सकैत अछि। कुनो विदेष नहि, घृणा नहि, धर्मक प्रति असंवेदनशीलता नहि।

रामायण के प्रारंभ एखन धरि प्राप्त जानकारी के आधार पर महाकवि

िलीक सू होईत अछ। तकर बाद अनेक स्थानीय विदान, सन्त, भक्त, कवि एकर कुनो पसंग, अथवा सम्पूर्ण कथा पर िस्तीय आ स्थानीय मान्यता के आधार पर काव्यमय रचना करैत रहलथ। रचनाशीलता आइयो चलल रहल अछ। खंड अथवा संदभ विशेष मे अंतर कुनो बहुत पैघ बात नहि अछ। तुलसीदास त राम के अपन आराध्य देव मनैत राम के मयादापुरषोतम बनबैत रामचरितमानस केर निमाण करैत छथि। तुलसी के लेखनी अतेक पभावोत्पादक अछ जे समस्त उतर भारत, पूवि भारत, उतर-पूवि भारत, मध्य भारत धरि रामचरितमानस जन-जन के कण्ठहार बनि जाइत अछ।

मिथिला मे सेहो एखन धरि हमर जात जानकारी के हिसाबे 4 पकार केर रामायण मैथिली मे लिखल जा चुकल अछ। मूल कथा के ध्यान मे रखैत महाकाव्य रचनाकार किछु पसंग स्थानीय मान्यताक सूग जोडि दैत छथि। एकर अतिरिक्त लोककथा मे, गीत मे,लोक व्यवहार मे सीता आ रामक भाव-भाव के चचा अबैत अछ।

ई लेख रामायण के अतिरिक्त लोककथा, लोकमान्यता, गीत नाद आदि के आधार मात लिखल गेल अछ। लोककथा सेहो सावय सू कम नहि।

आब चलु हमरा सङे मिथिला आ रामकथा सूग रामक भाव के मैथिलानी आ सामान्य जनता के बीच मान्यता केर आधार पर, गंथ आ लोककथा के आधार पर , गीत नाद पर िध मोन सू सीताक पत रामक व्यवहार के समीका करी। सिनेह राम सू अछ त उपराग ककर? कवित रप सू रामक।

मिथिलाक सब गाम, घर मे सीता छथि आ घरे-घरे राम सेहो छथि। जेना राम संग विवाहक बादो सीता दाई के सुख नहि भेटलन तहिना आइओ सुख कहा छनि? दहेजक उत्पीडन, बेटा आ बेटी मे अंतर,

भ्रूणहत्या, ारीरक उत्पीडन, मानसिक दोहन इत्यादि अनंत समस्या स गसित छथि घर-घर केर सीता। आ की नहि? कि वचार कर ने?

हेता राम पतापी राजा, महाबलाली, समुर के सोखि लेबाक क्षमता बला, राणिक संहारक, आ की की! मुदा मिथिला मे आबि ओ दुा राम भ जाथि छैथ। मिथिला के लोक हुनकर पूजा नहि हुनका सू नेह लगबैत अछि। िधोख डहकन गाबि हुनका कखनो छगरा गोतक कहैत छथि त कखनो िका करैत छथि जे राजा दरथ गोर, कौल्या गोर फेर राम आ भरत कारी कोना? मैथिलानी राम के वाहि के बाद सासुर मे रहबाक बेर-बेर किदिन एहि लेल करैत छथिन जे सब भाई के आ वषि रप सू राम आ भरत के रगड़-रगड़ उबटन लगेती जाहि सू हिनक श्यामणिदेह कनि सुनर लागै! भोजनक िसंगार, सचारक की कहब - अपूि। भाव-भाव के सचार पेमक भाि सू कतेक गुना बढल। गान कला, नृत्यकला, ािदकला मे माहिर मैथिलानी सब गाबि क, ािदयन्त्र के बजा, िसनेहक पदर्नि सू,अपन कोइली सन अनमोल बोल सू दूा राम के सिागत आ हुनकर मनोरंजन करैत छथि। से राम अगर सीता के लंका सू अबैत देरी अिग्न परीक्षा, गभिक समय मे ककरो कहला सू सीता के पुनः असगर िटुर भेल जंगल भेज दैत छथि त मैथिलानी हािि त करबे ने करती???

बिकि कहि सकैत छी जे नारीक स्थिति एखनो सीते दाई जका अछि अपन मिथिला नगर मे। पूरा संसार त पुरष पधान अछिये मिथिलो राममय बनल ऐछ। बिना पाििती के महादेब नहि, बिना राधा के कृषण नहि, तहिना बिना सीता के राम नहि तथापि लोक नामो लेबय मे राम के अगुआ दैत अछि। लोक अथात जन सामान्य,

भक्त, विदान सभ कहयो राम लग जेना सीता के तमाम कैल-धैल त्याग, मेधा, गुण, अनुराग, रामक पक्ष समपणि आदि जेना कासवर जैत हो! तुसलीदास एक ठाम त ई लिखैत छथि:

बंदौ राम लखन बैदेही जे तुलसी के परम सनेही

तुलसीदास रामचरितमानस मे 1443 बेर राम के नामक चर्चा करैत छथि। एकर अतिरिक्त राम के आन िब्द जेना, राजीि, अधिकुमार, रघुनाथ,दिरथनंदन, रघुनन्दन, आदिक पयोग केने छथि। िहि तुलसी जखन सीताक चचा करैत छथि त मात 147 पर अटकि जाईत छथि। सीता दाई के आनो नाम जेना की जानकी, बडभागी के जोडि ली त सब मिलेलाक बाद होइत अछि 325 147 बेर सीता, 69 बेर जानकी, 58 बेर बडभागी आ 51 बेर बैदेही। अहू मे एक राजनीति ऐछ। सीता अपने गुने बडभागी नहि छैथ। ओ बडभागी अहि दारे छैथ जे हुनकर विाहि राम संगे भेल छैन। बाह रे पुरष भक्त के पुरष भगबान के पक्ष समपणि! समपणि नहि अंध समपणि! आब सीताक दुःख देखू: लंका मे राम रहला 111 दिन आ सीता रहली 435 दिन, अथात राम स चारिगुना अधिक। ओहो यातनामय जीनि। असगर जीनि। कमनि जीनि। डर, भय, आिि, हताि भरल जीनि। अरंकार साधीक जीनि।

देखू जखन राम अतिरित भेला त सगिसि देिता सब आबि हुनकर दिनि केलकि। माय कौविल्या ओहि विराट रप के देखि घबरा गेली। भगिन स पाथनि केली जे नेनाक सरिप मे आबथि:

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रपा।

कीजै सिसुलीला अति पियिीला यह सुख परम अनूपा।

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा।।

राम अपन माय केर कदिन के सीिकार केलकि। नेना भ गेला आ

कानय लगला। माता कौशिल्या निश्चल्य पेम मे भाभोर भ गेली आ अपना के सशिशिस्ट माय मानय लेलका।
आब सीता के देखू। ने कुनो देखावा ने कुनो ताम-झाम। जखन समस्त मिथिला मे अकाल भ गेल आ राजा जनक स्वयं हर जोतय गेला त धरतीक बेटी धरतीक गर्भसि स्वर्णकुम्भ मे एक बच्ची के रूप लेने पगट भेली। नहिये माय सुनयना के प्रसव दिन करय पडलन्हि आ ने जनक राजा के जे छोट भ जाऊ, नेनाक रूप मे आबि जाऊ, आदि-आदि। ऊपर अथात अकास आ स्वर्ग सि देवता, पक्ष, गायक-गायिका, वादियंत बजाबय बला, नर्तकि-नर्तकी, यक्ष, इंर सब आनंदित भ गेल। ऊपर स एक अपूर्व आ मनमोहक वादियंत संगे ओकरा बजबय बला कलाकार सब सेहो स्वर्गसि आयल। ओ वादियंत रहैक रसनचौकी। स्वर्गसि पुष्प वर्षा पारंभ भेल। के नहि पसन भेल? सबहक मोन मे उमंग आबि गेलैक। आब झर-झर वर्षा होमय लागल। किसान खेत दिस दौरल। आर की-की ने भेल। की तुलसी बाबा एहि पकरण के अतेक विस्तार स लिखला? नहि। किये क, त सीता बेटी छली ने! अगर राम नारायण के अवतार त सीता कुन कम? ओहो त शी अथवा लक्ष्मी के अवतारे ने छथि?
सीता के राम संगे विवाह भेलन्हि। लोक बुझलक जे आब सीता पटरानी भ गेलीह। राम आ सीता केर जोडी ककरा नहि मनभावन लगलैक। दाई माई कतेक- कतेक क गीत गेली , विविध व्यवहार केलक। जनक राजा अपन सर्वस्व निछाबर क देलाह। मुदा कहि नहि कियैक सीता दाई केर बचपना सब के राम पर करुण विचार छलन्हि। जखन राम धनुष भंग क देलथिन त उमंग स मातलि सिया दाई वरमाला हाथ मे लेने रामक दिस बढलन्हि। सिया सुन्दर के पेम मे मातल राम झट द अपन गरदन नीचा केलन्हि। सीता माला

रामक गरदक्त मे डालय लगली। हठात सीता के हाथ हुनकर बक्हनपा सब अपना क्दस खीच लेलक्त। राम अक्चेकायल रक्ह गेलाह! ई की भेल? एहेन विक्चत क्यहिार कथी लेल? सखी सब के की भेलक्त? पुछलक्थन ऐना क्कयैक? की गलती भेल हमरा स?

सखी सब कहलक्थन राम के : ‘‘हे यौ पाहून! अहाक पक्रिार बडड नीक नक्ह अक्छ। अहा सब मक्हला के भोगक क्स्तु मात बुझैत छी। क्मक्थलाक क्यहिार दोसर अक्छ। अतए मक्हला सहचरी छक्थ। अहाक क्पता केर तीन पती : कौक्ल्या, सुक्मता आ कैकेई छक्थन। जनक राजा के एकक्ह रानी सुनयना छक्थन। यौ पाहून! अहाक क्पतामह के सेहो अनेक पती छलक्थन। फेर अहाक की ठेकान? आई क्मक्थला नगक्रया मे धनुष भंग कै सीता के हाथ भेट गेल। काक्ि कतहु दोसर पराि म स कुनो आरो लडकी के हाथ अहा पती के र प मे ल लेब त हमर क्सया क्धया के की होयत? हमर क्मक्थला मे एकै पती के क्यम चलै छै’’।

राम क्चंता मे आक्ब गेलाह। कहलक्थन: ‘‘अहा सब बात त ठीके कहैत छी। मुदा हम सीता के कुनो क्तिपिर अपन अधावानी बनेबा लेल तैयार छी।’’

सीताक सखी सब आब थोरे आरो भारखमी होइत बजली: ‘‘तखन सुनु। अहा सप्पथ खाऊ जे कुनो हालत मे सीता के सौक्तन नक्ह आनब।’’

राम बजलाह : "हमही नक्ह हम चार भाई आई समस्त लोकक समक सपथ खैएत छी जे हम सब एक पती धमकिे पालन करब।"

फेर की छल पूरा धूम धाम स सीता चार बक्हन केर विािह राम केर चार भाई संग ओही मंडप मे भ गेलक्त।

विािहक बाद सीता सासुर गेलीह। राम संगे बने बने घुमली। राणि

हरण कै लंका ल गेलक्ह। अिकिक गाछ लग समय कटली। राम राम कहैत रहली। सुकुमारी क्सया के जंगल आ गाछ पात मे सेहो पक्तक संग जीनि नीक लगलक्ह। कक्हओ कुनो विकायत नक्ह। निािस त राम के भेल छलक्ह मुदा सीता पती धमिके पालन केक्ल आ रामक संगे गेली।

मुदा सीता के िषण निािस के रस्ते ि‍र भ गेलक्ह। क्मथ्थला के लोक मे विि‍ष र प सू मैक्थलीलानी सबहक बीच एक दंतकथा क्याप्त छैक। ई दंतकथा पुर ख समाज दारा स्तीगण के कोना संस्थागत संरचना के आक्ड मे िषण कैल जाइत रहलैक अक्छ तकर बहुत सटीक क्यख्या करैत छैक। बात ई भेल रहैक जे जखन राम निािस लेल सीता आ लक्ष्मण सङे अयोध्या सू विदा भ गेला त पुतिक मे महाराज दिरथ अधीर भ गेलक्ह। खेनाइ क्पनाई सब य्यावा देलक्ह। लोक कतेक बुझेबाक पयत केलकक्ह मुदा हुनकर हृदय पक्तपल क्षीण भेल गेलक्ह। दुःख बढल गेलक्ह। अंततः राम-राम कहैत राजा दिरथ अपन पाण य्यावा देलक्ह।

राम के जखन ई जानकारी भेटलक्ह त ओ बड दुखी भेला। फेर सब गोटे क्बचारलक्ह जे गया पहुच फल्गु नदी के कात मे क्पतृ तपिण करैत अपन क्पता दिरथ सक्हत अन्य क्पत सबके क्पण्डदान करता। कहल जाइत छैक जे ओक्ह समय मे पक्त सङ पती के सेहो ओतय जएबाक अनुमक्त रहैक। तावं राम आ लक्ष्मण सङ सीता सेहो गया पहूचली। स्नान ध्यान केलाक बाद राम क्कछु लेबाक हेतु बाहर गेलक्ह। सीता रामक बक्हन सङ असगरे रक्ह गेली। अक्ह बीच एकाएक राजा दिरथ केर आत्मा आक्ब गेलक्ह। आक्ब सीता के कहलक्थन: "हम भूखल प्यासल छी। हमरा जल दीय, क्पण्ड दीय।" सीता लजाईत बजली: "ई कोना उक्चत? राम आक्ब रहल छक्थ।

अपने कक्ष इंतजार कर। ओ स्यिं अपना हाथे पिण्डदान करता। जल देता। आब्बाये रहल छव्थ।"

मुदा दशरथ केर आत्मा रुकबा लेल तैय्यार नव्ह। झट दक कहलव्थन: "पुती सीता! अहा राम केर अधावानी छी। हमरा लेल जेहने राम तेहने अहा। हमर भूख आ प्यास पबल भेल जा रहल अव्छ। ताव्हं अहा ब्बना कुनो बिलंब केने आ रामक पथ हेरने हमरा पिंडदान अव्पत्ति कर। एकर शुभ फल राम आ अहा दुनू के सामान्य भाग मे भेटत।"

अव्ह तरहक क्नदेश पाब्ब सीता हृदय सू पफुव्ल्लत होईत झट दक विव्धिति कमकाण्ड के तैयारी केलक्व। पिण्ड बनेली। आ अपन ननव्द, फल्गु धार आ कामधेनु गाय के साक्षी माक्न अपन ससुर अथात महाराजा दशरथ के आत्मा के पिण्ड अव्पत्ति केलक्व। राजा दशरथ केर आत्मा सीताक पिण्ड सू संतुष्ट आ तृप्त होइत पिण्ड स्वीकार केलक्व आ कव्छु क्षण मे ओतय सू स्वगिलोक लेल ब्बना राम आ लक्ष्मण के बाट तकने विदा भ गेला।

कव्छु काल बाद राम शिपस आब्ब गेला। पितर के दशि के अनेक पयत केलक्व मुदा बेकार। दशरथ आकाश मागशि सू कहलव्थन: "पुत हमरा अहाक पती पिण्डदान केली। आब अपनके कुनो पयोजन नव्ह।"

एकर बाद राम व्चंव्तत भ गेला। बहुत स्मरण केलक्व मुदा दशरथ नव्ह एलव्थन। सीता के पुछलव्थन राम: "मैव्थली! अहा पिण्डदान केलौ तकर की पमाण आ की साक्षी?"

सीता उतर देलव्थन: "हमर साक्षी अहाक बव्हन, कामधेनु गाय आ फल्गु नदी छव्थ।"

आब राम फल्गु नदी, गाय आ सीता के ननव्द सू पुछलव्थन। मुदा

ओ तीनू साक्ष्य देमए मे असमर्थता व्यक्त केलथिन। वक्षिुब्ध सीता शाप दैत बजली: "है हमर ननदि, अहा हमरा झूठी बना रहल छी। अहा छुछुनर बनब आ अहा हमेशा छुछुआक रहब। अहनि अहाक पाण जैत। है गाय! अहाक पवतिता त यथावत रहत मुदा अहा झूठ बजलो अछ ताहि अहाक मुह अपवति रहत आ वषिा धरि अहि मुह सू अहा गहण करब। आ हे फल्गु नदी, अहू झूठ बजलो। जाउ, अहाक धार मे कखनो पानि बाहर रहबे नहि करत। ई हमर दग्धल मन के कलश्छल शाप अछ।"

अहि सू पता चलैत अछ जे सीता सूग अन्याय ि र सू भ चुकल छलखि। अवति हुनका अकारने भोग' परतनि!

जखन ि देही के राणि छल सू हरण क ल जाइत अछ त जे राम समस्त चराचर के नयिंता छथि, नयिंतक छथि तथापि सीता के हरण के बाद जलचर,थलचर, कुंज लता, पक्षी सब कछि सू बताह जका सीताक वयिोग सू रवति पुछैत छथि: "अहा सब मे कियोक हमर मृगनयनी सीता के देखलौ अछ:

जलचर, थलचर मधुकर शेणी। तुम देखी सीता मृगनयनी?"

आ व्यथक वक्चित आ वभिव्यक्त त तखन भ जाइत छैक जखन राणिक संहार केलाक बाद जखन राम सीता के लंका सू मुक्त करैत छथि त राम के सीता जे चरति पर ि का होईत छनि। इहो भ सकैत अछ जे जनमानस मे पती के अपन पक्ष के पक्ष समर्पति भा के उजागड अथा स्थापति करबा लेल राम सीता दाई के अपन पवतिता पमाणति करबा लेल कहैत छथि अन्यथा स्ीकार करबा सू मना क दैत छथि। सीतो कुनो कम थोडे ने छलि? साक्षात लक्ष्मी के अ तार। अपन पवति होमाक पमाण देबा हेतु सोझे अग्निकुण्ड मे कूदि गेली। सीताक सत्कार्य देखि अग्निदेि ता दंग रहि जाइत छथि।

सीता के कुिक क्लेि तक नक्ह होइत छक्त। क्वना एकौ रती जरल के क्ानी के सीता अक्वनकुण्ड सू िपस आक्व जाइत छक्थ। आर त आर स्िगलोक सू देि़ता लोकक्न सेहो सीताक क्शछल, आ पक्व़ि होबक पमाण दैत छक्थ तखन जाक राम पुनः सीता के स्ीकार करैत छक्थ।

क्कछु लोक अक्ह मे ई तकि(कुतकि?) दैत कहैत छक्थ जे समाज मे उक्चत व्यिस्था आ आदिि उपक्स्थत करबा लेल राम एहेन कार्य केलक्न। मुदा मैक्थलानी के ई सोचब छक्न जे राम सीता सडे अन्याय केला आ समस्त स्ती समाज पर बंधन थोपबाक एक अनगलि परम्परा के पारंभ केलक्न। की यैह छलक्न रामक रघुकुल रीक्त? ओह!! कहब दुख ककरा सू!

अक्वनपरीक्ा के संबंध मे क्कछु लोक कहबा लेल एहनो बात कहैत छक्थ जे जाक्ह सीता के राि़ण हरण केलक से सीता त सही अथि मे सीता छेबे कहा छक्ल। ओ त सीता के छाह छलक्न। असली सीता त अक्वन मे समाक्हत भ गेल रहक्थ आ क्वि़िन्न सू अक्वन मे चुपचाप बैसल। ताक्हं छाहक सीता के अक्वनकुण्ड मे जाइते देरी असली सीता अक्वन सू बाहर क्नकलली क्जनका राम सहज र प सू अधागनी के र प मे स्ीकार करैत छक्थ।

मुदा एक हाड-मास केर सामान्य मनुख होबाक नाते एकटा बात नक्ह पचा पबैत छी जे रामक ई दुरंगी चक्रत कोना देखी। जे राम ऋक्ष गौतम के पती अक्हल्या के उधार स्पि िमात सू करैत छक्थ िहि राम अपन पती सीता लेल अतेक क्नरंकुि?

जे राम बाक्ल के एक्ह दारे बध करैत छक्थ जे ओ अपन छोट भाई सुगीि केर पती के बलपूि़िक अपना लग रखने अक्छ। जखन बाक्ल राम सू पुछैत छक्न:

"मे बैरी सुग्रीव पियारा।
कारण कवन नाथ मोहि मारा।।"
त राम उतर दैत कहैत छथिन:
"अनुजवधु भगिनी सुतनारी।
सुन सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई।
ताहि बधे कछु दोष न होई।।"
बालि के मृत्यु के बाद राम अपन सखा सुग्रीव के फेर सू अपन पत्नी के स्वीकार करबा लेल प्रेरित करैत छथि जकरा सुग्रीवक जेठ भाय बालि बहुत दिन धरि अपन कब्जा मे रखने छल। आ सैह राम सीताक मामला मे एहेन कठोर, हृदयहीन कोना???
जखन सीता एलीह आ गर्भवति छली ताहि काल एक धोबी के उपराग स परेशान भए राम सीता के घनघोर जंगल मे असगर भेज देलथिन। कहु त कतेक कठोर छलाह राम! धर्मशास्त्र कहैत अछि जे स्त्रीगन कतेक खाराप हो मुदा जखन ओ गर्भवति हो त ओकरा सब सुख देबाक चाही आ घर स एकौ क्षण लेल बाहर नहि जाए देमक चाही। बाह रे मर्यादा पुरुषोत्तम राम! कत गेल मर्यादा अहाक?
अगर अहा प्रजा प्रिय छलौ त एक पत्नि सेहो रही ने? अहा के त बुझल छल जे सीता निष्कपट आ गंगा जका पवित्र छथि। अगर अहा अयोध्या मे एक प्रथा प्रारंभ करै चाहैत रही त फेरो राज चलेबक जिम्मेदारी भरत के द पत्नि धर्मकेर पालन करैत सीता संगे निर्वासित चलि जैतहु जेना सीता अहा संगे अपने मोने पत्नी धर्मके पालन करैत गेल छलीह? मुदा से कोना! पुरुष रही ने अहा। पुरुष दम्भ के के रोकत! कही एहेन त नहि जे पुरुष दंभ सेहो मर्यादा

पुरषोतम के लक्षण हो आ अपना के ओकर दंभ मे खपा देनाई या दंभ के नीचा जीनाई नारीधर्म?"

खैर, लक्ष्मण जी सीता के जंगल मे असगरे छोड़ देलखिन। लाचार आ विवश सीता! हे देव! जाथि त कत आ ककरा लग? के शरण देतनि? आ तखन बाबा बाल्मीकि सीता के अपन आशम मे स्थान देलखिन। एक दिन रास्ता मे पसव पीड़ा उठलनि। गामक लोक सब मदति केलकनि। इच्छा भेलनि जे अयोध्या मे जानकारी भेजी। मुदा भेलनि जे राम नहि बुझथि त नीक। हजमा के कहलखिन "तो भरत, के सतुघन के, लक्ष्मण के, तीनो माता के चुप चाप बता दिहक मुदा राम नहि बुझथि।"

जखन राम अशमेध यज करै लगलाह त पंडित कहलखिन जे बिना पती के राम यज नहि क सकैत छथि। राम के अपन प्रिय स्मरण भेलनि। कहलखिन हम दोसर बियाह नहि करब। तखन इ निर्णय भेलैक जे सोनाक सीता बना राम यज लेल बैसता। सैह भेल।

मुदा बीचे मे घोडा के त लव आ कुश बान्हि देलखिन। सब हारि गेलाह। हनुमान बंदी भ गेलाह। अंत मे राम एलाह त बाद मे सीता सेहो एलीह। सीता रामे के दुनू सन्तान के जंगल मे बहुत नीक जका सब विद्या संस्कार मे पारंगत करा राम के औकात देखा देलनि। राम एक संग अपन दुनु पुत आ सीता सनहक पती पाबि धन्य भ गेलाह। कहलखिन सीता के जे आब अयोध्या चलू। सीता मना क देलखिन। राम बहुत बुझेबाक पयास केलथि। मुदा सीता त अप्पन जिद पर कैम रहली। अंत मे राम कहलखिन : "अहा नहि जाएब त हमर अशमेध यज नहि हेत।"

सीता: "से कोना?"

राम: "पती के अछैते असगर पति अशमेध यज नहि क सकैत

अछि।"

सीता: "तखन अहा कोना करैत रही?"

राम: "हम सब मानि लेने रही जे अहा आब अहि दुनिया मे नहि छी।"

सीता घोर दिना स रवित भ गेलीह आ कहलथिन : "हे राम! अहा मात अपन पौरष आ नामक रक्षा हेतु हमरा अयोध्या ल जाए चाहैत छी? अहि लेल जे अहाक यज भ जाए? हमही बाधा छी अहाक यजक ?"

ई कहैत सीता धरती माता के दुनु हाथ जोड़ि करण सरि मे विनिती केलीह: "हे माता ! अही हमर माए छी। अहिक कोखि स हम एहि धरा मे उत्पन्न भेल छी। आब हमर आत्मा कानि रहल अछि। अहा फाटू आ हमरा अपना भीतर मे स्थान द दीय!

धरती सीता के गुहार सुनि लेलथिन आ एकाएक धरती मे सीता दाई के आगा दू टा दरका भ गेले। जाबेत राम रोकथिन ताबेत सीता ओहि धरती मे विलुप्त भ गेलीह।

धरती फटली आ धरतीपुती सीता धरती मे समा गेलनि। ताहि जखन मैथिलानी सबके कोनो कि होईत छनि त अपना के सीता बुझैत अनायास बाजि उठैत छथि: "फाटू हे धरती"।

ओना आब मिथिला के पुरष सेहो सीता के सम्मान कहा करैत छथि? सीता सब दहेजक जिला मे जरैत छथि। अपमानित होईत छथि। बेटी के बेटाक तुलना मे कम ध्यान देल जैएत अछि। दिना अनंत अछि....."

सनातन धमपिूजिन्म के सिधान्त के मनैत अछि। मिथिला के लोक व्यहिार मे धोबी के कहला सू राम दारे सीता के पुनः नि भेजबाक एक लोककथा अछि जे कमकिे सिधान्त पर टिकल अछि। कनि

देखी एकरा:

बसंत ऋतुक समय छल। शीतल, मंद पवन बहैत छल। सीता दाई अपन सखी बहिनपा संग फुलवारी मे भ्रमण कऽ रहल छली। सीता के इच्छा झुला झूलबाक भेलन्हि। एक सखी सऽ अपन इच्छा व्यक्त केलन्हि। तुरत सखी बहिनपा सब सीता दाई के झुला झुलाबए लगलथिन। बडड मनमोहक दृश्य भ गेलैक। सीता हिलोरा लैत आ सखी सब हिलबैत। जतेक प्रशंसा करी से कम।

झुला लागल प्रेमक डाली।।

झुलथि सीता प्यारी ना।।

सब सखी गबथि सिनेह देखाबथि।

विहुसथि जनकदुलारी ना।।

सोहनगर-रसगर गीत गबैत सखी संग सीता आनंदक सागर मे गोता लगा रहल छली। गीतक स्वर हुनकर कान मे मधुर झनकार भरैत छल। अहि बीच सीताक दृष्टि एक सुन्दर सुग्गाक़ जोडी पर पडलन्हि। इ सुग्गाक़ जोडी पत्नि-पतीक जोडी छल। हरियर कचोर पाँखि, लाल-लाल ठोर। सुग्गाक भाषाक संग-संग मानुखक भाषा बाजऽ मे प्रवीण छल दुनू सुग्गा। सुग्गाक़ पती वहि गीत गाबि रहल छल जे गीत सीतादाई अपन सखी बहिनपा संग झुला झुलैत गाबि रहल छली।

सुग्गा के जोडी पर सीता दाई के हृदक गबि गेलन्हि। मोन भेलन्हि जे अहि सुग्गा के राजमहल मे आनि पिंजरा मे राख़ब आ प्रतिदिन एकरा मधुर बोल सुनि उठब त कतेक़ नीक रहत!

राजमहल मे अबितहि सीता दाई अपन सेविका के बजेलन्हि आ आजा दैत कहलथिन: "देखू, फुलवारी मे सुग्गाक़ एक जोडी विचरि रहल अछि। बडड सुंदर जोडी छैक। चीरै चुनचुन के संग-संग इ जोडी

मनुखक आिज मे मधुर गीत सेहो गबैत अछ। अहा एखन फुलिरी जाऊ आ ओिह जोडी मे स एक सुगा हमरा लेल पकड़ क लाउ"। सेिक सीता दाई केर आजा के पालन क़रैत झट दक फुलिरी िदस िवदा भेल। थोरेक कालक़ बाद ओिह सुगाक़ जोडी मे स एकटा सुगा पकड़ कऽ लऽ अनलक। आब ओिह सुगा के एक सोनाक िपंजरा मे बन्द कऽ सीता दाई लग लैल। सुगा के अपना सामने सोनाक िपंजरा मे देख सीता दाई आनन्दिवभोर भऽ गेली।

गलती स ओ सुगा मिहला सुगा छल आ गभिस रहै। ओकर पित सीता दाई के सेिक सू िवनदिन केलक जे ई मिहला सुगा ओक़र पती छैक आ गभिस छैक तािह ओक़रा पर करणा देखबैत सतंत क देल जाय। पुरष सुगा बाजल : "बर हमर पती के बदला मे अहा हमरा ल चलु िपंजरा मे बन्द कऽ सीता लग"। मुदा सीताक़ सेिक ओक़र अनुनय-िवनिय के निह स्वीकार केलक आ मिहला सुगा के राजमहल लऽ अनलक।

अपन पती के पेम मे मातल पुरष सुगा हािर निह मानलक। पाछा-पाछा ओहो राजमहल मे आिब गेल। ओक़रा आि रहैक जे सीता चूकि स्वयं करणाील कन्या छिथ, ओ िनिवत रप स ओकर पतीक अिस्था पर रिवत भ िपंजरा स मुक्त कऽ देिथन!

बेचारा सुगा सीता दाई लग भरल नोर व्यिथत मोन पहुचल। नोर थमक नामे निह लैक। आतिभाि स बाजल: "हे करणामयी राजकुमारी सीता, इ सुगा जे आहाक सेिक पकड़ अनलक अछ इ हमर पती िथक आ गभिसऽ अछ। एकर पेट मे हमर सन्तान पिल रहल अछ। हम अहा लग ई िवनदिन करबाक हेतु आयल छी जे अहा एक़रा पर करणा देखबैत िपंजरा स मुक्त क िदयौक़। अगर अहा के सुगा रख़बाक इच्छा अछ त हमरा राख िलय!"

कहि नहि कएक सीता दाई के सुगाक अनुनय दिस धेआन नहि गेलनि। ओ अपना मे मस्त रहली। जखन सब दिस सँ सुगा थाकि गेल आ राजमहल मे कियोक ओकर दिना सुनबा लेल तैयार नहि भेलैक त लाचार सुगा ददिआ िध स खन भ गेल। तामसे घोर होईत सुगा सीता दाई के सम्बोधित क़रैत बाजल: “हे जानकी! हम बडड आि लऽ कऽ अहा लग आयल रही जे न्याय भेटत। न्याय त दूर अहा हमर दिना सुनबाक लेल तैयार नहि छी। आहाक जखन अपन विाहि हैत तख़ने अहा अहि दिना के बुझि सकैत छी। आब हद भ गेल! हम व्यथित मोन िपस जा रहल छी मुदा जैत-जैत अहा के शाप देने जा रहल छी। हम पति-पती अवाला जन्म धोबि-धोबिन बनि जन्म लेब आ हमरा सभक कारण सऽ आहाक पति अहाके गभास्थिा मे घर स निकालि देता”।

आब सीता के होि जगलनि। मुदा आि किछु नहि भ सकैत छल। सीता सुगा के शाप के सिरोधायि किऽ लेलनि। दन्तकथा के अनुसार ओही सुगा के शाप के कारण जखन सीता गभसिं छली त राम सनहक पति एक धोबि-धोबिन के कहला पर हुनका घर स निकालि देलथिन।

किछु लोक के मानब छनि जे रामक सीताक पति एहेन निष्ुर व्यिहार सीता के व्यक्तित्यि के सबल बनबैत छनि। मुदा ई केहेन व्यिहार। ककरो सबल बनेबाक हेतु, उदाहरण पस्तुत करबा हेतु अहा डेगे-डेगे पताडित करबैक? नहि-नहि, ई नहि उचित विचार।

एक मैथिलानी हमरा कहली, "देखू, सीता एक पतापी राजा के बेटी आ दोसर पतापी राजा के पती। हुनकर जखन ई हाल भेल त सामान्य महिला के की बात?" सीता मिथिला अपन नैहर आ पिता राजा जनक लग कियैक नहि एली? फेर स्मरण अबैत अछि : "बेटी

सासुरे नीक की सगे नीक"। तावहुं सीता सिंगिक्कि रास्ता धेलक्न।
मोन मे एक बात होईत अछि, उमरैत रहैत अछि - अगर राम मयादापुरुषोतम छथि त फेर ओकर मयादा के धोती के तार-तार कथी लेल करैत छथि?

विदेही के दुःख सू रवित होइत मिथिला के अनेक पुरुख आइयो कखन उखथर भ जाइत छथि, अधीर भ जाइत छथि, जेना विरोहक सिरि रामक पक्ष पचण्ड भ जाइत होक्न! धीरेन्द्र पेमर्षि अतेक तामसे भेर भ जाइत छथि की हुनकर लेखनी बुझू जे कृण मात लेल सब मयादा के अतिक्रमण करैत अपन भडास निकलैत बाक्ज उठैत अछि:
"दण्ड-भेदे कर कि अपनाउ साम-दाम
हमर सीते जू बोन, अहा सुथनीक राम?"

जो रे मयादा आ पुरुख दारा स्त्रीगन के अदृश्य बेडी संजकडल पैर! बेचारीमैथिलानी से कोना कहती? ई सब त सीता के दारा स्थापित मापदंड के एखनो ओही मयादा के सूग अकर-अकर अनुसरण करैत छथि, कािहिन करैत छथि। पाहुन राम सू उपराग त ठीक मुदा हुनका लेल अशिष्ट कथा - हे भगवान! कथमपि नहि। ऊपर सू "हम नहि वजयब बिनु राम" गाबि-गाबि पाहुन के दिन-राति स्मरण करैत रहैत छथि।

अतेक भेला बादो राम के मिथिला के लोक अपन सब सू सुनर पाहुन मनैत छथि। राम के पक्ष जेहना भक्तिभाव तहिना पेमभाव। एक भाव जे मैथिलानी लोकगीतक मादे गबैत छथि से जरूर मोन के रवित क दैत अछि आ सब मैथिलानी मे सीता आ सब मे सीताक व्यथा बुझना जाइत अछि:
"हे भगवान! कुन कसूर विधिना भेल बाम कहब दुख ककरा सू?"

लोक िद आ व्यिहारक पावक्त मधुशाणिी मानिािसत्तीय िविचन

एक बेर पोफेसर ज्योत्तंर जैन एकाएक हमरा पुछलक्त, "क्तमथला मे कुन चीज क्थक जे लोक आ िास्त्त, सब कला के एक सङे जोडने अक्छ?"
हमरा भेल की उतर देल जाय? संयोग सू क्कछुए क्दन पक्हने मधुशािनी कथा मा सू सुक्त रेकॉडि केने रही आ बाद मे ओकरा क्तलखने रही। भेल ई एक उतर भ सकैत छैक। हम झट दक्त कहक्तलयन्ह , "मधुशाणिी पाक्ति"।
हमर उतर सुक्त पोफेसर जैन बहुत पसन भेला। कहलक्थ, "क्तबलकुल सय्य कहैत छी। यैह सही उतर अक्छ। अहाक क्तमथला मे ई गजब के पाक्ति अक्छ जे अनेक तरहक जान, िक्त, कला, के क्तसखबाक फ्लेटफामिनि क्याहल लडकी लेल तैयार करैत अक्छ। ई एक एहेन पाक्ति अक्छ जे लोक आ िास्त्त के जोडैत अक्छ। अहाक जािब सू हम संतुि छी।"
बात पर हम अतेक गौर नक्ह केलौ। कतेक क्दन सू मधुशाणिी पर क्कछु क्तलखबाक इच्छा अक्छ मुदा आलस आ क्कछु आन कारणे नक्ह क्तलख पाक्ब रहल छी। सविता झा खान केर एक पश ओहो अक्त लघु पश अनेक क्दि के दरबज्जा खोक्तल देने अक्छ। जबाब एक ठाम सू भेटब असंभि। खेपे खेपे अनेक ठाम सू आनय पडत। सैह क रहल छी। अक्ह बात पर सविता जी कहलक्त, "आब थोडेक मधुशाणिी पर क्तलखू"। हुनका नक्ह कहबाक क्हम्मत नक्ह भेल। मा के कहल मधुशाणिी कथा के फेर पढनाई िुर केलौ। ओक्ह मे पोफेसर ज्योत्तंर जैन केर क्तजजासा (अथाि खोज) आ सविता झा खान के क्तजजासा केर तथ्य ताकय लगलौ। पक्हल बेर मे लागल

किछु छैक जरूर। फेर भेल, "कतेक छैक?"
कतेक छैक आ कत-कत छैक ताहि बातक रहस्य तकबा लेल ओहि कथा के अनेक बेर पढलौ। एक मैथिल समाजक सदस्य के नाते पढलौ। एक मानि विजान केर छात के रूप मे पढलौ। सब सू पैघ बात ई जे एक जिजासु के रूप मे पढलौ। हमरा जे भेटल सू हमरा जनैत अपूर्व बात छैक। अपन जान आ समझ के हिसाब सू ओकर संक्षिप्त व्याख्या क' रहल छी।
मधुशाणि अपन मिथिला मे विहिक पित 13-15 दिन धरि के पाबनि छैक। जाहि मे नाना तरहक फूल, पात, फड लोढनाई, पूजा केनाई, गीत गेनाई,विधि बेबहार के संपादन, नियम निषा के पालन, आ पति दिन कथा केर एक अथ अनेक पसंग के समूह मे बैस सुननाइ मिल छैक। बरखा ऋतु मे भेलाक कारने एकर नाम मधुशाणि बहुत साथकि लगैत छैक। अगर विस्तृत फलक पर उदार भाि सं देखबैक त कहि सकैत छी जे मधुशाणि अपन मिथिला मे मिथिला बला स्टाइल के हनीमून छैक। बरसातक मधुमास आ ताहि के मधुरािति के जे आनंद मिथिला मे छैक से कहा पेमानन्द, परमानन्द!
मधुशाणि िस्तुतः एक सम्पूणि पाबनि छैक जाहि मे लोक आ िस्त, पुरुष आ पकृति, मनुख के पकृति केर अियि जेना पानि, नदी, पोखरि, गाछ, झाड-पात, लती-फती, फूल-फल; जीि-जंतु, साप, कीडा; धरती-अकास, समतल आ पहाड आदि के बीच कोना साम्य बनबैत सबहक संगे कोना जीबी, कोना रही तकर विक्षा, बल्कि व्यिहािरक विक्षा देल जैत छैक। कोना स्थानीयता के सम्मान करैत समगता के भाि के स्वीकार करी, से विक्षा देल जैत छैक। विक्षा क्लास रूम सं अधिक ओपेन थिएटर जका पकृि मे देल जैत

छैक। जतय एक माजल कथा िवाचका अपन कथा के जान सं आ अहु सं अिधक कथा कहबाक ैली सं न िव्यक्‍हता के एक-एक कथा के खोइंछा छोडा-छोडा सुनबैत रहैत छिथ। जखनओ कथा िवाचका कथा कहैत छिथन त ओ हरेक पात के अपना मे समािहत क लैत छिथन। कथा केर पात जका हंसनाइ, गेनाई, नहु-नहु बजनाई, जोर सं िचचयेनाइ, नाना तरहक जीि जंतु केर आिज िनकालनाइ, कहबाक ैली मे उपर नीचा के भाि व्यक्‍त केनाई, सब िकछु सितम। अिभनय केर पराकाषा। ई एक एहेन स्टेज होइत छैक जािह मे स्‍त्री, पुरख, देिता, दानि, जीि-जंतु, सबहक भूिमका मात एक कलाकार के करय पडैत छैक ि ह एक्टर, ि ह डायरेक्टर। बीच मे कुनो बेक नािह। कतौ सं कुनो सहयोग नािह। मुदा बाह रे परंपरा िमिथला भूिम के आ बाह रे मैिथलानी! हरेक कथा िवाचका अपन दाियत्ि केर पालन बेजोड दंगे उत्कृषता सं करैत छिथ। अतेक पभािी ढंग सं जे, जे पूजैत छिथ से त कथा सुनबाक हेतु बैसते छिथ हुनका संगे आनो स्‍त्रीगन सब सुनैत रहैत छिथ। जेहने कलाकार तेहने दि िक दुनू के बीच परफेक्ट हारमनी। आ किनया के की कहब ओ चुपचाप एक गंभीर िषिया जका कथा िवाचका के हरेक ि ब्द के जानरपी अमृत के एक एक बूंद मािन पीबैत रहैत छिथ।

एिह मे भूिम-िचतण अथात अिरपन केर जान भेनाई सेहो आिश्यक छैक। मधुशािणी केर अिरपन मे िगाकार बॉडरि के भीतर सुरज, चान, कलि, पुरहर,पाितल, साठी (षिि का), मैना पात, नागक लटपटाएल जोडी, निगह, नौमािसका आ कमल फुल के िबम्ब के रप मे गौरी, कुसुमािती, िबंगला, लीली आ चनाई आिदक समािि बहुत व्यििस्थत ढंग सं कैल जैत छैक। एक गोट नि डाबा पर

माक्ट आ गोबर सं पाच टा साप बना साक्ट देल जैत छैक। पाचो सापक थुथुन मे दुक्म खोईस देल जैत छैक। अक्रपन काढब अथि पारब मे सब काम्मा के स्थान, क्दि, कोण, सरिप आक्दक जान आ िली मे क्षणात भेनाई अक्तायिहोइत छैक। चूकक ई पाबक्त अक्हबात, ि बृक्ष एि रि आ कक्तया के िभ सू जुडल छैक ताक्ह परफेकि न मे कक्तकबो कोताही के गुंजाइि नक्ह रहैत छैक।

पूजा मे क्यहिक्रत सामगी सं पता चलैत छैक जे बाक्लका के अहू बातक पकिण देल जैत छक्त जे ओ सब बस्तु के जाक्त लेक्थ। पतीकात्मक गौरी बनेबाक हेतु हरक्द, कुसुमक फूल, क्संदुर, पान आ मेथी के पीक्सक’ एक गोल आकृक्त केर पक्तमा बना नि ढोरल सरबा मे ठाढ क देल जैत छैक। एकरा अलाि मैना पात,नेि, नीम, दूध, केरा पात, फूल, काजर, अरबा चाउर, चुडा, चुडलाई, चीनी, लाबा, आम, कटहर, केरा, अंकुरी, दही, सुपारी, बडकी-छोटकी इलायची, जाफर,लौग, बडका छोटका हडरी, बहेडा, नीमक पात, अमतौआ अनार, पखुआ, कुि, धाक्मक पात आक्द के पयोग होइत छैक। अक्ह मे अक्धकाि बस्तु के एक नि िस्त मे राक्ख एक पोटरी बना देल जैत छैक जकरा क्बनी कहल जैत छैक। एक्ह क्बनी के गौरी आ क्षहक्र के सरिप माक्त भोर साझ पूजा अक्तायिरहैत छैक।

मधुशािणी पूजा आ कथा नागपंचमी क्दन सं पारंभ भ जैत छैक। पक्तक्दन पूजा भेल आ स्तीगन सब पूजा सं पक्हने आ पूजाक बाद गीत गेलक्थ। पूजा मे संस्कृत आ मैक्थली केर अि ि क्तशण बला ि क्द आ मन्त भेटैत छैक यदक्प पक्ण्डत जी के कुनो भूक्मका एक्ह मे नक्ह रहैत छक्त। एक अनुभिी मक्हला अन्य मक्हला केर सहयोग सं एक्ह कायिके संपादन मे कक्तया के क्नदेकि त करैत छक्थन। सब चीज सटीक होइक तकर कििष ध्यान रहैत छैक। गौरी पूजन केर

एक मन्त्र देखू त संस्कृत आ लोक बिद्यालि के सुखद जोग पर आनंदित हैब:

“ऐ गौरी! महामाये, चानन डार तोडैत एलहुं, सोहाग-भाग बटैत एलहुं, फूलक माला अहा कलअ, सोहाग-भाग हमरा दअ, सामी-पुत सहित गौये नमः।”

फेर पूजा करक विधान आ ककर बाद ककर पूजा करी तकर विस्तृत व्याख्या आ रूपरेखा कधारित रहैत छैक। एहि मे गौरी केर पूजा के बाद कलि केर पूजा, विषहर केर पूजा, तकर बाद लगातार रिक्सक, चनाइ नाग, कुसुमाती, बांगला, लीली नाग, तिभवानी सहित गुसाउक नाग, सात आदिक पूजा होइत छैक। पूजा केर समाप्त पर अनेक विनिती जकरा बीनी कहल जैत छैक केर गायन महिला सब उच्च सरि मे भक्तिभावि सं करैत छथि। पाच बीनी मे अन्तिम बीनी ई पमाणित करबा लेल तकसंगत छैक जे कोना एहि पाबनि मे सब स्तु संगे सामि आ संग रहबाक उक्ति व्याप्त छैक:

दीप-दीप हरा जाथु घरा। मोती-माणिक भरथु घरा।।
नाग बढथु, नावान बढथु। पाच बहिन विषहरी बढथु।।
बाल बसन्त भैया बढथु। डाढी-खोढी मौसी बढथु।।
आितिरी पीसी बढथु। बासुकी राजा नाग बढथु।।
राही बिद्द लए सुती। कासा बिद्द लए उठी।।
होइत पात सोना कटोरा मे दूध-भात खाई।।
साझ सुती पात उठी पटोर पहिरी कचोर ओढी।।

बह ाक देल कोदाक विष्णुक चाछल बाट।।
भाग-भाग रे कीडा-मकोडा। ताक्ह बाट आओताह ईशर महादेब।।
पडल गर ड केर ढाठ। आसक्ताक- आसक्ताक, गर ड-गर ड ..

आब एक्ह गीत संग मिथिला चलू। मिथिला मे बरसात के समय मे खेत-पथार, पोखक इनार, कलम-गाछी सब किछु पानि सं भरल जैत अछ सानि-भादब मे। आब साप आ नाना तरहक कीडा-मकोडा पानि के डर सं उचगर आ र ख स्थान दिस आबय लगैत अछ। मालक घर, मनुखक घर, चार, दरबज्जा आ कत-कत नक्ह आबि जैत अछ। अयबाक उदेश्य कुनो ककरो छति पहुचेबक नक्ह अपितु पानि सं पाण रक्षा आ भोजनक ब्योत रहैत छैक। आ ठीक अही समय मे मधुशाणि पाबनि पूजल जैत छैक। एकर उदेश्य छैक जे हे नाग आ आन कीडा-मकोरा सब जेना मनुखक ि ि ृ्धि होइत छैक तक्हना तोरो सबहक होब। मनुख आ तो एक संग दोसर के रक्षा करैत एक्ह पृथ्वी पर निासि करैत रह। तोरा खेबाक लेल िस्तु आ पीबाक हेतु हम दूध अर्पित करैत छी। हमरा, हमर पति के आ सगा-सम्बन्धी के तो क्षति नक्ह पहुचाबह. हे नाग आ कीडा मकोरा के सिामी वि ि, हम अहाके पूजा अर्चना करैत छी। हे तंत केर जन्मदाता, हम अहाके न्दिन करैत छी, अहाक य िगान करैत छी जे सब संगे हमरो सबहक रक्षा कर । हे नाग अहा रक्षा कर , हे गर ड अहुं रक्षा कर । अक्ह गीत के अगर ध्यान सं सुनब त लागत जे ई गीत कम आ तंतक मन्त्र अधिक अछ। एकरा गेबाक अंदाज, स िर सब किछु अलग छैक। महादेब संगे बह ा, विष्णु केर सेहो गोहरायल जैत छनि एक्ह गीत मे।

गाय केर गोबर, दूध आदिक पयोग गाय केर उपयोवाता के देखबैत

छैक ओतक्ह नाना तरहक िस्तु के पयोग सब मे सामंजस्य। पाबक्त मूलतः बाह ण आ कणिकायस्थ मे होइत छैक मुदा एकर विधान आ सामगी के जुटान मे अनेक जाक्त के सहभावाता होइत छैक। उदहारण के र प मे सरबा, मडल कलि कुम्हार सू;डाला, कायक्त, चंगेरा आक्द डोम सू; लहठी चूडी आ अन्य िस्तु लहेरनी सू एिं अन्य सामगी बजार सू आनल जाइत छैक। ई सामंजस्य कथो मे अनेक ठाम अनेक पसंग आ उप-पसंग मे भेटैत छैक। कथा केर मूल नायक आ नाक्यका - बाला लखेर आ कबहुला, बक्नया अथात सौदागर समाज सू छैक। तंत के जान, गूढ रहस्य जे बुझबैत छैक से धोकबन छैक, धाकम केर चचिसेहो होइत छैक जे छोट जाक्त केर छैक। कथा स्थानीयता के सीमा के सेहो तोरैत एकरा साभिौकमक बनबैत छैक। से कोना? ऐना जे चक्रत सब कमक्थला सू बाहर के सेहो छैक। कथा मे अनेक देिता, देिी, गण के भूकमका छैक। सब एक व्यिक्स्थत आ समनिय के विधान के कनमाण करैत छैक।

आब पूजा के विक्धिति समाक्त के बाद कथा पारंभ होइत छैक। एक अनुभिी मक्हला वजनकर स्मरण िक्त, उच्चारण आ कहबाक िैली के संगे गीत आ फकरा सुनेबा मे महारत रहैत छक्त से एक्ह कायि के संपादन करैत छक्थ। कथा पाचो बक्हनी कबषहक्र सं िुर होइत छैक। कोना एक बुक्ढया एक क्यकनी पात मे लहलहाइत पाच सापक पोआ के देखैत अक्छ। आ बूढी के गाम आकब ओकर िृतान्त कहब सं पूजाक पधक्त पारम्भ होइत छैक। फेर कबषहरी के जन्म होइत छक्त।

दोसर क्दन केर कथा एक नि मोड लैत छैक कारण एक्ह मे एकाएक मनसा के पिि होइत छक्त। मनसा के पिि होइते मातर नाग आ तथाकक्थत पैघ देिता (बम्हा, विष्णु एिं अन्य) के बीच आ दुनु के

भक्त के बीच दन्द्द पारंभ होइत छैक। बिहुला आ चंदु सौदागर क्लासक देिता के पूजक छथि जिनका मनसा जे मूल र प सं नागक देिी छथि आ जिनका बारे मे इहो कहल जैत छैक जे ओ िबक मानस पुती छथि, केर संग दन्द्द। चंदु सौदागर मनसा के अस्तित्व के सीकार नहि कर चाहैत अछि फलसिरप मनसा अपन नाग-नावान सं ओकरा सब संतान के डंसि क ख़तम केने जा रहल छैक। ओकर अन्तिम बालक केर नाम बाला लखेन्द्र छैक जकरा बारे मे ई छैक जे ओकर जाहि दिन िििह हेतैक ओही दिन मनसा के साप ओकरा डंसि लेतैक आ अहि तरहे चंदु सौदागर के िि समाप्त। आब चंदु की करे ? धैयििसं काज लैत अछि। चंदु के पता चलैत छैक जे बिहुला नामक एक लडकी छैक जकरा अखण्ड सोहागबती रहबाक िरदान छैक। चंदु अपन पुत बाला लखेन्द्र केर िििह बिहुला सं कर दैत छैक। दुनू लेल एक िििि के घर बनैत छैक। मुदा सास लेबाक हेतु एकै रती भूर छोडि दैत छैक। ओहि भूर सं अपन नाग के भेजि मनसा बाला लखेन्द्र के डंसि लैत छैक।

आब की हो? बिहुला कहैत छैक, “एक केरा के थामक नाि बना जररी के सामान राखि हमरा बैसा दिय। हम अपन पति के माथ अपन कोरा मे ल नदी के पािह संगे बहैत एकर कुनो समाधान करय चाहैत छी।” सैह व्यििस्था होइत छैक। बिहुला अपन पति के लाि लेने नदी मे चलल जा रहलि अछि। लाि आब गलनाई ििर भ गेलैक मुदा बिहुला के हिम्मत एखनो दृढ छैक। जैत-जैत एक ठाम देखैत छैक जे एक धोबिन नदिक कछेर मे कपडा धो रहलि छैक। ओकर एक छोट बच्चा बेर-बेर ओकरा परेिान क रहल छैक। तंग आबि धोबिन अपन बच्चा के कंठ मचोडि दैत छैक। बच्चा मरि जैत छैक. आब धोबिन िनििन्त भ कपडा धोबैत अछि। बिहुला के बड

आयि भेलैक! “कोना एक माय अपन संतान के छोट बात लेल जान मारि सकैत अछि?” बिहुला सोचैत छैक। बिहुला के होइत छैक जे जरूर अहि मे कुनो रहस्य छैक। आब ओ अपन नाि के कात लगा दूर सं धोबिन के निरीक्षण करैत छैक। जखन कपडा धोआ जैत छैक त धोबिन नदी सं अूजुर मे पानि ल मन्त्र पढैत बच्चा पर फेकैत छैक. पानि पड़ते देरी बच्चा फुरफुरा क उठि जैत छैक। बिहुला बुझि जैत छैक जे ई धोबिन सामान्य महिला नहि अछि। ओकरा हाक लगबैत अपन व्यथा कहैत छैक। आब कहानी मे अते सं तंतक पूणयिाता ि र होइत छैक। धोबिन के कहला पर बाला लखेन्दर के लाि के ओतय छोड़ि दुनू गोटे वि लोक मे जैत छैक। बीच मे अनेक कथा आ कथा केर उपकथा अबैत छैक। बिषहरी के कथा आ हुनकर बारह नाम —जगत गौरी, मनसा, जरत्कार , िषणाि,सिद्ध ोवानी, नागेशरी, ि ि, जरत्कार -प्रिया, नाग-भवानी, आसत्तिक माता, बिषहरी एि महाजानयुक्ता।

कथा खेपे-खेपे चलैत रहैत छैक —मंगला-गौरीक कथा, पृथ्ीक उत्पत्ति केर कथा, समुर-मंथन केर कथा, सतीक कथा, पत्ताि क कथा, महादेब केर परि िरक कथा, गंगाक कथा, गौरीक जनम, गौरीक तपस्या, गौरीक वि िहि, मैनाक मोह भाग, कात्तिक आ गणेि केर जन्म, संध्या केर वि िहि आ लीली केर जन्म,पत्ताि ा सुकन्याक कथा, बाल बसन्त केर कथा, गोसाउनिक कथा, शीकर राजा केर कथा, आ अंत मे गणेि भगबान दारा सोहाग माथब।

अहि बीच बिहुला केर कथा चलैत रहैत छैक। कथा सब मे तंत छैक, बुझौअल, छैक, गीत छैक, सब किछु छैक। कथा मे हिन्दू धमकि के बहुत मूल तयि के जान सेहो छैक। स्त्रीगन के व्यि िहार, ओकरा समाज मे रहबाक लूरि, पति, संतान, शेष , देिता, पितर,

आवश्यक सम्मान आवश्यक जान भेटैत छैक। ऊच-छोट के भेद के कोना पाछाँक जीनि के चलेबाक चाही तकर पर्व किण्ण देल जैत छैक। सब पमुख धार्मिक चरित आ आदि मिथिला के सम्बन्ध मे विरिण देल जैत छैक। अहि तरहे मधुश्राणिी केलि पाबनि नहि अपितु 13-15 दिनक कार्यशाला होइत छैक जाहि मे एक लडकी के ससुर जयबा सं पूर्ति आ गृहस्थी सम्हारबा सं पहिने एक पर्व किल्त महिला बना देल जैत छैक। ओ बच्ची सं दुलहिन आ फेर दुलहिन सं गुनमन्ता नारि अर्थात सम्पूर्ण मैथिलानी बना जैत अछि।

मधुश्राणिी मे नाग नावान के मनुष्य सरिप मे कल्पना कैल जैत छैक आ तदनुसार हुनका लेल स्त्रि, शृंगार, आभुषण सब किछु सं मोन मे सुसज्जित के गीत गाबि स्मरण कैल जैत छैक। एक गीत देखू:

बायरी अूचरी बिषहरी के नामी-नामी केस।
घुमैत एली बिषहरी बारहुत देस।
तोहरो सिंगार बिषहरी लाबा आ दूध।
हमरो सिंगार बिषहरी सिर के सिन्दूर।
तोहरो सिंगार बिषहरी कोर भरि पूत।
फल बीच गुअबा नदि बीच पान।
देवी बीच बिषहरी मैया दोसर नहि आन।

मधुश्राणिी एक हिसाबे महिला के सता के पतीक अछि. सब काज, विधि, मन्त्र- पूजा महिला दारे पतिपादित होइत छैक। पुरष केर कोनो भूमिका नहि। तंत के विचार एहेन जे छोट-पैघ सब एक ठाम आबि जैत अछि। सब तरहक देतिा मे आपसी सौहादि के सूचक अछि मधुश्राणिी।

अंत मे सब ठाम होइत नदी केर कछेर केर धोबिन संगे बिहुला मिपस अबैत अछि. बाला लखेन्द्र के लाि मे पाण आबि जैत छैक। ओ आरो सुन्दर आ सोहनगर भ जैत छथि। चंदु सौदागर के सब बेटा आ सम्पत्ति फेरो आबि जैत छैक। ओकर सब बेटा सेहो जिबित भ जैत छैक। चंदु आब आन देिता संगे अपन पुतहु के कहला पर बिषहरी आ मनसा के पूजा अचर्ना ि र क दैत अछि। सब किछु ि भ होमय लगैत छैक।

एहि पाबिन आ कथा के जे ध्यान सू सुनल जाय आ एकरा गुनल जाय त पता चलैत छैक जे िस्त्र पर लोक जेना कतौ-कतौ भारी पडैत हो! अंततः, चंदू सौदागर के भले अपन पुतहु आ बेटा के कारणे, मनसा देिी आ विषहरी के पभुर्य मानबाक हेतु बाध्य होमय पडैत छैक। एहि कथा मे एक बात स्पष्ट ई होइत छैक जे अगर बहुत बात िस्त्र मयादा के नाम पर बहुत बात अथिा विया अथिा दृष्टान्त देबा लेल मना क दैत छैक मगर लोक ओही बात लेल ओकर व्यिहािरक पक के देखैत उदार भ जाइत छैक। उदाहरण के रूप मे लोके मे ई िम्मत भ सकैत छैक जे गौरी के कहनाक कहैन; महा मयाकदत महादेि के मैथुन आ काम कर विया मे व्यस्त देखा देल। यदकि उदेश्य विकि गहण करक होइत छैक। एकर एक अथि एहो भ सकैत अछि जे निि व्याहता के ई बता दी जे काम अथिा यौन विया िशत पविया छैक। एकरा मनुष्य आ जीि जंतु के बाते छोडि दी देिता, देिी सब सीकार करैत छथि सृष्टि के चलेबाक हेतु अहि मे संलग्न रहैत छथि। ई कदाचित सफल गृहस्थ जीिन जीबाक मूल मंत छैक।

मधुशािणी पाबिन केर व्यंक सूत छैक मनसा आ विषहरी केर आराधना। मनसा अथात नागक देिी। मनसा आथित ओहेन देिी

वजनका िकन्तु त छक्ि मुदा हुनकर सता मानबाक लेल मुख्यधारा के देंी देिता केर भक्ति सब सहज भाि सू तैयार नि्ह अच्छ। मनसा एक एहेन देंी छव्थ जे अपन छोट सिरिप अथात स्थानीय सिरिप के विस्तार अिखल भारतीय सिरिप मे करय चाहैत छव्थ। मनसा के इच्छा छक्ि जे हुनका सब िगि जाक्ति आ समाज के लोक पूजा करय, िहनकर गुणगान करय। मुदा ई काज ओतेक सहज नि्ह अच्छ। छोट जाक्ति के लोक िहनकर सता के सींीकािर लेलक। स्तीगण सेहो ओही िदस बिदा भेली मुदा पुरख कोना मानत? ई कक्ि पैघ पश अच्छ। मनसा िहमालय सू चलैत छव्थ आ नेपाल, तराई बला िमव्थला, भारत बला िमव्थला, असम, बाग्लादेि, बंगाल, ओिडसा, होइत फेरो मध्य आ उतर िहमालय धिर व्याप्त रहैत छव्थ - उतराखंड, कश्मीर, िहमाचल पदेि धिर। मनसा संगे िबहुला केर कथा नेपाल, िमव्थला, बाग्लादेि, पिि्म बंगाल, असम, उडीसा धिर मूल कथा सूग डािर-झािर मे कक्ि-मक्ि फेर बदल सूग चलैत रहैत अच्छ। उतराखंड आ िहमाचल मे मनसा केर अनेक कथा पचिलत अच्छ। साप के पभाि आ भय के सींीकार करैत लोक िगि समुदाय, िलंग आ जाक्तिक सीमा सू उपर उठैत मनसा देंी के समक नतमस्तक होइत छव्थ। यैह पभाि िमव्थला मे सिहिरा िगिमे आ बाहण आ कणि कायस्थ केर स्तीगण मे भेटैत अच्छ।

मुदा हमरा अगर हम समाजिास्तीय ढंग सं मधुशािणी केर विंिचन करैत छी त ऐना लगैत अच्छ जे िपतृसतात्मक समाज िकछु अनरगल पभाि एिह मे िबाध आ पूजा के नाम पर घुसा देने छैक जािह सं मानिवक स्तर पर मिहला सब ओिह परम्परा के नाम पर अपना के सियम िािषत आ पतािडत करैत रहैत छव्थ। अनेक ठाम सती केर मह्यि के गुणगान कथा सब मे अनेक बेर अबैत छैक। धमि पूजा-

पाठ, वारहस्ती, पेम-अनुराग, तंत-मन्त, ब्रातृ, देिता, पकृक्त, पकृक्त केर अयिि —फुल, पात, साप, क्यरै, धमिगिन्थ केर सार; क्तक आ अधलाह मे अंतर करब, पुन्य आ पापक बीच अंतर आ क्तक मागि केर चुनाि, मानधिमिकेर पालन,स्ती धमिकेर क्ाहिन, आर ने जाक्त की की मुदा एक्ह पाबक्त केर अक्ताम क्दन जे कक्तया के ठेहुन टेमी सं दगबक पथा अक्छ से बड अमानिीय। बक्लक ई कक्ह सकैत छी जे सती पथा के बाचल क्हस्सा जका अक्छ। सब मक्हला, माय, बाक्तयाईन, दाई, सखी-बक्हनपा एक्ह बात सं दुखी रहैत छक्थ जे कोना एक्ह जरैत टेमी के सेहो एक बेर नक्ह तीन-तीन बेर धाह केर घाि के िदाशत करती! परन्तु परंपरा लाचार केने छक्त। की क सकैत छक्थ? अगर क्तक सं फोका हेतक्त त अक्चर सोहागबती हेती। पक्त के सब क्कछु क्तक हेतक्त। ताक्ह ओकर पालन हेबे करत। आब एकक्ह उपाय रक्ह जैत छक्त जे सुरज भगिन सं क्ािदन कैल जाय जे ओ अपन रौिनी मे क्शगधता आनक्थ, अवक्त कोमल भ जाक्थ, पानक पात ओना त िीतल होइत अक्छ मुदा ओ आरो िीतल भ जाय जाक्ह सं दागै काल बेटी िीतल के कम िदना होक्त,पाहून मधुर हाथ सं आंक्ख झापक्थ, गंगाजल आ आन जल खूब ठंढक पदान करय, टेमी के धाह मधुर-मधुर जरै, चानन केर लेप आरो िििीतल भ जै जाक्ह सं परम्परा के क्ाहिन करैत कक्तया के ठेहुन दागल जा सकै:

िीतल बहथु समीर दहो क्दि िीतल लथु उसासे।
िीतल भानु लहुक लहु उगथु िीतल भरल अकासे।
िीतल सजनी गीत पुक्त िीतल िीतल बाध बेबहारे।
िीतल मधुशािणी बाक्ध हो िीतल बसन क्संगारे।

ीतल घृत ीतल रि बाती ीतल कामिनी अंगे।
ीतल अगर सुीतल चानन ीतल आबथु मागे।
ीतल कर लय नयन झूपाबह ीतल देलहू पाने।
ीतल हो अकबात कुमर सूग ीतल जल असनाने ।।

गीत, बाध-बबहार सब ककछु ीतल होबक चाही। रि अपन कोमल हाथ सू आूबख झापबथ, घी, बाकतक सङे टेकमक अवमक सेहो ीतल भ जाय, पनि ीतल मंद भ बहै, सित आ वसंगारक सामगी सेहो ीतल होइक जाक सू बेचारी नाबयका अक पथा के पालन करैत अपन ठेहुना के दगबा सकैथ।
एक गीत मे त कबया केर माय आ आन मकहला सङे हुनकर कुमर अथात रि सेहो अपन हाथ सू ओना त नाबयका के आूबख झापने रहैत छबथ मुदा दिना देबख रवित भ जाइत छबथ। हदय केर दिना दुनू आूबख सू नोर भ झहरै लगैत छबा:

आजु सोहावान सहमल बैसल मुख कयै पडल उदासे।
अमबा मुख हेरय कये कामिनी पल पल लैह उसासे।
कुमर नयनसू नोर बहाबह गाइका गाबबथ गीते।
बड अजगुत मधुशाणिी विधि परम कठिन इहो रीते।

मधुशाणिी केर विध-बेभहार त सब के विधिसिक आ स्तीगन के ारीबरक आ मानविक ािषण केर एकटा ािभयस परंपरा बुझना जा रहल छबा। बधया के ददहितका से बेचैनी सेहो छबा। बाधक पकहने आ विधिक बादक ददहितका से जाका बहुत बचंतित रहैत छबथ। मुदा विध के पयाग भला कोना सकैत छबथ? एक मे बधया के कल्याण

छक्त __अक्चर सौहाग्यति ती होबाक कल्याण, पुतति ती होबाक कल्याण। अतेक सुनर पाबक्त मे मात ई क्बाध कक्त अन्कच्छल लगैत अक्छ। एकरा समाप्त क देबाक चाही।

समय बदक्ल रहल छैक। आबलडकी सब सेहो पक्तकार करक अिस्थिा मे छक्थ। बाल विाहि क्मक्थला मे समाप्तपाय अक्छ।ठेहुन दगबा के पतीक मे केिल टेमी धाह उपर सं देखा विधि पूरा कैल जा सकैत अक्छ। अतेक क्तक पाबक्त के मात ई छोट सन क्बाध जाक्ह मे क्धया के सब उमंग आतंक मे बदक्ल जैत अक्छ, हमरा कोनादन लगैत अक्छ। अक्ह टेमी बला पर स्तीगन, पुरष, संस्कृत के विदान क्मल िघि क्तणयि लय एकरा समाप्त करक्थ अथिा पतीक मात राखक्थ। ओना क्कयोक भाििक कक्ह सकैत अक्छ, मुदा हमरा ऐना बुझना जैत अक्छ जेना क्बना कुनो कसूर के सीता के अवाग्न परीक्ा लेल जैत अक्छ। सीता के मा, क्पक्तयाइन, जेठ बक्हन, भौज सब मौन भेल तरपैत सीता के देखैत छक्थ! बडड भेल, एक्ह पर सोच आिश्यक।

क्तक आ अधलाह त सब परंपरा मे रहैत छैक।जे हो मधुशाििणी एक बहुत उतम पाबक्त अक्छ। एकर क्तिहिन होबाक चाही। ई अतेक पैघ विषय क्थक जकरा पर पूरा पोथी क्लख सब बात पर गंभीरता सं विचार राखल जा सकैत अक्छ। मुदा सब बात अगर एत क्लखब त फेर पढनाइ दुलभि। ताक्ह अतय विराम दैत छी।

मैथिली जोग गीत मे पेम आ तंत केर पभाि

डॉ. सविता झा खान हालहिं मे ओ एक विजासा केने छली:
"मैथिल विशि-दृवि मे इरोटिका ि कामुकता मुख्यधारा मे अछि की सबजिनि (सबरिजन माने स्थापित मुल्य, सता आ ि किनत के खिलाफ) के रप मे"।
हमर जे अपन िधिक अनुभि अछि ताहि के आधार पर कहि सकैत छी जे अगर मुख्यधारा के अथि लोक अथिा जन समुदाय अछि त कामुकता मुख्यधारा के चीज थिक आ ई मिथिला मे भारतक बहुत आन ठामक परंपरा जका अदौ सं विदिमान रहल अछि, मान्य रहल अछि। खास क विािह के समय आ ओकर बादक विधि व्यिहार मे गीत आ आन माध्यम सं कामुकता के पदिनि होइत अछि तकर जतेक िणिनि करी से थोड। ियद विधि बेभारक माध्यम सं बर आ कनिया के काम के पति पिरपकि आ एक दोसरक समीप लेबाक ई उतम पविया छैक।
उदाहरण के लेल लाबा छीट' काल लाबा जे छैक ओकरा अगर मनोिैजानिक विश्लेषण करब त कनिया अथिा बर के मन मे उठैत रंग-विरंगक पेम, अभिसार केर तरंग छैक। काम इच्छा के भाकि पतीक छैक। ऊपर सं गीतक ििबिद जाहि मे महिला सब बर आ कनिया के झिझक ि रि के माता आ कनिया के िपता; ि रिक दाई आ कनिया के िपतामह, ि रिक मामी आ कनिया केर माम आदि सम्बन्ध केर संग जोडि ओकरा आरो रमनगर आ दुनू लेल इजी गोइिंग अथिा सहज बना दैत छैक।
एक उदाहरण देखू:
बाबू लाबा छिडयाउ धिया बीछि-बीछि खाउ

बरक बाबी कन्याक बाबा संगे सुताउ

बाबू लाबा छिट्टयाउ धिया बीछ-बीछ खाउ

बरक माय कन्याक बाबू संगे सुताउ

बाबू लाबा छिट्टयाउ धिया बीछ-बीछ खाउ

बरक बहिनी कन्याक भैया संगे सुताउ

दुनू घर गुजर चलाउ ....

बाबू लाबा छिट्टयाउ धिया बीछ-बीछ खाउ

ओना त ऊपर किछु गीत सहज लगैत छैक। मुदा अपन गायकी आ लोकक समर्पण, बिधक उदेश्य आ लाबा छिट्टयाएब केर विधि आ लडकी सब दारे ओकरा लेल छीना-झपटी सब निर्बर आ कन्या के अनुसार हेतु सहज क दैत छैक। धोखेनाई केर बात समाप्त भ जैत छैक। अहि पूरा गीत मे बरक दाई, माय, आ बहिन सब आ कन्या केर पितामह, पिता, आ भाई सब पात भ जैत छैक जकरा बीच परिहास केर सम्बन्ध उचित आ समाज सम्मत मानल जैत छैक। अहिना एक विधि पटिया समेटब आ ओछाएब के होइत छैक। अहु बिध केर उदेश्य बर आ कन्या के अनुसार आ रक्त-रभस लेल तैयार करब, सम्बन्ध के पगाढ आ सहज करब अथिक। एक छोट सन गीत देखब त एकरो अर्थ बुझबा मे कोनो भागट नहि हैत। गीत देखू:

सब रंग पटिया समटू सोहबे

दुलहा सं ओछबाउ हे

पटिया ओछयबामे कसमस करता

मारब चाट घुमाय हे

टेढ-तूढ जुनि पटिया ओछाएब

रसिक रहती सुकुमारि हे

हूसी-खुशी पटिया ओछाएब
हूसती कनिया सुकुमारि हे ..

कतेक आनंद, उल्लास, रंग आ विविधता सं भरल ई छोट सनक गीत छैक! नाम लेल पटिया छैक मुदा छैक बहुरंगी। सखी सब गीतक मादे कनिया के केलि-कीडा केर पैघ-छोटकल जान देमक यत क रहलि छथि। बर के कोना सोसिअलाइज करी से युक्ति बता रहलि छथिन। पटिया ओछायबक हेतु बर के कहथिन से बता रहल छथिन। अगर तुष्ट होइत छथि त पेमक चाट मरबा लेल उकसबैत छथिन। पेमक चाट दुनू मे सामंजस्य स्थापित करबा मे सहायक हेतनि तखन ने बात आगा बढतनि? रसब-बौसब केर कला केर जान द रहल छथिन हूसब-बाजब के गुण बता रहल छथिन। सब सं पैघ बात ई जे कोनो बात छुपल नहि, चोरैल नहि। सब किछु तगन ___दाई, माय, काकियाइन, भौजी, जेठ बहिन सबहक समक आ सबहक अनुमति सं। एक बात इहो, सब सखी सब ओहि पर व्यहकारी मारैत पहसन के आरो अनुरंजक बनबैत रहैत छथि। एकर स्पष्टीकरण कालिलखित गीत मे अछि:

सबरंग पटिया समटू हे सोहबे
दुलहा देता ओछाय
टेढ-टूढ जो पटिया ओछाओता
रकिस रहब सुकुमारि हे
हे कसार मसरने पटिया ओछोता
मारबनि चाट घुमाए हे
हूसी-खुशी सं पटिया ओछोता
तखन हंसथि सुकुमारि हे

आब गीतक एक-एक शब्द के देखब त लागत जे समाज कतेक

उदार भावि सं इरोटिका के स्वीकृति द रहल अछि। लेकिन एहि इरोटिका मे यौनाचार अथवा यौन विकृति के सम्वाद अथवा प्रतीक नहि छैक। मर्यादित इरोटिका जकरा लोकक भाषा मे हूसब-ठेठायेब सेहो कहि सकैत छी। एहेन इरोटिका जे श्रृंगार, बिद्ध व्यंजना, भावि, विधि-बेभार, आ संस्कार सं सुसज्जित अछि। जकरा मर्यादित स्वरुप मे समाज मान्यता प्रदान करैत छैक।

मिथिला मे विविाह के संग एक विधिया जोगक होइत छैक। जोग के फ्यूचरिस्ट सब योग कहि सकैत छथि। दुनू के अर्थ एक भेल ––जुडब अथवा जोडब। बर के कन्या सं आ कन्या परिवार के बरक परिवार सं। लेकिन मुख्य रुप सं बर-कन्या के जुडब ––मानसिक, शारीरिक आ सामाजिक स्तर के संग-संग मनोवैज्ञानिक स्तर पर सेहो महत्व रखैत छैक। जोग मे बर आ कन्या के गीत सं, विधि-बेभार सं, आ तांत्रिक विधिया सं सेहो जोडक परंपरा रहल छैक। तांत्रिक विधिया मे परिहास आ गीतक चासनी लागल रहैत छैक। नैना जोगिन के विधि मे मानल जैत छैक जे बंगाल, अथवा हिमालय अथवा कामख्या सं एक हाकल योगिन अबैत छैक। गीत मे कखनो काल गीतगाइन सब अपना आप के तिरहुत के एक नंबर के फेरल जोगिन प्रमाणित करैत छथि। जोगक एक उद्देश्य बरक ध्यान अपन माय-बहिन सं अधिक कन्या दिस आकर्षित करब सेहो छैक। जोग मे गीत गेबाक शैली पूरा तंतमय भ जैत छैक। कखनो काल क धरती, अकास, समुर,पहार सब चीज के बान्हब आ अधीन करब के चर्चा होइत छैक। जोग दारे असंभव काज के संभव करक बात होइएत छैक। निम्नलिखित जोग गीत के देखू:

माइ हे सात बहिन हम जोगिन नैनहु थिकी जेठ बहिन
माइ हे तिनकहू सं जोग सिखल तिन भुनि जोग हाकल

माइ हे समुरहु बान्ह बन्हाओल तै हम जोवान कहाओल
माइ हे तरहथ दही जनमयलहू तै हम जोवान कहाओल
माइ हे सुखाएल गाछ पन्हगेलहु तै हम जोवान कहाओल
माइ हे बाझ्झक कोख्ख पलटलहू तै हम जोवान कहाओल
माइ हे भनहि विदापत्त गाओल जोवानक अंत न पाओल ....

एहि जोग गीत मे जोवान अपन कला अथवा तंतक जानक महिमा मंडित क रहल छैक। एकरा जखन स्त्रीगन सब गबैत छथि त लागत जे अथर्वदि दि केर मन्त्र के कल्लोल भ रहल अछि। तंत सं केहनो असंभव काज भ सकैत अछि; धरती,अकास आ पाताल के हाकल जा सकैत अछि, समुरके बान्हि सकैत छी, तरहथ्थी मे दही जमा सकैत छी, सुखैल ठुठ गाछ मे पाण आनि ओकरा हरियर कचोर क सकैत छी, केहो बाझ्झन के कोख्ख मे संतान डालि सकैत छी। आ ई सब क सकैत छी तान्हि त हमर सबहक नाम जोवान अछि। विदापत्त कहैत छथि, “एहि जोवान सब के अंत कियोक नहि पाबि सकैत अछि!”

आई काल्हि लडकी सब रैप पर उतरैत छथि, कलाई के चालि चलैत छथि अथात कैट वाकिंगकरैत छथि। लटका मटका झारैत छथि। शरीर आ स्त्रि के कमोतेजक सौन्दर्यसं दर्शकि के अपना दिस आकर्षित करैत छथि। करक चाही। एहि मे कोनो हर्ज नहि। ठीके त कहल जैत छैक, “सोच बदलबाक जररत छैक, स्त्रि नहि”। जोग गीत मे एहने भाव बहल्क अहू सं रमनगर, आ कामोतेजक भाव नवि ब्याहत कन्नया दारा पदर्शित होइत छैक। स्त्रीगन सब गीत गबैत छथि कन्नया कमर मटकबैत, नवि स्त्रि सं झापल अपन देहक उभार के देखबैत, आभुषण सं पैर के छम-छम करैत, चूडी आ कंगना के खनखन करैत चलैत छथि आ पाहून के अपना दिस मोहित करैत

रहैत छथि। पाहून के ध्यान कनिया छोड़ि ककरो लग नहि जाइन ताहि हेतु कनिया के माय चनियाइन ताबिक विया क देने छथिन। पाहून के नोन पढ़ि खुआ देल गेल छल,हुनकर पाग के ताग निकालि ओकरा ताबिक विया दारा खन्ती के तर मे गाड़ि देल गेल छल। आब ओ पूरा कनिया के अधीन छथि। कनि एक एहेन जोग गीत जे एहि तरहक बात कहैत अछि के देखैत छी:

जोग जतन हम जानल पहचानल

गुनगर कैल जमाय अधीनक राखब

रुनुक-झुनुक धनि धया चलतीह' पहु देखताह'

पागक फेच उघारि हदय बीच राखल

जखन धनि धया मोरी चलतीह' पहु तकताह'

नागर कैल जमाय अधीन क राखल

हमर जोग नागर' गुण आगर'

सात खण्ड नि दीप जोग अतिारल

भनहि विदापति गाओल फल पाओल

गुनगर कैल जमाय अधीन क राखब....

बाह रे पेम। तंत सू बान्हल सिनेहक डोरी। गीत मे एक सूग कमनीयता, सौन्दर्य, दैहिक सौष ि, आ स्त्रीगनक अधिकार पुरख पर देखार भ रहल अछि। धनि धया के चलब, धनि धया के देखब, पहु के ताकब, जोवान के अधिकार सब एक संगे पबल बेग सू पमाणित होइत।

एक जोगक गीत मे त जोवान ताल ठोकि कहैत छथि जे "आब अतेक विया आ तंत सू पहू के बान्हि देने छियैन्हि जे ओ कतहु जाथि, अंततः घुरि फिर क हमरे लग एता। जेता कत?

माइ हे हमरहु जू पहू तेजताह फल बुझताह

माइ हे बान्हि देबक्नि बक्नसार अधीन भय रहताह
माइ हे चान सुरज जका उगताह उवा झपताह
माइ हे नैन नैन जोडल क्सनेह फलक नक्ह छोडताह
माइ हे नाि डोरी जका घुमताह घुक्न अओताह
माइ हे मकरी देबक्न ऐंक्छ देहक्र धेने रहताह
माइ हे भनक्ह विदापक्त गाओल फल पाओल
माइ हे गौरी के बढनु अक्हबात सुन्दर बर पाओल।।

कहक ताय्ययभिल जे गीत जे गाक्ब रहक्ल छक्थ क्तनका अपना तंत पर गुमान छक्न। जेना सुरज-चना आूक्ख क्मचौनी करैत रहैत अक्छ; तक्हना नायक आ नाक्यका के नैन सू नैन क्मल गेल छक्न आ ओकरा तंतक मन्त्त सू बान्हि देल गेल छैक। ककर मजाल जे ओक्ह डोरी के तोक्ड सकै? बर त कक्नया सङे नाकि डोरी जका जुडल छक्थ, कतहु जाक्थ अंततः िपस आबहे पडतक्न। आरो बहुत उपमा छैक जकरा बुझनाई कुनो मुक्श्कल नक्ह।

अतेक तंत केर बात होइत अक्छ। क्कछु एहनो लोकक तंत पर काज होबाक चाही। बात बहुत क्कछु अक्छ। एखन एतबे।।।

<u>तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति</u>

मिथिलाक संस्कृति केर दू अवभा िप अछि: तमाकूल आ भाग। पता नहि कोना ई दुनू इलम मैथिली संस्कृति सं जुड़ि गेल? दुनू के सेनि मिथिला मे नि ा केर शेणी मे नहि अबैत अछि। तमाकूल त बाप सं बेटा, चरबाह, हरबाह सं वारहत तक मावा खैत छथि। तमाकूल के नाम सुनिते मैथिली के एक चर्चित गीत जकरा आइयो बहुत सुदि सू सुनल जाइत अछि स्मरण आबि जाइत अछि:

मामा यौ कनि खैनी दीय
अपनो खाऊ कनि हमरो दीय
जौ नहि देब त कहि देबनि हम मामी के

तमाकूल के खैनी, सुरती, तम्बाकू आदि नाम सं जानल जैत अछि। ई अपन समग अस्मिता मिथिला के संस्कृति मे रचल बसल अछि। लोक त बारी-झारी मे खेबा जोग तमाकूल उपजा लैत छथि। फेर ओकर कटनी, छटनी करैत छथि। शीत-रौद देखबैत छथि आ अंत मे खर मे राखि साल भरि लेल जमा करैत छथि। तमाकूल के ऐंठी आ जूम मे सेहो कला देखि सकैत छी। कम्पनी सब के आबि गेलाक बाद सकरी कट आ आरो रंगक तमाकूल बाजार मे उपलब्ध अछि। कनि तेज लगबा लेल कम्पनी सब ओहि मे एसिड डालि दैत छैक। लोक कहता, “बडड चहटगर अछि।” तमाकूल लोक सीधे चून लगा खाइत छथि, नोसि लेत छथि, बीडी मे, सिगरेट मे, चुरुट मे, सिगार मे, पाइप मे, गुटखा, गुडाखू, गूल आ नहि जानि कथी-कथी मे पयोग होइत अछि। आर त आर एकटा गूल केर कम्पनी "गुलाब गूल" नाम

सू अपन पोडक्ट बनबैत छल। ओक्ह क्डब्बा मे एक चहटगर स्लोगन रहैक - "गूल हमारा आविष्किार है"। आब कहु, कुनो जोड अक्छ एकर महत्त्यि के?

मुदा जे सबसू खतरनाक तरीका तमाकूल खेबाक अक्छ से अपन क्वथ्थला आ आसपास केर क्केत्र मे देखल जाइत अक्छ - िधि तमाकूल मे चून क्मला आ चुनेक्ट क ठोर मे आूगुर सू ठुक्स लेनाइ। ई साकात् यम के नौत देबाक पथा अक्छ। ऊपर सू ई लोक के असभ्य आ सुक्चता के क्सधान्त सू दूर सेहो भगबैत अक्छ। लोक तमाकूल ठुक्स यत-तत-सित्रि थुकैत रहैत छक्थ। ई एहेन पक्मयाह लत अक्छ जे समाजिािद केर क्सधात पर अटकल अक्छ। समाजिािद, माक्सििािद,लेक्ननिािद के जोड सू पकडने अक्छ। की बाहमण आ की हक्रजन, की क्हन्दू आ की मुस्लमान, ईसाई आ बहुत ठाम स्तीगण तक एकर सििाद सू झुमैत रहैत छक्थ। अतेक समाजिािदी जे क्रक्शा पर चढल हाक्कम क्रक्शािाला सू दात क्कपोडैत क्बना कुनो मान सम्मान के क्चंता केने तमाकूल मािा अपन ठोर मे ठुक्स लैत छक्थ। क्रक्शािाला सेहो जे कक्नकबेकाल पक्हने लघुशिका केने छल आ पाक्न के अभािि अथिा आर कुनो कारणे हाथ नक्ह धोने छल अपन ओक्ह पवित्ति हाथ सू खूब मोन सू तमाकूल के चून सू रगरैत अक्छ आ हाक्कम के दैत छक्न। बाह! की दृश्य - जेक्हना हाक्कम तक्हना क्रक्शािाला दुनू मस्त।

तमाकूल के सेििनि केक्नहार रंग-रंग के बहाना बनबैत छक्थ। क्कयोक एकरा B B C अथात बुक्धिधिर्कि चूणिति क्कयोक आरो क्कछु कक्ह संबोक्धत करैत छक्थ आ भाक्त - भाक्त के मक्हमा के बखान करैत छक्थ। हमर एक सम्बक्न्धी एक घंटा मे 20 बेर तमाकूल ठोर तर दैत छक्थ। एयर फोसिमे काज करैत छला। हिाई जहाज केर

इंजन केर अभियंता रहथि। हुनका बारे मे एक बात पचलित छल। जखन कखनो फाइटर हवाई जहाज केर इंजन मे कुनो खरापी होइक आ हुनका भागट बुझ मे नहि आबनि त विशेष अधिकारी कहैन, "भाई, हिनका चून तमाकूल दियौन, ई तुरत सब किछु ठीक क देताह।" फेर की लोक तुरंत तमाकूल तैयार करैत छल, हुनका दैत छलनि आ ओ बहुत गर्वित होइत तमाकूल के ठोर मे ठुसैत अपन काज मे मनोयोग सू लावा जाइत छला। ई बात अलग अछि जे बाद मे दम्माक गहन रोगी भ गेला। हालाकि तमाकूल केर लत एखन धरि नहि गेलनि अछि। हुनकर पती ओना त तमाकूल खेबा लेल हुनका सू झगरैत रहैत छली मुदा जखन यैह बात एक दिन हुनकर छोट भाई बुझाब' लागलथिन त पती के भेलनि , "तमाकूल के इलम कुनो बडड कलंकक बात थोडे ने भेल? खाइत छथि त कोन कुकर्म?" झट दनि पतिक सुरक्षा कवचि बनैत अपन देरि के ऊंच नीच कहनाय शुरु केलनि: "अहाके अतबो संस्कार नहि बचल जे जेठ भाय सू कोना बाजी? कोना हिम्मत भेल हिनका भाषण देबके? तमाकूल खाइत छथि कुनो कुकर्म नहि।" बेचारा छोट भाय, काटू त खून नहि! आ तमाकूल ठूसा शीमान अपन पती सू गदगद भेल। जखन दिल्ली यूनिवर्सिटी केर हॉस्टल मे रहैत रही त अनेक बिहारी मित सब तमाकूल खैत छलाह आ एकरा बिहार आ मिथिला के सास्कृतिक धरोहर जका मनैत अपन लत पर मितराइत छला। यत-तत-सर्वत्र थुकबा के परंपरा के सेहो शिशत केने छला। एक मित त एहेन छला जे की कही। बहुत जानी, पढबा मे विलक्षण, कुशागबुद्धि मुदा तमाकूल खेबाक घनघोर समर्थक। क्रिकेटपटु सेहो छला। अपना सङे अनेक बिहारी आ बहुत रास आनो ठाम के लोक के तमाकूल ठुसबक लत मे निपुण केने छला - विसधस्त गुर जका। कहियो

काल किलम सेहो देख लैत छला। बाद मे आई पी एस अधिकारी भेला। कतता एखनो अछि मुदा नाम देखार नहि करब। हमर त किछु नहि करता कित देखार भ जेताह।

भारत के अनेक तथाकथित िशक्षणक कौिल मे माहर विशविदालय मे त तमाकूल सङे बीडी के पचलन भ गेल। लोक बीडी के धुआं मे समाजिद के संगीतक आनंद आ परमानन्द मे भेर होमय लगला। अनेक महिला सब सेहो एकरा समाजिद, िगिलभेद हटेबाक, आ स्त्री-पुरख के समानता के इंडकेटर के रप मे देखैत छथि। सभा मे, रैली मे लोक बीडी चाबैत मस्त भेल मकुनी हाथी जका चलैत रहैत छथि जेना बीडी केर हरेक कि सू एक कुपथा के सििाि क लेता, समाज सभ्य आ सम्यक भ जैत, माओ, नक्सल सब समस्या के चट सू िनदान।

मुदा तमाकूल के आयुर्विजिान आ िजाितक िाध के तराजू पर जोखब त लागत जे ई दार सू अधिक हािनकारक अिछ। कैसर केर खतरा सब सू अधिक तमाकूल सू ओहू मे ठोर मे सीधे चुनेटल तमाकूल सू अिछ।

विजानक भाषा मे कही त तमाकूल के गाछ िनकोटियाना पजाित के अिछ जकर जिड भारत मे नहि अिपतु दिकण अमेिरका मे छैक। दिकण अमेिरका सू ई पुतगािल आ पुतगािल सू भारत 1600 ईसवी मे आनल गेल। आई विश के कुल उत्पाद के 7.8 पितित तमाकूल अपन देि भारत मे होइत अिछ। जे अनकर छल, हािनकारक छल, व्याधि के घर छल से अपन भेल अिछ?

कहल ई जाइत छैक जे एक बेर पुतगािल िस्थत फ़ािसीसी राजदूत जॉन िनकोट अपन देि के रानी लग तमाकूल के बीया भेजलिन आ अिह तरहे पाचीन इितहास मे तमाकूल नामक ई गाछ पचिलत भ

गेल जे आई समस्त विश्‍ लेल पैघ समस्या बनल अछि। क्यकोट महोदय केर नाम सं एकरा क्यकोटिन कहल गेल।

एमहर हमरा किछु बूढ आ जानकार सब सूचना देलिन अछि जे जखन बीडी के कंपनी सब बीडी बनेलक त लोक ओकरा पीबे निह करैक । जो निह व्यिहार करतै त व्यापार कोना हेतैक? एकरा ध्यान मे रखैत कंपनी सब किछु कलाकार के एकित्रत केलक आ अनेक शिहर, गाम, चौराहा पर लोक सबके लैला मजनू, सीरी फरहाद, सुल्ताना डाकू आदि नाटक केर आयोजन कर लागल। लोक सब के बजा मंगनी मे नाटक देखबै आ बीच-बीच मे बीडी लुटबै। लोक नहु-नहु बीडी अपनाई शुिर केलक। निशा केर पयोग बढे लागल। बीडी सू शिगिकेर रचना भेल। बाहमण शुिर मे बीडी निह अपनलिन। सोइत बाहमण - राम-राम कोना छोट लोकक चीज गहण करतिथ? लेिकन एकर सिनिद के चखबाक आकांक्षा सब के छलैक। फेर की समाधान? समाधान के रपमे पिहने सू चुनेटल तमाकूल त छले बाद मे िसगरेट आिब गेल। िसगरेट भेल त क्लास भ गेल। फेर की बाहमण आ की जमीदार। बुझु जे िसगरेट त मॉडनिआ पढल िलखल ओहू मे आधुिनक आ अंगेजी विक्त केर मापदंड भ गेल। जे िमथिला आई सं ४०-५० विषिपूिर्टिमाटर के सािजिनक भोज मे,आ आन व्यिहार मे अनबाक अनुमित निह देने छल। चूिक ई िवलायत सं आयल रहैक तािह एकर िवलौती कहैत छल। तीमन-तरकारी मे टमाटर के बदला आिमल आ नेबो के पयोग करैत छल शिहि समाज िबना कुनो मीन-मेख केने तमाकूल के कोना अपना लेलक? छैक ने गूढ बात! आर-त-आर, तमाकूल भ गेल शुिध, छुआछूत सं सेहो मुक्त। केहो उपास मे आरो किछु खाऊ-िक-निह खाऊ तमाकूल चूिस सकैत छी। कमिकाण्डी के एकरा गहण करबा मे कुनो हजि निह, शियद

भगिनि बैकुण्ठ सं अनुमति प्रदान केने छथिन।
हमरा त लगैत अछि जे बिहार आ बिहारसँ बाहर रहनिहार सभक लेल समस्त ब्यवहार मे दारु संग तमाकूल आ भाग पर बंदी करक अत्यंत आवश्यकता अछि। नीतिश कुमार जी कनी इम्हरो ध्यान दितियौक। अते त एखनो तमाकूल के प्रोडक्ट बनबे बला कम्पनी सब खुजल उक बनल अछि। कुनो प्रतिबन्ध नहि। पश्चिमी देश विशेष रूपे अमेरिका मे तमाकूल इत्यादि के कारोबारीके अपन आमदनीक एक पुष्ट भाग 'कैंसर' आ दोसर असाध्य रोगक इलाजक हेतु लगब पडैत छनि किन्तु एहि तरहक नियम के बारे मे भारत मे सोचल तक नहि गेल अछि । ई अपना आप मे घनघोर चिंताक विषय अछि।
तथाकथित सोशलाइट, विद्वान आ प्रगतिशील लोक सब चुप छथि। कतेक त स्वयं तमाकूल चुन आ तमाकूल सं बनल अन्य वस्तु के उपयोग मे संलग्न छथि। जनसंख्या विष्फोट के कगार पर ठाढ भारत केर विद्वान लोकनि धर्म, मैजोरिटी, माइनॉरिटी, हरिजन, वारिजन, आ ब्यवस्था मे ब्यक अधलाह के मीन-मेख निकलबा मे भेर छथि। जनसंख्या हुनका एसेट बुझना जैत छनि। कुनो अस्पताल के कैंसर, यक्ष्मा, आ हृदय विभाग मे जाऊ, वास्तविक भान भ जैत। दम्मा के मरिज केर स्थिति कर यथार्थ बुझि जैब। कम सू कम तमाकूल के उत्पाद के पूर्णतः प्रतिबंधित करबाक नियम लागू कैल जा सकैत छैक जाहि सू एकर प्रचार-प्रसार कम स कम हो और अंततः ई समाप्ति केर डेग दिश अगसर हो। तमाकूल सू घटे-घाटा। तमाकूल मे मादकता अथवा उत्तेजना प्रदान कर' वाला मुख्य घटक निकोटीन (Nicotine) होइत छैक। यैह तत्व सबस अधिक मारक सेहो होइत छैक। एकर अतिरिक्त तमाकूल मे अनेक तरहक कैंसर उत्पन्न कर' वाला तत्व पायल जाइत छैक। तमाकूल के सेवन सू मुह, पेट,

शासनली आ फेफडा केर कैंसर (Mouth, throat and lung cancer)होबाक सम्भाविना रहैत छैक। क्षमात्मक अंत अतै नक्ष होइत छैक एते धक्र हृदय के बीमारी (Heart Disease),धमनी काठिन्यता, उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure), पेटक अल्सर (Stomach Ulcer), अम्लपित्त (Acidity), अनिद्रा (insomnia) आदि रोगक सम्भाविना तमाकूल केर उत्पाद केर सेनि सू बढ़ि जाइत छैक।

आदिवासी समाज मे सेहो बहुतया सब स्त्री-पुरख दुनू के तमाकूल आ एकरा सं बनल अनेक वस्तु के लत लगा देने छैक। तमाकूल केर सेनि एक पैघ समस्या अछि। मोन आ शरीर दुनू के सनिहित क रहल अछि। अहि पर सोचब जररी अछि। हम एहि कथ्य के माध्यम सं हिनको ऊूच-नीच नहि कहि रहल छी। केलि यैह जे ई बहुत खराप इलम अछि, एकर त्याग करक चाही।

मैथिलानी पर विमर्शक अधिकारी के?

मैथिलानी अर्थात मिथिला मे स्त्री केर स्थिति पर चर्चा करक अधिकारी के: स्त्री? पुरुष? अथवा दूनू? आजुक सन्दर्भमे जखन स्त्री विमर्शपर महिला; दलितविमर्शपर दलित; कला पर कलाकार काज क रहल छथि, लिख रहल छथि; ओहेन स्थिति मे ई एक बहुत महत्वपूर्ण बिंदु बुझना जैत अछि। हमहु स्त्री पर आ कखनो काल मिथिलाक स्त्री पर हुनक जीवन के विभिन्न आयाम पर लिखैत रहैत छी।जे ओहि शैलीसं छथि सैह लिखता अथवा व्यक्त करता किछु एहेन सन अवस्था अछि जे हमरा थोरेक परेशान करैत अछि। लगैत अछि "जेना हम दोसरक अधिकार क्षेत्र मे अतिक्रमण क रहल होई?" बातमे किछ उलझन छैक। मैथिलानी जं अपना पर नहि लिखती त आन के लिखतकि? जे अनुभव छैक तकर सटीक चित्रण आ व्याख्या ओहि क सकैत छथि! लेकिन फेर एक दोसर बात मोन मे अबैत अछि। हमरा लोकनि नृतत्वशास्त्र आ समाजशास्त्र मे दोसरक संस्कृति (other cultures) के बारे मे पढैत छी। दोसरक संस्कृति पर काज करैत छी। अहू दुनु विधा मे स्थानीययाा मूल (native) आ दोसर केर बीच द्वन्द्व छैक। एक के कहब छैक जे स्थानीय अथवा नेटिव चूकि ओहि समाज आ संस्कृति केर हिस्सा छैक तहि ओ ओकरा नीक सं बुझैत छैक, ओहि मे जीबैत छैक आ ओकर अकरसः व्याख्या क सकैत छैक।एकर विपरीत दोसर संस्कृति पर आन द्वारा अध्ययन कर बला के ई मानब छनि जे बहुतो एहेन सहज बात त आने कहत। से कोना? कखनो काल जं बाहरी दुनिया के मापदण्ड नेटिव विद्वान के नहि बुझल होनि त ओ बहुत बात के चर्चा करब छोड़ि देता।

अपन िधि आ कफलडिकिकेर एक सयम्य उदाहरण दैत छी जे आंक्ख सं देखल आ कान सं सूनल अक्छ। हम मुसहर जाक्त पर एक विस्तृत पक्रयोजना पर काज करैत रही। पक्रयोजना केर उदेश्य एक्ह समाजक लोक के विक्, सिस्थ, आक्थक्रि आ सामाक्जक उनक्त के क्दिा मे पयत रहैक. विक्र संग संग सास्क्रृक्तक धरोहर केर रक्ा सेहो मूल रहैक.विषय के गंभीरता के देखैत आ अपन पूिमि अक्ह समाज पर कुनो तरहक काजक अनुभि नक्ह होबाक कारने एक मुसहर समुदाय के पढल युकि के साथ लय हम मुसहरटोलीमे गेलौ।क्स्थक्त देक्ख रविति भेलौ. भेल, ‘‘आजुक जुग मे ई सब मुसहर जाक्तक लोक कतेक दुखक जीिन जी रहल अक्छ?ककरो घर दढ नक्ह. ककरो भक्र देह िस्त्र नक्ह. भेल,फेर कुन तरहक विकास अपन देि अथात भारत क रहल अक्छ?सब के पुछक्लयैक: ‘‘अहा सब के की चाही?’’ झट दक्त एक माईनजन उठला आ कहलक्त: ‘‘हमरा सबके माक्ट काटक काज आ घर के मरम्मत भ जै त हम सब धन्य भ जैब।’’ हमर दोसर पश छल: ‘‘कतेक पाई मे घरक मरम्मत भ जैत?’’ हुनकर जिबि तक्हना भेटल: ‘‘माक्लक, हम सब फुसही झोपडी मे रहैत छी। २००० टाका भेट जेतैक त सब समस्याक समाधान।’’ आब देखू, ओ सब क्कयोक ढंग सं िस्त्र नक्ह पक्हरने छल। सबहक पीठ उघार। मैल-फाटल धोती, ५-६ िषिकेर बच्चा सब नंगटे। तथाक्प ओकर माग मात २००० टका घर ठीक करेबाक हेतु आ माक्ट काटक काज नोन रोटी खेबाक लेल। नक्ह विक्, नक्ह सिस्थ, नक्ह आरो कोनो िस्तु केर अक्भलाषा।ओक्ह समुदाय केर पढल युकि अथात हमर सहयोगी सेहो कुनो क्तक क्योत बतेबा मे अपन असमथत्ता व्यक्त केलक्त।ओ कहलक्त: ‘‘सर, हम सब भोजन, िस्त्र, आिसि मात तीन िस्तु जनैत छी. अतेक भेट गेला सं सब मस्त. ने विकबा

ने विकायत.'' अहि तरहक बात आदिवासी आ अन्य समाज मे सेहो देखना जैत अछि।हम आब अपन विषय केर दोसर बात जे''सत्य हि नहि होइत छैक जे लोक कहैत अछि, सत्य ओहो होइत छैक जे अहाक आंखि देखैत अछि, आत्मा, आ विकि कहैत अछि'', के मूल मानि अपन पक्ष दिन लिखलौ.

उपरोक्त उदाहरण देबाक तात्पर्य ई अछि जे जखन कुनो समुदाय अथवा वर्ग अपन समस्या तक व्यक्त करबा मे असमर्थ अछि त ओकरा समस्या के के बुझत? दोसर. तहिना मैथिलानी के समस्या मैथिलानी लिखथि से नीक बात मुदा पुरुष सेहो लिखथि. समस्या के तह मे जाथि आ ओकर समाधान तकथि आ लिखथि.

जखन महिला के बात करैत छी त अतेक जानब आवश्यक भि जैत अछि जे महिला समाज पुरुष या पितसतात्मक व्यवस्था मे ऐना भिल गेल अछि जे ओकर अपन स्वरुप जेना हेरा गेल होइक? के स्त्री पुत जन्म देलाक बाद अपना के भगवति नहि बुझैत छथि? कथी लेल सासु पुतहु झगरेतछथि? कथी लेल महिला अपन पुती के पुत जका स्वतंतता नहि दैत छथि? मुदा एहि मे हुनक गलती नहि, पुरुष के बनाएल संरचना के गलती अछि।अपन गलती के भान पुरुष करथु। पुरुष जखन स्त्री विमर्श करथि त अपन अंतरात्मा मे एक स्त्री केर भाव आनथि। किछु एहेन भाव जे स्वागत नहि कहि सकैत छथि सेहो स्वीकार आ बिना कुनो अहम के बाजथि।ई समस्या अहि हेतु उत्पन्न भेल अछि जे एक के कम आ दोसर के अधिक महत्व देल जैएत अछि. पयोजन ई होबाक चाही जे मातृभाव आ पितृभाव बराबर हो. एकर सतिम उदाहरण अफ्रिका के घाना देशक असान्ति (Ashanti) जनजातिक परिवार आ संस्कृति केर संकल्पना मे देखल जा सकैत अछि. असान्ति केर संस्कार मे परिवार आ माताक गोतबहुत

पैघ स्थान रखैत छैक. एहेन मान्यता छैक जे वि ि अपन पिता सं आत्मा, पाण आ सास लैत अछि आ माता सं मास (देह) आ िक्तत. बच्चा ओना त दुनु पक सं जुडल छैक परन्तु मातृपक सं ओकर लगाि िक्ततक लगाि, भाि नाक लगाि, कहियो समाप्त नहि होबबला लगाि छैक. पूितर भारत केर मेघालय राज्य मे खासी जनजाति मे माता के सिपिर मानबक परंपरा एखनो अछि. एकर तात्पर्य ई भेल जे संस्कृति मे संस्कार एहेन हो जे स्त्रीगन के सम्मान करय. कतेक लोक संस्कृति के रक्षा केर नाम पर नारी अधिकार, सम्मान, बराबरी, सतिंतता आदि के विरोध करैत छथि. हुनका डर होइत छनि जे सब किछु समाप्त भ जैएत. मिथिलाक पतन भ जैत. कलंग आ ि गि सिंघषि ि र भ जैत. सम्मान, परम्पराक हास भ जैत. एकर मतलब की जे स्त्री के घेट दबाक मारि दी? स्त्री के विकासक सहगामिनी नहि बन दी? स्त्री के हुनक सुविधाक अनुसारक िस्त्र, गहना, पहिरक सतिंतता नहि दी? हुनका आत्मसम्मान नहि दी? संस्कृति आ संस्कार बचेबाक लेल स्त्री मातक बध, ई कहेन बात? पुरख बहुत दिन पहिने पेन्ट पहिर लेला, संस्कृति नहि मरल; स्त्री पेन्ट, सलाि र पहिर लेती त संस्कार खत्म भ जैत! बेटी माता पिताके सम्पत्ति के माग करती त कोटि किचहरी ि र भ जैत, आदि-आदि. ई सडल-गलल मानिकता अछि. एकरा त्याग करक चाही. अगर भाई-भाई मे मुक़दमा चलैत अछि त समाज कहा समाप्त भ जैत अछि? अगर बेटा आ बेटी दूनू के पता लावा जेतनि जे माता पिता केर सम्पत्ति सं जाि दिेही धरि हुनकर सामान अधिकार छनि त नहु-नहु ई अहं समाप्त भ जैत.

मैथिलानी सेहो समगता मे पुरष पर ओहिना लिखथि जेना पुरष हुनका पर लिखैत छथि। महिला आ पुरष सं पैघ बात ई जे समाज,

ओकर पर्वृति, ओकर संस्कृति, ओकर संस्कार, ओकर इतिहास, ओकर लोक व्यवहार पर जनिका रुचि होइ, जनिका जिज्ञासा होइ, जनिका किछु करबाक उत्साह होइ से लिखथि।मुदा सब सं पैघ बात ई जे पुरुख मैथिलानी के मनोदशा के बुझलथि, ओहि पर मनन करथि आ तटस्थ भाव सं लिखथि. विकास लेल लिखथि. समानता के भाव लेल लिखथि.

दिल्ली मे एक कार्यक्रम मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार सं सम्मानित तीन मैथिलानी: डॉ. नीरजा रेणु, डॉ. शेफालिका मिश्रा आ डॉ. उषा किरण खान बजली जे अधिकांश लोकगीत केर रचना मैथिलानी केने छथि। हुनकर सबहक बात के सीधे कटबाक हिम्मत हमरा नहि अछि। ओ सब साहित्य केर हस्ताक्षर छथि। बहुत अनुभव, मनन के बाद एहि निष्कर्षपर ऐल हेती। मुदा नारीवाद के घमर्थन जखन सामाजिक विज्ञान के शोध छातक रूपे करैत छी त किछु आरे बात सब बुझना जैत अछि।महिला त केवल गबैत छली। हुनका अपन बारे मे सोचबक स्वतंतता कहा छलनि? आ समय सेहो नहि।ओ त पुरुष रचित व्यवस्था मे मशीन जका काज करैत छली। हमरा होइत अछि अधिकांश गीत पुरुष लिखलनि। मुदा जखन ओ गीत केर रचना कर’ लगला त अपन मोन, हदय सब मे एक स्त्रीगण के भाव आनि लेलनि। अतेक नीक जे स्त्रीगण सब ओहि भाव मे मस्त भ गेली। ओकरा अपन मानि लेलनि। पुरुष रचनाकार ओहि गीतक देकिी आ स्त्रीगण सब ओकर यशोदा भ गेली। एक एहेन हरिजन स्त्री जकर पति अर्थोपार्जन लेल दूर देस गेल छैक, सासु, ससुर बुढ छैक आ सासु ससुर केर आंखि मे रतौधी छैक, कान बहिर छैक। छैक त हरिजन, अछूत मुदा सुन्दरता के खान, कामायनी. ऐहि पुरुष जे छुआछूत केर बात, वर्गविभेद केर बात, जाति-पातिक

बात करैत छथि, सैह सब ओहि महिला के गसल देह, यौनि के सुख पाप्त कर' चाहैत छथि। आब ओ अछूत महिला अपन यौनि आ गसल देह के कारण पाण्डित्य कला मे निपुण पुरष के सजावटि बुझना जैत छनि। ओकरा अपन बाहुपाि मे लेबाक लेल उदत छथि। रात्ति मे चोरी सं ओकर घर मे घुसि सब अकर्म्य काज आ कमिकिर' लेल परेिान छथि. बेचारी महिला लाचार अछि। ओकर िदना के सुनतै? मुदा एक पुरष जे महाकवि विदापति छथि से सुनैत छथि आ रवित होइत अपन कलम उठा ओहि िदना के लिखैत छथि:

हम जुिती पति गेला बिदेस। लग नहि बसए पडोसिया देस।।
सासु दोसर किछुओ नहि जान। आंखि रतौन्धी सुनए नहि कान।।
जागह पथिक जाह जनु भोर। राति अन्हार गाम बड चोर।।
भरमहु भोर ने देअ कोतबार। कहुक कियोक न करए विचार।।
अधियन कर अपराधहु साति। पुरख महत सब हमर सजाति।।
भनहि विदापति एहि रस गाब। उकुतहि अबला भाि जनाब।।

सब सं पैघ बात ई जे विदापति पीडिता के दुःख सं केिल रवित नहि होइत छथि, ओकर मनःस्थिति के िनि आखर-आखर करैत छथि। नारी भाि के ऐना अपना भीतर आत्मसात क लैत छथि जे गीतक अंत मे ई तक घोषणा क दैत छथि जे हुनकर गीतक रस मात अबला के भाि के जगब' बला रस छनि। ओ अपन गीत अही रस मे लिखैत छथि। विदापति के अनेको गीत नारी भाि, शृंगार, मनोदिा के अकरसः िनि अछि। अतेक नाक जे मैथिलानी ओकरा अपन बना लैत छथि। गीत के कंठाग क लैत छथि। गीतक पोर-पोर सं कनेक्ट भ जैत छथि।

किछु पुरष गीत लिखनहार त एहेन छथि जे नारी भािना के तह तक घुसबा लेल समस्त नारी मनोदिा के संग-संग अपन नाम,

व्यिहार तक नारी जका क लैत छथि। एक बहुत पचलित भक्ति गीत जे मिथिला आ मैथिलानी दारा मिथिलाक गुणगान करैत अछि ओकर दू पाक्ति देखी:
साग पात खोट्ट खोट्ट कदिसि गमेबै हे हम मिथिले मे रहबै।
अपना किरीरीजी के टहल बजेबै हे हम मिथिले मे रहबै।।
एक गीतक रचैता छथि कमलदेि ठाकुर। ई राम आ सीता सं आ कृष्ण आ राधा सं सम्बंधित मधुर भक्ति गीत रचैत छथि। विष्णु भक्ति मे ततेक तल्लीन भ जैत छथि जे अपन अस्तिय महिलाक अस्तिय मे परिणत क लैत छथि। अपन नाम तक बदलि लैत छथि। कमलदेि ठाकुर सं स्नेहलता भ जैत छथि। नारी मनोदिा के लिखैत छथि आ ओही मनोदिा मे जीबैत छथि। हिनकर रचित अनेक गीत नारी भाि, भक्ति, शृंगार आ मनोदिा के व्यक्ति करैत अछि।
“पतहीन नग्नगाछ” मे जे नारी मनोदिा केर िणिि यातीजी केलक अछि तकर कुनो जिाब अछि? “पारो”, “घसल अठनी” आदि केर नायिका के बेदना मैथिलानी िदाशि क सकैत छली मुदा ओकरा हु-बहु उकेरब बला काज त दोसर (other) अथात याती आ मधुप सनहक पुरष नारी हदय के अपना मे आत्मक क’ सकैत छल! गरीबीक िापक्ति सू मारलि आ असहाय िधिा कंद मूल आ कुअन बासक ओिधसू अपना टूटल मडैयामे नीक जेका नीपल-पोतल चुलहामे पका रहल अछि। बासक ओिध धुआंक घर होइत अछि। फटने ने फटैत अछि। जरने नञ जरैत अछि। तकर जे भाि याती व्यक्ति केलक से कुनो समान्य बात अछि?
तीनू महिला िदुषी अथात डॉ. नीरजा रेणु, डॉ. उषाकिरण खान आ डॉ. िफािलका िमा एक बात अंत मे बडड िािक बजली: “साहित्यकार

के सय्य क्लखक चाही, मानि पर क्लखक चाही, स्त्री-पुरष केर बन्धन सं उक्त क क्लखक चाही। क्वस्तग्न केलि मैक्थलानी पर नक्ह क्लखक्थ पुरषो पर क्लखक्थ. तक्हना पुरष सेहो स्त्रीगण पर सेहो क्लखथु। कुनो िद अथिा क्लंग केर बन्धन उक्चत नक्ह।” हमरा ई क्वचोड कथन बडड सोहनगर लागल।

महाराजा पंक्हबा: मवणपुर केर गरीब नबाज

अजमेर केर हजरत ख़्िाजा मोइनुदीन क्चश्ती (1141-1236) के गुरबतमे जीनि व्जबैत लोकसू आ जनसाधारणसू अगाध पेमके कारण गरीब नबाज कहल जाइत छक्त। मुगल बादिाह अकबर महान (1542-1605) के गरीब नबाज केर नामसू जानल जाइत छैक। ओ पजाव्रियसल छला, गरीब, दुखी एिं असहाय के मदक्त करैत छला। "गरीब नबाज" ि ब्दि लोक कंठमे एना बैस गेलैक जे आर त आर महाकवि तुलसीदास (1497-1623) अपन अजेय कृक्तरामचक्रतमानसमे भगािन राम लेल गरीब नबाज (गरीबनेबाजू) ि ब्दके पयोग करैत एक पद क्लख लेला:

गईबहोर गरीबनेबाजू।

सरल सबल साक्हब रघुराजू।।

बुधबर नक्ह हक्र जस अस जानी।

करक्ह पुनीत सुफल क्नजबानी।।

एकर अथ भेल, ‘‘पभु रघुनाथ हेरायल या हाथसू चक्ल गेल िस्तुके फेरसू आक्न सकैत छक्थ, गरीबनबाज (दीनबन्धु) , सरलसिभाि, सिक्तमान आ सबहक सिामी छक्थ। यैह बात बुक्झ गुणीजन ओक्ह शीहक्र केर यिगानसू अपनिाणीके पवित आ उतम फल देब’ बला बनबैत छक्थ।’’

आियितिखन भेल जखन पूितिर भारतके एकातमे बसल राज्यमवणपुरमे अपन पिासक दौरान हमरा पता चलल जे मवणपुरके गौरिमिय इक्तहासमे सेहो एक पतापी, पजापालक, सम्यक, सक्हष्णु राजा भेला व्जनकर नाम गरीब नबाज छलक्न।

मवणपुर केर कुकी आक्दिासी समुदायके डॉ. Leban Serto

दिल्लीविश्वविद्यालयमे हमर सहपाठी छला। कारण हुनकर एक मैसेज देखल जाहिमे ओ लिखने छथि जे दू आदिवासी समूह, नगा आ कुकीके बीच झगडाके चलते पूरा मणिपुर अस्त-व्यस्त भेल अछि। नेटकिरिया त बंद छैक अथवा कतौ कतौ बहुत मंथर गतिसू चलि रहल छैक। लेबानके ई दुःख छनि जे अगर व्यवस्था अछिना रहलैक त विसमस आ नवविषिकेर शुभकामना संदेश ओ अपन मितके नहि द पेताह। ताहि ओ 17 दिसम्बरक एडवांसमे सबके दुनु चीजक शुभकामना द देलथि। दुर्भाग्यसू हमरा लोकनि मणिपुर आ पूर्वोत्तर भारतके संबंधमे बहुत बातसू वंचित छी। हम सब मीडिया द्वारे ई जरूर जनैत छी जे मणिपुरमे सेना आ सामान्य जनताके बीच सौहार्द्य नहि छैक, आदिवासी आ गैर आदिवासीके बीच लडाई चलैत रहैत छैक, आदिवासी समाजक दू समहू, नगा आर कुकीके बीच युध चलैत रहैत छैक, मारकाट होइत रहैत छैक, सडक जाम भ जाइत छैक, पेटोल 200 रूपया केर एक लीटर भ गेलैक, आदि-आदि। मुदा एहि राज्यके ऐतिहासिक , सांस्कृतिक, शिक्षाक गौरव दिस ककर ध्यान जाइत अछि?

हमरा लोकनि बसिक जाइत छी जे यूनान आ चीनके मध्य मणिपुर विसलिकरटसू जुडैत अछि। समस्त पूर्वोत्तर भारतमे मात्र दू राज्य अछि जतयसू विसलिकरट जाइत छैक, जाहिमे एकटा राज्य मणिपुर सेहो अछि। ईराज्य 32 आदिवासी जे मूलतः नगा आ कुकी गुपमे बॉटल अछि केर अतिरिक्त मैती समाजक गढ अछि। अतै केर तीन हिस्सा धरती पहाड आ एक हिस्सा मैदान छैक। अतै केर लोक अति पाचीन समयसू युधकला, संगीतकला, घुडसवारी, मल्लयुध, मार्शलआर्ट, नृत्य, नाटक, गायन, कविताकन आदिमे पबुध रहल छथि। कहब त दंतककथा लागत मुदा ई शुध ऐतिहासिक तथ्य छैक जे

इसामसीहके जन्मसू 33 िषि पूिि मवणपुरके वलखीत इवतहास केर दस्तावेज उपलब्ध छैक। कहबाक तात्पयि ई की जखन भारतके बहुत तथाकवथत विकवसत पान्त सबमे कुनो वलवखत इवतहासके पथा नवह छल मवणपुरमे वलवखत आ विवमबध वलवखत इवतहास केर परंपरा रहल अवछ। अतै बहुत राजा, राजकीय व्यिस्था, विविवि आवद भेटत जे अहाके मानय लेल बाध्य करत जे मवणपुर कुनो सामान्य राज्य नवह अवछ। छोट छैक त की भेल, बहुत गौरिपूणि इवतहास आ परंपराके समेटने अवछ।

चलु बात करैत छी मवणपुर केर महाराजा गरीबनबाज केर सम्बन्धमे। गरीबनबाज के बात करैत छी त एक बात आरो स्मरण आवब गेल। एक संगोविमे हम मवणपुर केर राजधानी इम्फालमे भाषण दैत रही। हमरा संगे पद शी आर. के. वजलावजत वसंह बैसल छला। वबलकुल मैवथल पंवडत जका धोती कुता पवहरने, कपारमे गोल ठोप लगेने, कान्हपर गमछा धारण केने। जखन हमर भाषण समाप्त भेल त ओ कहलवन: "अहा विद्यापवत केर भूवमसू छी। अहासू नीक बात सुनबाक आकाक्षा छल। अहा आकाक्षाके पूरा केलौ। मवणपुर केर सेहो वमवथला जका बौवद्धक, सास्कृवतक गौरिपूणि इवतहास छैक। एकर सामवरक इवतहास, युधकौशल केर इवतहास बहुतो पदेशसू उतम छैक। अतै एक राजा छला वजनका हमरा लोकवन गरीब नबाजके नामसू जनैत छी। अगर अहा संगे बैसब त विवन्तासू हुनकर सम्बन्धमे चचा करब।"

अवह तरहे पदशी वजलावजत वसंह हमरा मोनमे ई अद्भुत इवतहास जनबाक इच्छा जागृत क देलवन। बादमे कतेक वदन हुनकासू आ आनो लोक सबसू गरीब नबाजपर चचा भेल। ई बात 2006 ईसिीके अवछ। सुनल इवतहासके जे बात सब स्मरण अवछ तकरा आई

यथाति क्लखबाक पयास क रहल छी। हमर लेखनी संगे याता कर बहुत आनंक्दत हैब। नि बात सुनब। भारतक संस्कृक्त केर एक केत्त केर महानता सुक्त समगतामे भारतपर गक्कि अनुभूक्त हैत।
त इक्तहासक एक कथा पारम्भ करैत छी।गरीब नबाज मक्णपुरमे 1709 सू 1748 ईर्स्वी धक्र अथात क़रीब 4 दकि धक्र राज केलक्त। क्हनकर क्पताक नाम छलक्त महाराजा चेराई सोगबा। गरीबनबाज मक्णपुरी नाम कुनो दृवि कोणसू नक्ह बुझना जाइत अक्छ। लोक सब कहलक जे मक्णपुरी सब क्हनका पंक्हबा कहैत छलक्त। यदक्प ई समस्त गरीब नबाजके रपमे ख्याक्त पौने छक्थ। ई पूणति: मुसलमानी नाम छैक जे कदाक्चत असममे मुसलमानके आक्ब जेबाक कारणे मक्णपुरमे एक्ह तरहक क्बद्द अपन विषयके कारण पचलनमे आक्ब गेल होइक। अक्ह बातपर सेहो इक्तहास आ मानिक्स्त केर क्दान िधि क सकैत छक्थ।
हालाक्क क्कछु क्दानके मानि छक्त जे सास्कृक्तक क्स्तारक्दके कारण भारतक लोक ियद क्हनका ई नाम देलक्थन जाक्हसू मक्णपुरके सेहो भारतीय पुरातन आ समग परंपराके क्हस्सा बुझल जा सकै। भइयो सकैत अक्छ जे मुगल अपन क्स्तारक्दी नीक्तके कारण क्कछु एहेन केने हो। भ क्कछु सकैत अक्छ। क्पयाऊज केर क्छलकाके परत त उखारब तखने पता चलत जे यथाथि आक्खर की छैक? खैर! अंगरेज सबके मानब छक्त जे गरीब नबाज आक्दक्सी समाजसू छला। लेक्कन मक्णपुरकेर अक्धकाि लोक आ क्जलाक्जत क्संहके मानि छक्त जे गरीब नबाज ओतै केर राजाक पुत छला। से कोना? एहेन मान्यता छैक जे ई अथात गरीब नबाज राजा केर दोसर पतीके पुत छला। रानी क्हनका जक्मते एक आक्दक्सी पक्रिरमे गुप्त रपसू पठा देलक्थन। ओतए क्हनकर लालन पालन होमय लगलक्त। ई बहुत तेज

आ बलिष्ठ नेनेसँ छला। कहल जाइत अछि जे जंगल केर बाघ, सिंह आ तमाम हिंसक जानवर हुनका संगे खेल खेलैत छल। ई निर्भीक भावसँ सब संगे रहैत छला। तीरधनुष आ अन्य जंगली युद्धविद्यामे माहिर भ गेल रहथि। मुदा हुनक माताके एहि सम्बन्धमे कोनो जानकारी नहि छलनि।
महाराजा चेराई सोगबाके पहिल रानीसँ कोनो संतान नहि छलनि। बल्कि हुनका हिसाबे कोनो रानीसँ हुनका पुत नहि छलनि। बूढ होब लागल छला। चिंतित छला जे हुनकर बाद राज सिंहासनपर के बैसतनि। एक दिन किछु सोचैत अपन सब रानीके बजेलनि आ कहलथिन: "देखु, हम आब बूढ भेल जा रहल छी। संतान होबाक उम समाप्त भ गेल। चिंता एहि बातक अछि जे हमरा बाद एहि राजगदीपर के बैसत। अगर अहा सबमे किनको पुत अछि जे हमरा ज्ञात नहि हो त हमरा सूचित करी अन्यथा हम अपन अधिकारी केर चुनाव आम जनतासँ कुनो पराक्रमी आ होनहार युवकके देखि करब।"
महाराज चेराई सोगबाके एहि बातपर सब रानी चुप रहली। मुदा किछ कालमे निस्तब्धताके भंग करैत दोसर महारानी बजली: "महाराज, हमरा माफ कैल जाओ। हमरा एक पुत भेल छल। ओहि समयमे हम नैहरमे रही। चूकि परंपराके हिसाबे पहिल रानीके पुत राजगदीके सम्हारैत छैक से सोचि हम अपन पुतके एक आदिवासी लग गुप्त रूपे भेज देल। ओ ओतहि रहि रहल छथि। बली छथि। पराक्रमी छथि। शारीरिक सौष्ठवमे विलक्षण छथि। राजपुत छथि। चूकि आब एहि गद्दीके वारिस चाही त हमरा हिसाबे आ यदि सब रानी आ अपनेक अनुमति हो त हम हुनका बजा दैत छी। ओ अहाक पाकृतिक उत्तराधिकारी छथि।"
राजाक सूग सब रानी दोसर रानी केर एहि हर्षमिय रहस्योद्घाटनसँ

गदगद भ गेली। तुरंत आदमी भेजल ओकर पुतके राजमहलमे बजैल गेल। ि हि युकि छला गरीब नबाज।

गरीब नबाज राजाके रपमे समदर्शी छला। पजा पालक छला। आदिवासी आ मैतीके बीच नीक आ सहिष्णु छला। सर्वप्रिय छला।पहिने मणिपुरमे चंनामाई संस्कृति छलैक मुदा धीरे धीरे हिन्दू संस्कृतिके पचार होमय लगलैक। ओ सास्कृतिक, धार्मिक एकतामे विसिास राखैत छला। आर त आर पडोसी िमाके राजा के सेहो जीतत लेलन्हि आ िमा (आजुक म्यांमार) मे अपन सुधारक कायिम चलौलन्हि। मणिपुरके सीमा विस्तार करैत रहला। एक दिस िमा त दोसर दिस असम धरि आबि गेला। ई बहुत मजबूत आ कुिल पिासिक छला। एतबे नहि, महाराज गरीब नबाज बहुत तरहक चीज आ यंतके विकास केलन्हि। पहिल बेर टाइम मिीन केर निमाण हिनका समयमे भेल। ई मिीन पानि आ किछु फेनेल केर एहेन युग्मसू बनल छलैक जे सटीक टाइम देबामे सक्षम छलैक।

गरीब नबाज केर दोसर खोज अथि विकास छलन्हि अरामबाई। ई अरामबाई की भेल? ई बहुत खतरनाक आ पलयंकारी अस्त्र थिक। एकरा महाराजा गरीब नबाज बिना ककरो मददिके अपने हाथे निमाण केला। ओहि समय केर ई सबसू खतरनाक अस्त्र छल। घोडसिार एकरा अपना डार लग बहुत सािधानीसू रकािकचिके रपमे राखैत छल। हुनका समयमे मणिपुरके सैनिक आ योधा घोडसिारी, घोडाके नियंतण, अशयुध केर सञ्चालन, भाति भातिके घोडाके पालन आ ओकर पविक्षणमे माहिर छल। बतबैत चली जे पोलो खेलके जन्मदाता मणिपुर रहल अछि। पोलोके कतेक धुरंधर एहि धरापर भेल छथि। एखनो इम्फाल िहर केर पोलो गाउंड जेना अपन गौरमिय इतिहास केर गाथा गबैत हो। घोडापर चढल घोडसिार सैनिक रणकौिलमे

अतेक माक्षर छल जे घोडाके एकक्षामे अथात पाज लग आक्षा दौडैत अस्थिमे सेहो घोडापर चढल एक हाथे घोडाके लगाम आ दोसर हाथे तीर धनुष अथवा आरो कुनो दुदातक अस्त्रसू दुश्मनके धस्ति क सकैत छल। ओ आगासू, पाछासू, कातसू आ घोडाक पाजर लगसू कतौसू अपन सस्त्र चला सकैत छल। तिुके सिहा क सकैत छल। सबसू पमुख बात ई जे राजा गरीब नबाज सब बात अपन नेतृत्वमे करैत छला। अरामबाई बहुत पलयंकारी आ कुनो सैक्तक हेतु अमोघ अस्त्र छल। आर त आर अंगेज सब सेहो एक्ह अस्त्रसू पभावित छल। आ एकरा सम्बन्धमे बहुत रास बात अपन डायरीमे क्लखने छथ्ब। कारण ओक्ह समयमे अंगेज लग अक्ह तरहक कुनो अस्त्र नक्ह छलैक। आई कावि अरामबाईके भारतीय राष्टीय खेलमे िक्सल क लेल गेल छैक।

अक्ह तरहे महाराजा गरीब नबाज एक सिगुिण संपन राजा छला। एक सफल राजा, सफल योधा, सफल सेनापक्त, अगचेक्त, दूररिा, सफल पजापालक। मक्णपुर केर सीमाके िमाके ऊपरी भागसू असमके सीमा तिी केत्र धक्र विस्तार केलक्ह।

मक्णपुर केर लोक, ओतै केर िस्त्र विन्यास, मक्हला दारे िस्त्र बुनबाक परंपरा, ओतय केर नृत्य, पाकृक्तक छटा, खानपान, आ सकिणमि इक्तहास अहाके अपना क्दस आकक्षाति करत। कक्ष हमर बात माक्ष थोरेक क्दन भ आउ ने मक्णपुरसू!

दीघिकथा- पक्रस्थक्त लेक्खका

राघि परेिान छला। सकरपहू कदल्लीसू िधिक पविियामे दकरभंगा जेबाक छेलैन। दकरभंगा गेला। ओतए पोफेसर सुधाकर ठाकुरजीक कािसपर पहूचला। सुधाकर पचास षिीय शोतीय बाह्मण छैथ, कारी भुजंग। डेढ आूक्‍ख। कुनो अककिकन जका बडका बरी सन कािदरल ठोर। कूक्‍चयाएल नयन। तइमे कािना ढंगसू धोल आ कािना आयरन कएल अंगा, अंगाक बाह्‍कक एक बटम टुटल। एक हाथमे अंगाके मोडने आ दोसरमे बटम लगेने। पएरमे कोयला-मजदूर जका गन्दगी सटल आ दुनू ऍंडीमे छूहोकछत बेमाए फाटल। ऊपरसू एकटा प्लाष्‍टकबला चप्पल पहीरने। मूहमे पान ठुसने। पानक दाग समस्त िस्तपर चकचकाइत...।

राघिके भेलैन, हे भगिान! कोन मनुख-लग आिा गेलौ!! मुदा कितैथ की। लचार छला राघि। आधा मनसू राघि पोफेसर सुधाकरके चरण-स्पिि केलैन। सुधाकर बहुत पसनतासू राघिके आिभगत केलक्‍खन।

पोफेसर सुधाकरके दकरभंगामे भ्िय तीन मन्‍जला मकान छैन। पैघ केतमे बनल। मकानक आगूसू पकी-सडक आ पाछूसू पोखैर घेरल। पागणमे पचुर खाली धरती, जइमे आम, जामुन आ लीचीक गाछ चतरल। घरक काते-कात गेना, गुलाब, अडहुल इत्यािद फूलक अितरिक्त तुलसी, पुदीना लागल। पकरसरक मध्यमे झबडल नीमक गाछ जे छाहैरसू पकरपूणि छिल।

कािच्चासू दू मन्‍जल मकानके पोफेसर सुधाकर कुनो आिासीय िदािलयक छाताािसक हेतु दऽ देने छेलक्‍खन। तेसर मन्‍जलमे स्ियं पती-नन्‍दता, पुत- अमरेि आ िमिल संग रहै छला। पती छेलक्‍खन पैतीस बखकि। जेठ पुत सोलह बखकि आ छोट तेहर बखकि। घरमे

पर्िि करैत राघिके एना बुझेलैन जे नकर्मी आक्ब गेलौ। घर सभ धुरा-गदासू भरल। बाथर म गन्हाइत। भीजल कपडा सभ तीन-चाक्र क्दनसू जेना पडल हो। बाथर मक बाहर चाक्र-पाचटा आूक्ठ थारी पडल। थारीमे भात,तीमन आक्द आूक्ठ गन्हाइत, माछी क्भनकैत..!

राघि एकटा कुसीमे बैसला। कनी कालमे पोफेसर सुधाकर जीक दुनू बालक आक्ब राघिके पएर छूक्ब पणाम केलकैन। जेठ बालकक मूह-कान कुनो र पे एक सभ्य पोफेसर केर संतक्त नक्ह लगै छल। जेठ पुतक क्खक्खर जका मूह, ढाबूस बेग सन पीअर-पीअर-छोट-छोट दात। िरीरक काक्त हदसू बेसी कमजोर। जेना यक्मा रोगसू गक्सत होक्थ। फाटल हाफ पेन्ट आ नि अंगा पहीरने। गरदेन आ कनपटीपर मैल जमल। अपरोजकक नेता। छोट बालक मोट, मुदा मूह-कान िभनगर नक्ह। रीक जका झोट। बुझाइत एना जेना कक्हयो कंगही आ तेलक भेट नक्ह भेल होइ। दुनू भाइमे एक अन्तर अबस्स बुझना गेलैन राघिके- जेठ कनी सोझ, क्तशछल तू छोट कनी कईया आ मतलबी।

एकटा पनरह बखक्कि बच्क्चया सुधाकरजी ओतए घरक-काज करै छक्ल, जेकर छीनकाय काया। आूक्खमे काची पडल। नाकपर सुखाएल पोटाक मोट मुल्लमा मोती जका लागल। आूगुरक नह-सभमे कारी-कारी मैल भरल। ओकर नाओं क्छऐ बेबी। पोफेसर सुधाकर बेबीके कहलक्खन-

“बेबी, कनी राघिजीके एक वालास सुसुम पाक्न पीआ। फेर नेबोबला चाह बना। िचारे थाकल छैथ। जाबेत चाह पीता, स्नान-ध्यान करताह, ओतबा कालमे भोजनक ्यिस्था कर।”

पोफेसर सुधाकर अपन छोट पुतके कहलक्खन-

“बाऊ, कनी हम्मर पसक्सिू बीस टाका लऽ चौकपर सू थोरेक खीरा,

चुकुन्दर, मुरई, धनी पात आ हरियर मरचाइ लऽ आउ। नेबो घरेमे अछि।"

थोरबे कालमे बेबी एक वालास सुसुम पानि लेने राघवि लग आबि गेलैन। राघवि तँ गन्दगीसँ परेशान छला, मुदा हाथ मानि नाक आ आँखि मुँह पानि पीब गेला। प्रोफेसर सुधाकर केर बाथरूम भारतीय रेलक जेनरल बोगीक बाथरूमसँ कुनो दृष्टिकोणे नीक नहि छेलैन। मुदा 'मरता क्या नही करता'के स्मरण करैत राघवि बिना कुनो प्रश्न केने बाथरूम घुसि विदा भेला। स्नान एवं अन्य नित्य-क्रियाके सम्पादित करबाक लेल यदपि राघवि साबुन, सेम्पू, पेस्ट, अंगपोछा इत्यादि अपना अटैचीसँ निकालि ओतएसँ निकालला।

स्नानादिसँ निवृति भऽ राघवि बाहर एला तँ देखै छैथ जे प्रोफेसर सुधाकर केकरोसँ बात फोनपर कऽ रहल छैथ। कनी-कालक पछाइत बातके विराम दैत सुधाकर कहलखिन-

"राघविजी, अहाक पत्नी सहजन्यासँ बात भऽ रहल छल। ओ कहै छेली जे राघवि, बाहरक भोजन नहि पसिन करै छैथ आ कनी लजकोटर सेहो छैथ। भूखो लगल रहतैन तँ बजता नहि। तँए अपने हुनकर भोजनक बेवस्था शिघ्रातिशिघ कऽ दियौन।"

एतेक बात कहैत प्रोफेसर सुधाकर बेबीके कहलखिन-

"बेबी छे। राघविजी भूखल-पीआसल छैथ। एखनहि हिनक पत्नी-सहजन्यासँ फोनपर बात भेल छल। जल्दी-जल्दी भोजन तैयार कर।"

ई कहैत प्रोफेसर सुधाकर अपन छोट पुतके बजेलखिन-

"विमलजी! जल्दी आउ आ सलादक सामग्री लेने आउ। कीचनक दक्षिनवरिया कोणमे तेजहा चक्कु अछि सेहो लेने आएब। जाबेत धरि बेबी भोजन तैयार करैत अछि ताबेत धरि हमरा लोकैन सलाद तैयार

कऽ लैत छी।”

विमिल अपन बाताक आजाके पालन करैत सलादक सामगीके एकटा सूपमे लऽ संगे चकू, थारी आदि सेहो लऽ अपन बाता लग आबि गेला।

पोफेसर सुधाकर सलाद काटए लगला। ओना सलादक सामगी नीकसू धोल नहि छेलैन। राघवि के मने-मन अपन सहचरी सहजन्यापर धोर तामस उठए लगलैन। सोचलैन-

“बेकारे ऐ पोफेसर सुधाकरके ई कहएक कहि देलखिन जे राघवि घरक भोजन करता? कनी-मनी खा लितौ आ बादमे चुपचाप टारि केर कुनो भोजनालयमे भोजन कऽ अपन जीवनि-रक्षा करतौ। मुदा सहजन्या तू सभटा चौपट कऽ देली! हे भगवानि, आब की हएत? चण्डाल सोइत पोफेसर भाय अपना घरक अपवित आ गन्हाएल भोजनसू हमर जान लऽ लेत! दुख- हरहु हारकानाथ शरिण मै तोरी।”

आ देखते-देखते भोजन तैयार भेल। सचार लगलै। संगे-संगे राघवि आ पोफेसर सुधाकर भोजन करबाक लेल बैसला। सुधाकर अपन जेठ पुत- अमरेशि के कहलखिन-

“बाऊ, जल्दीसू तीन-चारि तरहक अूचार लाऊ। राघवि जी छब्बीस घण्टासू भूखल छैथ।”

खैर! राघवि नहियो चाहैत भोजन केला। ओना, भोजन ओतबो अधला नहि जेहेन राघवि सोचने रहैथ। हू, सुच्चिताक अभावि अबस्स रहइ। तरकारी सभमे नोन कनी अधिक जरूर रहइ। भोजन केला पछाइत राघवि पोफेसर सुधाकरके संगे एक पैघ कमरामे गेला। कमरामे ओछाइन इत्यादि राखल रहइ। दुनू गोरे बैसला। थोडबे कालमे एक महिला नीक स्त्रि पहीरने, खुजल केसक संग ओतए पहूचली। सुधाकर उठि एक कुसीपर ओहि महिलाके इशारासू बैसबाक कहि दिन

केलखिन। मिहला पोफेसर साहैबके इ ारासू सम्मान करैत एक कुसीपर जा सहज भा ासू बैस गेली। आब सुधाकर राघ ि दस मुखाकृत होइत बजला-

"राघ जी, ई छैथ नन्दिता। हमर पती। साहित्यमे अिभर च छैन। कि ता, गल्प्, उपन्यास आिद लिखबो करै छैथ। समाज ास्तसू एम.ए. छैथ। लित नारायण मिथला िवश्विव ालयसू समाज ास्त िवभागसू 'नारी मनोद ा' केर ऊपर पी.एच-डी कऽ रहली अिछ। थेिसस लगभग तैयार छैन। सभ चीज ठीक रहलैन तू दू मासक भीतर जमा भऽ जेतैन...।"

मिहला मुस्कियाइत रहली। नन्दिता आ राघ लगभग उमेरमे समि यस्की, मुदा राघ पोफेसर सुधाकरके गुर तुल्य मानैत सिदकाल हुनकर चरण-स्प ा िकरैबला, तूए मयादाक पालन करैत निहयो चाहैत राघ उि कऽ नन्दिताक पएर छूिब पणाम केलकैन। नन्दितो अदहे मनसू अि भ ादन-स्ीकार करैत राघ के पीठ थपथपा अिसरवाद दऽ अपन गुर-पती बनबाक भारसू उरीन भेली।

मुदा नन्दिता देखए-सुनएमे अ ि त सुनैर। छरहर देह। कारी केस जे ठेहुनके छुबैत...। नन्दिता सफेद रंगक साडीमे छेली। जइमे किछु िडजाइन बनल छेलैन। कम्प्युटराइज्ड पेटन, जे साडीके आकषक आओर नन्दिताक सौन्दयक बढा रहल छेलैन। नन्दिताके देख ई लगै छल जेना नन्दिता सोभा आ संस्कारसू आधुिनकी छैथ। कलरलेस लीपिस्टक लगेने, आूिखमे सहनाज हूसेनक काजर, आ केस कुनो महग सेम्पूसू धोने। केसक चमक ऐ बातक पमाण छेलैन। अधकटी बेलौजसू नन्दिताक काख देखाइत रहैन आ ओकरा अकारणे निह झापए चाहैथ। राघ कि िधयान ओइ िदस चिलये गेलैन। समुनत िक्के तुरत बाद काखक हस्या ालोकन कनी मनके झंकृत करए

बला लगलैन। नन्दिता कुनो युवतीक मूर्त्तिसँ कम नहि छेली। कियो नइ कहि सकै छल जे पैतीस बखरिक भऽ गेल छैथ आ दू गोट पुतक माता थीकीह। अपादमस्तक सुन्दरताक खान बुझाइत नन्दिता।

बादमे पोफेसर सुधाकर नन्दिताके राघवसँ परिचय दैत कहलखिन- "राघवजी, संस्कृत आ कलाक बहुत नीक विद्वान छैथ। संस्कृतक संग-संग हिन्दी, मैथिली आ अंगेजी साहित्यपर समान अधिकार छैन। समाजशास्त्र,नृतत्त्वशास्त्र, कला-इतिहास, संगहालय विज्ञान, पुरातत्त्व आ सौन्दर्यशास्त्रमे गहन अभिरुचि रखै छैथ राघवजी। बहुत नीक लिखैत छैथ आ बहुत नीक बजैत छैथ। UNESCO-UNDP आदि संस्थाक हेतु भारतीय संस्कृति केर अनेको विषयपर लिखै छैथ, डक्युमेन्टरी फिल्म बनबैत छैथ। कविता, गल्प आदि सेहो लिखैत छैथ। मैथिली संस्कृतिपर कार्य करबाक हेतु मिथिला आएल छैथ। UNESCO-UNDP परियोजना लेल भारत सरकारक सहयोगसँ काज कऽ रहला अछि। एतए बीस-पचीस दिन रहता। दिनमे मिथिलाक अनेक गाम जेना- सौराठ, सरिसब पाही, सतलखा, अन्धराठाढी, पुनौराधाम आदिक भमण करता आ अधिकाँश दिनमे रातिक दरिभंगा अपने सभ लग रहए चलि औता। किछु-किछु गाममे हमहूँ हिनका संगे जाएब। बहुत किछु सीखबाक अछि राघवजी सँ आ भारतीय लोक संस्कृतिसँ।"

नन्दिता राघव केर परिचयसँ बडड पभावित भेली। राघव हिस आनन्दक भावसँ देखलखिन। बजलैथ-

"तखन तँ हमहूँ जखन-कखनो राघव उपलब्ध रहता तँ अपन साहित्य आ साहित्य-लेखन केर विधापर विस्तृत चर्चा हिनकासँ कऽ सकै छी?"

आब राघव बजला-

“कएक नहि मैडम! हम अहाक साहित्य पढ़ै आ ओइपर चचि किय अपना-आपके धन्य बुझब! अहासू बहुत किछु सिखबाक अिसर भेटत। ि ली, उपमा,अलंकारक पयोग आ बिम्बक विधानक जानकारी भेटत। हम तू सौखिया लेखन करै छी साहित्यमे। संस्कृति आ मानि विजानसू समय नहि िनकािल पबैत छी। ओना ईहो बता दी जे हमरा सम्बन्धमे शीमान कनी अधिक बता देलाह। हम तू कला-संस्कृति आ मानि विजानक अित-समान्य छात मात छी।”

“अहासू भेट भेल तू हम अपना आपके उत्साहित बुझै छी।”

स्ति: बजली नन्दिता। ई कहैत नन्दिता उिठ कऽ अपन ियन ककमे गेली आ एकटा चानीक प्लेटमे लौग, इलायची, सुपारी, सौफ, नािरकेल इत्यािद लऽ कऽ पुन: लगमे आिब, प्लेट राघि िदस बढा देलिखन आ पुन: अपन कुसीपर बैस रहली। राघि प्लेटके पोफेसर सुधाकर िदस बढबैत बजला-

“शीमान, पहिने अपने लेल जाओ।”

पोफेसर साहैब हाथक इ ािरासू राघिके िसनेहक आदेि दैत पहिने लेबाक िनदेि देलिखन। िसनेहादेिक सम्मान करैत राघि प्लेटसू दिछनी आ कनी सौफ लऽ लेलैन।

थोडे कालक बाद नन्दिता पुन: अपना कक िदस गेली। दस िमनट लगेलैन आ आपस हाथमे पान बनेबाक तमाम सामगी लय अनलैथ। अपन कुसीपर आसन गहण करैत पान लगबए लगली, िनपुणताक संग। राघिके पुछलिखन-

“केहेन पान खाएब राघिजी? कुन जदा एि अन्य चीज? कुटीबला सुपारी की सरौतासू छल्ला बनल?”

राघिके नन्दिताक आिभगतक स्टाइल नीक लगलैन, बजला-

“मैडम, हमरा िमा कर । हम कुनो तरहक पान नहि खाइ छी।

शीमानके कहियौन आ स्वयिं खाउ पान।"

नन्दिता आब एक खिली पान लगा पो. सुधाकरके दऽ देलखिन आ दोसर खिली स्वयिं लऽ लेली। पानक डालीसू पो. सुधाकर अपना हाथे कारी-पीअर रंगक जदा अपने इच्छे लऽ लेलैन। नन्दिता सेहो एकटा छोट खिल्ली अपना लेल बनेली आ बिना कथ के सुपारी एक नान्हिटा टुकडी दात तरमे गहण केली। थोडबे कालक पछाइत नन्दिता पो. सुधाकरके कहलखिन-

"बुझलौ की एगो बात?"

पो. सुधाकर-

"की? कहू ने?"

नन्दिता-

"ई पानक खिल्ली हमर जिनगीक अन्तिम, पानक खिल्ली थीक। आब हमहू पान नहि लेब। अगर राघजी बिना पान खेने रहि सकै छैथ तू हम किएक नहि?"

ऐ बातपर राघ विनिमता पूर्कि बजला-

"नहि नहि। ऐमे कुनो महानताबला बात नहि छै, मैडम। ई तू अपन पसिन आ ना पसिनपर निर्भर करै छै। हमरा पान नहि नीक लगैत अछि तूए नइ खाइ छी।"

बिच्चेमे पो. साहैब बाजि उठला-

"देखू नन्दिता! अगर अहा पानक त्याग करए चाहै छी तू अबस्स कर। ई उतम निर्णय हएत। एहनो भऽ सकैत अछि जे किछु दिनक बाद हमहू पान तियावा दी।"

आब राघ गद्-गद् भऽ गेला। गदगदाइत बजला-

"शीमान आ मैडम, ओना अगर अहा लोकैन पान छोवि दी तू नीक बात। सुपारी, जदा इत्यादिक कारणे पान आजुक युगमे माहुर बिन

चुकल अछि। डाक्टर तू एतेक तक कहै छैथ जे Oral Cancer केर पमुख कारणमे एक कारण पानो खाएब छी।”

राघवक कथनके स्वीकृति पोफेसर सुधाकर आ नन्दिता अपन-अपन गरदेन हिला देलखिन। राघवके नीक लगलैन।

एकाएक नन्दिता राघव दिस देखैत बजली-

“राघवजी, एक बातक विनती करी?”

राघव-

“विनती की मैडम, आजा कर ?”

नन्दिता-

“कुनो आजा नहि। बसफ छोट-छीन विनती।”

राघव-

“कहू ने मैडम।”

नन्दिता-

“हमरा अहा मेडम नहि कहू। कुनो आरो नामसू सम्बोधित कर । नन्दिता कहि सकै छी।”

राघव-

“नाम लऽ कऽ केना बजाउ? अहा गुरपती छी।”

पोफेसर सुधाकर व्याकरण करैत बजला-

“सुनू ने राघवजी। अहा तू हमर छोट भाए जका छी। तइ दृष्टिकोणसू नन्दिता अहाक भाउज भेली। अगर अहा चाही तू हिनका नन्दिता भाभीक नामसू सम्बोधित कऽ सकैत छिऐन। नन्दितोके हमरा जनैत ई सम्बोधन नीक लगतैन।”

नन्दिता-

“हू हू। बिल्कुल ठीक विद्दक चयन भऽ गेल। राघवजी, आब अहा हमरा नन्दिता भाभी कहि सम्बोधित कर । हमरा बडड नीक लागत।

मैडमके भारसू हम दबल जा रहल छी।''
मन्द-मन्द मुस्कीसू मुस्कियाइत राधि अपन सहमति देलखिन-
''ठीक छै। नन्दिता भाभी अहा लोकैनके जेहेन आजा हुअए हमरा स्वीकाय अछि।''
हलाकी ऐ िब्दाबलीसू राघि सेहो मने-मन पुलकित छला। हुनका आब लागए लगलैन जे आब कनी नन्दिताक साहित्य बिना कुनो विषि मयादाक बन्धनसू उिड जाएब। ियद ई एक निरस्ता पिस्त कऽ रहल छल। नन्दिताक चेहरा सेहो चमैक रहल छेलैन। हलाकी पोफेसर सुधाकर किछ निह कहए, कनी परेिान भऽ रहल छला।
आब पोफेसर सुधाकर कहलखिन-
''राघिजी अहा थाकल छी। पहिने कनी आराम कएल जाउ। साझमे छह बजे धिर हमरा लोकैन बैसब आ आगा केना कायि करबाक अिछ। कुन गाम किहया जेबाक अिछ, किनकासू भेट करबाक अिछ आिद विषयपर विस्तारसू चचा कऽ सिकिण केर ब्लू िपण्ट तैयार कऽ लेब।''
राघिजी सूित रहला...।
साझमे साढे तीन बजे राघि जावा गेला। कनी कालमे पो. सुधाकर केर छोट बालक विमलेि एलखिन। विमलेि राघिके पुछलखिन-
''ककाजी, जल लबैत छी?''
राघि गरदेन िहला स्वीकृति दऽ देलखिन। विमलेि पािन अनला। राघि पािन पीब लेला। पािन पीबते मन हल्लुक भेलैन। विमलेिसू स्कूलक पढाइ आिदपर विचार करए लगला। विमलेि एक-नम्बर-के गपोडी, बात करैमे मािहर, बूढ जका सभ बातके रिचया-रिचया सुनबए लगलैन। राघिके कुनो खराप निहये लावा रहल छेलैन। पनरह

मिनटक बाद अमरेि सेहो टयूिन पढ़ि कऽ आपस आबि गेला। विमिलेि आ अमरेि अपन-अपन कथा सुना कऽ राघिके समय बिता रहल छेलखिन।

कनी कालक बाद पोफेसर सुधाकर आूखिके हाथसू पोछैत धडफडाएल पहूुचला। कहलखिन-

“राघिजी, उठि गेलौ? नीकसू नीन भेल कि ने?”

राघि-

“हू शीमान, खूब सुतलौ। तमाम थकाबट दूर भऽ गेल। आब तरोताजा भऽ गेल छी। अपनेक बालक सभ बडड नीक छैथ। बीस-पच्चीस मिनटसू हिनका लोकैनसू ितालाप कऽ रहल छी। नीक लािग रहल अिछ।”

आब चाह आिब गेल छेलैन। चाहक संगे-संग नन्दिता सेहो आिब गेली। कि नइ किएक नन्दिताके देखते-मातर राघिमे आि्चयजिनक स्फूित अिब गेलैन। सभ किर यो चाह पीलाह। राघि पोफेसर सुधाकरजीक संगे Fieldwork केर Blie Print तैयार करए लगला। बीच-बीचमे नन्दिता िदस िधयान चिल जाइन। ब्लू ििंट तैयार भऽ गेलैन। िनणए लेलैन जे ऐगला िदन सात बजे भोरमे सौराठ गाम लेल पस्थान करता।

आब राघिआ पो. सुधाकर बजार हेतु िवदा भेला। दरभंगामे सुधाकर राघिके किछु पिसष्िधत सािहत्यकार, इितहासकार, संगीतकार आिद लग लऽ गेलखिन। राघिके नीक लािग रहल छेलैन। जानकारी पाप्त भऽ रहल छेलैन। साझमे आबै काल जीबैत रेहु माछ कीनलाह। पैसा राघि देलखिन।

माछक पाकमे नन्दिता सेहो संलग्न भेली। पो. सुधाकर सेहो लागल छला। माछक मसाला पीसबाक कायि सेिवका-बेबी कऽ रहिल छिल।

राघव सेहो ओतै ठाढ भऽ गेला। पूरा पीकनिकक माहौल बनि गेल छेलइ। विमलेश चुपेचाप राघवके कानमे कहलखिन-
“जनै छिऐ काकाजी, आइ माँ पहिल बेर कीचेनमे घुसली अछि। पापा आ मा दुनू गोरे पाक विद्यामे केतेक नीक लाबा रहल छैथ।”
राघव केलि एक जनिसया हूक्स कऽ बातके ओतै समाप्त कऽ देला। भोजन तैयार भेलइ। सभ गोरे संगे भोजन करै गेला। राघवमे भोजनमे सुस्वाद्यता आ सचारमे शृंगार बुझेलैन। भोजन करै काल पो. सुधाकर नन्दितासू कहलखिन-
“आमिल केतएसू आएल छल?”
नन्दिता आनन्दित स्वरिमे बजली-
“मा भेजने छेली। पनरह दिन भऽ गेल। भेल जे राघवजीके जनिथलामबला माछ बना कऽ खुएबैन। तूए ऐ माछमे पीऔज, लहसुन नहि देल अछि। टमाटरक बदला आमिल, पीऔज, लहसुनक बदला हीग, दही आ पुदिनादाना।”
सुआद बिल्कुल अलग आ चहटगर। राघव भरि इच्छा भोजन केला। एहेन माछ खेबाक अविसर राघवके जीविनमे पहिल बेर भेल रहैन। भोजन केला बाद राघव सूति रहला। दोसर दिन साढे छह बजे पात: नहा-धो कऽ राघव तैयार छला। राघव आ पो. सुधाकर चूरा-दही-चीनीक जलपान कए सौराठ लेल विदा भेला। सौराठक याता सफल रहलैन। सौराठसू साढे चारि बजे साझमे दरिभंगाक लेल विदा भेला। दरिभंगा अबिते नन्दिता अपनेहाथे चाह बनेली। सभ कियो संगे चाह पीला।
दोसर दिन सवरसब-पाही जेबाक छेलैन। पति-दिन भोरे सात बजेक याता कुनो-ने-कुनो गाम लेल निवित रहैन। तेसर दिन पोफेसर सुधाकर केर एकाएक जानकारी पाप्त भेलैन जे कॉपी-जाच करबा

लेल विश्वविदालय केर अन्य शिक्षाक सहयोगी संगे हुनको बनारस हिन्दु विश्वविदालयमे पनरह दिन धरि सेन्टलाइज्ड कॉपीक चेकिंगमे भाग लेबाक छैन। पो. सुधाकर कंकतियविमुढ छला। राघि सेहो परेशान छला। भेलैन, बिना पो. सुधाकरसूँ काज केना हएत? मुदा अपन पनरह बखक्कि अनुभविके स्मरण केला पछाइत मनमे भेलैन- सभ किछु सम्भव छै। सोचलैन- आखिर हमहूँ तूँ छी अही माटि-पानिक संतति। फेर चिन्ता कुन बातक? जे हेतै देखल जेतइ। हिम्मत देखबैत बजला-

“शीमान् अपने अबस्स जाउ। हम्मर मागपिरिस्त भऽ गेल अछि। अहा सभटा दिशा-निदेशन कऽ देने छी। हम कायकिऽ लेब। हमरा जेबासूँ चारि-पाच दिन पहिने अपने आपस आबि जाएब। बूचल-खुचल डाटा दुनू गोरे मिल कऽ कऽ लेब।”

पो. सुधाकर राघि केर ऐ तकसूँ सहमत भेला आ बनारस जेबाक तैयारी करए लगलैन। ऐगला दिन भोरे सात बजे राघि कुनो गाम Fieldwork लेल गेला तूँ एगारह बजे दिनमे पो. सुधाकर बनारस लेल दरिभंगा स्टेशनसूँ रेल पकडबाक लेल पस्थान केला। राघि साझ छह बजे आपस एला। नन्दिता अपने हाथे चाह बनेली। एक लोटा आ एक वालासमे जल अनलैन। राघि बिना कुनो पतिकारक भरि इच्छा जल पीला। फेर चाह पीबैले बैसला। नन्दिता चाह संगे भूजल चूरा तरल झीगा माछ लऽ अनलैन। थाकल राघिके ई सत्कार गदगद कऽ देलकैन।

बृहस्पैत दिन रहैक तूए नन्दिता पीअर साडी पहिरने छेली। ब्लौज सेहो पीअर मुदा ब्लौज केर गला बाहिं आ किलग कारी रहइ। पीअर आ कारीक मिलान रमनगर लगैत छेलैन। नन्दिता सोनाक एकटा बल्ला एक हाथमे आ दोसरमे घडी पहीरने छेली। नन्दिताक

हाथ-पैर आदि साफ छेलैन। नन्दिता आ पो. सुधाकर केर जोडी देखलापर 'बानरक हाथमे नारिकेल'बला कहबी चरितार्थ होइ छल। चाह पीबै काल नन्दिता राघवसँ पुछलखिन-

"राघवजी, अगर अहाँ लग समए हो तँ, आइ राति किछु काल अहाँसँ साहित्यिक चर्चा कऽ सकै छी?"

राघव बजला-

"हँ-हँ नन्दिता भाभी, किएक नहि। हम सामान्यत: दिनेमे अपन लेखन कार्यसम्पन्न कऽ लैत छी। अपने परेशान जुनि होउ। निश्चिन्तसँ कऽ सकै छी।"

राघवक आश्वासनसँ नन्दिता बिहुँसि उठली। राघव कुनो कम प्रफुल्लित नहि छला। चाह पीला पछाइत राघव पुन: किछु बाँचल कार्यकेँ सम्पादित कए स्नान केला। तेकर बाद पो. सुधाकर केर आॅफिस लग एकटा सैलूनमे जा पूरा माथक मालिश, फेशियल इत्यादि करेलैन आ आपस अबैत नन्दिता, अमरेश आ विमलेशक संग रातिक भोजन केला। रातुक भोजनमे नन्दिता अन्य भोज्य-पदार्थक अतिरिक्त काँच टमाटरकेँ आगिमे पका ओइमे प्याउज, लहसुन, आदि, हरिअर मरचाय आदि मिला चहटगर चटनी बनेने छेली। राघवकेँ चटनी बड्ड नीक लगलैन। भोजन करै काल विमलेश राघवकेँ कहलखिन-

"चचाजी, टमाटरक चटनी केहेन लगल?"

राघव जबाब देलखिन-

"अपूर्व! मन होइए रोटी चटनीए संग खाइ। ऐ चटनीक आगू सभ व्यंजन बेकार।"

राघवक ऐ जबाबसँ नन्दिता प्रसन्न भेली आ गर्वान्वित स्मित रेख खिचैत उठली। राघवकेँ हुनकर स्मित रेख बडड सोहनगर लगलैन।

मुस्कियाइत रहला आ चहटगर चटनीक संग रोटी खाइत रहला। आब कामलेि कहलखिन-

"चचाजी, मम्मी अपने हाथे अहा लेल ऐ टमाटरक चटनी बनेली अछि।"

राघि कृतजताक स्रिमे बजला-

"नन्दिता भाभी, अहा सभ हमरा लेल केतेक कष्ट लइ छी? ऐ कजकि हम सातो जनममे नइ सधा सकब। बडा अपूिआ चहटगर अछि चटनी।"

नन्दिता-

"अरे राघिजी! अहा एना किए सोचै छी। सुधाकर नहि छैथ। बनारस जाइसू पहिनहि हमरा कहने छला जे राघिके बाहरक भोजन पसिन नइ होइ छैन, तूए घरेमे किछु-ने-किछु अपने हाथे बना देबैन। बेबी-हाथमे सुआद नइ छै।' तूए किछु बना देलौ। अहा तेतेक नीकसू भोजन करै छी जे हमरो बनबैमे आन्नद अबैत अछि।"

आब राघि चुप्पे भऽ गेला। भोजन केला। हाथ धोइते रहैथ कि सुधाकरक फोर एलैन-

"की राघिजी, ठीक छी किने? आजुक याता केहेन रहल? बुच्ची किछु नि चीज बनेली की?

राघि बजला-

"हू शीमान्, अखने भोजन केलौ अछि। सभ सि्तु अपूिमुदा काच कालौती केर चटनीक तू जबाि नहि। मन कारपीत भऽ गेल। कुनो दिकत नहि शीमान्। केलि अपनेक कमी खिल रहल अछि। कालडकिसिेहो ठीक रहल। लोक सभ सहयोगी छला। बहुत रास जानकारी भेटल। अपने आएब तू सभ डेटा आ आूकरापर िहत चचा करब।"

हलाक्क राघि जनै छला जे सभ बातमे एक बात झूठ बजला, बाजल छला जे पोफेसर सुधाकर केर कमी हुनका महसूस भऽ रहल छैन। राघि तू पसन छला जे आब ओ नन्कदतासू मुक्त भासिू तिलाप कऽ सकैत छला। राघिके पो. सुधाकर आ नन्कदताक बाआहमे कुनो रहस्य बुझना जा रहल छेलैन।

खैर, भोजन केला बाद राघि अपन ककमे गेला। कनी कालक बाद, भोजन केला बाद, बेबी अपन घर चक्ल गेक्ल। आब क्तच्चा जा नन्कदता मुख्य दार बन्द केलैन। जखन आपस एलीह तू राघि पुछलक्खन-

“नन्कदता भाभी, की करए गेल रही?”

नन्कदता जबाि देलक्खन-

“सुधाकर नक्ह रहै छैथ तखन कैम्पसक मुख्य-दार हमरे बन्द करए पडैत अक्छ। सएह करए गेल रही।”

राघि बजला-

“हमरा कक्हतौ? हम कऽ क्दतौ!”

नन्कदता-

“कुनो बात नक्ह। हमरा आदत पक्ड गेल अक्छ। अहा क्चन्ता नक्ह कर ।”

पुन: नन्कदता अमरेि आ विमलेिके आदेि करैत कहलक्खन-

“अहा सभके स्कूल जाइसू पक्हने भोरे-भोर उक्ठ कऽ पढाइ करक अक्छ। जल्दी-जल्दी दूध पीब लीअ आ सूक्त रहू।हम साढे चाक्र बजे भोरक घण्टी लगा दइ छी। अपने मने उक्ठ मूह-हाथ धो पढनाइ पारम्भ कऽ लेब।”

दुनू बालक माताक आजाके सम्मान करैत रसोइ-घर गेला। दूध वालासमे राखल रहैन। दूध पीला आ सुतबा लेल चक्ल गेला।

नन्दिता भीतर गेली। मच्छरदानी लगा देलखिन। लाइट ऑफ कऽ देलखिन। जीरो पाबरिक बल्ब ऑन कऽ देलखिन आ अपन दुनू छपल किताब, डायरी, किछु सादा पन्ना आ पेन लऽ राघव बला कक्षमे आबि गेली। राघव तैबीचमे एकटा अंग्रेजी उपन्यास पढ़ैत रहैथ। नन्दिताके ऐबते-देरी राघव उपन्यासके झाँपि लेला आ कातमे राखि देलखिन आ नन्दिताक स्वागतमे उठि कऽ बैसैत बजला-

“आउ नन्दिता भाभी।”

नन्दिता सामनेबला कुरसीपर बैसली। अपन दुनू पुस्तकमे ऑटोग्राफ लिखलैन-

“स्नेही राघवजीके,

स्नेह आ सम्मानक संग

-नन्दिता।”

राघवके नन्दिताक ऑटोग्राफ नीक लगलैन। दुनू पोथीक पन्नाके उलैट कऽ देखलाह। ओइमे एकटा पोथी काव्यिक संग्रह रहै आ दोसर गल्प संग्रह। दुनू पोथीक भाषा हिन्दी रहैक। तमाम कथाक मुख्य पात्र महिला। पुरखक प्रति महिलाक क्रोध, आक्रोश, घृणा आदि स्पष्ट परिलक्षित होइत रहइ। एना बुझना गेलैन राघवके जे नन्दिताक महिला चरित्र बागी आ विरोही तेबरमे ठाढ़ छैन। हिंसक हेबामे सेहो महिला चरित्रके कुनो दिक्कत नहि छै।

आब नन्दिता राघवके कहलखिन-

“सुनू राघवजी, हम अहासू साहित्यिक चर्चा करए चाहै छी। हम्मर पोथी बादमे अहा पढ़ि लेब। अखैन किछु चर्चा करी?”

राघव बजला-

“हू-हू अबस्स कर । अहाक लेखनी हमरा प्रभावकारी लागि रहल अछि। पहिने अपन लिखल एक-आध मैथिली कविता सुनाउ।”

नन्दिता राघवि केर ऐ कविदिनसू गद्-गद् भऽ गेली। अपन डायरीक पन्ना पलटनाइ पारम्भ करैत पुछलखिन-

“पेम-कविता सुनाबी?”

राघवि कहलखिन-

“कुनो सुना सकै छी। हम अहाक शैली आ रचनासू अपना-आपके अविगत करए चाहै छी।”

आब बिना कुनो प्लोट बैक-गाउण्ड तैयार केने नन्दिता नहु-नहु अपन कविताक पाठ करए लगली। पारम्भ लघु कवितासू केलैन। कविताक संरचना ने बडड नीक आ ने बडड अधलाहे। हलाकि पेममे सेहो नारीक फस्टेनि पवाहलकि बुझना गेलैन, राघविके नन्दिताक कवितामे। ओना, नन्दिताक अविाज कोइली जका मधुर आ चहकैत। कविता-पाठ करैत-करैत नन्दिताक भावि-भंवामा भयि लावा रहल छेलैन। एक कविता पढैत रकली नन्दिता। राघवि झट दवि पूछि देलखिन-

“नन्दिता भाभी,एक बात पुछी?”

नन्दिता-

“हू-हू पुछू ने!”

राघवि-

“अहाक साविहत्यिक कृत्तिमे मविहला पात वविबेचलयन कएक होइत अछि? ओना लेखन शैली हमरा बड पभावित कऽ रहल अछि।”

“यो ही कोई शिफा नही होता”

ई कहैत नन्दिता नमहर सास भरलैन। फेर सास छोडलैन। फेर भरलैन। सास भरब आ छोडबक पकिया किछु काल धवरि चलैत रहलैन। पत्येक सासक संग नन्दिताक विि ऊपर-वाच्चा करैत रहल। राघवि नन्दिताक पुष्ट-विि गुच्छके कनखिया-कनखिया वविहारैत

रहला। ायद ई सोचैत जे देखतो छैथ आ नन्दता बुझयो नह रहल छैथ। मुदा नन्दता तू छैथ स्माटा भान लाबा गेलैन जे राघा हुनकर यौनिके ताक रहल छैन। नन्दता सोचलैन : चलू राघाके ऐ ख्ािबमे रहए दइ छऐन जे हम कदु नइ बूझ रहल छी।

फेर नन्दता बजली-

“हू राघाजी। अहाक अिलोकन सूक्म आ साथकि अछ। एकर इतहास छै। हमर जीनिक बीतल कछु एहेन घटना जे हमर साहत्य-सजनाक मकहला चकरतके कछु उग, ियाकुल, पकाािधी, अहंकारी बना दइ छै। ओना, कखनो काल नहयो चाहैत हमर सृजनमे मकहला पात ओहन भऽ जाइत अछ। ऐपर हम काल्ह रातमे अहाक संग विस्तारसू चचा करब। आइ अपन कछु कविता आ गल्प अहाके सुनबए चाहै छी। ैली, कथानक, पकािि, उपमा, अलंकार आदक पयोगपर अहाक विचार जानए चाहै छी।”

राघा बजला-

“हू-हू नन्दता भाभीजी, अहा अपन कछु लघु कथा आ अन्य कविता सुनाउ। रातमे हम किन्ततासू अहाक पोथीके समाजक पकरदृ्यिमे समाजािस्ती जका पढए आ समझए चाहै छी। समाजािस्तक पकरदृ्यिमे विििचन करए चाहै छी। नारी मनोदा, मानािय संिदनाक कातृसतात्मक समाज केर संरचना आ कातृसतात्मक समाज दारा नारीक ािषणके अहाक लेखनीक ऐनासू बुझए चाहै छी।”

नन्दताक मन पफुल्लत भऽ गेलैन। साहत्यकारके साहत्यके सुनैबला आ साहत्य समीकक संग ओकर पिसा करैबला भेट जाए तखन मन हकाात तू हेबे करै छै। नन्दता अपन कविताक पोथीक पना चािमा पहीक पलटए लगली। तीनटा पनाके मोड लेलैन। फेर अपन कुसीसू उठली आ अपन ायन कक दस बढैत बजली-

“राघवजी! हम कक्कबे कालमे आबि रहल छी।”

राघव सोचए लगला, आखिर कुन प्रयोजनसँ नन्दिता भाभी अपन ियन कक गेली? कुनो-ने-कुनो प्रयोजन तँ अबस्स हेतैन।

पनरह मिनटक भीतर नन्दिता पुन: राघवजीक कक्षमे हाथमे एक कलात्मक िीिक टेमे दूटा बाटीमे रसमलाइ लेने प्रवेि केलैन। नन्दिताक मन प्रसन्नचित आ संतुष्ट छेलैन। टेके टेबुलपर रखैत बजली-

“राघवजी, कालि हमर छोट भाए राचीसँ आएल छल। मा ओकरे द्वारा ई मिठाइ भेजने छेली। छोटका रसमलाइ। एकरा रसभरी सेहो कहल जाइ छै। राचीमे पंजाब स्वीटस केर रसभरी बहुत विख्यात छै। बातेक िममे एकएक स्मरण आएल जे रसभरी तँ फ्रीजमे राखल अछि। सुधाकर मधुमेहक रोगी भऽ गेल छैथ ने, तँए ओ ई सभ नइ खाइ छैथ। अमरेि आ विमलेि दिनेमे खेने छला। केवल हम आ अहा नइ खेने रही। सोचलौ साहित्य सुनेबाक वियाके आरो आगा बढेबासँ पूर्वे किनी मुँहके नीक मीठाइसँ मीठ कऽ ली।”

राघव मने-मन प्रसन्न भेला। नन्दिताक आदरमे आत्मियताक भाव जगलैन। बिना किछु बजने अपना संकेता-भाषासँ नन्दिताके बहुत किछु कहि देलखिन। आब एक कटोरी राघव अपन बामा हाथमे लऽ दहिना हाथे चम्मचसँ रसभरी खाए लगला। बिना किछु कहने मौन जका नन्दिता सेहो राघवके अनुकरण करैत दोसर कटोरी बला रसभरीके ग्रहण करए लगली। मीठाइ खेलाक पश्चात् राघव अपन असलासँ दक्षिणी भिकालि एक सौस दाना नन्दिताके आ एक स्वयं लेला। नन्दिताक हाथमे जखन राघव दक्षिणी देलखिन तँ राघवकि हाथ नन्दिताक हाथसँ सटि गेलैन। राघवके नन्दिताक कोमल हाथक स्पर्ि नीक लगलैन। हाथ कनी काल सटले रहए देलखिन। कहि

नइ कए, नन्दता सेहो जेना चहैक उठली। चेहरापर किछु अलग तरहक उमंग नन्दताके राघकि स्पर्शिसँ प्राप्त भेलैन। नन्दता सेहो राघकिे हाथक स्पर्शि सान्निध्य किछु क्षण लेल आरो प्राप्त करए चाहै छेली। दुनू एक-दोसरक हाथक स्पर्शि मुरामे करीब दू मिनट धरि रहलैन। आब राघकिे एकाएक ई भान भेलैन जे नन्दता तँ हमरा इशारा कऽ रहली अछि। नन्दता सुन्नरि आ आकर्षक छैथ। हमरो नन्दताक प्रति आकर्षण बढ़ि रहल अछि मुदा नन्दता तँ छैथ गुरु-पत्नी समान। कहीं हमर डेग कुनो शास्त्र अथबा परम्परा विरोधी दिशामे तँ ने बढ़ि रहल अछि..?

..एक पैघ प्रश्निचिन्ह राघकि कपारपर नाचए लगलैन। राघकिे स्थितिक भान भेलैन जे बात गलत भऽ रहल अछि। ऐ बातके सोचैत राघि झट-दे नन्दताक हाथसँ अपन हाथ हटा लेलैन। नन्दता सेहो पुन: अपन पोथीक पन्ना उनटबए लगली।

नन्दता राघकिे पुछलखिन-

“राघजिी, अगर अहाँ कही तँ दू-तीनटा छोट-छोट कविता सुनाबी आ तेकर बाद एक या दूटा कथा सुनाबी, अहाँके?”

राघि बजला-

“हूँ-हूँ! सुनाउ ने। एकटा किए चारिटा कविता सुनाउ।”

आब नन्दता कविता पाठ करए लगली। जेतेक नन्दताक तनक सुन्दरता तेतबे मनक सुन्दरता आ तइसँ बढ़ि कऽ बात करैक मीठास। राघि गद्-गद् भेल जा रहल छला। काव्य-पाठक क्रममे नन्दताक नुआँक आँचर खसि पड़लैन। अधकटी आङीमे सहेजल नन्दताक उन्नत शिखि जेना कविताक धारक संग यात्रा करैत हो। उठैत-बैसैत। साँस संग नन्दताक शिखि जेना नृत्य करैत हो। कविताक संग-संग राघि दोग-दागमे नन्दताक शिखिके सेहो अवलोकन

करए लगला। हुनका कछु-कछु होमए लगलैन। मन करैन जे नन्दिता भरि रातिअहिना आँचर खसेने किछ अवलोकन करबैत कविता-कथाक पाठ करैत रहथु।

मुदा ई की कुनो सम्भव बात छल? नहि। कदापि नहि। कविताक पाठ आ गल्पक विनिमय चलैत रहलै। पता नइ केना रातिक डेढ बाजि गेल। आब नन्दिताक नजैर देबाल-घडीपर गेलैन। झट दनि अकचकेली-

“राघवजी! रातिक डेढ बजि गेल। अहाके भोरे-भोर कल्डकिमि जेबाक अछि। आब ऐगला चर्चा करब। अहाक ज्ञानक पूर्ति केना हएत तइ बातक चिन्ता भऽ रहल अछि।”

राघव-

“कुनो बात नहि नन्दिता भाभी। हमरा लोकैन ऐ तरहक गति-विधिसू अपना-आपके आत्मसात कऽ नेने छी। केतेक दिन तू चौबीसो घण्टा काज करए पडैत अछि। तूए अहा चिन्ता जुनि कर । अगर इच्छा हुअए तू एकटा कथा आ दूटा कविता आरो सुनाउ। अहाक लेखनीमे चुम्बकीय आकर्षण अछि। कथ्यके सपाट आ अलग अन्दाजमे अहा लिखै छी। समाजक दृढ मान्यता आ पुरुख-समाज दारा बनाएल गेल जंजीरके तोडैले अहाक साहित्यक नारी पात उधत रहैत अछि। पर्यावरणिक संग कथानक सम्बन्ध स्थापित कऽ लैत अछि।”

राघवकि ऐ बातसू पभावित भऽ नन्दिता मने-मन आनन्दित भऽ पुन: कुर्सीपर बैस गेली। आ अपन पोथीक पना उलटाबए लगली। राघव बजला-

“ओना, आब अहाके नीन आबि गेल हएत।बच्चा सभ सेहो असगरे सूतल छैथ। अगर चाही तू अहा जा सकै छी।”

नन्दिता झट-दे बजली-

“हमरो लेल जगनाइ कुनो समस्या नै अछि। लेखनक कार्य अधिकांशत: हम रातियेमे करै छी। हमर दुनू पुत आब छेटगर भऽ गेल छैथ। अहा कहि रहल छी तू एक कथा आ तीन कविता आरो सुनबै छी।”

नन्दिता पुन: कविताक पाठ करए लगली। नहू-नहू मुदा स्रि स्पष्ट आ नजाकतसू भरल पाठ। हरेक कविताक पाठक उपरान्त राघि ओइ कवितापर किछु पिनिआ वजजासा करैत रहलखिन। आ नन्दिता ओइ वजजासाक उतर दैत रहली। अन्तमे नन्दिता एक लघु कथा अपन नाटकीय अन्दाजमे सुनेलैन। कथा राघिके बडड नीक लगलैन। कथोसू नीक नन्दिताक उपस्थिति राघिके नीक लावा रहल छेलैन। आब अढाइ बाजि चुकल छल। नन्दिता किताबके सेकरयबैत उठली। कहलखिन-

“राघिजी, आब सूतए जा रहल छी। िभ राती।”

‘िभ राती’ कहैत नन्दिता राघि दिस अपन हाथ बढा देलैन। राघि कनी सह देला परन्तु हाथ नन्दिता दिस बढि गेलैन। हैण्डसेक केलैन। हैण्डसेक करैत राघि नन्दिताके ‘िभ राती’ कहैत बाहर धरि छोडए एला। नन्दिता अपन कक दिस चलि गेली। राघि नन्दिताक सम्बन्धमे एक घण्टा धरि सोचैत रहला। अन्तत: साढे तीन बजेमे सूति रहला।

दोसर दिन भोरे राघि स्नान-ध्यान केला बाद चूरा-दहीक जलपान कऽ सीतामढीक हेतु पस्थान केलैन। पस्थान करै काल नन्दिता दकिणी आ लौग लेने ठाढि छेलैन। राघि बिना किछु कहने आूखिक भाषा बुझैथ, नन्दिताक हाथसू सभटा लौग-दकिणी लऽ लेलैन। नन्दिताक आूखिसू ई लावा रहल छेलैन जे नीक रहितैक जे राघि आइ केतौ जेबे नहि करितैथ। बिना नन्दिताके कहने राघि हुनकर

आूक्खक भाषा बूक्झ गेला। आूक्खयेक इ िरासू कहलक्खन-

“िधक कायि अक्छ, तूए क्दन भक्र लेल अिलोकन हेतु जेनाइ आि्यिक।”

राघि चक्ल पडला। जाबे धक्र नजैरसू ओझल नक्ह भेलैन ताबे धक्र नन्क्दता क्दस राघि घूक्म-घूक्म तकैत रहला। नन्क्दतो एकटक भेल गेलरीमे ठाढ भऽ राघिके जाइत देखैत रहली।

राघि भक्र रस्ता केिल आ केिल नन्क्दताक सम्बन्धमे सोचैत रहला। पेम, आकषिण, सेक्स आ पाप सबहक बोध राघिके एके संग हुअ लगलैन। नन्क्दताक देहक बनाबटसू राघि आकक्षति छला। नन्क्दताक लेखनी सेहो अपने ढंगसू राघिके पभािित कऽ रहल छेलैन। नन्क्दताक िस्त पक्हरक अन्दाज आ सौन्दयिविलास राघिके कामूक बना रहल छेलैन। हुनकर मनक आ तकन कामदेि जागत भऽ रहल छेलैन। मयादा आ अन्य चीज जेना विरोह करबाक हेतु उफान मारैत हो। भाडमे गेल मयादा आ विचारक लक्ष्मण-रेखा। नन्क्दता क्सनेहमक्य आ कामदेिी छैथ। हुनका ियद हमरा सन युिकक आि्यिकता मनक आ तनक सामंजस्य आ अदान-पदानक हेतु जरुरी छैन तू ओइमे मयादाक हनन केहेन? क्कछु एहने भािना राघिके भऽ रहल छेलैन।

फेर ई भाि कनी राघिके क्चन्क्तत आ ग्लाक्न-भािसू भक्र दैत रहैन जे अन्तत: नन्क्दता छैथ तू गुरुक पती। अगर मयादा भंग भेल तू गुरुजीक संग विशासघात भेल। गुरुकी सोचता! कही िक्षपत कऽ देता तखन तू..?

फेर आधुक्नक विचार कहैन- जे हेतै ओ देखल जेतइ। नन्क्दता क्कछु उलझनके आइ राक्त जरुर बतेती। फेर अन्क्तम क्नणिए लेब जे की करब।

पूरा क्दन कायकिरैमे क्चत नै भित रहैन, राघकिे। जेना नन्क्दता हुनकर मनोवृक्तिके एरेस्ट कऽ नेने होक्त। मुदा कायक्रि सम्पादन करब हुनकर क्विणाक आ पोफेनिल जबाि-देही छेलैन। तूए कायक्रि सम्पादन केला। कनी जल्दी समाप्त कऽ दवरभंगाक लेल विदा भेला। क्ति क्दन रहइ। रस्तामे जीबैत कबइ माछ भेटलैन। लगभग दू क्कलोक कुडी। राघि हुण्डे कीन लेला। मलाक्हनसू कुनो मोल-भाि नक्ह केला।

हाथमे माछ नेने राघि तीरिगक्तसू पो. सुधाकर केर मकानक पागणमे पर्िि केला। आिक विपक्रत नन्क्दता नक्ह छेली। नन्क्दताक जेठ बालक अमरेिसू पता चललैन जे नन्क्दता रेक्डयो स्टेिनपर अपन एक लघु कथाक पसारण हेतु गेल छैथ। राघि माछक झोरा अमरेिके दऽ देलक्खन। बेबी इन्होर पाक्त देलकैन। राघि पाक्त पीलाक बाद मुह-हाथ धोलैन। बाहर एला तू बेबी नेबोबला चाह दऽ गेलैन। राघि चाह पीबैत रहला आ नन्क्दताके एबाक इन्तजार करैत रहला।

लगभग अदहा घण्टामे नन्क्दता एली। ऐबते राघिसू पुछलक्खन-

“कखन एलौ राघिजी?”

राघि-

“अदहा घण्टा भेल।”

नन्क्दता-

“चाह इत्याक्द भेटल की नइ?”

राघि-

“हू-हू। सभ क्कछ भेटल। गमिपाक्त आ चाह दुनू। आइ कनी जल्दी आक्ब गेलौ। अमरेि कहलैन जे अहा दवरभंगा रेक्डयो स्टेिन कुनो कथाक पसारण हेतु गेल रही।”

नन्क्दता-

“हूँ। पछिला मास दरभंगा रेडियो स्टेशनसँ हमर एक कथा प्रसारित होइत अछि। अही बहाने रचना करैमे आ साहित्य सर्जनामे नीक लगैत अछि।”

ई कहैत नन्दिता अपन कक्ष दिस विदा होइत बजली-

“राघवजी, कनी हम दस मिनटमे अबै छी। फेर बैस कऽ निश्चिन्त भऽ गप करब।”

राघव गरदेन हिला ‘हूँ’ कहि देलखिन।

दस मिनटक भीतर नन्दिता फ्रेश भऽ राघव लग आबि एक कुर्सीपर बैस गेली। राघवकेँ कहलखिन-

“जीबैत कबइ माछ केतए भेट गेल राघवजी?”

राघव-

“रस्तामे एक मलाहिन बेचैत छेली। सोचल कीन लइ छी।”

कनी कालक बाद नन्दिता अपनेसँ भीतर जा चाह बना कऽ अनलैन। राघवकेँ आगूमे चाहक टे दैत बजली-

“लीअ राघवजी, एक बेर पुन: चाह पीबू। हमरो चाह पीबाक इच्छा भऽ रहल अछि।”

चाह संगे किछु नमकीन सेहो परोसल गेल रहइ। राघवकेँ सेहो चाह पीबाक इच्छा भेलैन। दुनू गोरे चाह संगे पीला।

रातिक भोजनक पश्चात नन्दिता पुन: राघव लग आबि साहित्य चर्चामे लगि गेली। आइ नन्दिता कारी रंगक नुआ पहीरने छेली। नुआक खोंइछ नाभिसँ निच्चे। नाभी स्पस्ट देखाइत रहैन। नुआ पहीरबाक एहेन स्टाइल जे पूरा पेटक संग नाभीक सौन्दर्य प्रस्फुटित भऽ रहल छेलैन। दुधिया गोराइ चाम नन्दिताकेँ काम सुन्दरी बना रहल छेलैन। राघव ओइ सौन्दर्यमे डूबि गेला। मन बहकए लगलैन। पहिल बेर राघवकेँ ई एहसास भेलैन जे नारीक शरीरक सभसँ उत्तेजक आ

कामुक अंग नाभ होइ छै। सुडौल पेट, तरीकासँ नुआ धारण करबाक अन्दाज ओकरा आरो उत्तेजक बना दइ छै। बहुतो स्त्रीगणके बच्चा भेला बाद पेटक नाभ फाटि जाइ छै आ पेट,नाभ आ नाभसँ कच्चाबला पदेंिके छतीर-बितीर कऽ ओकर सौन्दर्यकेँ स्ाहा कऽ दइ छै। नन्दिता यदवा भागन्ति छेली। हुनकर पेट आ नाभ पदेंिमे एकौटा दागक लें नहि छेलैन। नाभ तक पेट देखाइत रहैन। के कहैत अछि जे नुआ कामोत्तेजक नइ होइत अछि। राघि जखन नन्दिताक सौन्दर्यकें सिक्कि नुआमे केलैन तँ लगलैन जेना नारी सभसँ सुनरि, चहटगरि, कामोत्तेजक नूएमे लावा सकैत अछि। नुआके नाभसँ कच्चा पहीरक अन्दाज नन्दिताके यकीबला पक्तमासँ कनीकबो कम सुनर नहि बना रहल छेलैन। ईहो सम्भि भऽ सकैत अछि जे राघि नन्दिताक पक्त आकर्षति छला तँए हुनका नन्दितामे दोदारगंज यकीक सौन्दयतिकैं छला। अन्ततः सौन्दर्यकें तँ बखान करएबला पर कभरि करैत अछि जे गुण विदमान छै। खैर, अखनुक मोटा-मोटी स्थिक्त ई छल जे राघिके नन्दिता बडड सोहनगर-रमनगर आ कामुक नारी लगै छथिन।

नन्दिता सेहो कुनो कम पारखी थोडबे ने छेली। मने-मन आँकि लेलैन, राघिक मनोदाके। बुझना गेलैन जे ओ स्यिं कुनो बडड सुन्दर आ सुगन्धमयी फूलल फूल तँ राघा ओइ फूलक मकरन्दके चुसएबला भमरा छला। यदवा नन्दिताके राघि रपी भमराके चुसए देमएमे कुनो आपैत नहि छेलैन। हूँ, कनी एक-आध दिन आरो परैख लेमए चाहै छेली।

नन्दिता राघिके डीम-लिडिसँ जगबैत पुछलखिन-

“की राघजी, आइ हम अपन कविताराँ पारम्भ करी अथबा गदसँ?”

राघिके ने गदसँ मतलब छेलैन आ ने पदेसँ। हुनका मतलब छेलैन

तू क्सफिआ क्सफनिन्क्दतासू। झट-दे उतर देलक्खन-

“नन्क्दता भाभी, हमरा एिह पसन्द अक्छ जे अहा सुनाबी। अही कहू की सुनबए चाहै छी?”

नन्क्दता बजली-

“एक बात कही?”

राघि-

“हू-हू कहू! की कहए चाहै छी?”

नन्क्दता-

“हमर इच्छा अक्छ जे आइ सिमिथम हम अहाके अपन लघु क्हन्दी उपन्यास ‘मधुमय आकाि’क क्कछु-क्कछु पेरक आ महर्यपूणि पसंग सुनाबी।कुनो हजा तू ने?”

राघि-

“हजा क्कएक? अबस्स सुनाउ।”

आब नन्क्दता अपन क्हन्दी उपन्यास ‘मधुमय आकाि’क पना पलटए लगली। पनो सभमे अनेक कथनीय पाक्तके अण्डरलाइन पेन्विलसू केने छेली। पेन्विलसू रेखाक्कत पंक्क्तक एक-एक िब्दके पढए लगली। उतार-चढाि नीक जका मेन्टेन करैत रहलैन। कखनो पत्यंचा चढैत कखनो पेमाक्ध्यक्यक आिगमे पस्फुक्टत चेहरा आरो सौन्दयर्क्के क्बखेरब पारम्भ कऽ दैन। राघि भाि-विहिल होइत नन्क्दताक उपन्यासक अंि नन्क्दताक मुहसू भाि-विभोर होइत सुनैत रहला। बीच-बीचमे कखनो गरदेन क्हला, कखनो मुखाकृक्तके गम्भीर कऽ तू कखनो क्जजासा पृक्तसू पि्न कऽ तू कखनो मुक्त-कण्ठसू पिसाक िब्दाडम्बरसू नन्क्दताके उत्साक्हत करैत रहलैन। उपन्यास कम पेरक नक्ह रहइ। एक एहेन क्किरीक कथा जे भािििमे आक्ब अपन जेठ बक्हनक देबरसू पेम-विाह कऽ लैत अक्छ। बादमे पतारना,

ाेषण,अत्याचार, भानात्मक दोहनक विकार भऽ आत्म-ग्लाक्त आ अपन क्ताणएिपर परिताप करैत ओ क्किारी आत्म-हत्या करबा लेल विाि भऽ जाइत अक्छ। आत्म-हत्या कैयो लैत अक्छ। उपन्यासक उतार-चढाि भानाक पबलता आक्द नीक जका पदविात केने छेली। नन्क्दता समस्त चीज एकीकृत भाि आ स्िरपमे राघिके नीक लगलैन।

बीच-बीचमे राघि कनखी दोगे नन्क्दताक नाक्म आ खुजल पेटक दिनि करैत रहला। नन्क्दता कखनो नाक्म लग हाथ राक्ख लक्थ तू कखनो फुजल छोक्ड दैत छेलक्खन।

राघिकि दृष्क्ट यदाकदा नन्क्दताक समुनत िकक्दस सेहो जाक्त। राघिके होक्त- ठीके नन्क्दता भाभी बानरक हाथमे नाक्रकेल जका छैथ। पोफेसर सुधाकर क्हनकर सौन्दयक्कि भला की बूक्झ सकै छैथ? नन्क्दता अपन उपन्यासमे से एक घण्टा धक्र उधधरण पढैत रहली। राघि सुनैत रहला। अन्तमे उपन्यासक अन्क्तम तीन पना नन्क्दता भाि-विभोर भऽ पढलैन। आब राघि क्दस गम्भीर होइत बजली-

"कहू राघिजी, उपन्यास पक्सन आएल?"

राघि-

"हू-हू, खूब पक्सन आएल।पते नक्ह चलल जे समए केना क्कैल गेल। भामिय, भानामय सभ तरहे नीक रचना। एकरा एन्थोपोलोजी ऑफ इमोिन कही तू कुनो अक्तवियोक्क्त नक्ह। अहा तही मनोदािक क्चतण अपन खाँटी अन्दाजमे करैत छी। अहा पक्रीि, क्बम्ब इत्याक्दक विधन अपना तरहे करै छी। नारी विाेष रपे क्मक्थलाक मैक्थल बाहणक तथाकक्थत सभान्त नारीक मनोदाि आ पुरखक नारीक पक्त विचार-संस्कार आ बेहिारक ाणिनि आ विाचिनमे अहा बेजोड छी। अहाक ाैली आ अहाँक रचनाक पचार हेबाक क्तान्त

आि्यकता अछि। अहाक विजहापर ओ सरस्ति बैसल छैथ जे सत्यके बिना कुनो भय आ धोखे-धमकि रपे लीखै छैथ। ओ सरस्ति बैसल छैथ जे पागधारीक, कुकृत्यके ताल ठोकि कहै छैथ। ओ सरस्ति बैसल छैथ जे तथाकथित इलीट या सम्य समाजक अधार कऽ पुरख समाजक भीतरक कलज्जिता आ स्ागिसू संसारके पकिचत करबै छैथ।''

राघिसू अपना बारेमे ऐ तरहक बात सुिन ननिदता गद्-गद् भऽ गेली। कनी भािनात्मक सेहो भेली।

राघि दिस गम्भीर होइत ननिदता बजली-

''एक बात कही, हमर पकिस्थित हमरा लेखिका बना देलक राघिजी। की सोचने रही आ की भऽ गेल! देखैत-देखैत जीिनक तमाम अरमानमे जेना अगराही लावा गेल! आब जीिनमे कुनो इच्छा निह अछि। एकेटा इच्छा अछि जे अपना संग घटल आ अपना आिखक समक घटल सभ पकिस्थित-पर्िि आ घटनाके बेलाग िलख पाठकक समक लऽ आबी। आइ ने कािि कियोक तू पढतै आ सत्यक अन्िषण हेतइ? िि सुबह कभी तो आएगी?''

राघि गम्भीर भेला। विजासा बढलैन। मन भेलैन ननिदताक िदना आ इतिहासके कुरेदी। मन भेलैन कनी सािहत्यसू िखसकी आ सत्यक अन्िषण करी। बिना किछु कहने विजासाक मूरामे ननिदता दिस तकला राघि। ननिदता बूिझ गेली राघिक मनोदिा आ बातके आगा बढौलैन।

गम्भीर होइत बजली ननिदता-

''राघिजी, अहाके लागल हएत जे हम पोफेसर सुधाकरके किएक निह सम्मान करैत छिऐन?''

राघि-

“एहेन बात नहि छै नन्दिता भाभी। कनी ऐ बातक आभास हमरा अबस्स भेल जे अहा आ पोफेसर साहैबमे किछु मत-भिनता अछि। विचार दन्द तू सभ पति-पतीमे होइत छै। हमरो सहजन्याक संग अछि। मुदा हमरा लोकैनमे सामंजस्य अछि। मतभिनता बहुत नाजी अछि। पखर तखने रहैत अछि जखन केलि हमही दुनू गोरे रहैत छी। एकर विपरीत अहा आ भाइ साहैब केर मतभिनता जेना केकरो लग दृष्टिगोचर भऽ जाइत अछि? आ आब अहाक साहित्यक शणि केलासू ई स्पष्ट भऽ गेल जे ई मत-भिनता आ अहाक िचारक विरोह अकारण नहि भऽ सकैत अछि।”

राघवि ई बात सुनिते जेना नन्दिता भाािि मे आबि गेली। आँखिसू नोर मोती जका झहरए लगलैन। आब राघविके नइ रहल गेलैन। उठला आ नन्दिताक माथके अपना एक हाथसू पकैड दोसर हाथसू र माल निकालि हुनकर नोर पोछए लगला। नन्दिता आरो भाुकि भऽ गेली। नोर आरो तीरिगतिसू बहए लगलैन। कुहेस फाटए लगलैन। राघवि नोर पोछैत रहला आ नन्दिता नोर चुआबैत रहली। ओना नन्दिताक आँखि आ गालक स्पर्िसू राघविक मन दोसरे रंगक हुअ लगलैन। लाल-लाल कोमल गाल। िमि इत्यादि लगलाक कारणे किछकन। फूलल-फूलल गाल। नोर पोछबाक िमे समस्त गाल आ गरदेनक स्पर्ि अनेको बेर राघविके भेलैन। नन्दिता सेहो नहि रोकलखिन। िनै: िनै: राघवि नन्दिताक गालके सहलबए लगला। नन्दिता चुप रहली। राघविके मोन भेलैन जे नन्दिताके चुमि ली। मुदा मनके थीर केला। हलािक एक आँगुर नन्दिताक ठोर लग लऽ गेला। आँगुर काँपैत रहलैन। काँपैत आँगुरके एकाएक पाछू लऽ गेला। किछये कालक बाद फेर हिम्मत केलैन। ऐबेर ठुडडी तक आँगुरके लऽ गेला। हाथ अखनो काँपि रहल छेलैन। कनी कालक

बाद हाथके संयमित केला आ ठुडडीके सहलबए लगला। तीन मिनट धरि सहलबैत रहला। आब राघि धीरे-धीरे नन्दिताक कुसीक पाछा जा ठाढ भऽ गेला। फेरो अपन आङुरक हरकतके बढबए लगला। आङुर आब नन्दिताक रसगर-रमनगर ठोर दिस याता पारम्भ केलकैन। पूरा िरी घामसू अनेरे भीज गेलैन। राघिके हाथ फेरो कापए लगलैन। हाथ फेर ठुडडी दिस लऽ एला। बीच-बीचमे र मालसू नन्दिताक नोर सेहो पोछैत रहला। आब अन्तिम पयास केलैन आ आङुरके नन्दिताक ठोरपर राखि देलखिन। नन्दिता जेना स्पिनसू जगली तहिना तुरन्त अपन हाथसू राघिकि आङुरके हटा देलखिन। मुदा राघिकि आङुर फेर हरकतमे आबि गेलैन आ नन्दिताक ठोरपर आबि थमि गेलैन। आब कहलनाइ कम भऽ गेल छेलैन। ऐबेर नन्दिता सेहो पतिकार नहि केलखिन। राघि नन्दिताक निच्चा-ऊपरक ठोर सहलबैत रहलाह। नन्दिता आ राघि दुनू गोरे चुप छला। राघिकेर हाथ आ नन्दिताक ठोर अपन हरकतमे ियस्त छल। आकषणि आ मनोभाकि मिलन। आब राघि दोसर हाथसू नन्दिताक गालके सहलबए लगला। ई िम पाच मिनट धरि चलल। राघिकि हिम्मत बढैत गेलैन। आब हाथ नहि कामि रहल छेलैन। राघि आब कनी हिम्मत करैत नन्दिताक केसके माथ लग चुमि लेला। नन्दिताक फेरो कुनो पतिकार नहि केलखिन। मुदा राघि कनी सोचमे जेना पडला। अन्तत: नन्दिताक संग हुनकर ई बेहिार केतेक उचित छेलैन? मुदा एकै क्षणमे राघि जागत भेला आ सोचलैन- ऐमे पाप केहेन? नन्दिता भाभी तू हिसनेहक पियासल छैथ। पियासलके पानि पीयाबएमे कुन पाप? ई सोचि राघि नन्दिताके जोरसू पकडैत हुनकर ओंठपर अपन ओठ पाछा देने लऽ एला। नन्दिता आङुखि झापि लेली। राघि चुम्बनक पहार-पर-पहार करए लगला। फेर अपना मुहमे

नन्दिताक ओंठ लऽ चूसऽ लगला। नन्दिता सेहो राघकि संग देमए लगली। दुनू नैसर्गिक लोकमे विचरण करए लगला। ितारिण सरमणीय चिन्ता मुक्त, भय मुक्त भऽ चुकल छल। हू, राघि आ नन्दिता जोर-जोरसू आ जल्दी-जल्दी सास लैत छला। राघकिे इच्छा भेलैन जे नन्दिताके कि अपन छातीसू सटा ली। अपन िहपासमे समेट ली। हाथ एक क्षणक हेतु कि दिस बढलैन मुदा कहि नहि किएक हाथ आपस खीच लेलैन। राघि नन्दिताके छोड़ि पुन: अपन स्थानपर आबि गेला। नन्दिता पाच मिनट धरि पाथरक मूर्ति जिका बैसल रहली। फेर उठली। अपनाके ठीक केलैन। राघि दिस देखैत बजली-

“हम पाच मिनटमे िपस अबै छी।”

दस मिनटमे नन्दिता राघि दिस आबि गेली। राघकि सामने बैसैत कहलखिन-

“राघजिी, अगर अहा लग समए हो तू हम अपन जीनिक ृितान्तक किछु विषि घटनाक यथाथ अहा संगे बाटए चाहै छी?”

राघि तू ऐ बातक इन्तजारे करै छला। झट-दे कहलखिन-

“हू-हू किएक नइ। अबस्स सुनाउ।”

नन्दिता-

“भऽ सकैत अछि सभटा ृितान्त कहैत-कहैत भोर भऽ जाए। ऐ स्थितिमे अहा की करब? फेर भोरे-भोर अहा केतौ केना जाएब? अरामो करब तू आि्यक ने?”

राघि-

“अहा चिन्ता नहि कर । जेतेक समए लेबाक अछि लीअ। हमरा एतेक दिनक बहुत रास बात सभके लिखबाक अछि। काल्हि केतौ ने जाएब। अहासू ितालापक पाित तीन-चारि घण्टा सूतब तत्पाित

लिखनाइ पारम्भ करब।”

राघिक बातसँ नन्दिता आशस्त होइत बजली-

“हमर बिन्तसँ पलथी मारि कऽ बैस जेबाक इच्छा अछि। ऐसँ कथा निधोख कहि सकब।”

राघि उठला आ नन्दिताके हाथ पकडैत कहलखिन-

“ठीक छै तखन पलंगपर पलथी मारि बैस जाउ। मच्छरदानीक भीतर बैसब तँ मच्छरो ने काटत।”

नन्दिता राघिके आगहक सम्मान करैत पलंगपर मच्छरदानीक भीतर बैस रहली आ कथा पारम्भ केली। नन्दिताक दुनू पुत अलग कक्षमे निनभेर छला। राघि केबाडीके सटा अपनो मच्छरदानीमे आबि गेला आ नन्दिताके पकैड हुनका माथके अपन पलथीपर राखि लेलैन। नन्दिता कुनो पतिकार नहि केली। राघि नन्दिताक केस सहलबए लगला आ कथा पारम्भ करबाक इसारा केलैन।

नन्दिता कथा कहब आरम्भ केली-

“हमर पिता एक सभान्त अभियन्ता छला आ बिहार सरकारमे पैघ ओहदापर छला। हम सभ दू बहिन आ एक भाँइ छेलौ। सभसँ पैघ हम। हमरासँ तीन बखिक छोट हम्मर बहिन। आ छह बखिक छोट भाए। हम्मर माता-पिता हमरा सभ संग कुनो विभेद नहि केलैन। हम तीनू भाए-बहिन कन्भिन्ट स्कूलमे पढलौ। हमरा लडका सभसँ मितता छल आ ओइ लेल कुनो पतिरिसँ कुनो पान्दिी नहि। जखन पाँचमी कक्षामे गेलौ तँ बाबूजी साईकिल कीन देलैन। एक मासक भीतर साईकिल चलाएब सीख गेलौ। स्कूल आ बजार इत्यादिमे साईकिलसँ जाए-आबए लगलौ। चूकि हमर बाबूजी आ मा लम्बा छला। तँए हमहू तीनू भाए-बहिन कद-काठीमे छरहरगर आ गोर-नार रही। जखन हम दस बखिक भेलौ तँ लोकके बूझि पडए जे चौदह

बखक्ति छी। सुनैर तू रहबे करी। बपताजीक आमदनी अगाध रहैन तूए कुनो तरहक दक्कत नक्ह छल। जखन कखनो कुनो चीज, खेलौना, िस्त, भोज्य पदाथआवक्चक जर रत भेल, हमर माता-बपता तुरन्ते आक्त दइ छला। ऊपरसू जेठ सन्तान हेबाक फायदा अलग छल। हम अपन माता-बपताक पथम सन्तान रही। आ हमर माथ हमर नाना-नानीक कपार...।''

इम्हर राघि, नन्क्दताक कखनो केस तू कखनो ओठके सहलबैत रहैन। कखनो काल राघिकि हाथ नन्क्दताक गरदेन धक्र चक्ल जाइन। मुदा राघि अपना-आपके गरदेन धक्र सीक्मत रखला। हू, बीच-बीचमे ठोर, आूक्ख आ कपारपर चुम्बन करैत रहला। नन्क्दता पक्तकार नक्ह करक्थन। ओइसू आरो हक्रयर होइत उजाि न भऽ अपन कथाक बखान करैत रहली नन्क्दता।

नन्क्दता-

''हमर बपताक एक संगी पटना विशविदालयमे इक्तहासक पोफेसर छेलक्खन। जखन हम मैक्टकक परीक्ता दऽ देलौ, तक्हया पनरह बखक्ति रही। बपताक पोफेसर क्मत हमरा ओतए एला। हमर माता-बपता हुनकर नीक आि-भगत केलक्खन। हम हुनकर पएर छूक्ब कऽ पणाम केक्लऐन। ओ हमरा पुछला, की करै छी बुच्ची? हम जबाि देक्लऐन- हम ऐबेर मैक्टकक परीक्ता देलौ अक्छ। ओ पसन भेला। ओही बातक िममे हमर बाबूजी पोफेसर साहैब लग क्ािदन केलक्खन, कनी बुच्ची लेल योग्य बर देखू ने पोफेसर साहैब? पोफेसर साहैब बजला- कनी समए देल जाउ, हम अबस्स नीक बर तकबाक पयास करब। हमर बपताजी हुनकर आशासन सुक्न गद्-गद् भऽ गेला। हमर बाल-सुलभ मनके ई पपोजल नीक नक्ह लागल।''

नन्क्दता बजैत रहली आ राघि सुनैत रहला। एकके कथा सुनेबाक

आतुरता तू दोसरके कथा सुनबाक बिजासा। दुनूक मनमे एक-दोसराक मानसिक आ ारीरिक पेमके पाप्त करबाक उत्कट अभिलाषा आ इच्छा। मुदा ऐ इच्छाके केलि कामेक कहनाइ उचित नहि। राघकि हाथ आब कनी मयादाके भंग करैत गरदेन आ बाहि लग आबि गेलैन। हाथ पुन: कापए लगलैन। मुदा हिम्मत नहि हारला। धीरे-धीरे राघकि हाथ नन्दिताक िक्के स्पािकरए लागल। पहिने एक आूगुर, फेर दोसर आँगुर आ बादमे समस्त हाथ...।

नन्दिता आनन्दित भेली। मुदा कथाामिक पिाहिके रोकलैन नहि। कथा चलिते रहल।

..नन्दिता-

“जखन पोफेसर साहैब चलि गेला तू हम अपन माएसू लडए लगलौ, जे अखन नहि करक अछि विाहि। पहिने पढब। एम.ए. करब। कुनो कौलेजमे नौकरी करब। फेर देखल जेतइ। मा अहा पिताजीके कहि दियौन जे अखन हम्मर विाहिक सम्बन्धमे नहि सोचैथ आ ने केकरोसू बिा करैथ।”

“..मुदा माए छेली बुझनुक आ परम्परासू बान्हल। झट-दे बजली, अहा चुप रहू ने बुची। कुनो आइये लडका तका गेल? जहा धरि पढबाक बात छै तू पढैाली लडकी बिआहक बादो पढि सकैए। अहाक काज अछि पढब आ घरक काजमे दक्ता पाप्त करब। बिआहक बिणए बाबूजीपर छोडि दियौन। जहा धरि पोफेसर साहैबक बात छैन तू ओ बडड नीक लोक छैथ। केतेको नीक कन्यादान आ बरदान करा चुकल छैथ। ऊपरसू अहाक बाबूजीक बालसखा सेहो छैथ, जे करता से नीके करता।’

“माइक मनमे पोफेसर साहैबक पति अटूट बिासाास देख हमहू कनी बिािन्त भेलौ। आ एकबेर पुन: मस्तीक बिनगी जीबाक पयास करए

लगलौ। मुदा मस्तीबला दिनमे जेना गहण लावा गेल हमरा! तीन मासक भीतर, एक दिन पोफेसर साहैब बाबुु बजाएल आ नौतल पाहुन जका हमर आफिसपर एक आरो व्यतक संग पहुचला। संजोगसू पिताजी घरेपर छला। पोफेसर साहैबके नीक जका आव-भगत आ स्वागित-सत्कार कएल गेल...।"

"..चाह इत्यादि गहण करला बाद पोफेसर साहैब अपन अटैची खोलला आ एकटा पोस्टकाडसाइजक ब्लेक एण्ड व्हाइट फोटो निकाला पिताजीके देखबैत कहलकैन जे ई लडका बड संस्कारी छैथ। बी.ए. आ एम.ए. दुनूमे गोल्ड मेडल भेटल छैन। पी.एच-डी.क थीसीस तैयार छैन। एक मासक भीतर जमा भऽ जेतैन आ छह मासक अभ्यन्तरे पी.एच-डी.सू अवाडेड भऽ जेता। थोडबे दिनमे लेक्चरर भऽ जेता। हू, उमेरमे करीब चौदह-पनरह बखक अन्तर अबस्स छैन।"

"..हमर बाबूजी गम्भीर होइत फोटो देखए लगला। जखन लडकाक सम्बन्धमे सभ जानकारी भेटलैन तू 'हू' कहि देलखिन। पंकजकार लग अधिकार मालाक पराकमण भेल आ विाहि तूइ भऽ गेल। भेलै जे एक मासक भीतर विाहि हेतइ। हम चिन्तामे मग्न भऽ गेलौ। आब की करू, की नहि? हमर आयु पनरह बखक आ हमर होमएबला पतिक आयु तीस बखक!!"

"..एकेटा आस लागल जे माए लग जाइ आ हुनकेसू बात करी। माए लग गेलौ। कहलयैन- 'ई की भऽ रहल अछि? तैपर माए बजली- 'देखू बुच्ची जे हेतै से नीके हेतइ। अहाक पिता अहा लेल कुनो गलत निणए थोडे ने लेता। लडका विदान छै। एकर फायदा अहाके भेटत। अहा असानीसू एम.ए; पी.एच-डी. इत्यादि कऽ सकब। ई लडका अहाके ऐ दिशामे उत्साहित करता आ सभ तरहक मदैत

देता। तूए, अहा बचन्ता जुका कर । हमहू तू अहा बाबूजी सू तेरह बखक्रि छोट छी। कुन समस्या अछ हमरा? कहू ने?"

"..आब हम मान लेलौ जे हमर समस्याक कुनो कादान नक्ह अछ। आत्म समपनि मात बाँचल छल। एक मासक भीतर हमर वििहि भऽ गेल। वििहक रातमे ििध-बेिहार करैत-करैत चार बाज गेल। हमरा ईहो नक्ह बुझल छल जे वििहक पित िर-कन्या आपसमे बात करै छै। अगर दुनूमे सामंजस्य हौउ तू िरीरक सम्बन्ध सेहो स्थापित कऽ सकैत अछ। हम वधिकरीक बगलमे वििहि भेलोपरान्त भेर नीनमे सुता रहलौ। ियद सुधाकरके ई बात नीक नक्ह लगलैन। वानसरमे करीब साढे दस बजे, कोहबर घरमे हमरा असगरमे बजा पुछलैन- बुच्ची, रातमे अहा हमरा लग कए ने एलौ? तैपर हम कहने रक्हऐन- नीन आब गेल छल। सुता रहलौ। तखन ओ कहने छला- ठीक छै आइ क्दनमे हमरा लोकैन गप करब। कहलयैन- ठीक छै।"

"..मुदा कक्ह नक्ह कए हम अपन सहेली सभ संग बात-चीतमे लावा गेलौ। सुधाकर लग नक्ह जा सकलौ। पाच बजे साझमे सुधाकर हमरा बजेला। हम सहज भािसू हुनका लगमे गेलौ। ओ तामसे घोर छला। हमरा घरमे पिि कक्रते-मातर कहलैन, अहा कए ने ऐलौ आइ क्दनमे?"

हम कहलयैन-

"बसरा गेल। सखी-बक्हनपा संगे बैसल रही।"

सुधाकर-

"बुच्ची अहा बीस बेर कान पकैड कऽ उठू-बैसू। ई हमर आदेि अछ।"

"हम कहलयैन- कएक? हम नै उठब-बैसब। नक्ह आब सकलौ तू

ऐ लेल कान पकैड कऽ उठ-बैस करबाक की पयोजन?"

"..हमर ई जबाि सुक्त सुधाकर चप्पल लऽ हमरा क्दस बढला। हमरा भेल ई आब हमरापर पहार करता। एकर पक्तकार करी। जू नक्ह करब तू क्जनगी पयक्न्त क्हनकर कोपभाजन बनए पडत। ई सोक्च हमहू अपन पेन्क्सल क्हलबला सैण्डल हाथमे उठेलौ आ क्चक्चयाइत बजलौ, खबरदार जे हमरा मारलौ। अगर हमरा मारब तू हमहू चप्पलसू अहाके कपार फोक्ड देब।"

"सुधाकर बूक्झ गेला जे हम हुनका केिल गीदर भभकी नक्ह देखा रहल छेक्लऐन अक्पतु अगर ओ हमरा लग एला तू हमर पेन्क्सल क्हलबला चप्पलसू...। सुधाकर ठमैक गेला। हाथसू चप्पल क्नच्चा राक्ख देलैन। हमहू अपन पेन्क्सल क्हल सैण्डलके क्नच्चा राक्ख देलौ। आब सुधाकर क्कछु अभर गाक्रक पयोग करए लगला। हम फेरो िरनी जका क्चक्चएलौ, खबरदार जे अभर भाषाक पयोग केलौ आ गाक्र पढलौ हमरा! अहा एकटा गाक्र पढब तू हम दसटा गाक्र पढब। एहेन बेिहार हमरा लग नक्ह चलत।"

"..सुधाकर अपन मन मसोक्स कऽ रक्ह गेला। केिल एतबे बजला जे राक्तमे गप करब, अखन अहा जाउ..।"

"..हम चोटे कोहबर घरसू बाहर भऽ गेलौ। ओना ई क्नवि त भऽ गेल जे ई आदमी िवदान कम आ राक्स बेसी अक्छ। एकरा पती नक्ह एक सेिवका अथबा दासी चाही। मुदा हम दासी थोडे ने रही?"

"..राक्तमे सभ िधि-बेिहारक बाद पाचटा गीतहाक्र िवदापक्तक गीत-

'सुन्दक्र चलली पहू घर ना
चहु क्दस सखी सब कर धरा ना रे
घरबा मे जाइते परम डर ना रे
जइसे रहु डर ििि कापे ना रे...।"

“..गबैत हमरा कोहबर धरि लऽ गेली। हमर स्वीकृत ‘जैसे रहू डर िि कापे ना रे’ बला छल। पनरह बखक जीनिमे पहिल बेर डरक अनुभूति भेल छल। खैर!भीतर पि केलौ। ओछाइनपर चम्पा फूल छिड़ियाएल। इतसू समुच्चा कोठली सुगन्धित। सुधाकर चुपचाप एक मोट पोथी पढबामे तल्लीन छला। हम जखन भीतर गेलौ तू कहलैन- आउ बैसू बुच्ची। हम बैस रहलौ। सुधाकर ठाढ भेला। घरक केबाड भीतरसू बन्द केला। आ हमरा लग आबि कहलैन- ‘बुच्ची, आइसू हम आ अहा पति-पती छी। ऐ बातक एहसास अहाके अछि ने?’’

“..हम चुपचाप रही। सुधाकर बजैत रहला- ‘अहाके बुझल अछि जे आब हमर िरीरपर अहाक अधिकार अछि आ अहाक िरीरपर हमर। आइसू हम सभ एक-दोसरक, िरीरक स्पि िआ पयोग करब। ई कहैत सुधाकर हमरा लग आबि हमर गालके चुमि लेला। हुनकर मुखसू जदा पानक गंध अबैत छल, जे हमरा नीक नहि लागल। ऐसू पूि स्ती-पुरखक बीच यौन सम्बन्धक नाम अबस्स सुनने रहिऐक मुदा केना होइ छै, की सभ होइ छै, की पवि या छै, तइमे स्ती केर भूमिका की होइ छइ आ पुरखक भूमिका की होइ छइ, तइ सब बातक ने तू कुनो जानकारी छल आ ने कुनो अनुभि। हम एही गुण-धुनमे रही। मुदा सुधाकर निलज्जि बनि अपन िस्त हमरा समक खोलए लगला। कनी काल तू हम चुप रहलौ मुदा जखन ओ लगभग नि िस्त भऽ गेला तू बाजि उठलौ- ‘ई की कऽ रहल छी अहा? निलज्जिताक पाराकाष्ठा पार कऽ रहल छी। ई नीक बात नहि। उघारे देहे ओ थेथर जका दात निपोरैत हमरा दिस बढला। हुनकर भािना हमरा विध्िसिक लावा रहल छल। हम पलंगपर सू उठि कऽ बाहर भगबाक निरथकि पयत केलौ। मुदा बेकार। पाछासू हमर झोट

पकैड सुधाकर हमरा ओछाइनपर अनला आ सीधे हमर कि पकैड लेलैन। हम हाथ छोडेबाक यत्न करए लगलौ। मुदा बेकार। हमहू जल्दी हाक्र मनबाक लेल तैयार नक्ष। सुधाकरक दक्ष्ना हाथक आूगुरके दातसू हम काटए लगलौ। आब सुधाकर तामसे पचण्ड भऽ एक घूसा हमरा मूहपर मारलैन। लागल जेना आूक्खक आगू अन्हार पसैर गेल। हम लाचार भऽ गेलौ। बक्लष्ठ राक्स लग एक पनरह बर्खक बच्ची भला की टीक सकै छक्ल। सुधाकरके तामस कम नक्ष भेलैन। हमरा ओ तीन चमेटा आरो मारलैन। फेरो हमर समस्त कपडाके खोक्ल क्नस्ति कऽ दक्नंदा जका हमर अंगक संग खेलए लगला। हब्सी जका हमर कि, दरदेन, पीठ, क्नतम्ब आक्दपर दात कटलैन। आ हमरा संगे बलात्कार केला। एक ओहन बलात्कार जेकरा सामाक्जक मान्यता पाप्त छै। एक ओहेन बलात्कार जइमे बलात्कारीके लडकीबला सभ भगिनिक दजा दइ छइ आ पक्त क्दन बलात्कार करबा लेल असिर पदान कऽ अपना-आपके धन्य बुझैत अक्छ। एहेन बलात्कार जइमे लडकीके माए, बक्हन, भाऊज, सखी एं अन्य मक्हला सभ सजा कऽ, संविर कऽ उत्सकि माहौल बना गीत-नाद गबैत शृगार कए बलात्कारीक कक्मे असगरे छोक्ड अबैत छै। ओइ अभावानक िदना, ददकि के बुझत? नारीक जनम नक्ष क्दअए विधाता..!"

'विधाता' कक्ष नन्क्दता थोडे कालक लेल जेना ठमैक गेली। मुदा ओ पुन: ओही िममे आक्ब बाजए लगली-

"..हमरा बीचमे दाती लवा गेल। हमर कानबक अिज नक्ष क्छक्डअए तइले एक हाथसू हमर मूहके दबने रहला सुधाकर। जखन दाती लागलतू पाक्नक छीक्ना माक्र दाती छोडाबैथ। हम आब अपना-आपके सरेण्डर कऽ देलौ। भक्र राक्त चील आ नक्ढया जका सुधाकर हमर

मास नोचैत रहला। तीन बेर बलात्कार केलैन। भोरे साढे पाच बजे कहलैन जे आब बाहर जाउ। हमर पएर डगमगा रहल छल। आूक्ख झूपा रहल छल। समुच्चा ि रीर गुड-घा जका ददि करैत रहए। गुप्तागक ददकि की चचा करी। नक्ह बाजी सएह नीक। पक्हल बेर ई अनुभूक्त भेल जे बेटी बक्त कऽ रहनाइ केतेक कष्टमय छै। बरामदाक कातमे अखरे चौकीपर बेहोि ीक हालतमे पक्ड रहलौ।''

''..थोडबे कालक बाद हमर भाभी एली आ पुछलैन- बुच्ची पाहुन पक्सन एला? हम तामसे धोर होइत जबाि देक्लऐन- भाभी एखन जाउ! हमरा असगर सुतए क्दअ।''

''..पछाइत माए एली। हमर माथ सहलबैत पुछलैन- बुच्ची, मूह-हाथ नक्ह धोब? मौहकक बेर भऽ गेल अक्छ। पाहुन इन्तजार कऽ रहला छैथ। हमर कुहेस फाक्ट गेल। हम माएके भक्र पाज पूक्जया पकैड भोकाक्स पाक्ड कानए लगलौ। संयोगसू ओतए क्कयो नक्ह छल। तैयो माए दोसर घरक भीतर लऽ गेली। हम काक्त कऽ सभ बात कहलयैन। हम कनैत रहलौ आ माए हमरा अपन करेजसू सटेने रहली। भेल सभ क्दन अक्हना माइक छातीसू सटल रही।''

''..माए गम्भीर होइत बजली- बुच्ची की करबै एकरे कहै छै नारी जीनि! समझौता सबतक्र सभ पक्रस्क्थक्तमे स्तीगणेके करए पडै छै। अहाके नक्ह बुझल अक्छ जे हम अहाक क्पताक संग केतेक समझौता केलौ अक्छ। अहा पाहुन संगे क्नल कऽ रहू। दुनू गोरेमे समझौता भऽ जाएत तू जीनि स्िगि भिऽ जाएत। पारम्भमे कनी क्दकत सभके होइ छै। अहा क्चन्ता जुक्न करब।''

''..भेल जेना माय सेहो हमर ददकि नक्ह बूक्झ सकली। नीक ई रहैत जे ऐ नृि सकारी दुगुना उमेरक कारी भुजुंग डेढ आूक्खक वि दानक बदला हमरा क्सनेह करएबला, हम-ि यिस्क कमे पढल आ सुन्दर

युकि हमर पक्ष रहैत। मुदा बाबूजीक पागक रक्षाक लेल आ सगा-सम्बन्धी लग अपन ाखी बघारबा लेल बाबूजी हमरा राक्षक संग बान्हि देला। ई चण्डाल हमरा लेल कसाइ अछि।"

"..जीनिक यएह क्रियक्ता छै, ई हमरा जात भऽ गेल छल। लेकिन हम ऐबातक क्षणिए अबस्स लऽ नेने छेलौ जे कुनो परिस्थितिमे सुधाकरके अपनापर आिमण नहि करए देबैन। आब अगर हमरा ओ मारता तू चोरा कऽ माहुर खुआ जान मारि देबैन।"

"..ऐ दृढ पक्षजा आ आत्म विशासक संग माइक संग हम पएर-हाथ धो मौहक करए हेतु चलि गेलौ।"

"..दोसर रातिमे हमर र प रनचण्डीबला छल। हम घरमे पिि करिते सुधाकरके कहि देलिऐन, देखू! हम अहाक पती छी। ि्िया नहि। हमरासू ािरीरिक सम्बन्ध चाहैत छी। राखू। मुदा हमरा संगे भविसिमे मारि-पीट नहि कर । अगर ई स्थिति भेल तू हमरासू खराप कियो ने हएत। केतेक मारब घरमे अहा। बाहर निकलैत देरी हम चप्पल, ईटा कुनो िस्तुसू सबहक समक पहार कऽ देब। तैयो नहि मानब तू थाना जा एफ.आई.आर. दजकिरा देब। अगर अहा सम्मान करब तू हमहू सम्मान करब आ चुप रहब।"

"..हमर ऐधमकीसू सुधाकर कापि गेला। भेलैन इज्जत मटिया-मेट भऽ जाएत। ऐबेर ओ किछुनहि बजला। यदपि ओ ओइ रातिमे तीन बेर हमरा संगे यौन सम्बन्ध स्थापित केलैन- बलात् आ हमरा इच्छात विपरीत। हम सोचि लेलौ जे ई मनुख हमर तनक भूखल अछि। मनक भूखल नहि अछि। हमहू एकरा संग मनसू पेम आ स्नेहालिंगन तू नहि कऽ सकैत छी। फेर कऽ लीअ जेतेक हमर ािरीरक उपयोग करत। हम जड बनल रहब...।"

"विािहक पाच बखकि पाित हमर पथम पुत अमरेि जीक जन्म

भेलैन। तीन बखक्कि बाद कामल भेला। तेकर बाद कुनो बच्चा नक्ह होमए देक्लऐ। जडति जीनि चलैत रहल। सुधाकर आ हम दू विपरीत बाटक बटोही। हम सुधाकर संगे केतौ सभा, कायमि, विाहि-दान इत्याक्दमे नक्ह जाइ छी। विाहिक दोसरे क्दनसू बाबूजीके टोकनाइ तक छोक्ड देल। अबैत छैथ तू यंत जका पणाम कऽ लइ क्छऐन। एकर अक्तारक्त कक्छु नक्ह।"

"विाहिक तीन बखक्कि िदि एक घटना घटल,जे हमर पक्रिारके झूककोक्र देलक।"

राघि-

"से की?"

नन्क्दता-

"हमर छोट बक्हन रावानी हमरा ओतए आएल छक्ल। करीब पाच मास एतए रहल। कक्ह नक्ह केना ओकरा सुधाकर केर छोट भाए पभाकरसू पेम भऽ गेलइ। एक मासक बाद हमरा रावानी ऐ बातक जानकारी देलक। हम मना केलऐ मुदा दुनू एक-दोसरक पेममे पागल। एक-दोसरक संग मरबा आ जीबाक सप्पत खेबाबला। यदक्प सुधाकर सेहो ऐ पेम-पसंगसू पसन नक्ह छला। हम्मर माता-क्पता सेहो दुनूके बुझेलक्खन। मुदा बेकार। एक क्दन दुनू अपन हाथक नस काक्ट लेलक। जखन पता चललै तू डाक्टरके बजाएल गेल। दुनू पक्रिार रावानी आ पभाकरके पेम लग झूकक गेल। विक्धित् विाहि भऽ गेलइ। रावानी विाहिक पिात् जमक्दपुर चक्ल गेली। जमक्दपुरमे पभाकर अंगेजीक लेक्चरर छला।"

"तीन बखधिक्र तू बडड नीक रहलै, एकटा बेटा सेहो जन्म लेलकै मुदा बेटाक जन्म होइते-मातर दुनूमे खट-पट परम्भ भऽ गेलइ। माक्र-पीट पारम्भ भऽ गेलइ। स्क्स्थक्त बद्-सू-बदतर होइत रहलै।

एकबेर तू रावानी तलाक तक लेबाक लेल मन बना लेलैन। मुदा हमर बाबूजी, सुधाकर, हमर ससुर कहियो चाहे रावाणीक ससुर,सभ मिल कऽ रावाणीके सम्बन्ध विच्छेद नहि करए देलखिन पभाकरसू। किछु दिनक बाद रावाणी पुन: जमिदपुर गेली। छह मास धरि ठीक रहलैन। सातम माससू िएह रामा िएह खटोला। फेर मतभेद-मनभेद पारम्भ। फेर मारि-पीटक सिलसिला। रावाणी जखन तंग भऽ जाथि तू हमरा फोनपर गप करए लगैथ। हम तू अपने लाचार छेलौ। की कऽ सकै छेिलऐन। खाली एतेक कहि दइ छेिलऐन जे हम तू मना केने रही ने रावाणी? ई सभ तू राक्सक पिरवािर अिछ। ई सभ िरक खालमे निढया अिछ। रावाणी किछु नहि बाजैथ। केिल िहचुिक-िहचुिक कऽ कानैथ। फेर कहैथ- बिहनदाइ! हमर िदने खराप छल। ई राक्स दार पीब जरैत िसगरेटसू हमर जाघ आ कनपटी जरबैत रहैए। कामातुर भऽ विपरीत तरहक सेक्स लेल हमरा बाध्य करैत अिछ। एकर िरीरसू विचित्र तरहक गन्ध अबै छै। एकरा की कएल जाए?"

"रावानीक पि्न छोट मुदा हमरा लेल यक पि्न छल- अनुतिरत।"

"आ अन्तमे जीबनक कष्ट आ पभाकर केर िरीिरक आऔर मानिसक यातनासू तंग आिब कऽ रावाणी असगरेमे अपन दिहना हाथक नि काटि लेली। घरमे िकयो ने रहइ। जखन राितमे साढे दस बजे पभाकर एला तू देखै छैथ जे िोिणतक धार बहैत आ रावाणी बेसुिध भेल पडल। पभाकरके किछु ने फुरलैन। उठा-पुठा कऽ नर्सिंग होम लऽ गेला। डाक्टर कहलिखन सभ किछु समाप्त भऽ गेल। रावाणी आब जीबैत निह छैथ। आ ऐ तरहे एक जीिनक दुखद अन्त भऽ गेल। रावाणीक आत्महत्याक पिात हमर बाबूजी के िदमाग खुजलैन। आब ओ बुझलिखन जे समािजक मयादा,

लोकाचार आ सोकायानाक नामपर केना मह्लिलाके ि ाषण आ दोहन कएल जाइत अछ। देखू रकसबा पभाकरके? आब ओ अनेरे नोर चुअबैत रहैए। असगरेमे मध्य रात्रमे रावाणी अहा केतए चल गेलौ? आदि-आदि कहकहआइत रहैए। लेकिन आब की। कहकहएने की हएत? रावाणी तू उठि गेली कमजरासू। अजाद भऽ गेली। नीके भेलइ। सभ दिनका झंझट, ि ाषण, मार-पीटसू नीक िचारी दुिनया छोिड चल गेल।''

रावाणीक कथा कहलाक बाद नन्दिता जोर-जोरसू सास लेमए लगली। छातीक धडकन बिढ गेलैन। मनमे अकुलाहट उठए लगलैन। राघि सेहो रिवति भऽ गेला। पोफेसर सुधाकर पभाकर एि सुधाकरक पित घृणा आ आि ोि भिर गेलैन। नन्दिताक पित िसनेह आ संि दिना बिढ गेलैन। नन्दिताक आूिखमे नोर छेलैन। गालपर सेहो नोरक टघार आिब गेल रहैन। राघि अपन र मालसू नन्दिताक नोर पोछलैन। नन्दिता राघिक पलथीपर सू माथ हटबैत बैसली। अपन कक दिस िदा भेली। राघि चुप छला। दस िमनटक भीतर नन्दिता तरोताजा भऽ मूह-कान धो, ि ीम इत्यादि लगा पुन: राघि केर ककमे पि ि केलैन। राघिक मन हकाित भेलैन। नन्दिता राघि लग आिब िबना किछु कहने पुन: राघिक पलथीपर माथ राखि लेट गेली। राघिक हाथ अनायास नन्दिताक माथपर चिल गेलैन। आ राघि नन्दिताक रेि मी केिके सहलबए लगला।

नन्दिता कथाके आगू बढेनाइ ि ुर केलैन-

''राघिजी, आब कहू ई सभ सम्मानक पात छैथ?''

राघि-

''निह नन्दिता भाभी निह। ई सभ तू कसाइ छैथ। िहनका लोकैनके अपन िजगी आ िकािक तमाम कागजातके आवामे जरा कऽ सुडडाह

कऽ लेबाक चाही। एहेन विकासक की पयोजन जे मनुखके जानवरि बना कदए?”

नन्दकता-

“देखू राघविजी, अखन डेढ रावत भऽ गेल अछि। अगर कालिह अहा केतौ बाहर नहि जाइ तू हम चारि-साढे-चारि धरि अपन जनगीक वृतान्त अकरसह सुनबए चाहै छी। अगर बाहर जेबाक विचार अछि तू ऐतै विराम दइ छी?”

राघवि-

“आगू अपन वृतान्त पूरा कर । हम कालिह केतौ ने जाएब। आगूक वृतान्तसू सेहो हम बहुत किछु सीखब। समाजक एहेन चीजके जानि रहल छी जेकरा सम्बन्धमे कल्पना तक नहि केने रही।”

राघवि ऐ आशासनसू नन्दकता शान्ति भऽ गेली। राघविके हाथ पकैड अपन लिग लऽ जा बजली-

“राघविजी, आइ पहिलबेर विवाहिक बाद कुनो पुरखक पति सिनेह उत्पन भेल अछि हमरा। हम तू सुधाकर आ पभाकरक करदानी देख ई मानि नेने रही जे सभ पुरख घटिया आ स्तीगणक चामक भूखल अछि। हमरा होइत छल जे पुरखके केलि अपन दंभ, लोक-लाज, समाजक मयादासू मतलब रहै छै। स्तीगणक मान, मयादा स्वाभिमान, भानि भाँडमे गेल, तइसू पुरखके की पयोजन? लेकिन अहाक विचार हमर मान्यताके बदैल रहल अछि। जइ तरहे पति दिन अहा अपन पती सहजन्यासू फोनपर बात करै छी। हरेक क्षणमे हुनकर भागीदारीके सम्मान करै छी, तइसू ई स्पष्ट अछि जे अहा स्तीके सही अर्थमे सहचरी मानै छी।”

राघवि-

“अहा ठीके कहै छी नन्दकता भाभी। ओना, एक बात स्पष्ट कऽ

दी जे जइ परिवारमे हमर जन्म भेल अछि तइमे महिलाक स्थान सर्वोपरि छै। हमर पिता बिना हमरा माएके पुछने कुनो काज नहि करै छैथ। परिवारिक संचालनक तमाम जिम्मेदारी माइक छैन। पिताजीक कार्य केवल अर्थोपार्जन छैन। केतेक कारणे हमर माए असगरे लैत छैथ। हमर पिता कखनो ओइ कारणपर अथबा माइक कारणे कमतापर प्रश्न नहि करैत छैथ। यएह स्वभाव हमरो अछि। बजारक खरीददारी, गृहकार्यक कारणे, नौत-हकार, कुटुम-परिवार सम्बन्धी तमाम कारणए सहजन्य अपने फैसला करै छैथ। तिनउठा हम हुनका दऽ दइ छिऐन। बाकी कुनो चीजसँ हमरा लेना-देना नइ अछि। आइ धरि हम कहियो सहजन्यासँ कुनो तरहक हिसाब नहि लेलिऐन। हुनकर आलमारी आ लॉकर खुजले रहै छैन, मुदा कहियो हम ओकरा नहि छुबै छी। यएह शायद हमरा दुनूक बीच असली पेमक गाठ अछि। सहजन्याक माता-पिताके हम अपन माता-पिता जकाँ सम्मान करै छिऐन। एकर फायदा हमरा ई भेटैए जे सहजन्या सेहो हमर माता-पिताके बडड सम्मान आ सेवा करै छैथ। हमरा हमर सासुरक लोक सभ कहै छैथ जे अहाँ अलग-तरहक लोक छी। अन्यथा पतीके माता-पिताक पक्ष केकर ध्यान जाइ छै- ससुरालमे।”

राघवक बात सुनि नन्दिता भावुक भऽ गेली। राघवक पक्ष पेममे हुनका आरो वृद्धि भऽ गेलैन। राघवक हाथके जोरसँ पकैड अपना छाती लग सटेलैन। राघवक हाथक पृष्ठ भाग आब नन्दिताक स्तनक अनुभव कऽ रहल छल। राघव ऐ अनुभवमे मग्न छला। धीरे-धीरे हिम्मत कऽ राघव अपन हाथके सोझ केला आ आब अपन दुनू हाथ सोझे-सोझ नन्दिताक स्तनपर रखि ओकरा आङीक ऊपरसँ दबाबए लगला। नन्दिता चुप रहली। कुनो प्रतिकार नहि..। थोडबे कालक पछाइत राघवक हाथ नन्दिताक आङीक भीतर प्रविष्ट कऽ अपन

आनन्दक हरकतमे संलग्न भऽ गेल। आनन्दित नन्दितो। पहिल बेर नन्दिता स्त्री आ पुरखक सामंजस्यक पेमक अनुभूति जे कऽ रहल छेली। आब जखन पोफेसर सुधाकरक यथाथक जान भऽ गेलैन तू राघिक मनक अपराधबोध सेहो खतम भऽ गेलैन। नन्दिताके िरीरिक आ मानसिक सहयोग देनाइ कवित रपे राघिके परमाथिक कायि अथबा ई कहू जे मानबाधिकारक रक्षा करब बुझना गेलैन।

नन्दिता आनन्दित होइत बिना राघिके हाथ हटेने अपन ृतान्तके आगू बढबैत जारी रखली-

“आ तही दिनसू हम यन्तति रहए लगलौ। जीनिक उत्साह खतम भऽ गेल। बचपनेमे अपना-आपके बूढ बुझए लगलौ! जखन दुनू बच्चा कनी नमहर भऽ गेला आ स्कूल जाए-अबए लगला तू पढनाइ पारम्भ केलौ। हलाकी खेनाइ बनाएब, घरक काज सम्हारब इत्यादि ऐ सभमे हम कहियो रकमी नहि रखलौ। सुधाकर चेरी इत्यादिक बेस्थिा केलैन। आथिक सहयोग सुधाकरसू नहि भेटल।पिता हमर माइक माध्यमसू किछु टका इत्यादि हमरा लेल भेज दइ छला। बादमे हमरा भेल जे स्यिंसिधा बनी। पढाइ पारम्भ केलौ। बी.ए; एम.ए. केलौ आ आब पी.एच-डी. केर थीसीस जमा होबएबला अछि। आिक पतिकूल सुधाकर विभिक केतमे अपन पभुतकि कारणे हमरा एम.ए. आ पी.एच-डी.मे नीक मदैत केलैन। फेर कथा लिखनाइ पारम्भ कएल। पारम्भमे मैथिलीमे आ बादमे हिन्दीमे सेहो। आब दुनू भाषामे एक पिह, पभाि एि अधिकारक संग लिखै छी। जखन एक आध रचना छपल तू लिखैमे आरो मन लागए लगल। हमर साहित्य सही अथमि हमर जीनिक आगू-पाछू घुमैत रहैत अछि।”

नन्दिता बजैत रहली। राघि सुनैत रहला। बीच-बीचमे राघिक हाथ नन्दिताक आङीक भीतर किछु अलग तरहक िीडामे ्यिस्त छल।

नन्दिता हाथक िीडासू आनन्दित होइत रहली। राघि नन्दिताक ृतान्त सुनबामे मस्त आ नन्दिताक संग िीडा करबामे मस्त। नन्दिता राघिके अपन ृतान्त सुनबैमे आ राघिक हाथक चहलकदमीके अपन आडीक भीतर आन्नद लेमएमे ्यिस्त आ पसन...।

नन्दिता-

“एकटा बात तू हम रावानीक सम्बन्धमे नहि बतेलौ। सहज मनक रावानी आत्महत्यासू पहिने पभाकर हेतु एक कविताक िमाण िहन्दीमे केली। हुनकर लाि लग एक पनामे मोचरल िकछु िविातक बुनक िछटासू भरल ओ कविता लोकके भेटलै। ओ कविता हमरा दुइये बेर पढला बाद कंठस्थ भऽ गेल अिछ। राघिजी, अगर अहा कही तू हम ओइ कविताके सुनाऊ?”

राघि-

“हू-हू। अबस्स सुनाउ नन्दिता भाभी। हमहू तू बुझी जे आत्महत्यासू ठीक पहिने रावानीक मनोदिा की छेलैन आ पभाकरजीक पित हुनकर सोच की छेलैन।”

आब नन्दिता आूिख मुिन कऽ रावानीक अन्तिम कविताक पाठ करए लगली-

“तुम्हारा दिया धोखा
मैने उठाकर िही रख दिया है
जहा बहुत संभाल के रखती थी
तुम्हारा प्यार..!

तुम्हारी सूरत मे
कहा िछपी थी ये फरेब की लत

और ये क्दलो से खेलने की क्फतरत
अन्दाज तुम्हारा
अभी तो सदमा है
गहरी नीन्द से मानो क्कसी ने
जबरदस्ती उठा क्दया हो क्झंझोड कर
ये भी टूटेगा

ठीक िैसे ही
जैसे तोड क्दया तुमने यकीन
और अधबने क्मटी के धरौदे
क्दल भी हमरा

कभी जो सोचू
तो एक लहर सी उठती है
बहुत तेज ददकी, जैसे खंजर ही
तुमने दे मारा

डूबने से पहले
एक झलक सी क्दखी थी
तुम्हारी िहद सी आूखो की
और राज तुम्हारा

अब तो यूं है
के होि आया है जैसे
मीलो चले गहरी बेहोिी मे

ये कदम आिरा

अब तो न मै हू तुम्हारो साथ
न मेरी वजद न जजबात
बस एक कािनी बाकी
जो अब है तुम्हारा

चली मै दूर गगन की ओर
न मेरा कोई ओर न ही छोर
सम्हालना बेसक लोक लाज के भय से हमको
यही अन्ितम पिरणाम हमारा।"

थोडे कालक पछाइत नन्दिता पुन: बाजए लगली-
"राघिजी बीचमे ई पसंग बाकी रिह गेल छल। एकाएक स्मरण आिब गेल तू सोचलौ जे अहाके सुना दी। रावानीक ई पत अपना-आपमे बहुत बात कहैत अिछ।"
रावानीक किवतासू राघि सेहो भािुक भऽ गेला। अपन नोर निह रोकि सकला।
कनी कालक बाद नन्दिता एकबेर पुन: अपन जीिन िृतान्तके सुनाएब पारभ केलैन। नन्दिता गम्भीर भेली आ बाजए लगली-
"राघिजी, किह निह कािए हमरा अपना-आपके शोतीय बाहण पिरािरमे जन्म लऽ एना बुझना जा रहल अिछ! बुझना जा रहल अिछ जेना पूिजिन्ममे सहस्तो गाइक बध केने रही। आ तेकरे फल भोिग रहल छी। ओना तू अपना-आपके शोतीय सभ सिशिष्ठ मानैत अिछ मुदा जहाधिर मिहलाक स्िथित छइ तू मिहलाके अमानिीय ढंगसू िोषण

ई समाज कऽ रहल अछि। कथा हमरा आ रावानीक जीनि आ िषणसू अन्त नहि होइत अछि। असंख्य रावानी आ नन्दिता ऐ तथाकथित सुशिक्षित बाह्मणक वितंडादि आ कर्मकाण्डक नाओंपर कुल, जाति, मूल आ परोपटाक नाओंपर अवमानित भऽ तप्त नोर झहरबैत अपन जिनगीके बिता रहल छैथ। केतेक रावानी या तू विरक्त भऽ आत्महत्या कऽ लइ छैथ, चाहे मारि देल जाइ छैथ। की कहलैन यातीजी-

‘अगराही लगौ बर बज खसौ

एहेन जातिपर बर धसना धूसौ

भूमिकम्प हौ या फटौ धरती

मा मिथिला रहिये कऽ की करती?’

..हम मानि लेलौ जे किछु नहि बाजब। हू, सुधाकरके ई भान अबस्स करा देलिऐन जे जू ओ हमरा िरीरपर पहार करता तू हमहू नहि छोडबैन। सुधाकर ऐ बातके बूझि गेला। हम कुनो सभा, संस्कार, गोष्ठी, उत्सव आदिमे सुधाकरक संग नहि जाइ छी। सुधाकरके एतेक अबस्स बता देलिऐन जे हमरा संसर्गसँ पूर्व ओ नीक जका साबुन तेल आदि लगा स्नान ध्यान कऽ लेथि। अन्यथा हमरा लग नहि आबथु। सुधाकर ऐ बातके स्वीकारि लेलैन। हमर यातना, हमर विरोह, हमर अरमानक टुटब, रावानीक पेम-विरह, विरहेतर िषण आत्महत्या सभ हमरा लेल साहित्य सृजनक आधार आ सामगी बनि गेल। हम लिखैत रहलौ। तीन विधामे- कविता, कहानी आ उपन्यास। दुनू भाषामे- मैथिली आ हिन्दी। जखन किछु कविता आ गल्प छपए लागल तू आरो उत्साहित भेलौ। बादमे रेडियोसू सेहो हमर कथा आ कविताक पसारण नीज िणीमे हुअए लगल।

..जनै छी राघजी! हमरा सभसू संतुष्टि ऐ बातसू होइए जे लोक

आ समाजआब नहु-नहु हमरा अपन साक्हत्य लेखनक कारणे जनैत अक्छ। हम पो. सुधाकरक पती या चीफ इन्जीक्यर केर बेटीक र पमे अपन पक्रचय समाजमे नक्ह जानबए जाहै छी। मनक आर सभ अरमान तू ध्सि्त भऽ गेल मुदा अपना कृक्तक कारणे आइ अबस्स जानल जाइ छी। पैछला मासमे हमर एक कथा 'सक्रता' आ एक कथा 'हंस'मे छपबा लेल स्ीिकृत भऽ गेल अक्छ। एक छोट कविता 'कादम्बनी'क नि अंकमे छपल अक्छ। ऐ सभसू हमरा आत्क्तक संतुष्क्ट भेटैत अक्छ।"

"आब अहासू भेट भेलापर हम पुरषक पक्त अपन नजक्रया बदलबाक पयास करब। जनै छी, जखन हम क्किार यिमे एलौ तू मनक अनन्त अरमान छल। अपन सम-कक तथा क्सक्यरो लडका सभ हमरा बड गौरसू देखैत छल। कतेक लडका सभ हमरा सुना-सुना कऽ कहैत छल- 'की चीज अक्छ नन्क्दता! जेकर कक्या हेतै ओ बडड भाग्यिाली हएत। एकर घरबला तू एक साल धक्र एकरा छोक्ड केतौ क्नकलबे ने करत।' आक्द-आक्द। ई बात सभ सुक्त हम बडड आनन्क्दत होइत रही। परीक देिमे विचरन करए लगी। भेल जे दुक्याक सभसू सुन्दर, क्सनेही आ रमनगर लडका हमर जीिन-साथी बनत। मुदा हाय रे भाग्य..!

'हे देि तू ई की केलह?

हमर भाग्यमे की क्लख देलह?

कारी िणि डेढ आूक्ख, हमरा उमेरसू पनरह बखक्र अक्धक आयुक रि! ओहो क्रकुि, क्थ्याक्भमानी, नारीक िषक, संस्कारहीन, आ मचण्ड! एहेन राक्स जे सोलह-सतरह बखक्र लडकीक भािनाके नक्ह बूक्झ सकै छल! भाॅडमे जाए ओकर विक्त आ समाजिास्तक जान। भाडमे जाए मयादा आ लोक-लाजक दीिार। दुभाग्य हमर ई छल

जे हमरा सासुओक सुख नहि भेटल! जखन सुधाकर इण्टरमिडिएटमे पढै छला, तखने माए मरि गेलखिन। कियो हमर भाविनाके बुझिनिहार नै।"

नन्दिता राघवि दिस देखैत बजली-

"राघविजी, आब तीन बजि गेल। अहाके निन्द आबि गेल हएत। दिन भरिक थाकल छी। अहा अराम कर, हम जाइ छी।"

राघवि-

"कुनो एहेन बात नइ छै नन्दिता भाभी। अहाके संगति हमरा नीक लगैए। किछु आरो बात कर। काल्हि तू आब केतौ नहिये जाएब।"

ई कहि राघवि नन्दिताके पूरा अपना-आपसू सटा लेलैन। राघवि नन्दिताक आडीके लगभग खोलि देलखिन। हाथ नाभीसू निच्चा जा चहलकदमी करए लगलैन। पारम्भमे नन्दिता राघविक हाथके रोकलखिन। राघवि नहि मानला। नन्दितो छोडि देलखिन। दुनू एक दोसरक देहक अनुभूति आ विलक्षण आन्नदमे मग्न भऽ गेला। दू शिरीर एक आत्मा बनि गेल। ई क्रिया करीब बीस मिनट धरि चलल। नन्दिताक गौर वर्ण आ राघविक श्यामल शिरीर एक अलग रंग-रभसक संजोग बना रहल छल। नन्दिताके आइ एना बुझा रहल छेलैन जेना ओ राघवि संगेअपन हनीमून मना रहल होथि। आब नन्दिताके एहसास भेलैन जे सुहागराति की होइ छै। आब ओ बुझली जे शिरीरिक सुख अगर स्त्री-पुरखक मिलाप आ आपसी सहयोगसू होइ तू ओ सुख सर्विधिक सुन्दर सुख छी। राघवि पागल जका नन्दिताक पत्येक अंगके अपना दिसमे केने जा रहल छला। नन्दिताके अपनामे समेटने जाइत छला आ नन्दिता राघविक पेममे मिशी जका घुलल जा रहल छेली। सभ मयादा खतम भऽ गेल छल। दुनू एक-दोसराक पत्येक अंगके पाकृतिक रूपे दर्शन केलैन, भोगलैन आ निरवात-निरवात भऽ

गेला। ने धोख ने लाज। केलि आ केलि शारीरिक आ मानसिक पेम आ समपर्ण। दुनू ब्याहल मुदा दुनूक पेमके बिछिल आ पथम पेमक अनुभूति कहल जा सकैत छल। अन्तमे कामोतेजनाक अधिक आधिसू राघव आ नन्दिता घामसू तरबतर भऽ गेला। राघव हाफए लगला। नन्दिता झट-दिना अपन वस्त्र सम्हारए लगली। राघव सेहो अपन वस्त्र आ ओछाइनके सेरियाबए लगला। नन्दिता ठाढ होइत बजली-

“आब तीन बाजि कऽ पच्चास मिनट भोर भऽ गेल। बीस मिनटमे बच्चा सभ उठि कऽ पढब शुरु करता। आब अहा सुतू। हमहू जाइ छी।”

राघव एकबेर पुन: नन्दिताक हाथ पकैड हुनका अपन हृदयसू सटेलखिन आ अनेको बेर अनेको स्थानपर चुम्मा लेलखिन। नन्दिता राघवकि ऐनूतन पयोगसू गद्-गद् भऽ गेली। आब नन्दिता अपन कक्षमे पविष्ट भऽ गेली।

राघव नन्दिताक सम्बन्धमे सोचए लगला। एकबेर भेलैन जे की ओ अपन अपन पती- सहजन्याक संग धोखा तू ने कऽ रहला अछि? एक मन ईहो भेलैन जे कदाचित राघव अपन ऐ कृत्यसू पोफेसर सुधाकर-संगे विासघात तू ने कऽ रहला अछि? फेर भेलैन जे नहि नन्दिताक समस्त वृतान्त बुझला बाद शायद राघव आ नन्दिताक बीच जे किछु भेल ओ कविवत र पेण सधिा धमकि कायछिी। यएह बात सभ सोचैत-सोचैत राघव नीनभेर भऽ गेला।

पात: कायत समैपर राघव उठि गेला। आश्चर्यक बात ई जे नन्दिता सेहो चहकैत उठली। हुनकर सौन्दर्यमे आइ एक नैसर्गिक रोहानी झलकैत छल। समुच्चा शरीरक पोर-पोर जेना पेम-पसंगक अनुभूतिसू खिल रहल छेलैन। नन्दिता बेबीक आबैक पतीक्षा नहि केली। सीधे

रसोइ कक्षमे गेली। सर्वप्रथम राघव लेल इन्होर पाक, तत्पश्चात नेबोबला चाह लऽ कऽ आबि गेली। नन्दिता आ राघव संगे-संग चाह पीलैन।

राघव स्नान-ध्यान केला बाद घर बन्द कऽ दू घण्टा सुतल रहला। तकर बाद दू घण्टा धरि अपन व्यक्तिगत डायरी लिखलैन। आब भोजन तैयार छल। राघव आ नन्दिता संगे भोजन केला। भोजनक बाद नन्दिता बेबीके दस टका आ गहुम दैत कहलखिन-

“बेबी, जो गहुम पीसेने आ। आइ-काल्हि मीलबला दोसर चीज मिला दइ छै, तूए अपना सामनेमे गहुम पीसा कऽ चिकस नेने आ।”

बेबी नन्दिताक आजाक पालन करैत गहुम पीसबैले विदा भेल। आब समए दू बजि कऽ पच्चीस मिनट भऽ रहल अछि। नन्दिता राघवकेँ कक्षमे प्रवेश करैत बजली-

“राघवजी, आब ऐ घरमे मातहम आ अहा छी। हमर दुनू बालक साढे चारि बजे साझमे स्कूलसू विदा हएत।”

राघव नन्दिताक इसारा बूझि गेला आ झट-दनि घर बन कऽ लेलैन। आब नन्दिता आ राघव भयमुक्त भऽ ताविरण पाबि कामदेवक आगोशमे मग्न भऽ गेला। करीब एक घण्टा धरि दुनू एक-दोसरामे पूर्णरूपेण समर्पित भऽ गेला। हरेक दैहिक सुखक बाद दुनू आर उत्साही आ स्फूर्तिवान भऽ जाइत रहैथ। दुनूक चेहरापर एक फराक चमक झलैक रहल छेलैन। लगभग चालिस मिनटक पछाइत नन्दिता राघवकेँ कहलखिन-

“राघवजी, आब घरक केबाड खोलि दियौ। बेबी कुनो क्षण आबि जाएत। बेबी आ हमर दुनू बालक सुधाकरक गुप्तचर अछि। ऐंगसू हरैद तक सभ बात सुधाकरके बतबैत रहै छैन। एकरा सभ लग एक बातक धेयान अबस्स रहए जे हमरा लोकैन कुनो ओहन हरकत

नहि करी जइसू एकरा सभके कुनो आभाष लगइ।"
राघव गरदेन हिला नन्दिताक बातके समर्थन केलैन।
आब सभ राति नन्दिता अपन नि रचनाक डायरीमे आबि राघवकि कोरामे माथ रखि अपन साहित्यक चर्चाक संग-संग पेम-पसंग आ देहक संसर्ग सेहो चलैत रहलैन। आब दुनूक मध्य मानसिक, साहित्यिक आ ारीरिक समन्वय पकिपक्व भऽ रहल छेलैन। दुनू एक-दोसरक पति समर्पित एना जेना राघव अठारह बखकि होथि आ नन्दिता सतरह बखकि। आ उमहर ऐ सभ घटनासू बेखबर पोफेसर सुधाकर बनारसमे कॉपी जूचबामे मग्न...।
जखन राघवकि दिल्ली जेबाक पाच दिन ष रहि गेलैन तहिया पो. सुधाकर आबि गेला। दोसर दिन बिहार बन्द रहइ। कारण बसबला आ टैक्सीबला बन्दक आह्ान केने रहै, तूए राघव कफलडकिलिेल केतौ ने गेला। इमहर पो. सुधाकरके चलि एबाक कारणो रातुक साहित्य शणि आ रंग-रभस सेहो समाप्त भऽ गेलैन। दिनेमे दस-पनरह मिनट लेल नन्दिता पो. सुधाकर केर समक्षमे राघवसू किछु पुछि लइ छेली। आब स्तिंतता समाप्त भऽ चुकल छेलैन। दोसर दिन हडतालक कारणे राघव केतौ नहि गेला। नन्दिता पसन छेली। ओना राघव आ नन्दिताक पसनता कइयेक गुणा बढि गेलैन जखन पो. सुधाकर राघवसू कहलखिन-
"राघवजी! आइ हम वशिवदिालय जा रहल छी। वभिागमे विसर्च कमिटिक मिटिंग तीन बजेसू अछि। ओइसू पहिने हमरा लोकैनके किछु दस्तावजि इत्यादि ठीक करक अछि। हम पाच बजे साझ धरि फी हएब। जखन आएब तू िवन्तिसू गप करब।"
ई कहि आधा घण्टाक भीतर पो. सुधाकर घरसू बाहर निकैल गेला। किछये कालक बाद नन्दिता स्नान-ध्यान करक बास्ते वदिा भेली।

बारह बजैत-बजैत राघि आ नन्दिता संगे भोजन केला। भोजनक तुरंत बाद बेबी सेहो खेलक। नन्दिता बेबीके कहलखिन-

“जो बेबी अपन माएसँ भेट केने आ। पाँच बजे धरि चलि अबिहे।”

बेबी नन्दिताक कृपा बूझि गद-गद भऽ गेलि। पाँच मिनटक भीतर कैम्पससँ बाहर भऽ गेलि। आब नन्दिता आ राघि सबा चारि बजे धरि स्वतंत्र...।

नन्दिता अपन साहित्यक डायरी लऽ राघिक कक्षमे पहुँचि केली। राघि गद्-गद् भऽ गेला। नन्दिता अपन साहित्य-चर्चा प्रारम्भ केलैन। आधा घण्टाक बाद राघि उठला आ नन्दिता सहज भावेँ मुस्कुराइत आ मने-मन गदगदाइत राघिक कोरामे बैस गेली। आब एक दिस नन्दिता अपन साहित्य सुना रहल छेली आ दोसर दिस राघि नन्दिताक संग छेडखानीमे व्यस्त आ मस्त छला।

ई क्रम चलैत रहलैन। एकाएक करीब पौने दू बजेमे प्रो. सुधाकर किछु कार्यसँ घर आबि गेला। नन्दिता झट-दनि राघिक कोरासँ नीच्चा उतैर गेली। बिना सुधाकरके देखने नन्दिता अपन घर दिस विदा भेली। प्रो. सुधाकरक आँखि लिधे आबा उगैल रहल छेलैन। हलाकी सुधाकर ने तँ राघिके किछु कहलखिन आ ने नन्दितेके। आधा घण्टाक पछाइत सुधाकर किछु फाइल लऽ पुन: विश्वविद्यालय दिस विदा भेला। जाइ काल राघिके कहलखिन-

“राघिजी, अहाँ अपन समान लऽ ग्राउण्ड फ्लोरमे एकटा छोटका रूम अछि तइमे रखि लिअ आ हमरे संगे विश्वविद्यालय चलू।”

राघि समान लऽ नीच्चा चलि एला। घरमे ताला लगेला आ सुधाकर संगे विश्वविद्यालय दिस विदा भेला। भरि रस्ता सुधाकर राघिके किछु नहि कहलखिन। राघि सहमल छला। भेलैन अगर सुधाकर अपमानित करितैथ तँ की होइत..?

खैर, राघवि के पुस्तकालयमे बैसा पो. सुधाकर अपन विभागमे चलि गेला। राघवि पुस्तकालयमे तीन चारि गोट पोथी लऽ एकठाम बैस पढ़ए लगला। यदवपि पढ़ैमे मन नै लगलैन। हलाकी राघविके अपन कृत्यपर कुनो पश्चाताप नहि छेलैन। आब हुनकर मनमे पो. सुधाकरक प्रति कुनो सम्मान नहि रहि गेल छेलैन। ननिदताक कथा सुनला बाद सुधाकरमे ओ एक खहायत राक्सके देखए लगला। मुदा राघविके अपनासू बेसी ननिदताक चिन्ता छेलैन।

पोफेसर सुधाकर छह बजेमे राघवि लग पुस्तकालय एला आ दुनू गोरे संगे विदा भेला। सुधाकर रस्तामे राघविसू कहलखिन-

“राघविजी, अहा ननिदताक बातमे समए बरबाद नहि कऽ अपन कायप्रि ध्यान केन्द्रित कर । हुनका कथा लिखबा आ सुनेबाक अतिरिक्त कुनो काज नहि छैन। हमरा अहा सबहक बात बेहिार नीक नहि लागल। तूए बच्चा लऽ एलौ अहाके। बच्चोमे सभ बेस्थिा छै। हमहू अही लग बातचित करबा लेल चलि आएब। केलि भोजन लेल ऊपर हमर बासिपर जेबाक अछि।”

राघवि गरदेन हिला पो. सुधाकरके अपन स्वीकृति दऽ देलखिन। दुनू गोरे गन्तव्यिपर पहुचला। राघवि ऊपर नहि गेला। बचला कमरा बहुत छोट आ तीतर-बीतर रहइ। मकराक झोलसू भरल। किछु किताब अबस्स राखल रहइ। राघविके भेलैन जे एतए रहनाइ सम्भवि नहि अछि। मुदा राति भऽ गेल रहइ। सोचलैन राति भरि कहुना रहि जाइ छी। साढे आठ बजे ननिदताकिर आबि कऽ कहलकैन-

“भोजन तैयार अछि चचाजी। चलू करबा लेल। पापा आ मम्मी दुनू अहाक इन्तजार कऽ रहल छैथ।”

राघवि आधा मनसू विदा भेला। पो. सुधाकर आ ननिदता डायनिंग टेबुलपर बैसल छला। पो. सुधाकर राघविके अपना लग बैसक इशारा

केलखिन। राघव हुनकर आजाके सम्मान करैत हुनके लग बैस गेला। नन्दिता कनी परेशान अबस्स छेली। मुदा ओतबो नइ जेतेक राघव सोचै छला। खैर, सभ गोरे भोजन केला। नन्दिता राघवके लौग आ इलायची तथा पो. सुधाकरके पान बना देलखिन। नन्दिता सेहो स्वयं इलायची खेली। पान छोडला आइ छठम दिन छेलैन नन्दिताके। आब पो. सुधाकर आ राघव बाच्चा दिस विदा भेला। राघवकि मनमे रातुक वार्तालाप नहि होमाक कचोट तँ बहुत छेलैन मुदा की कऽ सकै छला। राघवकि कक्षमे आबि पो. सुधाकर हुनकासँ परियोजना सम्बन्धी बात बहुत काल धरि करैत रहला। लगभग एगारह बजे रातिमे पो. सुधाकर सुतैले गेला। ऐ घरमे राघवके भरि राति नीन नइ भेलैन। ऐगला दिन भोरे राघव कुनो गाम लेल पस्थान केलैन। बहुत देर धरि कार्य केला बाद आपसीमे दरभंगाक नै आबि अपन गाम चलि गेला। दू दिन अपने गामसँ अलग-अगल स्थान जाथि। दोसर दिन भोरे-भोर पो. सुधाकर फोन केलखिन तँ राघव कहि देलखिन जे ओ अपन वृद्धि माता-पितासँ भेट करक हेतु अपन गाम चलि एला। राघव ईहो कहलखिन जे दिल्ली जाइसँ एक दिन पूर्व ओ दरभंगा जेता आ विस्तारसँ चर्चा करता। नन्दितासँ सेहो राघवके फोनपर बात होइ छेलैन।

कार्यक्रम समाप्तिक बाद राघव दरभंगा गेला। तखन पो. सुधाकर घरपर नहि छला। नन्दिता बाच्चा एली आ कहलखिन जे पो. सुधाकर लहेरियासराय कुनो मितके कुनो नर्सिंग होममे देखबा लेल तुरंते गेल छैथ। राघव हाथ-पएर धोलैन। तैबीच नन्दिता स्वयं चाह बना लऽ अनली। राघव चाह पीबैत बजला-

“नन्दिता भाभी, हमरा कारणे अहाके बहुत दिकत भऽ गेल?”

नन्दिता-

“अरे! बेकार अहा कए चन्ता करै छी राघजिी? सुधाकर अपने-आप ठीक भऽ जेता। हनका हमर कुनो पुरखसू बातचत आ आत्मयता नह पसन छैन। हमरा दुख केलि ऐ बातक अछ जे अहाके मच्चा आबए पडल!”

राघि-

“नह! ऐसू हम परेािन नइ छी। हमरा केलि अहाक चन्ता भऽ रहल छल। कही भाइ साहैब मार-पीटपर ने उतरल होथ?”

नन्दता-

“ओते हम्मत नह छैन। हमरापर जहया हाथ उठा देता तहया हमहू औकात देखा देबैन।”

ई कहैत नन्दता राघि दस बढली आ राघजिीक कपार चूम लेली। राघि पुन: उत्साहत भेला। कक बन्द केलैन आ दुनू गोरे आनन्दलोकक अनुभि करैत रभसमे लावा गेला। एना लगैत छल जेना नन्दता सफआि सफरािघि लेल बनल होथ। राघि नन्दताक ारीरक सानघ्य पाब तृप्त छला। नन्दतो तहना छेली। करीब चालस मनटक पछाइत दुनू अपन-आपके ठीक केलैन आ घरक दरबज्जा नन्दता खोलली। फेर गप करए लगला। थोडे कालक बाद नन्दता ऊपर जाए लगली। राघि एकबेर फेर भर पाज-के पकैड नन्दताके चुमए लगला। नन्दता सेहो पत्युतरमे सएह केलखन।

आब राघि अपन डायरीमे छुटल बात सभ लखए लगला। कैमराक चीप नकाल फोटो सभके लैप-टॉपमे डाउनलोड केलैन। फेर थीमक अनुसारे ओकर अलग-अलग फोल्डर बना ओइमे रखला। ताबे पो. सुधाकर आब गेलखन। दुनू गोरेमे बहुत देर धर गप भेलैन। नन्दता बीचमे बेबीके भेजलखन। बेबी आब कऽ बाजल-

“चाह लाबी की?”

पो. सुधाकर जबाि देलखिन-

“हू-हू, चाह बना। कनी चूरा सेहो भूज। हम सभ ऊपरे आबि रहल छी।”

आब राघि आ पो. सुधाकर ऊपर एला। बेबी चूरा भुजए लगल। सुधाकर अपन पुत दििकरके दोकानसू पकौडा लाबए कहलखिन। सभ गोरे भूजल चूरा आ गरम-गरम पकौडा खेलैन। नन्दिता सेहो संगे बैसल छेली। राघि आ पो. सुधाकर फेर वािच्चाँ आबि गेला आ सभ डाटापर चचिपारम्भ केलैन। साढे दस बजे रातिमे कायिक समाप्तिक बाद सभ गोरे भोजन केला। राघि अपन कक्षमे आबि कछु आरो बचल बात सभ ि लखलैन आ सूति रहला।

दोसर दिन राघि स्नान-ध्यान केलैन आ छह बजे भोरे पो. सुधाकर स्ियं हुनका ऊपर लऽ गेलखिन। चूरा-दही-चीनी परोसल छेलैन। नन्दिता कीचनमे ्यिस्त छेली। जखन राघि जलखै कऽ लेला तखन नन्दिता कीचनसू बाहर एली। एकटा टीफीन राघि लेल तैयार छेलैन। राघिके दैत कहलखिन-

“राघिजी, अहाक पती सहजन्या सुधाकरके कहने छेलखिन जे अहा बाहरक ि स्तु याताक अिधमे नइ खाइ छी। तूए थोडेक पुरी, पडोरक दू फूका आ थोडेक खजुिरया बना देलौ अछि। एकरा खाइत जाएब भिर रस्ता...।”

राघि लग कृतजताक कुनो िब्द निह छेलैन। राघि आब पो. सुधाकरके चरण स्पिकिेला। सुधाकर पीठ ठोकि अिसरािद देलखिन आ हृदयसू लगेलखिन। आब राघि नन्दिताक चरण छुला। नन्दिता अपन हाथ राघिकि पीठपर देलखिन। नन्दिताक हाथक स्पििसू राघि धन्य भऽ गेला। नन्दिता आ हुनकर दुनू बालक राघिके

कच्चा धरि छोड़ि एलैन। राघवकि संगे पो. सुधाकर सेहो रेलबे स्टेशन धरि विदा भेला।

स्टेशनपर गाडी आबि गेल रहइ। राघव गाडीक पथम ए.सी. कोचमे बैस गेला। पो. सुधाकर सेहो कोच धरि गेलखिन। आब टेन पाच मिनटमे खुजत। ई जानि राघव पुन: पो. सुधाकरके चरण स्पर्श करैत कहलखिन-

“शीमान, आब अहा उतैर जाउ।”

पो. सुधाकर गाडीसू कच्चा उतैर गेला।

टेन खुजि गेल। राघव एकबेर पुन: नन्दिताक सम्बन्धमे सोचए लगला। मनमे एलैन, केना परिस्थिति मनुखके की की बना दइ छै। नन्दिताक परिस्थिति हुनका लेखिका बना देलकैन- परिस्थिति लेखिका।

<u>सुग्गा आ शृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे</u>

भारतीय लोक आ िशत्त दूनू परंपरा मे सुग्गा अपन विशि स्थान आिद काल स रखने अिछ। सुग्गा िसनेह, पेम, जान आ शृंगार के पतीक मानल जैत अिछ। अनेक कथा समस्त भारतिषिमे भेटत जतए सुग्गा अपन बुिधमानी स अलग कीिमीन स्थािपत केलक। जायसीक महाकाव्य पदाित मे हीरामन सुग्गाक भूिमका के निह जनैत अिछ। कोना िहरामन राजकुमारी पदाती अथाि पिदनी संग अपन समय बीतबैत छल; कोना पिदनी अपन पेमक बात आ िािह निह होबाक टीस ओकरा संग बाटैत छली; आ कोना हीरामन सुग्गा िसंहलदीप के राजकुमारी पदाती आ िचतोडगढक राजा रतसेन केर पेम मे सुतधारक भूिमका के िािहिन करैत अिछ, के बारे मे सबके बुझल अिछ। बात मैिथली लोकगीत मे सुग्गाक स्थान पर क रहल छी तािह पदाित के पसंग पर विस्तार सं निह जा रहल छी।

अगर लोक व्यिहार के बात करी त िमिथला समाज मे सुग्गा आ आनो िचरै-चुनमुन एि जानिर सबहक अपन भूिमका अिछ। ओकरा मानिीकरण कए ओकर भाि के देखल जैत छैक। लोक अपन बच्चा, िाय लोक, जमाय के सुग्गा किह संबोिधत करैत छिथ। ओ बच्चा जकर स्मरण िकत्त तीक्ष होइत छैक तकरा सुग्गा किह संबोिधत कैल जैत छैक।माय, िािियाईन, नानी, दाई इत्यािद अपन बच्चा के सुग्गा कौर, मेना कौर किह क भोजन खुअबैत छिथ। नायक अथाि नाियका के नाक अगर बडड सुन्दर छैक त ओकरा सुग्गाक ठोर या चोच स उपमा देल जैत छैक। मधुर बोली के सुग्गा सनहक बोली कहल जैत छैक। स्तीगन सब फेम मे कुरि स सुग्गा मेना बनबैत छली. िमिथला िचतकला मे आ कोहबर घर मे स्ती आ पुरष सुग्गा के स्नेहािलंगन अिस्था मे बॉडिर पर िचितत कैल जैत छैक।

स्नेहालिंगन के ठेठ मैथिली मे लटपटायल अवस्था कहल जैत छैक। मिथिला चित्रकला मे बॉर्डर पर हि लटपटेया सुग्गा आपस मे एक दोसर के पकडने चोच मे चोच सटेने अंकित रहैत छैक। कोबरघर मे एहि चित्राकन केर उकेरबाक तात्पर्य ई रहैत छैक कि जेना सुग्गा के पति-पतीक जोडी मे पेम रहैत छैक तेहने पेम, स्नेह आ आकर्षण एहि वरिआ कन्या मे बनल रहैक। दुनु एक दोसर स कहियो अलग नहि हो। दुलहिन स्त्री सुग्गा आ दुलहा पुरुष सुग्गा बनि जैत छैक। सुग्गा स्नेहक संग-संग सौन्दर्य आ रंगक पतिकात्मक सेहो बनि जैत छैक। अगर बडड सुन्दर हरियर रंग केर सारी अथवि नुआ छैक त ओ सुगबा रंग अथवि सुगापंखी रंग कहेतै। लाल रंग केर मान्यता तखन स्थापित हेतैक जखन ओकर तुलना सुग्गाक ओठ स कैल जेतैक। सुग्गा स स्नेह अतेक जे ओकरा सोनाक पिंजरा मे रखबाक कल्पना कैल जैत छैक।

मैथिली लोकपरम्परा मे सुग्गा बडड महत्व रखैत अछि। दुटा एहेन दन्तकथा मिथिला भूमि मे व्याप्त अछि जाहि मे सुग्गाक भूमिका के बेर-बेर स्मरण गर्व सि कैल जैत अछि।पहिला कथा सीता सं सम्बंधित अछि आ दोसर कथा आदि गुरु शंकराचार्य के महापण्डित मंडन मिशक गामक यात्रा सं। एहि आलेख के आगा बढाबी ओहि स पहिने ई दुनु दन्तकथा के बुझब जरुरी।

पारंभ सीताक पसंग सं करैत छी। मिथिला मे सुग्गा आ सीता के लऽ कऽ एकटा दन्तकथा पचलित अछि। बसंत ऋतुक समय छल। शीतल, मंद पवन बहैत छल। सीता दाई अपन सखी बहिनपा संग फुलवारी मे भमण कऽ रहल छली। सीता के इच्छा झुला झूलबाक भेलनि। एक सखी सऽ अपन इच्छा व्यक्त केलनि। तुरत सखी बहिनपा सब सीता दाई के झुला झुलाबए लगलथिन। बडड मनमोहक

दृश्य भ गेलैक। सीता हिलोरा लैत आ सखी सब हिलबैत। जतेक पंसा करी से काम।

झुला लागल पेमक डाली।

झुलथि सीता प्यारी ना।।

सोहनगर-रसगर गीत गबैत सखी संग सीता आनंदक सागर मे गोता लगा रहल छली। गीतक स्वर हुनकर कान मे मधुर झनकार भरैत छल। अहि बीच सीताक दृष्टि एक सुन्दर सुगाक़ जोडी पर पडलन्हि। इ सुगाक़ जोडी पत्नि-पतीक जोडी छल। हरियर कचोर पाखि, लाल-लाल ठोर। सुगाक भाषाक संग-संग मानुखक भाषा बाजऽ मे प्रवीण छल दुनू सुगा। सुगाक़ पती हि गीत गाबि रहल छल जे गीत सीतादाई अपन सखी बहिनपा संग झुला झुलैत गाबि रहल छली।

सुगा के जोडी पर सीता दाई के ध्यान गबि गेलन्हि। मोन भेलन्हि जे अहि सुगा के राजमहल मे आनि पिंजरा मे राख़ब आ प्रतिदिन एकर मधुर बोल सुनि उठब त कतेक़ नीक रहत!

राजमहल मे अबितहि सीता दाई अपन सेविका के बजेलि आ आजा दैत कहलथिन: "देखू, फुलवारी मे सुगाक़ एक जोडी बिचरि रहल अछि। बडड सुंदर जोडी छैक। चीरै चुनचुन के संग-संग इ जोडीमनुखक आबाज मे मधुर गीत सेहो गबैत अछि। अहा एखन फुलवारी जाऊ आ ओहि जोडी मे स एक सुगा हमरा लेल पकडि क लाउ"।

सेविका सीता दाई केर आजा के पालन क़रैत झट दनि फुलवारी दिस बिदा भेल। थोरेक कालक़ बाद ओहि सुगाक़ जोडी मे स एकटा सुगा पकडि कऽ लऽ अनलक। आब ओहि सुगा के एक सोनाक पिंजरा मे बन्द कऽ सीता दाई लग लैल। सुगा के अपना सामने

सोनाक पिंजरा मे देखि सीता दाई आनन्दविभोर भऽ गेली।
गलती स ओ सुग्गा मादा सुग्गा छल आ गर्भवती रहै। ओकर पति सीता दाई के सेहो विनति केलक जे ई मादा सुग्गा ओकर पत्नी छैक आ गर्भवती छैक ताहि ओकरा पर करुणा देखबैत मुक्त क देल जाय। पुरुष सुग्गा बाजल : "बरु हमरा पत्नी के बदला मे अहा हमरा ल चलु पिंजरा मे बन्द कऽ सीता लग"। मुदा सीताक सेहो ओकर अनुनय-विनय के नहि स्वीकार केलक आ मादा सुग्गा के राजमहल लऽ अनलक।
अपन पत्नी के प्रेम मे मातल पुरुष सुग्गा हारि नहि मानलक। पाछा-पाछा ओहो राजमहल मे आबि गेल। ओकरा आशा रहैक जे सीता चूकि स्वयं करुणाशील कन्या छथि, ओ अवश्ये रुप स ओकर पत्नीक अवस्था पर द्रवित भ पिंजरा स मुक्त कऽ देथिन!
बेचारा सुग्गा सीता दाई लग भरल नोर व्यथित मोन पहुचल। नोर थमबाक नामे नहि लैक। आतविभोर स बाजल: "हे करुणामयी राजकुमारी सीता, इ सुग्गा जे आहाक सेहो पकड़ि अनलक अछि इ हमर पत्नी छथि आ गर्भवतीऽ अछि। एकर पेट मे हमर सन्तान पलि रहल अछि। हम अहा लग ई विनति करबाक हेतु आयल छी जे अहा एकरा पर करुणा देखबैत पिंजरा स मुक्त क दियौक। अगर अहा के सुग्गा रखबाक इच्छा अछि त हमरा राखि लिय!"
कहि नहि किएक सीता दाई के सुग्गाक अनुनय विनय दिस धेआन नहि गेलनि। ओ अपना मे मस्त रहली। जखन सब विधि स सुग्गा थाकि गेल आ राजमहल मे किओक ओकर विनती सुनबा लेल तैयार नहि भेलैक त लाचार सुग्गा ददआ विषाद स खिन्न भ गेल। तामसे घोर होईत सुग्गा सीता दाई के सम्बोधित करैत बाजल: "हे जानकी! हम बडड आशा लऽ कऽ अहा लग आयल रही जे न्याय भेटत। न्याय

त दूर अहा हमर दिना सुनबाक लेल तैयार नहि छी। आहाक जखन अपन विहि हैत तखने अहा अहि दिना के बुझ सकैत छी।आब हद भ गेल! हम व्यथित मोन पिस जा रहल छी मुदा जैत-जैत अहा के शाप देने जा रहल छी। हम पक्ष-पती अवाला जन्म धोबि-धोबिन बनि जन्म लेब आ हमरा सभक कारण सऽ आहाक पक्ष अहाके गभावस्था मे घर स निकालि देता" ।

आ सीता के होि जगलन्हि। मुदा आ किछु नहि भ सकैत छल। सीता सुगा के शाप के सिरोधायि कऽ लेलन्हि। दन्तकथा के अनुसार ओही सुगा के शाप के कारण जखन सीता गभवती छली त राम सनहक पक्ष एक धोबि-धोबिन के कहला पर हुनका घर स निकालि देलथिन।

आब दोसर दन्तकथा दिस बढी। दोसर दन्तकथा शंकराचाय आ महापण्डित मंडन सं जुडल अछि। मिथिला मे अगाध पण्डित आ विदान सब भारतवषकेर सब कोनस अबैत छलाह। अतए अथात मिथिला मे परम्परानुसार एक बेर मे अनेक दिन धरि चलए बला शास्त्राथ मे जीवन-जगत सं संबंधित विषय एवं उप-विषय पर वाद-विवाद चलैत छल। जे विदान शास्त्राथमे जितैत छला हुनकर विषि सम्मान होइत छल। मान्यता ई अछि जे शंकराचायमिथिला के परम विदान आ कुमारिल भट केर शिष्य महापण्डित मंडन मिशक पसिद्धि सं पभावित भ सियं हुनका सं भेट करक हेतु आ शास्त्राथ करबाक हेतु भमण करैत मंडन केर गाम पहुचला। गामक इनार पर पनिहारिन सब पानि भरैत आपस मे संस्कृत मे वातालाप क रहल छलि। शंकराचाय पनिहारिन सबके पुछलथिन: "महापण्डित मंडन मिशककुन घर छनि?"पनिहारिन मे स एक महिला आगा अबैत बजली: "आगा बढल जाऊ। जाहिदरबज्जा पर सुगो आपस मे शास्त्राथ करैत हो,

िहि घर महापण्डित मंडन मिशकहेतिन्ह" । शंकराचार्य अपन शिष्य मण्डलीक संग आगू बढलाह। कलम, पोखरि, बसबटी, फुलक क्यारी, लहलहातइत हरियर धानक खेत होइत थोरेक काल मे महिषी गाम पहुंचला। महापण्डित मंडन मिशक घर ताक मे कुनो दिक्कत नहि भेलन्हि। एक घर के दरबज्जा पर पिंजडा मे सुग्गा आपस मे शास्त्रार्थ क रहल छल। शंकराचार्य के भागठ नहि रहलन्हि जे यैह घर महापण्डित मंडन मिशक छन्हि।
आब लोकगीत केर आंगन मे प्रवेश करी आ देखी जे सुग्गा अपन कहेन स्थान बनेने अछि। एक नायिका के दद देखू. बेचारी के पति परदेस गेल छैक। बहुत दिन भ गेलैक परदेस स गाम एला। अखाढ मास समाप्त होम पर छैक लोक खरही काटि घर लग जमा करैत अछि। कथी लेल? जे घर के छारत। मनुखक त बाते छोडि देल जाओ चिरै-चुनमुन सब एक-एक खर के चुनि अपन खोता अर्थात नीड के निर्माण क रहल अछि। सब आब मधुमास अर्थात बरसात मे अपन-अपन जोडी संग रहत। मधुमसक मिलन यामिनीक सुख भोगत। देह आ नेह एक बनतैक। मुदा हाय रे दुर्भाग्य! बेचारीक कंत त एखनो परदेसे मे छैक।लगैत अछि जे नायिका अही वियोग स शरीर ने त्यागि दे!

अखाढहि मास अखाढी रोप कि नब खरही सब काटए लोक
चिडै चुनमुनी सब खोता लगाएल कि हमरो कंत रहल
घर छोडि कि हम मरि जइहे।।
छठि माता के पसन करबाक हेतु महिला सब रंग-विरंगक गीत गबैत घाट दिस जैत छथि। हरेक गीत मे पसाद सामगी के निमित्त, विधिक विधान, माता के गुणगान, आ सुन्दरताक ध्यानक निमित्त रहैत छैक।

एक गीतक दू पाँती देखू जे केना ओहि मे सुगा के शिनि अछि। काच बास के आधार बना केराक दू घौर के बीचो बीच फसा देल गेल छैक। दुनु कात घौर मे हथ्थाक हथ्था पाकल-पाकल पीयर-पीयर केरा लुबझल छैक। केरा के आकर्षण देखि झुण्डक झुण्ड सुग्गा ओहि पर लुधकि रहल छैक। पबनौतिन मनुख जका सुग्गा के बुझबैत छथिन के हे सुग्गा ई केराक घौर छठि महरानी के कबुलात छैक। एहि पर तो चोच मारि एकरा अशुत नहि कर। जखन पूजा पूरा भ जेतैक त तोरा तोहर हिस्सा भेट जेतौक।सम्बाद एहेन जेना सुग्गा एक एक शिब्द के बुझैत हो आ आजा के मानबक हेतु तय्यार। ई भेल लोक परमपरा मे मनुख आ चिरै के बीच तारतम्य आ सामंजस्य।

काचहि बास के बगहिया बहगी लचकत जाए

केरा फरल घौर स ओहि पर सुगा मंडराय

छठि महरानी के दोसर गीत मे कनि पबनौतिन तमसा जैत छथि कियैक त सुग्गा कनि लुबधि-लुबधि क आशियकता स अधिक परेशानि क देने छनि। अहि बेर गीत मे ओकरा साधिान भ जएबाक लेल कहैत छथिन: “देख सुग्गा! बडड भ गेल. लाख बुझेलाक बादो तो समरह के नाम नहि ल रहल छै। कहि देल्हुक ने जे ई केराक घौर छठि महारानी के कबुलात छैक! मुदा तो आवजज क देलै। आब किछु नहि कहबौ। बौआ के पिताजी आबि रहल छथिन बन्दुक हुनका संगे छनि। गोली मारि देथुन। फेर हमरा नहि कहिहै जे साधिान नहि केलयौक?” ई भेल लोकक चिरै आ चुनमुन के पाति सिनेह। जेना माय अपना बच्चा के डरबैत छथि तहिना ओही सिनेह आ अनुराग स पबनौतिन सुग्गा के डरा रहल छथि। गोली मरबाक बात होइत छैक। मारल नहि जैत छैक। एहन अशिथा

मे जौ पकृक्त आ संस्कृक्त मे समनवि नक्ह बनत त कोना बनत? जखन रि बक्रयाती संगे कन्या के घर पर पर्िं करैत अक्छ त बरक सुन्दर छवि देक्ख सासु गदगद भ जैत छक्थ। बरक मनमोहक छवि के तुलना सुगाा सं कैल जैत अक्छ। महाकवि विदापक्त सेहो अपन पदाली मे एक गीत मे रिक सुन्दरता सुगाा स करैत छक्थ।जमाए केर तुलना सोभनगर सुगाा सं करैत सासु आ बूढ पुरान मक्हला सब पसन भ रहल छक्थ. धिया के भाग्य पर गुमान भ रहल छक्त। गीत गाक्ब-गाक्ब सोचैत छक्थ जे ई जे अतेक क्तक सुगाा रपी जमाए छक्थ से कत स आक्ब क नेह लगेने छक्थ? ई सबहक मनमोहना कत बसेरा बनेने छक्थ? ई सोभनगर सुगाा अपन गाि स आक्ब सासुर मे बसेर केने छक्थ आ सासुरक लोक सभ सं नेह लगेने छक्थ। हुनकर ससुर पांजरा बना ओक्ह मे एक्ह बर रपी सुगाा के बझ्ा रखने छक्थ। पाजरा बिद्द दुलक्हन लेल कैल गेल छैक. सुगाा जखन पाजरा मे रहत त ओकरा आहार चाही। से आहार देबाक क्जम्मेदारी सासु के देल गेल छक्त। एहेन आहार देथु जाक्ह स सुगाा के उचाट नक्ह लागै। संगक्ह सासु के इहो डर भ रहल छक्त जे सुगाा के जखन पाक्ख झमटगर आ मजबूत भ जेतैक त भावा ने जाय? ताक्ह सासु एहो कहैत छक्थ जे एहेन सुगाा के पोसने की लाभ।थोरेकबे क्दनक बाद ई अपन घर चक्ल जायेत। आक्खर जमाए रपी सुगाा कतेक क्दन सासुर रपी पाजरा मे सासु हाथक चारा अथात व्यन्जन खा रहत? विदापक्त कहैत छक्थ जे ई गौरी रपी दुलक्हन के भाग्य छक्त जे साक्षात् महादेब रपी मनमोहक रि भेट गेल छक्त। हे दाइ-माइ हुलक्सत भ गीत नाद गाऊ आ विधि-बेभार कर ।

कहमासू सुगा आयल, नेह लायल।
कहमा लेल बसेरा सुगा मन मोहल।
फल्ला ठासू सुगा आयल, नेह लायल।
फल्ला गाम लेल बसेरा, सुगा मन मोहल।
फल्ला ससुर खजुरा गढाओल, सुगा बझाओल।
हे फल्ला सासु देथु आहर सुगा मन मोहब।
एहन सुगा नहि पोसब जे पोस ने मानत।
हे सुगबा होयत उडात, अपन गृह जायत।
एहन सुगा हम पोसब जे पोस मानत।
हे सुगबा होयत बुधियार, पलटि फेर आओत।
भनहि विद्यापति गाओल, फल पाओल।
हे गौरी के बढनु अहिबात, सुन्दर बर पाओल।।

विवाह के समय मे जखन बरिआत के संग वर अपन सासुर विवाह करक हेतु पस्थान करैत अछि त दरबज्जा परदाई-माई सब बरिआती लेल रंग विरंगक गीत समवेत आ उच्च स्वर मे गबैत छथि। वर्णन होइत अछि बरिआतक साज के, शृंगार के, उत्साह के, तैयारी के, वस्त्र विन्यास के। बरक पितामह एक चीजक व्यवस्था त पितामह के भाई दोसर चीज केर व्यवस्था मे लागल छथि।कियो बाजा-गाजा के व्यवस्था मे त कियोकआन चीजक। एक आदमी हकरियर सुगा के पिजरा के सजा रहल छथि कारण विवाह मे सुगा नहि जैत से कोना? गीत इहो बतबैत अछि जे बरिआती दल के सदस्य के कत-कत ठहराएल जैत। सुगा सेहो ओना थोरे ने जैत? पूरा बस्त ठस्त क जैत।वरै रूपी सुगा वरिक ससुर के पोखरिक भीड पर चानन गाछ के ठाढि पर बैसत आ वर रूपी सुगा अपन सासु के बनाओल

कोहबर घर मे दुलक्हिन संगे बैसता।सुगा के फल भोजन करक लेल देल जेतैक आ रहबाक लेल सोनाक क्पजरा। बक्रआत सब दरबज्जा पर विशाम करता। आंगन केर सोझा मे आजन-बाजन राखल जैत। बक्रआती सब के लाल पीयर धोती पक्हरक हेतु देल जएतैक। सुग्गा, सुग्गा संग सोनाक क्पजरा आ फल भोजन जेना अक्नायि होइक? बक्रआतक लोक सब धोती पाक्ब पसन भ जेता आ जमाए बेटी देख खुि भ जेता।

कोने बाबा साजल आजन बाजन
कोने बाबा साजु बक्रआत हे।
कोने बाबा सजथु हक्रयर सुगबा
सुगा लय जायब बक्रआत हे।
बडका बाबा साजल आजन बाजन
मक्झला बाबा साजु बक्रआत हे।
छोटका बाबा साजथु हक्रयर सुग
सुगा लय जायब बक्रआत हे।
कहमा बैसायब आजन-बाजन
कहमा बैसायब बक्रआत हे।
कहमा बैसाएब हक्रयर सुगा
सुगा लय जायब बक्रआत हे।
पोखक्र बैसायब आजन-बाजन
दुअरे बैसायब बक्रआत हे।
क्पजडे बैसायब हक्रयर सुगा
सुगा लए जायब बक्रआत हे।
कथी लए जायब बक्रआत हे।
कथी लय बुझायब बक्रआत हे।

कथी लए बुझायब हकरयर सुगा
सुगा कथी लए बुझायब जमाइ हे।
टारा लए बुझायब आजन-बाजन
धोती लए बुझायब बकरआत हे।
फल लए बुझायब हकरयर सुगा
बेटी लए बुझाएब जमाइ हे।
एहेन जमइया कतहु ने देखल
सुगा लए आयल बकरआत हे।

दोसर बकरआत गीत मे एहेन कलमना कैल जैत अक्छ जे दुलहा घुमबाक हेतु तथा खेलबाक हेतु बहुत दूर हकरयर केत क्दस चक्ल जैत छक्थ। रस्ता मे अनेक तरहक गाछ-बृक, पोखक्र, फुलारिरी भेटैत छक्त।जैत-जैत एक गाछ पर सोहनगर हकरयर कचोर सुगाा भेटैत छक्त जकरा पकव्ड क ल अबैत छक्थ। सुगाा माझ आंगन मे बैस जैत अक्छ आ रक्स रहैत अक्छ जे ओकरा सेहो बकरआती जएबाक छैक। मुदा बकरआती मे ओना थोरे ने जैत सुगाा। सुगाा के ओक्ह लेल अूवाया आ टोपी चाही। ओ सक्ज क सुन्दर बक्त क बकरआत मे जाए चाहैत अक्छ। सुगााक अतेक मानीिकरण केलि लोकगीत मे भ सकैत अक्छ। आगा- आगा देखैत जाऊ सुगाा के नखरा। सब बकरआक्ताक सदस्य दरबज्जा पर स्थान गहण केलक। अतए सुगाा के एकाएक क्वरै छी ताक्ह बातक अनुभूक्त भेलैक। ताक्ह बकरआती के कन्या पक के ओतए पहुचला उतर सुगाा एक आमक गाछक ठाक्र पर चक्ढ गेल आ ओतए स सब विधि व्यहिार देक्ख पुलक्कत होइत रहल। सुगाा के ठोर बडड रमनगर। जेहने सुगाा के ठोर तेहने रिक ठोर। सासु आनंदे बताक्ह। पेमाक्धक्य मे मातक्ल कखनो

सुगाा के ठोर कहारक्थ त कखनो जमाय के ठोर आ नैन नकि। सासुरानी के फेरो इहो डर बीच-बीच मे भ रहल छक्त जे कतयोक दाई-माई कुनो करामात ने क देक्थ! की पता नजक्र लावा जैक सुगाा के, जमेईया के, या दुनु के? इहो सोचैत छक्थ जे सुगाा त निक पाणी अक्छ ताक्ह अंतत नि मे िपस चक्ल जैत मुदा बेटी आ जमाए त कम-स-कम क्थर भ क रहत ने!

हमरो दुलहा के फला दुलहा
खेल जेता बडी दुर हे।
ओत स जे लएला दुलरआ हक्रयर सुगबा
सुगबा बइसल माझे ठाम हे।
सभ केओ साजल जाइ बक्रअक्तया
सुगा लेल अंगुरी पसाक्र हे।
हमहु त लेब बाबा अूवाया टोक्मया
हमहु त जायब बक्रआत हे।
सभ बक्रअक्तया अटकल दरबज्जा
सुगबा अटकल आमक ठाक्र हे।
सभ केयो कारेखक्थ जाइत बक्रअक्तया
सासु कारेक्ख सुगा ठोर हे।
आइ हे माइ पर हे पडोक्सन
सुगा जुक्त नजक्र लगाउ हे।
निक्ह के सुगबा बनक्ह उक्ड जायत
रक्ह जायत धीअक्ह जमाई हे।

झरनी जे कक्थलाक मुसलमान मक्हला सब आ ओकरा संगे कतौ-कतौ क्हन्दू सब सेहो दहा संगे चलैत रहैत अक्छ आ गबैत रहैत अक्छ। यदक्प झरनी उदासी के तजपिर आ तेजी स चलैत बटगबनी

जका गैल जैत छैक जाहि मे मका मदीना आ हसन हुसैन के सहादत केर गुणगान तथा हुनकर सौन्दर्य एिं सौर्य केर गाथा गैल जैत छैक। माहोल उदास मुदा जोि आ ओज सं भरल।लोक अही बहाने हसन आ हुसैन के कुबानी के याद करैत अछि। हसन आ हुसैन मोहम्मद साहेब केर नाति छला। इस्लाम, न्याय आ ि‍ाक्ति के रक्षा के लेल अपन जान गमा लेला मुदा सत्य केर रस्ता सं नहि भटकलाह। हुनकर सहादत केर गाथा कतौ अजादारी त कतहु मर्सिया झरनी के रप मे गैल जैत अछि। केलि चक्रत अरब के होइत छैक मुदा वर्णन स्थानीय भाकि अनुकूल। उपमा आ अलंकार ि‍ह जे मर्सियालाक लोक उदासी मे अथाि आर कुनो कार्यक्रम गीत मे पयुक्त करैत छथि। गीत गेबा मे सेहो हिन्दू महिला जका मुसलमान महिलाक पाबल्य।

एक झरनी मे छाती पीटैत महिला सब गबैत छथि हाय अल्ला सुन्दर आ सोहनगर लाल सुग्गा के जन्म कोन ठाम भेल आ कोन ठाम ई दुनु भाई अथात हसन आ हुसैन जन्म लेलाह? फेर उतर मे बजैत छथि जे पि‍ि पर हरियर गाछ पर ललका सुग्गा जन्म लेलक आ अरब के मका ि‍हर मे हसन आ हुसैन दुनु बच्चा के जन्म भेलैक। हे दाई- माई, कथी खुआक क लाल सुग्गा के हम पोसब आ कथी खुआ क दुनु बच्चा के? चारा अथाि आहार खुआ क सुग्गा के पोसब आ दूध पिया क हसन आ हुसैन दुनु बच्चा के पाण बचायेब। सोना के पिजरा मे सुग्गा के बाजब सिखायेब आ इसकुल मे भेज क दुनु बच्चा के पढेएब। अवाला अंि मे उदासी पबल भ जैत छैक। गीतक बोल कहैत छैक जे लाल सुग्गा उडात भेला पर कत उड़ि जैत आ बच्चा नमहर भेला पर कत चलि जैत? पश आ उतर के तर्ज पर झरनी गैल जैत अछि। एहि पश के उतर मे कहल

जैत छैक की उडात भेला पर सुग्गा फेरो पत्ति पर उवड जैत आ दुनु बच्चा नमहर भेलाक बाद मका चक्ल जेतैक कारण ओकरा धर्म केर रक्त करबाक छैक।

एव्ह झरनी के गंभीरता स देखला आ मनन केला सं ई अनुभूक्त होइत छैक जे उदासी आ झरनी मे कतेक समानता छैक। जमाए के जखन सुग्गा स तुलना कन्हू मक्हला सब अपन गीत मे करैत छथ्य त कहैत छथ्य: "निक सुग्गा नि उवड जायत", "सुगबा हैत ओवडयात अपन घर जायत" आव्द। अतए पहार स सुग्गा अबैत छैक आ पहार मे पिस चक्ल जैत छैक।

हाय-हाय कहमा जलम लेल लाल एक सुगबा
कहमा जलम दुनू बचबे हाय।
हाय-हाय परबत जलम लेल लाल एक सुगबा
मका जलम दुनू बचबे हाय।
हाय-हाय कथ्थये वखअयबइ हमे लाल एक सुगबा
कथ्थये वखअयबइ दुनू बचबे हाय।
हाय-हाय आहरा वखअयबइ हमे लाल एक सुगबा
दुधबा वालयबइ दुनु बचबे हाय।
हाय-हाय कथ्थये पढेबइ हम लाल एक सुगबा
कथ्थये पढेबइ दुनू बचबे हाय।
हाय-हाय वाजडे पढेबइ हमे लाल एक सुगबा
इसकुल पढेबइ दुनू बचबे हाय।
हाय-हाय कहा उवड जेतइ लाल एक सुगबा
कहा चक्ल जेतइ दुनू बचबे हाय।
हाय-हाय परबत उवड जेतइ लाल एक सुगबा
मका चक्ल जेतइ दुनू बचबे हाय।।

मुसलमान मिहला मे हिरयर रंग के सारी अथिा आनो िस्त्र के ि‍ज रहैत छैक। हिरयर के झरनी मे सुगबा रंग कहल जैत छैक। एक अन्य झरनी मे मिहला सब अपन उत्सि आ िसंगारक चचिकरैत छिथ। अते स्थान, उपमा, अलंकार, िवधान सब खाटी देसी भ जैत छैक।झरनी के पकृित पश आ उतर सं छैक। एिह गीत मे गीत गाईन सब अपने मे चचिकरैत पश करैत छिथ जे हाजीपुर, पटना आ बेितया िहर के जा रहल छैक? फेर उतर दैत कहैत छिथ, िपताजी हाजीपुर, भैया पटना आ पितदेब बेितया िहर जा रहल छिथ। कथी लेल? िपताजी सुगाा रंगक सारी लेबाक लेल, भैया कंगना लेबाक लेल आ पितदेब माथक िसन्दुर लेबाक लेल। देखू कोना स्थानीय परंपरा मे रंगा जैत छिथ मुसलमान स्त्रीगन मिथला मे। िसन्दुर आ सोहाग के महत्व एकाएक पबल भ जैत अिछ। धमि अपन स्थान पर मुदा स्थानीयता कुनो कम थोरे? अगर िसन्दुर िहन्दू स्त्रीक शृंगारअइहबहोबाक पमाण त मुसलमानस्त्रीगन केलेल िकयैक निह। फेर गीत िलखिनहार आ गेनीहािरके के रोिक सकैत अिछ?

हाय-हाय के जयतै हाजीपुर के जयतै पटना
के जयतै बेितया िहरबे हाय।
हाय-हाय बाबा जयतै हाजीपुर भैया जयतै पटना
सिामी जयतै बेितया िहरबे हाय।
हाय-हाय के लयतै सारी सुगबा के लयतै कंगना
के लयतै िसर के िसन्दुरबे हाय।
हाय-हाय बाबा लयतै सारी सुगबा भैया लयतै कंगना
सिामी लयतै िसर के िसन्दुरबे हाय।
हाय-हाय के पहनतै सारी सुगबा के पहनतै कंगना

के पहनतै क्सर के क्सन्दुरबे हाय।

हाय-हाय अम्मा पहनतै सारी सुगबा भऊजो पहनतै कंगना

हमे पहनबै क्सर के क्सन्दुरबे हाय।

हाय-हाय फाक्ट जयतै सारी सुगबा टूटी जयतै कंगना

रक्ह जयतै क्सर के क्सन्दुरबे हाय।

अपन एक छोट कविता फूलडालीक कनेर मे कवि कृष्णमोहन झा क्लखैत छक्थ

क्जलेबीक काट जका

हम अहाक धानक लाबा सन तरबा मे गक्ड जायब

आ क्कछु क्दन धक्र क्बासक्बासायब।

चतुर्थीक औंठी आ बरसाइतक मेहदी जका

हम अहाक विकिल संसगमि आयब

आ असंख्य सुग्गा बक्न

अहाक मोन मे उक्डयाएब।

कवि नाक्यका के अंतःकरण के बुझैत छक्थ। हदय मे पर्ि करबाक क्हम्मत रखैत छक्थ। कहैत छक्थन जे झुण्डक झुण्ड सुग्गा जका नाक्यका के स्मृक्त मे बेर-बेर आक्ब अपन होबाक पमाण देता. नाक्यका टीस मे पक्तक अथाि पेमीक अनुभूक्त करैत रहती।

भगबान केर भजन, पाक्त, उदासी आक्द मे मनुख त मनुखे भगबानो के क्सनेहसिसुग्गा बना क हुनकर सौन्दयाि यिसल्य, मनोहर सरिप के लोक स्मरण करैत अक्छ। कृष्ण लेल सुग्गा मनमोहन त जन-जन के कंठ मे जेना रचल बसल हो।भगबान कृष्ण केर मथुरा सं दारका केर याता लोक के अतेक दुखी क दैत छैक जे सखी बक्हनपा सब अपन जीनि के उदेश्यहीन बुझैत छक्थ। पूरा नगर

उदास अछ। कखनो मोन होइत छल जे यमुना के कारी, तीरिगल सं चलैत अथाह पानि मे डूबि क आत्महत्या क लेब त कखनो होइत छल जे जहर-माहुर खा पाण के समाप्त क ली। हे निर्मोही कृष्ण कोना अहा मथुरा छोड़ि सबके हदय दुखा सुग्गा जका पिंजरा सं बाहर निकललाते दारका चलि गेलौ? कनिकबोदरेग नहि भेल?

अहि तरहे लोक अपन व्यवहार, संस्कार, संस्कृति सं सुग्गा आ अन्य चिरै-चुनमुन संग पेम आ सामंजस्य स्थापित केने अछ। हलाकि तथाकथित आधुनिकता, विजान, विजानक पयोग आ मनुष्य केर नित नूतन खोज एहि तरहक परम्परा के निै निै कमजोर केने जा रहल अछ। लोक सब अहि तरहक समंजस्य के बिसरल जा रहल अछ। ई कुनो अर्थमे नीक बात नहि। सुग्गा आ मैनाक कथा गाम्य जीनि स समाप्त भेल जा रहल अछ आ किताब मे सिमटल जा रहल अछ। खेत खरिहान, जंगल, पर्ति, पोखरि, गाछ सब खत्म भेल जा रहल अछ। सुग्गो नहि आरो चिरै-चुनमुन धीरे-धीरे अतितक स्मृति बनल जा रहल अछ।अगर संस्कृति के ओ सरिप जे सब के संगे चलबाक सामर्थ्य रिखैत अछ समाप्त भ जैत त किछु नहि बचत।सब के एहि विषय पर गंभीरता स सोचबाक चाही आ संतुलन के निसधात के मनबाक चाही।

<u>मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक</u>

मैथिली लोकगीतक संसार अपूर्व संसार आ गीतक महासागर अछि। एहि महासागर केर हरेक गीत बेसकिमती सीपी जका अछि जकर मूंह स्वातिक बूंद पेबा लेल खुजल छैक जाहि स ओ मोती बनि सकै। फेर ओ मोती समुरक कछेर मे बालु आ अन्य वस्तुक ढेर मे ओंघराएल अछि कुनो जौहरीक ताक मे जे ओकरा गढि सकए तरासि सकए। मैथिली लोकगीत गंगा के अनेक आयाम छैक। सब आयाम के अपन महत्व छि।

जखन लोकगीतक विस्तृत आ विशाल संख्या के देखैत छी त अनेक बिंदु दिस ध्यान जैत अछि। एहिना ध्यान एक गीतक अनुवाद करैत लोकगीत मे कौआ के पयोग आ ओकर उपयोवाता दिस चलि गेल। लोकगीत मे कौआ के मानवीकिरण क नायिका के दारा कौआ के विभिन तरह स पयोग कैल गेल अछि। पचलित व्यवहार मे कौआ के पक्ष लोकक विशास पर गेल। अदौ सं लोकधारा मे कौआ मनुखक खास क महिला एवं बच्चा सबहक पल-पल केर मित बनल अछि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र इथनोगाफर छथि, आ तंए पाब्लो नेरुदाक ई पद हुनका पसिन छन्हि/ ऐ आलेखक बीच ऐ पदक आनन्द आर बढि जाएत/

Pablo Neruda

"You start dying slowly"

You start dying slowly;
if you do not travel,
if you do not read,

If you do not listen to the sounds of life,
If you do not appreciate yourself.
You start dying slowly:
When you kill your self-esteem,
When you do not let others help you.
You start dying slowly;
If you become a slave of your habits,
Walking everyday on the same paths...
If you do not change your routine,
If you do not wear different colours
Or you do not speak to those you don't know.
You start dying slowly:
If you avoid to feel passion
And their turbulent emotions;
Those which make your eyes glisten
And your heart beat fast.
You start dying slowly:
If you do not risk what is safe for the uncertain,
If you do not go after a dream,
If you do not allow yourself,
At least once in your lifetime,
To run away.....
You start dying Slowly!!!
Love your life Love yourself...'''

अपना स क्सनेह कर , अपना के सम्मान कर सक्दखन
पाब्लो नेरदा
मैथ्थली अनुिाद : डॉ. कैलाि कुमार क्मश
पाब्लो नेरदा स्पेन के कवि छथ्थ। साक्हत्य मे योगदान हेतु क्हनका नोबेल पुरस्कार भेटल छक्न।
अहा नहु-नहु मरै छी
यक्द अहा याता नक्ह करै छी
अहा अध्ययन नक्ह करै छी
अहा जीिनिक सिर के नक्ह सुनै छी
यक्द अहा अपना गुणक सियं गाहक नक्ह छी
अहा नहु-नहु मरै छी...
जाक्ह घडी अहा आत्म-विशास के खून क दैत छी
जखन अहा ककरो स मदक्तकेर आिा नक्ह रखैत छी
अहा नहु-नहु मरै छी....

एकक्ह रस्ता पर पक्तक्दन चलैत .....
जखन अहा अपन आदक्त के दास भ जैत छी
यक्द अहा अपन दैनक्न्दनी के नक्ह बदलै छी
क्वक्भन रंगक पक्रधान नक्ह पक्हरैत छी
क्कम्बा अहा कुनो अनजान मनुख स बातचीत नक्ह करैत छी
अहा नहु-नहु मरै छी....
यक्द अहा जीिन मे उत्साह आ यक्कत आिग
क्दस उदास भ रहल छी
जे अहाक आंक्ख के क्दव्य आ झलकैत

आ हदय गक्त के तीरिबनबैत अक्छ
अहा नहु-नहु मरै छी....
अगर अहा जीनि मे कम स कम एक बेर अक्नवित के सुरक्कत
करबाक हेतु जोक्खम के स्वीकार नक्ह करैत छी
सपना के साकार कराकि पयास नक्ह करैत छी
सब क्जम्मोरिी स भगबाक हेतु .....
अहा नहु-नहु मरै छी....
अपन जीनि स क्सनेह कर अपना आप सं क्सनेह कर ......

 विभिन पकारक जानरि आ क्चरै-चुनमुन केर अक्त पाचीन समय सं मनुखक जीनि स नाता रहल छैक। मैक्थली लोकगीत मे क्चडई-चुनमुन के पक्त पेमक अिति णिनि आ पेमाक्धक्य देखल जा सकैत छैक। क्चरै-चुनमुन कुन क्ण मनुखक जीनिक अक्भन अंग बक्त जैत अक्छ पते नक्ह चलैत छैक। भोजन बनबैत काल क्चरै-चुनमुन आ जानरि लेल पक्हल कौर माय राक्ख दैत छली। सामूक्हक अिसिर के क्कमत भोज-भात मे भोजन बनबए स पूिि क्चरई-चुनमुन लेल पक्हल कौर एखनो क्नकाक्ल देल जैत अक्छ।
काक़ भुिंडी त कौआ छला जे पक्षीराज गरड के रामकथा पक्हने सुना देने छलक्थन। अक्ह बातक णिनि बाल्मीकी के रामायण आ तुलसीदास केर रामचक्रतमानस मे भेटैत अक्छ। भगिान िशि पािितीी सू कहैत छक्थन: "क्क हम जे सुंदर कथा अहा के सुनेलौ अक्छ ओक्ह कथा के काक़ भुिंडी गरड के सुना चुकल छक्थ। नारद केर जान सू भगिान राम के नागपाि सू मुक्त कए गरड जखन अपन धाम घुरैत रहक्थ त एकाएक हुनकर मोन मे एक ंका उत्पन होईत छक्त क्क केहेन भगिान छक्थ राम जे एक तुच्छ राक्स दारा फेकल

नागपाि मे बन्हा गेला? गरड एक्ह ि◌का केर समाधान ऋक्ष नारद सू पुछला। नारद अक्ह ि◌का के समाधान बतेबा मे असमथ छिक्थ। नारद गरड के बहा लग भेज दैत छक्थन। बहा जी सेहो अक्ह ि◌का के समाधान बतेबा मे असमथ छिला। आब बहाजी गरड के महादेि लग पठा देलक्थन। महादेि कहलक्थन: "भगािनक माया बतेनाइ असमभि अक्छ। एक क्चरै दोसर क्चरै के ठीक सू बुझा सकैत छैक ताक्ह अहा काक़ भुि◌डी लग जाऊ। िह अहा के सब बात नीक स बुझा देता। आ अंतत जखन गरड काक़ भुि◌डी लग गेलाह त काक़ भुि◌डी अपन अिित िदुश्य के पक्रचय दैत गरड के पूरा रामायण के कथा समझा देलक्थन। ई कथा कौआ के बुक्धमान पमाक्गत करैत अक्छ संगक्ह मानि मोन मे क्चरै-चुनमुन संगे गूढ बात के मनोिजाक्नक विश्लेषण के आधार के सेहो पमाक्गत करैत अक्छ। क्चरै-चुनमुन आ कौआ केर मनुखक जीिन मे महत्त्ि के सब स उतम उदाहरण विष्णु िमा दारा रक्चत कालजयी रचना पंचतन्त्त अक्छ।

पाचीन भारत मे गुरकुल जंगल मे होइत छल। गुर अपन विष्य के पाकृक्तक िितािरण मे राक्ख ओकरा पकृक्त आ पकृक्त के अियि जे गाछ-बृक, क्चरै-चुनमुन, जडी-बूटी, नदी-नाला, झरना, पोखक्र, पहार, िन्यजीि आक्द्क जानकारी दैत छलक्थन आ ओकरा संग कोना तारतम्य स्थाक्पत हो से गुण क्सखायल जैत छलैक। विष्णु िमा त क्चरै-चुनमुन आ िन्यजीि के मानिीकरण कए पूरा पंचतन्त्त केर क्नमाण बच्चा के जान विकक्सत करबा लेल क लेला।

बात पंचतन्त्त के क रहल छी आ पसंग कौआ के अक्छ त पंचतन्त्त केर एक कथाक उल्लेख करब अक्नाियि बुझना जा रहल अक्छ जकर सम्बन्ध कौआ स छैक। कथा क्कछु ऐना छैक:

बहुत पहिने एक झमटगर बर कौआ सबहक राजधानी छल। हजारो के संख्या मे कौआ ओतए कागराज मेघवर्ण िसंग रहैत छल।
बरक गाछ एक पहाडी रहैक जाहि मे असंख्य गुफा रहैक। ओहि गुफा सब मे उल्लू सब रहैत छल।
उल्लुक राजा अरिमर्दन छल। अरिमर्दन पराक्रमी छल। कौआ सब के ओ अपन सबस पैघ दुश्मन बूझैत छल। कौआ स ओक़रा अतेक घृणा रहैक जे बिना कौआ के िध केने ओ भोजन तक नहि करैत छल। जखन बहुत संख्या मे कौआ मरए लगलैक त मेघवर्ण िबडड चिंतित भेल। अहि विषय पर विचार करबाक हेतु मेघवर्ण िकौआ सभक एक बैसार केलक। मेघवर्ण िबाजल: "हमर प्रिय कौआ सब, अहा सबके त बुझले अछि जे बेर-बेर उल्लू के आक्रमण केर कारण अपन सभक जीवन असुरक्षित भ गेल अछि। अपन सभक शत्रु शक्तिशाली आ एक नम्बर केर अहंकारी सेहो अछि। अपना सब पर रातिक हमला करैत अछि कारण जे अपने सब रातिक देखि नहि सकैत छी। हमर सभक विवशता ई अछि जे हमरालोकनि दिन मे जाबी आक्रमण नहि क सकैत छी कारण जे उल्लू सब गूप्प अनहार गुफा मे सुरक्षित बैसल रहैत अछि।
ई कहि मेघवर्ण िचतुर आ ज्ञानी कौआ सब स अपन-अपन सुझाव देबाक़ निवेदन केलक।
एक डरपोक कौआ बाजल उठल: "हमरा सबके उल्लू सू समझौता क लेबाक चाही। ओ सब जे कुनो शर्त रिखैत छथि ओक़रा स्वीकार क लेबा मे अपन सभक हित अछि। अपना स चरिफर शत्रु सू बेर-बेर पराजित हेबा मे कुन फायदा?"
अहि बात के काव-काव कए बहुत कौआ सब विरोध केलक। एक कौआ कचकचयाएल: "हमरा सबके अहि दुष्ट सब स कनहू बात नहि

करक चाही। सब गोटे उठु आ चढाई कर ।"

एक क्राधिदी कौआ बाजल: "ितु िक्तिाली अछि। हमरासबके ई स्थान छोड़ि कतौ आर चलि जेबाक चाही।"

एक बुझनुक़ कौआ बाजल: “अपन घर छोडनाई ठीक नहि रहत। अगर हम सब अतए सू चलि गेलौ त कतहू के नहि रहब। बिलकुल टुटि जाएब। अपना सब के एतहि रहि आरो बरै सब सू मदति लेबाक चाही जाहि सू एकर समाधान भ सकय” ।

स्थिरजीिी ओहि कौआ सभ मे सब सू चतुर आ बुधिमान छल जे चुप चाप बैसल सभक तकि ध्यानमग्न भ सुनि रहल छल। राजा मेघिणि ओक़रा दिस मुखाकृति भेला आ कहलखिन, "परमजानी स्थिरजीिी, अहा चुप छी? हम अपनेक विचार जानए चाहैत छी।"

स्थिरजीिी बाजल: “महाराज, हमर सोचब अछि जे ितु अधिक बलिाली हो त छलनीति के सहारा लेबाक चाही” ।

"केहेन छलनीति? कनि स्पि कर, शीमंत स्थिरजीिी।" कागराज बजला।

स्थिरजीिी: "अहा हमरा ऊूच-नीच कहु आ हमरा पर जानलेिा हमला कर ।"

मेघिणिअकचकेला, "ई अहा की बाजि रहल छी स्थिरजीिी?"

स्थिरजीिी राजा मेघिणि बिला ठाढि पर गेला आ कान मे कहलखिन, "छलनीतिक हेतु हमरा ई नाटक कर पडत। अपना सबके अगल-बगल के गाछ सब पर उल्लू जासूस अपन सबहक़ सभाक सब क्रिया-कलाप के देख रहल अछि। ओक़रा सबके देखाक अपना सबके आपसी फूट आ फसादक नाटक करए पडत। ओक़र बाद अहा सब कौआ के लक’ ऋष्यमूक पिित पर पहूच हमर पतीक्षा कर । हम उल्लूक दल मे िामिल भ ओकर सबहक़ विनाि केर

समान एकत्रित करब। घरक भेदी बनि लंका डाहि देबाक़ व्योंत करब।"

फेर की छल। नाटक शुरु भेल। स्थिरजीवी चिकरैत बाजल: “हम जेना कहैत छी तेना कर राजा, राजा केर बच्चा। किएक हमरा सब के मारबाब’ पर तुलल छै?”

मेघवर्ण गरजल: "गद्दार, राजा सू एहेन बदतमीजी बला भाषा मे आ सहो जोर सू तोरा बजबाक हिम्मत केना भेलौक?" अनेक कौआ एकहि संगे चिकचियैत बाजल: "अहि गद्दार के जान सू मारि देल जाओ महाराज।"

आब राजा मेघवर्ण अपन पंख सू स्थिरजीवी के कनपटी मे धेले चमेटा मारैत ठाढ़ि सू नीचा खसा देलखिन आ तुरंत घोषणा केला की "हम ऐ गद्दार स्थिरजीवी के तुरंत के प्रभाव स कौआ समाज सू बहिष्कृत क रहल छी। आब एखन सू कुनो कौआ अहि अधम सू कुनो तरहक़ नाता नहि राखत। ई हमर आजा अछि।"

अगल-बगल के गाछ पर नुकाक बैसल उल्लू जासूस के आँखि खुशी स चमकि उठल। जासूस सब तुरंत उल्लू के राजा के संदेश देलक जे कौआ सबमे फूट पड़ि गेल अछि। मारि-पीटक संग-संग गारि-गरौअल भ रहल छैक। अतेक बात सुनितहि उल्लूक सेनापति राजा के सम्बोधित करैत बाजल: "महाराज, यैह मौक़ा अछि कौआ सब पर आक्रमण करबाक हेतु। अहि समय मे हम सब ओक़रा सबके आसानी सू हरा देबैक़।"

उल्लू समाट अरिमर्दन के अपन सेनापति के बात नीक लगलैक। ओ तुरंत आक्रमण केर आदेश द देलक़ैक़। फेर की छल हजारो केर संख्या मे उल्लूक सेना बरक गाछ पर आक्रमण करक हेतु विदा भेल। यदपि ओतए एकौ टा कौआ नहि भेटलैक।

भेटबो कोना करतै? योजनाक अनुसार मेघवर्ण सभ कौआ के ल क ऋष्यमूक पर्वत दिस कूच क गेल छल। खाली गाछ देखि उल्लूक राजा थूक फेकैत बाजल: “हम्मर सबहक सामना त की डरे कौआ सब भागि गेल। एहेन काएर पर एक हजार बेर थू-थू।” सब उल्लू जीतक मद मे मातल 'हू-हू' के आवाज निकालि अपन जीतक घोषणा करए लागल। नीचा मे जमीन पर झाड झंखाड मे खसल स्थिरजीवी कौआ ई सब ध्यानपूर्वक देख रहल छल। स्थिरजीवी कांव-कांव केर आवाज निकाललक। ओकरा देखते मातर जासूस बाजि उठल: “अरे, ई त वैह कौआ अछि जकरा एकर राजा धक्का दए मारि कए खसा देने रहैक आ अपमानित करैत रहैक।”
उल्लूक राजा सेहो ओतय आबि गेलैक ओ पूछलकैक: “तोहर एहेन दुर्दशा केना भेलह?” स्थिरजीवी बाजल “हम राजा मेघवर्णक नीतिमंत्री छलहु। हम ओकरा एक नेक सलाह देलयैक जे आई-काल्हि उल्लू सबहक नेतृत्व एक अति पराक्रमी राजा क रहल छथि। हमरालोकनि के उल्लू सबहक अधीनता स्वीकार क लेबाक चाही। हमर बात सुनि राजा मेघवर्ण तामसे लाल भ गेल आ फटकारलक, दूतकारलक, एवं अपमानित कए कौआ समाज सं निष्कासित क देलक। हे महाराज, हमरा अपन शरण मे ल लीय।”
उल्लूराज अरिमर्दन आब गहन सोच मे पड़ि गेल। ओकर नीति सलाहकार कान मे कहलकै “राजन, शत्रुक बात पर कखनो भरोसा नहि करक चाही। ई अपन सबहक़ शत्रु अछि। एकरा जान स मारि देल जाए।” एक चापलूस मंत्री बाजल “नहि राजन! एकरा नहि मारल जाए। एहि कौआ के बक्सि क अपना दल मे राखि लेबा मे अपना सबके फायदा अछि. ई कौआ सबहक घरक भेद समय-समय पर बतबैत रहत।”

राजा के सेहो भेलैक जे स्थिरजीवी के उल्लू सबहक साथ मिला लेबा मे लाभे-लाभ अछि. ई सोचि उल्लूक झुण्ड स्थिरजीवी कौआ के अपने संगे लेने गेल। ओतए अरिमर्दन अपन उल्लू नौकर-चाकर के आदेश दैत बाजल, “स्थिरजीवी के गुफा के लगहि आवास कक्ष मे रहबाक व्यवस्था कैल जै। हिनका कुनो तरहक कष्ट नहि होबाक चाही।”

चतुर स्थिरजीवी कौआ हाथ जोडैत बाजल: “महाराज, अपने हमरा शरण देलहु, हमरा लेल ई बडड पैघ बात अछि। हमरा अहा अपन लगहि गुफा के बाहर एक पाथर पर एक सेविकाक रह देल जाओ। हमर इच्छा अछि जे एतहि बैसक हम अहाक गुणगान करैत रही।” एहि तरहे स्थिरजीवी लगहि गुफा के बाहर डेरा जमा लेलक। गुफा मे नीतिज्ञ सलाहकार एकबेर पुनः राजा के सावधान करैत कहलकैक: “महाराज, शत्रु पर कखनो विशास नहि करक चाही। शत्रु के अपन घर मे शरण देब आत्महत्याक सामान अछि।” घमंडे मातल उल्लू समाट अरिमर्दन अपन नीतिज्ञ सलाहकार के क्रोधस आंखि तरेरैत बाजल: “तो हमरा जादे नीति बुझाबए के कोशिश नहि कर। अगर तोरा ई लगैत छौ जे तोरा उचित सम्मान नहि भेट रहल छौक त तो अतए सं जा सकैत छै।” नीतिज्ञ सलाहकार उल्लू हारि मानि आब अपन दू-तीन मितक संग ओतय सं ई कहैत विदा भ गेल: “विनाशकाले विपरीत बुद्धि।”

किछु दिनक बाद स्थिरजीवी अगल-बगल स लकडी अथवा काठी इत्यादि आनि गुफा के दार लग एकत्रित करे लागल। कहला पर बाजल: “सरकार सदी आबै बला छैक। हम काठ आ झाखर सबहक फुसही मडैया बनबै चाहैत छी ताकि जार सं बचि सकी।” धिनैः-धिनैः लकडीक बडड पैघ ढेर जमा भ गेलैक। एक दिन जखन सब

उल्लू सुक्त रहल छल तखन क्स्थरजीिी उवडक सोझे ऋष्यमूक पिति पर पहुचल। ओतए योजना के अनुसार मेघणिसिब कौआ संग ओकर पतीक्ष क रहल छलैक। क्स्थरजीिी बाजल: “आब अहा लोकक्न समीप के जंगल सं जतए आवा लागल छैक एक-एक जरैत लकडी अपन-अपन चोच मे उठा हमरा पाछा-पाछा आउ।”

समस्त कौआक सेना अपन-अपन चोच मे जरैत लुकाठी लेने क्स्थरजीिक पाछा-पाछा उल्लूक गुफा मे आक्ब गेल। क्स्थरजीिी दारा एकक्तत कैल लकडीक ढेर मे आवा लगा देल गेलैक। एक-एक टा उल्लू या त जवड क मक्र गेल अथिा दम घोटला सं मक्र गेल। कागराज मेघणिक्स्थरजीिी के योजना आ चातुयिसं गद-गद होइत ओकरा कौआ रताक उपाक्ध सं सम्माक्नत केलक।

पंचतन्त्र केर ई कथा एक्ह बात के पमाक्णत करैत अक्छ जे क्चडई-चुनमुन मनुखक जीनिक अक्भन अंग जका क्थक। एकरा सब स सीख लेल जा सकैत अक्छ आ तारतम्य स्थाक्पत क जीनाई क्चक। अथभिेल जे अपन लोक समाज आ क्यिहार ई कहैत अक्छ जे एकरा सब स पकृक्त मे सामंजस्य स्थाक्पत कर । एक दोसरक क्बना जीनि अपूणिअक्छ। पि ु आ क्चरै स तारतम्य स्थाक्पत केने लाभ। हलाक्क एखन क्कछु षिसि ई सुनबा मे आक्ब रहल अक्छ जे कौआ हेजक-हेज मे मक्र रहल अक्छ। मोन एक्ह तरहक बात सुक्न आहत होइत अक्छ। कौआ त पयािरिण के पाकृक्तक सफाईकमी क्थक आ सैह मक्र रहल अक्छ तखन पयािरिण के की हैत?

आब लोकगीत पर अपन ध्यान केक्न्रत करी। माय अपन बच्चा के मूह मे कौर दैत काल भाक्त-भाक्त के क्चरई सब स सम्बन्ध जोडैत कहैत रहैत छक्थ ले बौआ ई कौर कौआक छौ; ई कौर मैनाक छौ, आक्द-आक्द। कदाक्चत एक्ह तरहे सामाक्जक रपे हमरालोकक्न क्चरै-

चुनमुन स एक मानवीय सम्बन्ध बना लैत छी। कखनो केलि कखनो नखड़ा माता, भाई, बहिन, सखा आ सम्बन्धी बनि जैत अछि। एकटा नेनाक गीतक किछु पंक्ति देखु:

मेना के बच्चा कुरैया गे

दू टा जामुन खसा

लाली खसैबए त मारबौ गे

दू टा कारी खसा

तू छै बहिन तोहर हम भैया

जौ ने खसेले त बुझ ले दैया

मारब खुआ तोरा जहर गे

दू टा जामुन खसा

मेना के बच्चा कुरैया गे

दू टा जामुन खसा।।

काली कान्त झा "बूच" अपन कविता "दीनक नेना" जे गीत सेहो कहल जा सकैत अछि मे कौआ के सम्बाहक जका पयुक्त करैत छथि। एहि गीत मे कवि एक गरीब माय जकर पति बाहर कमेबा लेल गेल छैक, घर मे ने अन ने ढउआ छै। छोट दुधपीबा बच्चा कखनो चाकलेट, कखनो बिस्कुट त कखनो कुनो आरो वस्तु लेल माय स जिद करैत छैक आ कनैत छै। लाचार माय एक कौआ के कुचरैत देखैत छैक आ ओकरे सहारा लए अपन कनैत होकरला के गीत सुना बौसबाक पयत क रहल छैक। बौआ देखु-देखु, ई क़ुआ गाबि रहल अछि। ई तोरे कुचरि क सुना रहल छौ रे बाऊ। तो ओसारा के बीच मे सुतल छै आ ई कौआ पूब दिस तोरा देखि खुशी स नाचि रहल अछि। अते सुनर पुरबा बसात जेना कौआ के नाचब

लेल आ तोरा मस्त करक लेल बसातक छनन-छनन लहकर सं बासुरी बजा रहल छौक। रे बौआ तोहर जन्म काधनि घर मे भेल छौक ताकि तोरा लेल बिस्कुट आ चाकलेट बनले नहि छौक। बिसकर जो एकहि स्तिु सबके। तोहर गोलगर पेट नोन रोटी सं भकर जाऊ त भाग्य! लेकिन, चिंता के कोन बात? बसातक धुन आ कौआक मस्त भ नाचब मधुर बातक सरिलहरी तोरा लेल तैयार केने छौ। अनका थोरे ने ई भाग्य छैक? तोहर पिता परदेिसया छौ रे बाऊ। कतेक दिन भ गेल मुदा निरमोिहया कुनो चिट्ठयो नहि भेजलक अछि! ई कोनो बात भेलै, कह ने? केना एकहि अस्थिा मे ई कौआ अपन कुचरब सं आ बसातक झोका अपन मधुर धुन स तोहर नीद स झकमैत माय के टीस जगा रहल छौक! रे नेना! तो की बुझबै जे गरीबी ककरा कहै छैक? शमजीिवी के सपनो मे सुख नहि लिखल छैक। बेचारा शमजीिवी अपने त अन्हार घर मे िडबिया जरा क राित बीतबैत अछि आ अपन परिशम सं समस्त नगर के जगमग करैत अछि। देख ने कोना ई हुलसगर बियिन अपन नहु-नहु िमठगर बसात सं तोरा सुता रहल छौक! किनयारानी, झटिक क बौआ लग आउ ने! बौआ के सुताउ ने! रे सोन, तो बिना स्तिु सब खेने उपासल छै। हम ग्लािन सं मरल जा रहल छी। मुदा हम छी लाचार कर त की कर रे बौआ?"

मूल गीतमय कविता कनि देखू:

देखही रौ बौआ, ई कौआ गिब छौ।

सुनही रौ तोरे, कुचकर सुनबै छौ।।

एम्हर तो सूतल छे माझे ओसार पर

ओम्हर ओ नाचै पुिरया मोहार पर

पुरबा सिात बासुरी बजा छौ.........।
सुनही रौ तोरे, कुचक्र सुनी छौ।।

तोरा लय बनलौ ने बिस्कुट आ चाकलेट
नोनो रोटी सं भरतौ ई गोल पेट
बातक मधुर सिरलहरी अबै छौ .....।
सुनही रौ तोरे, कुचक्र सुनी छौ।।

बापे तोहर बनलौ परदेशी
कियटी ने एलौ भेलौ दिन बिशी
मा केर कानायल व्यथा जगबै छौ।
सुनही रौ तोरे, कुचक्र सुनी छौ।।

की बुझबै ककरा कहै छै गरीबी
सपनो मे सुख नहि जतऽ शमजीवी
लुती लगाकऽ नगर बसबै छौ.......।
सुनही रौ तोरे, कुचक्र सुनी छौ।।
कोरा मे तोरा सुताबै छौ बिकाया
झटकल औ अविहे रौ नूनूक काकाया
तोहर उपास हमरा लजबै छौ
सुनही रौ तोरे, कुचक्र सुनी छौ।।
कौआ मिथिला मे दू पकारक पैल जैत अछि सामान्य कौआ आ कार कौआ। दुनू के अपन-अपन स्थान मैथिल समाज आ लोक परम्परा मे छैक। कार कौआ अशुभ के सूचना दैत अछि । आ सामान्य कौआ शुभक संकेत। दुनू जे बजैत अछि तक़रा लेल अलग-अलग

िब्दद छैक। कार कौआ "डकै" छै आ सामान्य कौआ "कुचरै" छै। डकनाई अिुभ के सूचक आ कुचरनाई िुभक सूचक। कछु लक्ण छैक जाक्ह स ई पता चलैत छैक जे कौआ के कुन पक्रस्थक्त मे बेसब, उठब, कुचरब िुभ आ कोन पक्रस्थक्त मे अिुभ केर सूचना दैत अक्छ।

कौआ जखन घरक चार अथाि आंगन मे कुनो ऊूच चीज पर चक्ढक कुचरे त कहल जैत छैक जे ई िुभक संकेत अक्छ; संगक्ह घर मे कयोक पाहून एता कतेको बेर एक्ह तरहक बात सय्य भ जैत अक्छ।

यक्द कौआ घरक छत (अथाि चार) अथाि आंगन मे हक्रयर गाछ पर बैसए त हेरायल िस्तु भेटब कावि त बुझु। एहन क्स्थक्त मे कोटि कचहरी मे दबदबा बनैत छैक आ मुक़दमा मे जीत हाक्सल होइत छैक एिि धन-धान्य मे बृक्धि होइत छैक।

कौआ अगर बखारी, अनक ढेर आक्द पर बैसय त धनक लाभ होइत छैक। गाय केर माथ पर कौआ बैस गेल त क्मयजन सं भेट हेबेटा करत।

एहो मान्यता पबल अक्छ अपन मैक्थल समाज मे क्क अगर कौआ सुखैल माक्ट क्कंिा गदा मे ओंघराए लागल त एकर अथिई भेल जे पचुर मात मे िषा हैत।

एक्ह सबहक क्पपरीत कौआ जो कुनो सुखैल गाछ पर बैस क कुचक्र रहल हो त ई कुनो महामारी फैलबाक पूिि सूचना क्थक।

अगर ककरो माथ पर कौआ अपन चोच स हडडीक टुकडी खसा दैक त ओक्ह व्यक्क्त के मृय्यु कावि त बुझु।

मैक्थली लोकगीत महाकक्व क्वदापक्त के क्बना अपूणि अक्छ। एक क्वरही नाक्यका जकर पक्त परदेस गेल छैक केर िदना आ केना ओ कौआ के अपन समक्दया बनबैत अक्छ, केना ओकरा लोभबैत अक्छ इय्याक्दक

बहुत सुनर णिनि महाकवि क्षम लोकगीत मे करैत छथि:
मोरा रे अंगनमा चनन केर गछिया ताहि तर कुररै काग रे।
सोने चोच तोहे बाधि देबौ बायस जौ पिया अओता आजु रे।
गाबह गाबह सखि लोरी झूमरि मदन अराधन जानु रे।
चहुं दिसि चंपा मेहुलि फूललि चंर इजोरिया राति रे।
कोना कए हम मयन अराधब होयत बडी रतिसाति रे।
पाक समय कागा केओ ने अपन हित देखल आंखि पसारि रे।
विदापति कवि रि इहो गाबए तोके अछि गुनक निधान रे।
राि भोगीसर सब गुन आगर पदमा देिी रमान रे।।

एहि गीतक संक्षेप मे अर्थ ई भेल जे हमरा आंगन मे चानन केर गाछ अछि आ ओई गाछ के ठाढ़ि पर एगो कौआ बैसल कुचरि रहल अछि। ई कविता रपे ि भ समाचार केर लक्षण थिक। हे कौआ, अगर आई हमर पियतम आबि गेला त हम तोहर चोच सोन स मढि देबौ। आउ हे सखी बहिनपा सब, सब मिलि झूमर गाउ। आई हम पेमक आराधना कर जा रहल छी। चार दिस चंपा आर भालसरी के फूल फुलाएल अछि। मुदा ई पूर्णिमीक राति? कोना हम कामदेिक आराधना क' पैब। कारण जे एहि मिलनक सबस पैघ उपहार त कामदेकि आराधने हेतकि। सुन कौआ, खराप समय मे कियोक अपन नहि होइत छैक। ई बात आंखि खोलि क देखि चुकल छी। कवि विदापति कहैत छथि हे सुनरी, अहाक पियतम गुणक खान छथि। जेना राजा भोगेि्र छथि आर जे पदा देिी के साथ रमण करैत छथि।

जाहि समय मे आिगमन के सुविधा अतेक उनत नहि रहैक ताहि क्षण मे कौआ के लोक खाि तौर पर सतगन आ नेना सब कहौतिया बूझैत छल। नायिका कहि दिन करैत छथि जे आउ आ हमर अंगना

मे कक्ख कुचर । अहाके हमर आंगन मे स्वागत अच्छि। हम हम अहा के पाक्ख स स्वागत करब, बेसबाक लेल पीढी देब आ अगर अहा के कुचरला सं हमर प्रियतम कही आबि गेला त ओ जे कोनो सनेि अनता तक्हि मे पहिल हिस्सा अहीके देब। एतबे नहि, अगर हमर प्रियतम परदेसी आबि गेला त हम अहा लेल कंगना सनेि बनाएब। अहा चिंता नहि कर । हमर बात पर विशास कर । हमर हितगाहक बनु आ आउ आ हमर अंगना मे कुचर ।

कक्ख देखू एहि गीत के:

हे रे कौआ कुचरि बैस अंगना मे।

पाक्ख देबौ पीढी देबौ।

पहिलुक सनेि हम तोरे देबौ।

जौ प्रियतम परदेसी औता।

तोरा सजैब हम कंगना मे।

हे रे कौआ कुचरि बैस अंगना मे।

अगर कुनो महिला आ नकिकया कक्ख ताम-झाम िलीि छैथ आ हुनकर दिमाग सातम असमान पर चढल छक्ख। हरेक चीज भोजन स पहिरन धरि मे नखरा छक्ख तकर अलगे बात! मूह-कान कुनो खाके सन मुदा घमंड ऐना जेना विशिसुन्दरी होथि। यथाथमिे हुनकर मुह कौआ सनहक छक्ख। कमेट हुनका पर छोटगर अच्छि ओहो गीतक रप मे। कक्ख देखी:

कौआ सनहक़ कारी आ बाकूला सनहक़ ठोर।

बैसल-बैसल चाही हिनका दाली भात चालकोर।

हमही सबस सुनरि छी आ हमरे सुनर दूिा।

सासु कियैक नहि भानस करती नहि फूकब हम चुलहा।।

गाम्याचल मे कौआ के कुचरब भोर होमाक सूचक अछ। नायिका के नायक कहैत छथिन जे कौआ बजलक आ भोर भ गेल; भोर भेल त नगर भरि मे ि‍र भ गेल. आब कतेक काल सुतब? यै फला बौआ के माय उठू ने! ऐना कोना चलत दिन? चलू आब कार्यक्रमि‍मे लावा जाई।

कौआ जगलै भेलै भोर

भेलै भरि नगरी मे ि‍र

आबो जागू यै बौआ के माय।

माय अपन कनैत बच्चा के कौआके नाम लै सूतक हेतु तैयार करैत छथि। लोरी जका कौआ के गीत मे पात बना कनैत नेना के सुतबैत छथि। बौआ सुत्त रहू देखू-देखू आकाि‍ मे केना कौआ उड़ रहल अछ। चिंता नहि कर अहाक पिताजी जखन आबए लगता त पटना स अहा लेल ढौआ लेने एता।

चुप रहु चुप रहु बौआ

आकाि‍ मे उडई अछ कौआ

एयता बाबू पटना स लेने औता ढौआ।

चैताबर मे नायिका के टीस आ कौआ दुनु के मेल देखल जा सकैत अछ। नायिका के आंगुर मे साप डसि लेने छैक. ि‍यद विरह के डंक? अपन ननदि सं नायिका कहैत अछ जे के ओकरा लेल ि‍दि बजा आनत? के ओकर पीडा के समाप्त करत? के ओकरा लेल पलंग के ओछायन तैयार करतै; नायिका के प्रियतमके के बजा अनतै हो राम? नायिका के पिता ि‍दि बजेथिन, और माय पीडा काटेथिन; ननदि पलंग पर ओछायन तैयार करथिन; देबर पिया के बजा

अनचथिन। नायिका कौआ स किछु दिन करैत कहैत छथिन जे रे कौआ तोरा हम दही आ चूडा के भोज खुआ देबौक अगर हमर समाद के हमर प्रियतम तक लेने जयबै। आब कने कौआ के मानवीकरण देखु, कौआ नायिका के कहैत अछि ‘‘ठीक छै हम तोहर समाद तोरा प्रियतम लग ल जेबौक मुदा एकटा समस्या अछि। हम तोहर प्रियतम के नहि जनैत छी फेर कोना तोहर समाद देबैक?’’ आब नायिका कौआ के अपन प्रियतम के हुलिया बतबैत कहैत अछि: ‘‘हमर प्रियतम के पातर-पातर डार छनि आ घरक दरबज्जा पर चानन केर गाछ छनि।” आब कौआ सहर्ष नायिका के समाद ल क ओकर प्रियतम लग जएबाक लेल तैयार भ जैत अछि।

अंगुरी मे डसलक नवाकिया हो रामा
के मोरा जायत बैद बजाएत
के मोरा हरत दरदिया हो रामा।
के मोरा जाएत पलंगा ओछाएत
के मोरा बेनिया के बजाएत हो रामा।
बाबा मोरा जाएत बैद बजाएत
अम्मा मोरा हरत दरदिया हो रामा ।
ननदि मोरा जाएत पलंगा ओछाएत
दिओर मोरा बेनिया के बजाएत हो रामा
देबऊ रे कागा दही-चूडा भोजन
हमरो समाद नेने जाह हो रामा।
तोहरो बलमुजी चीन्हियो ने जानियौ
कोना समाद नेने जाएब हो रामा।
हमरो बलमुजी के मुठी एक डार छनि

दुअरे चनन केर गछिया हो रामा।।

आब किछ सोहर दिस चली. कोना सोहर के मैथिली लोकगीत कहेन? एक सोहर मे नायिका जे गभसिं अछि कोना अपन भािना के व्यक्त क रहल अछि। संतान केर कामना मे व्याकुल नायिका हरेक आगंतुक के सूचना देमए बला कौआ के चोच के सोन स मढबाक अशासन दैत अछि आ अपन जाति बडड स्नेह स कौआ के कहैत अछि कि हे कागा अगर हमर अंगना मे तोहर कुचरब िभ सिध भ गेल आ यदि हमर परदेसी प्रियतम घर आबि जाथि त हमर बाझपन ख़तम भ जायेत। आ से भ गेल त हम तोहर चोच के सोन स मढा देबह।

जो मोरा कगबा रे प्रिया अयताह

होरिला जनम लेत रे।

कगबा सोन मे मढएबो दुनू लोल

त बोलिया बर सोहाबन रे।

चुपे रहू चुपे ननदिया जनिअ कर रोदन हे।

ननदिया आजुए आओत घरबइआ बझिनिया पाप छुटत हे।।

दोसर सोहर मे नायिका के संतान पाबि मे आब देर नहि छैक। कखनो ई िभ सूचना आबि सकैत छै। आब छठिहार मे ककरा-ककरा सूचित कैल जाय आ निमंत्रित कैल जाय ताहि पर पति आ पती मे बात भ रहल छैक। होरिला के जनम भेल छैक से सूचना त कौआ ने देतैक? सगुन केर नौत त काग ने भाखत। हा जी हा. नायिका अपन पति के कियढबैत कहैत छथि जे कियाद आ लोक आ समाज के नौत त जैत मुदा हे प्रिया हम अहा बहिन के नहि नोतब कारण जे अहाक भावान नहि आबि पेता। कौआ के सगुनिया बनेबाक विधान सकिपहु बडड सोहनगर लगैत छैक।

आरे-आरे कागा सगुनिया सगुन नौत भाख़ब रे
कागा रे मोर घर उचित कल्याण कहा-कहा नौतब रे ।
दर जे नोतब दिआद लोक आओर समाज लोक रे।
पिया हे आहाक बहिन नहि नोतब कि भावान कहा आओत रे।।

एक विरह गीत मे नायिका केर बेहाल हालक दारण व्यथा व्यक्त कैल गेल अछि। तमाम चिडई जाहि मे कागा सेहो सम्मिलित अछि गाछक डारि बैस गेल अछि। पात भ चुकल अछि आ पात होइतहि नभ मंडल मे सूयकिरे लालिमा छटकि रहल छैक। नायिका अपन सखी के संबोधित करैत कहैत छथि ‘‘हे सखी, हमर पेमक पियास कोना मेटत? हम त विरह दिना मे तडपि-तडपि क दिन आ राति काटि रहल छी. राति बीत गेल; हम बेर-बेर चार कात चकुयैल देखैत छी मुदा हे सखी, एखन धरि हमर पिया कहा अएला?
खग उडि बैसल तररि डाली
भेल गगन मे पात सुलाली
हमर पियास मेटत कोना सजनी
तडपि-तडपि बितए दिन-रजनी
रैन बितल मोरा पिया नहि आएल
रहि-रहि चहु दिश ताकल सजनी।।
मैथिली लोकगीतक सब सं सुन्दर रप तखन रविगोचर होइत अछि जखन कौआ संग-संग दोसर जंतु के सेहो मानीकरण कए ओकर शृंगार आ पेम भाि के गीतक माध्यम सं व्यक्त कैल जैत अछि। एहि तरहक उदाहरण मे सब सं सुनर उदाहरण विषहरि आ कौआक थिक। एक विषहरिक गीत मे एहेन स्थिति अबैत छैक जे विषहरि के अंगूठी कौआ आ सोनक गीमहार चिलहोरि ल क भावा गेलथि।

आब विषहरा कानए लगली। लोक सब विषहरा के मनेबाक पयास क रहल अछि। सोनरा के बजा सोन देल जैत अछि आ पटबा केर पा। दुनु के तुरत आदेश देल जैत अछि जे यथाशीघ्र विषहरा मुरुकका आ गीमहार गढल जाय।

कागा ल' गेल मुरुकका कलहोरा गीमहार
राम ताहि लेल विषहरा रोदना पसार।
सोन ले रे सोनरा र पा ले रे पटबा
राम गढि दए सोनरा भैया सोने गीमहार
पहिर लीअ विषहरा मैय्या गले गीमहार।।

विषहरा के दोसर गीत मे एक गहीर पोखरि मे घुसि क जकर उचगर कमड छैक विषहरा स्नान क रहल छली। नहेला-सोनेला के बाद अपन नमहर-नमहर केश के थकरेत छली। एकाएक कौआ सोनाक ककबा ल क भावा गेल। आब कनैत-खीजैत विषहरा अपन माय लग आबि कहलथिन जे कोना कागा हुनकर ककबा चोच मे ल क पर उडि गेलथि। माय बौसति कहलथिन: “हे विषहरा दाई, अहा कानू-खिजू नहि हम अहा लेल फेर स सोना के ककबा बनबा देब”। आब विषहरा चुप भ गेली।

नीची रे पोखरिया के ऊची रे मोहार
राम ताहि पइसि विषहरा कर स्नान।
नहाय सोनाय विषहरा थकरथि केश
राम सोना के ककहिया आजु काग लए गेल।
कनैत खीजैते विषहरा आमा आगु ठाढि

राम सोना के ककबहिया आजु काग लए गेल।
जुबा क़ानु जुबा खोजू विषहरि माय
राम सोना के ककबहिया हम देब बनबाय ।।

तेसर बिषहरि गीत मे एहेन कल्पना कैल गेल छैक जे एक छोटबछन जमुना के कछेर मे बान्ह पर छोट कदम्बक गाछ छैक। ओहि गाछक छाहरि मे बिषहरि जुआ खेल लगली। जुआ खेल काल ततेक बेसुध भ गेली की कखन कौआ उड़इक एलई आ झपटा मारि बिषहरि के हार ल गेलबा से पते नहि चललबा। जखन होिश मे एली त कनैत खिजैत कौआ के पाछा-पाछा दौडली। रे कौआ तो जते बैसबै हम तोरा छोरबौ ने ओतहि तोहर ठोर दावा देबौक।

छोटी-मोटी जमुना-दह मे छोटी नील गाछ
राम ताहि तर विषहरि खेलू जुआसारि।
जुअबा खेलइते विषहरि भेली बेसूधि
राम ताहि खन काग उड़ि हार लए गेल
कनइते-खीजइते विषहरि धयल पछोर
राम जहा धय बैसबह दागब तोर ठोर।।

अहि तरहे मैथिली लोकगीत आ व्यवहार मे कौआ आ मनुखक बीच पेम अनंत अछि। जतेक भीतर जैब आ जतेक मंथन करब ततेक अमृत भेटत। ओना चचा मैथिली लोकगीत आ कौआ पर क रहल छी मुदा कहि नहि कथीलेल यातीजीक (नागाजुनिक) "अकाल और उसके बाद" कविता स्मरण आबि रहल अछि। भुखक जीला मे एहि कविता मे केलि नायिका नहि तडपि रहल छैक अपितु ओकरा संगे वारवाट, कुकुर, कौआ, मुस सब ओहि भुखक िदना के सहयाती छैक।

कई दिनो तक चूिा रोया, चकी रही उदास

कई दिनो तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनो तक लगी भीत पर छिपकलियो की गश्त
कई दिनो तक चूहो की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अंदर कई दिनो के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनो के बाद
चमक उठी घर भर की आँखे कई दिनो के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखे कई दिनो के बाद।

बाबा ई कविता हिंदी मे लिखला। चूंकि ई लेख हम मैथिली मे लिख रहल छी त सोचलौ एक बेर एहि कविता के मैथिली मे अनुदित करबाक पयत करी। कहेन भेल से नहि बुझल अछि मुदा पयत त केलहु। कनि देखू

कतेक दिन धरि कानल चुलहा जातो रहल उदास
कतेक दिन धरि कनही कुकुर सुतलै ओकरा पास
कतेक दिन धरि घरक भीत मे बारवाट केलक गश्त
कतेक दिन धरि मुसो के रहलै हालत शिकस्त।
दाना आएल घरक भीतर कतेक दिन के बाद
देखल धुआं अंगना स ऊपर कतेक दिन के बाद
मोन भेलै घर भरि के हरियर कतेक दिन के बाद
सुगबुगेलक पाँखि के कौआ कते दिन के बाद।।

एकटा बसन्त के गीत मे नायिका कागा के सम्बाहक बना कतेक बात बता दैत छैक। बेचारी नायिका, फगुआ नजदीक आबि गेलैक। लोक के देखि ओकरो रंग रभस करक इच्छा भ रहल छैक मुदा रंग खेलत त ककरा संग? पाहून त परदेसिया छथिन. दूर देस मे बैसल छथि। हे कागा अहा हमर समदिया बनु आ उड़ि क हमर कंत के हमर समाद द आबियौन। ओ हमरा हीरा मोती आ नग सं सुसज्जित

एक चोली पठा देने छला से तार-तार भ गेल। हुनकर बारह दिना अलग रहि-रहि हमरा सता रहल अछि. आब रहल नहि जैत अछि।

ककरा संग खेलब ऋतु सिन्त।
करायल फागुन दूर बसु कन्त।।
उड़-उड़ कागा जाहु बदेि।
हमरो ललाजी के कहब उदेि।।
चोलिया एक पहु देल पठाय।
चार कदि हीरा-मोती लाल जडाय।।
चोलिया फाटल तारम्तार।
विरह सताओल बारम्बार।।
सूरदास जे गाओल सिन्त।
एहि जग बहुरी ने आयल कन्त।।

फाटू हे धरती: सीता दाई केर दिना

राम बियाहने कुन फल भेल।
सीता जन्म अकारथ गेल।
कखनो काल जखन माय तंग भ जैत छलीह त अनायास दोहरैल होइएत कहैत छलीह:
“फाटू हे धरती”
एकर बाद सब बुझ्झ जैएत छल जे माय आब तामसे घोर छथि। फेर हुनका कियोक किछु नहि कहैत छलखिन। मुदा हमर नेनमति देखू हमरा होइएत छल माय फाटू हे धरती कथी लेल कहैत छथि। एक दिन जखन माय केर मोन ठिक रहनि त बाल सुलभ जिज्ञासा कैल:
“माय, अहा फाटू हे धरती कियैक कहैत छियैक?”
माय कहली: “की कहु बाऊ, नारीक स्थिति एखनो सीता दाई जका अछि अपन मिथिला नगर मे। पूरा संसार त पुरुष प्रधान अछिये मिथिलो राममय बनल ऐछ। बिना पार्वती के महादेब नहि, बिना राधा के कृष्ण नहि, तहिना बिना सीता के राम नहि तथापि लोक नामो लेबय मे राम के अगुआ देत अछि। लोक अर्थात जन सामान्य, भक्त, विद्वान सभ कियो राम लग जेना सीता के तमाम कैल-धैल त्याग, मेधा, गुण, अनुराग, रामक प्रति समर्पण आदि जेना बिसरि जैत हो! तुसलीदास एक दिस त ई लिखैत छथि:
बंदौ राम लखन वैदेही, जो तुलसी के परम सनेही।
तुलसीदास अपन रचना रामचरितमानस मे १४४३ बेर राम के नामक जिक्र करैत छथि। एकर अतिरिक्त राम के आन शब्द जेना, राजीव, अधिकुमार, रघुनाथ, दशरथनंदन, रघुनन्दन, आदिक प्रयोग केने छथि। लेकिन वैह तुलसी जखन सीताक चर्चा करैत छथि त मात्र १४७ पर अटकि जाईत छथि। सीता दाई के आनो नाम जेना की

जानकी, बडभागी के जोवड ली त सब क्ललेलाक बाद होइत अछि ३२५ 147 बेर सीता, ६९ बेर जानकी, ५८ बेर बडभागी आ ५१ बेर बैदेही। अहू मे एक राजनीक्त ऐछ. सीता अपने गुने बडभागी नक्ह छैथ. ओ बडभागी अक्ह दारे छैथ जे हुनकर विाहि राम संगे भेल छैन। बाह रे पुरष भक्त के पुरष भगबान के पक्त समपणि! समपणि नक्ह अंध समपणि! आब िह सीताक दुःख देखू: लंका मे राम रहला १११ क्दन आ सीता रहली ४३५ क्दन, अथात राम स चाक्रगुना अक्धक। ओहो यातनामय जीिन। असगर जीिन। क्ममि जीिन. डर, भय, आि ि, हताि भरल जीिन। क्तरंकार साधिी क जीिन।"

कक्ह ने की भेल! माय जेना अपन भाििा के फोक्र-फोक्र हमरा कह लगली। हम छोट जरर रही मुदा अतबो छोट ने जे माय के कहक भाि नक्ह बुइझ पाबी। कक्तक क्ण लेल लागल जेना माय केर िरीर मे सीताक आत्मा बैस गेल हो! माय कहैत रहली:

"देखू जखन राम अितक्रत भेला त सिगिसि देिता सब आक्ब हुनकर दिनि केलक्न। माय कौिल्या ओक्ह विराट रप के देक्ख घबरा गेली। भगिान स पाथनिा केली जे नेनाक सिरप मे आबक्थ:

माता पुक्न बोली सो मक्त डोली तजहु तात यह रपा।

कीजै क्ससुलीला अक्त क्प्रयिीला यह सुख परम अनूपा।

सुक्न बचन सुजाना रोदन ठाना होई बालक सुरभूपा।।

आ राम अपन माय केर क्निदन के सिीकार केलक्न। नेना भ गेला आ कानय लगला। माता कौिल्या िात्सल्य पेम मे क्तभोर भ गेली आ अपना के सििशेस्ट माय मानक्न लेलक्न।

आब सीता के देखू। ने कुनो देखाि ने कुनो ताम-झाम. जखन समस्त क्मक्थला मे अकाल भ गेल आ राजा जनक सियं हर जोतय गेला त धरतीक बेटी धरतीक गभसि सिणिकुम्भ मे एक बच्ची के

सरिप लेने पगट भेली। नह माय सुनयना के कदिन करय पडलक आ ने जनक राजा के जे छोट भ जाऊ, नेनाक सरिप मे आवा जाऊ, आद-आद। ऊपर अथात अकास आ सगिसि देिता, पक, गायक-गाकिा, ादियंत बजाबय बला, नतकि-नतकी, यक, इंर सब आनंदत भ गेल। ऊपर स एक अपूिआ मनमोहक ादियंत संगे ओकरा बजबय बला कलाकार सब सेहो सगिसि आयल। ओ ादियंत रहैक रसनचौकी। सगिसि पुप षिा पारंभ भेल। के नह पसन भेल। सबहक मोन मे उमंग आवा गेलैक। आब झर-झर षिा होमय लागल। कसान खेत दस दौरल। आर की-की ने भेल। की तुलसी बाबा एह पकरण के अतेक विस्तार स लखला? नह। कयैक, त सीता बेटी छली ने!''

सीता के राम संगे विाहि भेलक। लोक बुझलक जे आब सीता पटरानी भ गेलीह। राम आ सीता केर जोडी ककरा नह ाभिनगर लगलैक। दाई माई कयकर- कयकर क गीत गेली , बाध ियिहार केलक। जनक राजा अपन सिसि नछाबर क देलाह। मुदा कह नह कयैक सीता दाई केर बहनपा सब के राम पर कक िका छलक। जखन राम धनुष भंग क देलथिन त उमंग स मातल सया दाई ामाला हाथ मे लेने रामक दस बढलक। सया सुनर के पेम मे मातल राम झट दक अपन गरदक नीचा केलक। सीता माला रामक गरदक मे डालय लगली। हठात सीता के हाथ हुनकर बहनपा सब अपना दस खीच लेलक। राम अचेकायल रह गेलाह! ई की भेल? एहेन विचित यिहार कथी लेल? सखी सब के की भेलक? पुछलथिन ऐना कयैक? की गलती भेल हमरा स?

सखी सब कहलथिन राम के : ''हे यौ पाहून! अहाक परािर बडड

नीक नहि अछि। अहा सब महिला के भोगक वस्तु मात बुझैत छी। मिथिलाक व्यवहार दोसर अछि। अतए महिला सहचरी छथि। अहाक पिता केर तीन पती : कौशिल्या, सुमिता आ कैकेई छथिन। जनक राजा के एकहि रानी सुनयना छथिन. यौ पाहून! अहाक पितामह के सेहो अनेक पती छलथिन। फेर अहाक की ठेकान? आई मिथिला नगरिया मे धनुष भंग कै सीता के हाथ भेट गेल। काल्हि कतहु दोसर पराक्रम स कुनो आरो लडकी के हाथ अहा पती के रूप मे ल लेब त हमर सिया धिया के की होयत? हमर मिथिला मे एकै पती के नियम चलै छै''

राम चिंता मे आबि गेलाह। कहलथिन: ''अहा सब बात त ठीके कहैत छी। मुदा हम सीता के कुनो स्थिति पर अपन अर्धांगनी बनेबा लेल तैयार छी।''

सीताक सखी सब आब थोरे आरो भारखमी होइत बजली: ''तखन सुनु। अहा सप्पथ खाऊ जे कुनो हालत मे सीता के सौतिन नहि आनब''
राम बजलाह : हमही नहि हम चार भाई आई समस्त लोकक समक्ष सपथ खैएत छी जे हम सब एक पती धर्मके पालन करब।

फेर की छल पूरा धूम धाम स सीता चार बहिन केर विवाह राम केर चार भाई संग ओही मंडप मे भ गेलनि।

विवाहक बाद सीता सासुर गेलीह। राम संगे बने बने घुमली. रावण हरण कै लंका ल गेलनि। अशोकक गाछ लग समय कटली। राम

राम कहैत रहली। सुकुमारी क्षया के जंगल आ गाछ पात मे सेहो पक्षक संग जीनि नीक लगलक्ष। कव्हओ कुनो विकायत नक्ष। निासि त राम के भेल छलक्ष मुदा सीता पती धमकिे पालन केक्ल आ रामक संगे गेली।

“जखन सीता एलीह आ गभसि छली ताक्ह काल एक धोबी के उपराग स परोनि भए राम सीता के घनघोर जंगल मे असगर भेज देलक्थन. कहु त कतेक कठोर छलाह राम! धमाश्त्त कहैत अक्छ जे क्सत्गन कतेक खाराप हो मुदा जखन ाि गभसि हो त ओकरा सब सुख देबाक चाही आ घर स एकौ क्ण लेल बाहर नक्ह जाए देमक चाही। बाह रे मयादा पुरषोतम राम! कत गेल मयादा अहाक? अगर अहा पजा ायिसल छलौ त एक पक्ष सेहो रही ने? अहा के त बुझल छल जे सीता क्षष्कपट आ गंगा जका पवित छक्थ। अगर अहा अयोध्या मे एक पथा पारंभ करै चाहैत रही त फेरो राज चलेबक क्जम्मेदारी भरत के द पक्ष धमकिेर पालन करैत सीता संगे निासि चक्ल जैतहु जेना सीता अहा संगे अपने मोने पती धमकिे पालन करैत गेल छलीह? मुदा से कोना! पुरष रही ने अहा। पुरष दम्भ के के रोकत! कही एहेन त नक्ह जे पुरष दंभ सेहो मयादा पुरषोतम के लक्ण हो आ अपना के ओक्ह दंभ मे खपा देनाई या दंभ के नीचा जीनाई नारीधमा?”

खैर, लक्ष्मण जी सीता के जंगल मे असगरे छोक्ड देलक्थन। लाचार आ ििि सीता! हे देि! जाक्थ त कत आ ककरा लग? के ािरण देतक्ष? आ ताक्ह क्ण बाबा बाल्मीकि सीता के अपन आशम मे स्थान देलक्थन। एक क्दन रास्ता मे पसि िदिना उठलक्ष। निक लोक सब मदक्ष केलकक्ष। इच्छा भेलक्ष जे अयोध्या मे जानकारी भेजी। मुदा

भेलका जे राम नहि बुझलथि त नीक। हजमा के कहलथिन "तो भरत,के सतुघन के, लक्ष्मण के, तीनो माता के चुप चाप बता देलहक मुदा राम नहि बुझलथि।"

जखन राम अशमेध यज करै लगलाह त पंडित कहलथिन जे बिना पती के राम यज नहि क सकैत छथि। राम के अपन चिन स्मरण भेलका। कहलथिन हम दोसर विहि नहि करब। तखन इ कणयि भेलैक जे सोनाक सीता बना राम यज लेल बैसता। सैह भेल।

मुदा बीचे मे घोडा के त लि आ कुि बान्हि देलथिन। सब हारि गेलाह। हनुमान बंदी भ गेलाह। अंत मे राम एलाह त बाद मे सीता सेहो एलीह. राम एक संग अपन दुनु पुत आ सीता सनहक पती पाबि धन्य भ गेलाह। कहलथिन सीता के जे आब अयोध्या चलू। सीता मना क देलथिन। राम बहुत बुझेबाक पयास केलथि। मुदा सीता त अपन कजद पर कैम रहली। अंत मे राम कहलथिन : "अहा नहि जाएब त हमर अशमेध यज नहि हेत।"

सीता: "से कोना?"

राम: "पती के अछैते असगर पति अशमेध यज नहि क सकैत अछि।"

सीता: "तखन अहा कोना करैत रही?"

राम: "हम सब माना लेने रही जे अहा आब अहि दुनिया मे नहि छी।"

सीता घोर दिना स रक्ति भ गेलीह आ कहलथिन : "हे राम! अहा मात अपन पौरष आ नामक रका हेतु हमरा अयोध्या ल जाए चाहैत छी? अहि लेल जे अहाक यज भ जाए? हमही बाधा छी अहाक यजक?"

ई कहैत सीता धरती माता के दुनु हाथ जोडी करण सरि मे विनिती केलीह: “हे माता ! अही हमर माए छी। अहक कोख स हम एहि धरा मे उत्पन्न भेल छी। आब हमर आत्मा काना रहल अछि। अहा फाटू आ हमरा अपना भीतर मे स्थान द दीय!
धरती सीता के गुहार सुनि लेलखिन आ एकाएक धरती मे सीता दाई के आगा दू टा दरका भ गेले। जाबेत राम रोकखिन ताबेत सीता ओहि धरती मे विलुप्त भ गेलीह।”

ई बात कहि माए कनि जोर स सास लेलीह आ कहलनि “ बाऊ ताहि जखन हमरा सबके कोनो कष्ट होइएत अछि त अपना के सीता बुझैत छी आ अनायास मुह स निकलि जैत अछि : “फाटू हे धरती”।

ओना आब मिथिला के पुरुष सेहो सीता के सम्मान कहा करैत छथि? सीता सब दहेजक जीला मे जरैत छथि। अपमानित होइएत छथि। बेटी के बेटाक तुलना मे कम ध्यान देल जैएत अछि। गिना अनंत अछि.....”

ई बात कहैत माय केर नयन नोर स भरि गेलनि. ओहि क्षण त नेना रही आब बुझै छी जे माय के नोर कोना खसलनि!!!

<u>मैथिली संस्कृति केर अयि</u>

मैथिली संस्कृति के समगता मे मिथिलाम कहल जा सकैत अछि। कुनो सास्कृतिक क्षेत्र अपन किछु विशेष खानपान, विधि बेबहार, गीत संगीत आदि के कारणे विशेष स्थान आ पहिचान रखैत अछि। मैथिली संस्कृति अर्थात मिथिलाम के सेहो अपन विलक्षण विशेषता छैक। किछुक ओहि विलक्षणता पर विचार करी।

मिथिलाम के संक्षिप्त रुप सू 6 भाग मे देखल जा सकैत अछि:

क) खानपान, ख) स्थापत्य विन्यास, ग) गीत आ संगीत, घ) शिरोयंत, च) भाषा , छ) धार्मिक संपदाय आ परंपरा।

क. खानपान

खानपान कोनो समाज के संस्कृति के मूल होइत अछि। मिथिला मे खानपान के दू दृष्टिकोण सू देखल जा सकैत अछि। भोजन के मुख्य आ स्थानीय तत्त्व आ दोसर भोजनक सचार। जखन बहुत रासक वस्तु सू भोजनक थारी अर्थात थार सजैल जैत अछि त ई भेल सचार। सचार मे कोनो जरुरी नहि जे सब वस्तु अर्थात भोज्य सामगी स्थानीय हो। जखन भोज्य सामगी के बात करैत छी त मिथिलाक मूल भोज्य सामगी के बुझ पडत।

एक फकरा मे कहल जैत छैक:

मिरहुतीयता के भोजन तीन। कदली कबकब मीन।।

आब किछु एकरा देखी:

कदली (केरा): केरा गाछक सब चीजक पयोग मिथिला मे होइत अछि। थम्हा के भीतर केर तरकारी, कोषा केर तरकारी, काच केरा केर तरकारी, पाकल केराक विविध रुप मे पयोग। कोनो भार बिना केरा के पूर्ण नहि अछि। केराक पयोग सब विध, बेबहार, पूजा पाठ, उत्सव, सत्यनारायण कथा आदि मे होइत अछि। काच केराक

तरकारी पथ्य के रूप मे प्रयुक्त अछि। केरा थम्भ के बहुत भिन्न कार्यमे प्रयोग होइत अछि। केराक पात पर भोजन करब अदौ सँ अबैत परंपरा अछि।

कबकब: कबकब के अंतर्गत भेल ओल, खमहार , कौआं पात , ओलक पेपी, कना पात, अरिकंचक लोढहा, आदि। ओल शुद्ध आ सुपाच्य वस्तु अछि। सामूहिक भोज मे ओलक सना अनिवार्य रहैत अछि। ओलक तरकारी सेहो खूब चाव सँ हमरालोकनि खाइत छी। खमहार के तरुआ अर्थात खमहारुआ मिथिलाक विशेषता अछि। अरिकोच ओना त सब खाइत छथि मुदा स्त्रीगनक मध्य ई कनि अधिक प्रिय अछि। कबकब भोज्य पदार्थ के बनेबा मे कागजी, जमीरी नेबो, काच आम, आ आमिल के प्रयोग होइत अछि।

मीन : मीनक अर्थ भेल माछ। माछ त अपना सभक भोजनक मुख्य पदार्थ अछि। अनेक तरहक माछ आ माछक संग संग ओहि प्रजातिक अन्य चीज जेना काकोड, डोका, काछु आदि खेबाक परंपरा मिथिला मे अछि।

ई त भेल तीन मुख्य तथ्य। एकरा अतिरिक्त किछु पदार्थ अछि जे मैथिल के बहुत प्रिय छनि। ई सब अछि:

दही-चूरा, चीनी: समस्त विश्व मे मिथिले एहेन क्षेत्र अछि जत दही-चूरा-चीनी के मुख्य भोजन आ भोज इत्यादि मे सामूहिक भोजन के रूप मे खैल जैत अछि।

आ सब व्यंजन पर भारी पडैत अछि अपन मिथिलाक तिलकोरा । सर्वत्र उपलब्ध, ने दाम ने छदाम, आ स्वाद केर की कहब? छोट पैघ सब मे अपन स्थान रखने अछि। ई एहेन भोज्य पदार्थ अछि जकरा केवल मैथिल खाइत छथि।

मखान: भारतवर्षमे सबसँ अधिक मखान अपन मिथिला मे होइत

अछि आ सबसँ बेसी एकर उपयोग सेहो हमरे लोकनि करैत छी। अंततः भोजनक पूर्णाहुति मुखशुद्धि सँ होइत अछि आ मुखशुद्धि पान सुपारी संगे।

ख. वस्त्र विन्यास

परंपरागत वस्त्र मिथिलाक पुरुष लेल धोती, गमछा, या मुरेठा आ स्त्रीगण लेल नुआ, आंगी अछि। किछु विशिष्ट लोक या त विशिष्ट अवसिर पर अथवा ओहुना पाग सेहो धारण करैत छथि। धोती त।मिथिलाक मुसलमान सेहो पहिरैत छला। आब मुसलमानक बाते छोड़ू हिन्दू सब सेहो धोती सँ बचवा बैर केने जा रहल छथि। पहिने अपना ओत कोकटा बाग होइत छल जाकर पाकृतिक रंग ऑफ व्हाइट होइत छलैक। ओही बाग केर धोती के कोकटा धोती कहल जैत छलैक।

पाचीन समय मे पुरुष गाम गमैत भमण करबा काल धोती, मिरजई, दुपटा, गमछा, आदिक पयोग करैत छला। पैर मे खराम पहिरबाक पथा हाल तक छल। पाहून परख के पैर धोबक हेतु खराम देल जेबाक परंपरा एखनो बहुत ठाम अछि। उच्चवर्णमे खराम पहिरक व्यवस्था उपनयन संग पारम्भ भ जाइत छल। किछु लोक खरपा सेहो पहिरैत छला। खरपा के आधार आथति तरवा काठ के आ ऊपर मे आङुर लग प्लास्टिक अथवा चाम लागल रहैत छलैक। बाद मे लोक गोल गला सेहो पहिरनाइ पारम्भ केलनि।

मिथिलाक स्त्रीगण सब व्यवहार कैल वस्त्र यथा धोती आ नुआ सँ केथडी आ सुजनीक निर्माण सुई ताग सँ करैत छली। केथडी मोटगर होइत छैक जकर व्यवहार मोटगर गद्दा जका जारक समय ओछेबक हेतु कैल जाइत छैक। सुजनी कलात्मक होइत छैक। सुजनी मे अनेक तरहक ताग के सुनर संयोजन सँ बहुत रास डिजाईन ,

मोटिफ, िवटफ, पैटनिआद बनेबाक पथा मिथला मे छलैक। सब िगिआ जाितक स्त्रीगण एिह कला मे िनपुण होइत छली। सुजनीक पयोग ओछाइन केर चदिर के रप मे होइत छैक। िकछु लोक गरीबी मे केथडी सेहो ओढैत छिथ।

ग. गीत संगीत

मिथलाक लोकगीत एक महासागर अिछ। एकर संख्या कतेक अिछ से कहब असंभि। मैिथली लोकगीतक विषिता एकर समित गायन िैली छैक। लगभग 98 पितित गीत िबना कोनो िदयंत और विषि राग सू गैल जाइत अिछ। मुदा गीतक िबद, भाि, गबैय्या के उत्साह आ समपिण, विध बेबहार के पित ध्यान , ऋतुक संग सिभाि, वियाकलाप सू पितबधता, काज मे लगाि, आपसी पेम आ पकृित सू अनुराग िबना कोनो िदयंत के सेहो मैिथली लोकगीत के अलग संसार मे ल जाइत अिछ। विदापितक पदाििली, ताहू मे उत्सि विषि केर गीत, सोहर, समदाउन, उदासी, साझ, पाती आ विकि गीत मे महेििनी , नचारी आ कंरथुआ गीत बहुत हिािति करैत अिछ तन के आ मोन के। सीता, राजा सलहेस, कािरख महाराज, दीनाभरी, आिदक लोकगाथा आ गीत सेहो अपन अलग स्थान रखैत अिछ। सब िास्त्रीय गीत मिथला मे बहार सू आयाितत अिछ, यदिप धुपद मैिथली लोकिैली संगे तारतम्य बना सकल अिछ। बटगबनी, िारहुत, लगनी तीििकित सू चलैत गीत आ मोन लगबे बला गीत अिछ। उदासी संत परंपरा, कबीरपंथी परम्परा, सू पभावित भ रचल गेल अिछ। मिथलाक उच्चिगिविषि रप सू बाहण आ कणिकायस्थ अपन मिहला के पिालक स्पेस मे गायन, िदयंत संगे गायन, नृत्य आिदक सितंतता निह देने छिथ जािह सू एिह िगिकेर मिहला मे नृत्य, नृत्यगीत, नृत्यनािटका आिदक िैली निह विकिवत भ सकल छिल।

अन्य जाति सब मे डोमकच्छ, जटा-जटिन, झिझिया, आदिक रूप भेटैत अछि। िामा चकेबा मे बहुत साधारण तरहक नृत्य आ उत्साहक सतिंतता देखैत छी।

मुस्लमान महिला सब ताजिया के समय झिझिया छाती पीट पीट गाबैत छथि। हुनकर सरि आ टोन बहुत हद तक उदासी आ समदाउन सू मेल खाइत छि।

घ. िादियंत

मिथिलाक मूल िादियंत रसनचौकी मे पयुक्त होइत अछि। दुभाग्य सू एकरा कहियो मिथिलाक तथाकथित विदान लोकनि पोत्साहित नहि केला। एकरा बारे मे कहल जाइत अछि जे जखन सीता कुम्भ सू बहार भेली त भगािन सगिसू पसन होइत अप्सरा, िादियंत आ ओकरा बजबय बला कलाकार सेहो मिथिला पठेला। किछु लोकक कहब छि जे चूकि ई िादियंत चमार बजबैत छथि ताहि एहि पर विषि ध्यान नहि देल गेल।

च. भाषा:

मैथिली भाषा पाचीन भाषा अछि। एकर अपन लिपि छैक मुदा आब लोक देिनागरी मे लिखैत छथि। बंगला लिपि मिथिलाकर सू पेरित भ बनल अछि। एहि भाषा मे विदापति, ज्योतिरेशर, चंदा झा, लाल दास, हरिमोहन झा आ याती सनहक़ साहित्यकार भेल छथि। आन भाषा जका मैथिली मे सेहो स्थान आ लोक जाने भाषा के बजबाक िैली, िब्द व्यिहार, टोन, आदि मे पिरितिन पैल जाइत अछि। बेगूसराय, बरौनी, मुंगेर आदिक मैथिली दक्षिण पभाि सू ओत पोत अछि आ िैली मे स्थानीय आनंदक अनुभूति भेटत। यदपि दरभंगा, मधुबनी मे रहनिहार मैथिल सब अपन बोली के पमाणित करबा लेल बेहाल रहैत छथि। तहिना मिथिला केर पििम मे पयुक्त भाषा मे

कक्ष अलग स्थानीय भाि भेटैत अछि। भागलपुर, देघिर, गोडडा, साहेबगंज, दुमका, बाका मे व्यहृत मैथिली के अंवाका कहल जैत अछि। ि ाली क्षेत्र के मैथिली के बव्जका कहल जाइत अछि। उच्च आ क्मम गिजाने सेहो मैथिली बजबाक िली मे कछु उतार चढाि भेटैत अछि। सब क्षेत्र, समुदाय, के स्थानीय िब्द, िली, उपमा, अलंकार, कहानी, फकरा, गीत नाद आदि के आधार मानि एक पामाणिक मैथिली भाषा के विकिवित करबाक जररत अछि जे सबके मान्य हो, सब के सोहनगर लागक्ष।

छ. धमिआ संपदाय

मिथिला मे सब िणिके लोक, सब धमिके लोक रहैत छथि। अतै केर हिन्दू पंचोपासक छथि। महादेि केर पूजा माक्टक महादेि बना अि्ति ढंग सू कैल जैत अछि। बुध केर भाषा आ चायपिद के एखनो मैथिली अपना मे आत्मसात केने अछि। तंत मे बौध तंत के स्पि पभाि छैक। सिध पीठ आ बजयान केर तंत स्थल मिथिला मे आबि जेना संगम जका एक धिि मे एक भे बहे लगैत अछि। मुसलमान सब सेहो अपन धमिकेर पालन करैत छथि संगहि कछु लोक परंपरा केर तिि के अपना मे समािि क लेत छथि।

सीता के मिथिलाक स्त्री नायिका के पतिनिधि आ राजा सलहेस के पुरष नायक के पतिनिधि कहल जा सकैत अछि।

मिथिला चित्रकला

मिथिला चित्रकला जकरा मधुबनी चित्रकला सेहो कहल जाइत अछि, अपन स्थान आ नाम कला संसार मे नीक जका दजिकरा लेने अछि। एहि पर बडड लिखब अनािियिनहि। इंवात भ गेल अतेक पयाप्त अछि।

<u>मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद</u>

लोक गाथाक पर्सि

हमर नानी लोक-परम्परा केर संरक्षका छली।ियद अक्रमालाके जान हुनका नहि छलनि मुदा लोकजान जेना कंठमे कंप्यूटरके कोनो चिप जका सेट छलनि। जखन हुनका लग जाई ओ किछु नि आ महत्वपूणि लोकव्यवहार अथवा कथा अथवा गीतअ थवा फकरा, देि ीदेिता, स्थानक वििषता आदिकसन्दर्भमें बात करथि। गंभीर बात। एक-एक चीजक अथि स्पष्ट करैत विवरिण दैत छली। नानी छली बडा कुलीन घरसं। नाना सेहो अपना समय केरजमीदार छला। मुदा बजबाक ैलीमे ेनानी मधु छली। हमरा कखनो "रौ" के त छोडू "हौ" नहि कहलनि। सदिकाल "यौ" कहि सम्बोधन करथि।बजबाकिैली विलक्षण। भेटथि त कुिल केम पुछबाक अिित अंदाज। जखन कहियो नानी लग जाई अपन गामक संस्कारके वालाजक्ल द दी। बिना डाट-फटकार केवलक संस्कार कोना सिखाबी ई कियो नानीक व्यिहार संगहण क सकैत छल। हमर जेठ बहिन केर नाम विदिा आ सरोज छथि। जखन कखनो नानी लगजाईत हुनका सबहक कुिल केम अहि तरहे पुछथि:

"विदिा कुमारी कोना छथि? सरोज कुमारी कोना छथि?" ई छलनि नानी के व्यिहार अपन बेटीक बेटीके पक्ष; सेहो परोक्षमे।

कहि नहि कथी लेल नानी के हमरापर बडड विशास छलनि। जखन जाई नानी घंटो बात करथि कखनो घरमे, कखनो व्यनबार लग, कखनोदलानपर त कखनो आमक गाछीमे।नानी के ियद ई भान छलनि जे:

"कैलाि कहियो ने कहियो मैथिली लोकपरंपरा लेल किछु करताह!"

बहुत रास अजगुत गीत सब नानी गबैत छली। कतेको बेर सोचलौ

रेकॉडकिरब आ क्लिखयो लेब। किछु क्लिखबो केलो। मुदा दे‍ि संयोग ई छलजे नानी कानचक्रंमे बैकुंठक रस्ता ध लेली।

एक बेर नानी लग दालान पर बैसल गप्प करैत रही ततबे मे एक नाथ जोगी हाथ मे सारंगी लेने, बढल दाढी आ भगबा ‍िस्त्र मे सारंगी के तार के झनकबैत आबि गेलैक। कानना ककरो आजा के इंतजार केने तारक झनकार तेज भ गेलैक। करण रस झहरए लगलैक। नानी हमरा कहलकि : ‘‘कैला‍िजी, जोगी जी के कुसी कदयौन बैसबाक हेतु” । हम तुरत एक कुसी के झाकर जोगी जी के द देलयकि। जोगी जी सारंगी बजबैत मस्त भेल चुपचाप कुसी गहण केलकि आ कक्नकाल मे सारंगी केर तान संगे उच्च स‍िर मे गोपीचंद के गीत गाबय लगला। धीरे-धीरे अगल-बगल सं बहुत स्त्रीगन आ नेना सब जमा भ गेल। किछु पुरख सेहो एला। जोगी महराज गीत गबैत रहला, सारंगी बजबैत रहला आ स्त्रीगन सब कनैत रहली।पूरा ‍ितारिण उदासी के भा‍ि सं ओतपोत छल। पूरा त नकि परन्तु आंव‍िक बात हमहु बुझकलयैक आ थोरेक रव‍ित सेहो भेलौ। जोगी डेढ घंटा धकर सारंगी के तान पर गीत गबैत रहला।जखन समाप्त भ गेलकि त कियोक पाई, कियोक अन, कियोक ‍िस्त्र आकद देलककि। मामी किछु जलखई देलथिन आ चाह सेहो भेटलकि।

जलखई समाप्त क जखन जोगी जी चाह पीब लगला ओही कण एक आ‍ियजिनक दृश्य उपकस्थत भ गेलैक।एक 90 ‍षि‍िकेर मकहला हाथ मे लाठी पकडने आबि गेली। जोगी के पकवड कानय लगली: ‘‘रे बुधना! हम कछयौ तोहर माय! रे हमर बेरा पार लगा दे तखन फेर जोगी बकि जैहे। बाप बुधना बुधना रटैत पाण य्यावा देल्थुन। अपटी खेत मे हुनकर आयमा भटकैत हेतकि। रे बइमान! रे बाप के तपणि

दे। संस्कार कर। रे िकि रक्क कर!'' बेचारा जोगी हतपभ! बुढ्या कछु बजबाक असिर देबाक हेतु तैयार नहि। जोगी कहलकै, ''बूढी मा, मै छपरा जले का हू और जाक से कुम्भकार हू।मै चार भाई हू और मेरी मा मर चुकी है। मै आपका पुत या कोई बुधना नही हू। मेरी नाथ सम्पदाय मे दीका से पहले मेरा नाम रमेि पण्डत था। दीका के बाद मेरा नाम जोगी मोतीनाथ है।'' लेकन बुढ्या ओकर तकसिुनबाक हेतु तैयार नहि। बडा बापका!
पुराण लोक सब ऐल। ओकरा चीन्हबाक पयत केलक। सब कहलकै जे ई बुधना नहि थक. मुदा पुतविछोह सं तरपैत माय के बुझेनाई अतेक सहज कहा? अंत मे सब कहलकै ''ठीक छै, कोनो एक चन्ह बताऊ जे बुधना के खाि छलैक?'' कककाल लेल बुढ्या चुप भ गेल। फेर सोचैत बाजल: ''हमर बुधना के मध्य पीठ पर तीन टा नमहर-नमहर तील छैक।'' लोक सब जोगी के पीठ देखेबा लेल कहलकै। जोगी िर मे पीठ उघारबा लेल तैयार नहि छल। अहि बात सं बुढ्या के िका आर पबल भ गेलैक। बुढ्या जोर-जोर सं कान्न-कान्न लोक के कहए लागल: ''देखू हे माई दाई! ई बुधने अछ। पीठ नहि उघार रहल अछ. हम दूध पयेने छी एकरा। हमरा आंख सं कोना अपना आप के बचा लेत?'' बुढ्याक कानब सं रकत होइत लोक सब मे एक पमुख व्यक्त जोगी के सम्बोधत करैत बजला: ''देखू जोगी जी! एहि 90 षिकेर महिला पर दया कर । हुनका पीठ उघार देखा दयौन। जं तीन तील लगातार एक ठाम मध्य पीठ मे नहि हैत त अहा के हमरालोकन छोड देब अन्यथा अहा अतए सं नहि जा सकैत छी।'' कक ना नुकुर केलाक बाद जोगी पीठ उघारबा लेल तैयार भ गेल। सब जजासा सं जोगी के पीठक नरकण केलक मुदा मध्य पीठ मे तीन तीलक त बाते नहि

एकौ तील नञि रहैक। बुढ़िया झमा खसकल। जोगी पफुल्लित होइत सारंगी उठा सारंगी बजबैत दोसर गाम दिस बिदा भेल।
राति मे सुते सं पहिने नानी सं हम जोगी आ समस्त चीज के सम्बन्ध मे जिज्ञासा कैल। नानी कहली: ‘‘हमरा जात छल जे अहा ई पश करब. अगर अहा नञि करितो तैयो हम जोगी आ सारंगी के सम्बन्ध मे आई चचा करितौ.’’ हमरा नानीक ई कहब बडड निक लागल.
नानी कहली जे ई सब नाथ सम्प्रदाय जकर आदिगुर गोरखनाथ छथि केर सदस्य छथि. हिनका सबके अपन मिथिला मे जोगी, सारंगीबला जोगी, सिद्ध जोगी, गुदड़ियाबाबा, घुनाबाबा, गोपीचंद बाबा सेहो कहल जैत छैन। मान्यता छै कि जे रईसक घर सं भावा जैत छला ि गोरखपुर जा बाबा गोरखनाथ के नाथ सम्प्रदाय केर चेला भ जैत छला। घर-दार सं उन्मुक्त। ने उधो को लेना ने माधो को देना। ओ सन्यासी के शेणी मे आबि जैत छथि। संसारिकता केर मोहजाल सं मुक्त। ओतए हरेक जोगी के एकटा सारंगी देल जैत छल। िह सारंगी बजबैत आ गीत विका मे निपुण भेला पर नगर आ गाम मे घरे-घरे भीख मावा बारह बषधिर ओ जीनि व्यतीत करैत छथि। बारह बरख सं पहिने हुनका अपन माए सं भीख लेबा मे सफल होबाक छल। जे सफल भ गेला ओ सिध जोगी आ ओकर बाद ओ आनो के गुर के रप मे दीक्षा द सकैत छथि।
ओहि समय मे जे नानी कहली तकरा आई अपन स्मरण िक्त पर जोर दे लिख रहल छी। अहि लोक स्मरण मे जतेक बात निक आ पमाणिक भेटत ओ नानीक छल आ जतएकथा इम्हर उम्हर भटकएत ओ हमर स्मरण दोष आ जान के गहण करबाक दोष थिक।
लोक परंपरा मे जननायक के रप मे पकािशत भतृहिर राजा के जीनि ृतान्त, नीक्त आ उपदे ि के लोक ैली मे भरथरी मे नाथ

जोगी सब गाबि-गाबि सुनबैत अछि. एहि लोकगाथा के गोरखपंथी साधु अपन सारंगी पर गबैत छथि. सारंगी के कतौ- कतौ चिकारे सेहो कहल जैत छैक। नाथ सम्प्रदाय केर गुरु गोरखनाथ तथा मत्स्येन्द्रनाथ केर जागुणि विसधात सं पेवस्त एहि लोकगाथा मे सामदेवि रानी आ समस्त विलासिता आ राजभोग के त्यागि भरथरी राजा केना वैराग्य लेलथि आ फेर जोगीक वेष मे रहथि एकर बहुत करुण वर्णन अछि।

एहि लोकगाथा के दू पाट मे बाटि बुझल जा सकैत अछि। प्रथम भाग मे राजा भरथरी के वैराग्य तथा पिंगला द्वारा पूर्वजन्म केर कथा। दोसर भाग मे जंगल मे गेलाक बाद भरथरी राजा द्वारा कारी मृग के बधि करब तथा माता मैनावती के आज्ञा के विरोधाभिकिरैत जोगी अथवि वैरागी होबाक कथा छैक। एहि गेय गाथा मे योग-भोग केर अंतर्द्वंद्व तथा करुण विप्रलम्भ केर प्रयोग चरमोत्कर्ष पर भेटैत छैक।

कथा ऐना शुरु होइत छैक। राजा भरथरी के एकाएक वैराग्य उत्पन्न होइत छथि।एकर कारण हुनकर जन्म कुण्डली मे वैराग्य लिखल छथि. फेर की, भरथरी राजा सामदेवि रानी के छोड़ि भरल जुआनी मे वैराग्य लेल जा रहल छथि। रानी पहिने त मना करैत छथिन लेकिन जखन भरथरी राजा नहि मानैत छथि त पुछैथ छथिन: “ठीक छैक स्वामी! अहा जा रहल छी मुदा जएबाक कारण त बता दिय हमरा?” भरथरी राजा कहैत छथिन: “हे रानी, एकर एकमात कारण अछि हमर जन्म कुण्डली मे वैराग्यक योग।” मुदा सामदेवि रानी एहि जवाब सं संतुष्ट नहि होइत छथि आ भरथरी राजा के बाहर जएबाक अनुमति नहि दैत छथिन। भरथरी मोन मसोसि क रहि जैत छथि।भरथरी राजा एक प्रश्न रानी सं पुछैत छथिन: “हे रानी एक

बात के उतर हमरा अहा दिय! अपन सबहक सोहाग राति मे पलंग केर पाटी कुन कारने खण्डित भ गेल?" भेल ई रहैक जे जखने सोहागराति के समय राजा अपन रानी सं काम क्रिया करबा लेल उद्दत भ रानी के बाहुपास मे लेमै लगला एकाएक पलंग केर फटी टूटि गेलैक। रानी आ राजा के एहि बात सं किछु अशुभ केर शंका भेलैन। निर्णय केलैन जे आई राति सोहाग नहि मनेता आ ने कामेक्रिया मे लिप्त हेता। एक दिन मे कोनो बैकुण्ठ थोरे ने खासि पडतैक? ओकर बादे राजा भरथरी के मोन मे विचित्र तरहक उचाट होबए लगलैन। कखनो रानी लग जएबाक मोने ने करैन। ई प्रश्न आई राजा अपन रानी सामदेई सं पुछि देलखिन।

रानी सामदेई बजली: "राजन, एहि बात के हम नहि जनैत छी। हलाकि हम्मर छोट बहिन पिंगला अगजानी अछि। ओकरा भुत, तिमीन आ भविष्य सब चीज के अपूर्व जान छैक। मुदा पिंगला दिल्ली मे रहैत अछि।" राजा तुरत अपन सारि पिंगला के चिठी लिख दिल्ली सं मालि एबाक प्राथना केलैन। चिठी पाबि पिंगला झट दिन राजा लग जैत छथि आ कहैत छथिन: "हे राजन! जो हम सत्य कहब त अहा स्वीकार नहि क पैब। ताहि पूर्व जिन्मक सत्य जनबाक हठ छोडि देल जाओ।" मुदा भरथरी राजा अपन जिद पर अटल रहला। कहलखिन: "हे हमर सुनरि, दुलार आ गुनमति सारि पिंगला, अहा सत्य कहू। हम चेतन्य आ कठोर हदय केर पुरुख छी।केहनो सत्य के स्वीकार करबाक क्षमता हमरा मे अछि। अहा निश्चिन्त भ जे सत्य छैक तकर बखान करु।" आब पिंगला गंभीर भेली आ बजली: "ठीक छैक भरथरी राजा, अगर अपने सत्य सुनबा लेल आतुर छी त हम आई एहि क्षण अहा के सत्य बता दैत छी। हम्मर बहिन सामदेई रानी जे अहि जन्म मे अहाक पती छथि पूर्व

जन्म मे अहाक मा छली। ई बात अही लेल हम अहाके नहि बता रहल छलो। ओना रानी सामदेवी के सेहो पूर्वजन्म के बात जात छन्हि मुदा एहि जन्म मे त ओ अहाक पती छथि ताहि नहि बतेली। आब ई अहा ऊपर अछि की भोगमय काण्विता पूर्वक जीवन जीबी अथवा योगमय कोनो जोगी अथवा संयासक जीवन।" ई बात सुनि भरथरी राजा उदास भ जैत छथि। माथा टनकए लगैत छन्हि। संसार आ मानवीय सम्बन्ध सब मे व्यर्थताभाव लगैत छन्हि।

किछ काल बाद भरथरी राजा अपन नव व्याहित रानी सामदेवी सं आजा लै सिंहलदीप केर घनघोर बोन मे कारी मृग के शिकार हेतु पस्थान करैत छथि। मृग केर पती हरिनी भरथरी राजा के शिकारी के खेमा देखि अनिष्ट केर आशंका सं घबरैत अपन पतिक पानक रक्षा मे लावा जैत अछि। जखन कोनो उपाय नहि भेटैत छैक त स्वयं राजा भरथरी लग आबि जैत अछि आ विनति करैत छैक: "हे राजा, अहा हमर पति केर पाण केर रक्षा कर । हुनकर शिकार नहि कर । हुनका बदला मे हम्मर शिकार क लिय!" लेकिन भरथरी राजा ओकर विनति के स्वीकार नहि करैत छथि. हरिणी निराश भ जैत अछि।

हरिणी हारि नहि मानैत अछि आ पतिक पाण केर रक्षा कोनो ने कोनो हालत मे कर चाहैत अछि। दौर क कारी हरिण लग जैत अछि आ हाफैत कहैत छैक: "हे स्वामी, भरथरी राजा अपन शिकारी दल के संग बोन मे घुसि गेल छथि। ओ अहाक शिकार करता। अहा तुरत एहि बोन के छोडि कोनो आन ठाम चलि जाऊ।" कारी हरिण सोचलक: "आखिर भरथरी राजा अकारण हमरा कथी लेल मरता? हमरा हुनका संग कोनो तरहक शिनसामि नहि अछि। कथी लेल एहेन सुन्दर बोन के छोडी, अनजान बोन मे धक्का खेबाक हेतु जाई?" यैह

सोचैत ओ हरिणी के सम्बोधित करैत बाजल: “हे हमर दुलरुआ! अहा व्यर्थ चिंता जुनि कर । हमरा राजा नहि मारता। हम हुनकर कोनो अहित नहि केने छी। केवल मनुष्ये टा पाणी दोसर पाणी के मारि सकैत अछि जे ओकरा कोनो तरहक दुःख देने होइक अथवा अहित केने होईक। हमरा कोनो आन बोन मे अनेरे नहि जएबाक चाही।” आब हरिणी मोन मसोसि क रहि जैत अछि।

इम्हर भरथरी राजा अपन शिकारी दल संगे गहन बोन मे बढल जैत छथि। एकाएक कारी मृग के देखैत छथि आ ओकरा शिकार करबाक हेतु तीर के धनुष के प्रत्यंचा पर चढा लैत छथि। माजल शिकारी जका लगातार सात तीर सं पहार करैत छथि। सात मे स छ तीर गंगा माता, निरंकार देवी, गुरु गोरखनाथ, एवं कारी मृग केर सत्संघ सं बेकार भ जैत छैक मुदा सातम तीर सं मृग घायल भ जैत अछि। शोणित सं भरल देह, तीरक टीस सं व्यथित मृग जिन्दा के आखिरी क्षण मे भरथरी राजा के शाप दैत छैक: “हे राजन! अहा त निर्दोष भ हमरा मारि देलौं! आब हमर नेत अहा अपन रानी के शृंगार करबा लेल द देबैक; हमर सुन्दर कलात्मक सिंघ कोनो राजा के दरबज्जा पर मढबाक हेतु द देबैक; हमर चाम के कोनो साधु के आसन बनेबा लेल द देबैक; आ अन्ततः हमर माउस अहा राकहि बघारि क खा लेब। मुदा एक बात स्मरण राखब, जहिना हम्मर सतरि सै रानी कलपि रहल छथि तहिना एक दिन अहुक रानी सब कलपती।” अपन बात के समाप्त करैत कारी मृग जे ओहि बोनक हरिण सबहक राजा छल, अपन पाण त्यागि देलक।

भरथरी राजा स्तम्भित भ गेला. तुरत हुनका अपना आप सं घृणा होबए लगलैक। कोनो तरहे ओ आब कारी मृग के जानक रक्षा करै चाहैत छथि। व्यथित भ गुरु गोरखनाथ के कुटिया मे घुसैत छथि आ

अपन गलती के स्वीकार करैत क्रन्दिन करैत छथिन: “हे गुरु गोरखनाथ! हमरा सं बडड पैघ पाप भ गेल। अहा कोनो तरहे अपन दैवीय शक्ति सं अहि कारी मृगराज के प्राण के पुनः वापिस क दियौक!” गुरु गोरखनाथ कहैत छथिन: “हे राजन! आब एकरा पुनः जीवित केनाई हमरा वशक बात नहि अछि।” भरथरी राजा पागल जका कर लगैत छथि। माटि मे ओहकरिया मरैत छथि। कनैत बेहाल भ जैत छथि आ गुरु गोरखनाथ के कहैत छथिन: “अगर अहा अहि मृगा के प्राण नहि वापिस केलौ त हम अही ठाम अपन प्राण गमावा लेब!” विवश भ गुरु गोरखनाथ कारी मृगराज के अपन दैवीय शक्ति सं पुनः जीवित क दैत छथिन। मृग उठि क बैस जैत अछि। राजा पर एकबेर फेर दयाभाव देखबैत कारी मृग अपन शाप वापिस ल लैत अछि।समस्त हरिण समुदाय मे उत्साह केर वातावरण भ जैत छैक। हरिणराज केर सतर सए रानी मस्त भ नाचए लगैत छैक। कस्तूरी केर सुगन्धि सं बोनक वातावरण महो-महो भ जैत छैक। कारी मृग अपन रानी सब लग विचरन करए चलि जैत अछि। एहि दृश्य के देखि भरथरी राजा आनन्दविभोर भ जैत छथि।

इम्हर भरथरी राजा के हृदय परिवर्तित भ जैत छनि। संसार व्यर्थ लगैत छनि। मोन मे सासारिक सुख सं वैराग्य उत्पन्न भ जैत छनि।गुरु गोरखनाथ के चरण पर बैस जैत छथि। कहैत छथिन: “हे गुरुदेव! हमर उधार करु। हमरा अपन शरिण मे लेल जाओ। अपन शिष्य बना हमरा धन्य करु।” गुरु गोरखनाथ कहैत छथिन: “राजन! हम कोनो व्यवस्थित मे अहा के अपन शिष्य नहि बना सकैत छी। एकर एकमात कारण अछि अहाक राजसिक वृत्ति। अहा राजा छिकहू। राजा भला जोगी कोना क बनत?” भरथरी राजा उतर मे कहैत छथिन: “हे गुरु श्रेष्ठ! हम अहाक पथ पर अहाक चेला बनि

चलए चाहैत छी। एकर लेल सब किछु भौतिक पदार्थक संग-संग अपन कतेक चीज के सेहो त्याग करक हेतु तैयार छी।" अंतत गुरु गोरखनाथ एकर तिपिर की भरथरी राजा सन्यासी त बना जेताह मुदा हुनका अन्तिम दीक्षा गोरखनाथ तखन देथिन जखन भरथरी राजा अपन रानी सामदेवी सं 'माए' कहि भीख मंगताह।

आब एतहि सं भरथरी राजा नाथ जोगी के रुप धारण क, गेरुआ वस्त्र पहिर, हाथ मे सारंगी लेने गामे-घरे होइत राजक दार पर अलख जगेने गीत गाबि रहल छथि। रानी साम देवी जखन भरथरी राजा के जोगी के भेष मे देखैत छथि त परेशान भ जैत छथि।रानी हुनका कोनो स्थिति मे भीख देबाक हेतु तैयार नहि भ रहल छथिन। भरथरी राजा अहि बात पर हुनका कहैत छथिन जे ओ अपन नैहर चलि जाथु। मुदा रानी नैहर नहि जैत छथि आ उलटे भरथरी राजा के राजमहल मे कोनो एकात स्थान मे रहि जोगी के भेष मे तपस्या करक हेतु कहैत छथिन। भरथरी राजा कहैत छथिन: "ठीक छै, अगर अहा गंगा के कमलि धार एते ल आबी त हम राजमहल मे रहि क तपस्या क लेब।" रानी छली परम सती. तुरत अपन सत सं गंगा के धार के ओतहि ल एली। आब भरथरी राजा हुनका बतबैत छथिन जे कोना एक जोगी के सांसारिक पुन्य तीर्थस्थल केर भ्रमण सं भेटैत छैक। ई सुनि रानी गंगा के धार के वापिस चलि जएबाक हेतु कहैत छथि। रानीक बात के सम्मान करैत गंगा केर धारा वापिस चलि जैत छैक। एकर बादो रानी सामदेवी भरथरी राजा के भीख देबाक लेल तैयार नहि भेली। भरथरी राजा के भेलनि "अगर रानी भीख नहि देती त साधना बीचहि मे अटकि जैत। फेर की हैत? गुरु दीक्षा भेटबे ने करत. फेर बैकुण्ठ कोना प्राप्त हैत?" अंततः गुरु गोरखनाथ स्वयं अबैत छथि. रानी सामदेवी के पूरा बात बुझबैत

छथिन। आब रानी माक्त जैत छथि आ भरथरी राजा के भीख द दैत छथिन। एकर बाद भरथरी राजा के अपना संगे गुर गोरखनाथ जोगीक गहन तपस्याक हेतु बोन मे लेने जैत छथि।

ओही दिन सं ई पथा भ गेलैक जे जे कियोक नाथ जोगी बनत ओकरा अन्तिम दीक्षा गुर तखन देतैक जखन ओ अपन जन्मदाती अथात माए सं भीख मंगबा मे सफल भ जैत। मिथिला कहियो िराग्य के स्वीकार नहि केलक। अतए हमेिा गृहस्त जीिन मे रहैत सब सिद्ध पाप्त करबाक सिधात पबल रहल छक। ताहि मिथिलाक अगर कोनो युिक कोनो कारने नाथ जोगी बनैत अछि त ओकरा लेल माए सं भीख लेनाई बहुत दुष्कर कायभि जैत छैक।

नानी कथो कहथि आ बीच-बीच मे गीत नहु-नहु गुनगुनाथि। नानीक कहबाक अंदाज अतेक भािक जे कतेक बेर नैन नोर सं भरि गेल। नानी सेहो कानथि। नानी आ नाति दुनु भरथरी राजा केर कथा गाथा मे मस्त ___एक सुनेबा मे मस्त आ दोसर सुनबा मे मस्त। अनुभि भेल जे जखन नानी कथा कहैत छलि त नानी एक संगे अनेक चरित केर चितण नाटकीय अंदाज मे करैत छली। चरित संगे चलैत छली। चलबाक अभिनय अतेक सिक जे मात एक नाटय कलाकार नानी आ एक मात शोता हम मुदा दुनु के आंखि, हदय, आ दिमाग एक कण लेल इम्हर-उम्हर नहि होईत छल। ई भेल एक सिधस्त कथा िाचिका केर गुण। ई गुण समपिण, त्याग, एिं अंतःकरण मे कथा के बसेला सं अबैत छैक।

हमरा एकाएक स्मरण भेल जे दिन मे नाथ जोगी किछु मैनािती आ गोपीचंद केर गीत सेहो गबैत छल। हम नानी के स्मरण दियेलएिन। नानी कहली: “गोपीचंद आ मैनािती केर पसंग भरथरी राजा के जोगी बनलाक बाद अबैत छैक। गोपीचंद केर पसंग सेहो बडा रोचक

छैक। बडड राक्त भ गेल। आई सुनब की कावि?" हमर वजजासा पबल छल। भेल एखने सुक्त ली। नानी के कहक्लएक्त: "हमरा क्तन नक्ह लागल अक्छ। गाथाक अक्तम भाग जानबाक उय्कंठा सेहो अक्छ। ताक्ह क्तक यैह रहत जे लगले मे मैनाविती आ गोपीचंद केर कथा सेहो सुना दी अहा?" नानी सहज भावि सं हमर क्तदिन के स्वीकार करैत कथा कहनाई पारंभ केलक्त।

गोपीचंद एक संस्कारी पुत छक्थ पदामसेन राजा आ मैनाविती रानी के।मैनाविती भरथरी के बक्हन छक्थन।गोपीचंद के चंरावलि नामक एक सहोदर बक्हन छक्थन। जविन भेला पर गोपीचंद के वववाह होइत छक्त। संयोग सं पक्हल पती सं क्हनका पुत नक्ह होइत छक्त। पौतक लोभ मे ब्याकुल रानी पदाविती अपन असगर पुत गोपीचंद के दोसर वववाह कर दैत छक्थन। दोसरो पती सं गोपीचंद के पुत नक्ह होइत छक्त। पौतक लालषा मे मैनाविती गोपीचंद के तेसर, चाक्तम, पाचम करैत १६ टा वववाह करा दैत छक्थन। वविधनाक वविधान देखू, गोपीचंद के १६ रानी सं १२ पुती त भ जैत छक्त मुदा बेटा एकौटा नक्ह।मैनाविती अंत मे अपन भाई भरथरी जे नाथ जोगी भ गेल छक्थ के बजबैत छक्थ आ अपन रोदना पसारैत छक्थ। कहैत छक्थन: "अगर क्हनका पुत नक्ह भेलक्त त समस्त राजपाट समाप्त भ जैत। वविंक अंत भ जैत। क्तयोक क्तातृ के तपवि देब लेल नक्ह रहत। एहेन जीविन जीब सं बक्ढया जे आय्महय्या क ली? क्तछु उपाय कर हे भाई भरथरी जाक्ह सं गोपीचंद के एक पुत भ जाईन।"

जोगी भरथरी कक्त ध्यानस्थ होइत छक्थ। फेर क्तंक्तत भ कहैत छक्थन: "बक्हन दाई, बडड दुखक बात! भावान गोपीचंद के संतानक योग नक्ह छक्त। हम एक्ह मे क्तछु करबा मे असमथविछी।" ई बात सुक्त रानी मैनाविती क्तवलाप करै छक्थ। बडड जोर-जोर सं कनैत

छथि।कहैत छथिन: “हम किछु नहि जनैत छी। अहा कोनो युक्ति निकालू जाहि सं गोपीचंद के पुत होथि!” आब आरो गंभीर होइत भरथरी कहैत छथिन: “ठीक छै, अगर भावान राजमहल त्यागि घनघोर बोन मे नाथ जोगी बनि तपस्या करथि त हिनका पुत भ सकैत छनि।” ई बात सुनि मैनाति रानी झमा खसैत छथि। मुदा भरथरी के बुझेलाक बाद अपन पुत के जोगी बना बिजन बोन मे जएबाक लेल कहैत छथिन।

गोपीचंद माए केर आजा पाबि सोलहो रानी लग जैत छथि आ भरथरी जी के वाणि बतबैत छथिन। सोलहो रानी पुत आकांक्षा के ध्यान मे रखैत छाती के पाथर क लैत छथि आ अपन पति राजा गोपीचंद के जोगी बना बीजन बोन मे भेजि दैत छथि।

बोन मे गेलाक बाद गोपीचंद घोर साधना मे लावा जैत छथि। दिनभरि जंगल मे साधना आ साझ पहर भिक्षाटन लेल नगर आ गाम केर याता हाथ मे सारंगी लेने रिाग्य केर गीत गबैत। यैह हिनकर सब दिनका जीनि भ गेल छनि।

एक दिन भिक्षाटन के मि मे घुमैत-घुमैत गोपीचंद अपन बहिन चंरालि के सासुर चैल जैत छथि। जोगी के देखि चन्रालि घर सं भीख देबा ले बाहर भेली। देखैत छथि जे ई जोगी कोनो आन नहि अपितु हुनकर सहोदर भाई राजा गोपीचंद छथि।कुहेस फाटि गेलनि। आंखि अन्हार भ गेलनि. धम्म सं धरती पर कृते खसली। जखन लोक उठेलकनि त पता चललैक जे पाण त्यागि देने छथि। गोपीचंद के सहोदर के ममर्य जावा जैत छनि। बफाकि मारि-मारि कनैत छथि। मुदा आब की चंरालि बहिन त समाप्त भ गेल छथिन! हिम्मत नहि हारेत छथि गोपीचंद। चटे गुर गोरखनाथ लग बहिन के पुनः जियेबाक हेतु जैत छथि. बहुत अनुनय विनिय करैत छथिन. कहैत

छथिन: ‘‘बर हम्मर पाण ल लिय मुदा बहिन दाई के बजया दियौन।” गुर गोरखनाथ रवित भ जैत छथि आ गोपीचंद संगे चंरालि केर मृत रीर लग अबैत छथि। हुनकर स्पि ाीमात सं चंरालि जीब जैत छथि आ उठि क बैस जैत छथि। आब चंरालि अपन भाए गोपीचंद लेल गुर गोरखनाथ सं विनित करैत छथिन जे हुनका पुत होबाक बरदान देथुन।गुर गोरखनाथ भाए-बहिन के अपूि िपेम देखि बडड पसन होइत गोपीचंद के पुत पाप्त हेबाक आि ीिद त दईते छथिन संगहिं अमर होबाक बरदान सेहो दैत छथिन। गोपीचंद खुि ी-खुि ी अपन राजमहल ापिस आबि जैत छथि।

एहिकथा गाथा के पसंग बहुत रास अछि। एक बात त ई छैक जे राजा भरथरी,रानीसामदेि ी,रानीमैनाि ती, गोपीचंद, चंरालि, आ गुर गोरखनाथ सब कियोक मिथला के चरित नहि छथि। मुदा जोगी परंपरा सं जुडने कथा मे स्थानीय भाि आबि जैत छैक। लोक जोगी के केलि भीख देबाक हेतु नहि बजबैत छैक। जोगी अपन सारंगी आ सुमधुर कंठ के कारण एक लोक कलाकार सेहो बनि जैत अछि। गाथाक भाि नात्मक पक अतेक पबल छैक जे मिथलाक लोक सेहो कथा के अनेक पसंग के उदासी, चौमासा, छौमासा, बारहमासा के र प मे लोकगीतक स रि प मे गबैत छथि।अहि तरहे ई कथाि चना जोगी आ गृहस्त दुनु के दारा गैल जैत अछि।एक कला के मात कलापि ि कि अथाि शोताक संग-संग अनेक पकारक कलाकार-गीतकरचना करनिहार, गेनिहार/गीतगैन, कथाि चक, कथाि चिका सेहो भेट जैत छैक।रचना के कारण भाषा सेहो संपन होइत छैक। नि ैली, ि ब्दाबली के पयोग होइत छैक। ई मूल कथा मालाि सं बहुत केत के भमण करैत भोजपुरी केत होइत मिथलाक माटि मे पि ि करैत छैक। गोरखपुर भोजपुरी केत छैक ताहि कारने नाथ

जोगीक भाषा भोजपुरी भ जैत छैक। ओ मूल गीत भोजपुरी के लोक स्वरिप मे गबैत छैक।ओक्ह स्टाइल के कॉपी मिथिला मे सेहो लोकगीत (जोगी गीत) मे बहुत उतम रप मे भेटैत छैक। दुनु भाषा —मैथिली आ भोजपुरी —सहोदरा अथात गंगा जमुना जका एक भय भक्य रप सं क्हलकोरा मारैत कल-कल करैत बहैत रहैत छैक।जखन गरीबी, भानियमक टूटन, असफलता, अपमान आक्द सं व्यथित भ कुनो युकि नाथ सम्प्रदाय के सदस्य बक्न जोगी भ जैत छक्थ त कथा ओक्ह व्यक्त, ओकर माता-क्पता, पती-संतान, भाए-बक्हन, समाज आ गाम लेल एकभानियमक आ क्जति बात भ जैत छैक।लोक झट दक्न अपना आप के चक्रत सं जोड लगैत छक्थ। भरथरी, मैनाति, गोपीचंद एकाएक सब जीब जैत छक्थ। गीत मे निरक्त पबहान भ जैत छैक, सकि आ फेि ऑक्सीजन सास लेबाक लेल भेट लगैत छैक।मालकि कथा एकक्ह क्ण मे क्मथिला के कथा भ जैत छैक। ओ मक्हला सब क्जनकर पक्त क्मथिला सं बाहर रहैत छक्थन काज धंधा के चकर मे ओ सब अपन परदेक्सया अथाि क्वदेक्सया पक्त के जोगी के रप मे देक्ख गीत गबैत छक्थ। क्वरहअपन चरम अक्स्था मे पहुच जैत अक्छ। एक एक आखर ममिके आखर भ जैत छैक।एहने एक गीत देखू:

कथीलै पीक्त लागौले रे जोवाया
पीक्त छोडेने चक्ल जाय
आंगन मोरा लेखे क्वजुनि रे जोवाया
घर लागै क्दसि अन्हार
लाली पलंवाया सुन भेलै रे जोवाया
तक्कया मोक्ह ने सोहाए
खुजल केि नीड भेलै रे जोवाया

काजर गेल दहाए

एकटा गीत मे विरहिणी नायिका के अपन पति बिना आंगन एकात नि; घर केनो मे अन्हरिया राति जका अन्हार, ललका सजल पलंग अनसोहानगर, तकिया मारक लगैत छैक। खुजल केश बेकार लावा रहल छैक, अंखि सं नोरक धार कम होबाक नामे नहि लैत छैक। नोर केर धार काजर के मेटा देने छैक। ऐना लगैत छैक जेना ओकर पति नाथ जोगी बनि गेल हो। घर सं भावा गेल हो! दोसर गीत मे ई पदर्शित कैल जा रहल छैक जे राजा भरथरी जंगल मे कारी मृग(हिरण) के शिकार करक हेतु गेल छथि। रानी के अपना राजा पर गर्व छनि। बुझल छनि जे बिना शिकार के नहि औताह। रानी रातुक रभस के तैयारी क रहल छथि. सोहावान रानी अपन सौन्दर्य के चानन के लेप सं सुगन्धित, फुलक हार सं सुशोभित, आ माथक सिन्दूर सं मनमोहक केने छथि. मुदा ई की? आंगन केर पट्टि पर एक जोगी सारंगी लेने गीत गाबि रहल छैक: “हे रानी! हम दूर देस केर जोगी छी. हमरा जल्दी-जल्दी भीख द दिय, हम अहाक दुआरि छोड़ि दोसर अंगना भीख लेल चलि जैब।” बेचारी रानी के की बुझल जे ई जोगी आर कियो आन व्यक्ति नहि अपितु हुनके पति राजा भरथरी छथिन।

चानन रगडी सोहावान हे गले फूलक हार
सिंदुरा से मंवाया भरलअछिहे सुख मास अखार
राजा गईले मृग मारन हे नि गईले शिकार
जोगी एक ठाढ आंगन मे हे रानी सुनले मेरी बात
दए दीय भिक्षा जोगी के
हे ओ त छोडत दुआर...

ओही दिनसं ई पथा भ गेलैक जे जे कियोक नाथ जोगी बनत ओकरा अन्तिम दीक्षा गुरु तखन देतैक जखन ओ अपन जन्मदाती अथात माएसं भीखमंगबामे सफल भ जैत। मिथिला कहियो वैराग्यके स्वीकार नहि केलक। अतए हमेशा गृहस्त जीवनिमे रहैत सब सिध्दि पाप्त करबाक विधात पबल रहल छक।ताहि मिथिलाक अगर कोनो युवक कोनो कारने नाथ जोगी बनैत अछि त ओकरा लेल माएसं भीख लेनाई बहुत दुष्कर कायभि जैत छैक।
नानी कथो कहथि आ बीच-बीचमे गीत नहु-नहु गुनगुनाथि। नानीक कहबाक अंदाज अतेक भावुक जे कतेक बेर नैन नोर सं भरि गेल। नानी सेहोकानथि। नानी आ नाति दुनु भरथरी राजा केर कथा गाथामे मस्त __एक सुनेबामे मस्त आ दोसर सुनबामे मस्त। अनुभव भेल जे जखन नानी कथा कहैतछथि त नानी एक संगे अनेक चरित केर चितण नाटकीय अंदाजमे करैत छली। चरित संगे चलैत छली। चलबाक अभिनय अतेक सजिक जे मात एक नाटयकलाकार नानी आ एकमात शोता हम मुदा दुनुके आंखि, हदय. आ दिमाग एक क्षण लेल इम्हर-उम्हर नहि होईत छल। ई भेल एक सिधस्त कथावाचिका केरगुण। ई गुण समपणि, त्याग, एवं अंतः करणमे कथाके बसेलासं अबैत छैक।
नमस्कार दिन
ओहि समयमे जे नानी कहली तकरा आई अपन स्मरण शक्तिपर जोर द' लिख रहल छी। अहि लोकस्मरणमे जतेक बात सजिक आ पमाणिक भेटत ओनानीक छनि आ जतए इम्हर उम्हर भटकएत ओ हमर स्मरण दोष आ जान के गहण करबाक दोष थिक।
राजस्थान केर मंडोविरमे रावण आ मंदोदरीक विवाहि: लोक इतिहास

केर मूतिआ अमूतिपमाण

डॉ. कल्याण कुमार चिितती इक्तहासक पैघ विदान छक्थ। कला इक्तहासमे क्हनकर PhD हािडििवक्शदालयसू ओम्कारेशरपर छक्त। ओरछा आ अनेको आक्कयोलॉक्जकल साइटपर बहुत महर्पूणिकाज केने छक्थ। सफल आई.ए. एस. अक्धकारी रहल छक्थ। भारत सरकारसू सक्चि केर पदसू क्रटायर केने छक्थ। अपन कला पेम आ विदताक कारण डॉ. चिितती इंक्दरा गाधी मानि संगहालय भोपाल केर क्नदेिक; इंक्दरा गाधी राष्टीय कला केर, क्दल्ली केर सदस्य सक्चि; नेिनल म्यूक्जयम, क्दल्ली केर महाक्नदेिक आ नेिनल म्यूक्जयम इंक्स्टटयूट ऑफ आटिक्हस्टीरी, म्युक्जयोलॉजी ,आ कॉन्सेिििन केर ििईस चासलर ; NEUPA केर ििईस चासलर; क्दल्ली विरासत संसथान, क्दल्ली केर चीफ; आ लक्लत कला अकादमी केर अध्यक पदके सुिोक्भत क चुकल छक्थ। डॉ. चिितती सौम्य, मृदु आ सहज लोक छक्थ। ई अपना आपके विदान मानैत छक्थ पिासिक नक्ह। गुफा क्चतकलाके िजाक्नकता, उिि, विकास, खोज, िोध आक्दपर बहुत गंभीर आ विस्तृत काज केने छक्थ। लोक आ जनजातीय कलाके सब पक्पर काज करबाक पबल इच्छा छक्त।

हमरा क्हनका संगे बहुत काज करबाक अिसिर भेटल अक्छ। क्हनका संगे नालंदा, छतीसगढ, असम, अरणाचल, मक्णपुर, क्सक्कम, क्मजोरम, मेघालय, नागालैड, क्तपुरा, महाराष्ट, बंगाल, आक्द िोध कारणे रहबाक आ भमण करबाक मौका भेटल अक्छ। क्हनकर क्जजासा अनंत छक्त। हमेिा अपन डायरीमे जानकारी लेत रहैत छक्थ। कहैत रहैत छक्थ जे भािा इक्तहास, भािा भूगोल, लोक इक्तहासके क्बना भारतके नक्ह बुझल जा सकैत अक्छ। क्हनका संगे कतेक सै सेक्मनार, किॉप

आकर्के आयोजन केने छी सेहो पूणर्बौधक स्तिंतताके संग।

एक बेर एहने पयोजनसू 2001 मे जोधपुर गेल रही। ओत एक एहेन स्थान भेटल आ एहेन जानकारी भेटल जे एक बेर लोकमे कुनो मूतर्सिंरचनापर कतेक अमूतर्कथा एर्ि लोकइतहास केर परत बना जाइत छैक सेहो वलिक्ण तारूपर सोचबाक लेल बाध्य केलक। अगर हम कही जे हमरा संगे लंकापत राणि केर सासुर आ मंदोदरी केर नैहर चलु, हुनकर वर्ािहमण्डपके देखु, कुलदेर्ीके दर्िन कए धन्य होउ त केहेन लागत? कनमे सपना जका ने? मुदा दृर्ान्त कछु एहने सन अछ। पामाणक आ अपमाणक अलग बात छैक, कना लोक इतहास आ आख्यान केर जाल केर नमाण देखु। एक संगे राम आ कृष्णाके एकहर्िदीपर अलग अलग कालखण्डमे वर्ािह केर कथा आ कम्बदन्त देखू। हमरा लेखनी संगे अहू याता कर। नीक लागत।

घुमबाक आ जानकारी वर्षिर पसू लोक इतहास केर संकलनके दृर्वकोणसू अनेक बेर राजस्थान जाइत रहैत छी।

राजस्थान जेबाक अथर्भेल सास्कृतक वरासत केर गभमे जेनाइ। एह धरा केर मूतर्आ अमूतर्दुनू सास्कृतक सम्पदा पदेर् केर गौरपूणर्इतहास केर साकी अछ। चप्पा-चप्पा धरती र्ीर पुत आ र्ीरागना केर पदचापसू अनमंतत अछ। राजा आ पजाकेर मध्य नीक आ अधलाह अनेक कथा वजर्ति अछ। ई मीरा, महाराणा पताप, भार्मि आ नेरा केर धरती अछ। ई ओ धरा अछ जतय केर कताणी आ अन्य मह्हला अपन इज्जत आ आन, बान आ र्ान केर रकाक हेतु सै सै केर संख्यामे आत्मदाह अथर्ात सामूहक जौहर क लेलथ। अपना आपके वजबैत अवानमे समपर्ति केलन मुदा आर्ाताके अपन र्ारीर तकके हाथ नह स्पर्र्किर देलक।

राजस्थानके कुनो भागमे जाऊ, किछु ने किछु महत्पूर्ण इतिहास, परंपरा, केर भान भेटत, गढ आ गढैया भेटत, ढनमनायल हवेली भेटत, राजाक कथा भेटत: कतौ पजाप्रियलताके त कतौ क्रूरताके। मुदा भेटत जरूर।

जोधपुरके बागलमे मंडोरि नामक एक बहुत पैघ पाचीन नगर छलैक। बाखरल खंडहर, पस्तर अछि एहि बातके साक्षी छैक। अगर स्थानीय लोकक बातके विशास करी त 24 कोसमे ई नगर व्याप्त छल। कतेक महल उल्टा लटकल जका लागत। अगर ध्यानसू देखब त ऐना बुझना जैत जेना कियोक पूराके पूरा नगरके उलटा लटका देने होइक। पहिने पहिमे बुझा जैत जे जरूर बहुत रहस्यसू भरल नगर छल हैत ई खूडहर। पूरा खण्डहर जेना बहुत पैघ रहस्य अपना गतमे नुका क रखने हो? खैर! एक बहुत बुजुर्गमहिलासू भेट भेल। ओ कहली : "बेटा, काई फोटू लेवै है , आखी नगरी ही उलटी पडी है।" (बेटा, की कोनो फोटो ल रहल छी? ई त समस्त नगरी उलटा छैक"।)

बात बहुत वाचयत रहैक। ऐना मोनमे जिजासा भेल जे जौ कियोक स्थानीय आदमी एहिपर किछु कहैत। एक युकि भेट भेल। ओ कहलक कुनो खास बात नहि छैक। अचेयोलॉजिस्टस आ पागइतिहास एहिपर मौन अछि। शायद कियोक स्थानीय लोक किछु बता पबथि। एतबेमे एक बुजुर्ग एला। करीब 80 वर्षकि। पातर देह। गोर धप-धप। जिजासाके देखैत कहला:

"हमर पितामह किछु एहि रीति आ ढनमनयाल खण्डहरके गूढ रहस्य आ इतिहासके बारेमे कहने छला।अगर अहा लग समय हो आ सुनबाक धैर्य हो त हम बता सकैत छी।" हमरा ऐना लागल जेना सब किछु भेट गेल। हम झट दकिा कहिलयकि : "जरूर, अपने

कहल जाओ। हम अपने सनहक़ लोकक तलाि करैत रही।" आब बूढा एक पाथरपर बैस कहनाय पारम्भ केला:
आईसू सात हजार पाच सै षिपूिलिंकापक्त राणि अही स्थानपर आक्ष मंदोदरीसू विाहि केला। मन्दोदरीके स्थानीय लोक मंदोधरी कहैत छक्त। क्नक क्पताक नाम छल क्तमंदूजी। ओही नामसू एक्ह स्थानक नाम मंडोरि पडलैक। एकटा 10 खंभाके चूरि क्द इाािरा करैत ओ बुजुगािकहलक्त "यैह क्थक ओ स्थान जतय राणि आ मंदोदरी केर विाहि मंडप केर ि़दी छलैक।" ठीक ओकर बगलमे पाथरक कलात्मक भक्य आ उत्कीणािोरण रहैक जे आब खण्ड-खण्ड भेल छैक। हालाक्क एक बेर एकरा देखलासू सुक्धजन सहजक्ह अनुमान लगा सकैत छक्थ जे ई विाहि कतेक िाही ठाठसू भेल हेतैक आ ऐशयक्कि पतीक छल हेतैक। कतेक कारक्गर आ कलाकार राक्त-क्दन एकर क्तमाणमे लागल हेतैक। बेजुािनि पाथर जेना अपन इक्तहास केर गाथा सुनबैत हो।
आब हमहु बुजुगािक्यक्क्तके कहल सब बात के पाथर संगे जोडै लगलौ। अि़ुत अनुभिा। अि़ुत क्सनेह। राजस्थानके इंच इंच धरतीसू पुनः आत्मक लगााि होम लागल।
आब बुजुगाएक ऊंच महलपर ल गेला। कहलक्त जे ई धिस्त महल 24 खण्ड केर छलैक। दूमहलमे विभक्त, 12 खण्ड ऊपर आ 12 खण्ड क्तचा। क्तचा खण्ड केर तलघर एखनो बाचल छैक आ सुरक्क्त छैक।
समस्त भिन आ दुनु खण्ड केर हरेक क्हस्सामे सुरज केर धुप इजोतक संग िसातआथति िॉसि़्िलेिन केर गजब क्यिस्था छलैक। क्तचाके तहलखानामे गुप्त स्थानपर खजाना सेहो बनल रहैक। एक तहलखानामे त पूराके पूरा मंक्दर दबल रहैक। मंक्दर केर देबारपर

रंगविरंगक उत्कीर्ण आकृक्त एखनो मनोहारी लावा रहल छलैक। तत्पश्चात ओकह स्थान लग गेलहु जतय राजघराना केर पुरुष रहैत छला, स्त्रीगण रहैत छव्ल। कुलदेवीकेर डीह केर दर्शन भेल। बिना कुलदेवीके विधिवत पूजा अर्चनाके घरक कोनो स्त्रीगण अथवा पुरुष भोजन नक्ह करैत छल। मंदोदरी केर महल देखल। बुजुर्ग सब स्थानक एक टूरिस्ट गाइड जका विस्तारसू जानकारी द रहल छलाह। एक एक विन्दु नापल ने कम ने अधिक। पूरा संतुलित। बुझना ऐना जाइत छल जेना रावण आ मंदोदरीके विवाहक पुजेगडी यैह होवथ!

भवन निर्माण कला उत्तम बुझना गेल। ओकह समयमे आर्किटेक्चर केर सम्बन्धमे ओतेक जानकारी नक्ह छल ताक्ह कोनो स्कूल अथवा स्टाइलसू जोडबामे असमर्थ रही। फोटो बहुत सुनर नक्ह छल। जे छलो से समाप्त भ गेल। स्मरण शेष अछ। हम लिख रहल छी। गढल मुदा टूटल आ छत विछत पाथर केर हरेक भाग जेना किछु कहैत छल? पकड़ल बेर भेल जेना पाथर बजैत हो। मुदा जोरसू नक्ह, कानमे नहु-नहु। फेर भेल, जे जकर विखण्डित पाथर केर ढेर अतेक बजैत छैक ओकर साक्षात स्वरुप केहेन हेतैक? मोन त करैत छल जे इतिहासके कान पकड़ पाछा क ली आ सब बात देख ली, छू ली, बुझ्झ ली, आ लिख ली, एक साक्षात प्रत्यक्षदर्शीके रुपमे! मुदा इहो बुझल अछ जे ई सपनेटामे संभव अछ।

बुजुर्ग दिखेबो करथ आ विवरण दिअ सेहो केने जाथ। हुनकासू इहो ज्ञात भेल जे रावण जतेक विद्वान छल ओतबे घमण्डी सेहो। रावण समस्त संसारके अपनामे समेट लेबाक प्रण केने छल। अहंकार ओकर अपन सीमा लाघ लेलकैक। अतेक जे रावण अपन ससुर मेदूजीके सेहो कष्ट देलकक्त जे ओहो ओकर अधिनस्त भ जाथ।

जाक्त कुलसू शेष मेदूजी भला एक्ह पस्ताकि के कोना र्सीकार क सकैत छला? अपन जमाय राणिके सम्मानपूर्कि मना क देलथ्न। राणि छल धैर्यहीन। िधसू कापे लागल। कुवात भेल तुरंत अपन भाय कुम्भकरण आ पुत मेघनादके बजा पूरा नगरके उलक्ट देलक। धस्ति क देलक। ताक्हं आई ओई खण्डहर उलटा अक्छ। चूरिी लग रानीमहल, जनाना महल आक्दक जीणअिर्िष देखल। कछ्छु घर केर कमरा सब एखनो अनेक तरहक कलाकारी केर बेजोड गाथा कहैत छैक। रंग आ रपविन्यास आईओ ओक्हना छैक।

संयोग नीक छल। हमर सूचनादाता बुजुग संस्कृत आ इक्तहासक नीक जाता छला। हुनकर ई मानब छलक्त जे जनमानसमे पाचीन इक्तहासके सटीक जान नक्ह हेबाक कारण बहुत अनथिभ रहल अक्छ। हरेक बातक विरिण इक्तहासमे नक्ह अंकत अक्छ। कुनो राजकीय सुखसू संपोकात इक्तहासकार मंडोरि केर इक्तहास कयैक क्लखैत? इक्तहासकारके क्लखक हेतु के पैसा देतैक? के ओकरा भग्नार्िष केरगतमि धसल इक्तहासके पोर-पोर खोइंछा छोडा क कहतै? ताक्हं बहुत रास बात, रहस्य, आक्द कालके गालमे अथिा मंडोरि केर विालिकाय चटानमे धंक्स क समाप्त जका भ गेलैक। कतेक दबल अक्ह आिमे छैक जे उत्खनन कए कयोक तथ्यके उजागर करता। मुदा कक्ह नक्ह कक्हयो ई रहस्यसू समाज आ विदान िगिलाभाक्ति हैबो करता की नक्ह???

हमरा लोक कराई-आूगन, सभा मंडप हक्थसार, घोडसार, दासीगृह, आक्द सब कछ्छुके अपना आूक्ख आ बुजुग केर ऐक्तहाक्सक क्दव्य आूक्खसू देखल, हुनकर अभूतपूििणीसू सुनल।

क्जजासा भेल जे बुजुगसू राणिके संबंधमे आ लंकाके बारेमे जानकारी पाप्त करी। पुछलापर कहलक्त: "असली लंका त अथाह समुरमे

डूबल अछि। ओहि लंका केर एक कोण कात्तरपक्त बालाजी छथि। लंकापुरीमे राम 100 योजन केर बान्ह बनने छला। कात्तरपक्त हि स्थान अछि जतय राम आ विभीषण केर भेट पहिल बेर भेल छलनि। एहि मंडोरिमे काचामे 3 सुरंग छैक। एक अयोध्या, दोसर लंका आ तेसर दारका जाइत छैक।

बुजुर्ग एक मारक बात कहलथि: "शीमान, ककर ध्यान छैक अहि पुरातन धरोहर दिस? सब विनाि केर पर्वियामे मग्न अछि। आ ई जे जोधपुर नगर देख रहल छी ओकर बहुत भागक निर्माण एतहि केर अिषिसू भेल अछि। नवनिमाण लेल पुरातनके सब संहार क रहल अछि।"

एक बात बुजुर्ग जे कहलनि से थोरेक चिंता आ ियि दुनुके जन्म द देलक। ओ बात ई रहैक जे बुजुर्गक हिसाबे आईसू करीब 3000 षिपूि शीकृष्ण सेहो अतै आबि अपन विाहि केने छला। से कोना? ई विाहि भेल छलनि कृष्ण आ जामिती के बीच। दरअसल ई विाहि ओतेक योजनाधि तरीकासू नहि संपन्न भेल रहैक जेना राणि आ मंदोदरीके समयमे भेल रहैक। अजुनि संग कृष्ण मणि तकैत-तकैत एते आबि गेल छला कारण जे ओ मणि जामिती लग छलनि। जामिती मणिके महत्यसिसू अनजान छली आ ओकरा कैचा बुझि खेल खेला रहल छली। कृष्ण जामितीसू ओ मणि मागला। एहि बातपर जामिती केर माता गम्भीर होइत कहलथिन: "हे केिि, हम ई मणि अहाके द देब' चाहैत छी, मुदा एक ितिअछि? अगर अपने एहि ितिके स्वीकार क ली त मणि तुरत भेट जैत." कृष्ण कहलथिन: "अहा अपन ितिकिहु। हम स्वीकार करब।"

कृष्णासू असिसिन पाबि जामिती केर माता बजला: "मणि त हम तुरते द' देब परंतु मणि सूग अपन पुती जामिती केर हाथ सेहो

अहाके हाथमे सुपुर्द कि कर चाहैत छी अहाक अधावानीके रूपमे।"
कृष्ण तुरंत जामन्ति केर बातक कर्दिनके स्वीकार लेलक आ अहि तरहे ओही दिन ओही स्थलपर कृष्ण सङे जामन्ति केर विवाह भ गेलक।
अतेक जानकारी प्राप्त करैत-करैत 2 घंटा लाबा गेल। पता नहि चलल जे समय कोना बीत गेल। सब जानकारी रचनाकारक आ बहुत हद धरि पामावणक सेहो भेटल। अंतहीन प्रश्न जे मोनके परेशान केने अछि ओ ई अछि जे एकटा टूटल पाथर, भगिन, अटकलका, आ स्थानके रहस्य कोना खुजत????

<u>छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे पकतिनिक औचित्य</u>

हम सोभाि आ कमसँ परम्परावादी छी। परम्पराके मानबो करै छी आ परम्पराक सम्बन्धमे लिखबो करै छी तथा परम्परेमे जीवित रहलौ अछि। परम्परामे बहुत नीको बात सभ अछि तेकरा बारेमे लोकके जागत सेहो करैत रहै छी। परम्परा आ पकृतिमे सामंजस्य देखैत छी। मुदा परम्पराक पालन, पंसा आ लेखनमे साकाक सेहो रहै छी। परम्परा जे लोक विरोध नहि हो, परम्परा जे हिंसक नहि हो, परम्परा जे केकरो शोषण अथवा दोहनक पुष्टि नहि करैत हो, एहि परम्परा अनुकरणीय परम्परा अछि...।

जखन परम्पराके अमानवीय पक्षपर किछुयो बात करैत अछि तू ओकर विरोध होइत छइ। आ एक टटष विधाथी अथवा समाजक बेकतीके एहि तरहक विरोध सहबाक लेल तैयार रहक चाही। कनी सोचु, अगर राजा राममोहन राय सती-पथाके विरोध नहि केने रहितैथ तू आई की स्थिति रहैत? कोना परम्पराक नामपर जीबैत स्तीगणके हुनक पतिक संग चितामे बलपूर्वक झोइक हुनका जरा देल जाइ छल? आ लोकक सतीमाता केर जयकारक नादमे जरैत महिलाक दर्द पीडाके दबा देल जाइत छल। अखनो जखन परम्पराक नामपर मधुश्रावनी पाबैनमे नवविवाहित महिलाक ठेहुनके टेमीसँ दागल जाइत अछि तू हम इतिहासक गतमि चलि जाइ छी। जहिया सती जरैत छेली! मुदा नचार भऽ परम्पराक समक अपने-आपके असहाय बुझैत छी। छोटे स्तरपर किएक नहि, अपन विरोध अवश्य दजि करा लैत छी। जखन हमर विवाह भेल तू अपन मधुश्रावनीमे हम किनको अपन पतीक ठेहुन दगबाक अनुमति नहि देलिऐन। थोडेक उपहासक पात बनलौ। स्तीगण सभ किछुयो 'मौवायाह' तू किछुयो 'घमण्डी' कहलैन। सुनि लेलौ, मुदा 'नइ' कहि देलिऐन तू नहिये करए देलिऐन।

आब अबैत छी छागरक बलिदानक पथापर। अपन अनुभवि अधारपर कहि सकैत छी जे ई पथा बडड नीक परम्परा नहि अछि। छागरक बदला किछु और क्षोत हेबाक चाही जाहिसू एहि पथाक अन्त हो। उघसवि, संस्कार विशेष रुपेण दुर्गापूजा, केतौ-केतौ काली पूजा, उपनयनमे घरक कुलदेवी अथवा कुलदेवताक समक्ष कतेक बहसस्थान आदिमे छागरक बलिदान जेना मनके विचलित कऽ दैत अछि..!

एहि बातके अपन जीवनिक दू अनुभवसू जोडि कऽ देखै छी। एकमे नेना रही तूए लाचार आ दोसरमे परम्पराक आडिमे मा, बहिन, भाय लाचार कऽ देने छला। एक घटना पाबैन– दुर्गापूजासू सम्बन्धित तू दोसर संस्कार– उपनयन-सू सम्बन्धित अछि।

पारम्भ पथम घटनासू करैत छी। नेना रही तू दुर्गापूजा सू सात मास पहिनहि एकटा छागर मा कीनि लेने छेली बलिपदान लेल। भगवतीक नामे राखल छागर बान्हल कम आ खुजल बेसी रहै छल। कियाद सबहक बाडी-झाडीक तीमन तरकारी चरि जाइ तू भगवतीक नामक कारणे कियो किछु ने बाजैथ।

बहुत ध्यान राखल जाइक। पूरा बलन्ठ आ बोतो बनि गेलैक।

अन्ततः अवि मी दिन ओकरा हमसभ दुर्गास्थान लऽ गेलौ। पूजा पाठसू पहिनहि ओ छागर दोसर टोलक छागरसू लडल। कसंघसू कसंघक युध। हमर सबहक छागर जीत गेल। जयकार मचलइ..!

आब ओहि एकरंगी कारी छागरके पोखैरमे नहाएल गेल। गरदैनसू रस्सी हटा दूटा कबगर समाग ओकरा अपन कब्जामे लेने रहला।

नहेला बाद छागरके भगवती लग लऽ गेला। पण्डितजी खगकि पूजा कऽ लेने छला। महाभयानक खगवि पैघ, धरगर, तेजगर आ पलयंकारी! हम रही ता बारह वर्षकि नेना। आब भेल जे एते दिनक

पोसल छागर बक्ल चक्ढ जाएत। आइ सभ कछु समाप्त। स्तीगण सभ गीत गेबामे मग्न। गाममे एक पहलमान छला। लोकक कहब रहै जे हुनकापर साक्षात् भगिती सिर भS जाइ छथिन। केहनो जुआएल छागरके एकेबेर-मे ओ धरसू गरदैनके अलग कS दैत छला। खगिउठेबासू पक्हने भगितीक मुती लग एक पैरपर हाथ जोडने एक घन्टा ठाढ रहैत छला। स्नान केलाक बाद लाल धोती आ बानु सीअल स्ति पक्हरने। जखन बाहर अबैत छला हाथमे खगिलेने तू यमक सहोदर लगैत छला। लोक सभ कण्ठ फाक-फाक "दुगा महरानी की जय" केर नादसू हुनका आरो विभयस बना दैत छल। ओक्ह जयकारक अिजमे छागरक अिज जेना विलुप्त भS जाइत छल!

खएर! पण्डतजी पूजा केलैन। मंत पढला। फूल, अक्त आ जल लS कमजल छागरक ऊपर फेकलथिन। छागर कसहैर उठल। भूलाक गरदैन क्हलाबए लागल। कान पटकए लागल। सबहक मन खुीसू बताह। लोक कचकयाएल-

"छागर परीक्ा लS लेलक।"

समस्त विजियी मुश्कान। एकबेर फेर अिज भेलै-

"दुगा महरानी की जय।"

आब छागरके मन्क्दरसू बाहर लाएल गेल।

भेलै ई जे दोसर टोलबला छागरके पक्हने बक्लदान पडतै। बक्लदान देमए-बला अपन हाथमे खगिलेने बाहर आबा गेला। लोक सभ 'जय-जयकार' करैत रहल। छागर सभ कटैत रहल। भगिती लग एक माय केर सन्तान दोसर माय केर सन्तानक सिद, आयु, उनक्त, विकास लेल कटैत रहल। खूनक धार बहैत रहल। छागरक

मेक्सयेनाइ जय-जयकार आ गीतक ध्विनमे गौण होइत रहल...।

हमर बाल्य-मन भक्र रास्ता कनैत रहल। दुगा लग जा-जा ई पाक्त बेर-बेर गबैत रहलौ-

"गे माय, तोरा बेटाके खाइत केना नीक लगलौ?''

मन बेर-बेर असहाय छागरक काटल मुडीसू बहैत िक्तक स्मरण कऽ रहल छल। लोकक जय-जयकार तेहेन जेना बुझ्झ पडए कान फाव्ड देत। मनमे डर घुक्स गेल। स्तीगणक समिति गान आ दुगाक भजन सोहनगर नक्ह लावा रहल छल। घर एला बाद ओक्ह छागरक मौस बनल। ओना, 'मौस' कहैसू मा परहेज केने छेली। कहने छेली ई 'दुगाक पसाद' छी। क्दयादी पक्रिरमे पसादक बेन बूटाएल। अपनो घरमे रनहाएल। सभ खेलक खूब पेमसू खेलक। परसन-पर-परसन लऽ कऽ खेलक। मुदा हम नक्ह खेलौ। मा कहैत-कहैत रक्ह गेली मुदा हम नइ खेलौ।

आब दोसर अनुभि क्दस चली। हमर पुत िक केर उपनयन हएब क्तसक्यत भेल। क्ताक्थ छल, जून 2014 माने दू-अढाइ साल पूिि हमर कक्तया िकाहारी छैथ। ओ कएक िकाहारी छैथ तहूमे एक बक्लपदानेसू जुडल घटना अक्छ। हमर पूनम माछ-मौस खूब खाइत छेली। एकबेर–भाइक उपनैनमे–छागरक बक्ल चढलै। ओहो अपना आूक्खए देखलक्खन। अतेक िभयक्स लगलैन जे ओही क्दनसू माछ-मौस खेनाइ छोव्ड देलैन। तेतबे नक्ह, क्हनकर अनुकरण करैत अपन छोट बक्हन सेहो िकाहारी भऽ गेलैन। ..जखन हमर पुत िक माक िकाहारी पिृक्तके देखलैन तू ओहो िकाहारी भऽ गेला। हमरा एक्हसू कुनो समस्या नक्ह अक्छ। जे खाए चाहै छैथ खाथु जे नक्ह चाहैत छैथ नक्ह खाथु। मुदा एक्हसू एक चीज तू स्पि भाइए गेल

जे हमर पती, हम आ हमर पुत तीनू गोरे छागरक बकलपदानक पक्षमे साफे नञि छी। खएर, संस्मरणके आगा बढबैत छी। हमर गामक एक संस्कृतक विदान पण्डित- राघनिन्न झा दिल्लीक स्कूलमे शिक्षक छैथ। एिह हमर पुतक उपनयनक दिन निधारित केलैन। पण्डित राघनिन्न झाजी सिर्यं षिणि छैथ। हम अपन समस्या हुनका समक राखल। ओ कहलैन-

“एकर उपचार छै, अहा चिन्ता नञि करु। जेतेक ओजनक छागर छै तेतेक पसेरी मिठाइ अथात् लडडू भगतीके आ बहस्थानमे सेहो चढा देयौ।”

हुनकर एिह बोलसू हम तीनू परानी बडड पसन भेलौ।

दोसरे दिन हम गामपर मा, भैया एिं अन्य सम्बन्धीके उपनयनक दिनक सम्बन्धमे जानकारी दैत सभ तैयारी करबाक निदिन कएल। तेसरे दिन माक फोन आबि गेल जे ओ पाचटा छागरक बेिस्था कऽ लेलीह। ई सुिनते हमर माथ पकैड लेलक। गृहयुधक पृषभूमि बिन गेल पिरिरमे। मा अपना आगूमे केकरो टेरती नञि, आ पती छागरक बिल लेल तैयार नञि हेती। पुत सेहो अपन माइयेक पक्षमे रहता...।

अन्तत: हम हिम्मत करैत मासू निदिन केलौ-

“माँ, राघनिन्न-गुरजीक कहब छैन जे जेतेक छागर तेतेक पसेरी लडडूसू काज चिल जाएत।”

मा हमर बोल सुिनते बिकराल रप पकैड लेली-

“की कहैत छी? अहा सभ आब देिता-िपतर सभके समाप्त करए चाहैत छी? छोटकी काकी[1] मरैसू पिहने कहलैन ‘कैलािक माय, सुनु हम आब नञि बाचब। मुदा अहा चिन्ता नञि करु। हम भगबान

लग जा भगबानसू लब्ड कऽ कैलाि लेल बेटा भेजब। अहा एक काज करब एकरा बदलामे अहा एकटा एकणिकारी-छागर अूगनाक भगतीके आ एकटा एकणिछागर बह बाबाके ओव्ह बच्चाक उपनयनक समयमे चढा देबैन। छोटकी काकी थोडबे दनमे मव्र गेली। आ हुनक पव्हल बरखीसू पव्हने िकक जन्म भऽ गेलैन। बासैर गेलौ की?''

मा ई कहैत फोन हमर भौजीके दऽ देलथ्थन।

आब भौजी ुिर भेली-

“देखू बौआ! अहा दुनू परानी जे करब से कर । मुदा िक लेल कुनो अिुभ ठाढ नव्ह कर । बुझल अव्छ, हमर बाबा िषाि छैथ मुदा जखन छागर चढै छै तू बल-पदानक भूमसू एक ठोप रक्त भगतीक पसाद मात्त अपना जीभसू अिश्य सटबैत छैथ। मा ठीके कहैत छैथ। छोटकी दाइ भव्र अूगनामे िक लेल कबुला-पाती केने छेली। कासव्यत र पसू ओ भगबानसू लब्ड कऽ िक अहा सभ लेल भेजलैन अव्छ। जे परम्परा अदौसू आबा रहल छै तेकरा अहा सभ केना समाप्त कऽ देबइ! अहा मदबिनू आ बेटाक िुभकायकिर । पूनमके बुझा व्दयौन जे हुनकर दाक्ल एतए नव्ह गलतैन। जहा तक छागरक दामक प्िन अव्छ तू कुनो बात नव्ह। िक हमर सबहक बेटा पव्हने अव्छ आ अहा सबहक बादमे। हम छागरक दाम दऽ दइ छी। एकर अलावक्त अहा सभ जेतेक मठाइ, लडडू आ छप्पन भोग करब से कर । क्कयो ने मना करत।”

अव्ह तरहे माके तैयार कएल विचारके भौजी ठोस भानिात्मक अधार दऽ देलैन। सभसू पैघ बात ई जे अपन बात कव्ह भौजी बानु हमर बात सुननव्ह फोन काव्ट देली। हम चाव्हयो कऽ अपन पती लग ई

बात नहि बजलौं, मुदा रणभूमि युध लेल तैयार भऽ चुकल छल। ओही दिन रातिमे मामाक फोन सेहो आएल। कहलैन-

“बौआ, कुनो एहेन काज नहि कर जइसँ बहिनके अहाक पिताक कमी अनुभि होइन। ई हुनकर अन्तिम पोताक उपनयन छिऐन। अही लेल आइ धरि एकादिो यजक उदापन नहि केली। अहा सभ जखन अपन पोताके उपनयन करब तँ जेना-जे इच्छा हएत सएह करब। ताबेत धरि ने बहिन रहती आ ने हम। आधा घन्टा धरि फोनपर कनैत छेली। हुनका अहाँि केर आिका भऽ रहल छैन। हमरा कहै छेली जे जहियासँ कैलाि कि ओहि परिवारिमे विाहि केला, तहियासँ सभ संस्कार बिसरने जा रहल छैथ। अगर छागरक बलिपदान नहि हएत तँ हम कुनो आर गाम चलि जाएब। घुमि कऽ ऐ नगमे पिा नहि करब। मरला उतर हम कैलाि कि पिताके की कहबैन जे तमाम मर्यादाके समाि कऽ हम आबि रहल छी! आब बिसर अर्थात अहाक पिता नहि छैथ तहि सम्बन्धमे शेष रहबाक कारण हमर ई उतरदायित्व होइत अछि जे अहा सभके उचित रस्ता देखाबी। अहा हमेिा अपन माता-पिताक आजाकारी रहल छी, कैलाि। कम-सँ-कम ऐ उपनयन धरि ई परम्पराके कायम राखू। रहल कनियाक पि्नि तँ अहाक मामी कहैत छैथ जे ओ अपन पुतोहु अर्थात् िािक केर मायके समझा-बुझा देथिन।”

ऐतेक बात कहि मामा सेहो अपन फोन बिना हमर बात सुननहि काटि देलैन! हमर माथ भारी भऽ गेल। ब्लड-पेसर बढ़ि गेल। माथ घुमय लागल। आँखिक आगू पूज्य पिताजी आबि गेला। होइत छल जे अगर पिताजी रहितैथ तँ अिशिय हमरा भाािनाके बुझितैथ..! मामा आ भैया तँ एक नम्बर-के पुरानपंथी छैथ। पिताजी हमेिा शाधमे साढ़ दागबके विरोध करै छला, विरोधी छला। मुदा जखन ओ मरला तँ

मा आ मामा वजद ठाक्त देलैन जे कारखोदसगिशाध आ साढ दागब अक्तायि। मा कहली जे हुनका पक्तरिरमे केकरो अइक कत्ना शाध नक्ह होइत छैन। भानिामे बहैत मा कहली अगर हमरा अछैत अहा सभ अपन कत्ता लेल ई नक्ह करब तू हमर की करब? अन्तमे मा आ मामाक वजदक आगा नतमस्तक होइत हम साढ दगबा लेल तैयार भऽ गेलौ। एक्ह पकरणमे भैया सेहो जूमक-जूम तमाकुल खाइत रहला आ मुडी डोला-डोला मा आ मामाक हू-मे-हू कालबैत रहला।

आब भयसू कण्ठ सुखा रहल छल। परम्परा हमरा परास्त कऽ रहल छल। सभ विक्त, सभ तकधिराायी भऽ रहल छल। भानिा जानके धस्ति कऽ रहल छल..! भेल कनी पाक्त पीबी। पाक्त-दे पतीके कहए चाहलयैन कक कक्तच्चेमे भैयाक फोन आक्त गेल। नक्हयो चाहैत फोन उठा लेलौ। 'हेलो भौया!' कक्हते मातर भैया दुिषाक रौदरि पमे आक्त गेला-

"ई की भेल! हम अधा घन्टासू फोन कऽ रहल छी आ अहाक फोन क्यस्त जा रहल अक्छ? अहा सभ हरेक चीजके मजाक बना देने छी!"

हम कनी झल्लाइत मुदा विनिम भािं भैयाके कहलयैन-

"भैया, हम मामासू गप्प करैत रही। हुनके फोन ऐल छल।"

ई बात सुक्त भैयाक तामस थोडेक ािन्त भेलैन। फेर ािर भेला-

"बौआ, एकटा बात मोन अक्छ। जखन कक्ताजी दरभंगासू पटना लऽ जएबाक िममे रस्तामे अपन अक्तम सास लेलैन तू हम अहाके की कहने रही?"

हम जािब क्तयैन कक ओइसू पक्हनक्ह ओ सियं बाजए लगला-

“हम अहाके कहने रही जे हमर ववपता मरला अवछ, अहाक नवह। आईसँ अहाक ववपता हम छी। कहू कहने रही की नवह?”

हम बजलौं-

“हाँ भैया, अहाँ कहने रही। आ सैह मर्यादाक पालन अहाँ एखन धवर कऽ रहल छी।”

भैया दम्माक रोगी छैथ, तँए जोर-जोरसँ हकमबो करैथ बजबो करैथ-

“आब अहाँ कहू, जे हमरा रहैत ििकक उपनयनक वदन ताकए-बला अहाँ के?”

भैया भािनामे कनबो करैथ आ बजबो करैथ-

“फेरो, केना करक अवछ, की करक अवछ। केहेन भोज करक अवछ, इत्यावदपर अहाक की काणवि? ई काणवि तँ हमरा लेबाक अवछ। अहाँ राखू अप्पन पाइ। हम करब ििकक उपनयन। माँ वदन भवरसँ अन-पावन कवयागने छैथ। बुझल अवछ अहाके? सुनू, अहाँ सबहक खटराग नवह चलत। माँ तँ पाँचटा छागर कवनली अवछ। हम पाँचटा आरो कीनब। देखै छी हमरा के रोकैत लैत अवछ? ककरयाके कवह वदयौन जे अपन सभ कवयम वदल्लीए-मे राखैथ। एतय हमर कवयम चलत। ऐ घरक मुवखया ववपताजीक पछाइत हम छी। आर ककयो नवह। अहाँ सम्बन्धमे हमर छोट भाए जरूर छी मुदा हम अहाँ के कवहयो अपन पुतसँ कम नवह मानल अवछ।”

भैया ई बात सभ कनैत कहैत रहला आ जखन अपन बात कहल भऽ गेलैन तँ फोन राखवख देलैन।

हम पलयमे पवड गेलौं। करी तँ की करी? कवंकतव्यविमूढ भेल ककछुकाल ठाढ रहलौं। मनमे उठल- आब पतीके की कहबैन? ओ

तू छागरक बकलपदानबला बात लेल कनहु तैयार नव्ह हेती!

“दुःख हरहु दारकानाथ रिणमे तेरी..।”

अही गुनधुनमे पडल रही, क एतबेमे हमर सासु आवा गेली, हमरा सभसू भेट करबाक हेतु। हमरा लग अबाते बजली-

“की क्सरजी, कुनो क्चन्तामे छैथ की?”

हम चुपे रहलौ। फेर ओ हमरा अपना लग बैसा सभ बात पुछए लगली। हम सभ बात बता देकलऐन। ओ कनी गंभीर भेली, कारण हमर पतीक उग सोभासिू ओ पवरक्चत रहबे करैथ। फेर क्णयिक मुरामे अबैत बजली-

“क्सरजी, ओना हमहू बकलपदानक विरोधीए छी, मुदा व्हनकर पवरिरक लोक सभके कयो नव्ह बुझा सकैतैन। ई क्चन्ता जुक्न करौथ, हम पूनमके समझा दइ क्छऐ।”

हमर सबहक बात चकलए रहल छल क हमर मामी हमर पतीके फोन केलक्थन। आब हमर मन घबराए लगल। भेल आब भयंकर कलह हएत घरमे। ईहो डर छल जे पूनम ने कही तामसमे हमरा मामीके कछु अन्ट-न्िट बात कव्ह दक्!

..खएर, सासु हमर भानिाके बुव्झ गेली। ओ पूनम लग जा हाथक इसारासू कहलक्थन जे न्िक्तसू गप्प करैथ...।

मुदा आकि विपरीत मामी जनु पूनमे-सन बात बजली। तथाक्प ई कहलक्खन जे हमर नैहरमे बकलदान बन्द भऽ गेल अक्छ। मुदा मामा सभ एव्ह बातके कखनो मानैले तैयार नव्ह। तैपर मामी पूनमके बुझबैत कहलक्थन-

“की करबै कक्नया, दीदी आब कते क्दन रहती। हुनकर बात माक्न

जाउ। अहीमे बच्चोके आ अहू सबहक कल्याण अछि। नहि तू ओ सभ पाहुन-परक लग यएह बातक चचा करैत रहती।”

पूनम छेली अन्तत: एक माए। ई सोचैत जे बच्चा के उपनयनमे कुनो अगिह नहि हो मामीक बात मानि गेली।

जखन उपनयन पारम्भ भेल तू घरक भगतिी लग छागरके जाबे तक परीक्षा भेलै ताबे तक हमर पती, पुत आ हम रहलौ। घरक सभसू पैघ हेबाक कारणे भैया लाल धोती पहिरने भगतिी-पूजा लग हमरा संगे बैसल रहला। विजय पाप्त केलैन आ बक्लपदान अन्ततः भऽ रहल छेलै ऐ बातक आवश्यक संतुिवि छलैन। आभा मण्डल जीतक घमण्डमे चमकैत रहैन। िरीरसू क्षखन भेल मा सेहो बड आहाक्दत छेली। भौजी कण्ठ फािर-फािर स्तीगण सबहक-संगे गीत गािब रहल छेली। माक संग-संग हमर दुनू बहिन सेहो उत्साहित छेली। माके आ भैयाके आब हमरासू कुनो विकबा-विकायत नहि छेलैन...।

अस्तु, एकर विपरीत एकर ‘हम’ हारल, थाकल, लगैत रही। एतेक पैघ उत्सि मुदा आनन्द नइ लऽ पबैत रही। खचाखच भरल भीडमे असगर..! मुदा संतोषक बात ई छल जे सक्दखन तामसे घोर रहैबाली हमर ‘पुनम’ आइ एक मातृयकि सितिम उदाहरण पस्तुत करैत एकदम िान्त छेली। सभ विधि-बेहिारके ओही तरहे पालन कऽ रहल छेली जेना हमर मा, हमर बहिन आ ऑंगनमे उपस्थित बुढ-पुरान सभ कादेवित करैत छेलखिन।

जेना कि पहिनहि कधाकित रहै, जखने बक्लदानक समय एलै कि हम सभ ओतएसू हटि गेलौ।

दू क्दनक बाद मा कहलैन-

“कापही बजबैत िािक, िािक केर माता-िपता आ पिरिरक सभ

सदस्य बह स्थान जाएब। आ बह बाबाक पूजा अचर्ना हेतैन आ ओतो जोडा छागर चढतै।"

हम सभ हुनकर आजाके मानैत विदा भेलौ। पूजा अचर्नाक पछाइत, जखन छागरके बक्ल चढबैक सुरसार भेल, तखने हमर नेन-कालक क्मत-पण्व्डत कहलैन-

"कैलाि भाइ, अहा ठाढ रहू।"

हमरा मनमे उठल, जखन सभठाम हाक्र माक्ए लेलौ तू..। तूए एतौ अपना-आपके समपर्ण कऽ देलौ। पक्हल छागर तू एकेबेर-मे कव्ट गेलैक मुदा दोसर छागर बेरमे–जइ छागरके रस्सीसू गरदैन गतानल रहइ–गरदैनक रस्सी टुव्ट गेलइ। आब अधा गरदैन काटल छागर दौडए लगलै। िक्तक धार फुचका जका बहए लगलैक। बहुत विभय्स दृश्य भऽ गेलइ। पछाइत लोक व्हम्मत केलक। छागरके पकैड खगसिू ओकर गरदैनके रेक्त बक्ल चढौल। बक्ल देबए-बलाके धोती आ सौसे देह छागरक रक्तसू रंगा गेलैक। मुदा ओ एक्ह बातसू पसन छल जे बक्लपदानक बदलामे ओकरा जोड भक्र लाल धोती आ 101 टाका नगद भेटलैक।

अपन मन घोर भेल छल। अपन कायरतापर मने-मन पिाताप होइत रहए। सभ विक्र, सभ जान, सभ सेक्मनार आ पक्लक भीडमे बजबाक क्मता सुडडाह भऽ गेल छल। मनमे ई जरर अबैत छल जे एतेक विि केना भऽ गेलौ हम? मनके कुनो कोनमे व्छपल दुि जेना बेर-बेर हमर पौरष आ क्णर्य-क्मतापर अटहास कऽ रहल हो..!

अस्तु, आब बुझैमे आक्ब रहल अव्छ जे राजा राममोहन राय सन समाज सुधारक बनब कतेक दुष्कर कायर् अव्छ। जे समाज हमरा एकटा बक्लपदान सन पथाके, समाज पक्रिर तू दूर अपन बेटाक

उपनयनमे नव्ह समाप्त करए देलक, एिह समाज 19म िदीमे केना राजा राममोहन रायके सती-पथा सन विािल पथाके समाप्त करबा लेल जनजागरण करए देने हेतैन? केना परम्परा, धमि तंत आ पुन्यक मोहजालमे पुरष पधान समाजके व्ययानमे रखैत जीिित स्तीगणके मृत पत्ताक संगे ओही व्यतामे बैसा, सुन्दर लाल-पीयर बाऔहती नुआ-अंगी-लहठी-गहना पव्हरा; लाल व्सन्दुरसू माग भव्र अवानमे जरा दैत छल! ई पूण्य भेल की नृिसता? ई सोहावानक सम्मान भेल आकि मातृििक्तक अपमान? ई सभ्य समाजक कृत्य भेल आकि हय्याराक अपराध? िचारी स्ती केना जीबैत जरैत छल हेती? आ लोक सभ सती माताक गीतक जय-जयकारमे केना हुनकर िदन आ िदनाके समाप्त कS दैत छल हएत! कहल जाइत अवछ जे राजा राममोहन रायक जेठ भौजी हुनका पुततुल्य मानैत छलव्थन। जखन हुनका पता चललैन जे ई सती-पथाके समाप्त करबा लेल आन्दोलन कS रहल छैथ आ अइक विरध अंगेजसू व्मल कS कानून पास करबा रहल छैथ तू ओही व्दनसू ओ राममोहन रायसू बातचीत बन कS देलव्थन। अपन पुतिि देओरके घृणा करै लगलैथ। आ ओहू व्स्थव्तक सामना करैत ई महापुरष अपन संघषिमे लागल रहला। सतीपथाक अमानिीय रढ अन्ततः टुटल, समाप्त भेल।

अगर 'सती-पथा' गलत छल तू 'छागरक बव्लपदान-पथा' सेहो गलत अवछ। एकरो समाप्त भS जएबाक चाही। कतेक लोक ई तकिदैत छैथ जे व्मव्थला तंतक केन्र रहल अवछ। एतुका लोक िक्तक उपासक छैथ। की एतए छागरक बव्लपदान उव्चत अवछ? ओना, कतेक लोकक ईहो तकि छैन जे व्दल्ली, कलकता, मुम्बई आव्द महानगरमे बुचरखानामे विभत्स दृश्य होइत अवछ, छागरके काव्ट कS दोकान सभमे उघारे टावा कS लोक रखने रहैत अवछ। ऐ सभके

विरोध करएक नहि होइत अछि। अगर से नहि तँ भगवती घर, बहस्थान, मन्दिर परिसर आदिमे बलिपदानपर विरोध कथी लेल? हमर बहुत बात सभ सेहो हमरासँ नाराज छैथ जे हम एहि बातके अनेरे पचार कऽ रहल छी। किछु लोक आ बात सभ तँ हमरा विधमी कहैत छैथ। बहुत लोकके नहि बुझल छैन जे परम्परा आ हमरा मध्य सास आ रिीरक सम्बन्ध अछि। हम पत्त दिन पूजा करैत छी, देि तपणि, ऋषि तपणि आ पितृतपणि करैत छी। मुदा हमरा ईहो लगैत अछि जे मन्दिर परिसर, भगवती घर आ बहस्थान आदि सात्विक स्थान थिक। ओतए कुनो तरहक बलिपदान नहि हो। बदलैत समयमे लोक धोती पहिरनाइ छोडि देलैथ, बहुत स्तीगण सभ सेहो आब उत्सि इत्यादिमे मात साडी पहिरै छैथ, घरही लोक मुगाक मौस खाइत अछि, पीयाउज, लहसुन सहरगंजा भऽ गेल, एहि सभ कमि लेल धमि अहाके किछु ने कहैत अछि मुदा छागरक बलिपदान छोडि देलासँ अहाक धमभि भऽ जाएत! अहा पापक रस्ता दिस चलि पडब। ि हि रे सोच! जेतेक माछ, मौस खेबाक अछि खाउ। के मना करैत अछि। मुदा पवित परिसरके रक्तमय नहि बनाउ। भऽ सकैत अछि नर बलि पथाके समाप्त करबा लेल छागरक एि अन्य जीि केर बलिक पथा पारम्भ भेल हो। आब ओकरो बन्द कर । छागरक बदला बेल, कुम्हर आदिके पतीक रपे बलि पडते अछि। होबए दियौक। ओकरेमे आरो नीक विधि-विधान जोडू। नागा जनजातिमे किछु षिपूिधिक नर-बलि केर पथा छेलइ। नागाक हेड हंटर अथिा सरके विकारी कहल जाइत छेलइ। नागा आब अपनामे सुधार केलक आ ऐ पथाके समूल समाप्त केलक। नर-बलि पथाके आब सिगि, नृत्य आ नाटकक रपमे मनबैत अछि। हमरो सभके एहिपर गंभीरता पूििक सोचबाक खगता अछि। संतोषक

विषय ई अछ जे 'पण्डत' आ 'कर्मकाण्डी'क एक पैघ-गिछागर बकके समाप्त करए चाहै छैथ। ि सभ एकर बदलामे फल, कठाई एिं अन्य िास्त सम्मत विधान बतेबा लेल तयार छैथ। केतेको लोक एह पथाके छोड्यो देने छैथ आ छोडरो रहल छैथ। एक सििम्मक णथि हो। सबहक सहमक हो। सबहक सहभावाता हो। सबहक विचारसू एकर विकल्प (अल्टरनेटि) कस यान जाए आ ई पथा समाप्त हुअए। णथि सबहक हो, सहमक सबहक हो, केकरो बीच देष नह हो आ नि पथाक सूतपात हो जे सभ लेल कल्याणकारी हो। एहने पथाक पारम्भ हएत से आि करैत छी।

<u>मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास</u>

मैथिली लोकगीतक संसार स्त्रीगणक संसार थिक। पुरुष पक्क भूमिका गीत निर्माणक आओर किछु गीतक गायन तक सिमित अछि। मैथिलानी एक बेर अर्जित कयल गेल अमूर्त धरोहर जेनाकि गीत-नाद, पाबनि-तिहार, विधि-व्यवहार, भित्ति-चित्र, कथा-पीहानी; अरिपन काढब,ठाकुर लिपब, कोबर लिखब; केथरी, सुजनी सीयब; सीकीसू पौती-मौनी बुनब, माटिक महादेब, सामा-चकेबा, खेलोना, कोठी, चूल्हा आदि बनेबाक परंपरा के अपन माय, मातियाईन, दाई, नानी, सासु आदिसू सिखैत छथि आओर फेर अपन सभटा लुइरके अपन बेटी, पूतहु, पोती, नातिन आदिके अदौसू एहि कलाके पीढी दर पीढी नीक जेका सिखेबाक परंपराके हस्तांतरित करैत आबि रहल छथि। हलाकि आधुनिकता आ उपभोक्तावादिक युगमे एहि परंपराक पतन भेल जा रहल अछि परञ्च मूल भावमे थोर बहुत जोड-तोडक संग ई परंपरा अपन मिथिला समाजक महिला वर्गमे एखनो जिवित अछि।

आश्चर्य दुःख तखन होइत अछि जखन एहि समाजक स्त्रीगनक चर्चा होइत छैक। आजुक परिवेशमे बहुत स्त्रीगन पुछला पर निर्धोख कहैत छथि जे "हम किछु नहि करैत छी, खाली बैठल छी कियैकतू हाउसवाइफ/गृहणी छी"। पुरुष पात बहुतो एहेन छथि पुछला पर कहता —हमर घरनी किछु नहि करैत छथि घरमे रहैत छथि, हलाकि ओकर बाद कहबाक तात्पर्यकें पूर्णविराम करैत जरूर करताह —"हमर आंगनसू सहीमे मात गृहणी/हाउसवाइफ छथि"। औजी, कहियो अपन आंगनबालीक भूमिकामे जीवि जीब कऽ तऽ देखियौ तखन पता लागत जे आहाक घरवाली कतेक पैघ जवाबदेहीके निमाहि रहल छथि ! हुनका नहितू कहियो छुटी, ने कहियो आराम, आने कहियो केओ मदति केनिहार,आओर ताहि जवाबदेहिक मतलब किछु नहि ? ई एकटा बडड पैघ प्रश्न अछि। एहि पर विचार जरूर करक चाही।

भोजन आ भोजनक विन्यास सभसू पैघ, यकिरत आ िशत कला अछि। एकटा कहबी छैक ___"जे काक खैएत सैह नीक भोजन बनाएत"। इहो कहल जैत छैक जे जखन कुनो मक्हिला सुव्यता आ समपणिके भािसू भानस करैत छथि तS भोजन सुअदगर आ रक्वगर हेबेटा करत। यैह कारण छैक जे भगबान राम माता कौिल्या, सुमता, कैकेई; सासु सुनयना; गुरपती अरंधती, पती सीता सबहक हाथक रान्हल भोजन केलाह, मुदा जे सिद हुनका भीलनी सबरी के आंइठ बैरमे लगलक्ष तेहेन सुआद कतहुने लगलक्ष। ई भेल भोजन बनोक्हिहाकरक आ परोसक्हिहाकरक अनुराग। आजुक समयमे नाना तरहक सुविधा जेनाकि रसोई गैस आकि आनो तरहक जारैन उपलब्ध अछि जाकिसू चटकि भानस भअ जाइत अछि। कलमना ओकि समयक कर जखन साओन-भादबक मुसलाधार बरखामे खडहक छप्पर चुबैत घरमे अपन सभक बहुतो गोटेके माय, वाक्तयाईन, दाई कोन धरानी भानस करैत छली! जारैनमे भीजल चेरा, गोइठा, करची, झाखी चुिमे घोक्सया कखनो मूंहसू तS कखनो बायक्ष होकि आंच पजारब, धुआंसू आूक्खिमे नोर भरल आ तैयो रंग-बिरंगक पकमान आ भोजनक सचार। ताहूमे अगर घरमे केओ पैघ पाहून जेनाकि जमाय, समक्ष इय्याक्दि आबि गेलाह तS घोर बिकट, तथािप बिना मोन मलीन केने हुलक्सत मोनसू भोजनक विन्यासमे लावा जैत छली। तरकारीक अभािमे बारीक़ साग, कंद, खम्हार, ओल, लती-फतीक पात जेना कना, क्तालकोडक पात; लटकल चारक सजमक्ष,कदीमा; झाडक झीमनी, करैल; घर-पछुआरमे लागल गाछक फल जेनाकि- केरा, कटहर आक्दिसू चीज जोक्रया कS अनेक तरहक तरकारी, तरआ-बघरआ, भुक्जया-सना-चटनी बनबैत छली तकरा बादो टारासू नाना तरहक़ अंचार जाकिमे फारा, कुच्चा, खटक्मटीबला आक्दि ब्यंजन परोक्स

पाहूनक सयकारमे २०-२५ तरहक सचार लावा जैत छलै। आब जखन पाहून भोजन पर बैसता आ मिहला लोकिन गीत निह गेती से कोना हेतैक ते बनु थकने विहूसैत मोनसू दाई-माई सभके संगौर कS गीत-नाद िर होइत छल। पाहून खाईतो रहैत छलाह आ गीतक आनंद लैत छलाह। जखन कखनो हम कोनो पाच वसतारा होटल मे भोजन करैत छी आ कोनो गीतगैन के गबैत देखैत छी तS होइत अिछ जे एिहसू बिढ़या कोरसमे गीत हमरा सभक समाजक मिहला गबैत छिथ। िह खानसामा, िह परोसय बाली, िह गीत गेिनहार, िह िस्तुक व्यिसथा केिनहार। मल्टीटािस्कंग के अिहसू पैघ उदाहरण भला आर की भS सकैत अिछ?

पिहनेके समयमे लोक सभ वयाहसू पिहने एिह बातक खाझ-भाझ करैत छलाह जे जािह घरमे कन्यादान करबाक अिछ ओिह घरक चीनबार कहेन छैक। मतलब कतेक साफ-सफाई, कोन तरहक रिव केर बरतन-बासन बड पक्क ओिहठाम उपयोग होइत छैक। िहनका लोकिनक खान-पान कहेन छिन्ह, घर-पिरिरक भोजनक विन्यास, दु:खक भोजन, सुखक भोजन, पाबिन-ितहारक भोजन, याता पर जएबाक काल बाटमे खेबाक जोग भोजन, खाद भोजन, अखाद भोजन, पथ्य बला भोजन, कोन समयमे की खाई आओर की नञ खाई, इत्यािद नाना तरहक जानकारीके अगर ठीकसू ओिह भािके विचिना कयल जाय आओर विभन अिसर पर मैिथलानी सभक दारा गाओल गीत सभके देखलासू एहसास होयत जे ओ गीत सब विधिपुरौआ आकि मनोरंजने िला गीत मात निह अिछ अिपतु जानक खान अिछ। ओिह गीतमे जान,विजान, संस्कार, सामगीक िणनि आ विरिण सब किछु समािवि अिछ।

मैिथलीमे अगर अंगेजीक िब्द culture के अनुिाद कयल जाय तू

हमरा बुझने ओ िबद्द जे culture के सभसू लगमे अिछ मैथिलीमे ओकरा ‘‘िमथिलाम” कहल जायत आओर इयैह िमथिलाम अिछ जे मैथिल सभके भारते टा निह अिपतु समस्त संसारमे अलग पहचान दैत अिछ। िमथिलामक चचा िकनु भोजन विन्यास, िकनु मिहला सभक भूिमका, िकनु गीत-नाद आिक विध-व्यविहारक संभिर निह अिछ। िस्तुतः भोजन विन्यास, गीत-नाद, विध-व्यबहार, जीिन जीबाक अंदाज, िस्त्र विन्यास, धमकि आचरण, पकृित आ संस्कृित मे समनियक नाम भेल िमथिलाम।

बात भोजन विन्यासक चिल रहल अिछ ते कनेक िमथिलाक इिितहास के सेहो ध्यान देमय पडत।

ज्योितरीशर अपन कृित िणिरताकर मे ११म् िताब्दीक िमथिलाक भोजन विन्यास पर पकािर देलिन अिछ। िहनका अनुसारे िमथिलाक पमुख भोजन भात, दािल, तरकारी, चूडा, दही, िकर, फल तथा दूध छल। ज्योितरीशर अपन दोसर पोथी पाकृित-पैंगलम् मे कहैत छिथ जे ‘‘ओ गृहणी धन्य छिथ जे अपन पित के केराक पात पर भात आ घी परोिस खोअबैत छिथ”। एिह पोथी मे रंग-िबरंगक माछ रान्हिर आ तरकारी बनेिक विधि सेहो िलखल अिछ। िणिरताकर मे जे िमथिलाक पाचीन परम्परागत भोजन सिमवाक सूची पस्तुत कयल गेल अिछ ताहिमे ‘‘चाउर, चूडा, मुंगिर, लडुबी, सरआिर, माठ, फेना, मधुकूपी, िालबा, िसरोल, िखरसा, िसरनी, िझल्ली, फरही, भूजा, मोतीचूड, अमृतकुंड आिदक उल्लेख अिछ संगिह भोजनमे दहीक पधानता सेहो भेटल अिछ।

आब लोकगीत पर अबैत छी, लोकगीतमे फकरा, पीहानी, गीत, लोकिक्त आिद सब िकछु समािहत अिछ। एिहठाम दू गोट फकरा

मैथिल समुदायक भोजन विन्यास आ भोजनक प्रति आसक्तिकेँ बुझबाक हेतु पर्याप्त अछि ।

पहिल : मिथिलाक भोजन तीन/ कदली, कबकब मीन।।

दोसर: तीन तीरहुतीया तेरह पाक। ककरो लेल चुडा दही ककरो लेल भात।।

अही दू गोट गीतक आधार बना सब विश्लेषण देखल जा सकैत अछि।

मिथिलाक भोजन तीन। कदली, कबकब मीन।।

एकर अर्थ भेल जे मिथिलाक लोक सभ लगभग नीक-सूलक S अधलाह तकमे जेनाकि- उत्सव, काज-राज, संस्कार, पाबनि-तिहार धरिमे केरा, ओल बा ओले परिवारिक आन कंद जेनाकि खम्हरुआ; आओर अंततः नाना प्रकारक माछके प्रयोग भोजनमे अनिवार्य करैत छथि। विवाह -दान, मुडन, उपनयन, पाबनि तिहार सबमे केराक प्रयोग हेबेटा करैत अछि। ओहुना लोकसब केराके पाकल, काच आ केराक फुलक सेहो खेबाक विन्यासमे प्रयोग करैत छथि। केराक तरुआ, तरकारी, सत्यनारायण भगवानिक कथामे घोरुआ प्रसाद आ ओहुना पाकल केराक प्रयोग होइत अछि।

कबकबके बात करैत ई कहब जरुरी अछि जे ओल मिथिलामे बहुत प्रिय अछि। एक फकरामे भादबक ओल केर बारेमे कहल जैत छैक:

भादकि ओल की खै राजा आकि चोर

मिथिला आ माछ एक दोसरक पूरक अछि। पंचदेवताक एकटा संगे उपासना करे बला मैथिल समाज जाहिमे ब्राह्मण सेहो सम्मिलित छथि कुनो दिन आ कुनो मास माछ खेबासू परहेज नहि करैत छथि। माछके जल-पडोर, जल-फूल आदि नामसू बजा कतेक गोटे तू एकरा मासाहारी भोजनक शेणी तकमे नञ राखय चाहैत छथि। कातिक आ साओन मासमे जखन लोक सामान्यतया मासाहारी भोजनके त्यागि दैत छथि, अपन मैथिल अहू मासमे खूब चटकारसू माछ खाईत छथि, संगहि एहि मासमे माछ खाय बलाक हेतु बैकुंठमे जगह बना दैत छथि।

कातिक मास जे गैचा खाय। ससरि-फसरि बैकुंठे जाय।।

एक बारहमासा गीत एहेन भेटल जाहिमे मिथलाक पानिमे उपलब्ध लगभग सब माछक विधि तू अछिए ओकरा कोना बनाबी कोना खाई, कथीक संगे खाई सब लिखल अछि। एतबे नहि लगभग ७५% माछ जे मिथिलाक पानिमे भेटैत अछि तकर विधि छैक। कने एहि बरहमासाके देखू:

मास हे सखि सरस अगहन भूजल चूडा संग यो।
तरल चेचडा माछ कुरमुर लागय मोन भरि संग यो।।
पूस हे सखि अन नकिा संग मागुर झोर यो।
कबइ कुरमुर दात दबइत करय जनजन ोर यो।।
माघ बदरी जाड थरथर कापय तन बड जोर यो।
सुख बोआरी खंड लखि कए मन विनोद विभोर यो।।
मास फागुन मदक मातल बहय पछबा बसात यो।

बढल सिदिक माछ टेगडा रान्हल सानल भात यो।।
चैत हे सखि रोग सभक्दस र प नाना देखि यो।
तरल भुना पलइ रान्हल खाइत बड सुख लेखि यो।।
मास हे सखि आबि पहुचल गरम बड बइसाख यो।
गेल मन र कि माछ गामर खंड सभ क्दन चाख यो।।
जेठ हे सखि हे हेठ बरखा मुंड भाकुर पात यो।
पडतु कि सरतु आबि ससरतु कर नकिा भात यो।।
मेघ सखि बरसत अखाढ जत रसालक डाकर यो।
तोब्ड काचे आम आकमल देल सौरा पाल यो।।
मास हे सखि आओल साओन भरल अंडा घेट यो।
तरल दही माछ मारा खाब्थ भकर पेट यो।।
माछ इचना भेटल कहुना खाय भरलहु कोब्ह यो।
मास आक्सन देपिूजा िखि घंटा नाद यो।।
राक्ह रहुआ माछ बइसब पूणभिेल परसाद यो।
मास कात्तक बाकर मर आ बऽड तरल-अपूिियो।।
पूरल बारहमास हकरनाथ गाओल सगिियो...

माछ खेबाक िणिि तू अक्हए माछक विरा खेबाक परंपरा पबल सेहो अक्छ, घरक मुक्खया, पाहून, बकरयाती आक्दके विरा परोसल गेल आ बुझू हुनकर उक्चत सत्कार भेल। कामक्लक्खत फकरा एक्ह कथ्य के पमाणित करैत अक्छ:
विरा खाय से मीरा। पूच्छी खाय गुलाम।।

जमाय जखन भोजन करक हेतु बैसल छथि तँ नाना तरहक गीत गाबि हुनका मनोरंजन कयल जाइत अछि। एकटा डहकन जाहिमे देखबयौ, ओना तँ गारि देबाक परंपरा अछि मुदा गारिक संग-संग भोजन विन्यासक विवरण सेहो अछि।

खाजा मूंगबा आर पुरकिया

ता पर गरम सोहारी जी।

माजी के गारी पिताजी के गारी

आ बाबाजी के पढब गारी जी।

पढु हे सारि हमरो के गारी

हम लेब देह के पसारी जी।।

एहि गीतमे गारि तँ छैहे जे डहकनक मूल प्रकृति अछि, मुदा गारिके संगे-संगे भोजन सामग्री —खाजा, मूंगबा, पुरकिया, सोहारी आदिक विवरण सेहो छैक।

सामा-चकेबाक एक गीतमे बहिन सब भोजनक बात करैत छथि:

साम-चको साम-चको अबिह हे अबिह हे।

जोतला खेतमे बैसिह हे बैसिह हे।

लाले रंग पूरी पकबिह हे पकबिह हे।।

मिथिलामे साग खेबाक परंपरा सेहो अदौसँ अछि। अयाची मिशक जीविति ककरा नहि बुझल छैक। मात ११ कटा खेतमे साग-पात कंद-मूल खाकऽ जीवन यापन करैत छलाह आ अध्ययन-अध्यापन करैत छलाह। कतेक बेर राजा बजौलखिन मुदा अपन गामक गुरुकुलके छोड़ि कतहु नहि गेला। सम्भवतः संपभुताके सतिम

उदाहरण पस्तुत करैत छलाह। माछक तुलनामे सागक अधिक पधानता देबाक पथा मिथिलामे सहज अछि। एकटा फकरा एहि बातके पमाणित करैत अछि:

माछ-भात पाच हाथ। साग-भात सात हाथ।।

विन्यासमे सागक अलावे सागके आन चीज सब जेना अरिकोच, गुजरिया, इत्यादि बनबैत छथि, खेसारी, बथुआ, केराव, चना, कमी,गेनहारी, पटुआ आदिक साग मिथिला लोक खाईत छथि। अपना ओतय साग तोडल नहि अपितु खोटल जैत अछि। कोनो भोजमे साग एक महत्वपूर्ण तरकारी होइत अछि। मिथिलाक एहि परंपरासू पभावित होइत ठीके कहल गेल अछि:

कोकटा धोती पटुआ साग। तीरहुत गीत बडे अनुराग।

भाव भरल तन तरुणी रुप। तै तू तिरहुत होइछ अनूप।।

अपन माटि सू गुजरियाके एतेक स्नेह जे साग-पात खोटि लेती, साग-भात खा लेती मुदा रहती मिथिलेमे :

साग-पात खोटि- खोटि दिन बितौने गेमेबै यौ हम मिथिलेमे रहबै

नहि चाही हमरा सुख-आराम यौ हम मिथिलेमे रहबै।।

तिलकोर आ कना साग बिना की मिथिलाक पाहुनक सचार लावा सकैत अछि? चाउरक पीठारमे डुबा कए सरिसबक तेलमे छानल तिलकोर दुरो देसमे रहनिहार मैथिल सबके जीभमे पानि आनि दैत अछि।

सजमनि, भाटा इत्यादिमे अदौरी तू चाहबे करी तखनने भाटा-अदौरिक चहटगर तरकारी बनत! भाटाके तरुआ, भटबर आर की-की नहि बनैत अछि। बारिक भाटातू बेर बिपतिक समय इज्जत रखैत अछि।

भाटाके भटबर, ठोपेके तेल। खेलक जमैया ठेलम ठेल।।

मिथिलाक लोकके खिच्चरिमे सेहो पापर, घी, दही, अचार, चटनी इत्यादि संग खाईत छथि। खिच्चरिमे चारि बस्तु नहि तू केहन खिच्चरि?

खिच्चरि के चार यार। घी पापर दही अचार।।

ई त भेल पद परन्तु सही अर्थमे खिच्चरि के छौ यार अछि: घी, पापर, दही, अचार, चटनी, तरआ।

एक उचती गीतमे जखन विहिक बाद रि भोजन करि लेल बैसैत छथि तS सासु आ आन स्त्रीगन सब अपन गीतमे व्यंजन केर णिनि करैत छथि:

जाहि दिन राम जनकपुर अयला देखहु दुनिया के लोके

भाति-भाति के भोज्य लगाओल नयना बिनु परकारे जी

केरा नारियल खण्ड सोहारी परबल केर तरकारी जी

जीमय बैसला ओ चार भाई परसथु पेम पीयारी जी //

दोसर उचती मे बर के कृष्ण सरिप मानि किछु अहि तरहक विरिण भेटैत अछि:

खाजा खुरमा तपत जिलेबी तापर सकिर सुपाडी जी।

जेमय बैसला कृष्ण-कन्हाई सारि जे पढथिन गारि जी।।

भगबान कृष्णक बालकालके एक भक्ति गीतमे भोजनक किछु णिनि भेटैत अछि:

करथि पुकार जसोदा माई मोहन पात नाहाई।

दही केरा गरम जिलेबी खोआ भोग लगाई।।

लोकगीतमे भूख, क्षधनिता, कुअन आक्षदक ऐक्ताहाक्सक संदभक्ति ि णिनि लोकगीत लोकविदा होइत अक्छ, लोकइक्ताहास होइत अक्छ। एहेन इक्ताहास जे अपन पमाक्णकता एिं ि ैली के कारण जन-जन केर कंठमे क्लखा जैत अक्छ। एहेन क्लखान जकरा ने कुनो पाक्स गला सकैत अक्छ ने कुनो आवा जरा सकैत अक्छ आने कुनो कीडा खा सकैत अक्छ। एकबेर जनकंठमे रक्च गेल त पीढी-दर-पीढी अबाध गक्त सू चलैत रहैत अक्छ। मधुबनी क्जलाक ि िहपुर गाममे एक जनमान्ध लोक कवि भेला। हुनकर नाम छलक्न फतुरी लाल। फतुरी लाल एक बेर क्मक्थलाक भयानक अकालक सामना केलक्न आ अकालक विभीक्षकाक हदयविदारक वि िरिण अपन कवितिमे केलक्न। ओ रचना अकालकविति के नाम सS जानल जैत अक्छ। अबाहम वाएसनि १८८७ ईर्सीमे फतुरी लाल केर अकाल कविति हुनके मुहे सुक्नकS क्लखलक्न। एक्ह कविति मे ई वि िरिण अक्छ जे भुखमरी केर अि स्थिामे लोक पाणरक्षा हेतु की-की नक्ह करैत अक्छ। क्कछु पंक्क्त मात देखलासू दुखक असीम ि िदनाक अनुभूक्त सहजे भS जैत छैक:

भेल धनतक्र दुई फाक्सल जग-राहक्डऔर मकई।

अकाल पडल क्तरहुक्त मे भारी-तै बही गेल ह ि।

घर-घर मागन करे नर नारी-फाक्क मकई केर ला ि।

मालीक आउर महाजन सभ-कै-घर-घर ढेरीक अन।

लोक बुझ्ओल ओहो तकै छक्थ मुंहगा ऋणक ि िन।

सभै देक्ख बक्नयान सभ सनकल-डरे लगाओलक टटी।

सुन दोकान ि िहरमे पक्र गेल-सुन भेल सभ चटी।

सूखल गात भात भौ लटपट-कतेक बात अब सहना।

नर नारी सभ सान तेआगल-बेकारी भेल अब गहना।।

बारहमासा एिं अन्य गीतमे गरीबीके वर्णन करैत कोना कियोक महिला कम भोजन अथवा कुअन्न खा कS दिन खेपैत छथि तकर ममस्पिर्शी चित्रण कैल गेल अछि। आईसू करीब ३०-३५ सालक इतिहासमे अगर जा सकी आ अपन मानस पटल पर ओहि वस्थित आ गरीबीके ऐनाके प्रतिफलकिनि जेका देख पाबी तS सहज रूपमे ई अनुमान लगा सकैत छी। एकटा बारहमासा एहेन भेटल जाहिमे एकटा वाधिन महिला जनकर पति परदेस गेल छथिन ओ कोन धरानी अपन समय वितात वाधिनतामे बिता रहल छथि तकर वर्णिण देल गेल अछि।

पूस गोइठा डाहि तापब

माघ खेसारिक साग यो

फागुन हुनका छिमरि माकरि

चैत खेसारीक दालि यो

बैशाखि टकुला सोहि राखब

जेठ खेरहिक भात यो

अखाढ गाडा गाडि खायब

साओन कटहर कोब यो

भादि हुनको आंठी पखुआ

आसिन मडुआक रोटी यो

कातिक दुख-सुख संगहि खेपब

अगहन दुनू साझ भात यो

उपरोक्त गीतमे कोना एक महिला खेसारीक साग, खेसारीक दालि

आमक क्टकुला, खेरक्हक उक्सना, पाकल आमक गाडा, कटहरक कोआ,नेढा, आमक पखुआ, मडुआ रोटी, एक मास अक्वतिता केर क्सथक्त आ अंततः अगहनमे भात। कहू तS कतेक सय्यके जे आई लगभग इक्तहास भS चुकल अक्छ तकरा ई अपना मानसमे रखने अक्छ क्मक्थलाक गीत-नाद।

गरीबीक क्वपक्तसू मारक्ल आ असहाय वधि कंद मूल आ कुअन बासक ओक्धसू अपना टूटल मडैयामे नीक जेका नीपल-पोतल चुलहामे पका रहल अक्छ। बासक ओक्ध धुआंक घर होइत अक्छ। फटने ने फटैत अक्छ। जरने नञ जरैत अक्छ। ओहने वधिक दुःखसू रवित होइत बाबा “याती” क्लखैत छक्थ:

बासक ओक्ध उपाक्र करै छी जारक्त...

हमर क्दन की नै घुरतै जगताक्रक्त //

मैक्थली लोकगीतमे भोजन विन्यास आ औषक्ध

लोकगीत लोकविदाके अंग अक्छ। लोक विदाके अनेक पक्रिजाक्तक होइत अक्छ। कृक्षकायएि अन्य सब कायमि डाक बचन कतेक सटीक अक्छ से हमरा लोकक्त बहुत क्नक जेका बुझैत छी। बहुतो लोकगीत एहेन अक्छ जे कहेन अन अथि भोज्य सामगी सेहो कुन क्दन, कुन मासमे खेलासू की भS सकैत अक्छ तकर बहुत तथ्यपरक जानकारी दैत अक्छ गीत सुनब अथि पढब तू लागत जेना आयुिदक कोनो िदक देल नुस्खा हो। हरेक गाछ आ हरेक भोज्य सामगीमे पाचीन भारतीय परंपराके अनुसार क्कछु-ने-क्कछु औषक्धक तर्य छैक। भारतीय परम्पराके औषक्ध आ भोजन अलग-अलग चीज नक्ह छैक।

ताहि अपना सबहक भोजनमे पथ्य आ कुपथ्यके बात पबल मानल जाइत अछि।

अपन ाधिकायकि अध्यिमे जखन बमिथलाके गाम सभसू गीतक संकलन करैत रही तS एकटा गीत एहेन भेटल जाहिमे ओ ई बतबैत छल जे कोन दिन कथिक पयोग भोजनमे करक चाही जाहिसू तन आ मन दुनु स्वस्थ्य रहत। ई णिमि ज्योतिष विचार पर सेहो आधारित अछि।

रवि के पान सोम के दपिण

मंगल के कछु धनिया चपिण

बुध के गुड बृहस्पति राई

ुि कहे मोहे दही सुहाई

िनिबार जे अदरख खाई

कालौ काल कटति घर जाई।।

ई त भेल कहिया की खेबाक चाही। एक एहेन गीत भेटल जे बारहमासाक रपमे रचित भेल अछि। ई एकटा दि जेका बहुत ैजानिकताके आधार पर लिखल अछि। गीत अथकि स्तिः पमाणित करैत अछि:

सानिक साग ने भादबक दही।

आसिनक ओस ने ने क़ातिकक मही।

अगहनक जीर ने पूसक धनी।

माघक मिसरी ने फागुनक चना।

चैतक गुड ने बैसाखक तेल।

जेठक चलब ने अषाढक बेल।

कहे धननितवर अव्ह स बचे।

ँदिराज काहे पुक्रया रचे।।

मैथिली लोकगीत अनंत महासागर अछि। अव्ह महासागरमे सू भोजनक सम्बन्धमे जे किछु जानकारी छल से समयसीमा के ध्यानमे राखि पाठकक समक राखल। नीक लागल तS मैथिली लोकगीत परम्परा केर महानता अधलाह लागल तखन हमर जानक विपनता।

आभार: हमर लोकविदा पर क्लखल सब काज लोकस लेल अछि। लेकिन एव्ह लेख के भाषा के मयादा के संचालक एिं हमर अनुजतुल्य शी अमरनाथ क्तश अंव्ख फोक्र-फोक्र ठीक केलाह अछि। एव्ह काज लेल हुनका धन्यािद द हुनकर योगदान के छोट नव्ह कर चाहैत छी मुदा ओ खूब आगा बढथि से आिीिद दैत छियक्त।

<u>सौराठक सोमनाथ आ सौराष्टक सोमनाथमे समानता-(लोक इक्तहासक पक्रपेक्ष्यमे)</u>

सौराठ क्तथलाक धरोहर-गाम अछि। केतेको सालसँ रलैत सभा हेतु अइ गाम आ सभा-गाछीके के नव्ह जनैत अछि? कहल

जाइत अछि जे सौराठक मूल नाम 'सौराष्ट' छल। सौराष्टक अनुसार १०० राष्ट। लोक कथाके जँ मानी तँ सौराठ रामायण (हमरा हिसाबे सीतायण) सँ जुडल स्थान अछि। लोक कथा के मान्यता मे कहल जाइत अछि जे सीताक स्वयंवर सौराठमे भेल छल। ओइ स्वयंवरमे १०० राष्टक राजकुमार भाग लेने छला तँए एकर नाम 'सौराष्ट' भेल जे बादमे अपभ्रंशित भऽ'सौराठ' भेल। ऐ बातके नोडेक आरो ठोस आधार देबाक लेल रली लोक मान्यता छैस। कहल ईहो जाइत अछि जे सीता-स्वयंवर आ बिआहमे सात लाख लोक आएल छला। ओतेक मनुख रहत केतए? तँए ऐ लेल एकटा पैघ स्थानक निर्माण कएल गेल जे सभ सुविधासँ युक्त छल। ओ स्थान आब 'सतलखा' नामक गामसँ विख्यात अछि। सतलखा सौराठसँ सटले अछि। मात तीन किलोमीटरक अन्तर छै।

आब दोसर उदहारण, भगवानि शिवक धनुष जतए राखल गेल छल ओ स्थान आब 'धनुखी' नाओंसँ जानल जाइत अछि अनात धनुखी गाम। राजा जनकक छोट भाए छलखिन कनक। कनक ऋषि छला। ओ अपन आशम बनौने छला। ओइ स्थानपर आब 'कनैल गाम' बसल अछि। सीता पत्त दिन भोरे अपन संगी-बहिनपाक संग 'मंगलबनी' नामक फुलबाडीसँ फूल लोढै छली। मंगलबनी आब अपभ्रंशित भऽ 'मंगरौनी' बनि रुकल अछि आ मधुबनीक बगलेमे ई गाम अछि। भऽसकैत अछि जे सौराठक यएह दन्त-कथा ऐ गामके 'सभा गाछी' लेल योग्य बनेने हुअए? खैर! सभा गाछी पर ररा किछुओ बाद मे करब।

विद्यापतिक पौत बादमे सौराठमे आबि कऽबसि गेला। ओ सभ अखनो छैन। हुनकर संतति सब एखनो अछि गौरि के समेटने छथि। जखन हम सौराठ मे रही त अही कुलक एक महिला विद्यापतिक

बहुत गीत अपन मधुर कंठ स सुनेली । एक गीत जे मोन के नैहर-नैहर क देलक ओ छल:

सुरसर सेबा मोरा कछुओ ने भेल ।

पुनमत गंगा भागीरन लैल।

हटबह बकया हाट बजारे।

अही बाटे अबै छक सुरसर धारे।।

वि ापक पर सेहो विस्तार स कहुओ आर बात करब. एखन अपन मूल बात के आगा बढाबी।

सौराठ अपना-आपमे रामायण, भगानि व कि तंत आ राजा सलहेसक आख्यानसँ जुडल अछ। सौराठ हिन्दू आ मुसलमानक बीर आपसी स् बन्धक अदुत उदाहण सेहो अछ।

गुजरातमे जे 'सौराष' अछ जेतुका सोमनान मन्दिर विश पसि अछ आ दादस ् योतिर्लिंगमे एक लिंग अछ, जेहो लोकधारामे मिथिलाक सौराठसँ जुडल अछ। बता दी जे गुजराती भाषामे सौराषके सेहो सौराठे कहल जाइत छै।

गुजरातक सौराठ आ मिथिलाक सौराठक मध्य एक कना ऐतिहासिक अछ। ऐ कनाक इतिहासमे रली। सौराठ गाममे दू गोट बाहण कुमार भेला- गंगदि (गंग देि) आ भागीरन दि (भावारन देि)। दुनू सहोदर भाए। नैनेसँ संस्कृतमे उत्कृष्ट आ कमकाणमे मग्न। एक बेर दुनू भाइ निआरलैन जे दादस ् योतिर्लिंगक दा न करब। फेर की छल दोसरे दिन निकैल गेला। सभ लिंगक दा न करैत सौराष[1]क सोमनान मन्दिरमे पहुँर खूब नियम निष ासँ पूजा-अर ना केलैन। भगानि व ि जेना हुनकर आत्मामे बसि गेलखिन।

आब हुनका सोमनान छोडबाक मोने ने होक्त! बाह रे भक्त! बाह रे समपघ्च! पार क्दन ओतै रव्ह गेला। छठम राक्त सोमनान महादेि मक्दरक देख-रेख करैबला मुक्खयाक सपनामे आक्ब कहलक्खन-

“दू संस्कारी आ विदाने मैक्तल बाहण कुमार अतए आएल छैन। ई सभ बहुत नीक लोक छैन। विदान त छक्तए एक नंबर केर भक्त सेहो क्तकाह । अहा सभ क्हनका लोकैनके क्तिदिन कर जे ऐ मक्दरक मुख्य पक्ति केर भार र्सीकार कऽलेक्त।”

..सोमनान बाबा ऐ दुनू भाइक हुक्लया सेहो बता देलक्खन। जखन मुक्खया भोरमे उठल तँ देखलक जे सहीमे दू बाहण बालक वकि ध्यानमे मग्न छैन। हुनका लग गेला। पक्ररए-पात भेलैन। आ अन्ततः क्तिदिन केलक्खन-

“हे क्तक्तलाक पक्ति दय! ऐ भूक्तपर अपनेक सिगत अक्छ। सोमनान महादेि केर ई इच्छा छैन जे अहा सभ मुख्य पुजाक्रक भार गहण कए हमरा लोकक्त के रक्ततानचकरी?”

गंगदि आ भागीरन दि ऐ भारके र्सीकाक्र लेलैन। मुदा ई अबस्स कव्ह देलक्खन जे छह मास एकटा भाए सोमनानमे रहता आ दोसर क्तक्तलामे आ हरेक छह मासमे पार बदैल जेतैन। दुनू भाइ आब कमक्काणिमे आरो लीन भऽगेला।

ओइ समय सोमनान भारतक सभसँ स्पन मक्दर छल। पक्तक्दन िनारससँ भरल गंगाजलसँ विक्लंगक स्नान आ पूजा होइत छल। कहल जाइत अक्छ जे िनारससँ सोमनान धक्र पीत-िस्त्त पहीरल भक्तक रेन (शंख्खला) लागल रहैत छल। सबहक हानमे सणिचकला । पव्हल बेकती कलामे गंगाजल भक्र लगभग िढ क्कलोमीटर जा ओ कला दोसर आदमीके दऽदइत। दोसर आदमी

पश्चिमहिसँ खाली कलश लेने ठाढ़ रहैत। फेर ओ आदमी भरल कलश हाथमे लऽ ढिढ दू किलोमीटर रखैत छल आ तेसर आदमीके भरल कलश दैत खाली कलश लैत गंगा दिस आबि जाइ छल। ..अही तरहे निरससँ सोमनाथ धरि मानि शृंखलासँ गंगाजल सणिचकला मे पहुँचै छल। सभके अपन समय बूझल रहइ।

निरससँ सोमनाथक दूरी अछि १७९२ किलोमीटर। एकर अनचभेल जे २४०० सणिचकला गंगाजल लेल पयोगमे अबैत छल आ २४०० पीत स्त्रिमे लोक ऐ कार्यक स्पादनमे अपन शमदान करैत छल।

गुजरात पान्तक काठियावाड़ क्षेत्रमे सोमनाथ अछि। पतिहार ीक राजा नागभट दतीय ८१५ इसवीमे लाल रंगक पाथर (Red sandstone) सँ एक भव्य आ विशाल मन्दिरक स्थापना केलैन। ई मन्दिर अपन स्थापत्य कला, क्षेत्र गौरि, आ सणिचरानी, हीरा, एिं अनेक बहुमुल्य पाथर, रत, रत्न संगे मुराक भण्डारण लेल सेहो विश विख्यात छल।

महमूद गज़नी (९७१-१०३०) जेकरा 'महमूद जाबुली' अनि 'यामीन-उद-दौला अब्दुल कासिम महमूद इब सेबुक्तगीन'क नाओंसँ सेहो इतिहासमे जानल जाइत अछि ओ अपन सेना सबहक संगे भारतक औझुका गुजरात पान्त स्थित पश्चि सोमनाथ मन्दिरपर १०२५ ईसवीमे आकमण केलक। पारम्भमे मन्दिरक रक्षक-पहरी-स्थानीय सेना आ रालुक्य ीक राजा भीम पथम (काठियावाड़ि राजा) राजक सेना ग़ज़नीक विरोध करैत लड़ल मुदा अन्ततः हारि गेल। कारंकुश आ जीतक मदमे मातल गज़नी अपन सेनाक संग समस्त सोमनाथ मन्दिरक परिसरके मटियामेट करए

लगल। मन्दिरसँ सभ मूर्तिचएं बहुमूल्य स्तिु, हीरा-सोना-रानी-मूंगा-पना-पुखराज-स्फटिक-माणिक्य इत्यादि आर ने जानि की की, सभके लूटलक। मन्दिरके तोड़ि कऽ ध्वस्त कऽ देलक। आ जे कियो ओतए आएल ओकरा मौतक घाट उतारि देलक। भक्त, सेिदार आ पुजारि सभ या तँ भावा गेला ि जे नहि भावा सकला सेहो सभ अपन पाणसँ हान धोलैन आ निर्मम हत्याक शिकार भेला।

किछु सेिदार आ मन्दिर संरालन समितिक सदस्य सोमनान मन्दिरक लिंग बँरबैक अन्तिम पयास केलैन आ िहम्मत करैत गज़नी लग गेला। हान जोडी विनिम भािसँ नििदन करैत कहलखिन-

“शीमान! अपने जे ध्वस्त केलौं तइले कुनो बात नहि। आरो अगर हीरा, मोती, रत्न जात लेबाक अछि तँ हम सभ आनि दइ छी। जेतेक लिंगमे लागल अछि तेकर ५० गुणा, मुदा लिंगके ध्वस्त नहि कएल जाओ!”

ई बात सुनिते गज़नी कोधसँ लाल भऽ गेल। िरिरयाक बाजल-

“अही लेल हम युि िजतलौं! हम जखन अपन दे आपस जाएब तँ लोक की कहत? कहत ने ‘गज़नी बुत पूजक काफिरक देिताके बिना ध्वस्त केने आबि गेल?’ अदलाह हमरा कहियो माफ़ नहि करता?”

कहैत गज़नी सभके ओतै मारि देलक। रक्त केर धार बहए लगल...।

ऐ तरहे सोमनान मन्दिरके लूटैत काल गजनी लगभग ५०,००० बाहण एिं हिंदू सबहक नहंस हत्या केलक। एतेक ािघात बहेलाक बादो गज़नीके मोन ाात नहि भेलइ। लिंगक सभ कीमती स्तिुके

समैट अपना कब्ज़ामे लेलक। आ सयिं अपना हानमे पैघ हनौरा लऽ व ि क्लंगपर दानि ी पहार तेना करए लगल जेना मदमे पागल भेल हो। पहारपर पहार! क्तदच्च पहार। क्तरंकु ा पहार! आस्ना ािदी आ मूक्तच्चूजक दे ितापर मूक्तच भंजक पहार! इक्तहासपर पहार! ितच्चानपर पहार! भव िष्यपर पहार! संस्कक्तपर पहार! संस्कारपर पहार! क्तन्दू धमक्त भा िना आ क्तशासपर पहार! मान्यतापर पहार! आरो नक्त जाक्त कनी-कनीपर पहार! आब गज़नी सैकडो संख्यामे गाइक ि कए मक्तदरक पागनमे भोजन बना अपन आसुरी सेना आ लूटेरा सभ संगे खाए लगल...।

..क्त् बदक्तक अनुसार सोमनान व ि क्लंगक पस्तरक भगमा ि`षके गज़नी अपना संगे लेने गेल। आ ओ अपन ा हरक जमा मक्सजदमे ओइ पस्तर अि`षके सीढी बनबैमे पयोग केलक। दुक्तयाके ई बतेबा लेल जे ‘‘देखू क्तन्दू धमक्त सभसँ पैघ दे िताक ऊपर हम सभ लात-दऽ क्तत्य नमाज पढए जाइ छी।’’ धन स् पैतक अक्तक्त गज़नी अपना संगे हजारक संख्यामे स्तीगण ए ि बच्चा सभके सेहो गुलाम बना कऽ एतएसँ लऽ गेल।

आब फेर कनी क्तलाक सौराठ क्तस आबी। लोक मान्यता ई अछ जे सोमनान महादे िके पक्तनक्त भान भऽ गेल रहैन जे गज़नी पागणके ध िस्त कऽ देत। तँए ओ ऐ घटनासँ एक क्तन पक्तनक्त सोमनान मक्तदरक पुजारी शी गंगा उपाध्याय (दे ि) के राक्तमे सपिमे आक्त कहलक्तन-

‘‘आब हम अतएसँ पलायन कऽ रहल छी। अहा जँ हमर पूजा करए रा हैै छी तँ हमर क्तमाल लऽ क्तअ आ अहा एकरा जेतए राखब हम ओतइ पहुँर जाएब आ अहा हमरा पुनः पूजा-अरचा करब। हँ, ऐ

बातक ध्यान अबस्स राखब जे केकरो ऐ बातक भान नहि हुअए।”

ई कहि सोमनाथ महादेव अन्तर्ध्यान भऽ गेला। गंगदेव जखन सुति कऽ उठला तँ सपना जेना सत्य बुझमे आबै लगलैन। मन्दिरके पागनमे जेना ध्यान लागए लगलैन। पूजा पाठ, स्वाध्याय आदि कुनो कार्यमे मोने ने लगैन..! तखन गंगदेव अपन छोट भाए भागीरथदेवके बजेला आ सपनाबला बात सुनेलखिन। सुनिते भागीरथदेव कहलकैन-

“भाय, हमरो बाबा सोमनाथ यएह सपना देला अछि। आब अतए रहनाइक अनचभेल अछि केँ अनेरे आमंत्रण देब।”

ई सोचैत दुनू भाइ समस्त परिवारक संग शिव लिंग ल कऽ रुपएप अपन गाम अनात सौराठ विदा भेला। सौराठ आबि एखन जे सोमनाथ छैन ताही ठाम शिव लिंग राखि पूजा-अर्चना करए लगला। पूजा तँ करैन मुदा सोमनाथ महादेवकि सपनाबला बात केकरो नहि कहलखिन। पछाइत ओइ स्थानपर स्वतः एक लिंग प्रगट भेल। दुनू भाइ गद-गद भऽ गेला। पूजा पाठमे लीन रहए लगला।

सौराठ एलाक उपरान्त दुनू भाइक जीवन शैलीमे सेहो परिवर्तन भेल। दुनू भाइ खेतीक तरफ़ सेहो ध्यान देमय लगला। अहीठाम दुनू भाइ अपन-अपन बेवस्था सेहो अलग कऽ लेला। आ तइ काल ऐ गामक रकबा जे चौदह साए बीघा अछि तेकर बँटबाराक प्रश्न उठल। दुनू भाइ सोचलैन जे जमीनक बँटबारा कऽ ली मुदा दुनू भाइ एकहिमे अपनाके असमनज्जमेला। आब की करी? तखन गंगदेव महादेवकि आराधना कए हुनकेसँ प्रार्थना केलैन जे उक्त जमीनक बँटबारा करू। लोक मान्यता कहैत अछि जे तखन कमला राता-राती ऐ गामक रकबा चौदह साए बीघाके बीचो-बीच धारक रूपमे आबि सात-सात साए बीघा कएल। जेठ भाय गंगदेवके कमलाक पूब आ छोट भाए भागीरथदेवके कमलाक पच्छिम जमीन भेटलैन। जेकर प्रमाण आइयो

कजला कायालयमे जे उपलब्ध नक्शा अछि, जेकर प्रमाण १९०१ इस्वीक जनगणनाक संग भेल छल। तइमे रादर न्बर-१ पछबरिया ा ीटबला नक्शापर सौराठ भागीरन आ पुबरिया ा ीटबला नक्शापर रादर न्बर-२ केर सौराठ गंगा अछि। संग-संग दुनूक रकबा सात-सात साए बीघा सेहो अछि।

दुनू भाइ केकरो सोमनान केर स्बन्धमे कोनो बतेने मरि गेला। एकर बहुत दिनक बाद व ि प्रमालक पूजा धीरे-धीरे बन्द जका भऽ गेल। आ उक्त धरतीपर खेती-बाडी तँ नहि, मुदा ररौर बनि गेल। जैपर गामक ररिाहा सभ अपन-अपन माल-जालके ररबैले जाइ छल। अहिना होइत होइत २०० ि षिचबीति गेल।

अही क्रममे फ़कीररन्द नामक एक सूफी (मुसलमान कब्रुक, जेकर नामसँ फकोरमा नामक खेत अखनो धरि अछि) अपन टेगारीसँ उक्त स्नानक झाड आ घास पातके साफ़ करै छल। एकाएक फ़कीररन्दक टेगारी सोमनान नामक महादेकि लिंगपर लगलैन। टेगारीक रोट लवाते लिंगसँ ा ोणित बहए लगल। स्नानके देखते फ़कीररन्द घबराइत टेगारी ओतै छोडि घर आबि गेला।

फ़कीररन्द ओना तँ मुसलमान छला मुदा हिन्दू धर्मसँ सेहो हुनका सिनेह कम नहि छेलैन। भोजन कए ओ दिनमे कनीकाल लेल आँखि मुनला तखन हुनका सोमनान महादेि सपि देलखिन आ कहलखिन-

“अहाक टेगारीसँ जइ पत्तरके रोट लागल ओ साधारण पत्तर नहि अपितु व ि लिंग अछि। हम छी सोमनान महादेि। गज़नीक आक्रमणक समय ऐ गामक दू गोट बाह ण गंगदेि आ भागीरनदेि हमर आजापर सौराषिसँ हमरा प्रमालक रपमे अनलैन। हुनकर मृत्युक

पछाइत आब ककयो हमर पूजा नकह करैए। ओना, अइले गामक लोकक कुनो दोख नकह। अहा दूटा काज कर । पकहल तँ ई जे गामक लोक सभके लऽ कऽ अहा ओइ स्नलपर जाउ आ लोक सभके ककहयौ जे पीसल भाग, बेलपत, गाइक घी, रन्दन, दही आक्दक लेपसँ हमर क्लंगके पव ति करैत। पूजा पार् भ करैन। अहाके हम असीरादि दइ छी जे खूब फली-फूली। मुदा अहा ऐ गामसँ नोडेक दूर अनात १४०० बीघा केर सीमानसँ बाहर बास कर । तुकचलूटेरा गज़नी हमरा बहुत परे ान केलक आ तंग तंग कऽ देने छल।”

एतेक बात कक्ह सोमनान अन्तधान भऽ गेला। फ़कीररन्द्र अकर का कऽ उठल आ मुँह-हान धोइ कऽ गामक लोकके बजा सभ बात कहलक। आब गामक समस्त लोक- बच्रा, स्त्रीगण, बुढ, युि सभ ररौर क्दस गेल। देखलक जे क्लंगसँ ा ोक्षत बक्ह रहल अक्छ..! लगले पीसल भाग, बेलपत, रन्दन, गंगाजल, गाए घी, दही, मधु, आक्दसँ माक्ला कए व ि क्लंग के पव ति कएल गेलैन तखन आब क्लंगसँ रक्तस्त्ाि बन्द्र भेल।

पूरा गाम ऐ रमत्कारसँ नारए लगल। िल, क्षपही, ा ंख, िमर , झाक्ल बाजए लगल, भजन कीतच ा ुर भेल। ‘हर-हर बम-बम’ केर उदोषसँ िताि रण पफुक्दलत भेल। लोक फ़कीररन्द्रक पक्ष अपन कह्रजता अक्षच करए लगल। फ़कीररन्द्रक आँक्खसँ खु्ा ीक नोर झहरए लगलैन। मनमे उठलैन- अनेरे ककए लोक धमक्ष नाओंपर कटै-मरैए? की महमूद गज़नी सोमनान मक्न्दरके ध्स्त केलाक बाद अमर भऽ गेल? अदलाहके आँक्खमे तँ ओ गुनहगारे ने भेल..?

फ़कीररन्द्रक सभसँ बेसी ई रहै जे हमरे कारण सौराठक सोमनान पगट भेला। आब जक्हया धक्र ई व ि क्लंग रहत तक्हया धक्र फ़कीररन्द्र अमर रहब। ई ने भेल गागी-जमुनी तहजीब।

पुन: फ़कीररन्दके सपनाक दोसर बात मन पडलैन। मन पड़ते गुनधुनमे पड़ गेला- बाबा सोमनान तँ हमरा ऐ गामक रौहदी छोड़ देमाक लेल कहने छला!आब की करी, केना करी? फ़कीररन्द असमंजसमे पड़ गेला- जे गाम हमर जीनि छी ओकरा केना छोडब? मुदा नहियो छोडब उचित नहि। तखन हमरामे आ महमूद गज़नीमे अन्तरे कुन? अगर एक मुसलमान सोमनान बाबाके ध्वस्त आ तहि करबा लेल जानल जाइत अछि तँ एक मुसलमान सौराठक सोमनानके पुनर्स्थापित करबाक लेल जानल जाएत। आ ओ मुसलमान आर कियो नहि फ़कीररन्द हएत..।

..सोरैत-विरारैत फ़कीररन्द दछिन मुरामे अपन घर जा कनिया आ बेटा सभके बैसा कऽ सभ बात कहलखिन। संगे ईहो देलखिन जे 'देख, ई कारण हमर अन्तिम अछि। हम पार किन्तु सभ दिन नमाज पढै छी। सुच्चा मुसलमान छी, तँए हम तँ ऐ गामसँ बाहर जेबे करब।'

..किछु काल ना-नुकर केलाक बाद फ़कीररन्दक घरवाली, बेटा सभ मानि गेली। तखन फ़कीररन्द गामक लोकके बजेलक आ बाजल-

"देखू, बाबा सोमनान हमरा ईहो कहलैन जे हम ऐ गामक अनात सौराठक रौहदीसँ बाहर अपन घर बनाबी। तँए हम ई गाम छोड़ि १०-१५ दिनक भीतर केतौ दोसर ठाम रहि जाएब।"

समस्त सौराठक लोक फ़कीररन्दक ऐ त्यागसँ मन्त्र-मुग्ध भऽ गेल। गामक लोक अपन कहाजता देखबैत फ़कीररन्दके जमीनक बदला दोसर गाममे दुना जमीन कीनि देलकै आ ऐठामक घरसँ पैघ आ बेविस्थित घरो बना देलकै। फ़कीररन्द सेहो गामक लोकक

उपकार के जीनि पयचका याबद रखलक आ जाबेत धरि जील ताबेत धरि सौराठ सप्ताहमे एक दिन अबस्स अबैत रहल।

फ़कीररन्दके गाम छोडला बाद कुनो मुसलमान ऐ गाममे बसबाक हेतु नहि आएल। गामक लोकके ई कनन छैन जे अखनो धरि ओइ मोजेमे मुसलमान स्पदायक बासके ाुभ नइ मानल जाइत अछि। इमहर आबि कऽ एक-दू गोटे उत्साही मुसलमान युकि सभ सडकक पच्छिम पोखरौनी टोलपर बसबाक पयास केलैन मुदा हुनका सभके एतेक पाकबलक उपरि भेलैन जे अन्ततः बाध्य भऽ सौराठ मौजासँ हटए पडलैन।

आब बात फेर सोमनान महादेकि करी। बहुत दिन धरि ओइ रपमे बाबाक पूजा होइत रहल। बहुत दिनक बाद ऐठाम एक हकर गोसाई नामक क्सि महात्मा[2] भेला। ओ अहीठाम कुटिया बना रहए लगला आ सोमनान मन्दिरक समस्त पकरसरक विकास कायचजुक्त गेला।

सोमनान महादेि केर लिंग गभचाहमे बहुत नीरा छैन। केतेको बेर गौआँ सबहक बीर विरार भेलैन जे हुनका ऊपर अनैक पयास कएल जाए। मुदा तइमे एक बा्बिना सफलकाल देखल गेल। कोरैत-कोरैत लोक जौ-जौ नीरा जाका तौ-तौ वि लिंग विाल होइत गेल। जबडक अन्तो नहि! सभ गोटे हारि कऽ अक्तम काणच ई लेलैन जे आब कोरनाइ बन्द कऽ दी। सएह भेल, लोक नतमस्तक भऽ भाि-वभोर होइत हदयसँ वकि मकहमाके स्ीकारलैन। वि के पणाम केलैन।

वि लिंगक सटल उिर दक्षामे एक जलधरी अछि। ई जलधरी वि लिंगक संगहि अंकुरत अछि। ऐ जलधरीक सोतके समुर तलसँ जुडल बताएल जाइत अछि। कहियो काल ऐ जलधरीसँ

आपर पी जल कनकैल बाबाक मक्दरमे पनि करैत व ि क्लंगके पूणच्चया जलमग्न कऽ लैत अक्छ। जल बहुत स्चिछ आ हक्यर करोर होइत अक्छ। क्कयो-क्कयो ऐ जलक तुलना गंगाजलसँ करै छैन। ऐ जलक स्तिः पस्फुटन होइक कुनो क्कश्चत क्कक्त, अक्धि अनि मौसम नक्ह अक्छ। कखनो भऽ सकैत अक्छ। कोनो-कोनो बेर सौन-भादोमे तँ कोनो-कोनो बेर बैाख-जेठमे सेहो कनकलैत अक्छ। जलक स्तिः पस्फुटन केर अक्धि दू-सँ-सात क्दनक रहैत अक्छ। ओकर बाद ई स्तिः सुखा जाइत अक्छ आ जल पनिह बन्द भऽ जाइ छै। बेसी काल व ि क्लंगमे सापके लटपटाएल सेहो देखल जाइए।

सौराठ गाममे अनेकानेक वभिूक्त भेला। जइमे महामहोपाध्याय पक्णित राजनान क्मश उफ़चरजे क्मश छह वषियक अदुत जाता। हुनक क्लखल कएकटा पोनी अखनो उपलब्ध अक्छ। ऐ गाममे हुनक क्लखल ताक्लक पक्तसँ क्कक्चत दुगा पोनीसँ अखनो धक्र दुगा पूजा होइत अक्छ। महामहोपाध्याय िॉ. गंगानान झा क्हनक व ष्य छलाह। रजे क्मश काी िस केलाह आ ओतक्ह भगबान भोलानान के नगरी मे गंगा कात मे अपन अक्ह नशर काया के त्याग केलक्न। ऐ भूक्मपर एक वभिूक्त भेला शी गंगाधर क्मश क्जनकर योगदानक फलस्रिप रन्रधारी क्मक्नला महाव्िालय केर स्नापना भेल। ऐठाम महान कान्क्तकारी शी भागीरन झा भेला,क्जनकासँ क्बक्टा हुकूमत ताक्ह-कष्म करै छल आ 'ाूट एट साईट'क आदो सेहो देने छल। जे क्हनका जीबैत अनि मुइल पकडैबला अनि जानकारी दइबलाके लेल इनाम देल जाएत...।

..दोक आज़ादीक पछाइत भागीरन झा क्जिकोपाजच हेतु महाराष्ि गेला आ बादमे सौराठ गामक नामक पताका फहरेला आ महाराष्ि वधिान-सभाक सदस्य रुनल गेला। सौराठमे एक वभिूक्त

छला बाबु अबध विहारी झा। ई अंगेजक समयमे विप्टी भेल छला बादमे विधान पाषद्य सेहो भेला। ऐ गामक ाॅ. सुरेन्रनान ठाकुर नामक पख्यात वरक्तसक भेला। ई जीनि पयत्ना गाम आ परोपटाक लोकक मुफ्त सेि आ वरक्तसा केलैन। ऐ गामक अन्य विभूक्तमे पक्ति फेकू क्तश, पक्ति हरी रन्र झा, पक्ति कष्णदेि झा, तावतक नारायण क्तश तना ाॅ. कक्लका दि झा आक्द पमुख छैन।

सौराठसँ जखन हम आबए लगलौ तखन एक व्यक्क्त हमरा भेट करए एला। ओ गामक वि्ालयमे वक्क छला। सौराठ गामक इक्तहास आ एकर गौरिके ओ अपन एक कविताम बहुत सुन्दर िणचा केने छैन। ओ कविता हम सुधी पाठक लेल दऽ रहल छी-

तपोभूक्म जगजननी क्तक्तला हदयस्नली जकर सौराठ/
शी ाारद नि क्तक्व केर नैहर संग-संग जते क्सधहु आठ//
पूिचपवि धार जीबछ केर उिर लोहा गाम/
पक्शम पोखरौनी दक्कण धनुक्खक मध्य ई धाम//
पुन्यस्नल सौराठ सभा क्तक्तला संस्कक्ृत पक्तक/
दा चीय सुन्दर वि मक्न्दर माधिसिरिक क्तक//
तुकचलूटेरा महमूद गज़नी जखन उपरि कएल /
गुजरातक सौराष तेव्ज वि पन सौराठक धैल//
ईसिी एक हज़ार परीक्सक अक्छ ई गप्प कर विशास/
सोमनान वि कमला केर छारक्त पर आक्न बनोलक्त बास//
जंगल झार मा ान मध्य वि बसला गामक भेल उिार/
पुरना मक्न्दर बोधकष्णा स् पक्त कयलक्त अक्छ जीणोिार//
दतकट कना सुनब तँ लागत मुदा जुरायेबदेखने नयन/

काव्यक जेठक विषम ् िलामे व ि लै छथि अपनहि जला ैन//
साधक कसि समाज सुधारक न्यायी न्यायविजि भरमार/
कुा ल पा ासक अभिनेता िॅक्टर पबुिजन अपर् पार//
बानी केर बरदानी बेटा मिथिला केर संस्रित अध्याय/
राजनान मिथिला केर गौरि विशुत महामहोपाध्याय//
न्यायविजि पिण्ित गंगाधर साधक व क पेमीपज/
सूतधार सी. एम. कॉलेजक मिथिलािसी जनक कह्रुज//
हरशन्र ् योतिाष केर जाता कृष्णदेि व्याकरणाराायण/
नाम कतेको गनब अन्त नहि छथि नीिन नामी पाराायण//
पदकान्त भ्ायपात समाजक जनका जन-जन केर आा ीष/
सब तरहे मिथिला के गौरि सबतरि अपन बढोलनि ाीस//
विशविख्यात कवि वि् ापति केर बंसज आबि बनोलनि बास/
के नहि जनैछ व ि उगना भए भेलथि वि् ापति केर दास//
वि् ापति पुस्तक केर आलय केन्र िरकत्सा व क ाोध/
संगहालय पतालय करैछ विकसित गामक बोध//
सोभा सभ्य सुव कत्त जन-जन मुँह पर रौअयाया मुस्कान/
बाल कि युिजन मधुभाषी बुझ्र परत नहि छथि ई आन//
पग-पग पोखरि भत्य व िलिय र्य बाग़ देख होइछ हर्ष/
कक सौराठ गाम सब तरहे मिथिला मैथिल केर उत्कर्ष//

आभार- हम ऐ लेखक लेल शी व ि कुमार मिश, शी समरेन्र नान ठाकुर एिं सौराठ गामक महिला आ पुरषके धन्यिाद दइ

छऐन, कएक तँ हुनके सबहक देल जानकारीसँ ऐ आलेखक ररना कएल गेल अछ। हम अपन कहजता सगीय पोफेसर बै् नान सरसती के पक्त अवाच करैत छी कारण ओ इंदरा गाधी राकयि कलाकेन्र मे unesco रेयर केर पोफेसर छलाह आ हम unesco स्कॉलर । unesco UNDP और इंदरा गाधी राकयि कलाकेन्र के सवमक्लत पयास स भारत केर १०० गामक संस्कलक आ संररना केर अध्ययन करक रहैक. िॅ. कपला ितस्यायन आ पोफेसर सरसती हमरा कहलक जे अहा एकटा एहेन गामक अध्ययन कर जकरा सब स्कॉलर आधार माक काज करक आ १०० गामक काज संपन हो. हम तुरते सौराठ केर नाम लेलौ आ दुनु गोटे सीकार क लेलक.

ऽ

[1] गुजरातक सौराष

[2] बबाजी

United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
OFFICE OF THE UNESCO REPRESENTATIVE TO BHUTAN, INDIA, MALDIVES AND SRI LANKA
ASIA – PACIFIC REGIONAL BUREAU FOR COMMUNICATION AND INFORMATION

TEL. : 91-11-26713000
FAX : 91-11-26713001, 91-11-26713002
E-MAIL : newdelhi@unesco.org
INTERNET : http://unescodelhi.nic.in

UNESCO HOUSE
B – 5/29, Safdarjung Enclave
New Delhi - 110029
India

2 July 2003

TO WHOM IT MAY CONCERN

Dr. Kailash Kumar Mishra has been known to me as a sincere, bright, hardworking and original scholar since 1998. He had prepared an extensive village report of Saurath - a heritage village of Mithila, Bihar under the UNDP-UNESCO-IGNCA Project on **VILLAGE INDIA in 1999**. This report of Dr. Mishra was used by several scholars working in this project as a model study to arrange the data in the universal pattern.

Later, when UNESCO and Indira Gandhi National Centre for the Arts decided to quantify all of 87 village reports of the project in a systematic and statistical style, Dr. Mishra was assigned to develop a universal format of presentation. His format of presentation could be deemed very good. Clear, concise and easy to understand even to a layman, it gives not only the demographic pattern and ethnology, but also explains away the myths related to the village to understand the psyche.

I wish him success in his future endeavours and recommend his candidature for any research/academic post for which Dr. Mishra may be applying.

R.P.Perera
Chief Administration
Programme Officer/Culture

कुमार गगन ई-पत- डॉ कैलाि कुमार क्मशक आलेख सौराठक सोमनाथ आ सौराष्टक सोमनाथ मे समानता

विदेह २०८ अंक मे ि◌ॉ कैलाा कुमार क्मशक आलेख सौराठक सोमनान आ सौराषि्क सोमनान मे समानता पढल । नीक लागल । मुदा सौराठक विभूक्तक नाम सब पढला पर लागल जे सूक्र मे एकटा महतिपूणच्नाम छुक्ट गेल छक्त जेना महात्मा पुरषोिम ठाकुरक नाम नक्ह देखल । महात्माजी एक पैर पर ठाढ भ भोर स साझ धक्र सहस्त्र गायतीक जाप करैत साधना करैत छलाह । जीिनभक्र एक संध्या फलाहार पर रहैत आध्याक्त्मक मागचमे लीन छलाह । हुनक आशम मे गायती मंक्दर स्नािाक्पत अक्छ । सोमनान बाबाक मंक्दर सँ ई स्नान लगभग 200 मीटरक दुरी पर ओही टोल मे अिक्स्नत अक्छ । सभागाछी सँ सटले । नक्ह जाक्न एहेन महतिपूणच नाम कोना छुक्ट गेल । कैलाा बाबू अपन क्रसर चमे इहो जोक्ड लेक्र से आगह । विाे̀ष जानकारी पंवित देिोिम ठाकुर गायती स्नान ,सौराठ सँ भेक्ट सकैत छक्त ।
भिदीय- कुमार गगन

पद खण्ड

रवि भूषण पाठक

बाल कविता- 'क'

'क' सँ कवि मे इएह बेमारी

''हमर कविता सबसँ भारी''

कहि कहि राहवि लिखथि खेसारी

'ग' हथियार करोर गेनहारी

'घ' सँ घमनचर रहै दिन-राति

'ङ' सँ कोनो नइ किछुओ ने बात

<u>बाल कविता - मानसून</u>

पक्हल बुटम सुरज भगानि
बाबू हौ दादा हौ क्नकलै पाण
तखने सहकै हि मरान
दोसर बुटम दक्कण अंिमान
रोकक क्हमालय ई बलानि
कहै नहाबू खेत बनान
तेसर बुटम पछुआ विक्ोभ
देखै की छे मालदह रोभ
राक्षम बुटम दक्छनहा नान
हम ने देखक्लयै हे भगानि
एलनीनो सन बुटम नइ गान
भीज -भीजा जुडा बहलमान

<u>बाल कविता- सुन िआ सुन</u>

ऊ एनुन

बस आबै लेल

दुनिया के देखाबै लेल

सुन िआ सुन

ऊ एनुन

पात बिछाबै लेल

खाए ने लेल खुआबै लेल

कर िआ कर

ऊ एनुन

की खर उठाबै लेल?

बातक लकडी लगाबै लेल

मान िआ मान

बाल कविता- ब्लेक होल

राकर छै की गोल छै
नाम एकर ब्लेक होल छै

बडका दाि गह नक्त कें
खोलै सबहक पोल छै
नाम एकर ब्लेकहोल छै

कव्हयो रहै ई रंगगर तारा
आब ई उजरल टोल छै
नाम एकर ब्लेक होल छै

बड घनत बड बोि आकषर्ण
की बूझयै हौ झोल छै
नाम एकर ब्लेकहोल छै

शी लक्ष्मी चौधरी ,कवियनक सम्मान मे

ऊ जे क' देलखिन

उठानी मे

की तू क' सकबीही जानिनी मे?

कोन जोकरक तोहर चरचा ऐ ठाम

बहुत दम छै हुनकर कहानी मे

की भाि की अभाि की परभाि कहियौ

बूझि पेबही ऐ जिनगानी मे?

<u>हजार-लाख मे</u>

एकोटा ने ईमानदार रहै

सौ मे सौटा विधायकजीक कोटेदार रहै

भीजल चीन्नी रहै गहुम बोरापार रहै

जेहल मे जीभ पेट थाना मे वारफ्तार रहै

दै मुटी सँ लै लोपेलोप एहने ई कारोबार रहै

ऐ कलाटि कमतौली क सब हिस्सेदार रहै

चलतै छल एक धुर अप्पन जमीन

किसमकिया सू कास्फी तक भाषाक कालाबजार रहै

<u>डहकन</u>

जत्ते खोडबौ ओत्ते गडतौ

गरमी मे आवा जाड मे बफसिन लागतौ

नोचतौ नछोरतौ भमोरतौ ने फालतू

जत्त' जत्त' छूतौ ओत' ओत' दागतौ

भगेतौ खेहाडतौ ने जाले बाछेतौ

बान कत्ते दूरे सू गत्तर-गत्तर काटतौ

खटा चूक्क

दोसरक खुशी देखते हुनकर मोन भ' जाइ छैन खटा चूक्क

दोसर के मुसकियाइत हुनकर दिल मे उठै छैन हुक

दोसर के हरियाइत देख हुनकर पाका किएक सुखैत छैक

किएक ओ सुखा के कसौझी भेल जाइत छथिन

पूरा टोल गीत गाबैत रहै आ हुनकर दात कोथ रहै

पुरा गाम खुशी सू हरियर रहै केलि हुनकर मोन पतैली जूका कारी भेल रहै

हयौ नीच्चे वारबाक होए त' भरल-पुरल वार

झूल भ' वारबै त' किओ छुअत नइ छुअत.....

<u>मीत्ता</u>

एना दोस्ती के जुक्त गीज मीत्ता

कखनो दुि्मनो पर पसीज मीत्ता

ढोलहा देने कसम ककरया केहन

दम धेनाइयौ कुनो छै चीज मीता

एना जे करबै ददकि विजापन

कम कहनैये छै तमीज मीत्ता

<u>हरियर</u>

हरियर खूब हरियर रहै

आ लाल खूब टक्क लाल

मुदा हरियर जे कनेक करियाइत रहै

आ लाल जे खूनमाखून होइत रहै

सेहो देखि लेलियै ऐ बेर गाम मे

तहिना ऊज्जर मे खूब टीनोपाल रहै

आ सेठबा सब खूब मालामाल रहै

मुदा उजरका आब बेदाग नइ बचलै

सेहो लखि लेलियै ऐ बेर गाम मे

पीयर ने हरदैल रहै ने बसंती

पाकल जे सड़ि गेल रहै

से चखि लेलियै ऐ बेर गाम मे.....

<u>बहुत किछु विदा भ' गेल रहै</u>

आ किछु विदा हेबाक लेल तैयार रहै गेट पर

सबसू पहिने मुंहक मैथिली

आ ईसरगत,डरकडोर ,बधी,माला

लागैत रहै नइ रहतै देह पर कुनो सूत

खरखर सुभाि क' स्थान पर

बरसैत रहै चानिी िला मौध

आ जे मोन मे रहै

से ठोर पर नइ रहै

तमाम आदिनिुका रहलै

भगत्ती घरक कुनो ताखा मे

सपना सब भकुआयल -भूकाआयल

अतृप्त ईच्छाक धार बहैत रहै पूरा देह

<u>ि्यथिपलापी</u>

ि्यथिपलापी

घनघोर षडयंतकारी

जे क्लखै छव्थन बडड नीक

ओ कत’ गेलव्खन ?

सुर आ असुर दूनू के देलासा दए िला

कविता ,कहानी ,आलोचना

ब्लॉग ,पत्रका ,क्रताबाक्द सू सम्पुष्ट

ओ युि मनीक्ष कत’ चक्ल गेलव्खन

हुनकर अि्भ ािणी अमंगलकारी छाया

नइ देखाइछ त’ मोन क्रदनदन कर’ लागैत अक्छ

ऊ छव्थन चाक्ल चलै लेल

आ हमहूं छी हुनकर चाक्ल क्षगाडबाक लेल

हे ऊप्पर सू हक्रयर आ अंदर सू सोक्स-घक्डयार

अहाक फू-फा नइ सुनै छी त’ कान नोच्च’ लागैत अक्छ

अहाक दुष्ट सोच अक्छ

तखने हमहूं छी

अपने कत्त’छी क्धयान लगेने ?

झाबाद

झाबाद रहै ,किशाबाद रहै

यादबाद रहै ,मंडलाबाद रहै

आ सिंह सू पसािन के सुसमाद रहै

तखने मिथिला जिंदाबाद रहै

तीनटा कविता

१

अस्सी के लगभगेने
ऊ गाम मे छलाह
कानक अवाक-उपाक्स्न
आ सुनइ लागल तंत्रक तंत सब बकसया गेलै
आबैत-जाइत धक्का सिगनल तोरैत
अहा कैह सकै छियै कि जंग लागल गेलै बूरहा के कान मे
आ ईहो कि बैटरीक समाप्त भ' गेलै
खिझाइत कानक दम के सकारैत
अहा कहि सकै छियै दू आ दू पार
आ ओ किछु नइ कहता
अहा कहहबै कवियनक पूब मे बागमत्ती
आ ओ बूझता जे अहा सत्ते बाजैत होयब
साहस एतबो कि जनक राजा भेला काशी के
आ ओ मुसकियेता ऐ आत्मविश्वासक सान कि अहा झूठ किएक बाजब
मुदा बारब तखने तक
जखन तक कि बूरहा नाहता नइ
आ नाहैत-नाहैत
मुख-भंवामा के परहैत-परहैत
बूरहा यदि बूझि गेला अहाक खेल
त'ओ रक्त के अहाक गवाक्षात दुरस्त करता
साफ करता अहाक खाप्सूरक मानक रात
आ खोखखयाइत कंठ सँ कफ निकालैत

कमबि करता इक्तिहासक किछु पन्ना

२
समै भावा रहलै सत्तो
आ सत्तो कि भावा रहलै कालक रक
रकक अजि सब अपना-अपना दम सँ बूझैत गेलै
अपना-अपना बूत्ता सँ सब रकक कोखि मे दैत गेलै मोबिल-तेल
मुदा तेल रकक घर्षणात्मक शक्ति के कम नइ क' सकलै
रक रार कात बरहैत गेलै
रार कातक जमीन जेजाक्ति पर परैत गेलै क्षा ान
अइ क्षा ान के राम राम जेका आ
रहीम रहीम जेका परहलकै
३
एखन त' इहो नइ क्षणिच भेलै कि बूरहाक कान देखायल जाए
एखन त' इहो क्षणिच नइ भेलै कि िकिरिक देखेला सँ किछू फैदा भ' सकै छैक
एखन त' इहो नइ क्षणिच नइ भेलै कि बूरहा के कान सँ की फैदा
आ ओइ कान सँ घर-पक्षिर के की फैदा
आ कही बूरहा बोी सुन' लागलखिन त'
आ कही बूरहाक कानक पारि बोी तेज भ' गेलै त'
आ एमहर सबहक कक्षया के जोर सँ बजबाक आदत भ' गेल छलै
एमहर सबहक कक्षया बात-बात पर मारै ठहक्का
एमहर नइ रहलै कुनो बेकर कुनो आवि
त' अइ माीन सँ ओझरेतइ कि नइ आंगनक समीकरण
से बूरहाक कानक माीन के आनतै

बेटा-बेटी या कि पोता-नातिन
आ एहने सन बहुत रास प्रश्न रहै
जेकर उत्तर सबके पासे मे रहै

फसली प्   १-७

१.मकइ जिंदाबाद

मकइक गाछक सभसँ ऊपर नाम-नाम फूल

जेना सिपाहीक कनटोप

आ देहपर पसरल हान भकरक पात

जेना सिपाहीक ि‍रपर राखल अस्त्र

आ बीत्त-ि‍ढ-बीतक बाइल

जेना गस्सल-गस्सल कारतूस

खेतमे सजल लाइनमे गाछ

जेना युि‍सँ पक्हलेक सिपाही

आ हे मकाले

ई सिपाही मकालाक दाक्ररय दुख क लेक्लऐ के मानत

आ याक्द कर पूसा

याक्द राखू मसीना

ई काक मकालाक नया खजाना

जतए जनक्म रहल क्मक्लाक नपिूत-सपूत

जतए बागु भऽ रहल

पलटनक पलटन

सेना

जे एकदम कव्टबि

दुक्मक सबहक वरि ि

आब देक्खऐ ने केते जान कोसीमे

रौदी, दाही झौसीमे

जय क्मक्ला, जय मसीना, जय मकइ

आ मेक्हका राउरके मुदाबाद नै कक्हतौ

क्जंदाबाद केना कक्हऐ

जखक्न क्क ई हरदम जीएने रहलै

बस एक आना क्मक्लाके।

२. खेसारी नक्हतन

खेसारीक खेती बस सरकारे रोकलकए

गाम-समाजमे अखनो बागु-रोपनी

खेत-पनारमे अखनो कमौनी

आ अखनो छी्मीमे अक्हना दाना भरौनी

तक्हना कटनी आ तक्हना दौनी

ई क्वखि ओक्हना नारीमे

ओक्हना हमर देह आ खूनमे

हमर भाषामे

'बूक्र खेसारी नक्हतन'

आ जे असलमे खेसारी रहै

सएह दोसरके खेसारी कहए

आ असली खेसारी

राहक्डक क्छलका पक्हक्र

बनल रहए तीमनराज

आ करैत संकमण

पसारैत रोगक पोटीन।

३. भगानि मर आ आ क्वकला

आ भगानिोके पता रहक्

जे ऐ दो के मर ए बरा सकत

एहेन फक्सल जे रौदी आ बरखाके कक्छु नै गुदानै

एहेन जे भेक्लऐ बरखा तैयो नीक

आ नै भेक्लऐ तैयो तक्हना

एहेन सक्कत क्क वाक्रयो कऽ तक्हना

एहेन क्र कक्कन क्क जाके पकक्डमे नै आबै

ने लाल ने कारी

आ मर ओ विदा भऽ गेलै क्मक्लासँ

जेना क्क बहुतो रीज क्पत्ता भऽ गेलै

जेकर नाम रेि ािटा बुकोमे नै।

४. अाुआ कऽ सफ्पत

अाुओ खेने रहै सफ्पत

जा तक बरहब नै

बाहर नै क्नकलब

जमीनक बाहर पसारने लाल-हक्रअर लत्ती

लोकके भरमाबैत रहै

आ क्लाचरामे जमा करैत

खूब रास काबोहाइडेट

एि क्लाठास क्क

कुक्सयारोके ईष्या होए

कखनो-कखनो कीडा-मकोडा सेहो

सक्ट कऽ राटनाइ ाुर करए

आ धरतीपर आक्लाते

रपआमे पसेरी

भूकखल, अधभूकखल, जोगाडी

िरी साधु, सन्यासी

कार, उसनल, पकाएल

दूध, दही, तीमन संग

अिआ क्तारव्नत करए लगै

क्लाना पुछने गाम टोल जाक्त

आ फदला गामािली फेर घूक्ल रहल छक्तान

नेने दौरी-रंगेरा

नेने उधारक आस

र पआमे पसेरी अिुआ क्षरा नै करतै।
५. मक्हका धान

मक्हका धान घेक्र लए भक्र क्षागहा

आ दाना दए मोन भक्र

तँ एकर सुगंध लऽ कऽ की की करी

केि बान्ही आ केि जोगा कऽ राखी

आ ई उपजए हमरा खेतमे

रक्ल जाए बाबू भैयाक कोठीमे

तँ एहेन बुलनहारके केना मनाबी

आ हक्रदम पैरक फेरा अलग

िकाक माए िकाक भौजी

आबक्ा न लऽ लऽ कऽ अप्पन वालास

आ कहक्ा न जे हमरो उपजत तँ घुमा देब

आ केना कऽ क्षासबास क्दयाबी के हमरा घरमे एको कनमा मक्हका राउर नै
ई मक्हका धान देलक बदनामी

सुआदोसँ आ समाजोसँ।

६. कविता आ धान

हम बेर-बेर ठाहलिऐ
जे ई मकहका धान हमर कवितामे आबि कऽ गमकए

मुदा हम रोपलिऐ तुलसीफूल
आ दाना बनै खोरा केर

हम ठाहलिऐ जे तुलसीएफूल जका

बस एके-दू कविता लिखी हम

मुदा लिखए लागलिऐ
तँ कु भी अपन जाल फैलाबए लागै

हम सोचिऐ जे एक-दू पाताके लिली जोडी

मुदा कागत-कलम लिऐ तँ घिरा जका किच्छो स्हारेमे नै रहए

हम अखनो आशस्ति छी

जे एकदिन हमरो खेतमे तुलसीफूल उपजत।

७. कनिया आ कविता

जँए कि मकइ आ खेसारीपर लिखल देखलखिन

हुनका पका विसासि भऽ गेलनि जे हम धान आ मरओपर जरूरे लिखब

तँए रेतानिनी दैत कहलक्खिन जे पगलाउ जुक्
जे ई आलतू-फालतू अगर-मगर सभ क्लखै छी
जखक्क देखी कागत-कलम नेने मुसक्कया रहल छी
ई पगलपनी केिं क्दन
भोजन बनबी हम
कपडा-लिा साफ करी हम
आ अहा बस बैसल बौराइत रहब
हे देखू हम क्बगक्ड कऽ नै कहै छी
एक-ने-एक क्दन अहाक क्दमाग बष्ट कए कऽ रहत
जेना क्क हम कविते नै सुनक्लऐ
आ ओ सुनबए लगलक्खिन क्दनकरजी आ आरसी बाबूक कविता
जेना क्क हम क्कछु बुक्झते नै छी
हे यौ हम बैसबै तँ आहूँसँ नीक क्लखब
आ ई नै बूक्झयौ जे नीक लोक सभ अहाक पांसा करैत अक्छ
आ यक्द आही सन पागल हेतै ऐ धरतीपर
तँ आर की कए सकै छै।

<u>एकहि बेर छवहि मे</u>

एकहि बेर छवहि मे
पहिले छवहि मे सूयर्दिव उगैत छलाह
या त' खुटेरी बाबू क' गाछी क' पाछू
या कसहरा पोखरि क' पाछू
कोनो-कोनो बेर रवि बाबू क' गाछी क' बीच सू
आ कोनो बेर मझिला कका क' बूसबीटी क' पाछू
एहन बात त' कहियो नहि भेलए
कि ओ टेलीफोन टावर क' पाछू सू उगथि
या डाक्टर साहेब क' दूमहला क' पाछू
एकहि बेर स्कूल क' मोटका हेडमास्टर आशस्त छथि
मध्याहन भोजन क' पहिल क'र भगवान खाइथ छथि
हमरे घर क' पाछू किएक ने उगताह ?
मुखिन के जोतखी जी कहने छथिन्ह
भगवान अहॉ के छोड़ि के कत' जेताह ?
भुटकुन बाबू आ मुंशी जी डराएल छथि
कि भगवान रस्ता बिसरि जेताह ?
बच्चा बाबू एकटक लगेने छथि
सबसू पहिले ओ भगवान के देखि के
खूब जोर सू चिकरताह
देखयौ देखयौ भगवान त' एकहि बेर मन्दिर क' पाछू सू निकललाह
।
जुआएल कुहेसा आ भपाइत पोखरि मे सब भक- चक छथि
तखने बटोरन बाजल

भगिनि त' एक्के बेर दुसधटोली क' पाछू सू उवा रहल छथि
मुक्खिन मुक्खिया,डाक्टर आ मास्टर साहेब दुसधटोली दिस देखि रहल छथि
सूर्यदेव उगए लागल छथि
दुसधटोली क' पाछू आकाश टकाटक लाल छलए...........

हमर मैथिली

ने बातमे,ने जजात मे
पोखरि सू धार
फेर धार सू नदी जूका हमर मैथिली
र कल,ठमकल,सुखाएल,कदुआएल मैथिली नइ
हमर मैथिली बहि रहल अछि
'बालचंद विद्यापति ' क गाबि सू
'मैला आूचल' तक
आ दिनकर क उर्वशी सू
जनकपुर धाम तक
ओकरा कोधोख
ओकरा पर्वति
मात नदी क नाम बदलैत छैक
बागमती कखनो कोशी
कखनो गंगा कखनो अधवारा भ'
ओकरा बहि रहल अछि
उपर सू नीचा
अबहिगर सू पातर दिशि
हमर मैथिली मे किताबक फूल कम
आ यजाश क खनखनाहट त एकदम नदारदे बूझू
संध्या -धूपदीप क गंध नहि
मजूरक पसीना भेटत
आ ओहि पसीना मे
पंजाबी,बंगाली,संथाली

कखनहु पडोसी भोजपुरी ,मगही,नेपालीक िबद्द
ओक्हना क्मलत
जक्हना गहुम क कूडी मे
कखनो कखनो तोरी आ तीसी
हयओ सरकार !
हमरा मैक्थली मे की संस्कार खोजब?
हम छी दक्छनबक्रया मोटपसम राड
हमर कटाह बोली क लेल पुरान
उपमा भ गेलए कंसार क लाि
अहा खोजू हमर दुि ,धृि ,क्मकृि मैक्थलीर प क लेल
संजा ,विि षण आ विस्मयाक्धबोधक िबद्द आ क्मह !!
आ हम क्लखइ छी
फेर एकटा कविता
ओएह कटहा मैक्थली मे
आ अहा बनबू
कोमल कान्त पदाि ली क दुगि
हम क्मछन्द्द,भदेस,भक्छयार मैक्थली क संग
बक्ढ रहल आगू
हमर संग अक्छ
कोक्ट कोक्ट जनक दुखददि उक्साह आ आि
आहू बढू जाक्त आ क्िि क संग संग
हमरा संग भुिन भास्कर छक्थ
आ उदयनाचायि
ओएह जे नाक्स्तके नइ
भगिनो सू लडलक्थ

एक टुकडा

हे !!कुलगोतक सोइत तमाशा
हमरा संग मे अछिए की?
डीह क उसरसर खपटैल खेत
आ बागमती करेहक रक्तिम नेत
आँखि खुजते डूबि जाइछ
खेत-पथार,मंदिर,पोखरि सभहत
कजला जाहिर आ परोपटा
साप कीडा क दया
मोटका खोरा चाउर
आ बी बी सी रेडियो पर जीति
अपन गामघर आ देशिता के
हम उघार नइ करब ।
जहिना बात मे
तहिना जजात मे
कोनो लैस नइ
ताहि दुआरे
लीची सडि जाइछ
पाच कोस पहिने
आ मखान क गंध
तीन कोस बादे भेलत
अछि केलि
मकइ क ठोस विशिचार
आ तमाकू क पूरजोर
लटमपट

कटा दसमोन अिआक
मीठ आ गुबगुब भागम्र
कत'पाएब कविरि?
क्वधा नइ चौपाव्ड पर छी फूसल
सुमन,आरसी कोस भव्र पर
आ याती दस कोस उतर
विदापक्त सेहो पन्रह कोस पर
क्नकर बीस कोस दक्कण
आ पचास कोस पुरब छव्थ रेणु
कखनो कखनो बागमती क धार संग
क्तारमुहानी मे गंगा सेहो देखैत छी
ते क्राला पसाद सेहो
अबूझ नइ
ओना गंगा दस कोस पव्हले
विसूक्ख
भरमाबइ छव्थ क्हंदी आ मैव्थली के बीच
छोडू ई बात
यक्द कविता मे हो
पश पूछबाक गुंजाइि
तखन कहू
जे क्नकर आ रेणु के
मैव्थली मे नइ क्लखबा क दोषी के?
ओ सियं ि अहा
हे मैव्थलीपाक्रजात के
सुमन,क्कण,अमर ।

आ तमाम कविगण
जकरा कविता मे
बान्हल रूप आ छन्द मे
थका लिखबा क बीमारी छन्हि
नबका बात,हिपाक्स के
जे एंटीबायटिक खा के रोकैत छथि
आ राजकमल ,याती के
पाकि पीबा के गरियाबइ छथि ।
अपन असभ्यता के साथ
हम पुनःपुनःउपस्थित छी
उदयनाचायकि गौाि
आ राजकमल चौधरी क कियाद ।
गाि क एक पलटन लोक तैयार छथि
दिल्ली,पंजाब,कलकता क लेल
रेलक अनारक्ति डिब्बा क
भीड,गंध,पसीना,टीटी,कुली सू बचैत
रेलक छत,इंजन,ाौचालय,
डिब्बा क जाइिट पर बैसल
तमाकुए नइ बोली,टोनक मदिा करैत
ई जनसमुर बढ़ि रहल अछि
लालकिला दिस ।
मैथिलीपुत घूमि रहल छथि भारत
आकि रहल छथि
किछु नबका ाब्द,गंध,कथित ,बात
उजरल धरती

हुलकैस रहल अछि
कविता आ सपना सँ आगू
किछु ठोस आशासनक साथ ।

होली

आएल छतीसा
कण बीतल
खन बारहमासा
अहिना तहिना
गएल पचीसा
फूजल भक नहि
खुलल गाल नहि
नोचउू के
देखबउू बतीसा
किछु कविता
अधलिखल कहानी
किनु किछ कएने
बीतल जािनी
बीतल पैतीस
आएल छतीसा
धलि के
भभकए चालीसा
गंथ छपल नहि
पुरः कार नहि
किन गुट गुर के
लगत पार नहि
हे अकादमी
यूनिवर्सिटी

जानपीठ के
ध्यान धरै छी
नमहर गुर
नमहर सम्माना
क्लिखब लघु गुर
ऐ विध्नि नाना ।

ई नामरिबा
(हिंदी आलोचकक व्यथा)

ई नामरिबा बहुत सताबइ
कखनो टीवी कबहू रेडियो
ब्लॉग , न्यूज पर आबइ ।
तुरते मम्मट तुरत लोजाइनस
मुक्तिबोध बताबइ
की कविता नाटक कृतात पर
अजबे गजब सुनाबइ
नागार्जुन अपभ्रंश हजारी
सबहक सय दिखाबइ ।
लिख मारलक दू चारि किताब बस
बाजि बाजि घोलटाबइ ।
आब रमत नहि
लिखत पढत मे
बात से बात निकालइ ।
बाज बाज बौआ दिन तोहर
निगायो सुघड मंगलबो गाबइ
ई नामरिबा बहुत सताबइ ।
की खाइ छे
कोन पानि पीबए छे
घाट घाट के
बानि बजए छे
हमरो दे किछ

जंतर मंतर

बाजी कम

गुण अधिक सुनाबइ

ई नामरिबा बहुत सताबइ !

ई नामरिबा बहुत सताबइ !

मरणोपरात-१-४

मरणोपरात-१

1. कामना
हुनकर मृत्युक कामना के करैत अछि
जखन कि कतेको िधि जाॅन
विदा भऽ गेलाह।
कोला गेलइ
कतेको सरकार
बन्हा गेलइ कतेको बाध
आ कटा गेलइ बाढ़ि भूकम्पक
छोट नमहर कानि ।
जीनितिक तरफ अगसर
ऐ धतालबूढ़ सू के डराइत अछि
कोन पंडित आ के कवि
चऽर चाचड के सठ लण्ठ
कत' के ज्योतिष
आ कन्हया के कहबैका
परोपटा के पुरकाया
आंगन टोल क अजवजि
कायाद फरीक
जवजमान पुरहित
सेाि सू पूतोहू
आ मयादा सू बेटा

अपन अपन नौकरी आ बालबच्चा
क पोसैत पोता नाती
के धखाइत अछि
बाभन कि सोलकन
डीही कि भवानमान
विजरात कि नाि ी
गाछी कि मचान
ककरा की चाही ?
2. समाचार
दलान पर खोखैत
रस्ता दिस देखैत
छोटका बाबू
कतेको गणना के असफल करैत
अडल रहथिन्ह
दोसर के दिन गुणैत
जोगीभाई विजय बाबू
हारि गेलाह
अंदाज लगबैत
डाक्टर लोकनि
थाकि गेलाह
आला लगबैत
गौआ घर आ
बिसरि गेलाह
कि केओ ि्धि मरणासन छैक
बेटा पोता क

सेहो विजातीय के संगे
जमल रहलखिन्ह
छोटका बाबू ।
विजीविषा के आगा
हारि गेलाह
यमराज
हृदयाघात के दू-दू पयासक
बाद पस्त भेलाह ।
मुदा छोटका बाबू
हारि गेलाह
उपेक्षा के कल्पना सँ
सकि नइ सकलाह
अपन रोपल फूलबाड़ी
मे तृषिा काट कूड़ि
अमरबेलक लती
सोहराय जहरफूस ।

3.ई बेकिंगन्यूज नइ अछि
नब्बेपार बूढ के मरला मे कोन आश्चर्य
कथी के दुख आ केहन असौकर्य
मृत्यु के एकाधिक बेर अफवाहि सँ
अइ समाचार के सेसेनि खतम रहए
बेटा भतीजा पोता नाती तैयार
पकिनकि सँ छुटी के जोगाड
काननए पीटनए

आ लोर क बदि

पक्हनक्ह छल भक्मत ।

मृतकक औदाय्य

ओकर मागक्लकता

पर नइ भेलइ यथेि चचा

पता नइ

ई कोन क्कक्समक कंजूसी भेलइ ।

4.समाचार क्मलला पर

ई जते अंक्तम संस्क्कार रहए

ततबे अंक्तम र क्ढ

छोटका बाबू िरक गाछ जका

िताक्धक जक्ड के समेटने छलक्खन्ह

तीन भाइ,पाच बेटा

चौदह जिन नाती पोताक पक्रिार

आ भाक्तज क अलगे खूट

क्पक्तयौत क तीनटा बेटा

सेहो ततबे नजदीक

जमाए भावान

बक्हनोइक बात नइ पूछू

एकटा महान मध्यविन्हु

पक्रिरक गुर यिकेरक

समाक्प्त पर

जे जक्हना छल

तक्हना भागल

क्समकरया घाट ।

5.सिमरिया घाट पर
कवि दिनकर कऽ घर सू
कोस भरि पूरब
चैत ि ध भ जेठ भेलइ
दुखी सूर्य झुकि गेलखिन्ह
गंगा मे खसब की ?
दुपहरिया बालू
आवा उगलति छल
साबुत माटि कतहु नहि
जरल लकडी र इया कपडा
हडडी क टुकडा बाउल
पनी घी क डिब्बा आ फूल
चकमकिया कपडा
जिंदगी क सब ऊंच-नीच
के धकियाबैत ।
6.जडबए सू पहिले
अनुपात बिसरि गेलखिन्ह
घरारी
कते मून लकडी
कते घी
आ कते चंदन
चिंता क कोनो बात नइ
अस्सी पार जोगी भाइ
जे कून हफ्ता
नइ आनैत छथिन्ह

एकटा लहाि
सतर के लगभगबैत रामा्रिय बाबू
आ तक्हना मजगूत
जगदीि आ संतोष
क्वाना चालीसे के
िभूपंडी जी कें आदत भ गेलइ
जरैया क्वरैया गंध लेबाऽक
गाकि िताक्धक क्यक्त
भऽ गेलक्खन्ह
मूाकसाकी
अंक्ताम दिनि पारम्भ भऽ गेलइ
7.जडबैत काल
कतेको अनुभिी
भीक्ड गेलक्खन्ह
मचान बनऽ लागलइ
अपन अपन बाप माए के जारए िला
केओ केओ अपन कक्काया आ भाए के
एक दू टा महा अभागा
जे जरेने गाडने रहए अपन संतान के
सबक ध्यान महादाहक
सफलता क्दक्स
जोगी भाइ चेरा क्वाछबऽ लागलाह
रामाशय बाबू दोहराबऽ लागलाह
उठऽ जगदीि बाया सू मजगूत करह
र कू संतोष

पतरका चेरा उपर मे देबइ
गणेि भाइ चार खंभा ठोकऽ लागलाह
गंगेि जी कहलखिन्ह
मुह पर चेरा नइ राखियौ
मुखाविन पडतए
सुरेि जी टोकलखिन्ह
मात विधि छैक
केलि सटएबाक काज
चंरदेि भाए जीपे मे रहलाह
यम के डरे
ि थाकल हारे
घनश्याम जी एगो के डाक्ट देलखिन्ह
खडही के हाथ नइ लगाबहक
औखन बडड काज छैक
ओ अलगे र सल
“हमहू देखब
कोना लहाि जरत!”
अंितम पिरिमाक बाद
मुखाविन पडलए
आ अविन खीचऽ लागलखिन्ह
क्षिितक कोणातक हिि
सूयर्दिे माथ पर आिब गेलाह
गंगाक धार पिित भऽ गेलइ
पिरजन किर्वित भेलाह
एकटा नितुिरया खोललक िबस्लेरी

टो टाक्म के ीतल जल बूटऽ लागल
मुहगर सब जुडबऽ लागला अपन कण्ठ पेट
एकाएक दक्छनबक्रया कोना लक्व गेलइ
सब एक दोसर पर बाजऽ लागलइ
“हम तऽ पक्हले कहैत छक्लयइ
दक्छनबक्रया कोना फला बाबू बनेलक्खन्ह
हओ बाबू आूचक क्दि ा बदलऽ
लाबऽ पतरका चेरा संठी ढैचा घी
तू ओमहर सू बास क्मराबह
हे हे उतर सू देह उघार भेलइ
देक्खयौ तऽ हाथ पैर अकक्ड रहल छइ
क्क ओ आ ी ािदक हाथ छैक ?
बूढबा अखनो तमसाइल छैक”

8.विदेहक धरती
पैकबंद बोतल के फुक्जते
बदक्ल गेलइ मौसम
जेना क्क मृत्यु नइ
कोनो जन्म क उत्सि हो
विदेहक ई धरती
देहक मजाक उडबऽ लागल
रंग रंगक चुटकुला
हि बसात
केतक िगक्रि गामक
अलग अलग अनुभि ।

जगह धुंएने रहए
मुदा कचहरी के याती
नहबऽ लागला
रगड़ रगड़ के
देहातक बात बिसरि
आ दस मिनट बाद
खाए लागलाह
चूडा-दही
जिलेबी पूरी
गरम गरम
मसाला नमक क चचा करैत
ओएह पेटक लेल
ओएह देहक लेल
ऐ विदेहक धरती पर
9.ऐ विसमरिया मे
मात देहे नइ
धमिआ धनहु क पक्ष
विरागक लेल तैयार रहू
ऐ गंगा क माटि मे
एकहि ढाचा क आदमी
बँाध सू घाट तक ।
घाटक डोम
आ पंडित
सभ लोकक
एके संख्या कहताह

एक हजार एक
आ तक्हना होटल िला
नाम क्लयऽ
अनपूणा विदापक्त क्मथ्थला
िषणा िकर आक्द आक्द
सभ क्मला के एके बात
एक हजार एक

10.चचा क विषय

चचा क विषय ई नइ छैक
क्क छोटका बाबू कते परहल क्लखल
कते बडका विदान ज्योक्तषी
कोना के पढेलाह क्धया पूता के
क्क ओ चाहैत छलाह
क्क पओलाह आ
क्क मूने रक्ह गेलेन्ह
चचा ई छैक
क्क कोना मरलक्खन
के सेि केलकए
आ के अनठेलकए
ककरा क्क देलक्खन्ह
आ के क्क चाहैत अक्छ
कोना हेतए शाध
आ कोना कोना भोज
के सम्हारतए
आ के चौकी बजारतए

हरेक गौआ घर आ के
हाथ मे छैक
क्ष्वतगुप्तक धमदिण्ड
ओ नाक्ष तौक्ल रहल छैक
आ आक्ष रहल छैक
क्षणथि बदक्ल बदक्ल के
सब चौकस अक्छ
के एलए
के क्षसरलए
अएबा के कारण
आ क्षसरबा के बात पर
भऽ रहल छैक गोल गोलैसी
क्षन क्षन घोघाउज ।

मरणोपरात-२

की केना

मतलब ई जे भोजक कोन व्यवस्था ?
गौआरी िि छगवमया
केलि भात वक चूडा
या दूनू वदन
इस्तगने पुरखे
िि सबजाना
एकजाना क बाते जुवम कर
भोज क सब वरकाड टूवट जेतइ
जकरा घर मे पाच टा सरकारी मास्टर
आधा दरजन इंजीवनयर
से वक ओवहना माम जेतइ
ओ तऽ गाििला के पावनयो वमयेतइ
आ पावम वमयाए के मानतइ
मुदा बात एतबे नइ
भात के खायत
या नइ
एकर कारणवि त अलग अलग खूट लेत
तावह दुआरे हे पंचोभय बुधिरिय
पगुलिरिय आ आनोआन खूटक

मुखिया आ ठीकेदार
आबू आ कणपि कलय ।

2 जेना जगदीि बाबू कहलथिन्ह

"एना त कहियो ने भेलइ
घरािरी किछु कहलक आ
नौत किछु आर भऽ गेलइ
कतेको बेर बात घचपचा गेलइ
ताहि दुआरे स्पि कहू
ककरा कही आ ककरा छोड़ू
सबजाना क इस्तगने पुरखे
आ नौत क संगे बाजौ
बस हम उतरबाइ टोल क भागी"
नौत देला के बाद घामल जगदीि
बैक्स के धाती गाछक नीचा
कहऽ लागलाह अपन बात
"ओ जखने कहलक
की कथी क व्यिस्था
हम कहलिएन्ह अओ बाबू
ओइ घर मे छऽ छऽ टा इंजीनियर
चाकर टा तरकारी
पाच टा मधुर
आ बीस बेिी सौ मन दूधक दही
चाकर साल पुरनका चाउर

राहड़िक दालि
बरी सकरौरी घी पापड
कते खायब
उपरो सू
नीचो सू खुएताह
खाउ ने कते खायब ”
जगदीश झुठे छाटैत रहलाह
सब बूझैत अछि
ओ एते नइ बाजल छथि
फेर बाजौ क बात पर कहऽ लागलाह
 “हम कहि देलिएन्हि
आब कून बाजौ आ कोन विनिय
जेहने खुएनहार
तहिना खेनिहार”

3 हे सूर्य

हे भास्कर
आइ माथ पर नइ आयब
बादले मे रहब
जोन मजूर खबास
भनसीया पनिभरनी
सब तकैत जेतीह
तऽ काज के करत
हे पनिदेव

आइ मंद मंद बहब
खाउ हनूमान सफ्फात
आइ पूरबे रहब
एमहर आयब तऽ
तीमन तरकारी भात दाक्ल
सब मे माक्ट बाउल खपटी
सना गोजा जायत ।
हे इंरदेि
अहा क जर री
आइ खेत मे छैक
गाि मे नक्ह
अहा आइ िचीए लग रहू
अहा आयब !
तखन कोना अओताह
गौआ घर आ
टोल समाज
बे्राहमण महाबाह ण ।
हे देिगण
आइ अंतक्रके मे क्यस्त रहू
आइ क्लयऽ क्दयऽ पकृक्त क सिद
आइ रमऽ क्दयऽ समाज मे
आइ बैसऽ क्दयऽ जमीन पर
आइ मागऽ क्दयऽ पाक्त केरा क पात
आइ सूघऽ क्दयऽ महकौआ चाउरक भात ।

4 जेना मनू बाबू कहलखिन्ह

तीने बजे पकड़ जाए आलू उसनए लेल
चारिए बजे बनऽ लागए चटनी
भोरे बनए बरी सकरौरी
सात बजे तक जमा भऽ जाए
बालटीन डोल गमला
करछुल चंगेरा ।
आठ बजे हुअऽ लागइ
तरकारी क सूर सार
दस बजे बीडी बक्स जाइ
बारह बजे तक नौत निमंतण
एक बजे पता कटा
जमा भऽ जाइ दलान पर ।
दू बजे चढ़ जाइ
भातक पहिल खेप
तीने बजे सू रतरत करए
गाि टोल क नबका बारीक ।
अइ होटल आ केटरर क जमाना मे
अहा कोन सामाजिकता क बात करइ छियइ
आठ बजे एलियइ
आ दूनू बापुत बैस गेलियइ
कोना के निबाहबए
गाि टोल क मरजाद ।

5.अ िकक गाछ

कामकाज मे पाछू मुदा
ललकारए मे आगू
ओ नमगर छीटधारी युकि
आलोक बाबूक सार छथि ।
चलबा बाजबा क तरीका सू
समि रहए ओ कोनो डीएसपीए के बेटा हेथिन्ह
चलाकी पकडेला पर ईमानदार भऽ गेलाह
"हमरा लोकनि भेलहू
अ िकक गाछ
ने फूल देब
ने छाया
ने फल बीज
ने आरोग्यक चीज।
मुदा हम दलान पर बनल रहब
हम छी िभा
काटबा हटेबा क िस्तु नइ
पक्ष ोऽपकरण ।"

<u>मरणोपरात-३</u>

मरनाहर के याक्द कर
हे चन्रदे ि ,राम ,भूषण
आ कृष्णमोहन
मरनाहर के याक्द कर
जेना मंक्दरक क्तरमाल
बीतल सम्मेलनक पोस्टर
आरती पूजाक बाद ि क्लगाम ।
ई नइ क्क
ई देलाह
आ ई नइ देलाह
रोड पर अपने घर बनेलाह
आ हमरा बूसक्बाटी देलाह
अपने भीठा
आ हमरा उसरौठी देलाह
भाइ पर कम
आ बेटा पर बेि ी ध्यान देलाह
ई आहक तुकबन्दी बंद कर
मरनाहर ककरो सू क्कछु नइ लेलक
भले ककरो क्कछु कम देने होए ।
ताक्ह दुआरे आबू
आ काज मे रक्म जाउ
जमीन जाल खेत मकान

गाछी बास रहबे करतइ
कार्वि सू बाटब
आ बाव्टते रहब ।
हयओ इंजीक्तयर साहेब
बजाबू खुआबू विनिय सू
ई धरती हरदम नीचा
आ अकाि हरदम ऊपरे रहैत छैक
अहाक पुरषाथिसू अविचक्लत
मूडी कक्त नीचा आ
छाती क्तान उतान केने
आनू मुह पर कक्त
विजाक्तत नकली मुसकान
गौआ घर आ
क्तमंक्तत छव्यन्ह
ई नइ छव्यन्ह
खबास आ जोन
ई नइ छव्यन्ह
पुल बान्हक ठीकेदार
क्तासक्त अपन नाम पद
सिगित कर सब के ।
चाहे केओ कतबो खगल
कपडा लता फाटल चीटल
झुक्क जाउ सिगित मे
सम्मान,मयादा क तमघैल कक्हया ले राखब
खुक्ल के खचकिर

संक्यत पक्ताष ा के बेन बनाउ
आउ ,झुक्क जाउ
भोज काल
पसक्र गेलइ सुअनक गंध
आब ' लागलाह क्ामंक्तत
घुसक ' लागलइ क्ालाइ कुकुर
चौकस कौआ उलक्ूल बनक्ालाइ
बैस ' लागलइ पाक्त क पाक्त
आब ' लागलइ जेक्र क जेर
विदा भेलाह गौआ क्दयाद
नून तीमन क मीमासा करैत
सुपारी चून लैत
कुरता खोक्ल गरदक्न पर राखैत
साफ कर ' लागलइ जोन खबास
पाक्त मे वारल पता
भात दाक्ल दही बरी
फाटल पात क्छटा मे जाइतो जाइत
वाक्र जाइ क्कछु भात क्कछु दही
दही क विषेन गंध दाक्ल तरकारी मे क्मक्ल
बना देलकए भोजेन !भोजेन !
भोजगंध अलक्सयाब ' लागलइ
दौड ' लागलइ गोला कक्रया कुकुर
हा हा कर ' लागलाह दामो सुरेि
क्चकर ' लागलाह बैजू बाबू
गंगेि जी मनू बाबू

"जल्दी ला रे खरा पात झार
उठाबू अओ पात
लाबू भात
कहा गेलइ तरकारी दाल
दूनू तरकारी एक साथ उठाबू
आब बरी भ गेलइ
बस दही उठाउ
ओमहर सू के उठ रहल अछ
बैसू !बैसू !बैसू !
देखब कुकुर पात मे नइ घुसए
हओ एमहर दही छूट गेलइ
चलू आब पातल राखू
भंडार घर बन्द कर "

मरणोपरात ४

कविता कऽ माने की ?
ओइ साझ मे छोटका बाबू
अचानक कविता पर बाज ‘ लागलखिन्ह
“हओ िआ
कविता कोनो सुस्फ
सुक्धाक्त मकान क नाम नइ
जेकरा मे दस बाइ बारह क कतेको घर होइत होए
आ ने कविता कोनो एहन घर
जेकरा बनएबा क लेल ईटा क लंबाई,चौडाई,रंग आ बाड क्वित होए
बात आराम आ आनन्द क छैक
ते जेहने ईटा
तेहने फूक्स आ माव्ट पाथर
बात खुलल टटका हि के छैक
ते घर केहनो होए
होए खुलल
आ हिदार
जेहन क्क कविता होइत छैक ।
ओकरा रस कही ि घक्ि
बात त एहने होए क्क
अंदर तक झनझना जाए ।
हं हमहूं मानैत छी
रंग आ पच्चाकारी के

हमरो खीचैत अछि
चुम्मक जूका अलंकार
हमहू भसिया जाइत छी
कखनो कि ब्दक जाल मे
मुदा िआ
एहन घर कोन काज के
जे बाहर खूब झालदार
आ अंदर झोलझाल
गेन्हायल
गरमी मे गरम
आ ठंडी मे बसात बहय
एहन घर ल ‘ के की करब ”
ई कहि छोटका बाबू ित भS गेलखिन्ह ।
पछिल छाया क दिन
आगंतुक पंडितगण बैसि गेला
सामने बेलूिक
नबका हरियर खजजा
बेलपात सब ओहने छल
ओकरा केओ नइ तोडैत छल
तकिना मंदिर परक दूबि सब
कबना खोटल
बरहल अपन ओकादि भर
अरहुल सब फुला फुला
वावर गेल छल
नीचा सूखल फूलक ढेरी छलए

मंदिर सेहो उदास छलए
आ देवी सेहो लोराएल
मुदा भैया सब कहऽ लागलखिन्ह
देवी क ई नोर बड पाचीन
ई मूर्तिकार क अंतिम कृत्ति छल
आ बनाबैते बनाबैते वावर गेल छलए
आ अंतिम मजूरया
देवी क आंखिक कोर पर लागलइ
ई नोर तकहिए सू अछि ।
ई कहैते कहैते एक भाए
झार लऽ के बहार ‘ लागलखिन्ह
दोसर भाए पानि लऽ के धोब ‘ लागलखिन्ह
तेसर फूल तोडबा क लेल विदा भेला
चारिम कोनाक झोल झार ‘ लागला
पाचम भैया भगविती क समक नतमस्तक भेला ।
मंदिर पहिले जूका चकाचक भऽ गेलइ
आइ अभ्यागत आबइ लिा छथि
कावि सेहो केओ आर
कोना रोकल जाइ विहि
ओना त एक साल तक िक समारोह चलैत छैक
मुदा िआ क चेनई मे खेबा पीबाक बड दिक्कदारी ।
बाबूजी खूब पसन छथि
“लोक सब कहैत छल
जे अहा क बेटा सब बड दूर
अहा क की हाल हेतइ

आ हमरा मून मे आबऽ लागल
लहास के गेनहाइ क गंध
नाक दबैत लोक
आ परेशान परिजन
मुदा हमर दूनू बेटा हीरा अछि
पहिले बडकी काकी
फेर बडका बाबू
मझिला कका
काकी आ छोटका बाबू
सबक अंतिम संस्कार मे दूनू पहुंचल
हम कहाँ नइ छी
हमरो लहास क नीके गति होयत”
भाई जी क व्यवस्था टंच छलि
भाइ जी काकी आ
छोटका बाबू क शादक व्यवस्था के आदि मानैत छथिन्ह
छगनिया भोज
दसकठिया गर ड पुरान
आ गाम परोपटा क बरबरना भोज
एक दिन नइ तीन दिन
आ अंतिम संस्कारे सू वैदिक रीति सू
दान पदान
ताहि दुआरे बाबूजी क सब पैसा
जे रिटायर भेला पर भेललेन्हि
जमा छैक नीक रेट पर
ताकि बाबूजी क मरला पर पैसाकौडी ताकऽ नइ पडए

सब किछु पहिले सू व्यवस्थित रहए
ओना बाबूजी स्वस्थ छथिन्ह
आ ऐ बेर एक बीघा खेत मे
हाइब्रिड बासमती क खेती केने छथिन्ह
आ बरसा खूब भेला सू पसन छथि
ओमहर भाइजी खूब पसन छथिन्ह
काल के बान्हल नइ जा सकैत छैक
काल के पूजबा क अलावा
कोनो रस्ता नइ
कोनो मंतर
कोनो जादू टोना नइ
बाबूजी क पैसा डेली बढ़ि रहल अछि ।

बफभोर

सूर्यदेिकत' लुप्त भेला
कोन अंतरक्ष ,मंदाकिनी मे
या जाड हुनको खेहाडइ छइ
देखियौ ने कुम्हरबा
मटकूरी नइ बनाबए छइ ।
बनाओत की मटकूरी
घैल चुक्का पातिल तौला
उगता नइ सूर्यदेि
लेब की हम बमभोला ।
तखना पसरल अन्हार कुहेसा
हवाडयो कंपकंपाइ छइ
बीलटबा सूतलेसूतल
ओछैने पर खाइ छइ ।
रकल जीनि स्पंदन
गाय भैस कुकुर बकरी
डोलबए छए गरदिन
डोलबए नागर पूछडी
कानए बाना नोर
दात देखबै छै ।
बंद भेलै विदालय
बंद कटनी रोपनी
एहन बफभोरो मे

नहा के छुन्नू पंडित
पहिर ओढ़ि काजल टीका
तीन कोस जमकाका
साइकल के गर ड बूझ
घंटी डोलबैत छइ

देि आ गेयर

देि सुस्ता रहल छइ
या पनहा रहल छइ
चाही एकरा तेल गीस मोबिल
आ तहिना साहित्य आ सम्बन्धो मे
पहिले हमरा पढैत देखि
मॉ आनइ छली चाय पानि
बाबू तमाकू चूनबैत
चलि जाइत छलाह अकाि सू आगू
आ कनिया पहिरैत छली चूडी ,पायल नि:िब्द
झनझनाहट सू भंग नइ हो हमर ध्यान
हि बहिनाहि सेहो बहैत छलए पूछि के ।
हमरे खोखी सू खोखियाइ पूरा दुनिया
हमरे सपना सपनाइत उगैत छलइ चान सूरज ।
ओ आर जमाना छलए नेता जी
याद्द अछि अहॉ क एक संकेत पर देि बाछ जाइत छलइ
अहॉ मतलब देि आ देि मतलब अहॉ नेताजी
आब दोसरे हि बहि रहल
सब अपना विषय मे सोचि रहल
स्ती ,सोलकन,जाबिया ,भूटान ,लातेहार ,पलामू
सबके पता छइ अपन हित अपन बात
देि ,सम्बन्ध ,साहित्य चढाई पर चलि रहल
 चाही बेिी दम गेयर नम्बर चारि

बेचि गेल बेचि तेल पानि

या फेर बच्चा क किडनियो जूका बढा कनियओ लेलनि

धूर्तता ,छल ,धोखाक लेलनि बढब' पडत

चाही नया नया मुखौटा

मोबलाइजेशन पोपेगंडा

पाखंडक अदतन संस्करण

दोसरे हाथ बढि रहल छैक

 देश दुनिया जावा रहल छइ

<u>पाँच केबी</u>

इंटरनेटक मंद गति
आ सुन्नरि तोहर फोटो
ससरैत बढैत लहरि
जेना स्त्रिक्रि परदा
खुलैत हो धीरे धीरे
सितार पर राग भैरवीक साथ
पाँच केबी मे माथ
दस मे कपार पंरह मे आंखि चापनी चिम्मा सन्हित
फेर रुकि गेलइ नेट
पता नइ आइ देखि सकब आंखिक निचला ढलान
अरे आंखियो देखा गेलइ
आंखियो सू नीचा
सिंधुगंगाक विशाल मैदान
कनि नाक त' देखियौ
हिमालयक बन्हन बनल जाइ
देखियौ त' नेटक नरहेरपनी
केलिशमे देखाए छए
दन्हिना त' वालने जाइ छैक
की दन्हिनो ओतबे पर्वत
ओन्हिना गंगाजल ।

नेटकंपनी क लेल निकृष्टतम पंचाकरी गारि के घोटैत

बंद करैत हम जाल जंजाल सत झूठ
आ खेहारने अनेरे कवि याती
आध फाक आंखि
आ आध फाक नाक

दोस मक्हम

कखनो जाक्तक लसेर लगबैत
कखनो कुल गोत क सोगर नेने
उपकारक पंजी समेटने
बीतल युग पर टीका करैत
कोनो क्यत पर सू जाल मकरी साफ करैत
आक्ब गेलक्खन दोस
ओ कहक्थन आ कक्हते रहक्थन
ओ सुनबा ले नइ आयल छक्थन
हुनका मोल चाही
ओ तौल रहल छक्थन
अतीत के क्सनेह के
ओ खोक्ज रहल छक्थन
सबसू बडका अंक
जे अचूक होए
आ बटखरा के बदला
राक्ख देने छक्थन
बीतल युगक दोसक्तयारी

२
आब दोस डेली बक्तयाइ छक्थन
सामना सामनी नइ त' फोने सू
थाहइ छक्थन

कोन नस कत्त' सू पकडी
थाहैत छछारैत मुस्किअयाइ छथिन
हम दखैत रहल छी हुनकर जानकारी सू
कालिदास मैथिली मोहम्मद रफी
आब हुनको ध्यय विषय अछि
पहिले मलबा सू बचैत रही
आब नइ आबइ छथिन
त' कोनादिन लागैत अछि
दोस तमाकू जूका
ठोर कचिजयेने जाइ छथि
आ भाग जूका दिमाग
की कही
दिमाग त पहिले सू
हफीमियाइल अछि
दोस एता
ओ कहता
आ हम करब
यदपि नफा नुकसान जनइ छी
मुदा दोस विष्ट बना गेला
बाजइ भूकइक तरीका
नीक जूका सीखा गेला

गीत गाबैत श्लोक पढैत

उधरणक बरसा करैत
कखनो पेरक पसंग
कखनो वेदि पुराण
तक्हना अथरिजनीक्त
कखनो भकुआइ
अकछी कखनो
दोस देति देखाबथन
दया बेचैत
ओ छली फरेबी चिक
बहुर वामया छलइ
कखनो काक्लदास
विदापक्त जपइ छलइ
महान जानी नइ
जानकार छलइ
फंसा लै छलै
कोनो चरचा मे
मनबा लै छलै बात
भ जाइ छक्लयइ क्वत्त
पटो मे कक्छु नइ करैत छक्लयइ
ओ कखनो बीमा
कखनो कविता
कखनो कक्ताब बेक्ख पडा जाइत छल ।
ओ आब चुप अक्छ

ने दु्मनीक बात
ने दोस्ती क चचा छइ
कार्व फेर आयत
कोनो नया वडब्बा पेटी कताब
मोबाईल स्कीम नेने
हम फेर क्यत्त हेबइ
ओ फेर भूकाया जायत
अपन बटुआ सम्हारैत ।

मनोज भाय क कविता

की भाय आबो राजदूत उडबै छियइ सौ पर
की भाय आबो हंसइ छियइ ओहिना हहा के
की भाय आबो देखइ छियइ रौद बरखा के ओहिना पेम सू
की भाय आबो कचकूह आम देखि पानि आबैत अछि मुंह मे
अपन गाछी आ दोसरक आम एखनो नीक लागैत अछि
की भाय जालंधरो करियने जूका छैक
कोना साधए छियइ उदयनाचायर्आ जालंधरनाथ के एक साथ
न्यायिन्याय आ नाथपंथक सूत कत' सलैत अछि
या हमरे जूका उलझैत देरी छोड़छाड़ सनृत्ति भ' जाइ छी
सही कहलहू भाइ
विदेहो त' हमरे छथि
आ हम पूरा दुनिया मे पसरलाक बादो ओतबे लोकल छी
सक्कत माटि खीचैत अछि हमरा
आ दक्षिरछिम्मक रहितहुं ओतबे सामंतावादी छी
संग मे अछिए की ,जे दुनिया छीनत
तैयो पकडने छी अपन दूबि के बकुटा मे
छोडू ई सब
 की ओतहु एहिना गामघर गीतनाद धूपदीप
याद्द आबै छी हम ,गाम आ समाजक लोक
बडी ,सिंगराही ,नबकी नौला पोखरि
बड़याही ,बलहा घाट
ककरहा ,ठकुरनीया ,महिसर बाध
कखनो सुनइ छी पाती ,नचारी ,समदओन

चाखै छी नबका चूडा पर छक्लयैल पूष मासक टटका दही
हंसए क बात पर हंसइ छी
आ कानइ क मौका पर
वारैत अक्छ नोर
या आहूं के मावर देलक समय
जेना हमरा मारलक सम्हरल डाग सू

बियाह आ मोछ

ओ बियाह नइ ,मोछक लडाई छलई
आ सभक अपन अपन प्लान रहए
बाबू ,मॉ ,दोस ,सासु ससुर
संस्कार कम ,नाच बजार छलइ ।
बाबूए पढेने लिखेने रहथिन
ते बियाह हुनके पसन्नक जगह ,लडकी आ बाबू के कवित छलए
भैयाक लेल ई छलए अचूक मौका
साबित करबाक लेल बहुत रास चीज
ते केलि नकिा चमचम गाडी क जखीरा रहए
आ यदि ऐ साल बियाह नइ हेतइ
तखन बाबू क मोछ आ माथ नीचा भ' जेतेन ।
यदि हम काजर लगेबा सू रोकबा क पयास करतियइ
तखन जनानी सबक नजरि मे
मॉ बहुत छोट भ' जेतइ
आ ससुर महराज सेहो लगेने रहथिन बाजी ककरो सू
ते दिसम्बर पक्का रहए
आ ने हमर उमेर कम रहए
ने हम बेरोजगार रहियइ
ते ससुरक ससुर जाच करबा लेल पहुंच गेलखिन
बागमती सू केन
कही कोनो जनानाक चक्कर त' नइ छइ
आ बियाह मे जररी रहए दार पीनए आ नाचनए
किएक त' िबडियो गडबडा जेतइ

आ व्यायान देने रहए बहुत लोक वाधो सू बेिी

हम हुक्सयइ

आ ओ पारम्भ करए ।

प्लेटो आ हमर कनिया

अंतत:
प्लेटो के योग्य विष्या भेटलये गेलेन
हे मैथिलीक स्विगीय कविगण
बता देबेन प्लेटा के
ओ एकटा युित मिहला छथिन्ह
आ जखना प्लेटो दोडैत छलथिन्ह
कविता कैस राजदंड ल के
तखना ललकारैत छथिन्ह ई
एकटा निलंबित कवि के
आ पूछैत छथिन्ह एकटा अस्थापित कवि सू
की हेतओ ऐ कविता ल' के
 काज रोजगार छोडि
कएक बताह भेल छे
सजमनि छीलैत आटा सानैत
फोडन दैत छौकक मेजन तैयार करैत
बच्चा के मुंह मे कौर दैत
नेटा काची पोछैत
नाना पकारक मुखाकृति
भाि भंवामा
खुसुर फुसुर
खौझाइत बडबडाइत
गािर गीत जूका
कखनो गायती मंत

कखनो सप्तति

कखनो कोनो अतुकात वैदिक ऋचा

अरबीक अबूझ नेमाज जूका ।

आ प्लेटा जे नइ क' सकला मंती पद अछैत बधाई प्लेटो ।

अहॉक योग्य शिष्य अरस्तू छ्वि

हमर कविया

। ओ क्षणिक कालक नेने छवि

एक्हना फकफकयाइत रहब

कहकहयाइत रहब किछु देखने सुनने

ऐ दुनियाँ मे सब केओ अछि आ

दुनियाँ ढन्नूक लाल स नइ चलैत अछि

मुदा ई दुनियाँ ढन्नुको लालक छैक ।

क्टप्स फाम खटरकका

न्यूटनक क्नयम मे
क्कछु जोक्ड घटा देबहक
कोनो दोसर भाषा कोनो आन फाट मे
क्कछु िब्द बदक्ल के
ि म बदक्ल के
तखन की
ओ क्नयम तोहर भ' जेत'
नइ ने
 मुदा साक्हत्य मे ई फाड खूब लोकक्प्रय अक्छ
टीपू आ छक्प जाउ
बूझलहो िआ
आ केओ पकक्ड लए
तखन कक्ह दहो हम त' हुनका सू पेरणा लेने छी
आ बूक्डभकुआ तैयो नइ मान'
तखन जोर स बाक्जह'
ओकर कान तीरैत
काक्नह' खीक्जह'
अपनो मुंह कान नोचैत
ओकरो केि टीक तीरने
साल दू साल त' क्बताए देब'
साक्हत्यो क्वजान होइछ
ताति केओ आन कतउ सू टीपतइ
ओ मंच पर आक्ब जेतइ
आ फेर नया क्सरा सू तीरमतीरा पारंभ भ' जेतइ

बफिपाक्स भाफ

देह ओकर बफिछलइ
मोन ओकर पाक्स छलइ
स्प्नि ओकर भाफ छलइ
देह मोन स्प्नि ओकर
बफिपाक्स भाफ छलइ
उमेर ओकर तेहने सन
सतरह अठारह छलइ
मोनक उन्नीस बीस
क्जनगी केर पैघ छोट
जाउ कक्स एमहर
ि ओमहर लजाक्स छलइ
मुसका बैत मंद मंद
आंक्ख नाक तीर ताक्र
नहू नहू डेग ओकर
कखनो क्ाहाक्ड छलइ
इक्तहासक घंटी मे गक्णाते
बुझाइत रहइ
रामजीक सासुर
अयोध्या देखाइत रहए ।

बस तीने दिन

लावा रहल पटना दरभंगा
तीन दिन लसेर अओ
जुटल रहला बड बड महन्थ
सेर केओ सवा सेर अओ
सुनु सुनु रंगबिरही बाजा
धिआ पटना कक्का झाझा
पाउडर काजर खूब लगेने
कविकि राग बहेर अओ
लस्सी पेप्सी मुरगा माछक
पन्नी छिछि हडडी काटा
लावा रहल अनछ ढेर अओ
बस तीने दिन जय विद्यापति
जय मिथिला के फेर अओ
फेर धिआ तकिना दिन रहतइ
कामपीट के भाग पडेतइ
जगत जानकी सासुर बसतइ
बस तीने दिन दिनक फेरा

कसरत सब नरहेर अओ

उत्थर लोक

जेहने हम
तेहने हमर ई उत्थर ि ब्द
कक्सया माक्टक बडका चेका
सुक्खल बज्जर सन
हर बरदक बात छोड़ू
टेक्टरोक चक्का धसैत छैक
आ कखनो भुसभुक्सया उस्सर
पक्सोक्खया बलुआही
कक्सयो लैस नइ
की चापलूसी
कोन कृतजता
नोकगर खतरनाक
सटला पर घोपयबाक गारंटी
कखनो लाल लाल
जेना माक्ट खूनक दोस्ती हो
सुल्तानगंज भागलपुरक जमीन
अलगे उपज जेजात
बूझू कोनो ग'रक लोक नइ
अहॉ उपकार करब
हम हस्तक्ेप मानब
अकक्छयाएब अलगे
हम छी उत्थर लोक
पक्सक्ध पर रहए ि ला ।

चमारक ऋण

बहुत नमहर मोट पुरान रव्जस्टर छैक
चमार सभ के संग मे
हू हू सभ के संग मे छैक
ककरो वजल्द रंगगर छैक
ककरो सादा
तव्हना नि पुरान सेहो
केओ छंद वछंद
सभ्यासभ्य
सभ पर छैक िधक वािन
कोनो कोनो मे पक्वहंसा क आवा ,लोहा ,पाथर
केओ तकि साथ
ई तकितकिास्तक उधार नइ
विजानक छैक
आ कखनो फूले ,अंबेदकर
कखनो कपूरीक फोटो
सजा गेलइ ई रव्जस्टर
ई केओ चोरा नइ सकैत छैक
केओ जरा गला नइ सकैत छैक
एकर सभ िब्द
चमार सभ के हदय पर अंवकत छैक
पाथरक िब्द
लोहाक िब्द
कोनो आर भवगर िस्तु होइ त कहब

दीिली क पक्हले

दीिली सू पक्हले
कोदाक्र सू खूनैत
कक्रया माक्ट
पक्त द' छछारैत सानैत क्मलबैत कुम्हार
चाक पर बैसा के
गाक्र काटैत कुम्हार
कखनो हि बसात सू बचबैत
रौद मे सुखबैत कुम्हार
गोइठा जारन कोयला
सू जरबैत कुम्हार
लाल लाल दीप देक्ख
मोछ क्मजाबैत कुम्हार

धनतेरस राक्त

बहुतो रास दूटक्कया लॉटरी
अखबारक ईनामी कूपन सब
दू नम्मर सॅ छूटैत क्क्ष्जिन
तीनू बेर बेव्टये बेटी ।
तैयो साहस करैत
घुसलउू बजार
सोना चानी क कोन बात
क्टनही लेल भेल पात
डोलैत करौछ छोलनी बेलना सब
जेना डरबए लेल नाच करैत छल
कठौत टुकुर टुकुर ताकैत रहए
जेना हमही सनेबए
उसनए क नौत दैत छल
उ फूलही डेकची
अओ बाबू आइ त' भॉगो नइ खेक्लयइ
ई कूकर कथी लेल सीटी मारइ छइ
अरे बाप चूवि यो कहॉ पजारल छइ
धुर जो
ई की भेलइ हमरा
क्कछु ने क्कछु त ' खरीदनइ जर क्रए
चलू थारी खरीदल जाए
छोट छोट बच्चा छइ
तीन चाक्र खाना लिा थारी

नाना विधि व्यंजन नइ
छप्पन भोग नइ
निन्नो त हेतइ
एकटा मे रसदार एकटा भूजया
एकटा मे अूचार पापर
ऑख नइ लगबू
जीय' क्दय' हमरा
जाइ छी गाम पर
आहूं जाउ ।

हम पुरहिताया

इजोत सू अन्हारक अनंत याता
हू हू पूर्णमी से अमास्िया बूझू
पतरा देखैत दिन गुनैत
पतराया कटैत
सब िभािभ जेना हमरे पाछाॅ लागल अछि
ठीके कहन्हलउ
हम छी मिथलाक पुरहिताया बाभन ।
सुरजो सू पहिले िहकरयो सू पहिले
जोतुआ बडद बहलमानो सू पहिले
मयाँ जीक मुरगाके बाॅगो सू पहिले
सबसू पहिले उठके
पूज' चाहैत छी
अपन कम
दोसर के भगािन के बेिी
पाप पुण्य िहत विध
सब दोसरे लेल
मलबो करैछ दोसरे के
आ हम नित्य नित्य घुम रहल छी
कखनो पैदल कखनो साइकिल
हमरो दुकाया खूब जमल अछि
जजमनिका क ऐ तीन गाम सू
पता साॅझ हम आबइ छी
पािभर गहूम आसेर मकइ

कलो धान क पोटरी ल' के
संगक्संग एक मटकूरी दही लेने
पंक्डताइन खोलइ छव्थन
ई पोटरी
जेना रानी खोलइ
पडोसी रानीक भेजल उपहार ।
ि कुबेरक कक्या जेना देखव्थ
घरिला क कृतकृत्य ।
आ कव्हयो राक्त बारहो एक
क्जन्न सबसू बक्तयाइत
बह राक्स के चून तमाकूल दैत
चुडैल सबके धक्कयाबैत
पछुआबैत बह डाक्कनी के
सक्रयाबैत अपन मटकूरी ।
आ िआ बड कक्ठन छइ
जक्जमानी बचेनइ
कम देबहो तैयो
र सनइ मना छइ
बेि देबहो तैयो
पिसा नइ सुनबहक
गक्म लेबहक तो सब
सब बडा बक्ढया
खूब नीक
चक्ल रहल छइ
भगिनक माया छइ ।

चालीसक बात

तेरह साल पहिलेक बात छइ
ओ सब
ओ सब बात
आब त हमहु चालीसक लगभगाएल छी
तोहूं जरूर चौतीस पैतीसक भ गेल हेबे
कहा पूछि सकलियओ तोरा सं कोनो बात
आब त पत्नी सब बिसरि गेलहुं
जे याद केने छलियओ तोरा सं पूछए लेल
हमि क साथ दइ छिा केि हमर
किछु उखड़ि गेल
किछु पाकिके डरा रहल अछि
हंसीक साथ निकलइ छिा धलि दातक पाति
किछु टुटि गेल
किछु हिल रहल अछि
तहिना गोरनार चमरो ई
भेल कारी बदरंग
तू केहन भ’ गेले
कतओ देखबओ
त कोना चिन्हबओ
ई कहनए त बिसरिये गेलियओ
हमरा दू टा बच्चो अछि
तोरा कएक टा छओ
आ तो कत’ रहैत छे

की तूहू हमरे जूका नौकरी करैत बनरा गेले
आबो सुनइ छे राक्त के रेव्डयो
आ क्लखइ छे पोस्टकाडि
की तोरो कोनो पता नइ छओ
ई क्तरथक्रि गद बस तोरे लेल
तूही बूझबीही छंदक भयानक दुक्तया मे
तुकहीन पद मे छुपल
एकटा नीरि एकात अथि

बामे गाम दक्षिने गाम १-६

१

बागमती आ करेहक बीच ठाढ

ई कोन चीजक पहाड

हयौ कविकुलगुर

ई अहाक धमण्डिण्ड नइ

जे धरती के कोनेकोन नापैत हो

ई थिक हम्मर गाम

ताकैत चार दिस

इतिहासक अखण्ड आ निगमनक साक्षी बनि

तौलैत ब्रह्माण्डक पानि

कखनो झुकि जाइत बागमती दिस

कखनो करेह दिस

ले ...ले...तू ले

जेकरा काज हो जलक

ई पानि केलि हाईडोजन आ ऑक्सीजनक यौवाके नइ

मोनक पानि

आत्माक पानि सेहो

केलि मुंहक पानि नइ कालिदास

आत्माक पानि मरै नइ

बस एतबे लेल ठाढ ई कवियन गाम

ई गाम जानै छैक

पानिक मोल

तीन-चारि सौ फीट नीचा

कअल ईनार

गाम जेकर कुरसी बनल
बाभन,कुरमी,धानुक
गुआर दुसाधक हडडी सू
सूरखी चूना बक्त
माक्ट मे क्तलैत गेलै
आ पहाड बरहैत गेलै
एत्ते ऊंच....
एत्ते ऊंच....
क्क नेपाल ,क्ताब्बत ,चीन क्तक्लओ के
नइ डूबा पाबैछ कक्रयन गाम

२
धक्त क्जरात धक्त क्जरात
के नापै तोहर ऊरिता
के जाचै तोहर जोस
बस एक बेर सम्हक्र के उपक्ज जो
खुआ देबै पूरा दुक्तया के
एक साझ सोहारी
तीमन तरकारी
आ बता देबै
क्झकुटी क' मोल
आ बस एके बेर
सम्हक्र के फक्र जाइ
खुटेरी बाबूक गाछी
कलकक्तया मालदह फौजली

आ बीज्जू क' असंख्य िणिरसि
आ ई गंध फैलैत चक्ल जाइ
दूर खूब दूर
पूब क्दस ...पूब क्दस
सहरसा ,पूवणिया ,कव्टहार
आ ओक्हयो सू आगू
जत' सू बाबा आनै छक्थन
लाल-लाल झूमका
....
ओ गीत
ओ सपना ...आ ओ क्जनगी
जुडाइत रहै ...जुडाइत रहै

३
उदयनाचायितऽ नक्हये छक्थन
मुदा आचायिलोकक्क सू जक-थक गाम
इसकूल मे परहैत परहाबैत आचायि
हअर नेने कनहा पर
आक्ड तोडैत बाक्ल नोचैत आचायि
जजाक्त काटैत गाक्रयो दैत
बूटैया िला अधहा सू चौथाई बनबैत आचायि
शाध मे वियाहक ,वियाह मे शाधक
उल्टा-पुल्टा मंत परहैत
भोर पुतौह साझ भाबौह के
चुटी काटैत सोहराबैत आचायि

कष्ट काटैत जोगबैत बनबैत
बेटा के परहाबैत पटना दिल्ली
नोकरी करत वियाह करब
किजौरी के साफ करैत आचार्य
हम हमही बस हमरे टा अछि
देखबैत सुनबैत आजुक आचार्य
केओ एक-दू श्लोक
किताबक नाम एक-दू
पसंग सही गलत
दोहराबैत तेहराबैत आचार्य।

४

चन्दा चूटकी क' बाउल सीमेट
चूना सूरखी लेपैत
एकटा गोर दक्क संगमरमरिया मूर्ति आिन
जग जीत लेलकै हम्मर गौआ
मूरती क' मुंह,आंखि बंद करैत
बैसल मुरा मे
मूरती के शिभ क्षण मे स्थापित करैत
एकदम सक्कत सीमेट सू
' हे आचार्य उठब बैसब नइ'
आ दू कुइंटल लोहा क वाल बािन्ह
' हे आचार्य निकलब नइ'
आ मूरती क' हाथ मे एकटा किताब राखि

' हे आचायदिोसर पोथी नइ मागब '
आ मूक्तस्थिापना क बरखी मनबैत
' हे आचायआिन क्दन याक्द नइ करब'
एक लाख ईटा सू बाउंडरी बाक्ह
' हे आचायएिमहर ओमहर बौएनए बंद कर '

५
हे महाकवि याती
एक क्दन हमरो गाम आबू
बैसू एक पक्हर
र कू कनेक काल
बक्तयाउ राक्त भक्र
िह बेनीपुर ,बहेडी टपैत
बक्रयाही घाट पार करैत
दू कोसक चौरस हक्रयरी मे डूबल
क्मक्थलाक ऐ भूखंड के थाहैत
पहुंचू हमर गाम
जत' सूतल हजार बक्रख सू एकटा महाृिध ।
आक्बते बात सुक्नते अहाके
बूढबाक हजार बक्रस पुरान हडडी मे
फूक्ट उठतै नपिल्लि
क्मक्थलाक भूगोल मे फैलल
ओकर छाउर
साक्रत भ' धनधान्य सू भक्र जेतै
गामक आम मौह गाब' लागतै मधुर संगीत

मज्जर क्टकुला ऐंठतै कोयली क' कान
ओहुना विदापक्तनगर ,चौमथा ,झमोक्टया क' याती
एक कोस पर्वमे सू बदलैत बाट
बचैत कक्रयनक क्झकुटी सू
बनाबैत सुगम सुविधासंपन्न याता
मुदा देक्खते अहाके बूढबा
याक्द कर' लागतै ओ महायाता
आ समाज ,इक्तहासक ओ कृण
धमर्दिनि मे लपटल ओ कालखंड
यदक्प अहाक विचार अलग
आ बूढबो एकदम अलग
तैयो ई भेट
सधारण नइ हेतै
सधारण नइ......

६
भगानि जगन्नाथक ऐ्यिकि ललकारैत ई गाम
डूक्ब रहल अपन छोटपन मे
संस्कृत बूझबा सूझबा
बाजबा बक्तयेबाक अहंकार
आ अहंकार क' कतेको ृत्त
ठोप चंदने तक रकल ठमकल

कछु ितत एक-दोसर मे घुकसयाइत

नोकरी ,कुल ,जमीन ,पैसा आ बुधक ितत

आ सब घर मे एकटा मास्टर हेबाक
दस सू पाच तक पढेबा

आ नइ पढेबाक ओतबे पुरस्कार

महीने महीने दरमाहा उठेबा

आ एकटा क्लकटेड दुकया मे रहबाक खतरनाक संस्कार

तकना पूजापाठ ,गपिप ,दैनंकदनी

नि-नि अहंकार गाम के घेवर रहल

के कतत' कमाए छैक

सरकारी आ कान सरकारी

एक नम्मर आ दू नम्मर

बाउग कम काटए क' बेिी हूनर

बैक मे अस्पताल मे

ठीकेदारी सू

चोर्क्र छिनरपन सू......

गामक अहंकार त' िह छैक

बस ओकर हुक्लये बदललै
आ िआ जत' रहै छे

जे करै छे

बस कमाइत रह

आ अहंकारे संग बढबैत रह

खोपडी सू खपडा एकचकरया

पक्का दूमहला

तीनमहला ,चक्रमहला.......

छौडा अजगुत कंप्यूटर छै

लौत उदास

परखैत पासंग

िआ क्णेक्ण

साइड बदलै छै !

कय्ते िह !

आ कय्ते कमाल कहू

बस तीन क्मनट पक्हले बीचोबीच रहै

एक क्मनट पक्हले िमि भेलै

क्मनटे पंचर जाम भेलै

दक्हने छौडा गाम गेलै

मतलब पूरा कलाकारी बीचोबीचक

कते जल्दी गुट बदलै छै !

कोना के गुटक्पट ?

गुट तोडै छै

छौडा अजगुत

कंप्यूटर छै

गुरओ संग

नोच्चा-नोच्ची

कोना-तीती

क्संघीपताली

खनेखन छौडा

गुर बदलै छै !

महाकवि विद्यापति-१-२

महाकवि विद्यापति-१

युक्तिकवि विद्यापतिक पुरुषपरीक्षा
कवि सूं बेसी ओइ जुगक माग
पुरुषार्थ आ ओइ पौरुषक पिपासा
ओइ दरबार आ बूढ़रक्षसक समै केर छन्द
तैयो ओइ कवि के स्तुति साओन भादवक ढनी के छत्ता
केओ किताब चोराबै ,केओ पाडुलिपिक पोखरि मे फेकि दै
कतेको चेतावनी ,रस्तारोकी ,छीनाछोरी
विद्यापति जानैत रहथिन
कि पुरनका पोथी बिसरले सूं नविपोथीक आगमन
पुरुषपरीक्षा लिखबै काल हुनकर बैठकी भरल रहै
वेदि-पुराण ,व्याकरण ,न्याय-स्मृतिक गंथ सूं
जयदेव ,वात्स्यायन आ भामहक भार सूं दाबल
पाणिनी आ पिंगलक बान्ह सूं बिसाइत कलमैत युक्तिकवि
सबसूं पहिले फेकलखिन पुराण आ स्मृति
तखने पकट भेलखिन कीर्तिलता आ कीर्तिपताका
मुदा एखनो संतोष नइ
ऐ कीर्तिकिं तुच्छ बूझैत बढ़ि गेलखिन आगू कवि विद्यापति
फेर फेकलखिन छंद-काव्य आ दर्शनिक शास्त्रक पोथी
फेकैतो काल पणाम करैत ओइ पोथी सभ के
महल आ बैठकी के त्यागिवा
आबि गेलखिन जन आ जनपदक मध्य

जनपदक संगे-साथ कयन्हि' लागलखिन जनमन
तखने त' दुखहि जनम भेल ,दुखहि गमाओल
ऐ दुख के गबिते उक्दत भेलखिन महाकवि
महाकविक कविता राजा जनकक नइ
आरक्कित बस जनजनक लेल
जइ कविताक छाती मे धुकधुकाइत रहै मिथिलाक शीस
ई अमरकृति तुरकक कागज पर लिखाइ सू बेशी अमर भ' गेलै
कोटिजनक हदय मे, रक्त मे, माटि मे

<u>महाकवि विदापति</u>-२
हयौ साहेब
अहा के एखनो एहनेसन लागै कि विदापति बाभनक कवि
आ विदापति के कियेने रहलेन बाभन सब
अपनेने आ माथ पर चरहेने रहलेन बाभन सभ
हयौ महराज
विदापति त' भ' गेलखिन चार लोक सू बाहर
महराजक दरबार सू
पंडितक चुटपाति सू
शास्त्रार्थिक झूठ-अखाडा स
अहाँ नीक-हमहूं नीक सू
मुदा महाकविक कविता जीयत रहलै
माथ पर सम्हिरल बोझक हुंकारी सू
काशी आ नेपालक व्यापारी सू
जखना काय असोम आ बंग मे
तखना अराकान आ अंग मे

महाकवि बरहैत गेलखिन
महफा उठेने कहारक पदचाप संग
मखान तोड़ैत मलाहक अलाप संग
महाकवि आवा भ' गेलखिन
अगहन-पूसक घूर मे
महाकवि पाथर भ' गेलखिन
दुसाधक दुख संग
महाकवि गामबदर
डोम-हलखोरक टोल-टापर मे
अधमर महाकवि के आशय भेटलेन नारीजनक कंठ मे
दुख आ कष्टबोधक जाता-गीत बनि
मुदु पक्तिाधिक उकखबड़-समाठ छंद मे
महादुख पर लेपैत सोहरक लेप मे
महाकवि जी गेलखिन विषम-विहिक व्यंग्य मे
महाकवि जी गेलखिन बूढ़-वछनारक ललैठी धरबा लेल
सभ पोथी-पतरा फेकैत
पुनर्जीवित महाकवि
बस रुकि गेलखिन मैथिलानीक लोर संग
यैह लोर क्लिगामी ,बागमती के भरैत
कोशी ,गंडक के तोड़ैत
सभ साल दहबै-दहाबै छै मिथिला के

<u>हाइकू</u>

ई खचरहबा
खोव्ज रहल छओ
भाग फव्तंगा

क्क भेलए एकरा?

रौ बव्ह! रौ बव्ह! क्क भेलए एकरा?
मागक्लयइ रोसडा आ दऽ देलकए तेघडा

रौ बव्ह ! रौ बव्ह ! क्क भेलए? एकरा
पटनाक बात छोड़ू, क्दल्लीक बखरा!

रौ बव्ह! रौ बव्ह! क्क भेलए एकरा?
सोचैत रहौ मंती बनब, ि‍र एमे खतरा

रौ बव्ह! रौ बव्ह! क्क भेलए? एकरा
हरम-महल-अंतःपुर ि छुपल घरघुसरा!

रौ बव्ह! रौ बव्ह! क्क भेलए? एकरा
दस लाखक क्टकट छल, केकरासू बात करी
अल्सेक्सयन आूक्ख देखबए, दात देखबए झबडा!
रौ बव्ह! रौ बव्ह! क्क भेलए एकरा?

डॉ. कैलाि कुमार क्मश

गामक कचोट

बूढी आ बूढक भुरकबा पराती
मस्ती करैत पोखक्र आ नहक्र मे हेलब
फुलबारी मे कनैल, अडहुल, चम्पा, फूल लोढब
हाथ सू माक्टक महादेब- हजार, लखराम बनाएब
मंक्दर, तुलसी चौरा, भगक्ती घर के क्नपब आ पूजाक ठाम
िलीगामक पूजा, भगबतीक पातक्र, भगिनक भोग
कबडडी, क्झटकी, नुका-चौडी, क्झक्झया खेलायेब
अन्हक्रया राक्त मे पाकक झटक के सडे आम क्बछब
आम खे़सारी साग, अडरनेि के झखहा
कंसार िली सू भुजबैत चाउर, गहूम, चुरा, बदाम
मडुआ के रोटी मे पोठी मछक्रया
बकेन मक्हसक दूध-दही, छाली
नब क्बयायल मक्हसक क्खडसा
उदासी, सोहर, समदाउन, जोग, खेलोना लोकगीत
चैताबर, बसन्त, क्तरहुत, बारहमासा, छौमासा सजनी गीत
महेिबानी, नचारी, बाहण, भगबती, विष्णुक भजन
हक्रयर कचोर पोखक्रक पाक्न
क्नमिल जल इनारक जे करैत छल क्पयास केर ित
लह-लह करैत बहैत नक्दक अक्छन्नजल जल

कादो मे भीजल आ कक्दयाल गृहस्थक देह आ ि स्ति
मारकीन के नुआ मे पकृक्त सुनव्र बनल गामक यु ती
लताम, केरा, कटहर, बरहर, आता, सव्रफा, टाभ नेबो
मह-मह गमकैत रंग-वि रिंगक फल
झीगा, इचना, बुआरी, रहु, गैचा, कबइ, पोठी, मारा
क्संघी, मागुर, दरही, छही माछ
डोका आ काकोड के तीमन
बाडीक पटुआ, झाव्डक क्तलकोरा आ कना पातक तरआ
जमीरी नेबो देल ओलक सना
घुरक पाकल सोन्हगर आलू आ अ ि ुआ
तरल कक्दमाक फूल आ खमहार
माय-व्यक्तयैन केर क्वना लोभक अ ि ी ि दक सूग नीक बोल
आ ने जाक्त की की सब समाप्त भ गेल???
ि हिर मे आक्व भ गेल मनुख घव्डक सुई पर नचक्तया
नीक ि स्ति, घर, गाडी, A. C. सब सुवि धा मे रहैत अव्छ
मुदा जीि नि मे एना लगैत छैक जेना नाना तरहक क्ष ान परसल हो
लेक्कन मधुमेह सू गव्सत रोगी हो मनुख ?
जे सब ि स्तुक उपलब्धता के बादो ओकर उपयोग सू बंक्यत हो!!!
ओह गाम! अप्पन गाम! क्वथलाक गाम!!!